

## पुस्तक प्राप्ति स्थान —

- १ मंत्री भी दिगम्बर जैन ध० क्षेत्र भी महावीरजी  
महावीर मठ, सवाई रामसिंह हाईवे, अमपुर (राजस्थान)
- २ मैनेजर दिगम्बर जैन ध० क्षेत्र भी महावीरजी  
जी महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण

४ प्रति

महावीर अमलिन

दि सं० २०१९

अमेक १६९०

सूच्य

१४)



मुद्रक —

मैनेजरसाल न्यायपीठ

जी बीर मेस, अमपुर ।

# ★ विषय-सूची ★

१ प्रकाशकीय	पत्र नम्बरा १-२
२ भूमिका	३-४
३ प्रस्तावना	५-२३
४ प्राचीन एवं अत्रात ग्रंथों का परिचय	२४-४८
५ " " विवरण	४९-४९
६ विषय	पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एव चर्चा	१-४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र	४८-६८
३ अध्यात्म एव योगशास्त्र	६९-१२८
४ न्याय एव दर्शन	१२९-१४१
५ पुराण साहित्य	१४२-१५६
६ काव्य एव चरित्र	१६०-२१२
७ कथा साहित्य	२१३-२५६
८ व्याकरण साहित्य	२५७-२७०
९ कोश	७१-२७८
१० ज्योतिष एव निमित्तज्ञान	७९-२६५
११ आयुर्वेद	६-३०७
१२ चन्द्र एव अलंकार	८-३१५
१३ सगीत एवं नाटक	६-३१८
१४ लोक विज्ञान	-३२३
१५ सुभाषित एव नीति शास्त्र	-३४६
१६ मंत्र शास्त्र	-३५२
१७ काम शास्त्र	३५३
१८ शिल्प शास्त्र	३५४

		पत्र संख्या
१६ हाफय्य पत्र समीक्षा	—	३४४-३४६
२० पञ्चगु रासा एवं बेकि साहित्य	—	३६०-३६७
२१ ग्रथित शस्त्र	—	३६८-३६९
२२ इतिहास	—	३७०-३७८
२३ स्तोत्र साहित्य	—	३७९-४४२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	—	४४३-४४६
२५ गुह्य संग्रह	—	४४७-४४९
२६ अथर्वशास्त्र साहित्य	—	४५०-५०
७ प्र बालुक्रमबिन्दु	—	५१-५४
८ प्र ष एवं प्रयत्न	—	५५-६२
९ शासकों की नामावलि	—	६२६-६३
१ ग्राम एवं नगरों की नामावलि	—	६३१-६३६
११ सुदामादि पत्र	—	६४०-६४३

## ★ प्रकाशकीय ★

प्रथम सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। प्रथम सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित प्रथम सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानत २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के सकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर वड़े वड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, मंगलसुन्दरी जैसे महान् विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोमन्ट्रसार जीवकाण्ड की मूल पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, सुशालचन्द आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियाँ हैं।

इस प्रथम सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनवत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको सभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था सीधे ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक प्रथम सूची के तीन भाग, प्रशान्ति समग्र, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गावों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की प्रथम सूचियाँ बनायी जा



जुड़ी हैं जो हमारे सत्त्वान में हैं, तथा जिनसे विज्ञान एवं साहित्य शोध में नया रूपे विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। मध्य सुषियों के साथ २ करीब ४ से भी अधिक मूल्यपूर्ण एवं प्राचीन ग्रंथों की प्रकाशितियों एवं परिचय लिखे जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुए हिन्दी पर भी इन मंडारों में प्रबुर सख्या में निरूते हैं। ऐसे करीब २० पत्रों का हमने समझ कर लिखा है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह आज पूर्ण साहित्य प्रकाशन का जिस चरित्र से क्षेत्र में साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह चरित्र भीरे भीरे पूरा हो रहा है।

भारत का विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्रकृत संस्कृत अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर लोका करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर लोका करके वा प्रकाश करें। इस भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में सहायक सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र मंडारों की सूची दी गई है मैं इन मंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः भी जाम्नासजी का अग्रपुत्रदजी दीवान व मंत्रालयजी म्यामलीबाँ भीरुजमराजी गोपा समीरमराजी कावडा कपूर्वदजी रानध एवं प्रा मुत्तानसिद्धजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शास्त्र संस्थान का विद्वानों को शास्त्र मंडारों की सूचियों बनाने तथा समस्त समय पर वहाँ के मंत्रों को दत्तन में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी इनका साहित्य शोध का पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

इस भी का वामुदेव शास्त्री अमरावत हिन्दू विरुपावकाव वाराणसी के रूप से आभारी हूँ जिन्होंने आत्मक हात हुए भी हमारी प्रायतन स्वीकार करके मध्य सूची की भूमिका लिखन की कृपा की है। भविष्य में इनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निरंतरता मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ का विद्वान् संपादक श्री डा. कनूरुचंदजी कायसीबाबू एवं उनके सहयोगी श्री पं. अग्रपुत्रदजी म्यामलीबाँ तथा श्री मुत्तानसिद्धजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र मंडारों का दत्तकर लोका एवं परिचय से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के मुत्तान विद्वान् श्री पं. जैन मुत्तानसिद्धजी म्यामलीबाँ का भी रूप से आभारी हूँ कि जिनका हमका साहित्य शोध संस्थान के कार्य में वच प्रदान व सहयोग मिलता रहा है।

# भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी सस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभारे हुए रूप में टाक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध सस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस सस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने सकल्प वल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी ध्यान वीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर चढ़ा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकाचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध सस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिसमें महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोधकर्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का सप्रह किया जाता था। शोधकर्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचियां मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का गुञ्जन्मक अभ्यन्तन कपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में १८ देशों की संख्या रख हो गई थी। घात होता है काश्मायर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुजरात संख्या २० (मह संख्या ४४ २) में गगनों की बसावत का संवत्कार कबीरा की कल्पकनीय है। जैसे संवत् १६१२ अरुणत घातसाह भारती बसायो : संवत् १०१४ औरगसाह पावसाह औरगसाह बसायो संवत् १२४२ विमल मंत्री स्वर हुआ विमल बसाई।

विद्यास की उन पिछली शक्तियों में हिन्दी साहित्य के विद्यमान विविध साहित्य रूप व यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये इनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ संघ, कथा रासो रास पूजा, मंगल कपमाल प्रवाचनी मंत्र, धर्मक, सार समुच्चय कर्णन सुमाफि, चौपट्ट, ह्युमासिध निरूपणी, कच्छी व्याख्या बभाषा चिन्ती पत्री भारती बोक चरचा विचार, बात गीत लीला चरित्र, कर्ण, कल्प भावना विजो, कल्प वाचक, प्रकृति, प्रमाक औदासिया औमासिया वाउभासा, बटोई, बेडि, हिंदाकला कूबरी, सम्भव वाउकली, मक्ति, कर्णना पच्छीमी कच्छीसी पभासा बावनी स्यसई, स्वमासिक, सखकबाम नामाकली, गुकनाकली, स्तन संवो बोन, मोहका आदि। इन विविध साहित्य रूपों में स किम्वद क्य आरुण हुआ और किम प्रकर विद्यास और विस्तार हुआ, यह रोचक क लिखे रोचक विषय है। कच्छी कदुनू व साममी इन मंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुछ रात्र मंडार लगभग वो सी हैं और इनमें संभित म बो की संख्या लगभग दो लाख के आँकी जाती है। इयँ की बात है कि शाय संस्थान के कार्य कर्ता इस मारी शक्ति के प्रति जागरूक हैं। पर लम्बावत यह कार्य हीरकपक्षीय साहित्यिक साधना और बहु ध्यन की अपेक्षा लता है। किम प्रकर अपन देश में पूर्ण क्य मंडारक इस्वीत्यूट, संकार की सत्त्वती महल काहरती मद्रास विद्विद्यालय की ओरिबन्ध मैत्रिकिण्टस काहरती वा कककरी की बंगाल परिवाहिक सोस्यटी का मंत्र मंडार इस्तकित्तित मंत्रों को मद्रास में जान क्य क्य कर रहे हैं और उनके कार्य के मद्रक का मुक्त फंड से समी स्वीकृत करते हैं, आरुण है कि कसी प्रकर मह बीर अतिराय क्षेत्र के बोन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की और भी जनता और रासस बानों क्य ध्यन शीघ्र आरुण हांग और यह संस्था किम सहायता की पाव है, वह जैसे सुखम की काकली। संस्था ने अथ तक अपने मावनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु का कार्य रंग है वह कसी अधिक बड़ा है और इसमें मनेह नही कि अवरक करन बाग्य है। ११ की शती से १६ की शती क मन्थ तक का साहित्य रचना हावी रही इसकी संभित निधि का कुनर बीसा ससूक कोप ही हमारे सामन आ गया है। आज स ककक १४ बर्ष पूर्व तक इन मंडारों क अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों क था और इनके संबंध में ज्ञान बीन का कार्य ठा कुछ हुआ ही नही था। इस लक्ष्ये बलत हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का अथक लागत किया जाना चाहिये।

## प्रस्तावना

राजस्थान प्रशासन से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहाँ अधिक राजनीतिक उथल-पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहाँ शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहाँ राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समानाधिकार करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी नदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विजयपुर, जोधपुर, गीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, डूंगरी, कोटा, प्रतापपुर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहाँ के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनवृत्तता एवं सेवा के कारण नदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुगन्धि एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहाँ के शासकों ने एक समाज के सभी वर्गों में उस और बहुत ही रुचि दिखलाई इसलिये संकटों की समस्या से नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का खतना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भण्डारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भण्डारों में मिलेगा। ताडपत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई मगध में प्राचीन प्रतिष्ठा इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध होती है। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिभाष साहित्य इन्हीं भण्डारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भण्डार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरी एवं भरतपुर के भण्डार भण्डारों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भण्डारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहाँ से ग्रन्थों को बटोर कर इनमें अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भण्डार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भण्डारों को ४ श्रेणियों में बाँट सकते हैं।

१ पाँच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भण्डार

२ पाँच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भण्डार

- ३. एक इबार से कम एवं पंचसौ से अधिक प्र ब वास शास्त्र मंत्रार
- ४ पंचसौ प्र बों से कम वास शास्त्र मंत्रार

इन शास्त्र मंत्रारों में केवल धार्मिक साहित्य ही ब्रह्मण्य नहीं होता किन्तु काव्य, पुरुष ज्योतिष, आनुवंशिक, गर्भण्य आदि विषयों पर भी प्र ब मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कला कव्यानी एवं माटक भी इनमें सम्मिलित होते हैं। वहीं नहीं सामाजिक राजनीतिक एवं व्यवसायिक पर भी मंत्रों का संग्रह मिलता है। कुछ मंत्रारों में अनेक विद्वानों द्वारा लिखे हुये ब्रह्मण्य मंत्र भी संग्रहित किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र मंत्रार लोक करने वाले विचारधियों के विषय रोचक संस्त्रान हैं जेकिन मंत्रारों में साहित्य की इतनी सम्पत्ति मिलती हैते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक वे विद्वानों के पूर्ण के बाहर रहे। अब कुछ समय बहला है और मंत्रारों के व्यवस्थापक मंत्रों के विज्ञान में अपनी योग्यता नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में लोक में हीम विद्वानों के विषय है। आज के २० वर्षों पूर्व तक राजस्त्रान के ३ प्रतिष्ठित मंत्रारों को न तो किसी भी विद्वान ने देखा और न किसी अनेक विद्वान ने इन मंत्रारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १ १२ वर्षों से इतर हुये विद्वानों का ध्यान आकाश हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्त्रान के ५२ के करीब मंत्रारों को देखा है और रोचक मंत्रारों को रचने की योजना बनाई का चुकी है।

वे मंत्र मंत्रार प्राचीन पुरा में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किये करते थे। इस समय इन मंत्रों की सूचिका भी ब्रह्मण्य हुआ करती थी तथा वे मंत्र ब्रह्मण्य के पुत्रों के बीच में रखकर सूत प्रबन्ध सिद्ध के पीठों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के थैलों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार मंत्रों के वैज्ञानिक रीति ध रणें जान के कारण इन मंत्रारों में ११ की शताब्दी तक के लिखे हुये प्र ब पाये जाते हैं।

किसी कि पहिले कहा का सुध है कि वे मंत्र मंत्रार अगर प्र ब एवं मंत्रों तक में पाये जाते हैं इसलिसे राजस्त्रान में उनकी वास्तविक संख्या घटती है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी कई अनुमानत छोटे बड़ २ मंत्रार होंगे जिनमें ११, २ कास से अधिक इतकलिखित मंत्रों का संग्रह है।

जबपुर प्रारम्भ से ही अनेक संस्कृत एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १४ से भी अधिक जिन मंत्रार एवं ब्रह्मण्य हैं। इस अगर की स्थापना संवत् १५५४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा कसी समय आमेर के राजा जबपुर का राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राजकीय पोलीतान की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्त्वपूर्ण इतकलिखित मंत्र संग्रहित किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान थे। इन्होंने क्रिमे ही मंत्र लिखे थे। इनका लिख्य हुआ एक मंत्र संगीतकार जबपुर के बड़े मंत्रार के शास्त्र मंत्रार में संग्रहित है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छावड़ा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी) नन्दलाल छावड़ा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गईं।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भण्डारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भण्डार यहां के प्रमुख शास्त्र भण्डार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ब भण्डार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भण्डारों का सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

### १. शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी ( अ भण्डार )

यह भण्डार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय<sup>१</sup> भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जौधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अत्यन्त कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भण्डार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भण्डारों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भण्डारक भी यहीं आकर रहने लगे। भण्डारक ज्येष्ठकीर्ति सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः सन् १८१५,

१८२८, १८३३, तथा १८३६ में बहीं पशुमिपक<sup>१</sup> हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्बन्ध रहा।

भारत में बौद्धों का शास्त्र मंदार मठार्यों की बेल बेल में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। बौद्ध शास्त्रों की सिम्बल लिखवान की भी अच्छी व्यवस्था की इसलिये भाषकों के अनुरोध पर बौद्धों की प्रतिक्रियाएँ भी होती रहती थी। मठार्यों का जब प्रभाव क्षीय होने लगा तथा जब ये साहित्य की ओर ध्यान दिलवाने लगे तो बौद्धों के मंदार की व्यवस्था भाषकों ने संभाल ली। इन्हीं शास्त्र मंदार में संग्रहीत ग्रंथों को वेदान्त के परभाव का जना चलता है कि भाषकों ने शास्त्र मंदार के ग्रंथों की सरवा वृद्धि में विशेष अभिरुचि बड़ी निकलाई और उन्होंने मंदार को उसी भाषा में सुरक्षित रखा।

### इस्तित्वित ग्रंथों की संख्या

मंदार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५० तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। अर्थात् एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिए गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस मंदार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। महाभारत, स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक भाष्यकीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुए हैं। इसी मंदार में कपड़े पर लिखे हुए कुछ अन्वृत्तीय एवं अर्धवृत्तीय के चित्र एवं चन्द्र, मंत्र आदि का उत्कलनीय संग्रह है।

मंदार में महाभक्ति पुष्पदन्त वृत्त अस्त्रारिच (स्योवर अरिच) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में बनारसपुर गुर्ज में लिखी गई थी। इनके अतिरिक्त बौद्धों की १५ की, १६ की, १७ की एवं १८ की शताब्दी में लिखे हुए ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन ग्रंथों में गोमटेश्वर जीवार्थच, तत्त्वार्थ सूत्र (सं १४२८) इन्द्रसुहृद् वृत्ति (महादेव-सं १६३५), लक्ष्मणचचार दोहा (सं १४४५), सर्वसंग्रह भाष्यचचार (संवत् १४४७) भाष्यचचार (शुभमूपाचार्य संवत् १४६९), समस्मार (१४६४), विद्यानिष्ठ वृत्त अस्त्रारिच (१५११) अष्टपुराण टिप्पण प्रभावच (सं १४०५) शांतिनाथ पुराण (अस्त्रारिच सं १४२२) ऐतियह अरिच (अस्त्रारिच सं १६३६) मण्डुकार अरिच (मस्त्रियेन अरिच सं १४६४) भांग अरिच (वज्र माय देव सं १४६४) जवकार भाष्यचचार (सं १६१९) आदि सौकों ग्रंथों की उत्कलनीय प्रतियाँ हैं। ये प्रतियाँ सम्पादन कार्य में बहुत कामगम सिद्ध हो सकती हैं।

### विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र मंदार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी गुरुच, अरिच, अस्त्र, तथा अष्टपुराण, आनुवेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी





पंडितकेरवमनश्रलपमतिनोदिवमानेनौहैप्रथम  
 परसभाभाकेमोहीवीचेवतलोकयापहसेसेनोही  
 सवगिदधकीबनिनश्रवेधनोइहजीवेधरतनी  
 श्रवसिमेवकरनीसुभभाअधीहोमोइहनेजीसनी  
 चतुरसुभनौतसोहिलोतजिउरधारीसेवनेनोसुध  
 रजातिहमअकितकारीसागवाडहेवासाश्रसकेभा  
 निधलेसोसमिसदिधसीलोकधरेकेसुभकेरी  
 जिननेश्रायहेकरिकहीकुनिदोलजिकेमनमैवसी  
 सीससुभनेभाअकीनीइहेकेबाहेनौरसीगाकेके  
 सहेहसीजुवेसुश्रभाउभसासातिधरोइनगर



वारपदासुकलेनुसुभभासोतीनैपहरसुरहश्रंष  
 सुभपूरणहवाश्रीजिनधर्मप्रभासकेलभवचमने  
 श्रौनेदोविरधोउगतमाहीजोसगबंददिवोकताति  
 शीभयानिकेदियेमेंनवरसवरणनेतेभरागणश्रुतिजोनी  
 वधरंस्वामिचरित्रंभूणसुभभवतकल्पाएणसुभा

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों तुमखे इन्होंने गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद्यों का भी इन गुटकों में एक स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद्य लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये हम नृपति में भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद्य आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पद्यों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कवीर, सूरदास, मल्हराम, आदि कवियों के पद्यों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

### अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का सक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में प्रतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद्र का मुनिमुत्रत द्यद, आशाधर के शिष्य विनयचंद्र की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत खेमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिप्रधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण तथा, विमल सेन की सुगवदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (स १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का ममोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, ब्रूचराज का सुनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएँ हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्वकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेद्यों में रखे हुये हैं।

### २. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन धड़ा तेरहपथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र मंत्रा इती मन्दिरे में बाबा दुलीचन्द्र द्वारा स्थापित किया गया था इस विषय इस मंत्रा का उन्ही के नाम से पुष्परा जाता है। दुलीचन्द्रजी बम्बुर क मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महापुरु के पुत्रा विस के उत्तरन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे बम्बुर इतिहासिक ग्रन्थों के साथ काम करते हुये भाग्य और उन्हीं ग्रन्थों की सुरक्षा की दृष्टि से बम्बुर को उचित स्थान जानकर वही पर शास्त्र संभालकर स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र मंत्रा में २५ इतिहासिक ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्द्रजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने क परभाव संभलीत किये गए क। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुए हैं तथा कुछ भावकों द्वारा उन्हे प्रदान किए हुए हैं। क एक बौद्ध साधु के समय की बात बयान करते थे। प्र यों की सुरक्षा बखाने खाति ही उनके बीच क एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी विसका बिलुप्त बर्तान बौद्ध धर्म क वर्णन में किया है। क संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस मंत्रा में संभलीत हैं।

एक शास्त्र मंत्रा पूर्णत रूपलिखित है तथा सभी ग्रंथ भाग्य बल्लग बन्तों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार बन्तों में बधा हुआ है। ग्रन्थों की ऐसी सुरक्षा बम्बुर के किसी मंत्रा में नहीं मिलेगी। शास्त्र मंत्रा में मुख्यत संस्कृत एवं हिन्दी क ग्रंथ हैं। हिन्दी क ग्रंथ अधिकांशत संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। जैसे तो भाग्य सभी विषयों पर खां ग्रंथों की प्रतिबंध मिलती हैं इन्किन मुख्यत पुण्य, कथा करिव धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का खां अधिक संभव है।

मंत्रा में आप्तनीमंसाहृति (या विधानम्) की सुन्दर प्रति है। किराकुराप टीका की संभव १५३५ की खिली हुई प्रति इस मंत्रा की सबसे प्राचीन प्रति है जो बौद्धग्रन्थ में सुस्तान तथा सुरीन क ग्रन्थ में लिखी गई थी। तत्पार्थम्भ की स्वयंमयी प्रति बरौनीय है। इसी तरह बर्दा गोम्पटसार, क्लोकरसार खाति कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतिवा हैं। ऐसी अच्छी प्रतिवा बहाविन् ही बुरारे संशरो में बहने को मिलती हैं। क्लोकरसार की खचित प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पमाकाक चौबरी क द्वारा लिखी हुई बाबुराम हन बाबुराम पूरा की प्रति भी ( सं १५५५ ) बरौनीय ग्रंथों में से है।

१६ की श्याम्पी क प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् प पमाकाकजी संघी का अधिकांश साहित्य खां संभलीत है। इसी तरह मंत्रा के संस्थापक दुलीचन्द्र की भी खां सभी रचनायें मिलती हैं। कम्पेकनीय एवं महापुरुयें ग्रंथों में बल्लु अधि का प्राहलक्षणकोय, विज्ञापनम् की डिस्त्रिधान काय्य टीका बाबिचन्द्र सूरी का पचनन्त काय्य, जानाबौर पर मध्यिकात की संस्कृत टीका गोम्पट सार पर सचन्द्रमूयन एवं बर्मचन्द्र की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनायों में देवीसिंह बाबबा हन

उपदेशरत्नमाला भाषा (म० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (मं० १७८७) दत्तपति जैसवाल की मन-  
मोहन पचविंशति भाषा (स० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदों का भी अच्छा  
संग्रह है। इन कवियों में मारणरुचन्द, हीराचन्द, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एव जयचन्द छावडा  
के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

### ३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर ( स भंडार )

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चादपोल बाजार  
में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया या इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन  
एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा प० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई  
थी। पण्डितजी जोधनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि  
ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति सवन् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले प० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य  
प० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान् ज्योतिष, अयुर्वेद, मन्त्रशास्त्र, पूजा  
साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहाँ इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है।  
भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों  
की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक  
प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियाँ हैं। सबसे  
प्राचीन प्रति पद्मनन्दपचविंशति की है जिसकी सवन् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय  
ग्रंथों में प० आशाधर की आराधनासार टीका एव नागौर के भट्टारक च्चेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपथामडलपूजन  
उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचन्द के लिये की  
थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवश काव्य की भंडार  
में स० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शातिकुशल का अजनाराम एव पृथ्वीराज का रूक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ  
हैं। यहाँ विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह  
का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

### ४. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ( ग भंडार )

यह मन्दिर धौली के कुआरा के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मन्दिर'  
के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ छोटा

समयमालीन विद्वानों में संनक्षत्रराम, गुन्गानीराम, जयचन्द्र टाण्डा टाण्डाराम । मन्मथलाल किन्तुष्य स्वरूपचन्द्र बिलासरा के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों पर सहयोग से वे ग्रंथों का इन्धन समझ कर सके होंगे । प्रविण्यसोतचतुर्वेदीश्रवणायानन सं १८७७, गान्धतस्वर सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८८, अत्र ब्रह्मसिद्धि सं १८८९ आदि ग्रंथों की प्रतिनिधित्व करवा कर इन्होंने भंडार में बिराजमान की थी ।

भंडार में अधिग्रहण संमह १६ बी २ बी शताब्दी का इ किन्तु कुल ग्रंथ १६ बी एवं १७ बी शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूष्यचन्द्राचार्य	अपसोद्धारस्तोत्र	र का सं० १२२३	संस्कृत
पं० आभरेव	लक्ष्मिविधानकथा	सं १६७	"
अमरदीप्ति	पद्ममौपदेशरत्नमाला	स १६२२	अपभ्रंश
पुष्पपात्र	सर्वार्थसिद्धि	सं १६२४	संस्कृत
मुपपन्न	प्रोपर चरित्र	सं १६३	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिब्रह्म	नेमिब्रह्म पुराण	सं १६४६	संस्कृत
शोभराज	प्रश्नचनसार भाष्य	स १७३	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में लज्जपाल कविद्वय समकालिण्यार्थ चरित्र ( अपभ्रंश ) तथा हरचंद्र गदवाह कृत सुकृत्यार्थ चरित्र भाष्य ( र का १६१८ ) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

### ८. वि जैन मन्दिर गोधों का जयपुर ( जू भंडार )

गोधों का मन्दिर भी बालों का रास्ता, बागोरियों का चौक जोहरी बाजार में स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ बी शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के परंपरा ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहां संग्रहण के मन्दिरों में से भी जाय गये थे । वर्तमान में यहां एक मुख्यचरित्र शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ इस्तख़ि़रित ग्रंथ एवं १३ गुटक हैं । भंडार में पुराण चरित्र कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिग्रहण ग्रंथ १७ बी शताब्दी से लेकर १६ बी शताब्दी तक के किन्हीं हुए हैं । शास्त्र भंडार में प्रतकथाकथा की संख्या १२८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहां हिन्दी एकाग्रकों का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न एकाग्रकों महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सख्त ही में नहीं मिलती हैं ।

विष्णुसामयिकपद्याक	ठन्पुर कवि	हिन्दी	१६ बी शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	" "
ग्रीठ एवं आदिनाम स्तवन	पराह कवि	"	" "

नेमीश्वर चौमामा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,	"	" "
नेमीश्वर राम	मुनि रतनकीर्ति	"	" "
नेमीश्वर हिंडोच ना	"	"	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	,	२० वा० १७१६
चतुर्वेदीयथा	टालूगाम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के षट्ठों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बृच-राज, डीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। सन् १६०६ में रचित हू नरवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम द्वाग मिला है। सन् १८३० में रचित हूचड नगवाल कृत पञ्चकन्याएक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

सरसृत ग्रंथों में इमारगामि विरचित पञ्चपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उनका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संप्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण स० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित स० १६५०, विदग्धमुखमंडन स० १६८३, मारस्वत दीपिका स० १६५७, नाममाला (वनजय) स० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) स० १६५३, समयसार नाटक (वनारसीदान) स० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

### ६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर ( ज भंडार )

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के उद्देश्य समय पश्चात ही यहा शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा संग्रह कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८वीं शताब्दी एवं उनके बाद की शताब्दियों के लिखे हुए हैं। संग्रह नामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभाष्य पत्रिका स० १५६४, ५० त्रेयी-चन्द्र कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार स० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत स० १६२८, जेजवमिश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित है।

### १० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर ( भ + डाग )

विजयराम पाड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जदपुर वमने के समय का ही बना हुआ जान पडता है। यह मन्दिर

सा शास्त्र मंडार है जिसमें केवल १ = हस्तलिखित प्र य है। इनमें ७२ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत में  
 क प्र य है। समूह, सामान्य है तथा प्रतिदिन स्नाय्याय के उपरोक्त में आने वाले प्र य है। शास्त्र मंडार  
 करीब १४० वर्ष पुराना है। अष्टादशवीं साह यहां अखंडी सम्भन हो गये है जिन्होंने कितने ही प्र य  
 लिखवाकर शास्त्र मंडार में बिराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये मंत्रों में यं अथवा अथवा  
 कृत आचार्य्य माया (सं १८२२) सुरप्रलम्ब कृत त्रिकोणमार माया (सं १८८४) शौलतणमकी अखंडीपाक  
 कृत आदि पुराण माया सं १८८३ एवं शीतल ओजिवा कृत होत्रिध्व चरित (सं १८८३) के नाम अत्यंतनीय  
 है। मंडार व्यवस्थित है।

५ शास्त्र मंडार दि बैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर ( ५ मंडार )

५ मंडार जौहरी बाजार माठीसिद्ध मोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संभवीत है।  
 यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र मंडार में १२ हस्तलिखित प्र य है  
 जिनमें बीरतन्त्रि कृत अन्तप्रम चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १२२४ माघमा बुदी ७ के  
 दिन लिखा गया था। शास्त्र समूह की दृष्टि से मंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही प्र य अत्यंतनीय  
 है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गुणमहाशय कृत अन्त पुराण (सं १६९) अष्टमिन्दास कृत हर्षिंदा  
 पुराण (सं १६४९) दीपचन्द्र कृत ज्ञानरत्न एवं ओजसेन कृत अराजकण्डया की प्रतियां अत्यंतनीय है।  
 श्री उग्रसीपाभ्यय की पञ्चत्रयिक शलक की टीका संवत् १२७६ के ही अग्रजन् मास की लिखी हुई है।  
 अष्टमिन्दास कृत अठार्वीस मूकगुणरास एवं बान कवा (हिन्दी) तथा अष्ट अक्षित का संसतिकरास अने  
 रानीय प्रतियों में हैं। मंडार में अक्षिपदक स्तोत्र, अक्षिपदक पूजा निर्वाणकाण्ड, अष्टाक्षिपक अक्षय्य  
 अर्थाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बाहर मुद्रा के बूटों से युक्त हैं तथा कवा पूर्ण हैं। जो केवल एक  
 बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र मंडार सामान्य व्यवस्थित है।

६ शास्त्र मंडार दि बैन मन्दिर संपीबी जयपुर ( ६ मंडार )

संपीबी का बैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विरल मन्दिर है। यह पीछरी मोरीखाना में  
 मद्राधीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण शैलान मू कारामकी संपी द्वारा कराया गया था। यं  
 मद्रादाक अर्चिसिद्धी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चबूती में साने एवं  
 अथ का बाय हा पटा है। यह बात ही सुन्दर एवं कवा पूरा है। अथ का देखा अथवा अथ वरुत ही  
 कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र मंडार में १७६ हस्तलिखित प्र यों का संग्रह है। सभी प्र य अथवा पर लिख  
 हुये हैं। अथवा प्र य १८ की वर्ष १६ की शताब्दी के लिखे हुए हैं। सबसे नवीन प्र य अनीधाराअथ  
 है जो संवत् १६६२ में लिखा गया था। इससे कवा अथवा है कि समाज में अथ भी प्र यों की प्रति

लिपिया करवा कर भडारों मे विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पचा-स्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो सवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भडार में प्राचीन प्रतिचों मे भ हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा सवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार सवत् १६१३, भ शुभचद्र कृत पाण्डवपुराण स १६१३, बनारसी विलास स० १७१५, मुनि श्रीचन्द्र कृत पुराणसार स० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भडार मे सवत् १५३० की किराताजुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा सवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद स० १७१६ की ही लिखी हुई भडार मे एक प्रति संग्रहीत है। इसी भडार मे महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णवालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भडार मे ६६ गुटके हैं। जिनमे भी हिन्दी एव सस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चद्रहसकथा स० १७०८, हरिदास की ध्यानोपदेश वत्तीसी ( हिन्दी ) मुनिभद्र कृत शातिनाथ स्तोत्र ( सस्कृत ) आदि महत्त्वपूर्ण रचनायें हैं।

### ७. शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर ( च भंडार )

( श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन )

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर मे स्थित है जो अमरचदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लवे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय मे दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह षडे दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एव कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पय आम्राप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां सस्कृत ग्रंथों का विशेषत पूजा एव सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

सस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एव सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके



समकालीन विद्वानों में से नवव्युत्पन्न गुणाधीराम, जयचन्द्र काव्यज्ञा आह्वयम् । मन्दासाह लिम्बुध  
स्वरूपचन्द्र विद्यासा के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इत्यन्त  
संग्रह कर सके होंगे । प्रकियसांतचतुशरीश्रवोद्यापन सं १८७७, गोम्मतसार सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८७,  
अत्र ब्रह्मसिंह सं १८८९ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवा कर इन्होंने मंडार में विराजमान की थी ।

मंडार में अविचार्य संग्रह १६ बी २ की शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ बी एवं १७ बी  
शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूर्वचन्द्राचार्य	अपसर्गहरस्तोत्र	हे का सं १२४३	संस्कृत
पं० आश्वमेध	अभ्युविद्यानकथा	सं १६०७	"
अमरश्रीति	पटाकर्मोपदेशरत्नमाला	स १६२२	अपभ्रंश
पूष्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं १६३४	संस्कृत
सुम्भन्त	परोपर चरित्र	सं १६६	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिब्रह्म	नेमिनाथ पुराण	सं १६४६	संस्कृत
बोचराज	प्रवचनसार भाषा	सं १७३	हिन्दी

आज्ञात धृतियों में तेजपाह अविद्युत समवर्जिणप्याह चरित्र ( अपभ्रंश ) तथा इतरार्थ रत्नमाल  
कृत सुम्भन्त चरित्र भाषा ( र का १६१८ ) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

### ८ दि जैन मन्दिर गोधों का वपपुर ( क मंडार )

गोधों का मन्दिर भी वहाँ का रास्ता न्यागोरियों का चौक चौहरी बाजार में स्थित है । इस  
मन्दिर का निर्माण १८ बी शताब्दी के पूर्व में हुआ था और मन्दिर निर्माण के परभाव ही वहाँ स्थलों  
का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ वहाँ संग्रहण के मन्दिरों में से भी छाये गये  
थे । सर्वप्रथम में वहाँ एक सुम्भन्तस्थित शालग्रमंडार है जिसमें ६१६ इत्यखिलित ग्रंथ एवं १२ गुटके  
हैं । मंडार में पुराण चरित्र कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अविचार्य ग्रंथ १७ बी शताब्दी  
से लेकर १६ बी शताब्दी तक के किये हुए हैं । शालग्रमंडार में ब्रह्मशास्त्रोपा की संस्कृत १२८६ में  
लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । वहाँ हिन्दी रचनयनों का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न  
रचनयनों में प्रत्येक ग्रंथों में सहज ही में गरी मिलती है ।

त्रिभुवामुखिजपपाह	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ बी शताब्दी
सीमन्त स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाम स्तवन	पद्म कवि	"	" "

नेमीश्वर चौमामा	सुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,	"	" "
नेमीश्वर रास	सुनि रतनगीति	"	" "
नेमीश्वर हिंडोल ना	"	"	" "
द्रव्यसमग्र भाषा	हेमराज	,	२० का० १७१६
चतुर्वशीकथा	डालू राम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के प्रतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा समग्र है। इनमें बृचराज, दीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, सुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विंगेपत उल्लेखनीय हैं। सवत् १६२६ में रचित छू नरनवि धी होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिम्का परिचय प्रथम बार मिला है। सवत् १८३० में रचित हरचद गगवाल कृत पचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

सरकृत ग्रंथों में डमारवामि विरचित पचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उक्त पाठ उद्धृत किया गया है। भडार में सम्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण स० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित स० १६५२, विदग्धमुखमडन स० १६८३, सारस्वत दीपिका स० १६५७, नाममाला (धनजय) स १६४३, धर्म परीक्षा (अमितनाति) स १६५३, समयसार नाटक (वनारसीवास) स० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

### ६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर ( ज भंडार )

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय परचात ही यहा शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा सकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। समग्र सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभञ्जव्य पत्रिका स० १५६४, प० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार स० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मासृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित है।

### १० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर ( भ भंडार )

विजयराम पाड्या ने यह मन्दिर वच बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर वमने के समय का ही बना हुआ जान पडता है। यह मन्दिर

पार्श्वों का इतिहास तथा रामचन्द्रजी में स्थित है। यहाँ का शास्त्र मंडार भी कोई अच्छी दृष्टि में नहीं है। पत्तन से प्रथम कीया हां चुक है तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहाँ २७४ प्रथम एवं ७४ गुटके हैं। शास्त्र भंडार का देखते हुये यहाँ गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विरचमूषण की नमीरवा की इहरी पुस्तक की नेमिनाथ पूजा स्वामि कवि की तीन चौपीसी चौपाई (१ वा १७४६) स्वोत्री-राग सांगली की कवचचन्द्रिका भाष्य के नाम ब्रह्मेतनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त गणपत्र हरिद्व, मनदान इत्यादि दुसुदाम्भ आदि कवियों के पद्य भी संग्रहीत हैं साथ सोष्ट हठ नरवावेति एवं अमुताम का राजनीतिशास्त्र भाष्य भी हिन्दी की ब्रह्मेतनीय रचनायें हैं।

### ११ ध्यास्त्र मंडार दि जैन मन्दिर पार्वनाथ अचपुर ( अ मंडार )

दि जैन मन्दिर पार्वनाथ अचपुर का प्रसिद्ध कम मन्दिर है। यह ललासबी का शाला की रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८५ में सारी गोत्र बाल किसी ब्राह्मण ने कराया था इतिहासे यह सोनियों के मन्दिर के साम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ एक शास्त्र मंडार है जिसमें ४४ प्रथम एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के मंत्रों की है। साहित्य सूरि हन चन्द्राव्य काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं १४४४ की छिली हुई है। यद्यपि मंडार में मंत्रों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अष्टाव एवं महत्त्वपूर्ण मंत्रों तथा प्राचीन प्रतियों का यहाँ अच्छा संग्रह है।

उन अज्ञान मंत्रों में अथवा रा भाषा का विचित्र तत्त्व हठ अजितनाथ पुराण कवि रामोदर हठ वेमिप्याह चरिप गुण्यमिदि हठ कीरनमि के चन्द्रप्रमथात्मनी पञ्चिध (संस्कृत) महापंडित अरत्ताव न्त नेमिनरम्भ लोत्र (संस्कृत) मुनि पद्ममिदि हठ ब्रह्म गान काव्य, रामचन्द्र हठ वल्लभचरित (संस्कृत) चन्द्रमुनि हठ पुराणसार (संस्कृत) इन्दीवत हठ मुक्तिपत्र पुराण (हि ) आदि के नाम ब्रह्मेतनीय हैं।

यहाँ मंत्रों की प्राचीन प्रतियाँ भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत हैं। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र सं	प्रथम भाग	संस्कार नाम	से. का. सं.	भाषा
१४३८	पटपात्र	या कुम्भकुम्भ	१४१६	प्रा०
२३४	ब्रह्म गानकाव्य	पद्ममिदि	१४१८	संस्कृत
१८६६	स्थापत्यमंत्रो	परिष्कारण सूरि	१४३१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विचर्यसिद्ध	१४८०	अथवा रा
२६८	वेमिप्याहचरिप	रामोदर	१४८२	"
२३२६	पशोवरचरित्र किल्लण	प्रयाचम्भ	१४८४	संस्कृत
११६	सागरपर्याप्त	आराधन	१४६४	

सूची की क्र सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिपेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२००६	सत्रचूडामणि	वादीभरिसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपड़े पर सन् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

## १२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर ( ट भंडार )

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १६४८ में जे. ए. शोध सस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावनों के मन्दिर के तथा बाबू हानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेंट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पवत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छद्मसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्धव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्ष्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत रनेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा वसीदास कृत रोहिणीविधिवथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

## ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

प्रथम सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये प्रथम ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करने का २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विभिन्न विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक बार जहाँ इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर संसारों को भरा है वहाँ दूसरी ओर साम्य चरित्र, पुराण कथा कोरा आदि लिख कर अपनी विद्वानता की छाप डाली है। आर्यों एवं साम्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूत्र सं सूत्र विषय का विरलेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूत्र सं सूत्र जैसा शास्त्र ही अन्य जनों में मिले सके। पूजा साहित्य लिखने में भी वे किसी से पीछे नहीं रहें। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर आर्यों को इनके जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। आर्यों की संस्थागतियों में सभी जन्मी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का सभी तथ्यता से बर्णन किया है। प्रथम सूची के इसी भाग में १२ सं अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने लक्ष सिद्धा है। तीर्थ-यात्राओं एवं राज्याक्रमों के महापुराणों का पाठन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं अन्य ग्रंथ लिखते हैं। प्रथम सूची में प्रायः सभी महापुराण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगम हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में बयान करने में जैन आचार्यों ने अपनी पांडित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन संसारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रकुर माध्य में लिखा है। वे कथाओं रोचक होने के साथ साथ शिक्षार्थ भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन संसारों में अच्छा साहित्य संश्लेषित है। गुणों में आयुर्वेद का तुलना का अच्छा संग्रह है। ऐत्यों ही प्रकार के गुणों दिव्य हुए हैं जिन पर जोर देने की आवश्यकता है। इस बार हमारे अग्रज एतों पर बलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त बर्णन किया है। जैन आचार्यों ने हिंदी में छोटे छोटे सङ्गों एतों ग्रंथ लिखे हैं जो इन संसारों संश्लेषित हैं। अनेकें अथ जिनवास के ५ से भी अधिक एतों ग्रंथ लिखते हैं। जैन संसारों में १५ की शताब्दी के पूर्व से एतों ग्रंथ निरन्तर उगते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथ-रचना करने की दृष्टि से संश्लेषित किये हुये इन संसारों में जैन विद्वानों के नाम स्पष्ट, तथा ज्योतिष आयुर्वेद, कोष नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संश्लेषण लिखा है। जैन विद्वानों ने अतिरिक्त, साथ साथ आदि मसिद्ध कथियों के अर्थों का संश्लेषण ही नहीं किया किन्तु उन्हें पर विलुप्त कीकरणों की लिखी हैं। प्रथम सूची के इसी भाग में ऐसे लिखने की कथाओं का संश्लेषण आया है। संसारों में ऐतिहासिक एत्यों में भी पर्याप्त संश्लेषण में लिखती हैं। इनमें महारक पद्मचक्रिनी महारक्यों के अर्थ, गीत चोमार्स बर्णन बंशोत्पत्ति बर्णन देहली के बादशाहों एवं अन्य एत्यों के एत्यों के बर्णन एवं बर्णन की बसावत का बयान लिखा है।

## विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने घृह्य साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, धीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, मकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकाएँ भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशविलक चम्पू, धीरनन्दि का चन्द्रप्रभावाव्य, वर्द्धमानदेव का वरागचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें अभी भी महाकाव्य के समकक्ष ठिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांश योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एम प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयम्भू, पुण्डित, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारम्भिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएँ मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो सन् १३४४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक सुमनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, वृचराज, ठंकरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहाँ अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेल, विहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कवीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र ग्रन्थ इस दृष्टि से अन्धा उदाहरण कहा जा सकता है।

## स्वयं प्रवचनों द्वारा सिद्धे हुए प्रयोगों की सूची प्रतिपाद

जैन विद्वान् मंत्र रचना के अतिरिक्त स्वयं प्रयोगों की प्रतिस्तिपिण्य भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये मंत्रों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की बरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति हैं। ऐसी पाण्डु लिपियों का प्राप्य होना स्वच्छ भाव नहीं है। लेकिन जयपुर के इन मंत्रारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्य हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	प्रवचन	प्र. सं. नाम	लिपि संवत्
८५८	कनककीर्ति के शिष्य सदाशिव	पुरुषोत्तम सिद्धपुपाय	१८००
१ ४२	रत्नकरचन्द्रभास्कराचार्य भाषा	सुप्रसन्न कासमीनाथ	१६२
६०	गोमन्तसार श्रीचन्द्रभास्कर भाषा	पं. टोडरमल्ल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	न्यमसाक्षा	पं. भारतमन्त्र	१६४३
३६४२	पंचमंगलपाठ	सुरप्रसन्नभास्कर	१८४४
५४३३	श्रीकण्ठ	बोकाराज गोरीनाथ	१०५
५३८२	सिद्धार्थ चंडिका	बल्लभराज साहू	१८३५
५०९८	गुणेश	टंकचंद्र	—
५६५०	परमेश्वर प्रवचन एवं कल्पसार	बाबूराज	—
६ ४४	श्रीपादश्रीस ठाण्य	श्यामसुन्दर	१६१३

### गुणेश का महत्त्व

रत्न मंत्रारों में हस्तलिखित मंत्रों के अतिरिक्त गुणेश की संस्कृत में होत हैं। साहित्यिक रचनाओं के संरक्षण की दृष्टि से वे गुणेश बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संस्कृत लिखे हुए कमी कमी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। मंत्र सूची में आये हुए बारह मंत्रारों में १२ गुणेश हैं। इनमें सबसे अधिक गुणेश का मंत्रार में हैं। अचिन्तना गुणेश में पूजा स्तोत्र एवं कवचों की मिलती हैं। इन्हें मन्त्रेक मंत्रार में गुणेश गुणेश ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अज्ञान पाठों का संभव होता है। ऐसे गुणेश का अ, ब, ग एवं ट मंत्रार में अथवा संरक्षण है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना विवरण श्रीपई का मंत्रार के एक गुणेश में ही प्राप्य हुई है। इसी तरह अथवा रा की लिखी ही कवचों अथवा विवरण, गुणेश, श्रीगुरु ठकुरसी पन्थ, मन्त्रार आदि प्राचीन लिपियों की रचनाओं में इन्हीं गुणेशों में मिली हैं। हिन्दी पत्रों के संरक्षण के ती व एकमात्र स्रोत है। अचिन्तना हिन्दी विद्वानों का एक साहित्य इनमें संरक्षित किन्तु गुणा होता है। एक एक गुणेश में कमी कमी ता ३ ४८ पर संभव किन्तु मिलते हैं। इन गुणेशों में ही ऐतिहासिक सामग्री अज्ञान होती है। पण्डितलिखित अन्त, गीत वंशानुलिखित बारशाही के विवरण अन्तों की बख्शत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों को कर्त्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही समझाल कर रखें जिसमें वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना घेष्टनों में बचे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आंझा देदी जाती है।

### शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गावों में जहा जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहा उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहा भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर उन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आंग्रे आने वाली सन्तति तो उन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही उन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी वस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहा रिसर्च स्फालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णत प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, फोटा, बू दी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, हूंगरपुर, प्रतापगढ़, वासवाहा आदि स्थानों पर इसके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में घेष्टन नहीं हैं तो कहीं बिना घेष्टनों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस



समय इत्यादि वह संग्रहालय बजपुर के इरानीय स्वामी से गिना जावेगा। प्रति वर्ष खेच्चों की संख्या में शोध विद्यार्थी आएंगे और बीच साहित्य के विविध विषयों पर काम कर सकेंगे। इस संग्रहालय में छात्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जाये और इसका पूर्ण प्रथम एक संस्था का अधीन हो। धारा है बजपुर का बीच समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और छात्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है। प्राचीन एवं अद्यतन ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियाँ दी गई हैं जिनसे विद्यार्थियों को उनके कर्ता एवं काल काव्य के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। ग्रन्थों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से ग्रन्थों के पूरे पाठ एवं श्रेय ग्रन्थों के कम्प्लेक्सनीय पाठ दिए हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके राज्यों का क्लेज के चार परिशिष्ट दिए हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुए किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र माहस किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२ ग्रंथों का क्लेज आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट सभी ग्रंथ सूत्र मय हैं तथा श्रेय कर्मी की प्रशस्ति हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने मय आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन ग्रंथकारों से किस किस ग्राम एवं नगरों में रहे हुये एवं कितने हुये मय संग्रहित हैं का ज्ञान जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियाँ किस प्रकार चलती थी इसका भी इतना ही हमें ज्ञान मिल सकता है। राज्यों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा महाराजा एवं वाराणसों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संक्षेप में इस प्रकार के क्लेज बहुत सामायिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में मय ग्रंथकारों के संचित परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के अन्त में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्त सूचियों से सम्पन्न तरह की अधिक जानकारी देने का पूरा प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक काम उठा सके। ग्रंथों के मय ग्रंथकर्ता का नाम, उनके राजस्थान, माया आदि के स्थान-स्थान एवंके आदि अन्त भाग पूर्वतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियाँ रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्यार्थियों से इत्यादि उद्दिश्य अपमान का अनुरोध है तथा यदि कभी कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इस कमियों को दूर किया जा सके।

## धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी वख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने प्रथम सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की सज्ज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। प्रथम सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी वज, समीरमलजी छावड़ा, पूनमचदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचदजी रावका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें प्रथम भंडार की सूचिया बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के प्रथम दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय प० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञाजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका प्रथम सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक प० परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देगकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा वासुदेवशरणजी सा अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने प्रथम सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर  
दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचद कासलीवाल  
अनूपचद न्यायतीर्थ

## प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

### १ अमृतचर्मरस काव्य

नाटक चर्मे पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं मङ्गरक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे कौटिल्य के पुत्र सायकनरास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं प्र बन्धर ने अपनी प्रशंसा निम्न प्रकार की है—

पट्टे भीडु बडु वाचार्थे तत्पट्टे भीसहस्रकीर्ति बल्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिरैव तत्पट्टे श्रीगुण  
रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री शृगुणचन्द्रदेवमहृषिपरिवृतमहाप्रथ कर्मव्यार्थ कौटिल्य सुत पंडित श्री सायकनरास  
पठनार्थ ॥ काव्य की एक प्रति अ मंडार में है। प्रति आद्युक्त है तथा अन्तमें प्रथम २ पृष्ठ लगी हैं।

### २ आप्यारिर्विक माया

इस रचना का दूसरा नाम पट्ट पत्र रूपक है। यह मङ्गरक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः मङ्गरक सङ्कलकीर्ति की परम्परा में हुए थे। रचना अथवा माया में निम्नलिखित है तथा अन्तकोटि की है। इसमें संसार की नरकाल का बड़ा ही सुन्दर बर्णन किया गया है। इसमें ३८ पत्र हैं। एक पत्र नीचे देलिये—

बिरला चाप्येति पुषो बिरला सेवति अल्पणो समि बिरला ससहायया परव्य परम्पुहा बिरला।  
ते बिरला जगि अलि अकिरि परवन्तु य इच्छति, ते बिरला ससहाय करि कइ विवर्णयि विच्छति ॥  
बिरला सेवति चापि विष्णु पिब वैद वसंतक, बिरला चाप्यहि अणु शुद्ध वैश्य गुणवंतक।  
अणु पचणु शुद्ध सहिषि सरपथ कुलु लचणु विषक, अणु पम पर्वपइ जिमुधि बुह गाह मरिजि जल्प विषक ॥

इसकी एक प्रति अ मंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आप्यार्य जेविचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

### ३ आरापमेश्वर प्रबन्ध

आरापमेश्वर प्रबन्ध में मुनि प्रमाचन्द्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रमा चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रमाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्ममन्त्रि जिन्होंने द्वारा विरचित 'बड प्राज्ञ पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रमाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देलिये—

श्रीमूचर्मये वरभारतीय गण्डे बहात्कारगम्यति रम्ये ।

श्रीडु बडुम्याप्यमुनीन्द्रंये जातं प्रमाचन्द्रनहाफीन्द्र ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्दमुनीश्वरेण ।  
अनुग्रहार्थं रचितं सुवाक्यै आराधनासारकथाप्रबन्ध ॥  
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च ।  
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

## ४ कवि वल्लभ

क भंडार मे हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे । विहारी सतसई पर टीका इन्होंने सवत् १८३४ मे समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य मे २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ मे लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

## ५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छावडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे । ये जिनदास के पुत्र थे । सवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहा कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेश, सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ मे १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों मे निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, सचई सकल बखान ।

गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

## चौपई

महाकठिन प्राकृत की वानी, जगत माहि प्रगटै सुखदानी ।

या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद माहि अभिलाषी ॥

श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खडेलवाल सावरा साखा ।

देवीस्थंघ नाम सब भाषै, कवित माहि चिंता मनि राखै ॥

भी सिद्धांत प्रवेशयोग्यं एतन्न्यूनं संवित् कर्ता ।  
 एष ह्युच्यते ब्रह्म ब्रह्म भूषितं सुमन्मथोमित विधिभर्ता ॥  
 विम सुखं के प्रकृत्य सेती तम विदाम विज्ञात है ।  
 इति परै परमात्म सुखानी विवत कधि प्रवदात है ॥

दोहा

सुखविधाने मत्परपत्नी, ब्रह्मस्यैव ब्रह्मवत्स ।  
 कुर्वति ब्रह्म प्रवीन मते, उच्यते ब्रह्म ब्रह्म ॥१६४॥  
 अथ एष सुखेन सी, विमं ईति अथ भीति ।  
 एषो मं न सिद्धांत सुम, अथ उच्यते सुखीति ॥१६५॥  
 अथैवै ब्रह्म ब्रह्मने, संवत् विद्वत्पराय ।  
 अथैवै सुखिप्रकारसी, शान्तिर्वैव सुखिनि समाज ॥१६६॥  
 म व कियो पूरुष सुखिनि मत्पर मत्पर मन्वरे ।  
 नै समये अको अरुष ते फरे मत्पर ॥१६७॥

शैवीया

एतन्ने वरि की तीर्ष कीर्षि की अरोध्वो एष म व ।  
 भादव वरि एतर्षि एष की अरोध्वो को वेव ॥  
 एष अरोध्वो आठ विष्य है किन्तु अरोध्वो अर्थि ।  
 वरि सुने मन्वरे विद्वत्पराय मीव अर्थि सुख ईति ॥१६८॥  
 इति शैवीयां विद्वत्पराय मन्वरे ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका का सम्बन्धपूर्ण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में विद्वत्पराय ने श्रीकृष्ण के विषय में किया है वह निम्न प्रकार है:-

‘अथ गोम्मटसारं मं व गोष्ठी ब्रह्म श्रीकृष्ण अर्थोक्त भाग्य मे है वसुं अमुत्तर सम्बन्धपूर्ण में संस्कृत टीका वगैरै ही विद्वत्पराय है ।

टीका का नाम गोम्मटविद्वत्पराय है विद्वत्पराय श्रीकृष्णार के मंगलाचरण में ही अरोध्वो किया है-

मुनि सिद्धं प्रणम्याह, नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।

टीका गुम्फटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिका ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्फटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३२३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आठ सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहरे ।

दशपंचशते वर्षे पद्मि संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशांसन-मुद्गाश्रतरनिवासि प्रवादिमदोघसिधुरसिहायमानसिहनदि  
मुनीन्द्राभिनन्दित गंगवशलतामराज सर्वेद्यानेकर्गुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लवेव महावल्लभ-महामात्य  
पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुरारत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिर्लयादिविविधगुणनाम समा-  
सादितकीर्तिकातश्रीमच्छामु ष्टारय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रशर्नानुरूपरूप महाकर्मभ्राभृतसिद्धान्त  
जीवस्थानाल्ख्यप्रथमखडार्थसप्रह गोम्फटसारनामधेय- [पंचसंभ्रहशास्त्रे प्रारंभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि  
श्रीमन्नेमिचन्द्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूत जीवकाड विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति  
शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक  
प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवद्वं मानातान् वृषंभादि जिनेश्वरान् ।

धर्ममार्गोपदेशत्वात् - सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥

श्रीचन्द्रादिप्रभात च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।

श्रीमद्गुम्फटसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥

श्रीमर्त शक्रराजस्य शांके वर्त्तति सुन्दरे ।

चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥

विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे ।

दशपंचशते वर्षे पद्मि संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

धर्मिके चारिते पक्षे ब्रह्मोदरार्थं शुभ दिने ।  
 शुके च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति मयमनि ॥ २ ॥  
 श्रीमच्छ्रीमूकसंज्ञे च संघाम्नाये सत्सङ्गये ।  
 क्वात्कपरे क्वात्कमे त्पक्षे सारस्वतामिधे ॥ ६ ॥  
 श्रीमत्सु ब्रह्म शास्त्रे सुरैरम्बके भवत् ।  
 पद्मादिनिधि दिव्यकनो महारक्षितचक्षुष ॥ ७ ॥  
 तत्सङ्गोमोक्षमाचरन् ब्रह्मोदरच शुभाधिक ।  
 तत्सद्व्योमचक्षुमीमात् विनर्षश्रमिभोगनी ॥ ८ ॥  
 तत्सङ्गे सङ्गुयैतु लो महारक्षपदेरवर ।  
 पंचाचारतवो निरुषं प्रयाचन्तो विदितेभिः ॥ ९ ॥  
 तत्सिन्धो धर्मचम्पूरच तत्कर्मप्रभुधि ब्रह्मा ।  
 तद्वाग्नाथे भवत मन्मथस्ते ब्रह्मर्षी पदात्तम् ॥ १० ॥  
 पुरे म्हापुरे रत्ने राजो म्हाप्रकाशके ।  
 पाठनीयोगत्रके बुधे सर्वदेवतास्वाम्यम्पूरयो ॥ ११ ॥  
 बान्नादिमिगु खेनु लः क्षुपामामिचक्षुष ।  
 तस्य भार्वा भवत् शस्य ह्यस्त्री चामिचानिध ॥ १२ ॥  
 तयो पुत्रः समाख्यातः पर्वताक्यो विचारकः ।  
 एष्यमात्तो जनै सेव्यः संभयारक्षुंकर ॥ १३ ॥  
 तस्य मात्सिन्ध सस्वाग्नी पर्वतभीति प्राप्तिध ।  
 हीन्नादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विध ॥ १४ ॥  
 प्रबन्धो विमहासाक्यो पूज्यमारक्षुंकर ।  
 तस्य भार्वा भवत्साग्नी वीचारेक्षितचक्षुष ॥ १५ ॥  
 बान्नादिगुणसंपन्ना द्वितीय च सुहागिणी ।  
 प्रबन्धायत्तु पुत्रः त्वात् तेजपात्तो गुण्यमिधो ॥ १६ ॥  
 द्वितीयो वैचरपाक्यो गुणमलः प्रसन्ननी ।  
 पतिव्रता शुभैतु लः माध्विवादिरीति च ॥ १७ ॥  
 पितृर्मलो गुणैतु लो दोहान्तमावृदीपकः ।  
 दोहारेण च त्वाभार्वा हीन्ना द्वितीयध ॥ १८ ॥  
 द्वितीयो इय निदिधौ सुयक्तिः ।  
 सिद्धान्तरात्मिधं दि शुभ्यद ॥

धर्मादिचद्राय स्वकर्मदानये ।  
हितोक्तये श्री मुग्दिने नियुक्तये ॥१६॥

### ७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की क्या हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिम्का वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप भ्रूणकार । पणघट पांणी भरण कौं, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चदनं विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अग्नि माफि जरिवौ भलौ, भलौ ज विप कौ पान । शील खडिगौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य सत्या १८८ है । रचनाकाल एव लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एव शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल<sup>१</sup> मेनारियां ने इसका रचना काल स १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकापचमी<sup>२</sup> कथा भी मिलता है । अभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भट्टार ह नरपुर में प्राप्त हुई है ।

### ८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को सवत् १६६२ में समाप्त किया था । रचना में

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र भट्टारो की प्रथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६



सेठ पारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। एचन्य चौपई वर्ष बूढ़ा वृद्ध में है लेकिन उम्र भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम पारुदत्तदास भी है।

कल्याणकीर्ति १० वीं शताब्दी के विद्वान् थे। जब तक इनकी पारबनाय<sup>१</sup> रासो (सं १६१०) बाबनी<sup>२</sup> बीरावलि पारबनाय स्वचन (सं ) मन्मथ स्वचन (सं०) तीर्थहर विमती<sup>३</sup> (सं० १७२३) आरी रवर<sup>४</sup> बयाबा आदि एचनार्यो मिश्र जुकी है।

## ६ आरासी आविजयमास

अथ विनदत्त १३ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। य संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रमुख विद्वान् थे तथा इन दोनों ही माध्यमों में इनकी ६० से भी अधिक एचनार्यो उपलब्ध होती हैं। अण्पुर के इन भंडारों में भी इनकी अमी किंवदन्ती ही एचनार्यो मिश्री है जिसमें से चौपसी आविजयमास का बर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौपसी आविजयमास में माझा की बोली के अक्षर में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन आतियों का प्रामोस्लेख किया है। माझा की बोली बढाने में एक आति से दूसरी आति वाले व्यक्तियों में बड़ी अनुकूला जाती थी। इस अक्षराक्षर में सबसे पहिले गोझालार अन्त में अद्युय जैन व्याक आति का बस्लेख किया गया है। एचना पवित्रासिद्ध है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। अथ विनदत्त ने अण्पुर के अन्त में अपना प्रामोस्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते सम्फिट बंठरु क्यु गुण सुचरु, मय्य सुणो छमे एचमनि।

अथ विजयमास मास विबुध मन्मथै, पई गुणै जे बम्म धनि ॥४३॥

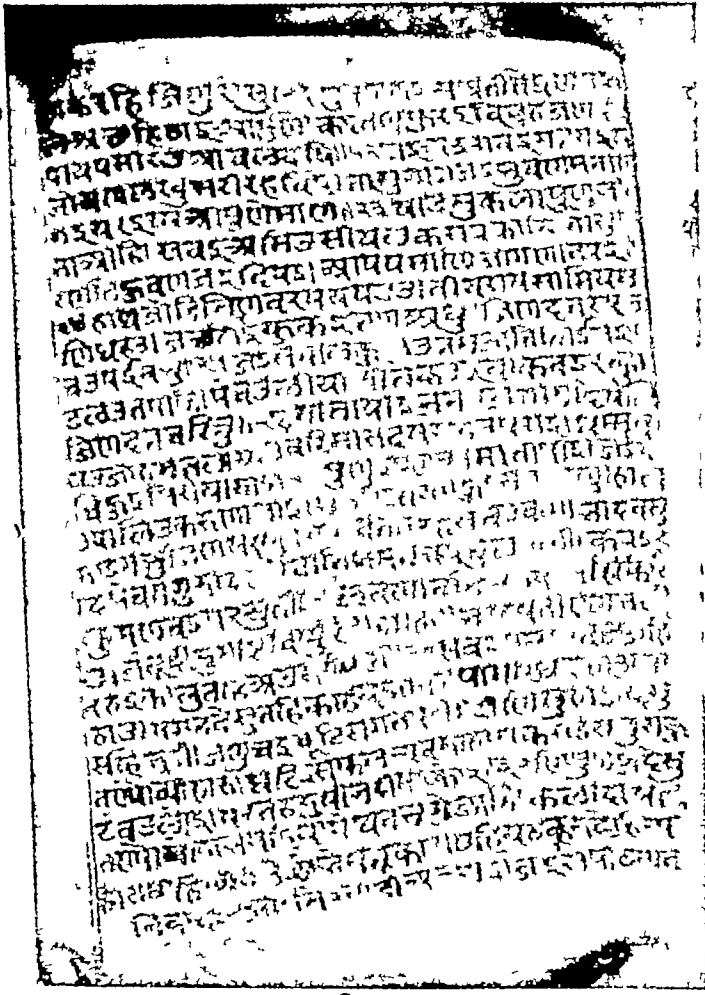
इसी चौपसी आति अक्षराक्षर समाप्त।

इति अक्षराक्षर के आगे चौपसी आति की दूसरी अक्षराक्षर है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

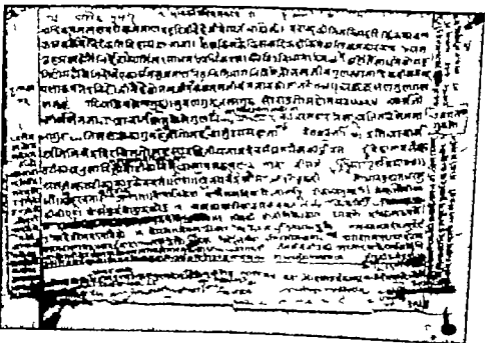
## १ विनदत्तचौपई

विनदत्त चौपई हिन्दी का आदिआखिक अक्षर है जिसमें एक कवि ने संवत् १३४४ (सं १३६०) भाद्रमा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१	राजस्थान जैन अक्षर भंडारों की ३ वीं सुची	भाग १	पृष्ठ ७४
२	"	"	पृष्ठ ११
३	"	भाग २	पृष्ठ १४१
४	"	"	पृष्ठ १४२



एक कवि द्वारा संन १३५७ मे रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनउत्त चौपई का एक चित्र —  
 पान्डुलिपि जयपुर के डि० जैन मन्दिर पाटोली के शास्त्र भण्डार मे मप्रहीत है ।  
 ( इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की प्रष्ठ सख्या ३० पर देखिये )



15 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित होबलमहबी द्वारा रचित एवं लिखित गोमटसार की मूल पाबहुर्जापि का एक चित्र ।  
 यह मध्य बङ्गुर के वि. बौन मंदिरपाटोरी के शास्त्र भण्डार में संग्रहित है ।  
 (सूची क सं ६७ ने सं ४०३)



संवत् तेरहसे चउवरणे, भाठव सुदिपंचमगरु दिरणे ।  
स्वाति नावत्त चट्टु तुलहती, क्वइ रल्लु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति ।  
पचउलीया आतेकउपूतु, क्वइ रल्लु जिणवत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई तथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरिउ ( सं १२७५ ) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानत चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५५४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिंगल आदि द्वीपों में गया था । उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहा से उसे अनेक अलौकिक विचार्यो एष राजकुमारिया भी प्राप्त हुई थीं । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

## ११ ज्योतिपसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिपसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहापुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥  
तीजो पसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि । इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

हरण क्यो वा अंस में, सोह दिन पित बारि । वा दिन कानी पची, जु फल बीते समविचारि ॥४७॥  
 लगन सिले त गिरह जो, वा पर बैठा भाव । ता पर के मूत्र मुख को कीजे पित बनार ॥४८॥

### १२ ज्ञानार्थक टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्थक संस्कृत भाष्य का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । त्वाम्भाष्य करने का अर्थ प्रिय होने के कारण इसकी भाषा प्रत्येक शास्त्र मंत्रादि में इत्यधिकृत मठिकां अपरुप्य होती हैं । इस एक टीका विधानम्बि के प्रिय भूतसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्थक की एक भाष्य संस्कृत टीका कल्पपुर के अ मंत्रादि में अपरुप्य हुई है । टीकाकार है व नवविद्यास । उन्होंने इस टीका को मुक्त समाचार ब्रह्माचारी के राजस्य मंत्री डोडरमल के सुत रिपिदास के स्वप्नाय एवं पठनार्थ लिखी थी । इस अपरुप्य टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्थकमूलसूत्रे बोगप्रदीपाधिकारे व नवविद्यासेन साह पाठ्य कल्पुत्र साह डोडर कल्पुत्र साह रिपिदासेन स्वप्नपद्यै रचिते जिनदासोद्यमन अद्यपितन इत्यस्मान् प्रकरण द्वितीये ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रारम्भ लिखी है—

शस्त्रम् साहि ब्रह्माक्षरीन्युरताः प्राप्य प्रतिपादयः ।  
 श्रीमान् मुक्तार्थसागर-शरि-विस्वोपधरोद्यत ।  
 नाम्ना कल्प इति मसिद्विद्वान् सदाश्रमोत्तरे ।  
 तन्मन्त्रीवर डोडरो गुणवुत सर्वाधिकाराभिव ॥१॥  
 श्रीमान् डोडरसाह पुत्र मितुया सदान्वितामणि ।  
 श्रीमान् श्रीरिपिदास परमन्त्रियः प्रामोक्तविश्वमिषा ।  
 तेनाह समादि मितुया न्ययपक्षीहाडय ।  
 शोत इतिमता परं सुविषया ज्ञानार्थकस्य कृत ॥२॥

उक्त प्रारम्भ से यह जाना जा सकता है कि मन्त्रादि अक्षरों के राजस्य मंत्री डोडरमल संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पारा था । स्वयं मंत्री डोडरमल भी कवि थे और इनका एक अर्थ 'अन्य तैरो मुक्त देखू जिनदास' जैन मंत्रादि में लिखने की शुरुआत में लिखता है ।

नवविद्यास की संस्कृत टीका का अन्त्येक पीठसंत ने भी लिखा है । लेकिन उन्होंने न्यमोक्तके के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । व नवविद्यास का विशेष परिचय अभी शोक का विषय है ।

### १३ बेमिदाह चरिए—महाकवि रामोदर

महाकवि रामोदर कृत बेमिदाह चरिए अपरुप्य रा भाषा का एक सुन्दर ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में दोष संविदा है जिनमें अगस्त्य नमिगाव के जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२५० में समाप्त किया था और निम्न दुर्घट अन्व ( एक प्रकर का दोहा ) में दिख हुआ है—

वारहसयाई सत्तसियाई', विक्कमरायहो कालह । पमारहं पट्ट समुद्धरणु, एरवर देवापालह ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एव महाशुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रथ की पद्धित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रथ की भाषा सुन्दर एव ललित है । इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनै शनै हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति ज भट्टार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

### १४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें सक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है —

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञ सार्व्व सर्व्वशुणावर । वीर नत्वा प्रवच्येऽह जीवद्रव्यादिलक्षण ॥१॥

जीवाजीवमिद द्रव्य युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्य द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पत ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है —

श्री कजकीर्त्तिसद्देवै शुभेदुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं । यह रचना ज भट्टार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

### १५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी क भट्टार में इस ग्रथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ़ प्रान्त के मेहूरागव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रथ का पद्यानुवाद संवत् १९३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एव नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।

मोक्ष की राह बनावत थे। अरु कर्म पहाड़ परै चढ़ाए,  
 विरहसुतस्य के आपक है ठाही, लक्ष्मि क हेत मनीं परिपूर।  
 सम्पददरौन चरित ज्ञान कहे, बाईं सरग मोक्ष के घूरा,  
 एत को कर्म अरा सरवाल सो सम्पददरौन मजहूर ॥१॥

अबि मे किन पदों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं—

जिसो अखीगढ जानियो मेहुगम सुभाम। मावीकाल सुपुत्र है कोणेकाक मुनाम ॥१॥  
 बीसवाळ कुज जाति है भोखी बीसा जान। बंरा इष्ठाक महान में कना कम्म मू धान ॥२॥  
 असी नगर सुभाष है सैनी संगठि पाव। उदकटाव भाई कलो सिकारणम् गुण काव ॥३॥  
 बंद भंज जानो नही और गणागळ सोष। कण्ठ मकि सुधर्म की बसी सुदधप माष ॥४॥  
 ता प्रमाव पा सूत्र की बंद प्रदिक्षा सिद्धि। भाई सु मवि अन सोभियो होव अगत प्रसिद्ध ॥५॥  
 संगळ की अर्हैठ है सिद्ध साव अपसार। विन मुठि मतवव अय यह मेठो विचन विचर ॥६॥  
 बंद बंध की सूत्र के किये सु सुधि अनुसार। मूकर्मव हू देखिके की जिन हिरदै धारि ॥७॥  
 अमास की आदमी पहको पक्ष निहार। अठसठि इन सख्त हो संवत रीति विचार ॥८॥

इति बंदवदसूत्र संपूर्ण।

संवत १६५३ बीच कृष्णा १३ बुधे।

## १६ दर्शनसार भाषा

नवमस नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नवमस विद्यावाचं ये जी मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरपुर (दिल्ली) आकर रहने लग गे। कुछ विद्वान के आतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नवमस हुये जिन्होंने किये ही संघों की भाषा हीन किली। दर्शनसार भाषा भी इसी का विद्या हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था। इसका एकलेख स्वयं अवि मे निम्न प्रकार किया है।

बीस अधिका अगणीस सै शाव कावण प्रथम श्रीवि रतिवार।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार भाषा नवमस विनी सुवत् ॥२६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का संघ है जिसे उन्होंने संवत् ६६ में समाप्त किया था। नवमस न इसी का पद्यानुवाद किया है।

नवमस द्वारा किये हुए अन्ध संघों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरवदभाषाचरित भाषा (संवत् १६२०), बीडर

कारणभावना भाषा ( सवत् १६२१ ) अष्टाहिकास्थ ( सवत् १६२२ ), रत्नत्रय जयमाल ( संवत् १६२४ ) उल्लेखनीय हैं ।

### १७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एव १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एव संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एव पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से प० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका सवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये —

साच कहता जीव के उपरिलोक दूखो वा तूपो । साच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदण्ड छोडि देता है वा जू वा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटक देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, साच बोला तो साच कहै ।

### १८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का सत्सिद्ध परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एव विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एव ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एव आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान् थे । भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

### १९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सक्कलीकीर्ति के अनुज एव उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान् ब्र० जिनदान से भिन्न विद्वान् हैं । इन्होंने प्रथम अगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

भवकमलमायड सिद्धजिण तिहुपर्निद सदपुज्ज । नेमिशसिं गुरुवीर पणमीय तियशुद्धभोवमहण ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निरुद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।



इति त्रिभिर्बसैश्चास्ति कथञ्चन न्यायार्थो बीभेसि चन्द्रस्य त्रिभिराच्यञ्चञ्चिन्नयास्तत्रिभिरचितं धर्मैर्पञ्च  
 विरातिश्च नाम ह्यत्रस्तस्यप्लवम् ।

### २ निशामसि

वहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनज्ञास की कृति है जो जयपुर के 'क' मन्डार में बन्दस  
 हुई है। एतन्व सोनी है और इसमें केवल २४ पद्य हैं। इसमें चौबीस तीर्थकरों की स्तुति एवं अन्व हस्ता  
 महापुरस्को का मनोस्त्रैक किया गया है। एतन्व स्तुति परक होते हुये भी आम्बस्मिक है। एतन्व का अर्थ  
 अन्व मात निम्न प्रकार है—

भी सन्ध्या जिनेश्वर वेच, हू तद्य पाव करू सेव ।  
 ह्ये निशामसि कहु सार, जिम जपक तरे संसार ॥ १ ॥  
 हो जपक सुये जिन्यासि संसार अचिर तू जासि ।  
 इहाँ एव नहि कोई बीर, ह्ये मन हृद करो निज भीर ॥ २ ॥  
 ग्या आदिस्वर जगीस्वर, ते सुगन्धा धर्म नितार ।  
 ग्या अचित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म ना भंग ॥ ३ ॥  
 ग्या संभव मच हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि पदमी ।  
 ग्या अमिर्नहन आनंद, जिने योष्यो मच नो बंद ॥ ४ ॥  
 ग्या सुमहि सुमति दातार, जिने एव मुमी जित्यो मार ।  
 ग्या पद्मप्रभ जगिन्नास ते मुक्ति तद्य नियस ॥ ५ ॥  
 ग्या सुपार्ष्ण जिन जगीस्वर, बसु पाव य एहिमा भार ।  
 ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिमुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

×            ×            ×            ×

ए निशामसि कहि स्वर, ते सफल सुख भंडार ।  
 जे जपक सुये ए चंग ते सौख्य पाव अमेग ॥ २३ ॥  
 भी सन्ध्यादीति गुरु व्याक, मुनि मुबनदीति गुलमगड ।  
 ब्रह्म जिनज्ञास अयोधर, ए निशामसि नवतार ॥ २४ ॥

### २१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र बारिचन्द्र जगन्नाथ कृत है। यह मयूरक नरमुनीति के शिष्य थे तथा हाहाउर्बिन्द  
 ( जयपुर ) के रहने वाले थे। यह एक इमली शैलाग्र पणजक ( कचसि मुक्ति नियन्त्रक ), सुख निपाक,  
 चतुर्भुजि संधान स्वायत्त हीन एवं शिव स्थापक स्वयं के चार मन्त्र इत्येव रूप थे। नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पाचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है —

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुल चित्तोत्सव च कृतात् ।  
पूर्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात् ॥  
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो ।  
शाश्वत् छीजगदीशनिर्मलहृदि प्राय सदा वर्ततात् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति न भण्डार में सम्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

## २२ परमात्मराज स्तोत्र

भण्डारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भण्डार में सम्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

## २३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूवल के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में सम्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ सधियों का विवरण है। आठवीं सधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्त रइय कइ तेजपाल साणद अणुसणियसुहद घूघलि सिवदास पुत्तेण  
सग्गगवाल डीजा सुपसाएण लब्भए णण अरविंद दिक्खा अट्टमसधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएँ सभवनाथ चरित एवं वराग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

## २४ पार्वनाथ चौपई

पार्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान् थे तथा बय्यहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल शासक औरंगजेब का शासन था। पारबनाब चौपई में १६८८ पर ई जो सभी चौपई में है। रचना सरस भाषा में लिखी है।

### २५ सिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माधन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूरत न्यून मात्रा संक्षेप विज्ञान भी है। माधन कवि का पिता जिनमल नाम गोपाल का स्वयं भी कवि थे। रचय्य में बोधा चौबोधा छप्पस सोरठा मन्मोहन हरिमासिध संतपाटी, माझवी बिलक कर्णवा समाधिध मुबंगजयत मन्मुमापिथी सारगिध तरंगिध भ्रमरावलि माझिनी आदि कितने ही छन्दों के उदाहरण दिये हुए हैं।

माधन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्व प्रति 'अ' मयवार का संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१ पृष्ठ पर दिया हुआ है।

### २६ पुण्यसप्तकका कोश

द्वैतचन्द्र १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अरतक इनकी २ से भी अधिक रचनायें प्राम्य हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं—

पञ्चपरमेष्ठी पूजा कर्मदहन पूजा तीनजोक पूजा (सं १८२८) सुष्टवि तरंगिणी (सं १८२८) सोडकधारण पूजा अमसनपत्र बधाम (सं १८२०) पञ्चकर्मनाथ पूजा पञ्चमेक पूजा हरण्णाय सूत्र गत टीका अम्यतल वातलकी आदि। इसके पद भी मिलते हैं जो अन्त्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

द्वैतचन्द्र के पितामह का नाम शीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। शीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि लखठेजवाह बीन थे। वे मूलतः बजपुर निवासी थे जिनके स्थिर साहित्यमें जाकर रहने लगे थे। पुस्तकसप्तककाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी बजपुर के 'क' मयवार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपदानपरिचय दिये हैं वह निम्न प्रकार हैं—

शीपचन्द्र छावर्मी मध, से जिनमनै किये रत धर ।  
 तिन से पुरस वस्तु संगपाक, कर्म खोन्प गयी धर्म सुहाव ॥ ३२ ॥  
 शीपचन्द्र तन तै तन मनो वाको नाम इखी हरि बीनो ।  
 रामकृष्ण तै जो तन वाक, हठीचंद वा नाम बरब ॥ ३३ ॥  
 सा स्थिर कर्म करै तै आस, साहिपुरै किये कीनी जाय ।  
 वहाँ भी बहुत अन्न बिन छान, जोबो मोह करै तै आनि ॥

साहिपुरा सुभथान मे, भलो सहारो पाय ।  
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥  
 नृप उमेठ ता पुर विषै, करै राज बलवान ।  
 तिन अपने भुजवलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥  
 ताके राज सुराज मै ईतिभीति नहीं जान ।  
 अवलू पुर मे सुपयकी तिण्ठे हरप जु आनि ॥  
 करी कथा इस ग्रथ की, छद वध पुर मांहि ।  
 ग्रंथ करन कछु वीचि मे, आकुल उपजी नाहि ॥ ५३ ॥  
 साहि नगर साह्य भयो, पायो सुभ अवकास ।  
 पूरण ग्रथ सुख तै कीयो, पुण्याश्रव पुण्यावास ॥ ५४ ॥

चौपई एव दोहा छन्दों मे लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रथ है । इसमे ७६ कथाओं का संग्रह है । कवि ने इसे सवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख है —

सवत् अष्टादश सत जानि, उपरि वीस दोय फिरि आनि ।  
 फागुण सुदि ग्यारसि निसमाहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे मे धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकरचंद ने सभवत इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

साधर्मी धनराम जु भए, ससंस्कृत परवीन जु थए ।  
 तौ यह ग्रथ आगरे थान, कीयो वचनिका सरल वखान ॥  
 जिन धुनि तो विन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय ।  
 तो प्राकृत मै करै वखान, तव सब ही सुनि है गुणखानि ॥ ३ ॥  
 तव फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई ।  
 फेरि अल्प बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्ति आदिक जोय ॥  
 तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सगल जु कीए ॥

२७ गारहभावना

प० रईधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्राय सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही लिखती है किन्हीं सव्य २ से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान के और सम्प्रदेश—गालियर के रहने वाले थे। बाद भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इतकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अग्रगण्यता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है—

अन कदापी ज्ञान की अननुन की मांदि । आपन्दी यै पाइए, सब देखै कट मांदि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं—

संस्कार रूप कोई बहुत मारी, मेहमात्र अज्ञान । ज्ञान दृष्टि धरि देखि सन ही सिद्ध समान ॥

× × × × × ×

बर्ष करौ बरम करि, किरिब बरम ब होय । बरम सु बाबत बहुत है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × ×

अन अरावन न्यान बरि, यदि बर्ष बलानत और । न्यान विधि बिन रूपै माहा तणी हु और ॥

रचना में रङ्ग का नाम कही नहीं दिया है केवल म व समाप्ति पर “इति श्री रङ्ग कृत बाह्य भाषया संपूर्ण” लिखा हुआ है किन्तु इसके रङ्ग कृत सिद्धा गया है।

## २० मुबनकीर्ति गीत

मुबनकीर्ति मङ्गरक सङ्गकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के परचात् ये ही मङ्गरक की गरी पर बैठे। राजस्थान के राजसूय मद्यों में मङ्गरकों के सम्बन्ध में लिखने ही गीत मिले हैं इनमें बृचराज एवं म ह्यमचन्द्र द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बृचराज ने मङ्गरक मुबनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुचरुका के सम्बन्ध में गुणानुशास किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे मुबन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बृचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान थे इनके द्वारा रची हुई अथर्वक पांच और रचनार्थ सिद्ध हुई हैं। पूरा गीत अविषक रूप से सूची के पृष्ठ १११-११० पर दिया हुआ है।

## २१ मृपासक्तुर्विशदितोत्रटीका

महा पं आराधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रभाव्य विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये किम्ब ही म व मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी मृपासक्तुर्विशदितोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अग्र्याय की लेकिन अब इसकी २ प्रतिषं बबपुर के द्य मंदार में अन्वय हो चुकी है। आराधर ने इसकी टीका अपने शिष्य शिष्य विमलचन्द्र के शिष्य

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है—

उपशम इव मूर्त्ति पूतकीर्त्ति स तस्माद् । अजनि विनयचन्द्र सच्चकोरैकचन्द्र ॥  
जगदमृतसगर्भा शास्त्रसन्दर्भगर्भा । शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाच ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिगी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एव शैली आशाधर के समान है।

### ३० मनमोदनपचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे समक्ष में हैं। ये अवागढ के निवासी थे। ५० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन सचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पाच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पचशती को कवि ने मघत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

वीर भये असरीर गई पट सत पन वरसहि । प्रघटो विक्रम दैत तनौ सवत सर सरसहि ॥  
अनिसइसत पोढशहि पोप प्रतिपदा उजारी । पूर्वापाढ नछत्र अर्क दिन सव सुखकारी ॥  
घर वृद्धि जोग मिछत इहम थ समापित करिलियो । अनुपम असेप आनद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सर्वैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पच परमगुर जेह । तिन पद पकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥  
नहि अधिकार प्रवध नहि फुटकर कवित्त समस्त । जुदा जुदा रस धरनऊ स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

भिन्न की प्रशसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

भिन्न होय जो न करे चारि वात कौं । उछेद तन धन धर्म मत्र अनेक प्रकार के ॥  
दोप देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै । कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारण रीति नहीं स्थापन की प्रीति जाके । जब तब बचत प्रशस्त पथर के ॥  
 दिख को वरार गिराहे जो पे के वरार । मति को सुन्दर गुन्नीसरे व वर के ॥१११॥  
 अंतरंग बाहिर मयुर जैसी किसमिस । बनकरवन को कुनेरवांमि वर है ॥  
 गुन के बधाय कू जैसे बन्ध स्वर कू । दुक वम बूरिने कू दिन बुपहर है ॥  
 वरार के सारिने कू हक बहू विवन्ध है । मंत्र के सिक्कावने कू मातों सुन्दर है ॥  
 ऐसे सार मित्र सौ न कीविय सुबाई कभी । बन मत्र तन सब बारि है वर है ॥११२॥

इस तरह मनमोहन पंचरती हिन्दी की कृष्ण ही सुन्दर रचन है वा शीम ही प्रथमजन योग्य है ।

### ३१ मित्रविज्ञास

मित्रविज्ञास एक संस्कृत ग्रंथ है जिसमें कवि वासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संक्षेप है । वासी के पिता का नाम बहादुरसिंह था । कवि ने अपने पिता एक अपने मित्र माणमल के आश्रय से मित्र विज्ञास की रचना की थी । वे माणमल संभवतः के ही विद्वान् हैं जिन्होंने वर्तमान शीकण्ड बालकण्ड आदि कथाओं लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८२ में समाप्त किया था जिसका अंशक ग्रंथ के आश्रय में निम्न प्रकार हुआ है—

कम रिपु सो तो जायें गति मैं पसीठ भिरपौ, ताही के प्रसाद सेती वासी नय पयौ है ।  
 माणमल मित्र वा बहादुरसिंह पिता मेरो, तिनकीछत्राव सेती प्र ब पे बनयौ है ॥  
 क मैं मूक बहू को हो सुधि सो सुचार लीओ मो पे हया दृष्टि कीव्यो माव न बनयौ है ।  
 विगनिव सतबान हरि को बहुर्य वन, पश्युय सुधि बीच गन मित्रगुण गयौ है ॥

कवि ने प्र ब के आश्रय में वर्तनीय विषय का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

मित्र विज्ञास महासुन्दर, बरसु बरसु स्वभाविक पेन ।  
 प्रगट हैलिने लोक संस्कार, संग प्रसाद अनेक प्रचार ॥  
 राम ब्रह्म मम को प्राणति होव, सग कुसंग तखो पख सोच ।  
 पुराण बरसु की भिरयव ठीक, हम कू करनी हे वरकीक ॥

मित्र विज्ञास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर हैं तथा पाठकों के मन को सुभाषने वाली है । ग्रंथ प्रथमजन योग्य है ।

वासी कवि के पद भी लिखते हैं ।

### ३२ रामासा—रयामविभ

एग रागनिधे फ निवद रागसाखा रयाम विभ की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखा के संरक्षणा में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कामिमखा उस समय वहा का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखान सुजान कृपा कवि पर करी।  
रागनि की माला करिवे को चित घरी ॥

### दोहा

सोम मान के वंश में उपज्यौ कासमखान।  
निस दीपग ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ मान ॥  
कवि घरनै छवि खान की, सौ बरनी नहीं जाय।  
कासमखान सुजान की अग रही छवि छाया ॥

रागमाला में भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागिनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्मुख मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

सवत् सौरहसे वरप, उपर वीते दोह।  
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ॥

### सोरठा

पोथी रची लाहौर, श्याम आगरे नगर के।  
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुख मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रथ श्याममिश्र कृत संपूर्ण ॥

### ३३ रुक्मिणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलवल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा



सखबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान पूजा के बहाने रक्षिणी का मन्दिर की ओर जाना, रक्षिणी का सौम्य बर्तन, श्रीकृष्ण द्वारा रक्षिणी का रथ में बैठाना कृष्ण शिशुपाल युद्ध बर्तन, रक्षिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं अनन्त द्वारिच नगरी का प्रस्थान आदि का बर्तन किया गया है।

उसो में दूध, फल, शोकर, न्याय काति संर आदि का प्रयोग किया गया है। उसो की भाषा राजस्थानी है।

### नारायण जातिछंद

आखंड मरीच सोहली त्रिमचणरूप मोहली ।  
 कर्ष भ्रांत मेचरी सुचक्र बरस पुपरी ॥  
 मज मजै मजक मजक, नबख इंस सामती ।  
 रवन हीर बड्य काम, खीर की अमोपरी ॥  
 भ्रममजै क बंद सूर सीस पूज साइए ।  
 वासिग बेजि छै काम सिरह मणिक मोइए ॥  
 सोचन मे रसहार, बडित कंठ में रुझे ।  
 अर्चय मोठि अडित कोठि, बडिक बडाहुजे ॥

### ३४ सम्मन्त्रिका

यह ज्योतिष का ग्रन्थ है जिसकी भाषा स्वोजीराम सौराष्ठी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम रं बलरुजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८०४ में समाप्त की थी। सम्मन्त्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अष्टाध्याय ग्रन्थ है। भाषा टीका में २२६ पद्य हैं। इसकी एक प्रति मठ मंदार में सुरक्षित है।

इसके किस्से हुने हिन्दी पद्य एवं कवित्त भी मिलते हैं—

### ३५ सन्धि विधान चौपई

कश्चि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें कश्चिबिधान ऋत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह ऋत चैत्र एवं मार्ग मास के दुसबान्त की प्रतिपदा द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाया है। इस ऋत के करने से वर्षों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीष्म जितेन्द्र नाम प्रथमवार मुन्ना का राजा है। कवि सौराष्ठी ( बरपुर ) के रहने वाले थे। वे कश्यपब्राह्मण बौत थे तथा गोवा इन्ध गौरा का। सौराष्ठी में इस समय ल्याम्बान एवं पूजा का श्रुत प्रचार था। इन्होंने इस संवत् १६१० ( सख १२६ ) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है —

सवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जवै ऊतरौ ।  
 उजल पाखि तेरसि तिथि जाण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥६६॥  
 वरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति ।  
 यह कथा भीपम कवि कही, जिनपुराण माहि जैसी लही ॥६७॥  
 सागानेरी वसै सुभ गाव, मान नृपति तस चहु खड नाम ।  
 जहि कै राजि सुखी सव लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥  
 जैनधर्म की महिमा वणी, सतिक पूजा होई तिहघणी ।  
 श्रावक लोक वसै सुजाण, साम संवारा सुणै पुराण ॥६९॥  
 आठ विधि पूजा जिगेश्वर करै, रागदोष नहीं मन में धरै ।  
 दान चारि सुपात्रा देय, मनिय जन्म कौ लाहौ लेय ॥७०॥  
 कडा वध चौपई जाणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण ।  
 जिनवाणी का श्रन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥७१॥  
 इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण ।

### ३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

### ३७ विपहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विप एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विपहरन विधि सतोप वैद्य की कृति है। ये मुनिहरण के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु ( जो स्वयं भी वैद्य थे ) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है—

अथ विपहरन लिख्यते—

रोहण—भी मनेस झरखी सुमरि गुर जन्तु चितसाय ।  
पेभयाक हुन्हरन को सुमति सुपुधि बताव ॥

बीतई

भी जिनअर्थ सुबाच बर्बाणि, इन्धो सोमाग्य त एह हरप मुनिबान ।  
इच झील बीती नीब दध आनि संवोप बीप काह तिहमनि ॥२॥

३८ प्रतकथाकोश

इसमें प्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३० से भी अधिक है। कथाकर पं रामो  
वर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही वर्मचन्द्र सूरि के शिष्य हैं। पेशा माक्स पढ़ाया है कि देवेन्द्रकीर्ति का  
पूर्ण नाम रामोवर वा इसकिय जो कथामें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थी इनमें रामोवर का  
लिख दिव्य है तथा खाबु बतने के परबान् जो कथामें लिखी इनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिवा गया। रामोवर  
का जन्मेत मन्म एव एकदश द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा माया मास एवं शौकी की दृष्टि से सभी कथामें कथाकार  
की हैं। इसकी एक अपूर्व प्रति का संहार में सुविधि है। इसकी दूसरी अपूर्व प्रति संवत् संख्या २२४३ पर  
है। इसमें ४४ कथाओं एक पाठ है।

३९ प्रतकथाकोश

महाराज सत्कथाकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रथम विद्वान् थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत  
प्रथम लिखे हैं जिनमें आदिपुराण मन्मथमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, परीवर चरित्र, कथ मान पुराण  
आदि के नाम बहसकतीय हैं। अपने कथारत्न प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई महाराज परम्परा को  
कामा दिव्य जिसमें ३० जिनरास मुचन्कीर्ति आद्ययुग्म, रामचन्द्र जैसे कथाकीर्ति के विद्वान् हुए।

प्रतकथा कोश सभी कथा रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अविचार्य कथामें कहीं का  
झाड़ विरचित है। कुछ कथामें अत्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथामें संस्कृत गद्य  
में है। मन् सत्कथाकीर्ति में सुतान्धवसनी कथा के अन्त में अत्यन्त नासोत्कृष्ट विन्म प्रहार क्रिय है—

अस्मद्युष्य स्तुत्यान् त्वर्ना मोक्षान् हेतु ।  
अन्वित रिणमार्गान्, सत्सुकम् पंचपुत्रान् ॥

रित्युन पत्न्येन वैश्वेने वा- अज्ञानीयत्वात् इति लिखितं दृष्टवान् एवं कथाकारोऽहम्—श्रीय जन्मेत कीर्तिक

त्रिमुघनपतिभन्वैस्तीर्थनाथादिमुल्यान् ।  
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाख्यै ॥

प्रति में ३ पत्र ( १४३ से १४५ ) वाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवत १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोश मे कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

### ४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी मे ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्याग भरना जानते थे और इस कला मे पूर्ण प्रवीण थे । एक वार इन्होंने मुनि का स्याग भरा और ये मुनि भी वन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएँ उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमे त्रेपन क्रिया ( सवत् १६६५ ) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृष्ण जगावन चरित्र ( १६७१ ), रसविधान चौपई एव धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप मे रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६५ मे समाप्त किया था । इसमें भगवान् महाधीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों मे पूर्ण होता है । इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

सोरहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पत्त ।

शुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

### ४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमे सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का सञ्चित वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्त्व है । सोनागिर पहिले दतिया स्टेट मे था अब वह मध्यप्रदेश मे है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १५६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना मे क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एव अन्य मन्दिरों का भी सञ्चित वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूतौ को,

हाट हू वजार नाना भाति जु रि आए हैं ।

भावधर वदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,

पाप मूल निकदन कौ दूर हू सै धाए है ॥

गोटै जैड नारे पुनि दान दैह नाना विधि,

सुर्ग पथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है ।

कीजिय सहाइ पाइ भाप है भागीरथ,  
गुह्य के प्रदाप छौं गिरी के गुण गाप है ॥

### दोहा

जेठ सुनी चौदस मन्त्री का दिव रची बनाइ ।  
सबन् अप्पदस इकिठ सबन् सेव गिम्बर ॥  
पहै सुनी का माव घट, थोरे वैइ सुनाइ ।  
मनबंदिठ पख कौ खिने सो पूरन पद कौ पाइ ॥

### ४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेरा कवि ने महिमासाह का बादशाह अल्लाहदीन के साथ अल्लाह महिमासाह का मागधर राजहम्मीर के महाराजा हम्मीर की राज्य में आग, बादशाह अल्लाहदीन का हम्मीर की महिमासाह को छोड़ने के क्रिये बार २ सम्मन्वय एवं अन्त में अल्लाहदीन एवं हम्मीर का मन्वन्त पुत्र का वान किया गया है । कवि की बर्णन राजी सुन्दर एवं सज्ज है ।

रासो का और कथा खिना गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । इसने केवल अल्पत्र नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिअ रावपति सारी बीर क्यो नीर सम्यही ।  
क्यो पारिस कौ परसि बबर कंजन होय जाई ॥  
अल्लादीन हमीर से बुभा न हीस्यौ होबसे ।  
कवि महेस कम बचरै बै सम्यसहे वसु पुरवसै ॥

# अज्ञात एवं महत्वपूर्णा ग्रंथों की सूची

क्रमांक क्रं, सू क्र	ग्रंथ का नाम	प्रथसार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१	४३८१ अनंतप्रतोद्यापनपूजा	भा० गुरुचंद्र	म०	म	१६३०
२	४३६२ अनंतचतुर्दशीपूजा	धातिदास	स०	घ	×
३	२८६५ अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	स०	घ	×
४	४३६१ अभिपेक विधि	लक्ष्मीसेन	म०	ज	×
५	५६६ अमृतधर्मरत्नकाव्य	गुणचंद्र	स०	ञ	१६ वीं शताब्दी
६	४४०१ अष्टाहिकापूजाकथा	मुरेन्द्रकीर्ति	स०	झ	१८५१
७	२५३५ आराधनासारप्रबंध	प्रभावद्र	सं०	ट	×
८	६१६ आराधनासारवृत्ति	प० प्राशाधर	म०	ड	१३ वीं शताब्दी
९	४४३५ ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	स०	ख	×
१०	४४८० कजिकाप्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्ति	स०	घ	×
११	२५४३ कयाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	स०	घ	×
१२	५४५६ कथासमूह	ललितकीर्ति	स०	घ	×
१३	४४४६ कर्मचूरप्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	स०	छ	×
१४	३८२८ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	स०	म	×
१५	३८२७ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका	प० प्राशाधर	स०	म	१३ वीं "
१६	४४६७ कलिकुण्डपाश्र्वनाथपूजा	प्रभावद्र	स०	म	१५ वीं "
१७	२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	स०	म	१६ वीं "
१८	४४७३ कुण्डलगिरिपूजा	भ० विद्वभूषण	सं०	म	×
१९	२०२३ कुमारसंभवटीका	कनकसागर	स०	म	×
२०	४४८४ राजपथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति	स०	ख	×
२१	२०२८ राजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	स०	ङ	×
२२	३८३६ गीतवीतराग	प्रभिनव चारुकीर्ति	स०	म	×
२३	११७ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	स०	फ	×
२४	११८ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	स०	फ	×
२५	६१ गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	स०	क	×
२६	५४३६ चदनपण्ठीप्रतकथा	छत्रसेन	स०	म	×
२७	२०४८ चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणानंदि	स०	ग	×

क्रमिक सं. सू. क्र.	संज्ञक नाम	संज्ञक	माया संज्ञक	संज्ञक	रचना काळ	
२८.	४२१२	चारिश्चरित्तुविधान	मुनिकीर्त	अ	ब	×
२९.	४२१४	आत्मवचनचरित्तुविधान	म. मुण्डकगीति	अ	ब	×
३	४२२१	ब्रह्मोच्चरित्तुविधान	वत्सकीर्ति	अ	क	×
३१	२१३	तत्त्वदर्शन	पुत्रवर्ध	ग	घ	×
३२	२४४	वैश्वानरविधान	वैश्वानरीति	अ	घ	×
३३	४७२	वराहविधान	विश्वामित्र	अ	क	×
३४	४७३	वराहविधान	वसिष्ठ	अ	घ	×
३५	४७४	वराहविधान	मुनिवचन	अ	क	×
३६	४७२१	वराहविधान	वैश्वानरीति	ग	घ	१७०२
३७	४७२४	वराहविधान	वचन	अ	ब	×
३८	४७२३	" " "	वचन	घ	ब	×
३९	७७९	वर्ममरणोत्तर	विश्वामित्र	अ	घ	×
४	२१२९	न्यायविधान	प्रभाकर	ग	घ	×
४१	४८१	निजस्मृति	×	अ	क	×
४२	४८१६	भैमिनाथपूजा	मुण्डकगीति	अ	घ	×
४३	४८२१	पंचकण्ठपूजा	"	अ	क	×
४४	१६७१	परमात्मविधान	वत्सकीर्ति	ग	घ	×
४५	२४२	महासिद्धि	वाचस्पति	अ	घ	×
४६	१६१	पुण्यविधान	वीरवर्ध	अ	घ	१७००
४७	२४४	माधवाचारीटीका	म. वचन	अ	घ	×
४८	४२३	मूल्याचरित्तुविधान	पाशावर	अ	ब	१९ वीं शतकी
४९	४२३	मूल्याचरित्तुविधान	विश्वामित्र	अ	घ	१९ वीं
५	२२७	सौगीतु गीतगोविंदपूजा	विश्वामित्र	अ	क	१७२९
५१	२३१	मुनिमुक्तावलि	वचन	अ	घ	×
५२	२७६	मूल्याचरित्तुविधान	वचन	ग	अ	×
५३	२३२३	महाभारतचरित्तुविधान	वचन	अ	ब	×
५४	२३३	रत्नचरित्तुविधान	वाचस्पति	अ	घ	×
५५	२६२३	संस्कृतचरित्तुविधान	वचन	अ	घ	१९४४
५६	२६३	संस्कृतचरित्तुविधान	मुनिवचन	अ	ब	१९ वीं

क्रमांक	सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रथकार	भाषा	ग्रथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालकारटीका	वादिराज	स०	म	१७२६
५८	५४४७	वीतरागस्तोत्र	म० पद्मनदि	स०	म	×
५९.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनदि	स०	म	×
६०	५८२६	शातिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	स०	ख	×
६१	४१०७	शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	म	×
६२	४१६६	पणवतिचैत्रपालपूजा	विश्वसेन	स०	म	×
६३.	५४६	पणवधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	घ	×
६४	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	म	×
६५	५४६७	सरस्वतीस्तुति	भाशाधर	स०	म	१३ वीं "
६६	४६४६	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	स०	ङ	×
६७	२७३१	सिंहासनद्वारिंत्रिशिका	क्षेमकरमुनि	स०	ख	×
६८	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ड	×
६९	३६३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	म	×
७०	१००५	यत्याचार	प्रा० वसुनदि	प्रा०	म	×
७१	१८३६	श्रजितनाथपुराण	विजयसिंह	मप०	अ	१५०५
७२	६४५४	कल्याणकविधि	विनयचंद्र	मप०	म	×
७३	५४४	चूनढी	"	"	म	×
७४	२६८८	जिनपूजापुर दरविधानकथा	ममरकोति	मप०	म	×
७५	५४३६	जितरात्रिविधानकथा	नरमेन	मप०	म	१७ वीं
७६	२०६७	शोमिणाहचरित	लक्ष्मणदेव	मप०	म	×
७७	३०६८	शोमिणाहचरिय	दामोदर	मप०	म	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचरुवीसी	महारासिंह	मप०	म	×
७९	५४३६	दशरूपकथा	गुणभद्र	मप०	म	×
८०	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद्र	मप०	म	×
८१	४६८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककोति	मप०	अ	×
८२	३६८६	निर्गुरपचमीविधानकथा	विनयचंद्र	मप०	म	×
८३	३१७६	पासचरिय	ते प्रपाल	मप०	ट	×
८४	५४३६	रोहिणीविधान	गुणभद्र	मप०	म	×
८५.	२६८३	रोहिणीचरित	देवनदि	मप०	म	१५ वीं



क्रमांक प्र. सू. क्र.	प्रश्न का नाम	प्रश्नकार	भाषा प्रश्नकर्ता	रचना काळ
१	१४१७ सम्मनसिद्धिपात्रपरिच	वैद्यरत्न	मरा	ब ×
२	१४१४ सन्ध्यासक्त्युत्पत्ति	तद्वृत्तारत्न	मरा	घ ×
३	१४१५ सुकसंपत्तिविधानकथा	विद्यमानशीति	मरा	घ ×
४	१४१६ सुगन्धद्वयमीकथा		मरा	घ ×
५	१४१७ अन्नबारास	वर्धनपुस्त	हि. म	ब ×
६	१४१८ अक्षयनिधिपूजा	अक्षयपुस्त	हि. म	ब ×
७	१४१९ अठारहनातेकीकथा	अपिनात्मचर	हि. म	घ ×
८	१ १ अन्नतकण्ठपत्र	वर्धनपुस्त	हि. म	ब ×
९	१४ १ अन्नतकण्ठपत्र	ब विद्यमान	हि. म	घ १२ बी
१०	१४१२ अर्धनक्षत्रीशास्त्रियागीत	विद्यमानशीति	हि. म	घ ११ १
११	१४१३ आदित्यचारकथा	राधनपुस्त	हि. म	ब ×
१२	१४१४ आदित्यचारकथा	वर्धनपुस्त	हि. म	घ ×
१३	१४१५ आदीत्यारकथासम्भवस्तन	×	हि. म	घ १११७
१४	१४१६ आदित्यचारकथा	दुर्गाशीति	हि. म	ब १ ४१
१५	१४१७ आदित्यवस्तवन	पुस्त	हि. म	ब ११ बी
१६	१४१८ आराधनाप्रतिषेधस्तत्र	विकल्पशीति	हि. म	घ ×
१७	१ १४ आरतीसंग्रह	ब विद्यमान	हि. म	घ १२ बी कटाक्षी
१८	१४ १४ अक्षयपूजा	विद्यमान	हि. म	ब ×
१९	१४१२ अक्षयपूजा	प्रा. पुस्तकवि	हि. म	घ ×
२०	१४१४ अठिपारकण्ठकरीषीपुस्त	×	हि. म	घ १ ४७
२१	१ १४ अक्षय	अक्षयपुस्त	हि. म	घ १ बी कटाक्षी
२२	१ १४ अक्षय	अक्षयपुस्त	हि. म	घ १७ बी कटाक्षी
२३	१४१७ अक्षयपूजावेदि	दुर्गाशीति	हि. म	घ १७ बी कटाक्षी
२४	१४ १४ अक्षयपूजा	दुर्गाशीति	हि. म	घ ×
२५	१ १४ अक्षयपूजा	दुर्गाशीति	हि. म	घ ११ बी कटाक्षी
२६	१४१७ अक्षयपूजावेदि	दुर्गाशीति	हि. म	घ १११
२७	१४१८ अक्षयपूजावेदि	दुर्गाशीति	हि. म	घ १ १
२८	१४१९ गीत	पुस्त	हि. म	घ ११ बी कटाक्षी
२९	१ १४ गुणवर्ध	दुर्गाशीति	हि. म	घ ११ बी कटाक्षी

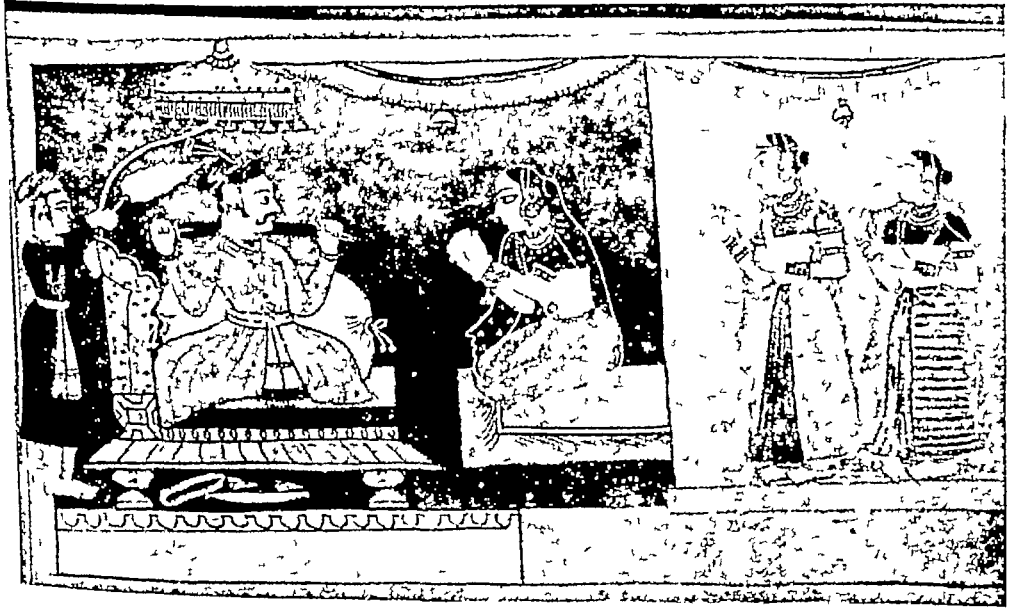
क्रमांक	प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५	५६३२	चतुर्दशीकथा	झालूराम	हि०	प० छ	१७६५
११६	५४१७	चतुर्विंशतिद्वयपद्य	गुणकीर्ति	हि०	प० झ	१७७७
११७	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचदपाटनी	हि०	प० क	१८८०
११८	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचद	हि०	प० च	१६२६
११९	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि०	प० ज	१८४१
१२०	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चत्तर	हि०	प० झ	१७०१
१२१	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि०	प० झ	×
१२२	१८७६	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	हि०	प० क	१६१३
१२३	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि०	ग० झ	×
१२४	१५४	चर्चासागर	प० शिवजीलाल	हि०	ग० क	×
१२५	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	हि०	प० झ	१६६२
१२६	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१२७	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनदि	हि०	प० छ	१७ वी शताब्दी
१२८	५४०१	जिनचौबीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प० झ	×
१२९	५५०२	जिनदत्तचौपई	रत्नकवि	हि०	प० झ	१३५४
१३०	५८१४	ज्योतिपसार	कृपाराम	हि०	प० झ	१७६२
१३१	६०६१	ज्ञानवावनी	मतिशेखर	हि०	प० ट	१५७४
१३२	५८२६	ट हाणगीत	बूचराज	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१३३	३६६	तत्त्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्ति	हि०	ग० छ	१८ वी ”
१३४	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि०	ग० छ	१८ वी ”
१३५	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि०	ग० झ	१७ वी ”
१३६	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचद	हि०	प० क	१६ वी ”
१३७	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचदपाटणी	हि०	प० क	१८६४
१३८	६००६	तीसचौबीसीचौपई	क्ष्याम	हि०	प० क	१७४६
१३९	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१४०	१७३६	दर्शनसारभाषा	नयमल	हि०	प० क	१६२०
१४१	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि०	ग० क	१६२३
१४२	४२४५	देवकीकीडाल	ब्रूणकराणकासलीवाल	हि०	प० झ	×
१४३	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचद	हि०	ग० क	१६६६

क्रमांक	सं. क्र.	ग्रंथ का नाम	प्रकाशक	माघ	वैशाख	रथान्त काष्ठ
१	२४१७	सम्भवविद्युत्पाहपरिच	श्रीकान्त	घ	ख	×
क. १	२४२४	सम्भवविद्युत्पाहपरिच	श्रीकान्त	घ	घ	×
	२९	सुवर्णपथिबिधानकथा	विश्वकर्मा	ख	घ	×
२	२४३२	सुवर्णपथिबिधानकथा	"	घ	घ	×
३	२९२९	अज्ञानप्रस	वर्मभूषण	हि. प	ख	×
४	४९४७	अज्ञानपथिबिधान	श्रीकान्त	हि. प	ख	×
५	२९	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	×
६	६	अज्ञानप्रस	वर्मभूषण	हि. प	ख	×
७	४९	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	ख	१२ बी
८	४२२२	अज्ञानप्रस	विश्वकर्मा	हि. प	घ	११ १
९	२७९	आदिशिवपुराण	राजकान्त	हि. प	ख	×
१०	२४३२	आदिशिवपुराण	वर्मभूषण	हि. प	घ	×
११	२३२२	आदिशिवपुराण	×	हि. प	घ	१११७
१२	२७९	आदिशिवपुराण	श्रीकान्त	हि. प	ख	१ ४९
१३	२३२२	आदिशिवपुराण	वर्मभूषण	हि. प	ख	११ बी
१४	२४७७	आदिशिवपुराण	विश्वकर्मा	हि. प	ख	×
१५	१ १४	आदिशिवपुराण	श्रीकान्त	हि. प	घ	१२ बी अठारवी
१६	१४	अज्ञानप्रस	विश्वकर्मा	हि. प	ख	×
१७	४४२५	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	×
१८	२९४	अज्ञानप्रस	×	हि. प	घ	१७७७
१९	१ २२	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१ बी अठारवी
२०	१ १२	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१७ बी अठारवी
२१	२३२७	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१७ बी अठारवी
२२	२६	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	×
२३	१ १४	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	ख	१९ बी अठारवी
२४	२४७७	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१९१७
२५	२३२७	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१५६
२६	२३२२	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	ख	१९ बी अठारवी
२७	१ १४	अज्ञानप्रस	श्रीकान्त	हि. प	घ	१९ बी अठारवी

क्रमांक	ग्रंथ सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	प्रथकार	भाषा	प्रथमभंडार	रचना काल
१७१.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रगचिनयगरिण	हि० प०	म	१७१४
१७४.	३४८६	मनमोदनपचणती	छपपति	हि० प०	क	१६१६
१७५	६०४६	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६	३८६४	महावीरछन्द	शुभचन्द	हि० प०	म	१६ वी " "
१७७	२६३८	मानतु गमानवतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×
१७८	३१८५	मानचिनोद्	मानमिह	हि० प०	ख	×
१७९	३४९१	मित्रविलास	पासी	हि० प०	क	१७८९
१८०.	१९४८	मुनिमुन्नतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ज	१८८५
१८१	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१९३२
१८३	५११३	रत्नावलिन्नतविधान	ब्र० बृहस्पदास	हि० प०	म	१६ वी
१८४.	५५०१	रविन्नतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	म	१७ वी " "
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६	३४९४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	भ	×
१८७	५३९८	राजसमारजन	गगादास	हि० प०	म	×
१८८	६०४५	रुक्मणिकृष्णजीकोराम	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९	२६८९	रैवन्नतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी " "
१९०	६०२७	रोहिणीविधिकथा	बसीदास	हि० प०	ट	१६९५
१९१	५९६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२	६०८६	लाटिथिविधानचौपई	भोपमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३	५९५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४	६१०५	वसतपूजा	मजयराज	हि० प०	ट	१८ वी " "
१९५	५५१९	वाजिदजी के अखिल	वाजिद	हि० प०	म	×
१९६	२३५६	विक्रमचरित्र	मभयसोम	हि० प०	ज	१७२४
१९७	३८६४	विजयकीर्तिछन्द	शुभचन्द	हि० प०	म	१६ वी " "
१९८	३२१३	विपहरनविधि	सतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	म	×
२००	३७०४	पटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	भ	१७३०
२०१	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	म	×

क्रमांक सं सू क्र.	संख का नाम	प्रकृति	भाषा	प्रथमवार	रचना क्रम
१४४	२ १ इन्वर्तमहभाषा	हेराम	हिं व	ब	१७११
१४५	२४ २ नगरी की बन्धनका विचारण	×	हिं व	ब	×
१४६	२६ ७ नगरमता	×	हिं व	घ	१ ११
१४७	४२४८ नगरमीसम्प्राप	विमलचंद्र	हिं व	घ	×
१४८	११ निजामसि	ब विनयन	हिं व	क	१२ बी कठको
१४९	२४४९ नमिदिबं हम्पाहको	केतकी	हिं व	घ	१० बी
१५०	२१२ नमीजीरापरि	पारुण	हिं व	घ	१ ४
१५१	२१२२ नेमिजीकोर्मण	विमलचंद्र	हिं व	घ	१६२
१५२	१ १४ नमिनाबर्ष	कुचर्ष	हिं व	घ	१९ बी
१५३	४२२४ नेमिपञ्चमिगीत	हीरचर्ष	हिं व	घ	×
१५४	२११४ नेमिपञ्चम्याहको	बीरीचर्ष	हिं व	घ	१ ११
१५५	२४२६ नेमिपञ्चमिषाद	ब बलचर्ष	हिं व	घ	१७ बी
१५६	२६१२ नेमीरचरकाचौमास	पुनिचिहनी	हिं व	ब	१ बी
१५७	२ १६ नेमीरचरकाहिंजासता	पुनिचलबीति	हिं व	ब	×
१५८	४८१६ नेमीरचरपु	पुनिचलबीति	हिं व	ब	×
१५९	१६२ पंचकण्ठ्याकपठ	हरचर्ष	हिं व	ब	१ २१
१६०	२१७१ पांडवपरि	नाबर्ष	हिं व	ट	१ ९
१६१	४९२ पद	कपिचिचल	हिं व	ब	×
१६२	१४१६ परमारममकाराटीका	बलचर्ष	हिं व	ब	१ १९
१६३	२ १ मनुभूषण	कुचर्ष	हिं व	ब	×
१६४	२१६ पार्ष्णाजपरि	विमलचर्ष	हिं व	घ	१७ बी
१६५	४९६ पार्ष्णाजचौपई	ब कचौ	हिं व	ट	१७१४
१६६	१ १४ परचर्ष	ब नेचरान	हिं व	घ	१९ बी
१६७	१२७७ पिंगलचर्ष	नलचर्ष	हिं व	ब	१ १३
१६८	२१२३ पुण्याकचकाचौपई	केचर्ष	हिं व	क	१६९
१६९	२२२ पंचकण्ठ्याकपठचौपई	बीनल	हिं व	ट	१८११
१७०	२ २२ बिहारीसतसईटीका	इन्वर्त	हिं व	ब	×
१ १	२९ बिहारीसतसईटीका	हरचर्ष	हिं व	ब	१ १४
१ २	२४६ मुचनकीर्षिगीत	कुचर्ष	हिं व	घ	१९ बी

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहित है ।  
राजा यशोधर दु स्वान की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न  
चढा कर स्वय की बलि देने को तैयार होता है ।  
रानी हाहाकार करती है ।

[ दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये ]



ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

# राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

## ग्रन्थसूची

### विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१ अर्धदीपिका—जिनभद्रगणित । पत्र स० ५७ में ६८ तक । आकार १०×६ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय जन सिद्धान्त । रचना काद × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन नम्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

२ अथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ३०३ । भा० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भा० राजस्थानी ( दूबारी गद्य ) विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १६१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० नं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है ।

३ प्रति स० २ । पत्र स० ११० । ले० काल × । वे० स० ४८ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

४ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२७ । ले० काल स० १६३५ आसोज बुदी ६ । वे० स० १८६६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है ।

५ अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ४६ । भा० ६×६ इंच । भा० हिन्दी ( गद्य ) । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुरुम्यानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है । ग्रन्थ में व्रतों एवं प्रतिमाओं का भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ७ । भा० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७ अर्हत्प्रवचन । पत्र स० २ । भा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भा० मन्वृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।



चित्र सं २



द्विज शालास्य गुरु राजमहल का एक दृश्य  
(संघ मूषी के सं २२१४ पृष्ठ संख्या ११४)

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

# राजस्थान के जैन शास्त्र भरदारों

की

## ग्रन्थसूची

विषय—सिद्धान्त एव चर्चा

१. अर्धदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र स० ५७ मे ६८ तक । आकार १०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत ।  
विषय जन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन संख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।  
विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टक्का टीका सहित है ।
२. अधप्रकाशिका—सदायुव कासलीवाल । पत्र स० ३०३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इ च । आ० राजस्थानी  
( डू डारी गद्य ) विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १६१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।  
विशेष—उमान्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विषय व्याख्या है ।
३. प्रति स० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।
४. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल स० १६३५ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८१६ । प्राप्ति  
स्थान ट भण्डार ।  
विशेष—प्रति मुन्दर एव आकर्षक है ।
५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र सं० ४६ । आ० ६×६ इ च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—  
आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।  
विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणम्यानों का भी अच्छा विवेचन  
किया गया है । अतः मे व्रतो एवं प्रतिमाघ्रा को भी वर्णन दिया हुआ है ।
६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इ च । भा० हिन्दी । विषय—आठ  
कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।
७. अर्धप्रवचन । पत्र सं० २ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इ च । भा० मन्वृत । विषय—सिद्धान्त ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र नाम है। सूत्र संख्या २ है। पाठ सम्बन्ध है।

८. अहोरात्रचनस्यस्यार्था—। पत्र सं ११। वा १ × ४ $\frac{1}{2}$  इय। वा संख्या १८ कल ×।  
के कल ×। पूर्ण। के सं १७६१। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

विशेष—सूत्र वा ह्युप नाम ननुर्धम सूत्र भी है।

९. आचार्यांगसूत्र—। पत्र सं २३। वा १ × २ इय। वा संख्या। विश्व-पाठन।  
८ कल ×। के कल सं १२। पूर्ण। के सं १६। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

विशेष—सूत्र वन नहीं है। शिबी में एका टीका ही हुई है।

१. आतुरप्रत्याख्यामप्रकीर्णक—। पत्र सं २। वा १ × ४ इय। वा संख्या।  
विश्व-पाठन। ८ कल ×। के कल ×। के सं २। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

११. आत्मविक्रमगी—नेमिष्कशास्त्रार्थ। पत्र सं ३१। वा ११ $\frac{1}{2}$  × ३ $\frac{1}{2}$  इय। वा संख्या।  
विश्व-विद्यालय। ८ कल ×। के कल सं १६२। वैशाल्य सुदी। पूर्ण। के सं १९। प्रति स्वान्तु व  
मन्थार।

१२. प्रति सं १। पत्र सं १३। के कल ×। के सं १७६३ प्रति स्वान्तु व मन्थार।

१३. प्रति सं ३। पत्र सं २१। के कल ×। के सं १६३। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

१४. आत्मविक्रमगी—। पत्र सं ६। वा १३ × ३ $\frac{1}{2}$  इय। वा शिबी। विश्व-विद्यालय।  
८ कल ×। के कल ×। के सं ११२। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

१५. आत्मविक्रमगी—। पत्र सं १४। वा ११ $\frac{1}{2}$  × १ $\frac{1}{2}$  इय। वा शिबी। विश्व-विद्यालय।  
८ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ११। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

विशेष—प्रति बीरल बीरल है।

१६. प्रति सं २। पत्र सं १९। के कल ×। के सं १६६। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

१७. इक्ष्वाकुस्यार्था—सिद्धसंज्ञा सूत्र। पत्र सं ४। वा ११ × ४ $\frac{1}{2}$  इय। वा संख्या।  
विश्व-विद्यालय। ८ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं १७६३। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

विशेष—सूत्र वा ह्युप नाम इक्ष्वाकुस्यार्था-संज्ञा सूत्र भी है।

१८. अक्षरार्थस्य—। पत्र सं २२। वा १ $\frac{1}{2}$  × २ इय। वा संख्या। विश्व-  
मन्थार। ८ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं १। प्रति स्वान्तु व मन्थार।

विशेष—शिबी एका टीका तहिल है।

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका । पत्र स० ३ । भा० १०×४६ च । भा० हिन्दी ।  
विषय—भागम । १० काल × । ले० काल × । अर्धग । वे० स० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयान दया वरु, भागा पूरग बाज ।  
चडवीने जिगुवर नमु, चडवीग गणुभार ॥ १ ॥  
धरम ग्यान दाना गुगुग, ग्रहनिस घ्यान धरेम ।  
वाणी वर दसा सरम, विघन हार विचनेम ॥ २ ॥  
उत्तराध्ययन चउदमः, मिग द्वा अधिनाग ।  
अतप सकल गुगु अद घणा, चह बाल मति अनुसाग ॥ ३ ॥  
चतुर चाह वर माभला, ते अधिकार अनुप ।  
निघा विनाग परिहरी, मुगु ग्या भानम मूढ ॥ ४ ॥

भागे गावेत नगरी वा वर्गन है । कई डाल दी हुई है ।

२० उद्यसत्तावधप्रकृति धर्षान । पत्र स० ५ । भा० ११×५३ ड च । भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अर्धग । वे० स० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थमत्तरी । पत्र स० २८ । भा० ६×४ ड च । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।  
१० काल × । ले० काल स० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १२२ । प्राप्तिस्थान व भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२ कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० १२ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> ड च । भा० प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६८१ मगमिर मुदी १० । पूर्ण । वे० स० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पाठे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत मे सधिस टीका दी हुई है ।

प्रगति—सवत् १६८१ बरपे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णाङ्कता पाठे डालू  
पठनार्थ लिखित मुग्जन मुनि सा० धर्मदायेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ८७ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति स ४। पत्र नं १९। नै काल नं १७१५। पत्रुर्न। के नं १६११। अ मन्थार।  
विषय—बटारक कनकपीठि के विषय कृपाचम ने प्रतिनिधि करवात की।

२६ प्रति स ४। पत्र नं १४। नै काल नं १ ९ फाल्गुन सुदी ७। के नं १४। अ मन्थार।

विषय—इसकी प्रतिनिधि विद्यालम्बि के विषय धर्मराम मधुनकन ने टकराल के सिधे की थी। प्रति के दोनो धीर तथा ऊपर बीच संसुट में संकित टीका है।

२७ प्रति स ६। पत्र नं ७७। नै काल नं १९७१ फाल्गुन सुदी २। के नं २६। अ मन्थार।

विषय—प्रति संकृत टीका लखित है। मासपुरा में श्री चार्वंगल श्रीवालय के प्रतिनिधि हुई तथा नं १९५७ में मुनि कनकपीठि के प्रति का संशोधन किया।

२८. प्रति स ७। पत्र नं १६। नै काल नं १५२३ अशु सुदी १८। के नं १३६। मन्थार।

२९. प्रति स ८। पत्र नं १३। नै काल नं १ १६ अशु सुदी ६। के नं १२। अ मन्थार।

३ प्रति स ६। पत्र नं ११। नै काल ४। के नं ११। अ मन्थार।

विषय—संसुट में लखित सिधे हुये हैं।

३१ प्रति स १। पत्र नं ११। नै काल ४। के नं २५६। अ मन्थार।

विषय—१२६ मन्थार हैं।

३२. प्रति स ११। पत्र नं २१। नै काल नं १७२३ वैशाख सुदी ११। के नं १६२। अ मन्थार।

विषय—कनकपीठि में नं कनक मन्थार के नं श्रीवालय के सिधे श्रीवालय के अन्तर्गत प्रतिनिधि की थी।

३३ प्रति स १२। पत्र नं १७। नै काल ४। के नं १२३। अ मन्थार।

३४ प्रति स १३। पत्र नं १। नै काल नं १९४४ कार्तिक सुदी १। के नं १२९। अ मन्थार।

३५ प्रति स १४। पत्र नं १४। नै काल नं १९९९। के नं २२३। अ मन्थार।

विषय—कृपाचम में राम दुर्बेण के राज्य के प्रतिनिधि हुई थी।

३६. प्रति म० १५ । पत्र म० १६ । ले० काल X । वे० म० १०५ । अ भण्डार ।

३७ प्रति स० १६ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० २८० । अ भण्डार ।

३८ प्रति म० १७ । पत्र म० १७ । ले० काल X । वे० म० ४०५ । अ भण्डार ।

३९ प्रति स० १८ । पत्र म० १४ । ले० काल X । वे० म० १६० । अ भण्डार ।

४० प्रति स० १६ । पत्र म० ५ से १७ । वे० काल म० १७६० । अपूर्ण । वे० म० २००० । अ भण्डार ।

विशेष—बुन्दावती नगरी में पार्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधमिह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य प० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने सशोधन करके प्रतिलिपि की । प्राग्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४१ प्रति म० २० । पत्र म० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२ कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र स० २ से २२ । भा० १२ X ४ ३/४ इंच । भा० मम्बूल । विषय—मिद्धान्त । २० काल X । ले० काल म० १८२२ । वे० स० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी ।

४३ कर्मप्रकृति । पत्र म० १० । भा० ६ ३/४ X ४ ३/४ इंच । भा० हिन्दी । २० काल X । पूर्ण । वे० म० ३६५ । अ भण्डार ।

४४ कर्मप्रकृतिविद्या—बनारसीदास । पत्र म० १६ । भा० ८ ३/४ X ४ ३/४ इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० ३७ । अ भण्डार ।

४५ कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र स० १४ । भा० १० X ५ इंच । भा० मम्बूल । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल म० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० म० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता भा० नेमिचन्द्र हैं ।

४६ प्रति म० २ । पत्र म० १७ । ले० काल X । वे० म० १२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७ कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरी । पत्र स० १२ । भा० ११ X ६ इंच । भा० प्राञ्चल । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० म० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१. अन्वमिहान्तसप्तमद-----। वन सं २२। वा १ x १४। वा प्राहुत। विन  
कान्त २ वन x। से कल x। कुर्त्। वे सं २१२। अ मन्वार।

विशेष—श्री विनवापर कुरि श्री मन्वा से प्रतिविधि हुई श्री। कुमरती मन्वा से दीया मलि है।

कान्तिक मान—बुल—टीरां मन्वाले मेल अमकका-----वितापर्व वधि मुदा।

पर्व—विशार कलाह वर्यावहार कलाह विशार लभवह वर्यावहार श्री पहिली मन्वम अमनें  
श्री महावीर शिवु वानेवर्त कालि २ शिवुता से कली इमवि कलाह मेहुणिले नाम परिष्णवावह। इरा श्री म  
[मन्वासी दू मर संक्रमादि-वर्ष]। वरव विनि वरवावह कलावह से वैला न वरवाह। अन्वममन्वा वन संक्रुं हल मन्वावह  
कलाह उन्नीग वल विनि संक्रुं हर्त वरवावह। वर अन्वममन्वावहोव विवव। महुणिले वल मूवम कान्तिकठ श्री श्री  
वावावम भादि कलिउवह। महुणिले वल विनि वावह। पर ए वरव अमवह मही। से कली मन्वालेन ही। मन्वासी  
दू वि मन्वा पही कलाह। मन्वी एविह कलाह कलावठ श्री महावीर वैवर्णावा अन्वली कुकवावा कुरी। वरुं कुरी  
वरुं मन्वासी। अ वरवावह मन्वा विववा पूर्वह मन्वावा विववा मन्वाह महुणिले विववा कान्तिकली वर महुणिले  
कान्ती श्रीवा। इमउ वरव वैमि उनी। से कली मन्वाले कान्तिक दिवमन्वावह। वल मन्वा ना कलावह। मन्वासी।  
म श्री मन्वावह वरि कलाह श्रीवह मर म्पुता। विवह विववा कान्तिकली विशार कुमरह मुनिगा वैमिवाह से मन्वा  
मन्वासी। म श्री मन्वा विवमन्वासी वावावा एवह मन्वावह। एव मन्वावठ वल मर। श्रीव वलह। एव मन्वा। मन्वा  
कलाह कान्तिक वरुं कान्तिक वरुं से श्री वैवकुव उन्वह मन्वा वैववाह कान्तिकार विनि श्रीवमन्वा वन मन्वासी श्री वरुंवाव  
मन्वाह मन्वावि कुमरी परववावह मुनिवह वलकुमरलि श्री कान्तिकमन्वा श्री वरुंवाव कुरि श्री। श्री विनेवह कुरि।  
श्री मन्वावह कुरि कुममन्वा श्री विनवावह कुरि श्री मन्वावह कुममन्वा श्री इवमन्वा वरुंवावहि मन्वावह कुममन्वा श्री  
मन्वावह मन्वा वरुंवाव श्री मन्वावह मन्वा वरुंवाव मन्वावह श्री मन्वावह मन्वा वरुंवाव श्री मन्वावह मन्वा वरुंवाव। श्रीव  
मन्वावह से कान्तिक तथा मन्वा से श्री मन्वा मन्वावह श्री है।

२. अन्वमन्वा (मिहान्त अन्वमन्वा)-----। वन सं २२। वा १ x १४। वा प्राहुत। विन-मानव।  
विनव-मानव। २ वन x। से कल x। वे सं २१२। अ मन्वार।

विशेष—श्री श्री टीका टीका मन्वा है।

३. अन्वमन्वा—मन्वावह। वन सं २२। वा १ x १४। वा प्राहुत। विन-मानव।  
२ वन x। से कल सं १२। कुर्त्। वे सं २१२। अ मन्वार।

विशेष—२ रा तथा ३ रा वन मन्वा है। मन्वासी से श्री मन्वा से श्री विवा हुआ है।

४. मन्वा म २। वन सं २२। वे सं २१२। अ मन्वार।

विशेष—वधि मन्वा तथा कुमरती मन्वा मन्वा है। श्री २ मन्वा टीका श्री श्री है। श्री मन्वा से श्री  
वन मन्वा है।

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र स० ६ । आ० ११×४<sup>१</sup> इ च । भा० प्राकृत । विषय—प्रागम ।  
२० का × । ले० का स० १५६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८४६ । ट भण्डार ।

२२ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

२३ कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र स० २५ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल स० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० स० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम में ग्रथ की रचना हुई थी । टीका का नाम काललता है । सारक ग्राम में प०  
भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२४ कल्पसूत्रवृत्ति । पत्र स० १२६ । आ० ११×४<sup>१</sup> इ च । भा० प्राकृत । विषय—  
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८१८ । ट भण्डार ।

२५ कल्पसूत्र । पत्र स० १० से ४४ । आ० १०<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२६ क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र स० ६७ । आ० १२×७<sup>१</sup> इ च । भा०  
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल शक स० ११२५ वि० स० १२६० । ले० काल स० १८१६ वैशाख बुदी ११ ।  
पूर्ण । वे० स० ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रथ के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य हैं ।

२७ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६५५ । वे० स० १२० । क भण्डार ।

२८ प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८४७ आषाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९ क्षपणासार—टीका । पत्र स० ६१ । आ० १२<sup>१</sup>×५<sup>१</sup> इ च । भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११८ । क भण्डार ।

६० क्षपणासारभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २७३ । आ० १३×८ इ च । भा० हिन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महीं प०  
टोडरमलजी की गोमट्टमार ( जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड ) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्प्यज्ञान  
चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।



- ६१ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ४२। या १२×३ इ.वा. या ३। विषय-  
मित्रालय। र. वल ×। मे. वल ×। पु. व। के. नं. २३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६२ प्रति स २। मे. वल ×। के. नं. १४। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६३ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में २। या १×२ इ.वा. या १। विषय-  
मित्रालय। र. वल ×। मे. वल ×। पु. व। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६४ प्रति स २। वर्ष में २१। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- विशेष-मंत्रोक्त दोषा नष्ट।
- ६५ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ३। या १×३ इ.वा. या ३। विषय-  
मित्रालय। र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. पु. व। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६६ प्रति स २। वर्ष में २१। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६७ प्रति स ३। वर्ष में २२। अ. पु. व। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६८ प्रति स ४। वर्ष में २३। के. नं. १३। अ. के. नं. २३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ६९ प्रति स ५। वर्ष में २४। के. नं. १३। अ. के. नं. २३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७० प्रति स ६। वर्ष में २५। के. नं. १३। अ. के. नं. २३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७१ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ३। या ३× इ.वा. या ३। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३।
- ७२ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में १। या १× इ.वा. या १। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७३ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में २। या ११×२ इ.वा. या २। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७४ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ३। या ११×३ इ.वा. या ३। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७५ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ४। या ११×४ इ.वा. या ४। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७६ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ५। या ११×५ इ.वा. या ५। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७७ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ६। या ११×६ इ.वा. या ६। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.
- ७८ गुणध्यानवर्षा----- वर्ष में ७। या ११×७ इ.वा. या ७। विषय-मित्रालय।  
र. वल ×। मे. वल ×। के. नं. १३। अ. अ. अ. अ. अ.

३७ गुणस्थानवर्णन

। पत्र सं० २० आ० १०×५ इच । भा० सस्युत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ने० कान × । अपूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थाना का वर्णन है ।

७८ गुणस्थानवर्णन

। पत्र सं० १५ म ३१ । आ० १० २ १/२ इच । भा० सिद्धा ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ने० कान × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

७६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ने० कान सं० १७६३ । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

८० गोममटमार ( जीवकाण्ड — आ० नै।मचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० १३×१ इच । भा०—

प्रामृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ने० कान सं० १५५५ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५५७ गौं आषाढ शुक्ल त्रयोदश्या श्रीमूलसधे संध्याम्नाय वलात्वारणणे मरस्वतागन्ध  
था कुक्षु दाशार्पान्वय मट्टाग्न आ पधनान्द देवास्तत्पट्टे मट्टारण आ मुमचद्रदवास्तत्पट्टे मट्टारण था जिनचद्रदवास्त-  
निय्य मुनि श्री मठलाचार्य ग्लवीत्ति देवास्तत्पिप्य मुनि हेमचद्र नामा तदाम्नाये सहलवालवसे सा० देल्हा भार्या  
वल्ही तस्युत्र सा० भाजा तद्भार्या शराभागतस्युत्रा सा० भावद्यो द्वितीय अमर्या तृतीय जाल्हा एते मातृप्रसिद जेम्बित्था  
सस्य ज्ञानपात्राय मुनि श्री हमचद्राय भक्त्या प्रदत्त ।

८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ल० काल × । वे० सं० ११६८ । अ भण्डार ।

८२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । ल० काल सं० १७०६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

८३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ म ४८ । ल० काल सं० १६२४ । अश्व सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र मुनिसिन्धु ने प्रतिनिधि की थी ।

८४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ल० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

८५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ल० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

८६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३७५ । ल० काल सं० १७३८ आषाढ सुदी ५ । वे० सं० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका महिल है । श्री वीरदास ने अमचरावाद में प्रतिनिधि की थी ।

८७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ल० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३८ । क भण्डार ।

१८ प्रति स ६। पत्र सं ४७। के मूल सं १११। वर्ष सुदी ३। के सं ४२। पत्र सं ४७।

१९ प्रति स १। पत्र सं १०२-१४१। के मूल ×। सुदी। के सं । पत्र सं ४७।

२० प्रति स ११। पत्र सं १। के मूल ×। सुदी। के सं ४७। पत्र सं ४७।

२१ गोमहासाराणीका—सकलामुद्रण। पत्र सं १४१। या १११ × ७ इय। या सं ४७।

विषय—सिद्धांत। र काल सं १३७६। सुदी सुदी ११। के मूल सं १२४३। सुदी। के सं १४। पत्र सं ४७।

विषय—ब्रह्मा सुनीकर ने कलकत्ता बोधरी के प्रतिनिधि करके। प्रति सं ४७। के सं ४७।

२२ प्रति सं २। पत्र सं १११। के मूल ×। के सं १३७। पत्र सं ४७।

२३ गोमहासाराणीका—सकलामुद्रण। पत्र सं १११। या १ × १२ इय। या सं ४७। विषय—सिद्धांत। र काल ×। के मूल ×। सुदी। के सं १३१। पत्र सं ४७।

विषय—पत्र १११ पर बापसर्व सर्वकाल हठ टीका की अवधि का मूल है। मूलपत्र सं ४७। (सर्व) के मूलपत्र के मूलपत्र के मूलपत्र या विषय बापसर्व सर्वकाल हठ टीका की अवधि का मूल है। प्रति सं ४७। के सं ४७।

२४ गोमहासाराणीका—सकलामुद्रण। पत्र सं १११। या १ × १२ इय। या सं ४७। र काल ×। के मूल ×। सुदी। के सं १३१। पत्र सं ४७।

विषय—ब्रह्म ब्रह्म हठिटी बापसर्व सर्वकाल हठ टीका की अवधि का मूल है। प्रति सं ४७। के सं ४७।

२५ गोमहासाराणीका—सकलामुद्रण। पत्र सं १ के १११। या १ × १२ इय। या सं ४७। विषय—सिद्धांत। र काल । के मूल ×। सुदी। के सं १३१। पत्र सं ४७।

२६ प्रति सं ३। पत्र सं ११४। के मूल ×। के सं १। पत्र सं ४७।

२७ गोमहासाराणीका—सकलामुद्रण। पत्र सं १११ के १२४। या १ × १२ इय। या सं ४७। विषय—सिद्धांत। र काल ×। के मूल ×। सुदी। के सं १४। पत्र सं ४७।

विषय—सिद्धांत। र काल ×। के मूल ×। सुदी। के सं १४। पत्र सं ४७।

२८ प्रति सं । पत्र सं १७। के मूल ×। सुदी। के सं १२। पत्र सं ४७।

१६ प्रति म० २ । पत्र म० ११६ । न० काल म० १६८८ भादवा मुदी १५ । वे० स० १४१ । क भण्डार ।

१७० प्रति म० ३ । पत्र म० ११ । से० काल ५ । अपूर्ण । न० म० १२८१ । अ भण्डार ।

१०१ प्रति म० ४ । पत्र न० १७६ । न० काल म० १८८७ माघ मुदी १५ । वे० स० १८ । ग भण्डार ।

विशेष—जातृग्राम साह तथा मन्नासाव नामनीवास न प्रतिलिपि नरगर्गा थी

१०२ प्रति म० ५ । पत्र म० ३२८ । न० काल ५ । अपूर्ण । वे० म० १८६ । क भण्डार ।

विशेष—२७६ ग मागे ५६ पत्रो पर गुणस्थान आदि पर संक्षेप रचना है ।

१०३ प्रति म० ६ । पत्र म० ५३ । न० काल ५ । वे० म० १५० । ड भण्डार ।

विशेष—संक्षेप यत्र रचना ही है ।

१०४ गोम्मटसार-भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० २१३ । मा० १५५१० डच । भा० हिन्दी । विषय-मिद्वान्त । १० काल म० १८१८ माघ मुदी ५ । न० काल म० १६८० भादवा मुदी ५ । पूर्ण । वे० म० १५१ । क भण्डार ।

विशेष—नन्दियार तथा क्षणसागर की टीका है । गणेशलाल सु दरलाल पांड्या ने प्रथ की प्रतिलिपि करायी ।

१०५ प्रति म० २ । पत्र म० १११० । वे० काल म० १८५७ सावण मुदी ५ । वे० स० ५३८ । ख भण्डार ।

१०६ प्रति म० ३ । पत्र म० ६७१ मे ७६५ । वे० काल ५ । अपूर्ण । न० म० १२६ । ज भण्डार ।

१०७ प्रति म० ४ । पत्र म० ८१८ । वे० काल म० १८८७ वैशाख मुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० २१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े प्रकार एव मुन्दर मिश्रा की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रो पर बीच में कलापूर्ण शोभाकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र नही है ।

१०८ गोम्मटसागपीठिको-भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० ६२ । मा० १५५७ डच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । १० काल ५ । वे० काल ५ । अपूर्ण । वे० म० २३२ । झ भण्डार ।

१०६. गार्मटसारटीका (बीजकाण्ड) — । पत्र सं २६२। या १३× ६। या संस्कृत। विषय—विज्ञान। १ कल ×। ले कल ×। पुर्ण। के सं १९२। अ मन्थार

विशेष—टीका का नाम उत्पत्तरील्लिख है।

११ प्रति सं २। पत्र सं १९। ले कल ×। पुर्ण। के सं १३१। अ मन्थार।

१११ गेम्मतसारसदृष्टि—य टाडरमस। पत्र सं २। या १३×७। या ६। या संस्कृत। विषय—विज्ञान। १ कल ×। ले कल । पुर्ण। के सं २। ग मन्थार।

११२ प्रति सं २। पत्र सं ४। ले ४। ले कल । पुर्ण। के सं २३२। अ मन्थार।

११३ गेम्मतसार (कर्मकाण्ड) —नमिषत्रयाचार्य। पत्र सं ११२। या ११×३२। या ३०। या संस्कृत। विषय—विज्ञान। १ कल । ले कल न १००२। वीट सुदी ४। पुर्ण। के सं १। अ मन्थार।

११४ प्रति सं । पत्र सं १३। ले कल । पुर्ण। के सं । अ मन्थार।

११५ प्रति सं ३। पत्र सं १६। ले कल ×। पुर्ण। के सं ३। अ मन्थार।

११६ प्रति सं ४। पत्र सं १३। ले कल सं १४४। वीट सुदी १४। पुर्ण। के सं १०। अ मन्थार।

विशेष—सहायक सुलेखनीति के विज्ञान ज्ञान वर्धनसुख के सम्बन्धार्थ मटीलि मन्थार न प्रतिनिधि की सं।

११७ गार्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—कमलधरसि। पत्र सं १। या ११२×२। या ६। या संस्कृत। विषय—विज्ञान। १ कल ×। ले कल ×। पुर्ण। (सुलीय मन्थार एवं)। के सं १३। अ मन्थार।

११८ गेम्मतसार (कर्मकाण्ड) टीका—सहायक ज्ञानभूषण। पत्र सं २४। या ११३। या ६। या संस्कृत। विषय—विज्ञान। कल ×। ले कल न ११३। माय सुदी । पुर्ण। के सं १३१। अ मन्थार।

विशेष—सुलेखनीति की महत्त्व के टीका निजी बन्दी की।

११९ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले कल न ११७। माय सुदी २। के सं ११६। अ मन्थार।

१२० प्रति सं ३। पत्र सं । ले कल । पुर्ण के सं १७। अ मन्थार।

१२१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५१ । ले० काल  $\times$  । वे० स० २५ । अ भण्डार ।

१२२. प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७५ । वे० स० ४६० । अ भण्डार ।

१२३ गोम्भटसार ( कर्मकाण्ड ) भाषा—५० टोडरमल । पत्र स० ६६८ । प्रा० १३/८ इ च । भा० हिन्दी गद्य ( हू डारो ) । विषय—सिद्धांत । २० काल १६ वीं शताब्दी । ले० काल स० १६६६ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १३० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति स० २ । पत्र स० २६० । ले० काल  $\times$  । वे० स० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—महष्टि महित है ।

१२५ गोम्भटसार ( कर्मकाण्ड ) भाषा—हेमराज । पत्र स० ५२ । प्रा० २५/४ इ च । भा० हिन्दी । विषय—मिथान्त । २० काल स० २०१७ । ले० काल स० १७८८ पीप सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रधान साह प्रानन्दरामजी गण्डेलवाल ने पूछया तिन ऊपर हेमराज ने गोम्भटसार को देख के शयोपगम माफिक पत्रो मे जबाब लिखने रूप चर्चा की वामना निम्नी है ।

१२६ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे० स० १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर मे कल्याण महाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज ८ वीं शताब्दी के प्रथमशत के हिन्दी गद्य के अध्ये विद्वान हुये हैं । इन्होंने १० मे अधिक प्राकृत व मस्कृत रचनाओ का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है ।

१२७ गोम्भटसार ( कर्मकाण्ड ) टीका । पत्र स० १६ । प्रा० ११३/४ इ च । भा० मस्कृत । विषय—मिथान्त । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८ प्रति स० २ । पत्र स० ६८ । ले० काल स०  $\times$  । वे० स० ६६ । अ भण्डार ।

१२९ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ । ले० काल  $\times$  । वे० स० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है —

इति प्राय श्रीगुप्तसारमूलात्टीकाच्च नि वाश्यक्रमेणएकीकृत्य लिखिता । श्री नमिचन्द्रसैद्धाती विरचितकर्मप्रकृतिप्रथस्य टीका समाप्ता ।

१२ गौतमकुशुब्ध—गौतम स्वामी । वचनं २ । पा १ × ४५ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं १७११ । क कथारः ।

विशेष—वर्ति कुशुब्धी टीका बहिष्कृत है ३ । वचनं २ ।

१३ गौतमकुशुब्ध— । वचनं १ । पा १ × ४ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं १९४२ । क कथारः ।

विशेष—संस्कृत टीका बहिष्कृत है ।

१४ चतुर्दशसूत्र— । वचनं १ । पा १ × ४ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं १९११ । क कथारः ।

१५ चतुर्दशसूत्र—विश्वकर्मण मुनिः । वचनं २१ । पा १ × ४ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल × । मे बाल सं १९५९ पीठ कुटी ११ । पूर्ण । के सं १२ । क कथारः ।

१६ चतुर्दशसूत्र—विश्वकर्मण मुनिः । वचनं ३ । पा १ × ९ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं १९४ । क कथारः ।

विशेष—कर्मण संघ वा पर प्रसक्त विद्या हुआ है ।

१७ चर्चासूत्र—पानिनीयः । वचनं १ । पा १ × १२ दृष्यते । वा प्राहुः । विषय-विद्यमानः । ८ बाल १ पीठ कुटी । मे बाल सं १९९१ पीठ कुटी ११ । पूर्ण । के सं १४१ । क कथारः ।

विशेष—हिन्दी वचन टीका भी है ।

१८ प्रतिमा ० । वचनं ११ । मे बाल सं १९३० चतुर्दशसूत्र कुटी १२ । के सं १२ । क कथारः ।

१९ प्रतिमा ० । वचनं ३ । मे बाल सं १९११ चतुर्दशसूत्र । के सं १२ । क कथारः ।

विशेष—टीका टीका बहिष्कृत ।

२० प्रतिमा १ । वचनं २२ । मे बाल सं १९९१ संस्कृत कुटी ११ । के सं ११ । क कथारः ।

२१ प्रतिमा २ । वचनं १ । मे बाल सं १९२१ चतुर्दशसूत्र । के सं १२ । क कथारः ।

२२ प्रतिमा ३ । वचनं १४ । मे बाल सं १९११ संस्कृत कुटी ११ । के सं १०१ ।

विशेष—नीच भागता पर तिमो हुई है। हिन्दी गण मे टीका भी दी हुई है।

१५१ प्रति स० ७। पत्र स० २७। ले० काल स० १६६८। वे० स० २८३। अ भण्डार।

विशेष—निम्न रचाये पीर है।

१ पद्य भावना - दानतगण - हिन्दी

२ गुण विनती - भूधरदास - "

३ वाग् भाषा - नरन - "

४ समाधि मरण - "

१५२ प्रति स० ८। पत्र स० ४६। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० स० १/६३। अ भण्डार।

विशेष—गुट्टाकार है।

१५३ चर्चावर्णन—। पत्र स० ८१ ग ११४। प्रा० १०३ ६ दश। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० स० १७०। अ भण्डार।

१५४ चर्चासमग्रह । पत्र स० ३६। प्रा० १०३ × ६ दश। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० स० १७६। अ भण्डार।

१५५ चर्चासमग्रह । पत्र स० ३। प्रा० १२ × ५ १/२ दश। भाषा संस्कृत—हिन्दी। विषय सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० स० २०५१। अ भण्डार।

१५६ प्रति स० २। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० स० ८६। अ भण्डार।

विशेष—विभिन्न भाषायां की सम्मिलित चर्चाओं का वर्णन है।

१५७ चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र स० १३०। प्रा० १० × ५ दश। भाषा हिन्दी। विषय—  
सिद्धान्त। २० काल स० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल स० १८६७। पूर्णा। वे० स० ३८६। अ भण्डार।

१५८ प्रति स० २। पत्र स० ११०। ले० काल स० १६०८ माघाष्ट सुदी ६। वे० स० ४८३। अ  
भण्डार।

१५९ प्रति स० ३। पत्र स० ११७। ले० काल स० १८२२। वे० स० २६। अ भण्डार।

१६० प्रति स० ५। पत्र स० ६६। ले० काल स० १६४१ वैशाख सुदी ५। वे० स० ५०। अ भण्डार।

१६१ प्रति स० ५। पत्र स० ८०। ले० काल स० १६६४ चैत सुदी १५। वे० स० १७४। अ भण्डार।

१६२ प्रति स० ६। पत्र स० ३८ मे १६६। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० स० ५३। अ भण्डार।



१३ गौतमकुलक—गौतम स्वामी । वन सं २ । भा १ × ४ इका । भा शक्य । विषय-  
विज्ञान । ८ वल × १ । मे वल × १ पूर्ण । के सं १७११ । क मन्थार ।

विशेष—बति कुमरानी टीका बहिय है ।

१३१ गौतमकुलक— । वन सं १ । भा १ × ४ इका । भा शक्य । विषय-विज्ञान ।  
८ वल × १ । मे वल × १ पूर्ण । के सं १२४२ । क मन्थार ।

विशेष—बंस्तु टीका बहिय है ।

१३२ चतुर्विंशसूत्र— । वन सं १ । भा १ × ४ इका । भा शक्य । विषय-विज्ञान ।  
८ वल × १ । मे वल × १ पूर्ण । के सं २३१ । क मन्थार ।

१३३. चतुर्विंशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । वन सं २१ । भा १ × ४ इका । भा शक्य ।  
विषय—वाचन । ८ वल × १ । मे वल सं १६ १ वीच कुटी १२ । पूर्ण । के सं १२ । क मन्थार ।

१३४ चतुर्विंशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । वन सं ३ । भा १ × ६ इका । भा शक्य ।  
विषय—वाचन । ८ वल × १ । मे वल × १ पूर्ण । के सं २१४ । क मन्थार ।

विशेष—कनक संघ का पर ब्रह्मण्डिका टीका है ।

१३५. चर्चाशतक—दानवराज । वन सं १३ । भा ११३ × ४ इका । भा शक्य । विषय-  
विज्ञान । ८ वल १ वीचकुटी । मे वल सं ११३३ पत्राड कुटी ३ । पूर्ण । के सं १४६ । क मन्थार ।

विशेष—हिन्दी का टीका भी दी है ।

१३६ प्रदि स । वन सं १६ । मे वल सं ११३० चतुष्प कुटी १२ । के सं १२ ।  
क मन्थार

१३७ प्रदि स । वन सं ३ । मे वल × १ । के सं ४६ । पूर्ण । क मन्थार ।

विशेष—टीका टीका बहिय ।

१३८. प्रदि स ४ । वन सं २२ । मे वल सं ११३१ बंभारि कुटी २ । के सं ११ ।  
क मन्थार ।

१३९ प्रदि स ५ । वन सं १ । मे वल × १ । के सं १७२ । क मन्थार ।

१४ प्रदि सं ६ । वन सं ६४ । मे वल सं ११३४ बंभारि कुटी १ । के सं १७२ ।  
क मन्थार

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या वाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७ प्रति स ५। पत्र म० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वै० स० ५२। ख भण्डार।

विशेष-थ्रेष्ठी मानमिहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम में प्रतिलिपि करवायी।

१६८ प्रति स० ६। पत्र म० १ मे ४३। ले० काल X। अपूर्णा। वै० म० ५३। ख भण्डार।

विशेष-संस्कृत टट्टवा टीका सहित है। १४३वीं गाथा में ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९ प्रति स० ७। पत्र म० ५६। ले० काल X। वै० म० ५४। ख भण्डार।

विशेष-प्रति संस्कृत टट्टवा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थमार टिप्पण' है। भानन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७० प्रति स० ८। पत्र म० २५। ले० का० स० १६४६ चैत बुदी २। वै० म० १२६। ड भण्डार।

१७१ प्रति स० ९। पत्र म० ७। ले० काल X। वै० म० १३५। छ भण्डार।

१७२ प्रति स० १०। पत्र म० ३२। ले० काल X। वै० म० १३५। छ भण्डार।

१७३ प्रति स० ११। पत्र म० ५३। ले० काल X। वै० म० १४५। छ भण्डार।

विशेष-२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४ प्रति स० १२। पत्र स० ७। ले० काल X। वै० स० २६१। ज भण्डार।

१७५ प्रति स० १३। पत्र म० २ मे २५। ले० काल म० १६६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्णा। वै० म० १२५। ट भण्डार।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति —संवत् १६६५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यानये चौबीस ठाणो ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६ प्रति स० १४। पत्र म० ३३। ले० काल स० १८१४ चैत बुदि ६। वै० म० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति-संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिने १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या सोमवासरे हनुवती देवे भद्राह्वयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेर्द विद्द छात्र सर्व सुखह्वयाध्यापनार्थ लिपिकृतं स्वशयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुस्तक।

१७७ प्रति स० १५। पत्र स० ६६। ले० ना० म० १८८० माघ बुदी १५। वै० म० १८१७। ट भण्डार।

विशेष-नेपाला नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८ प्रति स० १६। पत्र स० १२। ले० काल X। वै० म० १८८६। ट भण्डार।

१३३ प्रति स ७। पत्र नं ७४। मे कल नं १५। पीप मुदी १३। वे नं १६७। छ मन्दा।

विवेक—बकलपर किमती बहुश्या बंदलाल मे मवाई बकपुर मे प्रतिनिधि भी थी।

१३४ चर्चासार—यं शिवजीकाका। पत्र नं १३३। पा १ १/२२ दख। भाषा—हिन्दी। विषय—  
सिद्धांत। र कल ×। मे कल ×। पूर्ण। वे नं १४५। छ मन्दा।

१३५ चर्चासार—। पत्र नं १६२। पा २ ४<sup>१</sup> दख। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र  
कल ×। कपूर्व। वे नं १४। छ मन्दा।

१३६ चर्चासार—। पत्र नं १६। पा १३×२<sub>५</sub> दख। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र  
कल ×। कपूर्व। वे नं ७५६। छ मन्दा।

१३७ चर्चासार—बंदाकाका। पत्र नं १४। पा १३×१<sub>३</sub> दख। भाषा—हिन्दी वष। विषय—  
सिद्धांत। र कल नं १२१। मे कल नं १२३१। पूर्ण। वे नं ४३६। छ मन्दा।

विवेक—सायब मे १४ पत्र विषय मुदी के कलम मे रले हैं।

१३८ प्रति स २। पत्र नं ४१। मे कल नं १२१। वे नं १४। छ मन्दा।

१३९ चौदहगुणसत्ताचर्चा—कलकत्ता। पत्र नं ४१। पा ११×२<sub>५</sub> दख। भाषा—हिन्दी वष।  
(रामसाली) विषय—सिद्धांत। र कल ×। मे कल ×। पूर्ण। वे नं ३२२। छ मन्दा।

१४ प्रति स २। पत्र नं १-४१। मे कल ×। वे नं ६। छ मन्दा।

१४१ चौदहमार्गिका—। पत्र नं १। पा १९×२ दख। भाषा—बकपुर। विषय—सिद्धांत।  
र कल ×। मे कल ×। पूर्ण। वे नं ३३६। छ मन्दा।

१४२ प्रति स २। पत्र नं ११। मे कल ×। वे नं १२२। छ मन्दा।

१४३ चौबीसठमाचर्चा—मेमिचमन्दाचर्चा। पत्र नं ६। पा १ १/२×४<sub>५</sub> दख। भाषा—बकपुर।  
विषय—सिद्धांत। र कल ×। मे कल नं १२ बीसठ मुदी १। पूर्ण। वे नं १२७। छ मन्दा।

१४४ प्रति स २। पत्र नं ६। मे कल ×। कपूर्व। वे नं १२२। छ मन्दा।

१४५ प्रति स ३। पत्र नं ७। मे कल नं १ १७ पीप मुदी १९। वे नं १६। छ मन्दा।

विवेक—यं ईश्वरदास के विषय कलकत्ता के पठनार्थ मन्दाका नाम मे कल भी प्रतिबोधि थी।

१४६ प्रति स ४। पत्र नं ३१। मे कल नं १९४६ कर्किक मुदि २। वे नं २१। छ मन्दा।

१६० प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० बाल × । अपूर्णा । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३६२ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ५ । पत्र स० ८० । ले० बान < । वे० स० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

१६५ प्रति स० ८ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—वेनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१६६ त्रिज्यालीसठाणाचर्चा । पत्र स० १० । आ० ६१ १/४ इ च । भाषा सम्स्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल—× । ले० कान स० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

१६७ जम्बूद्वीपफत्त । पत्र स० ३० । आ० १२३ १/६ इ च । भाषा सम्स्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ११५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन । पत्र स० १८ । आ० ६×४ इ च । भाषा प्राकृत । २० काल × ।

२० कान × । अपूर्णा । वे० स० १२१ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ ६ पत्रों में तत्व वर्णन भी है । गोम्मटसर में ने किया गया है ।

१६९ जीवाचारविचार । पत्र स० ५ । आ० ६५ १/४ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० कान × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति स० ७ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० स० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१ जीवसमासटिप्पण । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । ख भण्डार ।

२०२ जीवसमासभाषा । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० ८८१८ । वे० स० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र स० ९० । आ० १२×५ इ च । भाषा सम्स्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विषय ३ पर तब चर्चा है हमने पहले किया ही बात ठका कृष्णर स्वीक है । चौबीस तीसवृत्त के विद्वा  
 चादि का वर्णन है ।

१८६. चतुर्विंशति स्थानक-नमिचन्द्राचार्य । पर मं ४३ । या ११५४ इक्ष । या शतप ।  
 विषय-मिश्रागत । १ वल  $\times$  । ले वल  $>$  । पूर्ण । के मं ११२ । अथकार ।

विकल्प-संस्कृत टीका भी है ।

१८७. चतुर्विंशति मुख्यस्थान पीठिका --- । पर मं १ । या १०५४ इक्ष । या मं इत ।  
 विषय-मिश्रागत । १ वल  $\times$  । ले वल  $\times$  । पूर्ण । के मं ११५२ । अथकार ।

१८८. चौबीस ठाण्डा चर्चा --- । पर मं २ ले २४ । या ११५२४ इक्ष । या शतप । विष्णु-  
 मिश्रागत । वल  $\times$  । ले वल  $\times$  । पूर्ण । के मं ११६५ । अथकार ।

१८९. प्रति स ७ । पर मं ३२ न २१ । या ११६५२ इक्ष । या मं संस्कृत । ले वल स १ ११  
 गेन मुदी १ । के मं ११६६ । पूर्ण । अथकार ।

विकल्प- रामकर्मण वास्तुव्यकरणे लिखित ।

१९०. प्रति स ३ । पर मं ११ । ले वल  $\times$  । के स १६ । अथकार ।

१९१. चौबीस ठाण्डा चर्चा वृत्ति --- । पर मं १२१ । या ११६५२ इक्ष । या मं संस्कृत ।  
 विषय-मिश्रागत । वल  $\times$  । ले वल  $>$  । पूर्ण । के मं १२ । अथकार ।

१९२. प्रति स २ । पर मं १२ । ले वल स १ ४१ गेठ मुदी १ । पूर्ण । के स ७० ।  
 अथकार ।

१९३. प्रति स ३ । पर मं ११ । ले वल  $>$  । के स १११ । अथकार ।

१९४. प्रति स ३ । पर मं ३ । ले वल स १ १ चर्चित वृत्ति १ । जीर्ण-शीर्ष । के मं  
 १२१ । अथकार ।

विकल्प- ईश्वरदास के विष्णु तथा श्रीधारास के बुधमार्ग सत्यर के पठनार्थ विष्णु विद्यापीठ का  
 प्रतिभिर करवायी गई । प्रति संस्कृत टीका बह्विध है ।

१९५. चौबीस ठाण्डा चर्चा --- । पर मं ११ । या ११६५२ इक्ष । या मं शिरी । विष्णु-मिश्रागत ।  
 १ वल  $\times$  । ले वल  $\times$  । पूर्ण । के मं ४१ । अथकार ।

विकल्प-नमोति के अर्थ का एक 'चौबीस ठाण्डा' इकराम भी लिखा है ।

१९६. प्रति स १ । पर मं ११ । ले वल स १ २१ । के स १ ४७ । अथकार ।

१६० प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३८२ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ५ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

१६५ प्रति स० ८ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—बेनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१६६ द्विध्यालीसठाणाचर्चा । पत्र स० १० । आ० ६१×४३ इ च । भाषा सम्स्कृत ।

विषय—सिद्धांत । २० काल—× । ले० काल स० १८२० आषाढ बुदी १ । पूर्णा । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

१६७ जम्बूद्वीपकत । पत्र स० ३२ । आ० १२३×६ इ च । भाषा सम्स्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ८ । पूर्णा । वे० स० १८५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन । पत्र स० १४ । आ० ६×४ इ च । भाषा प्राकृत । २० काल × ।

२० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में भी लिया गया है ।

१६९ जीवाचारविचार । पत्र स० ५ । आ० ६१×४३ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति स० ७ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० स० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१ जीवसमासटिप्पण । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २३५ । अ भण्डार ।

२०२ जीवसमासभाषा । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८१८ । वे० स० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र स० ६७ । आ० १२×५ इ च । भाषा सम्स्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २००४ । ट भण्डार ।

२५. जन महाभारत मार्गीरुड नामक पत्र का मातृघर—बाया हुआ। वर्ष नं २२।  
या १९७५ इ.स। मया लिपी। विषय—वर्षा मयाभार। १ बाल नं ११४१। २ बाल ×। पूर्ण  
के सं २५। क मयाभार।

२०५. प्रसिद्ध ३। वर्ष नं २१। ३ बाल ×। ३ नं २१७। क मयाभार।

२६ ठाकुरगुरु—। वर्ष नं ४। या १९७५ इ.स। मया मंगल। विषय—वर्षा मयाभार।  
१ बाल ×। २ बाल ×। पूर्ण। ३ नं ११२। क मयाभार।

२७ तत्त्वज्ञान—५ फलासाह मयी। वर्ष नं ३। या १९७५ इ.स। मया लिपी।  
विषय—विज्ञान। १ बाल ×। २ बाल नं ११४४। पूर्ण। ३ नं २१। क मयाभार।

विषय—यह वर्ष तत्त्वज्ञान के विषय में लिखी गई थी है। यह १ मयाभार के विषय है। इन प्रसिद्ध  
के १ मयाभार तक है।

२०८ प्रसिद्ध ३। वर्ष नं ३४६। ३ बाल नं ११४२। ३ नं २०२। क मयाभार।

विषय—यह मयाभार के १ मयाभार तक की लिखी थी है। मया मयाभार मयाभार है।

२८ प्रसिद्ध ३। वर्ष नं ४२। १ बाल नं ११४४। ३ बाल ×। ३ नं २४। क मयाभार  
विषय—वर्षा मयाभार के मयाभार की लिखी थी है।

२९ प्रसिद्ध ४। वर्ष नं ४२। ३ नं ७७६। ३ बाल ×। पूर्ण। ३ नं २४। क मयाभार।

विषय—टीका तथा टीका मयाभार है। टीका मयाभार के २ वर्ष मयाभार थी है। ४० मयाभार वर्षों के  
मयाभार है।

२११ प्रसिद्ध ४। वर्ष नं १७५४। ३ बाल ×। ३ नं १४२। क मयाभार।

विषय—२ १ ७ २ १ नं मयाभार की मयाभार थी है।

२१२ तत्त्वज्ञान—। वर्ष नं ११। या १९७५ इ.स। मया लिपी मयाभार। विषय—विज्ञान।

१ बाल ×। २ बाल ×। पूर्ण। ३ नं २१४। क मयाभार।

२१३ तत्त्वज्ञान—। वर्ष नं ४। या १९७५ इ.स। मया मंगल। विषय—विज्ञान।

१ बाल ×। २ बाल ×। पूर्ण। ३ नं ७६। क मयाभार।

विषय—वर्षा मयाभार के मयाभार लिखी गई थी।

२१४ तत्त्वज्ञान—। वर्ष नं १। या १९७५ इ.स। मया मंगल। विषय—विज्ञान।

१ बाल ×। २ बाल नं १११ नं मयाभार। पूर्ण। ३ नं २१२।

विषय—विज्ञान के मयाभार लिखी गई थी।

२१५ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २६६ । क भण्डार ।

विषय—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ तत्त्वमारभाषा-पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ४४ । भा० १०३/५ इक्ष । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल स० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल < । पूर्णा । वे० स० २६७ । फ भण्डार ।

विषय—देवमेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० ३६ । भा० १३३/१३ इक्ष । भाषा मस्युत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल > । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विषय—वेदान्त प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थवाध—पत्र स० १८ । भा० १०३/१३ इक्ष । भाषा मस्युत । विषय—सिद्धान्त । २०

काल × । ले० काल > । वे० स० १८७ । ज भण्डार ।

विषय—पत्र ६ म श्री देवमेन पृत आलारपद्धति की हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४४ । भा० ११/४ इक्ष । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । १० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पत्र स० ३६ । भा० १०३/५ इक्ष । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ४६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० १० । भा० १३/४ इक्ष । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल > । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विषय—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । अन्य गोमतीलालजी भाषा का भेंट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र स० ४२ । भा० १३/४ इक्ष । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्णा । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विषय—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भाषा का है । श्लोक स० २२५ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । भा० १०३/४ इक्ष । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६७३ आसोज बुदी ५ । वे० स० ७२ । व्य भण्डार ।

विषय—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । अ० हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मगही कँवर ने

जाम्नी गगाराम ने प्रतिलिपि कम्पायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० स० १३७ ।

घ भण्डार ।



२४ जन महाभारत भार्गवस्य नामक पत्र का अस्तुत्तर—बाबा हुस्नीबन्द । पत्र नं ११ ।  
 भा १२×७५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—वर्षा समाचार । र काल नं १२५६ । ले काल × १ पूर्ण  
 के तं २ । क मन्थार ।

२५ प्रति स २ । पत्र नं २१ । ले काल × १ के तं २१७ । क मन्थार ।

२६ ठासोसुत्र— । पत्र नं ४ । भा १ १/२ × ४ १/२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—वाचन ।  
 र काल × १ । ले काल × १ पूर्ण । के तं १२२ । क मन्थार ।

२७ तत्त्वकौमुद—प पलाशका मधी । पत्र नं ७२७ । भा १२×७५ इंच । भाषा हिन्दी ।  
 विषय—विद्यालय । र काल × १ । ले काल नं १२४४ । पूर्ण । के तं २ । क मन्थार ।

विशेष—इस काल लखनऊ राजपत्रिक की हिन्दी मक टीका है । यह १ अध्यायों के विषय है । इन प्रति  
 के २ अध्याय तक है ।

२७८ प्रति स २ । पत्र नं ४४६ । ले काल नं १२४२ । के तं २७२ । क मन्थार ।

विशेष—२७ अध्याय के २ के अध्याय तक की हिन्दी टीका है । तथा अध्याय पूर्ण है ।

२८२ प्रति स ३ । पत्र नं ४२ । र काल नं १२१४ । ले काल × १ के तं २४ । क मन्थार  
 विशेष—राजपत्रिक के प्रकाशनाय की हिन्दी टीका है ।

२९ प्रति स ४ । पत्र नं ४२ के ७७६ । ले काल × १ पूर्ण । के तं २४१ । क मन्थार ।  
 विशेष—टीका तथा टीका अध्याय है । टीका अध्याय के २ पत्र काल की है । ४७ काल की के  
 मूलपत्र है ।

२९१ प्रति स २ । पत्र नं १७ के ४७ । ले काल × १ के तं २४२ । क मन्थार ।

विशेष—२, १, ७ ८ १ के अध्याय की भाषा टीका है ।

२९३ तत्त्वदोषिक— । पत्र नं ३१ । भा १ १/२ × १ १/२ भाषा हिन्दी पत्र । विषय—विद्यालय ।  
 र काल × १ । ले काल × १ पूर्ण । के तं २ १४ । क मन्थार ।

२९३ तत्त्वसंज्ञा— सुमनस्य । पत्र नं ४ । भा १ १/२ × ४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—विद्यालय  
 र काल × १ । ले काल × १ पूर्ण । के तं १ । क मन्थार ।

विशेष—वाचन मेविकण के बटनार्थ सिद्धी कई की ।

२९४ तत्त्वसार— देवसंज्ञा । पत्र नं १ । भा ११ × ३ १/२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—विद्यालय ।  
 र काल × १ । ले काल नं १७१८ पीठ पुरी । पूर्ण । के तं २९२ ।

विशेष—विद्यालय के प्रतिनिधि परवन्धी की ।

२१५ प्रति स० २ । पत्र म० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० म० २६६ । क भण्डार ।

विशेष-हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पत्र म० ४ । ले० काल × । वे० म० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ तत्त्वमानभाषा-पन्नालाल चौधरी । पत्र १० ४४ । भा० १०३/५ इच्छ । भाषा हिन्दी ।

विषय-मिथान । १० काल म० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । प० म० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष-दशम कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पत्र म० ३६ । ले० काल × । वे० म० २६८ । क भण्डार ।

२१९ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र म० ३६ । भा० १३३/५ इच्छ । भाषा मस्युत । विषय-मिथान ।

१ भाषा × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० म० १२६ । च भण्डार ।

विशेष-यवन प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थवाध— पत्र म० १८ । भा० १०३/५ इच्छ । भाषा मस्युत । विषय-सिद्धान्त । १०

काल × । ले० काल × । वे० म० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष-पत्र २ म श्री दशम कृत आत्मानन्दति की हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४५ । भा० ११/५ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-

मिथान । १० काल म० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० म० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पत्र म० ३६ । भा० १०३/५ इच्छ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० म० ५६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र म० १० । भा० १३/५ इच्छ । भाषा मस्युत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० म० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष-प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भाषा का नेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र स० ८२ । भा० १३/५ इच्छ । भाषा मस्युत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६५० प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्णा । वे० म० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भाषा का है । प्लोव म० २०५ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । भा० १०३/५ इच्छ । भाषा मस्युत ।

विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल म० १६७३ आमोज बुदी १ । वे० म० ७२ । व्य भण्डार ।

विशेष-प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ब्र० हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मगही कँवर ने चोमो गगाराम ने प्रतिलिपि करावायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पत्र म० ११७ । ले० काल स० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० म० १३७ ।

घ भण्डार ।

२४ जन सदाचार मार्गदर्शक सामक पत्र का मस्युत्तर—बाबा बुद्धीबन्ध । पत्र नं १२।  
 का १२×७१ इंच। भाषा हिन्दी। विषय—बर्षा लबाबल। र काल नं ११५१। ले काल ×। पूर्ण।  
 के तं २। क नम्बर।

२०३. प्रति स २। पत्र नं ११। ले काल ×। के तं २१७। क नम्बर।

२६ ठाण्णिसुत्र—। पत्र नं ४। का ११×४२ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—वाचन।  
 र काल ×। ले काल। मस्युत्तर। के तं ११२। क नम्बर।

२७. तत्त्वप्रौस्तुभ—प पत्राभास सची। पत्र नं ७२०। का १२×७२ इंच। भाषा हिन्दी।  
 विषय—विज्ञान। र का ×। ले काल नं ११५४। पूर्ण। के तं २। क नम्बर।

विशेष—इ कल्प उत्पत्तिराजमार्गिक की हिन्दी बच टीका है। यह १ अध्यायों में विभक्त है। इस प्रति  
 में ४ अध्याय एक है।

२०५ प्रति स १। पत्र नं १५१। ले काल नं ११५७। के तं २७२। क नम्बर।

विशेष—२५ अध्याय में १ में अध्याय एक की हिन्दी टीका है। तथा अध्याय मस्युत्तर है।

२. प्रति स ३। पत्र नं ४२। र काल नं १११४। ले काल ×। के तं १४। क नम्बर।  
 विशेष—राजमार्गिक के अन्तर्ध्याय की हिन्दी टीका है।

२१ प्रति स ४। पत्र नं ४२ ले ७७१। ले काल ×। मस्युत्तर। के तं २४१। क नम्बर।  
 विशेष—तीनटा तथा बीसा अध्याय है। तीसरे अध्याय के २ पत्र चलन कीर है। ४७ चलन पत्रों में  
 सुनीयन है।

२११ प्रति स ३। पत्र नं १७ ले ४। ले काल ×। के तं २४२। क नम्बर।

विशेष—२ १ १ में अध्याय की भाषा टीका है।

२१३ तत्त्वप्रौस्तुभ—। पत्र नं ११। का ११×११ भाषा हिन्दी पत्र। विषय—विज्ञान।  
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के तं ११४। क नम्बर।

२१३ तत्त्वप्रौस्तुभ—। पत्र नं ४। का १ ×४२ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—विज्ञान।  
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के तं ७६। क नम्बर।

विशेष—वाचन के विषय के पठनार्थ लिखी गई की।

२१४ तत्त्वप्रौस्तुभ—। पत्र नं १। का ११×२१ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—विज्ञान।  
 र काल ×। ले काल नं १७११ कीर बुद्धी। पूर्ण। के तं २१२।

विशेष—विद्यालय में प्रयोग के लिये

२१४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २६६ । क भण्डार ।

विषय—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ नन्दमारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ४४ । आ० १०३ × ५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल स० १६३१ वैशाख बुदी ७ । वे० काल × । पूर्णा । वे० स० २६७ । क भण्डार ।

विषय—देवमन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० ३६ । आ० १३३ × ११ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० वाप / । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विषय—वचन प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थबोध— पत्र स० १८ । आ० १०३ × १३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १०

वाप × । ले० काल / । वे० स० १४७ । ज भण्डार ।

विषय—पत्र ६ म श्री देवमेन कृत आलापवृत्ति की हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४४ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । १० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पत्र स० ३६ । आ० १०३ × ५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० १० । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विषय—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भोंसा का भेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र स० ४२ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६५२ प्रथम वैशाख बुदि ३ । पूर्णा । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विषय—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भोंसा का है । श्लोक स० २०४ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । आ० १०३ × ४ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६७३ आसोज बुदी / । वे० स० ७२ । च भण्डार ।

विषय—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ब्र० हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मगही कंवर ने

जोगी गगाराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६३३ आपाद बुदी १० । वे० स० १३७ ।

घ भण्डार ।

२७ प्रति स ३। वष सं ७९। मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं ३। वष अष्टार।

विशेष—घण्टिम पत्र गृही है।

२८ प्रति स ४। वष सं २८९१। मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं ११३१। वष अष्टार।

विशेष—प्रतिम पुष्टिम— इति तत्पार्थ उपप्रबन्धगण्ठी मुनि श्री धर्मपत्र क्षिप्र श्री प्रबन्धनेव वि

विने ब्रह्मज्ञान साधु ह्यजनेव देव भक्त्या विविसे मोक्ष स्वार्थ कथन वचन मूत्र विचार प्रफुल्ल वसह्य।

२९ तत्पार्थराजपार्थिक—महाकालकद्वैत। वष सं ३५। या १९ $\times$ ७ इत्य। मत्ता संस्त।

विषय—सिद्धन्त। १८ काल  $\times$ । मे काल सं १८७८। धूर्त्त। के सं १७। वष अष्टार।

विशेष—इत प्रति श्री प्रतिमिति सं १२७ मत्तो प्रति न वचनुर वचन मे श्री श्री श्री।

३० प्रति स ७। वष सं १९९। न काल सं १९४१ मत्ता मुनी ३। के सं १३७।

व अष्टार।

विशेष—इत कल्प २ वैकुण्ठी मे है। प्रथम वैकुण्ठ मे १ मे ६ तथा दुन्दुभे मे ६ १ मे १२२ मत्ता वष है।

प्रति इतम है। मूल के नीचे क्षिपी धर्म श्री विद्या है।

३१ प्रति स ३। वष सं ३९। मे काल  $\times$ । के सं ६४। वष अष्टार।

विशेष—मूलपात्र ही है।

३२ प्रति सं ४। वष सं २। मे काल सं १९७४ वीच मुनी १६। के सं २४८।

व अष्टार।

विशेष—अन्तु मे म्प्रीतीसल कथना मे प्रतिमिति श्री।

३३ प्रति स ६। वष सं १। मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं ६६६। वष अष्टार।

३४ प्रति स ६। वष सं १७८ मे ९१। मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं १९७। वष अष्टार।

३५ तत्पार्थराजपार्थिकमाया। वष सं ३३। या १२ $\times$  इत्य। मत्ता—श्रीश्री वष।

वष—सिद्धन्त। १८ काल। मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं २४३। वष अष्टार।

३६ तत्पार्थहृति—प वागद्वैत। वष सं ६७। या ११ $\times$ ७ इत्य। मत्ता—संस्त। विषय—

सिद्धन्त। मत्तासल  $\times$ । मे काल सं १९३ वीच मुनी १३। धूर्त्त। के सं २३९। वष अष्टार।

विशेष—वृत्ति वा नाम मूलवोध हृति है। तत्पार्थ मूत्र वर क्क उत्तम टीका है। न मोक्षवैत मुक्तमत्ता मे

विशाली मे। म्प्री वचन मत्ता विने मे है।

३७ प्रति स ७। वष सं १४। मे काल  $\times$ । के सं २३। वष अष्टार।

३८ तत्पार्थमार—अमृतमन्त्राचार। वष सं २। या १६ $\times$ ३ इत्य। मत्ता संस्त। विषय—

सिद्धन्त। १८ काल  $\times$ । मे काल  $\times$ । धूर्त्त। के सं ३३। वष अष्टार।

विशेष—इत कल्प मे ६१ मत्ता श्री श्री २ मत्ता श्री मे विषय है। इनमे ७ मत्तो वा वचन विद्या

२३६ प्रति स० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । वे० स० २३६ । क भण्डार ।

२४० प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २४२ । ऋ भण्डार ।

२४१ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० ६५ । ख भण्डार ।

२४२ प्रति स० ५ । पत्र स० ८२ । ले० काल × । वे० स० ६६ । झ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १३२ । ञ भण्डार ।

२४४ तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र म० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० म० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्त्ति ने 'तत्त्वार्थमारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है ।

रचना १० अध्यायो में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम में प्रकट होता है ।

२४५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८० । क भण्डार ।

२४६ प्रति स० ३ । पत्र म० ८६ । ले० काल स० १८६४ आसोज मुदी २ । वे० म० २४१ । क

भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७ तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र स० २८६ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थों की पद्मलाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८ प्रति स० २ । पत्र स० २८७ । ले० काल × । वे० स० २४३ । क भण्डार ।

२४९ तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति । पत्र स० २६ । आ० ७×३ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १४५८ श्रावण मुदी ६ । पूर्ण । वे० म० २१६६ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र हैं जिन पर श्वेत (रत्न) अक्षर हैं । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र

ममाति पर भक्तार स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रगस्ति—स० १४५८ श्रावण मुदी ६ ।

२५० प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६६६ । वे० स० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर वेलें हैं । प्रति दर्शनीय एव प्रदर्शनी में रखने योग्य है । नवान प्रति है । स० १६६६ में जौहरीलालजी नदलालजी धी वालों ने व्रतोद्यापन में प्रति निम्ना कर चढ़ाई ।

२५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० स० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एव प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति स ४। पत्र सं ११। ले कल  $\times$ । के सं १३३। अ मन्दा।

२५३. प्रति स ५। पत्र सं १। ले कल सं १५५। के सं २५५। अ मन्दा।

२५४. प्रति स ६। पत्र सं ७। ले कल सं १६। के सं ३३। अ मन्दा।

३४. प्रति स ७। पत्र सं ६। ले कल  $\times$ । कपूर्व। के सं ३५। अ मन्दा।

२५६. प्रति स ८। पत्र सं १३। ले कल सं १३। के सं ३६९। अ मन्दा।

विशेष—द्विती धर्म विना हुआ है।

२५७. प्रति सं ९। पत्र सं ११। ले कल  $\times$ । के सं १७२। अ मन्दा।

२५८. प्रति सं १। पत्र सं ३२। ले कल  $\times$ । के सं १३। अ मन्दा।

विशेष—द्विती टक्का टीका बहिर है। पं. अमीर खान के मतानुसार में प्रतिनिधि की।

२५९. प्रति स ११। पत्र सं १४। ले कल  $\times$ । के सं २६३। अ मन्दा।

२६. प्रति स १२। पत्र सं २५। ले कल  $\times$ । कपूर्व। के सं ७७२। अ मन्दा।

विशेष—पत्र १७ के २ एक मही है।

२६१. प्रति स १३। पत्र सं ३६। ले कल  $\times$ । कपूर्व। के सं १। अ मन्दा।

२६२. प्रति स १४। पत्र सं ३६। ले कल सं १६२। के सं ५७। अ मन्दा।

विशेष—संक्षिप्त टीका लक्षित।

२६३. प्रति सं १५। पत्र सं १। ले कल  $\times$ । के सं ५५। अ मन्दा।

२६४. प्रति स १६। पत्र सं २२। ले कल सं १२। के सं १३५। अ मन्दा।

विशेष—संक्षिप्त द्विती धर्म विना हुआ है।

२६५. प्रति स १७। पत्र सं २४। ले कल  $\times$ । के सं २। अ मन्दा।

२६६. प्रति स १८। पत्र सं ११। ले २२। ले कल  $\times$ । कपूर्व। के सं १३३५। अ मन्दा।

२६७. प्रति सं १९। पत्र सं १६। ले कल सं १२। के सं १३५५। अ मन्दा।

२६८. प्रति सं २। पत्र सं २४। ले कल  $\times$ । के सं १२७२। अ मन्दा।

२६९. प्रति स २१। पत्र सं १। ले कल  $\times$ । के सं १३३१। अ मन्दा।

२७०. प्रति स २२। पत्र सं ३। ले कल  $\times$ । के सं १३५३। अ मन्दा।

२७१. प्रति स २३। पत्र सं ११। ले कल  $\times$ । के सं १३३६। अ मन्दा।

७७. प्रति स २४। पत्र सं ३। ले कल सं १६४६। कालिका मूरी ३। के सं २६।

अ मन्दा

विशेष—संक्षिप्त द्विती धर्म विना हुआ है। अमीर खान के मतानुसार में प्रतिनिधि की।

२७३ प्रति स० २५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६ । वे० स० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति स० २६ । पत्र स० ९ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५ प्रति स० २७ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० २४९ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदाम शैलतगम ने जैसिहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

२७६. प्रति स० २८ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६३९ भाद्रवा सुदी ४ । वे० स० २५८ ।

क भण्डार ।

२७७ प्रति स० २९ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २५९ । क भण्डार ।

२७८ प्रति स० ३० । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० स० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति स० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० २५७ । क भण्डार ।

२८० प्रति स० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी प० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१ प्रति स० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२ प्रति स० ३४ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० ३९ । ग भण्डार ।

२८३ प्रति स० ३५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८९१ भाद्र बुदी ४ । वे० स० ४० ।

ग भण्डार ।

२८४ प्रति स० ३६ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति स० ३७ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पा टीका सहित है ।

२८६ प्रति स० ३८ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३५ । घ भण्डार ।

२८७ प्रति स० ३९ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८ प्रति स० ४० । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९ प्रति स० ४१ । पत्र स० ८ मे २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति स० ४२ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २४९ । ङ भण्डार ।

२९१ प्रति स० ४३ । पत्र स० २९ । ले० काल × । वे० स० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।



२३८ प्रथि सं ४४। पत्र सं १२। ले नाल सं १८८१। के सं २३१। क मन्डार।

२३९ प्रथि सं ४५। पत्र सं १३। ले नाल ×। के सं २३२। क मन्डार।

विशेष—दुधो के ऊपर हिन्दी में अर्ध विद्या हुआ है।

२४० प्रथि सं ४६। पत्र सं १। ले नाल ×। के सं २३३। क मन्डार।

२४१ प्रथि सं ४७। पत्र सं १६। ले नाल ×। के सं २३४। क मन्डार।

२४२ प्रथि सं ४८। पत्र सं १२। ले नाल सं १८९१ कर्णिक मुदी ×। के सं २३५। क मन्डार।

२४३ प्रथि सं ४९। पत्र सं १७। ले नाल ×। के सं २३६। क मन्डार।

२४४ प्रथि सं ५०। पत्र सं २८। ले नाल ×। के सं २३७। क मन्डार।

२४५ प्रथि सं ५१। पत्र सं ७। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २३८। क मन्डार।

२४६ प्रथि सं ५२। पत्र सं १६। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २३९। क मन्डार।

२४७ प्रथि सं ५३। पत्र सं १। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २४०। क मन्डार।

२४८ प्रथि सं ५४। पत्र सं १२। ले नाल ×। के सं २४१। क मन्डार।

विशेष—पति हिन्दी अर्ध लक्षित है।

२४९ प्रथि सं ५५। पत्र सं १६। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २४२। क मन्डार।

२५० प्रथि सं ५६। पत्र सं १७। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २४३। क मन्डार।

२५१ प्रथि सं ५७। पत्र सं १८। ले नाल ×। के सं २४४। क मन्डार।

विशेष—केवल अर्ध मन्डार ही है। हिन्दी अर्ध लक्षित है।

२५२ प्रथि सं ५८। पत्र सं ७। ले नाल ×। के सं २४५। क मन्डार।

विशेष—दोषित हिन्दी अर्ध भी विद्या हुआ है।

२५३ प्रथि सं ५९। पत्र सं १। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २४६। क मन्डार।

२५४ प्रथि सं ६०। पत्र सं १७। ले नाल सं १८८९ मुदी १६। जीर्ल। के सं २४७। क मन्डार।

विशेष—गुरलीवर महाराज बोधनेर नाल के प्रतिनिधि भी।

२५५ प्रथि सं ६१। पत्र सं ११। ले नाल सं १८९१ मुदी १। के सं २४८। क मन्डार।

२५६ प्रथि सं ६२। पत्र सं ११। ले नाल सं १८९१ मुदी ११। के सं २४९। क मन्डार।

२५७ प्रथि सं ६३। पत्र सं ११। ले नाल सं १८९१। के सं २५०। क मन्डार।

विशेष—आहुलाल केही के प्रतिनिधि बनवाली।

२५८ प्रथि सं ६४। पत्र सं ११। ले नाल ×। के सं २५१। क मन्डार।

२५९ प्रथि सं ६५। पत्र सं २१। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २५२। क मन्डार।

२६० प्रथि सं ६६। पत्र सं १४। ले नाल ×। के सं २५३। क मन्डार।

२६१ प्रथि सं ६७। पत्र सं २१। ले नाल ×। धनुर्ल। के सं २५४। क मन्डार।

विशेष—टक्वा टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६ प्रति स० ६८ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्वा टीका सहित है ।

३१७ प्रति स० ६६ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० म० १७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्वा टीका सहित है ।

३१८ प्रति स० ७० । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रा में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम प्रधिकार हैं । इसमें आगे भक्तप्रस्ताव है ।

३१९ प्रति स० ७१ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२० प्रति स० ७२ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ३८ । ज भण्डार ।

३२१ प्रति स० ७३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२२ फायुनसुदी १५ । वे० स० ८८ । ज भण्डार ।

३२२ प्रति स० ७४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १८२ । झ भण्डार ।

३२३ प्रति स० ७५ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० ३०१ । झ भण्डार ।

३२४ प्रति स० ७६ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २७१ । झ भण्डार ।

विशेष—पञ्चालान के पठनार्थ लिखा गया था ।

३३५ प्रति स० ७७ । पत्र स० २० । ले० काल स० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० म० २७३ । ज भण्डार ।

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६ प्रति स० ७८ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ४४८ । ज भण्डार ।

३३७ प्रति स० ७९ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० म० ३८ ।

विशेष—प्रति टक्वा टीका सहित है ।

३३८ प्रति स० ८० । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० १६१५ ट भण्डार ।

३३९ प्रति स० ८१ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० म० १६१६ । ट भण्डार ।

३४० प्रति स० ८२ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विदायक्या ने गोरखलाल पाण्ड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमीचन्द्र आवडा समाजी की है ।

३४१ प्रति स० ८३ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६२१ । वे० स० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्वा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय

सर्दार रामसिंह जी के शासनकाल में जीवणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२ प्रति स० ८४ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २०६६ ।

विलन—वर्तुर्ष मन्थन मे है। इसके बादे वनिदुग्धपुत्रा, नर्तनवालपुत्रा, क्षेत्रपालपुत्रा, क्षेत्रपालगोत्र  
का विष्णामस्मिन्ना है।

३४२ वत्सार्धसूत्र हीका अनुसागर। नम सं १२२। मा १९×२ द्वा। मन्थनसुत। विष्ण-  
निष्ठा। र मन्थ- $\times$ । मे मन्थ सं १७३३ म मन्थल हरी ७। मे सं १९। पूर्ण। क मन्थार।

विशेष—श्री मुत्तलगर दुरि १९ श्री मन्थली के संस्कृत के मन्थे विष्ठा के। हन्थीमे १९ के श्री मन्थ  
का श्री मन्थानी श्री मन्थे टीकाएँ तथा श्रीमदी २ मन्थर्ष श्री है। श्री मुत्तलगर के पुत्र का नाम विष्ठाएँ मा श्री  
मन्थारक मन्थर्षि के प्रथिम एवं देविकर्षीति के मन्थ के।

३४४ प्रति सं २। नम सं १२२। मे मन्थ सं १७४५ मन्थ मुनी १४। पूर्ण। मे  
सं १२२। क मन्थार।

विशेष—३२२ के धाये के नम नहीं है।

३४४ प्रति सं ३। नम सं १२२। मे मन्थ- $\times$ । मे सं २९९। क मन्थार।

३४५ प्रति सं ४। नम सं १२२। मे मन्थ- $\times$ । मे सं ३३। क मन्थार।

३४७. वत्सार्धसूत्र दुरि—सिद्धसेन गण्डि। नम सं २४५। मा १३×४२ द्वा। मन्थ-  
गुण। विष्ण-निष्ठा। र मन्थ- $\times$ । मे मन्थ- $\times$ । मन्थर्षी। मे सं २२२। क मन्थार।

विशेष—श्री मन्थन तक ही है। धाये नम नहीं है। उत्सार्ध सूत्र श्री विष्ठा टीका है।

३४८. वत्सार्धसूत्र दुरि—। नम सं २३। मा १९×२ द्वा। मन्थ-संस्कृत। विष्ण-  
निष्ठा। र मन्थ- $\times$ । मे मन्थ-सं १९२२ मन्थल मुनी २। पूर्ण। मे सं २५। क मन्थार।

विशेष—मन्थपुत्रा के श्री मन्थर्षीति मे धाये मन्थार्ध दु वेता के प्रथिमि करणमे।

प्रकृति—संस्कृत १९३३ वर्षे मन्थल मागे हन्था नके संवनी सिनी रविचारे श्री मन्थपुत्रा मन्थे। न श्री  
२ श्री श्री श्री मन्थर्षीति विष्ण रान्थे व मन्थर्षीति निष्ठाएँ मन्थार्धे मन्थीवा नु दु वेता के मन्थर्षीति।

३४९ प्रति सं २। नम सं ३२। मे मन्थ सं १२२२ मन्थल मुनी १२। श्री मन्थल ल-  
पूर्ण। मे सं ३२४। क मन्थार।

विशेष—मन्थ मन्थ धर्मा के प्रथिमि श्री श्री। टीका विष्ठा है।

३५० प्रति सं ३। नम सं ३२। मे २९३। मे मन्थ- $\times$ । पूर्ण। मे सं २२९। क मन्थार।

विशेष—श्री विष्ठा है।

३५१ प्रति सं ४। नम सं ३३। मे मन्थ सं १७५६। मे सं १४२। क मन्थार।

३५२ प्रति सं ५। नम सं २६। मे २२। मे मन्थ- $\times$ । पूर्ण। मे सं ३२२। क मन्थार।

३५३ प्रति सं ६। नम सं १६। मे मन्थ- $\times$ । पूर्ण। मे सं १७९९। क मन्थार।

३५४ वत्सार्धसूत्र भाषा—न सप्तम्युक्त मन्थर्षीवाका। नम सं ३३३। मा १९३×२ द्वा।  
मन्थ-संस्कृत। र मन्थ सं १६३ मन्थल मुनि १। मे मन्थ- $\times$ । पूर्ण। मे सं २४२।  
क मन्थार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में मुन्दर टीका है ।

३५५ प्रति म० ७ । पत्र म० १५१ । ले० काल म० १९४३ श्रावण सुदी १५ । वै० सं० २४६ ।

क भण्डार ।

३५६ प्रति स० ३ । पत्र म० १०२ । ले० काल म० १९४० मगसिर बुदी १३ । वै० सं० २४७ ।

क भण्डार ।

३५७ प्रति स० ४ । पत्र म० ९६ । ले० काल स० १९१५ श्रावण सुदी ६ । वै० सं० ६६ । अपूर्ण ।

ख भण्डार ।

३५८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ९० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९ प्रति म० ६ । पत्र म० २८३ । ले० काल म० १९३५ माह सुदी ८ । वै० सं० ३३ । क भण्डार

३६० प्रति म० ७ । पत्र स० ९३ । ले० काल स० १९९६ । वै० सं० २७० । क भण्डार ।

३६१ प्रति म० ८ । पत्र म० १०२ । ले० काल × । वै० सं० २७१ । क भण्डार ।

३६२ प्रति म० ९ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १९४० चैत्र सुदी ८ । वै० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका न प्रतिलिपि करवाई ।

३६३ प्रति स० १० । पत्र स० ९७ । ले० काल म० १९३६ । वै० सं० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मागीलाल श्यामाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४ प्रति स० ११ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १९५५ । वै० सं० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—भानन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५ प्रति स० १२ । पत्र स० ७१ । ले० काल १९१५ आषाढ सुदी ६ वै० सं० ९१ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई ।

३६६ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छावड़ा । पत्र म० ११८ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । २० काल स० १८५९ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७ प्रति स० ७ । पत्र म० १६७ । ले० काल स० १८४६ । वै० सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पाडे जयवत । पत्र स० ६६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८४६ । वै० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिम पाठ निम्न प्रकार है —

केइक जीव अपोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की वालाबोधि टीका पाडे जयवत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के कहने में वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३१६. तत्पार्श्वसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र सं १४२ । या १२२×२३ इंच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—विज्ञान । २ कल × १ ले कल × १ पुर्ण । के सं २१६ । छ मन्थार ।

विवेक—तत्पार्श्वसूत्र की भुजतलटी टीका के अलावा २२ हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४२ के अने पत्र गयी है ।

३१७ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । ले कल × १ के सं १९ । छ मन्थार ।

३१८ प्रति सं ३ । पत्र सं १६१ । ले कल सं १७२३ । वीज भुजी २ । के सं २०९ । छ मन्थार ।

विवेक—मल्लचोट विपत्ती स्थिरतल मन्थेरा के प्रतिविति की थी ।

३१९ प्रति सं ४ । पत्र सं १६२ । ले कल × १ के सं ४४६ । छ मन्थार ।

३२० प्रति सं ५ । पत्र सं १९ । ले कल सं १९११ । के सं १६९ । छ मन्थार ।

विवेक—द्वैत धर्मोपनयन कला के अंतरा में विपत्तारतल बोधी के प्रतिविति करवायी ।

३२४ तत्पार्श्वसूत्र टीका—ब राजमल्ल । पत्र सं ५ से ४५ । या १२×२२ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—विज्ञान । २ कल × १ ले कल × १ पुर्ण । के सं २११ । छ मन्थार ।

३२५. तत्पार्श्वसूत्र भाष्य—बाटीसाह बीसनाह । पत्र सं २१ । या ११×२३ इंच । भाषा हिन्दी पद्य । विषय—विज्ञान । २ कल सं १६१९ वाचीय भुजी १ ले कल सं १६२२ वाचीय भुजी १ । पुर्ण । के सं १२४ । छ मन्थार ।

विवेक—बपुरास्यस्य के प्रतिविति की । बीटीसाह के सिद्धा वा भाष्य बोधीसह वा बहू क्लीयत विना दे भूतु हाल के एके अने के । टीका हिन्दी पत्र के है जो अलग तल है ।

३२६ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले कल × १ के सं २३७ । छ मन्थार ।

३२७ प्रति सं ३ । पत्र सं १७ । ले कल × १ के सं २६ । छ मन्थार ।

३२८. तत्पार्श्वसूत्र भाष्य—विष्णुचरण । पत्र सं २७ । या १३×२७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विज्ञान । २ कल सं १९ । ले कल सं १६२३ । पुर्ण । के सं २४५ । छ मन्थार ।

३२९. तत्पार्श्वसूत्र भाष्य— । पत्र सं ६४ । या १२×२७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विज्ञान । २ कल × १ ले कल × १ पुर्ण । के सं ४१६ ।

३३० प्रति सं २ । पत्र सं २ से ४६ । ले कल सं १५ वीजाय भुजी १९ । पुर्ण । के सं ६७ । छ मन्थार ।

३३१ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । ले कल × १ के सं ६ । छ मन्थार ।

विवेक—द्वितीय पत्रस्य तक है ।

३३२ प्रति सं ४ । पत्र सं १९ । ले कल सं १६४१ भुजी भुजी १४ । के सं १६१ । छ मन्थार ।

३३३ प्रति सं ५ । पत्र सं १६ । ले कल × १ के सं ४१ । छ मन्थार ।

३३४ प्रति सं ६ । पत्र सं ४२ से १९ । ले कल सं × १ पुर्ण । के सं ११४ । छ मन्थार ।

३८५ प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । २० काल- $\times$  । ले० काल स० १९१७ । वे० स० ५७१ ।  
च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३ । ले० काल  $\times$  । वे० स० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष—प० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३२ । ले० काल  $\times$  । वे० स० ५७५ । च भण्डार ।

३८८ प्रति स० १० । पत्र स० २३ । ले० काल  $\times$  । वे० स० १८५ । छ भण्डार ।

३८९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ३३ । प्रा० १० $\times$ ६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० ८८६ ।

विशेष—१५वा तथा ३३ में आगे पत्र नहीं है ।

३९० तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ६० से १०८ । प्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा— $\times$  ।

हिन्दी । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १७१६ । अपूर्ण । वे० स० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१९ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह श्रीरगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र

मुनानाम्के अन्य जन बोधाय विदुषा जयवता कुन साह जगन पठनार्थ बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थ सूत्राणा ।  
पूत्रसूत्र अतीव गभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते । इद वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित् भव्य इमा  
पठति ज्ञानो=श्रोत भविव्यति । लिखापित साह यिहारीदास खाजानची सावडावासी आमेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई  
साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ७० । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२ । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १९०२ आसोज बुदी १० । वे० स०  
१६८ । म भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है । हीरालाल बासनीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के  
वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३ त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६६ । प्रा० ६ $\frac{१}{२}$  $\times$ ४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
सिद्धांत । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७४ । ख भण्डार ।

विशेष—सालचन्द्र टोम्या ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४ प्रति स० २ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १९१६ । अपूर्ण । वे० स० १४६ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ४ । वे० स० २४ । ब्य भण्डार ।

विशेष—भ० क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६ त्रिमयीसार टीका—विशेषज्ञसिद्धि। पत्र नं ४५। पा १२×३३ दृष्ट। मत्ता-संज्ञत। विषय-  
मिथ्यात्वात्। र कल ×। ले कल नं १२४। पूर्ण। के सं २। क मन्वरा।

विशेष—४ मन्वरात्वे मे स्वयंस्वार्थ प्रतिभिति श्री श्री।

३६७ प्रति स २। पत्र सं १११। ले कल ×। के सं २५१। क मन्वरा।

३६८ प्रति स ३। पत्र सं १६ से १३। ले कल ×। मपूर्णा। के सं २६६। क मन्वरा।

३६९ परार्थप्रसिद्धिसूत्र—। पत्र नं १। पा १४×४६ दृष्ट। मत्ता-संज्ञत। विषय-संज्ञत  
र कल ×। ले कल ×। मपूर्णा। के सं २२३१। क मन्वरा।

४०० परार्थप्रसिद्धिसूत्र टीका—। पत्र नं १ से ४२। पा १३×४६ दृष्ट। मत्ता संज्ञत।  
विषय-संज्ञत। र कल ×। ले कल ×। मपूर्णा। के सं १६। क मन्वरा।

४१ इन्द्रसंज्ञ—जेमिथ्यमन्वराय। पत्र नं ६। पा ११×४३ दृष्ट। मत्ता-संज्ञत। र कल <  
ले कल नं १६३३ मास सुदी १। पूर्ण। के सं १३। क मन्वरा।

व्याप्ति—संज्ञ १६३३ वर्षिक मास मास कुलपत्रे १ विधी।

४०२ प्रति स २। पत्र सं १२। ले कल ×। के सं २२६। क मन्वरा।

४०३ प्रति स ३। पत्र सं ४। ले कल नं १५४१ मास मास सुदी ११। के सं १३१। क मन्वरा।

४४ प्रति स ४। पत्र सं ६ से ६। ले कल ×। मपूर्णा। के सं १२२। क मन्वरा।

विशेष—संज्ञा टीका बहिः।

४०४ प्रति स ५। पत्र सं ९। ले कल ×। के सं २२२। क मन्वरा।

४६ प्रति स ६। पत्र सं ११। ले कल नं १२। के सं ३१२। क मन्वरा।

विशेष—श्रुती चर्च छद्दि।

४०५ प्रति स ७। पत्र सं १। ले कल सं ११६ मास मास सुदी १। के सं ३१३। क मन्वरा।

४८ प्रति स ८। पत्र सं ६। ले कल सं ११३ मास सुदी १। के सं ३१४। क मन्वरा।

४०६ प्रति स ९। पत्र सं ६। ले कल सं १५४४ मास सुदी १। के सं ३१५। क मन्वरा।

विशेष—संज्ञित संज्ञत टीका बहिः।

४१ प्रति स १। पत्र सं १३। ले कल सं ११० मन्वरा सुदी २२। के सं ३१६। क मन्वरा।

४१७ प्रति स ११। पत्र सं ९। ले कल ×। के सं ३१६। क मन्वरा।

४१८ प्रति स १२। पत्र सं ७। ले कल ×। के सं ३१७। क मन्वरा।

विशेष—मासमास के शेष संज्ञत मे मत्ता ही हुई है।

४१९ प्रति स १३। पत्र सं ११। ले कल सं १०५६ मन्वरा सुदी १। के सं ६। क मन्वरा।

विशेष—संज्ञत मे पर्यायवाची कल मिले हुये हैं। शेष मे पर्यायवाची संज्ञत मे नं ४ मन्वरा के मन्वरा के पर्याय प्रतिभिति हुई।





विशेष—अति ठणा टीका तद्विद्ध है। हीनोर नगर में बल्लभनाथ श्रीवल्लभ में सुतर्क के संवासी नृ के मूलांक कवतशीति ठना उनके पुरु में ब वेदप्रतीति के मन्त्रात्म के द्विव्य बभोरु के प्रतिनिधि की थी।

४३३ प्रति सं० ३३। पत्र सं १२। ले काल ×। के सं ४६२। क कपार।

विशेष—३ पत्र एक प्रत्य संवत् है जिसके प्रथम २ वर्षों में टीका थी है। इसके बाद 'अत्रयद्विगतवत्सव' मस्तिष्कमाचार्ज्य वृत्त विद्या हुआ है।

४३४ प्रति सं ३४। पत्र सं २। ले काल सं १६२२। के सं १६४६। क कपार।

विशेष—संवत् में पर्यायवाची काल विधि हुई है।

४३५ प्रति सं ३५। पत्र सं २ ले १। ले काल सं १७५४। पुरु सं। के सं १५२। क कपार।

विशेष—अति संवत् टीका तद्विद्ध है।

४३६ ब्रह्मसंमहद्विष्टि—प्रमाणम्। पत्र सं ११। या ११५×२५ दश। वाता-संवत्। विष-सिद्धांत। र काल ×। ले काल सं १६२२ संवत्तर बुदी ६। पुरु सं। के सं १३३। क कपार।

विशेष—महाकाल ने कालुर के प्रतिनिधि की थी।

४३७ प्रति सं २। पत्र सं २२। ले काल सं १६२६ नीच सुदी ३। के सं ३१७। क कपार।

४३८ प्रति सं ३। पत्र सं २ के १२। ले काल सं १७३—। पुरु सं। के सं ३१७। क कपार।

विशेष—वाचार्ज्य कवतशीति ने कालुर के प्रतिनिधि की थी।

४३९ प्रति सं ४। पत्र सं २२। ले काल सं १७१४ डि। वाकल बुदी ११। के सं १९। क कपार।

विशेष—अति जोषण पीपीका के पठार्ज्य टपटी जोषता जोषनेर वालों ने संवासी के सिद्धी।

४४० ब्रह्मसंमहद्विष्टि—अष्टादश। पत्र सं १। या ११५×२५ दश। वाता-संवत्। विष-सिद्धांत। र काल ×। ले काल सं १६३६ वाकोन बुदी १। पुरु सं। के सं १।

विशेष—इस काल की प्रतिनिधि वाकलियान कवतशीति विषयवाक कालसिद्ध के कालतज के मन्त्रांक में थी कालप्रम श्रीवल्लभ के हुई थी।

प्रस्तावित—कृतकविद्ये नगरविने पुस्तकान्नी सोमवाकरी संवत् १९१२ वर्षे वाचार्ज्य मधि १ मूत्र दिने वाकलियान कवतशीति विषयवाक वाकलियान वाक कवतशीति मन्त्रांकने श्री ब्रह्मनाथ श्रीवल्लभे की कृतके संवत्प्रमाणे बस मरचले कवतशीति कळे श्रीपु वरु वाचार्ज्यने ब श्रीवर्णविकेनरुत्तुं ब श्री सुवकल देवकलरुत्तुं ब श्री किलकल देवकलरुत्तुं ब श्री ब्रह्मनाथ देवकलरुत्तुं ब श्री वर्णविकेनरुत्तुं ब श्री कवतशीति कवतशीति वा. कवित डि नगरवा। वा. मस्तिष्क काली वाकलिये कालुम वा. वाका कृतकाली है। म कवितरि। इ इतने कालुम कला कलुर्जा करतने। डि वा. कवाच क काली मस्तिष्क कालुम वा. मोरु ब कलुर्जा काली कालुर्जा ब. श्रीका डि कवाच क कवा कलुर्जा किलम ब कवाच। म किलम काली विषयके एतेवा वा. कवा इर कालुम किलियान वाचार्ज्य की कवतशीति कवतशीति

४४१ प्रति स० २ । पत्र स० ८० । ले० काल × । वे० स० १२८ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८० कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३२३ । अ भण्डार ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८०० । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

४४४ प्रति स० ५ । पत्र स० १६६ । ले० काल स० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५ द्रव्यसंग्रहटीका । पत्र स० ४८ । प्रा० १० × ८ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल × ।

वे० काल स० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० स० ५१० । अ भण्डार ।

विवेक—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि प्रा० नेमिचन्द्र ने मासवेदा की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल महलेश्वर के आश्रम नाम नगर में मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५८ । अ भण्डार ।

विवेक—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७७० पीप बुदी ११ । वे० स० २६५ । अ भण्डार ।

४४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६७० भाद्रवा बुदी ५ । वे० स० ८५ । अ भण्डार ।

विवेक—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय मेंठी गोत्र वाले सा उदा की भार्या उदरदे ने पत्य प्रताप्या-पन में प्रतिनिधि कराकर चढाया ।

४४९ प्रति स० ६६ । ले० काल स० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० स० ४५ । अ भण्डार ।

४५० द्रव्यसंग्रह भाषा । पत्र स० ११ । प्रा० १० १/२ × ८ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १७७१ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विवेक—हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—द्वय-संग्रहमिणा मुणिराणां दोस-सचयबुदा सुदपुष्पा ।

सोधयतु तणुमुत्तधरेण रोमिचंद मुणिराणा भणिय ज ॥

अर्थ—भो मुनि माय । भो पठित केमे ही तुम्ह दोष सचय मुति दोषनि के जु सचय कहिये समूह तिनते रहित हो । मया नेमिचन्द्र मुनिना भणित । यत् द्रव्य संग्रह इम प्रत्यक्षी भूतां मे जु ही नेमिचन्द्र मुनि तिन जु कही महु द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि सोधयतु । सो धो हुं नि कि सो ह । तनु मुत्त धरेण तनु कहिये पोरों सो सूत्र कहिये । सिद्धात तानो जु धारक ह्यो । अल्प शास्त्र करि सयुक्त हो जु नेमिचन्द्र मुनि तेन कही जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताको भो पठित सोधा ।

इति श्री नेमिचन्द्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध सपूर्ण ।

सवत् १७७१ शके १६३६ प्र० श्रावण मासे कृष्णामे तृयादश्या १३ बुधवासर लिप्यकृत विद्याधरेण स्वात्म्याये ।

४५१ प्रति स० ७ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० २६३ । अ भण्डार ।

४१७ प्रति स ३। पत्र सं २। नै बल सं १ ३२ अष्टे मुनी । के सं ७७४ ।

अध्याय ।

विशेष—शिवी सायम्प है ।

४२३ प्रति स ४। पत्र सं ४०। नै बल सं १२१४ अष्टे मुनी ६। के सं ३२३। अ न विशेष—बर्बाची एवम्प ही हीना के आचार पर जवा रचना की गई है ।

४२४ प्रति सं ० २। पत्र सं २३। नै बल सं १२२७ अष्टे मुनी । के सं ८५। अ न

४२५ प्रति सं ६। पत्र सं २ । नै बल ×। के सं ४४। अ अध्याय ।

४२६ प्रति स ७। पत्र सं २७। नै बल सं १७४३ अष्टे मुनी ११। के सं १११ ।।

अध्याय ।

आरम्भ—बालाज्युपकारण एवम्पई क उपायमा । इत्यर्त्तप्रसंगतवत्त व्यञ्जनालोको विज्जो ॥१॥

४२७. इत्यस्यसंग्रह माथा—पर्वतपर्वी। पत्र सं १२ । या १३×२६ द्वा । अथा—अष्टे

विशिष्टी । विशेष—इत्यो वा वर्त्तन । र अल ×। नै अल सं १ । अष्टे मुनी १२। के सं ११/११  
अ अध्याय ।

४२८. इत्यस्यसंग्रह माथा—पलाञ्जना शीबरी। पत्र सं १२। या ११ × ७६ द्वा । अथा—शिवी

विशेष—इत्यो वा वर्त्तन । र अल ×। नै अल ×। पूर्ण। के सं ४२। अ अध्याय ।

४२९ इत्यस्यसंग्रह माथा—अक्षय्यं ज्ञापका। पत्र सं १२। या ११×२२ द्वा । अथा—शिवी

अध्याय । विशेष—इत्यो वा वर्त्तन । र अल सं १ । अ अष्टे मुनी १४। नै अल ×। पूर्ण। के सं ११।  
अ अध्याय ।

४३० प्रति सं २। पत्र सं ३२। नै अल सं १ ३३ अष्टे मुनी १४। के सं ३२१। अ

अध्याय ।

४३१ प्रति सं ३। पत्र सं २१। नै अल ×। के सं ३२५। अ अध्याय ।

४३२ प्रति स ४। पत्र सं ४३। नै अल सं १ ३३। के सं १२२ । अ अध्याय ।

विशेष—अ २२ के अने इत्यसंग्रह अथ मे है लेविन वरु अष्टे है ।

४३३. इत्यस्यसंग्रह माथा—अक्षय्यं ज्ञापका। पत्र सं २। या १०×२२ द्वा । अथा शिवी (अ)

विशेष—इत्यो वा वर्त्तन । र अल ×। नै अल ×। पूर्ण। के सं ३२२। अ अध्याय ।

४३४ प्रति सं २। पत्र सं ७। नै अल सं १२३६। के सं ३१ । अ अध्याय ।

४३५ प्रति स ३। पत्र सं ३। नै अल सं १२३६। के सं ३१६। अ अध्याय ।

विशेष—शिवी अथ मे की वर्त्तन विना हुआ है ।

४३६ प्रति स ४। पत्र सं २। नै अल सं १२७६ वर्त्तन मुनी १४। के सं ३२१। अ

अध्याय ।

विशेष—अ अष्टे अ अलनीअल के अष्टे में प्रतिविधि की है ।

४६६ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० म० १६५ । कृ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७ प्रति स० ६ । पत्र म० ३७ । ले० काल × । वे० म० २४० । कृ भण्डार ।

४६८ द्रव्यमग्र भाषा—वावा दुलीचन्द । पत्र स० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

अन्न द्रव्या का वर्णन । २० काल म० १६६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० । कृ भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छावडा की हिन्दी टीका के अनुसार वावा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा निम्नी थी ।

४६९ द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र म० ६ में १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अन्न

द्रव्या का लक्षण वर्णन । २० काल × । ले० काल म० १६०५ भावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० २१३७ । ट भण्डार ।

४७० यवतल । पत्र स० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ३७० । कृ भण्डार ।

४७१ प्रति स० २ । पत्र म० १ में १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ३५१ । कृ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति स० ३ । पत्र म० १२ । ले० काल × । वे० म० ३५२ । कृ भण्डार ।

४७३ नन्दीसूत्र । पत्र स० ८ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २०

काल × । ले० काल म० १५६० । वे० म० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—म० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि प० नयममुद्रगणि नामा देव ?  
नम्नु शिष्ये वी गुणलाम गरिणि लिखे ।

४७४ नवतत्त्वगाथा । पत्र स० ३ । आ० ११ इञ्च × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—६ तत्त्वों

का वर्णन । २० काल × । ले० काल म० १८१३ मगसिर बुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—प० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५ प्रति स० ७ । पत्र म० १० । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० म० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति स० ३ । पत्र म० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १७६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७ नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १५ । आ० ६ इञ्च × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

६ तत्त्वों का वर्णन । २० काल स० १७४७ । ले० काल म० १८०६ । वे० म० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मम्मिथरण है । राघवचन्द शाक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४५८. अक्षरसंज्ञा—। पत्र सं १ । या १५ × ४ इह । मया लिपी । विषय-जीव  
मयीय भाषि १ तत्त्वो वा वर्तन । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं ११ । अ मया ।

विशेष—जीव मयीय पुन्य वाद तथा प्राथम्य तत्त्व का ही वर्तन है ।

४५९. नक्षत्रसंज्ञा—पञ्चाङ्गान् बीधरी । पत्र सं २१ । या १२ × ४ इह । मया लिपी ।  
विषय-१ तत्त्वो वा वर्तन । १ कल सं १२१४ मायत्त मुदी ११ । से कल × । पूर्ण । के सं ११४ । अ  
मया ।

४६०. नक्षत्रसंज्ञा—। पत्र सं १ सं २४ । या १ × ४ इह । मया लिपी । विषय-२  
तत्त्वो वा वर्तन । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं १२१ । अ मया ।

४६१. निर्यासुद्धि—अक्षरसंज्ञा । पत्र सं १ से ११ । या १ × ४ इह । मया लिपी । विषय-  
विज्ञान । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं २११ । अ मया ।

विशेष—प्रथम पुस्तिका—

इत्यादिप्रकारार्थीनक्षत्रसंज्ञावित्त विचारपूर्णे मय-स्वामित्वात् अक्षरसंज्ञावित्तुर्भ । संयुक्तोऽत्र कल ।  
अभाष्य २१ प्रकाश । अक्षरसंज्ञा की अर्थव्याख्या वक्षित एलाकर वक्षित की थी थी १ । की थी थी तीर्थान्त-  
विषयवक्षि तच्छिद्य बु विषयवक्षे । अ कलाल अक्षरसंज्ञा की पुस्तक है ।

४६२. निर्यासुद्धि—आ० अक्षरसंज्ञा । पत्र सं १ । या १ × ४ इह । मया-मायत्त । विषय-  
विज्ञान । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं २१ । अ मया ।

विशेष—प्रति संज्ञा टीका लिंग है ।

४६३. निर्यासुद्धि—पञ्चाङ्गमयान्तिसंज्ञा । पत्र सं २२२ । या १२३ × ४ इह । मया-  
संज्ञा । विषय-विज्ञान । १ कल × । से कल सं १२३ मायत्त मुदी १ । पूर्ण । के सं १२३ । अ मया ।

४६४. प्रति सं २ । पत्र सं ३० । से कल सं १११ । के सं १०१ । अ मया ।

४६५. निर्यासुद्धि—। पत्र सं १३ से १६ । या १ × ४ इह । मया-मायत्त । विषय-  
मायत्त । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं १५१ । अ मया ।

४६६. पञ्चाङ्गमयान्तिसंज्ञा—। पत्र सं ३ । या ११ × ४ इह । मया-संज्ञा । विषय-विज्ञान ।  
१ कल । से कल × । पूर्ण । के सं १३ । अ मया ।

विशेष—जीवो के अक्षर संज्ञा विषयवक्षितवा वा वर्तन है ।

४६७. प्रति सं २ । पत्र सं ३० । से कल × । के सं ४११ । अ मया ।

४६८. पञ्चाङ्गमयान्तिसंज्ञा—आ नैमित्तिकम् । पत्र सं २६ से २४४ । या १२ × ४ इह । मया-मायत्त  
संज्ञा । विषय-विज्ञान । १ कल × । से कल × । पूर्ण । के सं ४ । अ मया ।

४८६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल म० १८१२ नात्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । ज  
भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर मे ग्लस्विगरिण ने प्रतिलिपि की थी । वही कही हिन्दी ग्रंथ भी दिया हुआ है ।

४८० प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० ५०६ । ज भण्डार ।

४८१ पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सिद्धांत । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २८-२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४८२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ मे २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीष काण्ड है ।

४८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५२ मे ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति—रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तांगा के सह-  
योग से की थी ।

४८४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल म० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे०  
सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—कुन्दावती मे पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीरंगनाह ( श्रीरंगजेव ) के शासनकाल मे हाडा वशीत्पत्र राव  
भी भावसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल म० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४८६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२८ । ले० काल सं० १६५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार

४८७ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । क भण्डार ।

विशेष—धीच के कुछ पत्र भी नहीं है ।

४८८ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । च भण्डार ।

४८९ पंचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १०७३ ( शक ) । ले० काल म० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ संस्कृत गद्य और पद्य मे लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाधुराणामनघद्युतीना संघोऽभवद् युक्त विमूर्षितानाम् ।

हारो मीरानामिवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्र ॥ १ ॥

नाथसेनपत्नीवसुनीक सुव्रतभोजनवि तत्र कनीय ।  
 सुप्रति सन्ध्यातीव घटांकः श्रीमति त्रिभुवनात्मकत्वं ॥ २ ॥  
 क्षिप्रतस्त्य महास्वामीप्रमितातिशोचार्थविनामप्रती ।  
 ऐतच्छ्रवणमर्षेयकर्मसिधितिसम्भवात्तदापत्तु ॥  
 श्रीरत्नेव किलेश्वरस्य कस्तुभुक्कन्योन्मारीपती ।  
 बुधात्सेनारंठिवात्सुप्रति श्रीश्रीतमोऽनुत्तमा ॥ ३ ॥  
 यत्र विद्वान्त विरोधिभक्त प्राज्ञविद्वान्मत्तवैतवर्षी ।  
 बुद्धंति शोभा ह्युपकारिवर्तारं तिराहृत्य कर्म पवित्रं ॥ ४ ॥  
 यत्नवत् केवलमर्थशीलं नाथस्वियं सिद्धिमुत्कर्षयेत् ।  
 तावद्दत्तमर्षिद्वयमथात्मं स्वीकृत्युर्न कर्मविराजयति ॥  
 किलतन्महिषेऽवशा कर्तव्यं तन्महिषिय ।  
 मनुजिनासुर्षि घटाभिरं घातनं मनोरथं ॥ ५ ॥  
 इत्यस्मिन्निवृत्ता श्रीस्वामारं तत्रात्मने ।

४ ० प्रति स ० । वन तं २२२ । मे कल तं १७२६ नाम पुटी १ । के तं १ ७ । अ मत्तार ।  
 ४ १ प्रति स ३ । वन तं १ । मे कल तं १७२४ । के तं २२६ । अ मत्तार ।  
 किलेश्वर—श्रीमं प्रति ६ ।

४ २ पाञ्चमसूत्रीक—। वन तं २२ । वा १२×२६ इत्तः । माया-मंलुत्त । विषय-विद्वान्त ।  
 १ कल × । मे कल × । पुर्ण । के तं १६६ । अ मत्तार ।

४ ३ पञ्चासिद्धय—कुम्भकुम्भाचार्य । वन तं २३ । वा २×२ इत्तः । माया मत्तु । विषय-  
 विद्वान्त । १ वाच × । मे कल तं १७२६ । पुर्ण । के तं १ ३ । अ मत्तार ।

४ ४ प्रति स २ । वन तं ४३ । मे कल तं १६८ । के तं ४ ४ । अ मत्तार ।  
 ४ ५ प्रति स ३ । वन तं ३४ । मे कल × । के तं ४ २ । अ मत्तार ।  
 ४ ६ प्रति स ४ । वन तं २३ । मे कल तं १ ६६ । के तं ४ ३ । अ मत्तार ।  
 ४ ७ प्रति स ५ । वन तं २२ । मे कल × । के तं ३३ । अ मत्तार ।

विमेल—श्रीमं स्वयं तत्र ६ । मायाया पर वीका श्री वी ६ ।

४ ८ प्रति स ६ । वन तं १ । मे कल × । के तं १ ७ । अ मत्तार ।

४ ९ प्रति स ७ । वन तं ११ । मे कल तं १२२/७७७७ पुटी २ । के तं १६६ । अ मत्तार ।  
 विमेल—श्रीमं श्रीमं प्रति ६ ।

५१० प्रति स० ८ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स १६६ । ङ भण्डार ।

५११ पञ्चास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र स० १२४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ इच्छ । भाषा संस्कृत  
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल म० १६३८ श्रावण बुदी १४ । पूर्णा । वे० म० ४०५ । क भण्डार ।

५१२ प्रति स० ७ । पत्र म० १०५ । ले० काल म० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० स० ४०२ ।  
ङ भण्डार ।

५१३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वे० स० २०२ । च भण्डार ।

५१४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १६५६ । वे० स० २०३ । च भण्डार ।

५१५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वे० स० । च भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरी भार्या धमला तयो पुत्रघातु तस्य भार्या घनमिरि  
नाम्या पुत्र मा होलु भार्या सुनवत तस्य दामाद मा हमराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पञ्चास्तिकायात्रिंशं लिखाया  
कुलभूषणस्य कर्मक्षमार्थं दत्त ।

५१६ पञ्चास्तिकाय भाषा—प० हीरानन्द । पत्र स० ६३ । आ० ११×८ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-सिद्धान्त । २० काल म० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० म० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानावाद मे वादगाह जहागीर के समय मे प्रतिलिपि हुई ।

५१७ पञ्चास्तिकाय भाषा—पाठे हेमराज । पत्र म० १७५ । आ० १३×७ इच्छ । भाषा-हिन्दी गद्य ।  
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० म० ४०६ । क भण्डार ।

५१८ प्रति स० २ । पत्र म० १३५ । ले० काल स० १६४७ । वे० म० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति स० ३ । पत्र म० १४६ । ले० काल × । वे० म० ८०३ । ङ भण्डार ।

५२० प्रति स० ४ । पत्र म० १५० । ले० काल स० १६५४ । वे० स० ८२० । च भण्डार ।

५२१ प्रति स० ५ । पत्र म० १५४ । ले० काल स० १६३६ श्रावण सुदी ४ । वे० स० ६२१ । च भण्डार ।

५२२ प्रति स० ६ । पत्र म० १३६ । २० काल × । वे० म० ६२२ च भण्डार ।

५२३ पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र स० ६११ । आ० ११×७ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा-हिन्दी गद्य ।  
विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १८६२ । ले० काल × । वे० स० ७१ । क भण्डार ।

५२४ पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र स० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।  
२० काल म० १८८१ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५ वध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र म० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १८८१ । ले० काल × । वे० म० १६०५ । पूर्णा । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमु पाय, मुनिमुपेत कू मीस नवाय ।

मतयुग सारद हिरदे घनं, वध उदय सत्ता उचरु ॥ १ ॥



अभितम—बंघ बरी लता बसाली कल्प चिर्बनीसारा ती बालि ।

दुख प्रसुद्ध दुखा एमु तास्य, धरुण बुद्धि मे नर बसाल ॥ १२ ॥

ताहिण रान बुद्धि दुख बरी मगर पवैवर माही लही ।

मुग्ध बटका बनी के मद्रिहि, आत्मक मुल नपयल बसुद्धि ॥ १३ ॥

बाल पत्र के बंभित लयो वीरुबन्ध के सिन्ध म बयो ।

मगर बवैवर माहि लयो आभितम मुग्ध बर्बरा वियो ॥ १४ ॥

पत्रमर्मे ती विज्ञान लयो लाल बा नर छुती लयो ।

पीतल विनकु नरि परिखाय लपर करण बहै बसाल ॥ १५ ॥

बंधन मठराही का कला मगर प्रकवाली उतर लला ।

पडा मुकुल मय कम हीन पुन बंध बुधि बहु होय ॥ १६ ॥

॥ इति भी उरी बंध लता लतासा ॥

इससे आगे चौबीस ठांवा की चौपाई है—

प्रारम्भ—बघ बरी कुट पन्ध कर बरी मय बल नय ।

दुखलक्षणि बरि कल्प की रचना कर्तु बगाल ॥

अभितम—दू विनि पठ दुखलक्षणी रचना करणी पार ।

दुल दुक को हीन ती बुधिमल मेहु दुवार

बुद्धि बंधिदर दुग्ध की लता मगर बसाल ।

उपकीर्ण मय वाच के लाल जाल मीलाल ॥

॥ इति बगुर्सी ॥

१२६ अरावलीसूत्र—बघ बं १ । या ११ > २३ इज । भाषा—माहुर । विपद—आत्म । १ बल ×

न बल । पूर्ण । के ती २३ ७ । क मगर ।

१ भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्रचार्य । बघ बं ३१ । या १ > २ इज । भाषा—माहुर । विपद

विपद । के बल × । पूर्ण । के ती २३३ । क मगर ।

विपद—बघ बं दुवार लिला बघा है ।

१ ८ इति स २ । बघ बं २४ । के बल बं { १११ भाषा मुरी ३ । के ती २९ । क मगर ।

विपद—बं बघबन्ध मे कल्प की प्रतिनिधि बगुर म की की

१ ३ भावहीनिका भाषा—बघ बं २ । या २ २ । भाषा—लक्ष्मी । विपद—विपद ।

१ बल × । पूर्ण । के ती २३ । क मगर ।

१ ३ अरावलीसूत्र—बघ बं १ । या १ > २ इज । भाषा—माहुर । विपद—विपद ।

१ बल × । पूर्ण । के ती २३ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है ।

५३१ मार्गणा ष गुणस्थान वर्णन—। पत्र स० ३-५५ । आ० १८-५ इअ । भाषा प्राकृत । विषय-

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२ मार्गणा समास—। पत्र म० ३ मे १८ । आ० ११३×" उअ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३ रायपसेणी सूत्र—। पत्र स० १५३ । आ० १०×८<sup>१</sup> उअ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । २०

काल × । ले० काल स० १७६७ आसोज मुदी १० । वे० म० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । समसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सबलसागर

न स्वपठनार्थ टीका की । गामाओ के उग्र ट्याया दी हुई है ।

५३४ लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र म० ५७ । आ० १२×५ इअ । भाषा-प्राकृत । विषय-

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ मे आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५ प्रति म० २ । पत्र म० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२२ । च भण्डार ।

५३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० १६०० । ट भण्डार ।

५३७ लब्धिसार टीका—। पत्र म० १५७ । आ० १३×८ इअ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वे० म० ६३८ । क भण्डार ।

५३८ लब्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० १८० । आ० १३×८ इअ । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

५३९ प्रति स० २ । पत्र स० १६३ । ले० काल × । वे० स० ७५ । ग भण्डार ।

५४० लब्धिसार क्षपणासार भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० १०० । आ० १५×६<sup>१</sup> इअ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६ । ग भण्डार ।

५४१ लब्धिसार क्षपणासार मट्टि—प० टोडरमल । पत्र स० ४६ । आ० १४×७ इअ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १८८६ चैत बुदी ७ । वे० म० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२ विपाकसूत्र—। प० म० ३ मे ३५ । आ० १०×४<sup>३</sup> इअ । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३ विशेषसत्तात्रिभगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र म० ६ । आ० ११×४<sup>१</sup> इअ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २४३ । अ भण्डार ।

२४५ प्रति स २। वन मं १। मे बल  $\times$ । मे नं ३४१। अ मन्वार

२४६. प्रति स ३। वन मं ४०। मे बल नं १ २ बलीय बुदी ३३। पूर्ण। मे नं ३

अ मन्वार ।

विशेष—१ मे ३४ तक वन गयी है। जयपुर में प्रतिनिधि हुई।

२४७. प्रति स ४। वन मं ०। मे बल  $\times$ । पूर्ण। मे नं ३४। अ मन्वार ।

विशेष—केवल आपन निबन्धी ही है।

२४८. प्रति सं २। वन मं ७१। मे बल  $\times$ । पूर्ण। मे नं ७२। अ मन्वार ।

विशेष—दो तीस प्रतिशे का अग्निफल है।

२४९. अटहोरस बर्षान - १ वन मं १। वा १  $\times$  ४३ इका। मन्वा-हिन्दी एक। विषय-विज्ञान  
२ बल । मे बल  $\times$ । पूर्ण। मे नं १६। अ मन्वार ।

विशेष—एट सेवको पर सीधे है।

२५०. कण्ठ्याधिक दालक हीका—रामरसनाम्बा। वन मं ३१। वा १  $\times$  २ इका। मन्वा  
संभूत। विषय-विज्ञान । २ बल मं १२७२ मन्वा। मे बल मं १२७२ अटहन बुदी १। पूर्ण। मे नं  
१३३। अ मन्वार ।

विशेष—असि किन् मन्वार है।

मीनप्रवहकवर्षिकी सोमे मीनप्रवहिके, मुन्वावधिरोजमे देवकालो अमरुतुपु ॥ १ ॥

सकन-समधिपप्रसतासुको विरिही विदुषमुनुकन- सर्वविद्यासुतुः ।

अधी अकृतिप्र प्रसवात्सो अमुः कल हरिष्ठा हृत्तियो रामकलो महीनः ॥ २ ॥

सर्वकलाविषयेष्वस्य- वरीश्यास्त्वानीकयन्तु तथा सवासादिवादिनाः सीह्वयान् कुपनीहृत्तर ॥ ३ ॥

मीनप्र-मुनाकुलमहीन महीनिनी मन्वा वामपीव । सर्वप्रवह कुमनामल जलपुलेकुपुसुमबल ॥ ४ ॥

मन्वावककुपुनेष्वा वरवर्षविक्रमा, वमनेष हृत्तय्य मन्वालाये विद्यते ॥ ५ ॥

जपुवामवर्षीयित मन्वाकन इवापट. निर्मयी विरकनकन पित्रुर्व- वमरीयिका ।

सवास्वर्षमथा मवा विदिपटा सीउमवर्षीययोवालासौ अत्यधिकम विवलासुतिः विपुना हिता ।

वने मं बुधियुर्वर्ष अहिरो अलात्मवला बुने । मने मन्वाये विर्ववदुदे मन्वाकिल कुले ॥ ६ ॥

सन्धे अयेवन्धे मीवमन्वकनसुदिघटाले । विपतिनक्युतिपुपे किन् मीह्वीविषयीयुः ॥ ७ ॥

तन्धिमेन हृतेयं वामकुपनं रमहृमिन कन्वकिकमन्वावमन्वालीय मन्वाविषर्व मन्वा ॥ ८ ॥

हनि कन्वकिकमन्वावमन्वा वीका हृता मी उमवर्षीयोवालाये ॥ मन्वाकिलेन सि ॥

मन्व १२७२ मन्वे अमरुतुव धरि ६ उदिवावरे मन्वा मी किनाटीउमेव मेनि ।

३४ मन्वाक्याधिक—अ विद्यामन्दि। वन मं १२ ३। वा १२  $\times$  ७५। वा संभूत। विषय-  
विज्ञान । २ बल  $\times$ । मे बल १२४४ मन्वा बुदी । पूर्ण। मे नं ७७। अ मन्वार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की गृह्य टीका है। पश्चान्तान्त्रीयों ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन शृङ्गा म बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ महित है।

५५१ प्रति स० २ । पत्र म० १० । ले० काल ५ । वे० म० ७८ । च भण्डार ।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२ प्रति स० ३ । पत्र म० ८० । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० म० १६५ । च भण्डार ।

५५३ सप्रहणीसूत्र । पत्र म० ३ ने २८ । प्रा० १०×८ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—भागम । १० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० म० २०२ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र स० ६, ११, १६ ने २०, २३ ने २५ नहीं है। प्रति त्रिचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ६, २१ और २८ ने पत्र की छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल ५ । वे० म० २३३ । छ भण्डार । ३११ गाथाएँ हैं।

५५५ सप्रहणी बालावधोध—शिवनिधानगरि । पत्र म० ७ ने ५३ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । विषय—भागम । १० काल ५ । ले० काल ५ । वे० म० १००१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६ सत्ताद्वार । पत्र म० ३ से ७ तक । प्रा० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा सम्युत । विषय—सिद्धांत । १० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० म० ३६१ । च भण्डार ।

५५७ सन्तान्त्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र म० २ ने ४० । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० म० १८४२ । ट भण्डार ।

५५८ सवार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र म० ११८ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल ५ । ले० काल स० १८७६ । पूर्णा । वे० म० ११२ । अ भण्डार ।

५५९ प्रति स० २ । पत्र स० ३६८ । ले० काल स० १६४४ । वे० स० ७६८ । क भण्डार ।

५६० प्रति स० ३ । पत्र स० " । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० स० ८०७ । ड भण्डार ।

५६१ प्रति स० ४ । पत्र म० १२२ । ले० काल ५ । वे० स० ३७७ । च भण्डार ।

५६२ प्रति स० ५ । पत्र स० ७२ । ले० काल ५ । वे० म० ३७८ । च भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३ प्रति स० ६ । पत्र म० १-१३३, २००-२६३ । ले० काल म० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३७६ । च भण्डार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

म० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कालाहिरा मे श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी । म० १७१७ कार्तिक सुदी १३ अन्न नाथ ने भेंट में दिया था ।

२६४ प्रति सं ७। पत्र सं १८१। न काल  $\times$ । के सं १। क मन्वार।

२६५ प्रति सं ८। पत्र सं १९। न काल  $\times$ । के सं ४। क मन्वार।

२६६ प्रति सं ९। पत्र सं १९४। न काल सं १ नर श्येठ कुरी २। के सं २। क मन्वार।

२६७ प्रति सं १। पत्र सं १७४। न काल सं १७४ बीबाळ कुरी २। के सं २१२। म मन्वार।

२६८ सर्वाभिसिद्धि प्राया—अबलम् छावडा। पत्र सं १८१। मा ११ $\times$ ७५ दण्ड। माया शिन्धी विषय—विजय। १ काल सं १ ११ बीठ कुरी ३। न काल सं ११२१ कागिन कुरी २। पूर्ण। के सं ७२१ क मन्वार।

२६९ प्रति सं २। पत्र सं ११। न काल  $\times$ । के सं १। क मन्वार।

२७० प्रति सं ३। पत्र सं ४१७। न काल सं १११७। के सं ७२। क मन्वार।

२७१ प्रति सं ४। पत्र सं २७०। न काल सं १ ३ नर श्येठ कुरी २। के सं १९। क मन्वार।

२७२ सिद्धांतसर्वसार—१ रघु। पत्र सं २२१। मा ११ $\times$  ७ दण्ड। माया शिन्धी विषय—विजय। १ काल  $\times$ । न काल सं ११२१। पूर्ण। के सं ७२१। क मन्वार।

विशेष—यह प्रति सं ११२१ वाली प्रति के शिन्धी परी है।

२७३ प्रति सं २। पत्र सं २९। न काल सं १ १४। के सं १। क मन्वार।

विशेष—यह प्रति सं ११२१ वाली प्रति के ही शिन्धी परी है।

२७४ सिद्धांतसर्वसार भाष्य—। पत्र सं ७२। मा ११ $\times$  ७ दण्ड। माया शिन्धी विषय—विजय। १ काल  $\times$ । न काल  $\times$ । पूर्ण। के सं ७२१। क मन्वार।

२७५ सिद्धांतसर्वसार—। पत्र सं २४। मा ११ $\times$  ७ दण्ड। माया शिन्धी विषय—विजय। १ काल  $\times$ । न काल  $\times$ । पूर्ण। के सं ११२१। क मन्वार।

विशेष—बीदिग बरहिन है। बी प्रतियों का अभियन्त है।

२७६ सिद्धांतसर्वसार बीदिग—सकलश्रीति। पत्र सं १२२। मा ११ $\times$  ७ दण्ड। माया शिन्धी विषय—विजय। १ काल  $\times$ । न काल  $\times$ । पूर्ण। के सं ११२।

२७७ प्रति सं २। पत्र सं १८४। न काल सं १ १९ बीठ कुरी ३। के सं ११। क मन्वार।

विशेष—बी बोधन के दिग्ग सं विजयवत् के वाचनार्थ प्रतिशिक्षी की परी है।

२७८ प्रति सं ३। पत्र सं १२२। न काल सं १७२२। के सं ११२। क मन्वार।

२७९ प्रति सं ४। पत्र सं १३६। न काल सं १ १२। के सं २। क मन्वार।

विशेष—सन्तोषात्म वादवी न प्रतिशिक्षी की थी।

२८० प्रति सं ५। पत्र सं १७०। न काल सं १ १९। बीबाळ कुरी ३। के सं १२१। म मन्वार।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाता गीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

५८१ प्रति स० ६ । पत्र म० १७३ । ले० काल म० १८२७ वैशाख बुदी १२ । वे० स० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

५८२ प्रति स० ७ । पत्र स० ७८—१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २५२ । छ भण्डार ।

५८३ सिद्धान्तसारशीपक । पत्र स० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा मस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २२८ । ए भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिषलोक वर्णन वाला १४वा अधिकार है ।

५८४ प्रति स० २ । पत्र म० १८४ । ले० काल × । वे० स० २२५ । ख भण्डार ।

५८५ सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला । पत्र स० ८७ । आ० १३ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा हिंदी ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८८५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १२४ । घ भण्डार ।

५८६ प्रति स० २ । पत्र स० २५० । ले० काल × । वे० स० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति में है ।

५८७ सिद्धान्तसारसग्रह—आ० नरैन्द्रदेव । पत्र म० १४ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा मस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६५ । झ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है ।

५८८ प्रति स० २ । पत्र म० १०० । ले० काल म० १८६६ । वे० म० १६८ । झ भण्डार ।

५८९ प्रति स० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८३० मगसिर बुदी ४ । वे० म० १५० । च भण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

५९० सूत्रकृताग । पत्र स० १६ में ५६ । आ० १०×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—आगम ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं । प्रति मस्कृत टीका सहित है । बहुत से पत्र दीमका ने खा लिये हैं ।

बीच में मूल गाथायें हैं तथा ऊपर नीचे टीका है । इति श्री सूत्रकृतागशेषिका पौडपमाध्याय ।



विशेष गणना नईधारा। चारुमुत्त वी १०। सायननाम पञ्चासि। पतिनीत्यभारतदृष्टागतन धर्मउपदेयननारी।  
नद्वन्द्वनै वानम माय सात शुभगणो कृष्णगणो पौर्णमासि दिन १ शुभरायि म० १६८७ वर्षे वेगाम्प्राप्ते चौधरी पञ्च-  
नित्यार म गुा ननुष्टु क जगमनि परममनु पदमरात भाता संय मरादिता। शुभ भयनु।

६०० आनमयिताम—आनतरात्र। पत्र म ७३। घा० २०१ २६५ दृष्ट। भाषा-हिन्दी (पत्र)  
विषय-धर्म। २० वात म० १७८३। २० वात म० १६००। पूर्ण। य १० ६२। क भण्डार।

विशेष—गना मरु मन्दापो पक्ष—“दुगा मनु जीव विभन  
पत्र प्रगणित के अनुसार आचाराम क पत्र ने उक्त पत्र की मूल प्रति मा नान्द हा गया तथा उक्त पत्र  
ने उक्त मूल प्रति जगताराय क हाथ म आया। यो रताता आनतरात्र। प्रारम्भ की घो वि गु मीप । म रगतारा  
शरण के कारण जगताराय ने मरु १७८६ म अनुरी म ग्रथ ता पूर्ण किया। आचार विनाय म परि १। विविध  
चनाया का संश्ल ३।

६०१ प्रति म० २। पत्र म ११। ल० वात १ १६५४। घे० म० ६८। क भण्डार।

६०२ आचारमार—धीरनाथ। पत्र म० ६६। घा० १७ ५१ दृष्ट। भाषा-मराठी। विषय-आचार  
शास्त्र। २० वात १ २० वात म० १८६४। पूर्ण। घे० म० १२७। अ भण्डार।

६०३ प्रति म० २। पत्र म० १०१। ल० वात ४। घे० म० ६४। क भण्डार।

६०४ प्रति म० ३। पत्र म० १०६। ल० वात १। मपूर्ण। घे० म० ६। क भण्डार।

६०५ प्रति म० ४। पत्र म० ३० १ ७२। ल० वात ४। मपूर्ण। घे० म० ६८। क भण्डार।

६०६ आचारमार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र म० २०२। घा० ११८८ दृष्ट। भाषा-हिन्दी।  
विषय-प्राचारशास्त्र। २० वात म० १६६८ वेदांग बुद्धी ६। २० वात १। घे० म० ६५। क भण्डार।

६०७ प्रति म० २। पत्र म० २६२। ल० वात १। घे० म० ६६। क भण्डार।

६०८ आचारानामार—देवसेन। पत्र म० २०। घा० ११८६६। भाषा-प्रारत। विषय-धर्म। २०  
वात १०वा गनादी। ल० वात ४। मपूर्ण। घे० म० १७०। अ भण्डार।

६०९ प्रति म० २। पत्र म० ६४। ल० वात ४। घे० म० ७००। अ भण्डार।

विशेष-प्रति मन्वृत टीका महित है

६१० प्रति म० ३। पत्र म० १०। ल० वात ४। घे० म० ६३७। अ भण्डार

६११ प्रति म० ४। पत्र म० ७। ल० वात ४। घे० म० २८४। क भण्डार।

६१२ प्रति म० ५। पत्र म० ६। ल० वात ४। घे० म० २१५१। क भण्डार।

६१३ आचारानामार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र म० १६। घा० १०×५ दृष्ट। भाषा-हिन्दी।  
विषय-धर्म। २० वात म० १६३१ चैत्र बुद्धी ६। ल० वात ४। पूर्ण। घे० म० ६७। क भण्डार।



विशेष—नेत्रक प्रसिद्ध का अंतिम पत्र गृही है।

६१४ प्रति स ३। पत्र सं ४। ले बाल  $\times$ । के सं ६५। अथवा ८।

६१५ प्रति सं ३। पत्र सं २९। ले बाल  $\times$ । के सं ६६। अथवा ८।

६१६ प्रति स ४। पत्र सं २४। ले बाल  $\times$ । के सं ७२। अथवा ८।

विशेष—भाषा में भी है।

६१७ आराधनासार भाषा—। पत्र सं १६। या ११ $\times$ २ इच्छ। मत्ता-हिन्दी। विषय-वर्ष २ बाल। ले बाल  $\times$ । पूर्वा। के सं २११। अथवा ८।

६१८ आराधनासार बचनिका—भाषा तुलसीदास। पत्र सं २९। या ११ $\times$ ७ इच्छ। मत्ता-हिन्दी वच। विषय-वर्ष २ बाल २०वीं अक्षरणी। ले बाल  $\times$ । पूर्वा। के सं १२३। अथवा ८।

६१९ आराधनासार वृत्ति—प० आराधन। पत्र सं ५। या १ $\times$ ४ इच्छ। मत्ता-वर्ष २ विषय-वर्ष २ बाल १६वीं अक्षरणी। ले बाल  $\times$ । पूर्वा। के सं १। अथवा ८।

विशेष—गुणित कथन के लिए कथनका भी की। शीघ्र का नाम आराधनाधार वर्तन है।

६ आराधन के विधाहीन दोष बर्णन—भैया अक्षरणीदास। पत्र सं २। या ११ $\times$ ७ इच्छ। मत्ता-हिन्दी। विषय-भाषाप्रकार २ बाल सं १७२। ले बाल  $\times$ । पूर्वा। के सं २४। अथवा ८।

६२१ अक्षरणीसारभाषा—अक्षरणीदासप्रिय। पत्र सं २। या १ $\times$ ७ इच्छ। मत्ता-वर्ष २ विषय-वर्ष २ बाल  $\times$ । ले बाल सं १२२ वर्तन गुरी ७। पूर्वा। के सं ७२५। अथवा ८।

६२२ प्रति स १। पत्र सं १४। ले बाल  $\times$ । के सं २४। अथवा ८।

विशेष—अक्षरणी भाषा में संस्कृत शीघ्र बर्णन है।

६२३ अक्षरणीसारभाषा—अक्षरणीदास। पत्र सं १२२। या ११ $\times$ ७ इच्छ। मत्ता-वर्ष २ विषय-वर्ष २ बाल सं १६० वर्तन गुरी ९। ले बाल सं १७२० भाषण गुरी १४। पूर्वा। के सं ११। अथवा ८।

विशेष—अक्षरणी भाषा में भी शीघ्र भाषण विषय में अक्षरणी बर्णन की।

६२४ प्रति स ३। पत्र सं १२२। ले बाल  $\times$ । के सं २७। अथवा ८।

६२५ प्रति स ३। पत्र सं १२२। ले बाल सं १७२ वर्तन गुरी ४। के सं २। अथवा ८।

६२६ प्रति स ४। पत्र सं १२२। ले बाल सं १६ वर्तन गुरी २२। अथवा ८। के सं ७। अथवा ८।

विशेष—पत्र सं १ ले २२ अथवा १ गृही है। अक्षरणी के अक्षरणीकार विषय है—अक्षरणी की अक्षरणी अक्षरणी अक्षरणी विषय अक्षरणी की भी अक्षरणी विषय अथवा ८ अथवा ८।

६२७ प्रति स० ५ । पत्र स० २५ से १२३ । ले० काल × । वै० सं० ११७७ । अ भण्डार ।

६२८ प्रति सं० ६ । पत्र स० १३८ । ले० काल × । वै० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९ प्रति म० ७ । पत्र स० १२८ । ले० काल × । वै० सं० ८२ । इ भण्डार ।

६३० प्रति स० ८ । पत्र सं० ३६ मे ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८३ । इ भण्डार ।

६३१ प्रति स० ९ । पत्र स० ६४ मे १४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०६ । छ भण्डार ।

६३२ प्रति स० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४६ । छ भण्डार ।

६३३ प्रति स० ११ । पत्र स० १६७ । ले० काल म० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वै० सं० ३१ । व्य भण्डार ।

६३४ प्रति म० १२ । पत्र स० १८१ । ले० काल × । वै० सं० २७० । व्य भण्डार ।

६३५ प्रति स० १३ । पत्र स० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वै० सं० ४५२ ।

अ भण्डार ।

६३६ उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भट्टारी नेमिचन्द्र । पत्र स० १६ । आ० १२×७३ इन्द्र । भाषा—

माहृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १६४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० सं० ७६ । क भण्डार ।

६३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वै० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द्र । पत्र स० २८ । आ० १२×८ इन्द्र । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १६१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को स० १६६७ में वानप्रस्थान पोल्यावा ने खरीदा था । यह ग्रन्थ पट्कर्मोपदेशमाला का

हिन्दी अनुवाद है ।

६४० प्रति म० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदा १३ । वै० सं० ८० । क भण्डार

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वै० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १६४३ सावण बुदी ३ । वै० सं० ८२ । क भण्डार ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वै० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५ प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वै० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । इ भण्डार ।

६४७ प्रति स० ९ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वै० सं० ८५ । इ भण्डार ।

६४८ उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० १०×७ इन्द्र । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल स० १६६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ८५ । क भण्डार ।

६१६. उरद्वय रजःशुद्धा माया—देवीसिंह द्वावहा । पत्र नं २ । या ११४ ५२ इति । आचार-  
शिल्पी पत्र । १ काल नं १०१९ आचारा मुनी १ । नै काल  $\times$  । पूर्ण । के नं ५६ । अथशास्त्र ।

विशेष—नरवर नवर नै इत्य एवमा नी नई की ।

६१७ प्रति स २ । पत्र नं १६ । नै काल  $\times$  । के नं ५७ । अथशास्त्र ।

६१८ प्रति स ३ । पत्र नं १६ । नै काल  $\times$  । के नं ५८ । अथशास्त्र ।

६१९. उपसर्गार्थि विवरण्य—बुग्याचार्य । पत्र नं १ । या १४ ५४ इति । आचार-नीमद्वय । विवर-  
नम १ काल  $\times$  । पूर्ण । के न १६ । अथशास्त्र ।

६२०. उपसर्गआचार शोहा—आचार्य अक्षयीचन्द्र । पत्र नं ३ । या ११५२ इति । आचार-  
शास्त्र पत्र । विवरण-आचर्य वर्म वर्मन । १ काल । नै काल नं १३२३ कर्त्तिक मुनी १२ । पूर्ण । के नं २३ ।  
अथशास्त्र ।

विशेष—अथ का नाम आचर्यशास्त्र की है । एवं अथशास्त्र के पठनार्थ इतिवृत्ति की गई की । विवरण  
अर्थिन विवरण प्रकार है —

अर्थिन अथ १३२३ अथ कर्त्तिक मुनी १२ शोहे की मुद्रनके नररानीपन्थे बरालाचको न विवरण  
पत्र न अर्थिनमुद्रण अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन अर्थिन  
शोहा २२४ है ।

६२४ प्रति स ३ । पत्र नं १४ । नै काल  $\times$  । के नं २४५ । अथशास्त्र ।

६२५ प्रति स ३ । पत्र नं ११ । नै काल  $\times$  । के नं २७ । अथशास्त्र ।

६२६ प्रति स ५ । पत्र नं १२ । नै काल  $\times$  । के नं २६४ । अथशास्त्र ।

६२७ प्रति स २ । पत्र नं ३ । नै काल  $\times$  । के नं २६२ । अथशास्त्र ।

६२८. उपसर्गआचार्य— । पत्र नं १३ । या १३ ६ इति । आचार-नीमद्वय । विवरण-आचर्य  
वर्म वर्मन । १ काल । नै काल । पूर्ण ( १३ परिच्छेद तत्र ) के नं ४९ । अथशास्त्र ।

६२९. उपसर्गआचार्य— । पत्र नं ११४-१४१ । या ११ ५२ इति । आचार-नीमद्वय ।  
विवरण-आचार्य वर्मन । १ काल । नै काल । पूर्ण । के न ३९ । अथशास्त्र ।

६३०. अर्थिनअर्थिन—अर्थिनअर्थिन विवरण्य । पत्र नं २ । या १ ३ । आचार-शिल्पी । विवरण-  
वर्म वर्मन । १ काल । नै काल । पूर्ण । के न ३९ । अथशास्त्र ।

विशेष—शोहा की शोहा नै अर्थिन अर्थिन के एत इत्य की एवमा नी नई ।

६३१. अर्थिनअर्थिन—अर्थिनअर्थिन । पत्र नं २६ । या १२ ५२ । आचार-शिल्पी । विवरण-वर्मन । १  
काल नं १६३ । नै काल । पूर्ण । के नं ४११ । अथशास्त्र ।

६६२ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० कात × । वे० स० १२७ । छ भण्डार ।

६६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

६६४ केवलज्ञान का व्यौरा " । पत्र स० १ । आ० १२३ × ५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । ख भण्डार ।

६६५ क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२२ । आ० ११३ × ५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३ । अ भण्डार ।

६६६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० स० ११५ । क भण्डार ।

६६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १७६५ भाद्रवा सुदी ४ । वे० स० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखी गई थी ।

६६८ प्रति स० ३ । पत्र स० २०७ । ले० काल स० १५७७ वैशाख सुदी ८ । वे० स० १८८७ । ट

भण्डार ।

विशेष—'प्रगति सग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रगति छप चुकी है ।

६६९ क्रियाकलाप । पत्र स० ७ । आ० ६३ × ४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म  
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७७ । छ भण्डार ।

६७० क्रियाकलाप टीका । पत्र स० ६१ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक  
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १५३६ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रगति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज माडौगदुर्गे श्री सुलतानगयामुद्दीनराज्ये चन्देरीदेगेमहाशेरखानम्याप्रीयमाने नेसरे प्रामे  
वास्तव्य कायस्य पदमसी तत्पुत्र श्री राधी लिखित ।

६७१ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०७ । ज भण्डार ।

६७२ क्रियाकलापवृत्ति । पत्र स० ६६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक  
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रगति निम्न प्रकार है—

एष क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण अञ्जकेन लिखित श्लोकानामहादा-  
गतानि ॥ पूरी प्रगति 'प्रगति सग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र स० = १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल स० १७८४ भाद्रवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

६७४ प्रति स० २ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८३३ मगसिर सुदी ६ । वे० स० ४२६ । अ  
भण्डार ।



प्रारम्भ—सावज्जोगविरइ उकित्तरा गुणवउ माटिउत्ती ।

रवलि भस्सय निदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण नित्तइहय ।

सावज्जे अज्जोगाणा वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा ट्ठण्ण विज्जइय ।

अन्वपन अगुणा वित्तरा स्वैण जिणव्वरिदाण ॥३॥

अन्तिम—मदराभाववढा तिक्वरु भावाउ कुगई ताचिव ।

अमुहाउ निराणु वधउ कुणई निव्वाउ मदाउ ॥ ६० ॥

ता एव कायञ्च बुहेहि निच्चपि सक्किलेसमि ।

होई तिवकाल सम्म अमक्किने समि मुगइफन ॥ ६१ ॥

चउरगो जिणधम्मो नकउ चउरगमरण मवि नकम ।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि कीरमइ तमेव अम्वमण ।

भाए सुति सभम वफ कारणा निव्वुइ सुहाए ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणा सपूर्ण । लिखित गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थ ।

६६२ चारभायना । पत्र स० ६ । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  । भापा—सस्कृत । विसय—धर्म । २० काल ×

१० काल × । पूर्ण । वै० स० १७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३ चारित्रसार—श्रीमञ्जामु डराय । पत्र स० ६६ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भापा—सम्बृत । विषय—

भाषार धर्म । २० काल × । ले० काल स० १५४५ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसयममपन्न श्रीमज्जिनमेनभट्टारक श्रीषादपयप्रासादामारित चतुरनुयोगपारावार

पारगधर्मविजयश्रीमञ्जामुठमहाराजविरचिते भावनासाररत्ने चरित्रसारं प्रनागारधर्मसमाप्त ॥ अथ सत्या १५० ॥

स० १५६५ वर्षे वैशाख वदी ५ भौमवासरे श्री मूलमघे नद्याम्नाथे बलात्कागणे सरम्बतीगच्छे श्रीकु द-  
कु दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवा तत् शिष्य  
भाषार्थे श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाम्नाथे ऋण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दीवरी तयो पुत्रा साह  
शवर भार्या नक्षी साह अर्जुन भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्मा तयो पुत्र साह दामा साह  
याजा भार्या हौनी तयो पुत्री रणमल क्षेमराजसा डाकुर भार्या खेत तयो- पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या  
त्पजमिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेया मध्ये सा अर्जुन इद चारित्रसार शास्त्र लिखाय सत्पात्राय आर्यसागमय प्रदत्त  
लिखिन ज्योतिगुणा ।

६६४ प्रति सं ०। पत्र नं १४१। मे वल नं १६३२ वाचन मुदी ४। के नं १२१। क  
कण्ठार।

विशेष—वा पुनीकन मे निववता।

६६५ प्रति सं ३। पत्र नं ७०। मे वल नं १२२ कर्णिक मुदी २। के नं १७०। क  
कण्ठार।

६६६ प्रति सं ४। पत्र नं २२। मे वल  $\times$ । के नं ३२। क कण्ठार।

विशेष—बड़ा कड़ी कडिज जनों के धर्म की दिने हुये हैं।

६६७ प्रति सं ५। पत्र नं ६३। मे वल नं १७७६ कर्णिक मुदी ५। के नं १३३। क  
कण्ठार।

विशेष—हीरागुटी में कतिबिधि हुई।

६६८ खारिकमार माला—महावाक। पत्र नं ३७। वा १२७६। माला—हिन्दी (वठ)। विषय—धर्म।  
वल नं १७१। मे वल  $\times$ । धूर्त। के नं १७। क कण्ठार।

६६९ प्रति सं ३। पत्र नं १९। मे वल नं १७७७ मालीक मुदी ६। के नं १७५।  
क कण्ठार।

७०० प्रति सं ३। पत्र नं १३। मे वल नं १६६ कर्णिक मुदी १३। के नं १७१।  
क कण्ठार।

७०१ खारिकमार—। पत्र नं ३२। के ७६। वा ११७२। माला—मल्लिक। विषय—आचारमूल  
र वल  $\times$ । मे वल नं १६६३ म्नेक मुदी १। धूर्त। के नं २१६४। क कण्ठार।

विशेष—कवण्डि किना जगार है—

नं १६४६ वर्षे धारि १२ ७ प्रवर्तवनी म्नेकमाल इच्छाके कवण्डि विधी मानवतरे कर्णिक मुदी की प्रक-  
धरताम्येप्रवर्तने विधी निम्न वानी लुगुन बोनी योरा निम्न मालगुरा।

७ २ बीबीम वरककमाया—हीरातराम। पत्र नं ६। वा १२७२३। माला—हिन्दी। विषय—  
धर्म। र वल १७वी मालिक। मे वल नं १७७७। धूर्त। के नं ४२७। क कण्ठार।

विशेष—महाराज मे राजगुरा के नं निवृत्तकन के पट्टार्थ प्रतिनिधि की थी।

७०३ प्रति सं ३। पत्र नं ६। मे वल  $\times$ । के नं १२१। क कण्ठार।

७०४ प्रति सं ३। पत्र नं ११। मे वल नं १२३० कर्णिक मुदी ४। के नं १२४। क कण्ठार।

७०५ प्रति सं ४। पत्र नं ६। मे वल  $\times$ । के नं ११। क कण्ठार।

७०६ प्रति सं ५। पत्र नं ३। मे वल  $\times$ । के नं १२१। क कण्ठार।

७०७ प्रति सं ६। पत्र नं ४। मे वल  $\times$ । के नं १२२। क कण्ठार।

७ ८ प्रति सं ७। पत्र नं ६। मे वल नं १२। के नं ७३३। क कण्ठार।

७०६ प्रति स० ८ । पत्र म० ५ । वे० काल १ । वे० म० ७३६ । च भण्डार ।

७१० प्रति स० ६ । पत्र म० ८ । वे० काल १ । वे० म० १३६ । छ भण्डार ।

विषय—५७ पत्र ।

७११ चौगामी आनादना । पत्र म० १ । वे० ६ । वे० म० १३६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल १ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० ८३१ । अ भण्डार ।

विषय—जैन मठिया म पत्राभ्यन्तरे ८ शिवाभा के नाम है ।

७१२ प्रति स० २ । पत्र म० १ । वे० काल १ । वे० म० ८३७ । अ भण्डार ।

७१३ चौरामी आनादना । पत्र म० १ । वे० १० । वे० म० १३६ । भाषा—मराठी । विषय—धर्म ।

१० काल १ । पूर्ण । वे० म० १०२१ । अ भण्डार ।

विषय—प्रति हिन्दी टीका महित है ।

७१५ चौरामीलाय उत्तर गुण । पत्र म० १ । वे० ११ । वे० म० ८३६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल १ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० १०३३ । अ भण्डार ।

विषय—१८००० साल के भद्र से दिये हुए हैं ।

७१६ चौमठ ऋद्धि धरण । पत्र म० १ । वे० १० । वे० म० ८३६ । भाषा—प्रायतः । विषय—धर्म ।

१० काल १ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० १०३१ । अ भण्डार ।

७१८ बृहदाला—दीनतराम । पत्र म० ६ । वे० १० । वे० म० ८३६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल १ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७ प्रति स० २ । पत्र म० १३ । वे० काल म० १६५७ । वे० म० १३०५ । अ भण्डार ।

७१८ प्रति स० ३ । पत्र म० २८ । वे० काल म० १८६५ । वे० म० १३०५ । अ भण्डार ।

विषय—प्रति हिन्दी टीका महित है ।

७१९ प्रति स० १ । पत्र म० १६ । वे० काल १ । वे० म० १६६ । अ भण्डार ।

विषय—इसके प्रतिगिन २२ परीपह, पचमगनपाठ, महावीरस्तोत्र एव मधुसूदन-गवित्ती आदि नौ

को हुई हैं ।

७२० बृहदाला—युवजन । पत्र म० ११ । वे० १० । वे० म० ८३६ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ।

१० काल म० १८५६ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० १६७ । अ भण्डार ।

७२१ छेदपिण्ड—इन्द्रनदि । पत्र म० ३६ । वे० ८ । वे० म० ८३६ । भाषा—प्रायतः । विषय—प्रायभित

शास्त्र । १० काल १ । पूर्ण । वे० म० १८२ । अ भण्डार ।

७२२ जैनान्तरप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द्र । पत्र म० २५ । वे० १२ । वे० म० ८३६ । भाषा—हिन्दी

विषय—प्रायतः धर्म वर्णन । १० काल म० १६३६ । वे० काल १ । पूर्ण । वे० म० २०८ । अ भण्डार ।



७२३ प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल सं १९११ मास शुकी २। के सं २२। क  
अकार।

७४ आनामन्त्रावकाचार—साधनी मर्दि एवमज्ञ। पत्र सं २११। या १३× १३।  
मत्ता-लिपी। विपय-आचार सभ्यता। र काल एकी घटायी। ले काल ×। पूर्ण। के सं २३१। क अकार।

७२४ प्रति स० २। पत्र सं १२९। ले काल ×। के सं २१९। क अकार।

७५ प्रति सं २। पत्र सं २। ले काल ×। अपूर्ण। के सं २३१। क अकार।

७२७ प्रति स ३। पत्र सं २१९। ले काल सं १९१२ मास शुकी १४। के सं २२२।  
क अकार।

७२८ प्रति सं ४। पत्र सं १२ मे २७४। ले काल ×। के सं २६७। क अकार।

७२९ प्रति स० ५। पत्र सं १। ले काल ×। अपूर्ण। के सं २९। क अकार।

७३ आनवितामयि—मन्मोहरवास। पत्र सं १। या २६×२६। मत्ता-लिपी। विपय-  
म। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। के सं १२३। क अकार।

विशेष—२ ठे एक पत्र नहीं है।

३७ प्रति सं २। पत्र सं ११। ले काल सं १९४ मास शुकी ६। के सं ३३। म अकार

७३२ प्रति सं ३। पत्र सं १। ले काल ×। के सं १७७। क अकार।

विशेष—१२ एक है।

७३३ पत्रसमाप्तसिन्धी—भारतक आनभूषण। पत्र सं २७। या ११×२२। मत्ता-संघ  
विपय-मर्दि। र काल सं १२९। ले काल सं १९१२ मास शुकी ३। पूर्ण। के सं १२। क अकार।

७३४ प्रति स २। पत्र सं २९। ले काल सं १७२९ संत शुकी ७। के सं ३३३। क अकार।

७३५ प्रति सं ३। पत्र सं १९। ले काल सं १९१४ अन्त शुकी ११। के सं २९९। क अकार।

७३६ प्रति सं ४। पत्र सं ४७। ले काल सं १९४। के सं २९४। क अकार।

७३७ प्रति सं ५। पत्र सं ७०। ले काल ×। के सं २४३। क अकार।

विशेष—प्रति लिपी धर्म चरित है।

७३८ प्रति सं ६। पत्र सं २९। ले काल सं १७ अन्त शुकी १३। के सं ३१९। क  
अकार।

७३९ विपय-आचार—म सोमसन। पत्र सं १७। या ११×२२। मत्ता-संघ। विपय-  
आचार-मर्दि। र काल सं १९९। ले काल सं १२२ मास शुकी ३। पूर्ण। के सं २। क अकार।

विशेष—आचार के २२ पत्र कुछटी मिति के है।

७४ प्रति स २। पत्र सं १। ले काल सं १३ मास शुकी १६। के सं १। क  
अकार।

विशेष—वर्षित कालराम और उनके पिता कानूनदास ने प्रतिनिधि की थी।

७४१ प्रति स० ३ । पत्र स० १४३ । ले० काल × । वे० स० २८२ । व्य भण्डार ।

७४२ त्रिवर्णाचार । पत्र स० १८ । आ० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८ । ख भण्डार ।

७४३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० २८५ । अपूर्ण । ड भण्डार ।

७४४ त्रेपनक्रिया । पत्र स० ३ । आ० १०×६ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—थावक की क्रियाओं का वर्णन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८८ । च भण्डार ।

७४५ त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र स० ८२ । आ० १२×६ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आचार । १० काल स० १७५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८५ । घ भण्डार ।

७४६ दण्डकपाठ । पत्र स० २३ । आ० ८×३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य  
(आचार) । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६० । अ भण्डार ।

७४७ दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र स० १६ । आ० ११३×५ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—थावक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८ दशभक्ति । पत्र स० ५६ । आ० १२×८ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × ।  
१० काल स० १६७३ आसोज सुदी ३ । वे० स० १०६ । व्य भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्मनदि के ग्रन्थाय वाले खण्डेलाय ज्ञातीय सा-  
गपुर वाम में उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मीजमावाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९ दशलक्षणधर्मवर्णन—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ५१ । आ० १२×५ इच्च ।  
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० २६५ । ड भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड थावकाचार की गद्य टीका में है ।

७५० प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० २६६ । ड भण्डार ।

७५१ प्रति स० ३ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० २६७ । ड भण्डार ।

७५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५३ प्रति स० ५ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० स० १८६ ।  
३ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४ प्रति स० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६८१ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७७७ प्रति स ७। पत्र नं ३४। के बाल  $\times$ । के नं ११। छ मन्थार।

७७८ प्रति सं० =। पत्र नं ३। के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं ११। छ मन्थार।

७७९ प्रति स १। पत्र नं ४२। के बाल  $\times$ । के नं १७०१। छ मन्थार।

७८० महाप्रसन्नधर्मवर्धन । पत्र नं २। या १२५  $\times$  ७  $\frac{1}{2}$  इञ्च। मत्ता-हिन्दी। विपत्र-वर्धन।  
बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं ३७७। छ मन्थार।

७८१ प्रति स २। पत्र नं १। के बाल  $\times$ । के नं १११७। छ मन्थार।

विशेष—ब्रह्मरत्न ने प्रतिनिधि की थी।

७८२ ब्रह्मरत्नशस्त्र—पद्मसिद्धि। पत्र नं १। या ११  $\times$  ४ इञ्च। मत्ता-बंगाल। विपत्र-वर्धन।

८ बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । के ३२२। छ मन्थार।

विशेष—ब्रह्मरत्न प्रसिद्धि निम्न प्रकार है—

श्री परमेश्वरि बुधिराधित बुधि बुधवत्त संशयन मलितवर्धन मया प्रकरत्न ॥ इति बाल संशयन मन्थार ॥

७८३ बालकुण्ड—। पत्र नं ७। या १  $\times$  ४  $\frac{1}{2}$  इञ्च। मत्ता-बाह्य। विपत्र-वर्धन। ८ बाल  $\times$ ।  
न बाल न १ ३९। पूर्ण। के नं ३३। छ मन्थार।

विशेष—बुधवती भाग में धर्म दिया हुआ है। निधि बगरी है। मत्ता न ४ पत्र तक संभवतः बाल  
दिया है।

७८४ ब्रह्मरीक्षतपमाधना—धर्मसी। पत्र नं १। या १  $\times$  ४ इञ्च। मत्ता-हिन्दी। विपत्र-  
वर्धन। ८ बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं २१३१। छ मन्थार।

७८५ ब्रह्मरीक्षतपमाधना—। पत्र नं ६। या १  $\times$  ४ इञ्च। मत्ता-बंगाल। विपत्र-वर्धन।  
८ बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं २३६। छ मन्थार।

विशेष—४ २ पत्र नहीं है। प्रति हिन्दी धर्म सहित है।

७८६ ब्रह्मरीक्षतपमाधना—। पत्र नं १। या १  $\times$  ४ इञ्च। मत्ता-हिन्दी। विपत्र-वर्धन।  
८ बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं १२९१। छ मन्थार।

विशेष—गौरी धीर वाचने वा संभव भी बहुत सुन्दर पत्र में दिया गया है।

७८७ दीपमाधिकाधिकाधिका—। पत्र नं १२। या १२  $\times$  ६ इञ्च। मत्ता-हिन्दी। विपत्र-वर्धन।  
८ बाल  $\times$ । के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं ३९। छ मन्थार।

विशेष—निधिवाट बङ्गाल मत्ता।

७८८ प्रति सं० २। पत्र नं १। के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं ३२। छ मन्थार।

७८९ ब्राह्मणकुण्ड—दामसिद्धि। पत्र नं २। या १  $\times$  ४ इञ्च। मत्ता-बंगाल। विपत्र-बंगाल  
मत्ता। ८ बाल १ की बतसिद्धि। के बाल  $\times$ । पूर्ण। के नं २ ९९। छ मन्थार।

विशेष—बुध ३३६ टीके है। ६ में ११ तक पत्र नहीं है।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८३×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।  
१० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । छ मण्डार ।

७६९ धर्मपञ्चविंशतिका—ब्रह्मजितदास । पत्र स० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११० । छ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकवक्त्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदाम विरचित धर्मपञ्चविंशतिका  
नामशास्त्र समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७० धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नालाल सधी । पत्र स० ६४ । आ० १०×७३ । भाषा—हिन्दी । २० काल  
म० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल म० १६६२ आसोज मुदी १४ । वे० म० ३३७ । छ  
मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फनेहलान ने हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा है ।

७७२ धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र म० ५० । आ० १०३×८१ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल म० १८१६ फागुन मुदी ५ । अ मण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर  
हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व  
पञ्चा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन वित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण — तीर्थेणान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमासुडान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

बोखचन्द के शिष्य राधमल ने जयपुर में शांतिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र म० २७ । आ० ८१×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।  
वे० काल म० १६३० । पूर्ण । वे० म० ४०० । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र म० ४ मे ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल स० १६३३ । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । अ मण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५ धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकआचारभाषा—चम्पाराम । पत्र म० १७७ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—श्रावकों के आचार का वर्णन है । २० काल म० १८८८ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० म०  
३३८ । छ मण्डार ।



ध्या । द्वितीय पुत्र पञ्चाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदास तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्री चिरंजीविनी ससार चदराय चदाभिधानी । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नत्वानि साब्दी कमलश्री द्वितीयपुत्रनेवव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाब्दी सूवरीनाभा तत्तनूज सम्यक्त्वालकृतद्वादशव्रतपालक । सधपति हृगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्र साधु लाठी नाम धेय । तयो सुतो देवपूजादिपट्क्रिया कमलिनीविकास-नैत्रमार्तण्डापमो जिनदास तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म श्रीरत्तिनाम । एतेषां मध्येसधपति स्त्वाह्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र घातिदासनेमिदासयो न्योपाजितवित्तेन इद श्री धर्मसग्रह पुस्तकपचक पण्डितश्रीमोहाय्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापित भय्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं आश्वन्द्रावर्कादिनदत्तात् ।

७८४ प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । ऋ भण्डार ।

७८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वे० स० ३४२ । इ भण्डार ।

७८६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० स० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति स० ५ । पत्र स० ४८ से ५५ । ले० काल स० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वे० स० १७३ । च भण्डार ।

७८८ प्रति स० ६ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८५९ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—भवतराम के शिष्य सपतिराम हरिवंशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९ धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० ६६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भापा—संस्कृत । विषय—  
धावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—  
धावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४१ । इ भण्डार ।

७९१ धर्मशास्त्रप्रदीप । पत्र स० २३ । आ० ६×४ इञ्च । भापा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३६ । आ० ११३×७३ इञ्च । भापा—हिन्दी ।  
विषय—धर्मादेश । २० काल स० १७२४ आषाढ सुदी ५ । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० ३३४ । क भण्डार

विशेष—नागचन्द्र, धनुषवद्ध तथा चक्रवद्ध कविताओं के विषय हैं । प्रति स० २ के आचार ने रचना सवत् है

७९३ प्रति स० २ । ले० काल स० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वे० स० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सागानेर मे हुई थी ।

७९४ धर्मसार—प० शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । आ० १३×७ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । २० काल स० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०४० । अ भण्डार ।

७९५ प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० स० ४६ । ग  
भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर मे सोनपाल भौसा मे प्रतिलिपि करवाई ।

७६६ धर्मसूत्रम्—किसप्रह—आचार। पत्र सं १२। पा ११×४२ इत्त। मत्ता—संस्कृत। विषय-  
आचारार्थं धर्म। र काल सं १२६१। मे काल सं १७४७ पाठोक्त सुदी २। पूर्ण। के सं २६२।

विशेष—संस्कृत १७४७ वर्षे मालीक सुदी २ सुबवाहरी धर्म क्षितीय आचारधर्म स्वरुपः पत्र-व्यपटवत्तम्-  
विनापि कल्पपरिमत्तम् ॥४७६॥ ॥ ॥

धर्मसूत्रमस्मैपी रत सुखिन् विनाशता ॥

इति धर्मस्य जीवन्निदिन कल्पवत्तौ ॥ सुखा माता ॥

संवर ननु विधीयुवचरोपमयु कम्मात्तं।

एव सन् विरत मज्जीपत्तावसेस ॥ १ ॥

विरतं जी जी पत्ता सुई न पत्तं न रोपिबो विग्गा।

इत्यपि यत्र पत्तो बुजिग्ग भोप्यात्तं ॥ २ ॥

इति विरत माता ॥ पी ॥

एता का नाम 'धर्मसूत्र' है। यह दो भागों में विभक्त है। एक कालावधि सुखा सुखा अनाकार धर्मसूत्र।

७७७ धर्मोपदेशस्य आचार—सिद्धिर्भूति। पत्र सं ३६। पा १२×४२ इत्त। धर्म-  
संस्कृत। विषय—आचार काल। र काल ×। मे काल सं १७७२ पाठ सुदी १३। पूर्ण। के सं ४७। अ  
कथार।

७७८ धर्मोपदेशस्य आचार—धर्मोपदेश। पत्र सं ३३। पा १ ×२ इत्त। मत्ता—संस्कृत।  
विषय—आचार काल। र काल ×। मे काल सं १७७२ पाठ सुदी १३। पूर्ण। के सं ४७। अ कथार।

विशेष—दोटा में प्रतिविधि की गई थी।

७७९ धर्मोपदेशस्य आचार—काल मेमिहत्त। पत्र सं २९। पा १ ×४२ इत्त। मत्ता—संस्कृत।  
विषय—आचार काल। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं २४२। अ कथार। प्रतिव पत्र नहीं है।

८० प्रति सं २। पत्र सं १३। मे काल सं १६२ ल्पे सुदी ३। के सं । अ कथार।

विशेष—कालीकथ मे स्वस्वार्थ प्रतिविधि की थी।

८०१ प्रति सं ३। पत्र सं १। मे काल ×। के सं २३। अ कथार।

८०२ धर्मोपदेशस्य आचार—पत्र सं २६। पा ६३×४२ इत्त। मत्ता—संस्कृत। विषय-  
आचार काल। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं १७४।

विशेष—प्रति मालीक है।

८०३ धर्मोपदेशस्य आचार—सेवात्तम् स्वरुपः। पत्र सं २१। पा १२× इत्त। मत्ता—क्षितीय।  
विषय—धर्म। र काल सं १३। मे काल ×। के सं ३४३।

विशेष—काल एता सं १३ के सुई विरत सुख संव म १ ११ मे पूर्ण सुभा।

८४ प्रति सं २। पत्र सं १९। मे काल ×। के सं ३६। अ कथार।

८०५ प्रति सं ३। पत्र सं २७६। मे काल ×। के सं १६३। अ कथार।

८०६ नरकटु स्वर्णन—भूधरदास । पत्र स० २ । प्रा० १०४५ इक्ष । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—नरक के दुःखा का वर्णन । २० काल / । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ मण्डार ।

विशेष—दूधर वृत्त पार्यपूरण में है ।

८०७ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ६६६ । अ मण्डार ।

८०८ नरकवर्णन । पत्र स० ८ । प्रा० १०३/४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—नरक का वर्णन ।

२० काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ मण्डार ।

विशेष—सदानुल कामनीशाल ने प्रतिनिधि हैं ।

८०९ नरकारश्रायकाचार । पत्र स० १४ । प्रा० १०३/४ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—

श्रायका का आचार वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री पार्ष्वनाथ चैत्यानय मे मंडेलवान गोंधर पानी बाई तौन्हे ने श्री घायिका विसय श्री को भेंट

किया । प्रदर्शित निम्न प्रकार है—

मयत् १६१२ वर्षे वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्ष्वनाथ चै वालये श्री मूलसधे सरस्वती गन्त्रे बनाकार-

गणे श्रीकु द्भु दाचार्यान्वये मण्डारक श्री पचनदि देवा तत्पट्टे म० श्री शुभचंद्रदेवा तत्पट्टे म० श्री प्रभाचंद्रदेवा तत्-

पिप्य मण्डसाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवा तत्पिप्यमण्डनाचार्य श्री मनितर्कीतिदेवा तदाम्नाये मंडेलवानान्वये मांनि गोंधरे कां

नोळ् इद गान्त्र नववारे श्रावकाचार ज्ञानावरणी कर्मधाय निमित्त प्रजिना विनेमिरीए दन ।

८१० नष्टोद्विष्ट । पत्र स० ३ । प्रा० ८४७ इक्ष । भाषा—सम्भृत । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल / । पूर्ण । वे० स० ११३३ । अ मण्डार ।

८११ निजामणि—ब्र० जिनदाम । पत्र स० २ । प्रा० ८४८ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६८ । क मण्डार ।

८१२ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १२ । प्रा० १२४/३ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५८ । इ मण्डार ।

८१३ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३५६ । इ मण्डार ।

८१४ निर्माल्यदोषवर्णन—प्रा० तुलीचन्द्र । पत्र स० ६ । प्रा० १०३/४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—

भावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६१ । क मण्डार ।

८१५ निर्वाणप्रकरण । पत्र स० ६२ । प्रा० ६३/४ इक्ष । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३१ । ज मण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६ निर्वाणमोक्षकनिर्णय—नेमिदास । पत्र स० ११ । प्रा० ११३/४ इक्ष । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० ६७ । ख मण्डार ।



८१० पंचपरमेष्ठीगुण्य—पच सं २ । धा ७५२२२ रज । गता-ह्रीं । विषय-धर्म । र नल × । ले नल × । कुर्म । के सं १३२ । अ नग्यार ।

८१८ पंचपरमेष्ठीगुण्यवर्षा—डाहूरास । पच सं ७३ । धा ४२५२२ । गता-ह्रीं । विषय-धर्म । र नल × । ले नल सं १५६६ गायत कुटी (२) कुर्ते । के सं १७ । अ नग्यार ।

विशेष—६ के वच के हावपासुमेका गता है ।

८१९ पंचपरमेष्ठीगुण्यवर्षा—पद्यनीहि । पच सं २ के ३ । धा १२२५२ रज । गता-धर्म । विषय-धर्म । र नल × । ले नल सं १२ ६ चैठ कुटी १ । कुर्ते । के सं १२७१ । अ नग्यार ।

विशेष—नेवक अर्थात् ध्यूर्ते है किन्तु निम्न प्रकार है—

की धर्मवचनप्रमाणमे वैध कीर्त अडेनगलाजके एकत्रीवस्तमे एक की नकमल राजवर्तवमे धर्म लीनराल —

८२२ प्रति स २ । पच सं १२९ । ले नल सं १२७ अष्ट कुटी प्रतिपदा । के सं २४२ । अ नग्यार ।

विशेष—अर्थात् विम्वप्रकार है— संवत् १२७ वर्षे अष्ट कुटी १ एकी धी वृत्तर्तमे नलनरालके अर्थात् एके धी कु वदु वाचमर्तमे व धी एवतर्तमे विम्वप्रकार व बुचकीवित्तमिन्व व धी बलकुए ए विम्वप्रकार वरका वरका । देवुति धाके वरतमे व्या० वचनमेन लिखिता । कुर्म वस्तु ।

विषय सुधी वर "सं १६ २ वर्षे" विधा है ।

८२१ प्रति सं ३ । पच सं ९ । ले नल × । के सं २९ । अ नग्यार ।

८२२ प्रति सं ४ । पच सं १ । ले नल सं १५७२ । के सं ५९९ । अ नग्यार ।

८२३ प्रति सं ५ । पच सं १२१ । ले नल × । के सं ४२ । अ नग्यार ।

८२४ प्रति सं ६ । पच सं २१ । ले नल × । के सं ४२१ । अ नग्यार ।

विशेष—अधि संवत् कीका वृत्ति है ।

८२५ प्रति सं ७ । पच सं २९ । ले नल सं १५५५ वाच कुटी ४ । के सं १९ । अ नग्यार ।

विशेष—अधु अक्षर के धर्मों के स्थितिनि की धी । अक्षरवर्तक एक कुर्ते ।

८२६ प्रति सं ८ । पच सं १३९ । ले नल सं १३७ वाच कुटी ९ । के सं १९ । अ नग्यार ।

प्रवृत्ति विम्वप्रकार है— संवत् १२७५ वाच कुटी २ कुके कीवृत्तर्तमे नलनरालके अर्थात् वरकावर्तमे धी बुचकीवित्तमिन्व व धी एवतर्तमे विम्वप्रकार व बुचकीवित्तमिन्व व धी बलकुए ए विम्वप्रकार वरका वरका । देवुति धाके वरतमे व्या० वचनमेन लिखिता । कुर्म वस्तु ।

शांतीय बागइंदेने सागवाट शुभस्थाने श्री पादिनाथ चैत्यालये ह्यष्ट शांतीय गाधी श्री पीपट भार्या धर्मदिस्तयो मुत्त गाधी रामा भार्या रामादे मुत्त हू गर भार्या दादिमदे तान्मा स्वज्ञानायर्णो कर्म क्षयार्थं लिखाप्य द्यं पवर्षिगतितया दत्ता ।

८२७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल म० १६३८ सापाङ्ग मुदी ६ । वे० म० १४ । अ भण्डार  
विशेष—बैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४१८ । अ भण्डार ।

८२९ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११ मे १४६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

८३० प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

८३१ प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

८३२ प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल म १६८२ पीपट मुदी १० । वे० सं० २६० । अ भण्डार  
विशेष—यही कही कठिन दाया मे अर्थ भी दिये हैं ।

८३३ प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल म० १७३२ सावण मुदी ६ । वे० सं० ४६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—पटित मनाहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४ प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल म० १७३५ नात्तिक मुदी ११ । वे० सं० १०८ । अ  
भण्डार ।

८३५ प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल X । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य ससृत्त टीका सहित है ।

८३६ प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल म० १५८५ बैदाख मुदी १ । वे० सं० २१२० । अ  
भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे बैदाख मुदी १५ मोमकारे श्री नाट्टासवे माथार्णिके ( माथुरान्ते ) पृष्णरगणे भट्टारक  
श्री हमचन्द्रदेव । तत् - ।

८३७ पद्मनद्विपचर्चिशतिटीका । पत्र सं० २०० । मा० १३५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६५० भादवा मुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ८२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं है ।

८३८ पद्मनद्विपचीसीभाषा—जगताराय । पत्र सं० १८० । मा० ११३×५३ इअ । भाषा—हिन्दी  
पत्र । २० काल सं० १७२२ फाण्डण मुदी १० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना श्री गङ्गजेव के शासनकाल मे प्रागरे मे हुई थी ।

८३९ प्रति सं० २० । पत्र सं० १७१ । २० काल सं० १७५८ । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति मुन्दर है ।

८४० पछनंदिपचीसीमापा—समाहाह किम्बुका । वन मं ४४१ । वा ११×४<sup>१</sup> इह । वाता-  
 जिरी वज । विपक—वर्ष । १ वज मं ११११ नंगिरि गुरी २ । मे वज × । गूर्म । मे सं ४११ । क म्पवा

विदेव—एन क्क वी वचनिरा निक्कना क्कलपगुरी के पुन कीरुणित्तली मे प्राग्ग वी वी । निज  
 म्पुमि एक निक्कने के वधाय क्कलहार वी म्पुमि हुंवरु । पुनः क्कलाल मे क्कल पुर्न विवा । एवमाल म्पि मं १ के  
 प्राग्ग न निवा क्का ह ।

८४१ प्रति स २ । वन सं ४१० । मे वज × । मे सं ४१० । क म्पवार ।

८४२ प्रति स ३ । वन सं ३२० । मे वज मं ११४४ वीत गुरी ३ । मे सं ४१० । क  
 म्पवार ।

८४३ पछनंदिपचीसीमापा— । वन सं ३० । वा ११×४<sup>१</sup> इह । वाता—हिवा । विपक—  
 वन । १ वज × । मे वज × । गूर्म । मे सं ४१५ । क म्पवार ।

८४४ पछनंदिमावक्कवार—पछनंदि । वन सं ४ के ३३ । वा ११<sup>१</sup>×२<sup>१</sup> इह । वाता—संभव ।  
 विपक—वाता क्कल । १ वज × । मे वज सं १११३ । गूर्म । मे सं ४२ । क म्पवार

८४५ प्रति सं २ । वन सं १ के ११ । मे वज × । गूर्म । मे सं ११० । क म्पवार ।

८४६ पटीक्कवत्तन— । वन सं १ । वा १ ×२ इह । वाता—हिवा । विपक—वर्ष । १  
 वज × । मे वज × । गूर्म । मे सं ४११ । क म्पवार ।

विदेव—एतौम पयि वा संक्क वी ह ।

८४७ पुक्कडीसेल— । वन सं २ । वा १ ×४ इह । वाता—वाव । विपक—वर्ष । १ वज × ।  
 मे वज × । मे सं ११० । गूर्म । क म्पवार ।

८४८ पुक्कवर्षिक्कपुवाप—क्कवत्तनक्कवार । वन सं ११ । वा ११ ×२<sup>१</sup> इह । वाता—संभव  
 विपक—वर्ष । १ वज × । मे वज मं १००० नंगिरि गुरी ३ । मे सं ३३ । क म्पवार ।

विदेव—वावर्ष वक्कलीणि के क्किल क्कवत्तन मे क्कवत्तन के प्रतिनिधि वी वी ।

८४९ प्रति सं २ । वन सं १ । मे वज × । मे सं ३२ । क म्पवार ।

८५० प्रति सं ३ । वन सं ३१ । मे वज सं १ ११ । मे सं १०५ । क म्पवार ।

८५१ प्रति सं ४ । वन सं २ । मे वज सं ११४४ । मे सं ४०१ । क म्पवार ।

विदेव—एवीची के क्कल तीणे संक्कट टीका वी ह ।

८५२ प्रति स ५ । वन सं १ । मे वज × । मे सं ४०२ । क म्पवार ।

८५३ प्रति सं ६ । वन सं १४ । मे वज × । मे सं ३० । क म्पवार ।

विदेव—अनि प्राग्ग ह । क्कल वा क्कवत्तन वज विप क्कवत्तन एवम वी विवा हुवा ह ।

८५४ प्रति स० ७ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० स० ६८ । छ  
भण्डार ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका महित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५ प्रति स० ८ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६७ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८२७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७ प्रति स० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६५२ । वे० स० ४७३ । ड भण्डार ।

८५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । वे० स० ११८ । म  
भण्डार ।

८५९ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र स० ११६ । आ० ११३×८ इच्छ । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० स० ८७३ । क

८६० पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र स० १३६ । आ० १३×७ इच्छ । भाषा—  
हिंदी । विषय—धर्म । २० काल स० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७२ । क भण्डार ।

८६१ पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र स० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इच्छ । भाषा—  
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ८५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रणति विस्तृत दी हुई है । ग्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वे० स० १७६ । अ भण्डार ।

८६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७१ । ले० काल × । वे० स० ४७० । क भण्डार ।

८६४ प्रतिक्रमण । पत्र स० १३ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों  
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । च भण्डार ।

८६५ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३२ । च भण्डार ।

८६६ प्रतिक्रमण पाठ । पत्र स० २६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय किये हुये  
दोषों की आलोचना २० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ३२ । ज भण्डार ।

८६७ प्रतिक्रमणसूत्र । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों  
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८ प्रतिक्रमण । पत्र स० २ से १८ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुये  
दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९ प्रतिक्रमणसूत्र—( वृत्ति सहित ) । पत्र स० २२ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा—प्राकृत  
संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६० । घ भण्डार ।

८७० प्रतिमास्त्यापङ्क कु धपदेश—अपङ्कप । पत्र सं ४७ । मा १५४ इत्थ । वाता—किन्धी ।  
विषय—सर्व । र काल  $\times$  । ले काल सं १२३ । पूर्वा । के सं ११५ । क कथार ।

विशेष—धीरज्ञान म एवना भी बदी भी ।

८७१ प्रत्याक्यापङ्क । पत्र सं १ । मा १५४ इत्थ । वाता—प्राण्य । विषय—सर्व । र  
काल  $\times$  । ले काल । पूर्वा । के सं १०२ । क कथार ।

८७२ प्रत्यापङ्कवाचारा । पत्र सं २१ । मा ११५ इत्थ । वाता—सोम्य । विषय—व वा  
वाप्य । र काल  $\times$  । ले काल  $\times$  । पूर्वा । के सं १११ । क कथार ।

विशेष—प्रति किन्धी व्याख्या मण्डि है ।

८७३ प्रत्यापङ्कवाचारावाप्य—कुशाधीनाम । पत्र सं ११ । मा ११५ इत्थ । वाता—  
किन्धी उच्च । विषय—वाचारा वास्तव । र काल सं १०५० बीषाड मुदी २ । ले काल सं १ । ए मन्विर मुदी २ ।  
के सं १२ । क कथार ।

विशेष—स्वोत्पत्तौ के पुत्र कावृत्तान्तौ धनु के प्रतिनिधि कथार्य । एत एव मा १ काल कथार्य  
एवा वाचाई ५ आम पलीपठ में लिखा गया था ।

वीच हिसरे का इत्थ को लगे पञ्चवाचारा ।

बीचाई कलम विषी बीतपग पत्ताड ॥

८७४ प्रति स । पत्र सं २१ । ले काल सं २ धावस मुदी १ । के सं ११ । क कथार ।

विशेष—स्वोत्पत्तौ उच्च के सचाई मानोपुर के प्रतिनिधि कथार्य बीचरिठे के मन्विर इत्थ कथारा ।

८७५ प्रति सं ३ । पत्र सं ११ । ले काल सं १ १४ बीच मुदी २ । के सं ११ । क  
कथार ।

विशेष—स १ ११ धावस मुदी ११ को कथारप बीचा के प्रतिनिधि भी बीचरिठे उच्च प्रति है एत  
की काल उठारी नहीं है । महत्त्वा बीतपग के पुत्र कथार्य के इसी प्रतिनिधि की ।

८७६ प्रति स ४ । पत्र सं २१ । ले काल  $\times$  । के सं १०५ । पूर्वा । क कथार ।

८७७ प्रति स ५ । पत्र सं १२ । ले काल सं ११५५ माव मुदी १२ । के सं १११ । क  
कथार ।

८७८ प्रति स ६ । पत्र सं १२ । ले काल सं १ ३ बीच मुदी १४ । के सं ११ । क  
कथार ।

८७९ प्रत्यापङ्कवाचारावाप्य—पञ्चाध्याय बीचरी । पत्र सं १४ । मा १२, ५२ इत्थ ।  
वाता—किन्धी मठ । विषय—वाचारा माव्य । र काल सं ११११ बीच मुदी १४ । ले काल सं १११ । पूर्वा ।  
के सं २१ । क कथार ।

८८० प्रति स २ । पत्र सं ४ । ले काल सं ११११ । के सं ११५ । क कथार ।

८८१ प्रति स० ३ । पत्र न० २३१ मे ४६० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ६८६ । च भण्डार ।

८८२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११३×५ इञ्च । भापा-हिन्दी गत्र । विषय-  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८३२ । पूर्णा । वै० स० ११६ । गत्र भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ६४७ । च भण्डार ।

८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ५८८ । ड भण्डार ।

८८५ प्रति स० ४ । पत्र स० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ५१६ । ड भण्डार ।

८८६ प्रश्नोत्तरोपामकाचार—भ० मन्त्रकीर्ति । पत्र स० १३१ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भापा-  
सङ्घ । विषय-धर्म । २० काल × । ले० काल स० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्णा । वै० स० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थग्रन्थ मख्या २६०० ।

प्रशस्ति—सवत् १९६१ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे त्रिराडगे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्यालये श्री  
काष्ठासधे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीमेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीममेनदेवास्तत्पट्टे भ०  
श्री रामकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयमेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयमेनदेवा भ० श्री विभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री  
रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तन्दिप्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखित ।

८८७ प्रति स० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १९६६ पौष सुदी १ । वै० स० १७४ । अ  
भण्डार ।

८८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वै० स० १६७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या  
न प्रतिलिपि बनाई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अवावती ( आमेर ) वाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे  
जती ननसागर के सिध्द मन्नालाल के यहां सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घडे में ( १२वें दिन पर )  
रमाजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में स० १८६३ में भेंट की ।

८८९ प्रति स० ४ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १६०० । वै० स० २१७ । अ भण्डार ।

८९० प्रति स० ५ । पत्र स० २१६ । ले० काल स० १६७६ आसोज बुदी ५ । वै० स० २११ । अ  
भण्डार ।

विशेष—नात्तू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—सवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरें रोहणी नक्षत्रं भोजवादनगरे राजश्रीराजाभावासिध्द  
ज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलमधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवातत्पट्टे  
भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिदेवातत्पट्टे  
भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकात्तिस्त्वाम्नाये गोधा गोत्रे जात्रक जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारररण-निरत-चित्त साह श्री धनराज

एतद्गामि तीमती-वर्षी-क्षुभो विमद-वाकेवठी पमिति तयोः पुत्राः सन् ब्रह्मपुत्रवर्षी-तुल्ये पीतम् वी-का-तद्गामि  
 ब्रह्मपीतम्-तुल्य-तुल्य-वित्त-पाननाम्ना-तु-विति-तयोः पुन-राजतना-भु-वापु-वै-व-ग-रा-दि-क-तु-गु-लि-व-व-पु-तु-गु-पु-व-  
 भ-र-स्व-भ-नि-त-क-भ-व-प्रा-दि-त-कु-व-भ-व-भ-र-त-त-प-व-पी-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-  
 व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-

८८१ प्रति सं ६। पत्र सं ४४ से १६४। नि काल ×। अर्गुल। के सं ११३। क मयार।  
 ८८२ प्रति सं ७। पत्र सं १३। नि काल सं १६२। अर्गुल। के सं १११। क मयार।  
 विवेक—अर्गुल अर्गुल है। बीच के कुछ पत्र नहीं हैं। वे-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 संभुवार से वगैरे अर्गुल से प्रतिनिधि काले।

८८३ प्रति सं ८। पत्र सं ११२। नि काल सं १६२। के सं १११। क मयार।  
 ८८४ प्रति सं ९। पत्र सं १। नि काल सं ११२। के सं ११२। क मयार।  
 ८८५ प्रति सं १। पत्र सं ३२१। नि काल सं ११७०। पत्र मुठी। के सं ११। क मयार।

८८६ प्रति सं ११। पत्र सं ११। नि काल सं ११७०। के सं १११। क मयार।  
 विवेक—प-क-व-क-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-व-  
 ८८७ प्रति सं १२। पत्र सं ११६। नि काल ×। के सं ११४। क मयार।  
 ८८८ प्रति सं १३। पत्र सं २ से २६। नि काल ×। अर्गुल। के सं ११७। क मयार।  
 ८८९ प्रति सं १४। पत्र सं १६। नि काल ×। अर्गुल। के सं ११। क मयार।  
 ९० प्रति सं १५। पत्र सं १२६। नि काल ×। के सं १२। क मयार।

६०१ प्रति स० १६ । पत्र म० १४५ । ले० काल X । वै० म० १०६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र वाद मे लिखा हुआ है ।

६०२ प्रति स० १७ । पत्र स० ७३ । ले० काल म० १८५६ माघ सुदी ३ । वै० स० १०८ । छ मण्डार ।

६०३ प्रति स० १८ । पत्र म० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुण बुदी ८ । वै० स० १०९ ।

विशेष—पाचोलास मे चातुर्मास योग के समय प० सोभाविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबड़ा ने मागानेर में गोधो के मन्दिर मे चढाई ।

६०४ प्रति स० १९ । पत्र स० १९० । ले० काल स० १८२६ मार्गिर बुदी १४ । वै० स० ७८ ।

छ मण्डार ।

६०५ प्रति स० २० । पत्र म० १३२ । ले० काल X । वै० म० २२३ । छ मण्डार ।

६०६ प्रति स० २१ । पत्र म० १३१ । ले० काल स० १७५९ मगसिर बुदी ८ । वै० स० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७ प्रति स० २२ । पत्र म० १६४ । ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वै० म० ३७५ । छ

मण्डार ।

६०८ प्रति स० २३ । पत्र म० १७१ । ले० काल म० १६८८ पौष सुदी ५ । वै० स० ३४३ । छ

मण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह थी कान्हा इद पुस्तक लिखापित ।

६०९ प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल X । वै० स० १८७३ । छ मण्डार ।

६१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र सख्या ५० । भा०—१०<sup>३</sup> X ५<sup>३</sup> इन्व । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—स० १९०५ नावन बुदी ५ । अपूर्ण । वै० स० १९९ । छ मण्डार ।

विशेष—चूरु नगर मे म्यौजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११ प्रशस्तिकाशिका—वालकृष्ण । पत्र सख्या १९ । भा० ९<sup>३</sup> X ५<sup>३</sup> इन्व । भाषा—संस्कृत ।

विषय—वर्म । २० काल—X । ले० काल—स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वै० म० २७८ । छ मण्डार ।

विशेष—वस्तराम के शिष्य शम्भु ने प्रतिलिपि की थी ।

पारम्भ—नत्वा गरुपति देव सर्व विघ्न विनाशन ।

गुरु च कर्णानार्य ग्रहानवामिधानक ॥१॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या वालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णना क्रमत कार्यवारिका ।

त्रिन्यने सर्वविघ्नाधि प्रवोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥





देवनागरी) विषय—किये हुए दोषो को आलोचना २० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । अपूर्णा । वै० स० १६६८ । ट भण्डार ।

६२७ प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नदिगुरु । पत्र स० ८ । आ० १२ $\times$ ६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषो की आलोचना । २० काल- $\times$  । ले० काल-स० १६३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्णा । वै० स० ११८ । ख भण्डार ।

६२८ प्रोपध दोष वर्णन । पत्र स० १ । आ० १० $\times$ ५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । वै० स० १४७ । पूर्णा । छ भण्डार ।

६२९ वार्हिस अभक्ष्य वर्णन—यात्रा दुलीचन्द्र । पत्र स० ३२ । आ० १० $\times$ ६ $\times$ ३ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—श्रावको के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल-स० १६४१ वैशाख सुदी ५ । ले० काल- $\times$  । पूर्णा । वै० स० ५३२ । क भण्डार ।

६३० वार्हिस अभक्ष्य वर्णन  $\times$  । पत्र स० ६ । आ० १० $\times$ ७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावको के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल  $\times$  । ले० काल । पूर्णा । वै० स० ५३३ । व भण्डार ।

विशेष—प्रति मशोधित है ।

६३१ वार्हिस परीपह वर्णन—भूवरदास । पत्र स० ६ । आ० ६ $\times$ ४ इच्छ । भाषा—हिन्दी ( पद्य ) । विषय—मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहों का वर्णन । २० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वै० स० ६६७ । अ भण्डार ।

६३२ वार्हिस परीपह  $\times$  । पत्र स० ६ । आ० ६ $\times$ ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियों के सहने योग्य परीपहों का वर्णन । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वै० स० ६६७ । ड भण्डार ।

६३३ वालाविषेध ( एमाकार पाठ का अर्थ )  $\times$  । पत्र स० २ । आ० १० $\times$ ४ $\frac{१}{२}$  । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वै० स० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि मारिणक्यचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४ बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र स० ७५ । आ० ७ $\times$ ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—आधार साम्प्र । २० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० काल स० १८३२ । पूर्णा । वै० स० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६३ । वै० स० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६ ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन  $\times$  । पत्र स० ४ । आ० ८ $\times$ ५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वै० पूर्णा । वै० स० २३१ । भ भण्डार ।

६३७ बोधसार  $\times$  । पत्र स० ३७ । आ० १२ $\times$ ५ $\frac{१}{२}$  । भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १६२८ । काती सुदी ५ । पूर्णा । वै० स० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बोधपत्र की ग्राम्नाय की मान्यतानुसार है ।

सत्या लेखन माहेण विद्यातीतिपयोगि च ।

प्रतिष्ठा सम्पन्ने र्हाप्रवनाभागेन बीमता ॥ ४ ॥

६१२ प्रायश्चित्त विधि— । पत्र सं ४ । या १२५३ इत्य । श्या-संस्कृत । विषय-वापरा ।  
 र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं १९१६ । अ मध्याह ।

६१३ प्रायश्चित्त मद्य --- । पत्र सं ३ । या १३५९ इत्य । श्या-संस्कृत । विषय-विषे ह्य  
 श्यां की शालोचना । र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं ३२२ । अ मध्याह ।

६१४ प्रायश्चित्त विधि—अच्छन्न श्रेय पत्र सं १ । या १५५४ इत्य । श्या-संस्कृत ।  
 विषय-विषे ह्य शेषो की शालोचना । र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं ३२९ । अ मध्याह ।

६१५ प्रति सं २ । पत्र सं २६ । ले काल-५ । के सं ३२२ । अ मध्याह ।

विशेष—१ पत्र से श्यां सम्पन्न शो के अग्र्यश्चित्त शालो का संस्कृत है ।

६१६ प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ले काल सं १६३४ शैव श्रुती १ । के सं ११ । अ मध्याह ।

विशेष—५ पत्रात्मक ने बीमवेर के अगिर अम्युर प्रकृतिपि की थी ।

६१७ प्रति सं ४ । ले काल-५ । के सं ३२३ । अ मध्याह ।

६१८ प्रति सं ५ । ले काल-सं १०५४ । के सं २५४ । अ मध्याह ।

विशेष—आचार्य महेश्वरप्रति ने श्रु शालो (शंशाशरी) म प्रतिपिपि की ।

६१९ प्रति सं ५ । ले काल-सं १६१ । के सं । अ मध्याह ।

विशेष—बक नगर मे सं शौरासं के शिख सं शोडकम्प ने प्रतिपिपि की थी ।

६२ प्रायश्चित्त विधि --- । पत्र सं ३६ । या १५५४ इत्य । श्या-संस्कृत । विषय-विषे ह्य  
 शेषो की शालोचना । र काल-५ । ले काल सं १ । २ । पूर्ण । के सं-१२ । अ मध्याह ।

विशेष—२९ वां क्पा २६ वा पत्र नहीं है ।

६२१ प्रायश्चित्त विधि----- । पत्र सं ६ । या १५५४ इत्य । श्या-संस्कृत । विषय-विषे  
 ह्ये शेषो का पत्राभावा । र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं १९ । अ मध्याह ।

६२२ प्रायश्चित्त विधि—म पञ्चसधि । पत्र सं । या १५५४ इत्य । श्या-संस्कृत । विषय-  
 विषे ह्य शेषो की शालोचना । र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं ११७ । अ मध्याह ।

६२३ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले काल-५ । के सं २५६ । अ मध्याह ।

विशेष—प्रतिष्ठाकार का श्याम मन्त्र है ।

६२४ प्रति सं ३ । ले काल सं १७६६ । के सं ३३ । अ मध्याह ।

६२५ प्रायश्चित्त शास्त्र—अच्छन्नम् । पत्र सं १५ । या १ ५५४ इत्य । श्या-संस्कृत ।  
 विषय-विषे ह्य शेषो का पत्राभावा । र काल-५ । ले काल-५ । पूर्ण । के सं १६६ । अ मध्याह ।

६२६ प्रायश्चित्त शास्त्र --- । पत्र सं ६ । या १ ५५४ इत्य । श्या-संस्कृत ( शिपि

६५१ भावद्वीपक—जोधराज गोदीका । पत्र स० १ मे २७७ । मा० १०×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भापा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ६५६ । च भण्डार ।

६५२ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल—स० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्णा । वे० स० ६५६ ।  
च भण्डार ।

६५३ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । २० काल × । ले० काल—स० १६०४ कार्तिक सुदी १० ।  
वे० स० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र स० ४१ । मा० ११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भापा—नम्बुल ।  
विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—स० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्णा । वे० स० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी भोगवामरे लिखित वाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

६५५ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १५३१ फागुण बुदी ३३ । वे० स० २११६ ।  
ट भण्डार ।

६५६ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल—× । अपूर्णा । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ मे आगे के पत्र नहीं ह ।

६५७ भावमग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६ । मा० ११×५ इञ्च । भापा—प्राकृत । विषय—धर्म ।  
२० काल—× । ले० काल—स० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्णा । वे० स० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विद्याखानक्षत्रे श्री मादिनापचैत्यालये तक्षकगड  
महादुर्गे महाराज श्री रामचन्द्रराजप्रवर्तमाने श्री मूलक्षये वलाङ्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक  
श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ।

६५८ प्रति स० २ । पत्र स० ४५ । ले० काल—स० १६०४ भाद्रवा सुदी १५ । वे० स० ३२६ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे घृतनाम्नियोगे सुरिथारण  
मनेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने सिकदरावादशुमस्थाने श्रीमत्काष्ठासधे मायुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवा  
तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीमस्तुकीर्ति तस्य शिक्षणी वा० भोग्य भावसंग्रहाख्य  
शास्त्र प्रदत्त ।

६५९ प्रति स० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल—× । वे० स० ३२७ । अ भण्डार ।

६६० प्रति स० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल—स० १८६४ पौष सुदी १ । वे० स० ५५८ ।  
क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६३८. भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाह) — × । पत्र नं २२ के ४६ । या १२ × २ इच्छ । गणा-  
हिन्दी । विषय—वैदिक साहित्य । र काल × । ले काल × । पूर्ण के नं १२२७ । छ अक्षर ।

६३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र नं ३२१ । या ११ × २२ इच्छ । गणा—गणव ।  
विषय—बुद्धि अर्थ गणव । र काल × । ले काल × । पूर्ण के नं २४९ । छ अक्षर ।

६४०. प्रति स २ । पत्र नं ११३ । ले काल × । के नं २२ । छ अक्षर ।

विषय—यह एक संस्कृत के वाक्यों के ऊपर परीक्षा की बात लिखे हुए है ।

६४१. प्रति स ३ । पत्र नं १३ । ले काल × । के नं २२९ । छ अक्षर ।

विषय—ब्राह्मण एवं अस्मिन् यद्य वाच में लिखकर लक्ष्मी बने हैं ।

६४२. प्रति स ४ । २१२ । ले काल × । के नं २६ । छ अक्षर ।

विषय—संस्कृत के परीक्षा की बात लिखे हुए हैं ।

६४३. प्रति स ५ । पत्र नं ३१ ले काल × । पूर्ण । के नं २३ । छ अक्षर ।

विषय—वही संस्कृत के टीका की है ।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपरान्धितसूरी श्रीनरसिंह । पत्र नं ४३४ । या ११ × २  
इच्छ । गणा—गणव । विषय—बुद्धि अर्थ वर्णन । र काल × । ले काल नं १७२३ वाच बुद्धि क पूर्ण । के नं  
२९ । छ अक्षर ।

६४५. प्रति स २ । पत्र नं ३१२ । ले काल नं १२२७ केवल बुद्धि १ । के नं ३११ ।  
छ अक्षर ।

६४६. भगवती आराधना भाष्य—प सदासुख अस्त्रीवाह । पत्र नं ९७ । या १२ × २  
इच्छ । गणा—हिन्दी । विषय—वैदिक । र काल नं १९ । ले काल × । पूर्ण । के नं २४५ । छ अक्षर ।

६४७. प्रति स २ । पत्र नं ९३ । ले काल नं १२२३ वाच बुद्धि १ । के नं २९ । छ  
अक्षर ।

६४८. प्रति स ३ । पत्र नं ७२२ । ले काल नं १२११ केवल बुद्धि १ । के नं २९२ । छ  
अक्षर ।

६४९. प्रति स ४ । पत्र नं २७ ले २१९ । ले काल नं १२२ केवल बुद्धि १ । पूर्ण ।  
के नं २२३ । छ अक्षर ।

विषय—यह एक हीरालाज की बचका वा है । विती १२४२ वाच बुद्धि १ की वाचार्थ की के वर्णन  
वाच के उदात्त में वर्णन ।

६५०. प्रति स ५ । पत्र नं २९ । ले काल × । पूर्ण । के नं ३२ । छ अक्षर ।

६५१. प्रति स ६ । पत्र नं ३३२ । ले काल × । पूर्ण । के नं १२६७ । छ अक्षर ।

६७४ प्रति स० २ । पत्र स० १७० । ले० काल- $\times$  । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२८ । वे० स० ६६५ । च भण्डार ।

६७६ प्रति स० ४ । पत्र स० ३७ मे १०५ । ले० काल  $\wedge$  । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।  
विशेष—प्राग्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७ मित्यात्वगटन । पत्र स० १७ । प्रा० ११ $\times$ ५ रत्न । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।

१० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० स० १५६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ मे प्रागे पत्र नहीं है ।

६७८ प्रति स० २ । पत्र स० ११० । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

६७९ मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र स० ३६८ । प्रा० १२ $\times$ ५ $\frac{१}{२}$  रत्न । भाषा-  
प्राकृत संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । १० काल- $\times$  । ले० काल-स० १८२६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण ।  
वे० स० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८० प्रति स० २ । पत्र स० ३७३ । ले० काल- $\times$  । वे० स० ५८० । क भण्डार ।

६८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ मे प्रागे पत्र नहीं है ।

६८२ मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२६ । प्रा० १२ $\frac{१}{२}$  $\times$ ६ रत्न । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-प्राचारशास्त्र । १० काल- $\times$  । ले० काल-स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल- $\times$  । वे० स० ८५६ । अ भण्डार ।

६८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल- $\times$  । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

६८५ प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल- $\times$  । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ प्रति स० ५ । पत्र स० ६३ । ले० काल-स० १८३० पीप सुदी २ । वे० स० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचंद के दिव्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७ प्रति स० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-स० १८५६ कातिक बुदी ३ । वे० स० १०१ ।

ब भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की था ।

६८८ प्रति स० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ ।

ब भण्डार ।

६८९ मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३० मे ६३ । प्रा० १० $\times$ ८ रत्न । भाषा-हिन्दी ।

विषय-प्राचार शास्त्र । १० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

६६९ प्रति सं० ६। पत्र सं० ७। ले. काल-सं० १२६४। पत्र सं० १२६४। पत्र सं० १२६४। पत्र सं० १२६४।

६७० प्रति सं० ७। पत्र सं० ४। ले. काल-सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२।

विशेष-बर्तित निष्कर्षात् है:-

सं० १२७२ वर्षे महात्मा बर्तित २२ पर्यन्तवारे देतोका लागे। धी मुनसर्गे वरिष्ठविलालेन विघर्षिते।

६७३ प्रति सं० ७। पत्र सं० ६। ले. काल-सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२।

विशेष-१६ बर्तित पत्र नष्टे है।

६७४ महात्मासंग-कुलमुनि। पत्र सं० २६। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-  
वर्ग। काल-सं० १७६२। पत्र सं० १२६। पत्र सं० १२६। पत्र सं० १२६। पत्र सं० १२६।

विशेष-बीतवा पत्र नष्टे है।

६७५ प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले. काल-सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२। पत्र सं० १२७२।

६७६ प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले. काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

विशेष-अति संस्कृत टीका नष्टे है।

६७७ प्रति सं० ४। पत्र सं० १। ले. काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

विशेष-नष्टे २ संस्कृत में धर्म धी विवे है।

६७८ महात्मासंग-१ वायव्ये। पत्र सं० २७। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-  
वर्ग। काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

६७९ प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले. काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

विशेष-१ वायव्ये की पूर्ण प्रकृति की हुई है। २ अक्षरों का निष्कर्ष है। पत्र के एक पत्ती के धर्म  
पत्र है। प्रति प्राचीन है।

६८० महात्मासंग-१। पत्र सं० १४। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-वर्ग।  
काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

विशेष-अति प्राचीन है। १४ में बर्तित पत्र नष्टे है।

६८१ अक्षरसंग-१। पत्र सं० १। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-वर्ग।  
काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

६८२ अक्षरसंग-१। पत्र सं० ११। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-  
वर्ग। काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

६८३ अक्षरसंग-१। पत्र सं० १। या १२४२५ इत्ये। ज्ञाना-संगे। विप-  
वर्ग। काल-सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२। पत्र सं० १७७२।

६७४ प्रति म० २ । पत्र स० १७० । ले० काल- $\times$  । वे० म० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२८ । वे० म० ६६४ । च भण्डार ।

६७६ प्रति स० ४ । पत्र स० ३७ मे १०५ । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं है । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७ मित्यात्वयटन । पत्र स० १७ । ग्रा० ११ $\times$ ५ टट्ट । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।

१० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० म० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ मे आगे पत्र नहीं है ।

६७८ प्रति म० ७ । पत्र म० ११० । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । ड भण्डार ।

६७९ मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र म० ३६८ । ग्रा० १२ $\times$ ५ $\frac{३}{४}$  टट्ट । भाषा-  
प्राकृत सम्भृत । विषय-आचार शास्त्र । १० काल- $\times$  । ले० काल-म० १८२६ मगतिर बुदी ११ । पूर्ण ।

वे० म० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८० प्रति म० ७ । पत्र स० ३७३ । ले० काल- $\times$  । वे० म० ५८० । क भण्डार ।

६८१ प्रति म० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० म० ५६८ । ख भण्डार ।

विशेष—५१ मे आगे पत्र नहीं है ।

६८२ मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२ $\frac{३}{४}$  $\times$ ६ टट्ट । भाषा-संस्कृत ।

विषय-आचारशास्त्र । १० काल- $\times$  । ले० काल-म० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिरिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३ प्रति स० ७ । पत्र सं० ८५ । ले० काल- $\times$  । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल- $\times$  । वे० म० ७७७ । च भण्डार ।

६८५ प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल- $\times$  । वे० म० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ प्रति स० ५ । पत्र म० ६३ । ले० काल-स० १८३० पीप बुदी २ । वे० स० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—५० चोखद के दिव्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७ प्रति स० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-म० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० स० १०१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वमुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८८ प्रति स० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ ।

अ भण्डार ।

६८९ मूलाचारभाषा—ऋषभदाम । पत्र म० ३० मे ६३ । ग्रा० १० $\times$ ८ टट्ट । भाषा-हिन्दी ।

विषय-आचार शास्त्र । १० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।



११० मूत्राचार भाषा—पत्र सं १ से ११। या १ ५×५ इञ्च। गत्या—द्विती। विष-  
पाचार धारण। र कल-×। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं ११७।

१११ प्रति स ०। पत्र सं १ से १ १५ के ११। या १ ३× इञ्च। गत्या—द्विती।  
विष-पाचार धारण। र कल-×। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं ११८। क नम्बर।

११२ प्रति सं ३। पत्र सं १ से ५१ १ १ के १। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं १।

११३ मौक्षपीडो—बमारसीदास। पत्र सं १। या ११२×११ इञ्च। गत्या—द्विती। विष-  
धर्म। र कल-×। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं ७११। क नम्बर।

११४ प्रति सं २। पत्र सं ४। ले कल-×। के सं १२। क नम्बर।

११५ शोकमार्गप्रकारक—प टोडरमण। पत्र सं १२१। या १२३× इञ्च। गत्या—द्विती  
(राजस्थानी) पत्र। विष-धर्म। र कल-×। ले कल-सं ११२४ गत्यस्य गुरी १४। पत्रुर्त्। के सं ११।  
क नम्बर।

विशेष—दू हाटी कर्मी के स्थान पर कुछ द्विती के बन्ध भी लिखे हुये हैं।

११६ प्रति स २। पत्र सं २३। ले कल सं ११२४। के सं १२४। क नम्बर।

११७ प्रति सं ३। पत्र सं २१२। ले कल-सं ११४। के सं ११२। क नम्बर।

११८ प्रति स ४। पत्र सं २१२। ले कल-सं ११। गत्यस्य गुरी १। के सं १।  
क नम्बर।

विशेष—आचूतल लक्ष्मी के प्रतिनिधि गराई थी।

११९ प्रति सं २। पत्र सं २२। ले कल-×। के सं १३। क नम्बर।

१ प्रति स ६। पत्र सं २७१। ले कल-×। के सं १३। क नम्बर।

१ १ प्रति स ७। पत्र सं ११ से २१६। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं १२१।  
क नम्बर।

१ २ प्रति स ८। पत्र सं १२३ के २२२। ले कल-×। पत्रुर्त्। के सं १६। क नम्बर।

१ ३ प्रति सं ६। पत्र सं १३१। ले कल-×। के सं १११। क नम्बर।

१००४ अतिदिनचर्चा—शैबसूरी। पत्र सं २१। या १ ३×४ इञ्च। गत्या—द्विती। विष-  
पाचार धारण। र कल-×। ले कल-सं १६६ गत्यस्य गुरी १। पत्रुर्त्। के सं ११९१। क नम्बर।

विशेष—धार्मिक पुस्तिका विषय प्रकार है—

इति श्री मुनिश्रीशिरोमणिश्रीशैबसूरीविधिगया अतिदिनचर्चा संसुर्त्।

प्रसिद्धः—सं १११ वर्षे श्रीमश्री सुलतके मन्त्रीश्रीमश्री श्रीमश्रीमश्रीश्रीमश्री श्रीमश्रीमश्रीश्रीमश्री  
श्री श्री १ विष्णुगण गुरीमरण विधिनि शोशनी कथन श्री सुभाषसूरी।

१ ०२ गत्याचार—या समुन्दि। पत्र सं १। या १२३×२३ इञ्च। गत्या—द्विती। विष-

मुनि धर्म वर्गन । २० काल-× । त्रै० काल-× । पूर्ण । वै० स० १२० । अ मण्डार ।

१००६ रत्नकरणदश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ७ । भा० १०३×५३ इत्य ।

नापा-सस्कृत । विषय—आचार धाम्प । २० काल-× । त्रै० काल-× । वै० स० २००६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । प्र य का नाम उपानकाध्याय तथा उपानकाचार भी है ।

१००७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । त्रै० काल-× । वै० स० २६४ । अ मण्डार ।

विशेष—कही कही सस्कृत में टिप्पणिया दी हुई है । १६३ प्लोक हैं ।

१००८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । त्रै० काल-× । वै० स० ६१२ । क मण्डार ।

१००९ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । त्रै० काल-स० १६३८ माह सुदी १० । त्रै० स०

१७६ । ख मण्डार ।

विशेष—कही २ सस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१० प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । त्रै० काल-× । वै० स० ६३० । ङ मण्डार ।

१०११ प्रति स० ६ । पत्र स० १४ । त्रै० काल-× । अपूर्ण । वै० स० ६३१ । ड मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२ प्रति स० ७ । पत्र स० ८८ । त्रै० काल-× । अपूर्ण । वै० स० ६३३ । ड मण्डार ।

१०१३ प्रति स० ८ । पत्र स० ३८-५६ । त्रै० काल-× । अपूर्ण । वै० स० ६३२ । ड मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४ प्रति स० ९ । पत्र स० १२ । त्रै० काल-× । वै० स० ६३४ । ङ मण्डार ।

विशेष—ग्रहाचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५ प्रति स० १० । पत्र स० ४० । त्रै० काल-× । वै० स० ६३५ । ङ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पद्मानाल सघी कृत टीका भी है । टीका स० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६ प्रति स० ११ । पत्र स० २६ । त्रै० काल-× । वै० स० ६३७ । ङ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१७ प्रति स० १२ । पत्र स० ८२ । त्रै० काल-स० १६५० । वै० स० ६३८ । ङ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८ प्रति स० १३ । पत्र स० १७ । त्रै० काल-× । वै० स० ६३९ । ङ मण्डार ।

१०१९ प्रति स० १४ । पत्र स० ३८ । त्रै० काल-× । अपूर्ण । वै० स० २६१ । च मण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । सस्कृत में सामान्य टीका भी हुई है ।

१०२० प्रति स० १५ । पत्र स० २० । त्रै० काल-× । अपूर्ण । वै० स० २६२ । च मण्डार ।

१०२१ प्रति स० १६ । पत्र स० ११ । त्रै० काल-× । वै० स० २६३ । च मण्डार ।

१०२२ प्रति स० १७ । पत्र स० ९ । त्रै० काल-× । वै० स० २६४ । च मण्डार ।

- १०२३ प्रति स० १८ । पत्र नं १३ । ले कल- $\times$  । के तं २१२ । क मन्थार ।
- १ ०४ प्रति स १३ । पत्र नं ११ । ले कल-२ । के तं ७४ । क मन्थार ।
- १ २ प्रति स २ । पत्र नं १३ । ले कल  $\times$  । के तं ७२२ । क मन्थार ।
- १ ०४ प्रति स ०१ । पत्र नं १३ । ले कल- $\times$  । के तं ७२३ । क मन्थार ।
- १ २५ प्रति स १० । पत्र नं १ । ले कल- $\times$  । के तं ११ । क मन्थार ।
- १ ८ प्रति स ३३ । पत्र नं १ । ले कल- $\times$  । के तं १४४ । क मन्थार ।
- १ ६ प्रति स २४ । पत्र नं १६ । ले कल- $\times$  । पूर्ण । के तं ६२ । क मन्थार ।
- १ २ प्रति स० ३५ । पत्र नं १९ । ले कल-नं १७११ म्हेतु मुदी १ । के तं १२ । क मन्थार ।

क मन्थार ।

१ ३१ रत्नकरबडवाककाचार दीक्ष-प्रभावन्द । पत्र नं ४३ । या १  $\times$  २२ इत्त । कल-  
 मन्थार । विषय-माचार काल । २ कल- $\times$  । ले कल-तं १ ९ भावत बुदी । पूर्ण । के तं १११ ।  
 क मन्थार ।

- १ ३० प्रति स २ । पत्र नं २२ । ले कल- $\times$  । के तं १ १३ । क मन्थार ।
- १ ३ प्रति स ३ । पत्र नं ३१-३३ । ले कल  $\times$  । पूर्ण । के तं ३ । क मन्थार ।
- १ ३४ प्रति स ४ । पत्र नं ३६-३९ । ले कल- $\times$  । पूर्ण । के तं ३९६ । क मन्थार ।

विषय-इतवा ताम जालावाकल टीका की है ।

- १ ३३ प्रति स ४ । पत्र नं ११ । ले कल- $\times$  । के तं ११६ । क मन्थार ।
- १ ३४ प्रति स ६ । पत्र नं ४८ । ले कल-नं १७०६ म्हेतु मुदी १ । के तं १७० । क मन्थार ।

क मन्थार ।

विषय-बटारक मुद्राक्रीमि की घटनाय के लक्षणक ज्ञानीय बीता बीधेयत लक्ष करतमती क  
 संघक मात्र कलबमता की भाषी लीडी के क व ही प्रतिबिम्बि कलकर काचार्य कलनीति के किम ह्यलीति के विने  
 कर्मभव विपिन सेट की ।

१ ३५ रत्नकरबडवाककाचार-वं सदासुख कासलीवाक । पत्र नं १ ४२ ।  
 या १  $\times$  इत्त । कल-स्त्री (कव) । विषय-माचार काल । २ कल नं ११२ नैव मुदी १४ ।  
 क कल नं ११४१ । पूर्ण । के तं ११३ । क मन्थार ।

विषय-क व २ केवती के है । १ से ४२३ तथा ४२६ से १ ४२ तक है । प्रति मुन्धर है ।

- १ ३६ प्रति स ३ । पत्र नं २९६ । ले कल- $\times$  । पूर्ण । के तं १२ । क मन्थार ।
- १ ३६ प्रति स ३ । पत्र नं २९६ । ले कल- $\times$  । पूर्ण । के तं १४२ । क मन्थार ।
- १ ४ प्रति स ४ । पत्र नं ४११ । ले कल-भास्वोय बुधि तं ११२१ । के तं १९९ । क मन्थार ।

क मन्थार ।

१ ४७ प्रति स ३ । पत्र नं ३१ । ले कल- $\times$  । पूर्ण । के तं ६०० । क मन्थार ।  
 विषय-कैवीचैव कलक कले के विद्या कीर कलमुक्ती केवतानी विद्याया-भू कल के विद्या ह्या है ।

१०४० प्रति स० ६ । पत्र स० ३४६ । ले० काल-× । वै० स० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—“इस प्रकार मूलग्रथ के प्रमाद तै सदामुखदास डेडाका का अग्ने ह्मन तै लिखि ग्रथ समाप्त किया ।”

अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति स० ७ । पत्र स० २२१ । ले० काल-स० १६६३ कार्तिक बुदी ५५ । वै० स० १६८ ।

छ भण्डार ।

१०४४ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३६ । ले० काल-स० १६५० वैशाख सुदी ६ । वै० स० ।

झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्रथ की प्रतिलिपि स्वयं मदामुखजी के हाथ में लिखे हुये स० १६१६ के ग्रथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है । महामुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५ रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र स० २६ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६२० माघ सुदी ६ । ले० काल-× । वै० स० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल-× । वै० स० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल-× । वै० स० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८ रत्नकरण्डश्रावकाचार—सधी पन्नालाल । पत्र स० ४४ । भा० १०<sup>३</sup>×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६३१ पीप बुदी ७ । ले० काल-स० १६५३ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वै० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल-× । वै० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०५० प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल-× । वै० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल-× । वै० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२ रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा । पत्र स० १०१ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वै० स० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३ प्रति स० २ । पत्र स० ७० । ले० काल-स० १६५३ । वै० स० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल-× । वै० स० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५ प्रति स० ४ । पत्र स० २८ में १५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वै० स० ६१० । छ भण्डार ।

१०५६ रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र स० ४ । भा० ११<sup>२</sup>×८<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सरकुत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वै० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ —

सर्वज्ञ सर्ववाणीश वीर मारमदायह ।

प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥



नारं कर्मवर्णनार्थं यथा च्योतिरेवपरि ।

अनेकतन्त्रं यदे तदर्थं कर्म नरा ॥२॥

वर्तितय—यो विधे पठति धीमन् एतन्नाविद्यापरा ।

समुद्रवरसो हृतं विद्यकोटिज्जातुवन् ॥

इति श्री गणपतयज स्वामी विष्णु विद्यकोट्याचार्य विद्विषिता एतन्ना विद्याया ।

१०२० प्रति स ० । पत्र सं ३ । ले कल-× । पुरी । के सं २११२ । अ मन्वार ।

१०२१ एमन्सार—कुम्भकुम्भाचार्य । पत्र सं १ । भा १३×२२ इज्ज । भावा-मन्वार ।

विष्णु-भावा मन्वार । र कल-× । ले कल-त १५५१ । पुरी । के सं २४६ । अ मन्वार ।

१०२२ प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले कल-× । के सं ११ । अ मन्वार ।

१०६ रात्रि मोक्षन स्वाग कर्मान— । पत्र सं १६ । भा १९×४ इज्ज । भावा-शुक्ली ।

विष्णु-भावा मन्वार । र कल-× । ले कल-× । पुरी । के सं ४५ । अ मन्वार ।

१०९ रामा वग्मोक्षस्य— । पत्र सं १ । भा १२×६ इज्ज । भावा-मन्वार । विष्णु-वर्न ।

र कल-× । ले कल-× । पुरी । के सं ११११ । अ मन्वार ।

११० शिवविद्याग मन्वार— । पत्र सं ११ । भा १३×७ इज्ज । भावा-मन्वार । विष्णु-

भावा मन्वार । र कल-× । ले कल-× । पुरी । के सं २७ । अ मन्वार ।

११३ कुम्भकुम्भाचार्य पाठ— । पत्र सं २ । भा १३×७ इज्ज । भावा-मन्वार । विष्णु-वर्न ।

र कल-× । ले कल-सं ११४ । पुरी । के सं २२१ । अ मन्वार ।

विष्णु-वर्न—

११४ पत्रस्य पुरी १२ सने कुम्भी गये विद्यमान भोत्याने विष्णु श्री देवेन्द्रकति भावात्त एतौत्र के पदु स्ववं ह्येति ।

११४ प्रति स २ । पत्र सं १ । ले कल-× । के सं १२४१ । अ मन्वार ।

११३ प्रति सं ३ । पत्र सं १ । ले कल-× । के सं ११२ । अ मन्वार ।

११६ कुम्भकुम्भाचार्य— । पत्र सं ३ । भा ११×२३ इज्ज । भावा-मन्वार-शुक्ली । विष्णु-वर्न । र कल-× । ले कल-× । पुरी । के सं ६४ । अ मन्वार ।

११७ खात्रीविद्या—एतन्ना । पत्र सं ७ । भा ११×२ इज्ज । भावा-मन्वार । विष्णु-भावा मन्वार । र कल-सं ११४१ । ले कल-× । पुरी । के सं ५५ ।

११८ प्रति सं २ । पत्र सं ७३ । ले कल-सं ११७ विद्यमान पुरी— । पत्र सं २ । पत्र सं ११२ । अ मन्वार ।

११९ प्रति स २ । पत्र सं २२ । ले कल-सं ११७ मन्वार पुरी ३ । के सं ११६ । अ मन्वार ।

विशेष—महात्मा दानूनाभ ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७० धननाभि चक्रवर्ति की भाषना—भूतदाम । पत्र सं० २ । मा० १०८५ इक्ष । भाषा-

हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । २० काल-× । ने० काल-× पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण में है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ने० काल-सं० १८८८ पीप मुदी २ । वे० सं० ६७२ ।

अ भण्डार ।

१०७२. धनस्पतिमत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । मा० १०४४ इक्ष । भाषा-प्राकृत ।

विषय-धर्म । २० काल-× । ने० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३ धमुनिदिश्रावकाचार—आ० धमुनिदि । पत्र सं० ७६ । मा० १०३४ इक्ष । भाषा-

प्राकृत । विषय-प्राकृत धर्म । २० काल-× । ने० काल-सं० १८६२ पीप मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम नाम उगमनाथ्यवा भी है । जयपुर में श्री विरामदाम बातनीवान ने प्रतिलिपि करायी ।

मंसून में भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ ने २३ । ने० काल-सं० १६६१ पीप मुदी ६ । अपूर्ण ।

वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—मारगपुर नगर में पाण्ड दास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ने० काल-सं० १८७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ ।

क भण्डार ।

विशेष—महात्मा दानूनाभ ने मवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी । गाथाओं के नीचे गरुड टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ने० काल-× । वे० सं० ८७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ने० काल-× । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

१०७८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ने० काल-सं० १५६८ भादवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रगस्ति—सवत् १५६८ वर्षे भादवा बुदी १२ शुक्र दिने पुष्यनक्षत्रे ममृतमिद्धिनाम उपयोगे श्रीपथस्वामे मूलसधे सरस्वतीगच्छे बलास्वारगणे श्री बुन्दकुदाधार्यान्वये भट्टारके श्री प्रभावन्ददेवा तस्य शिष्य महलाचार्य धर्मकीर्ति द्वितीय महलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये महलाचार्य श्री धर्मकीर्ति तत् शिष्य मुनि धीरनदिने उद दास्य निखापित । प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्श्वनाथ (सोनियो) के मंदिर में चढाया ।

१०७९ धमुनिदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । मा० १२३४ इक्ष । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल-सं० १६३० कार्तिक बुदी ७ । ने० काल-सं० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

१८ प्रति सं० २। ने काल तं १११। ने तं १११। क म्प्यार।

१८१ वाचांसमह—। पत्र तं २२ से १७। पा १०२११ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८२ वाचांसमह—। पत्र तं २२ से १७। पा १०२११ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८३ वाचांसमह—। पत्र तं २२ से १७। पा १०२११ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।

विशेष—द्विणी धर्म कल्पित है। ४ म्प्याय तक है।

१८८३ प्रति सं २। पत्र तं ३२२। ने काल ×। म्पुर्ण। ने सं २४। ह म्प्यार।

विशेष—प्रति द्विणी धर्म कल्पित है। पत्र काल से नहीं है धीर विपत्ते ही बीच के पत्र नहीं है। दो प्रतिभों का विषय है।

१८८४ विद्वज्जननोपक भाषा—संधी पञ्चाहास्य। पत्र तं १। पा १४०६ ह्य। मत्ता-  
 संसृत द्विणी। विपद-वर्ष। १८८५ वाच मुदी २। ने काल ×। म्पुर्ण। ने सं १७०।  
 क म्प्यार।

१८८६ प्रति सं २। पत्र तं ३४३। ने काल तं ११४२ पाञ्चोय मुदी ४। ने सं १७०।  
 क म्प्यार।

विशेष—प्राकृतकाल का के पुत्र कल्पकाल ने धारी कालानी के कालीयान के कल्पकाल में काल कल्पित  
 कीकाल कालकालानी के के कल्पना। काल काल के विपरीतकाल के मन्त में किया है।

१८८७ विद्वज्जननोपकटीका—। पत्र तं ४४। पा ११२०० ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८८८ वाचांसमह—। पत्र तं ४४। पा ११२०० ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८८९ वाचांसमह—। पत्र तं ४४। पा ११२०० ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।

विशेष—जनककाल के पात्रों कालात तक है।

१८९० विपेकविज्ञास—। पत्र तं १। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८९१ वाचांसमह—। पत्र तं १। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८९२ वाचांसमह—। पत्र तं १। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।

१८९३ वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८९४ वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८९५ वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।

१८९६ प्रति सं २। ने काल ×। ने सं २१२२। ह म्प्यार।

१८९७ प्रति सं ३। ने काल ×। ने सं २१२३। ह म्प्यार।

१८९८ वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १८९९ वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।  
 १९०० वाचांसमह—। पत्र तं ११। पा ११३०२ ह्य। मत्ता-द्विणी। विपद-वर्ष।

१९०१ प्रति सं ३। पत्र तं १४। ने काल ×। ने सं ११२३। ह म्प्यार।

## धर्म एवं आचार शास्त्र ]

१०६३. पृष्ठप्रतिकल्पण । पत्र सं० ३१ । पृ० १०३/१०६ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । २० काल । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

१०६४. प्रती के नाम । पत्र सं० ११ । पृ० ६६/६८ डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । २० काल । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रतनामावली । पत्र सं० १२ । पृ० ६६/६८ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । २० काल सं० १६०५ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

१०६६. प्रतसंग्रह । पत्र सं० ५ । पृ० ६१/५७ डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । २० काल > ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ प्रता सं० ६१ मठन विधान के नाम दिखे हुये हैं ।

१०६७. प्रतमार । पत्र सं० १ । पृ० १०७/८ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । २० काल । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वेचन २० पद्य हैं ।

१०६८. प्रतोपापनश्रायकाचार । पत्र सं० ११३ । पृ० १३५/७ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल X । ले० काल / । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

१०६९. प्रतोपवामरर्णन । पत्र सं० ५७ । पृ० १०५/५ डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल / । ले० काल / । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—५७ में धाम के पद्य नहीं हैं ।

११००. प्रतोपवामरर्णन । पत्र सं० ४ । पृ० १२५/६ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल / । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

११०२. पट्टश्रावश्यक ( लघुसामायिक )—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल X । ले० काल सं० १६६० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

११०३. पट्टश्रावश्यकत्रिधान—पद्मलाल । पत्र सं० १४ । पृ० १८७/७३ डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-प्राचार शास्त्र । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६३४ । वेदाम बुकी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७८८ । अ भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३२ । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल X । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बाधन के तृतीय व पञ्चम उल्लास वा हिन्दी अनुवाद है ।



११६. पद्मसौम्यैश्वर्यमाज्ञा (सुकुम्भोत्पत्त) — महाकवि अमरकीर्ति । पत्र सं १६७१ ।  
 भा १ १/२ × १/२ इञ्च । आना-मात्र ४ । विषय-आचार आत्म । र काल सं १२४० । के काल सं १६९२ वीम  
 मुनी ११ । के सं ३२६ । अ मन्थार ।

विशेष—नालपुर नगर में कश्चित्कालम्बव पाठशालावस्थिते श्रीमतीहरायने के कवि प्रतिलिपि बरवाली थी ।

११७. पद्मसौम्यैश्वर्यमाज्ञामाषा — पांडे काकाकन्द । पत्र संख्या १२९ । भा १२×९ इञ्च ।  
 आना-हिन्दी । विषय-आचार आत्म । र काल सं ११ । भाग मुनी ३ । के काल सं १५४६ आठे १० ३  
 भाग भा मुनी १ । पूर्ण । के सं ४२६ । अ मन्थार ।

विशेष—श्यापी रीकटण्ड के महान्ना बुरा के बन्दुर में प्रतिलिपि बरवाली ।

११८. प्रति स २ । पत्र सं १२५ । के काल सं १६६ भाग मुनी ६ । के सं ६० । अ मन्थार ।

विशेष—मुम्बई में सदाशुभ दिल्लीवाली की है ।

११९. पद्मसहननकर्त्तव्य — मकरन्द पद्यावधि पुरबाह । पत्र सं । भा १ १/२ × १/२ इञ्च ।  
 आना-हिन्दी । विषय-धर्म । र काल सं १७ १ । के काल × । पूर्ण । के सं ७१२ । अ मन्थार ।

१११. पद्मसहननकर्त्तव्य — । पत्र सं २३६ २९ । भा १२×२ १/२ इञ्च । आना-नैसर्ग । विषय-  
 धर्म । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ९९६ । अ मन्थार ।

११११. पौडराक्षरस्यमाषनाधर्मेनवृत्ति — वं शिलशिवकृष्ण । पत्र सं ४६ । भा ११×२ इञ्च ।  
 भाग प्रसन्न नैसर्ग । विषय-धर्म । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं २ ४ । अ मन्थार ।

१११२. पौडराक्षरस्यमाषनाधर्मेनवृत्ति — व सदाशुभ । पत्र सं । भा १२×७ इञ्च । आना हिन्दी वक् ।  
 विषय-धर्म । र काल × । के काल × । के सं ९६ । अ मन्थार ।

विशेष—एकपरकम्बलपत्राचार आना में है ।

१११३. पौडराक्षरस्यमाषनाधर्मेनवृत्ति — लघुमहा । पत्र सं २ । भा ११ × ७ १/२ इञ्च । आना-  
 हिन्दी । विषय-धर्म । र काल सं १२२३ भाग मुनी ४ । के काल × । पूर्ण । के सं ७१६ । अ मन्थार ।

१११४. प्रति सं २ । पत्र सं १४ । के काल × । के सं ७४२ । अ मन्थार ।

१११५. प्रति सं ३ । पत्र सं १४ । के काल × । के सं ७४६ । अ मन्थार ।

१११६. प्रति सं ४ । पत्र सं १ । के काल × । पूर्ण । के सं ७२ । अ मन्थार ।

१११७. पौडराक्षरस्यमाषनाधर्मेनवृत्ति — । पत्र सं ६४ । भा ११ २/२ × २ १/२ इञ्च । आना-हिन्दी । विषय-  
 धर्म । र काल × । के काल सं १६६३ वर्तमान मुनी १४ । पूर्ण । के सं ७२३ । अ मन्थार ।

विशेष—नामजाना व्यक्त के प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं ० । पत्र सं ११ । के काल × । के सं ७२४ । अ मन्थार ।

१११६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ७७५ । ङ भण्डार ।

१११७ प्रति स० ४ । पत्र स० ३० । ले० वाल × । मपूर्णा । वे० स० ६६ ।

विशेष—३० मे आगे पत्र नहीं है ।

११२१ षोडशकारणभावना । पत्र स० १७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$  × ७ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भापा—प्राकृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सवेत भी दिये हैं ।

११२२ शीलनववाङ् । पत्र स० १ । आ० १० × ४ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना-

काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १२२६ । छ भण्डार ।

११२३ श्राद्धपद्धिकर्मणसूत्र । पत्र स० ६ । आ० १० × ४ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भापा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—प० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४ श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र स० ५० । आ० ११ $\frac{३}{४}$  × ७ इच्छ । भापा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १६३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भापा की गयी थी ।

११२५ प्रति स० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । क भण्डार ।

११२६ श्रावकधर्मवर्णन । पत्र स० १० । आ० १० $\frac{३}{४}$  × ५ इच्छ । भापा—संस्कृत । विषय—श्रावक-

धर्म । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ३४६ । च भण्डार ।

११२७ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३४७ । च भण्डार ।

११२८ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र स० २५ । आ० १० $\frac{३}{४}$  × ५ इच्छ । भापा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८२३ भासोज बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुवमीजीवरण ने अहिपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

११२९ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र स० १५ । आ० १२ × ६ इच्छ । भापा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

११३० श्रावकप्रायश्चित्त—धीरसेन । पत्र स० ७ । आ० १२ × ६ इच्छ । भापा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १६३४ । पूर्णा । वे० स० १६० ।

विशेष—प० पद्मलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११ ६ पट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या ( हृत्कर्मोपदेश )—महाकर्मि अमरकीर्ति । पत्र नं ३ के ७१ ।  
 पा १ ५ × ६ इञ्च । चर्म—मांस घ । विषय—आचार काल । र काल तं १२५७ । के काल तं १२२२ चर्म  
 मुठी १३ । के नं ३२६ । अ नम्ब्यार ।

विशेष—मांसपुर मन्त्रसे कर्मोपदेशात्मक पत्रकीनीचमाले कीवतीहरणसे के कर्मकी प्रतिमिति करवायी थी ।

११०७. पट्टकर्मोपदेशरत्नमय्यामाषा — पाँडे झाङ्कणम् । पत्र संख्या १२६ । पा १२×६ इञ्च ।  
 चर्म—हिन्दी । विषय—आचार काल । र काल तं ११ मास मुठी २ । के काल तं १२५६ काँके १७ र  
 मासका मुठी २ । पूर्ण । के तं ५२६ । अ नम्ब्यार ।

विशेष—अष्टाशती वैषकण्ड के मूत्रमा मुटा के कस्तुर के प्रतिमिति करवायी ।

११ ८ प्रति स २ । पत्र नं १२५ । के काल तं १२६६ मास मुठी ६ । के तं ६७ । अ नम्ब्यार ।

विशेष—गुणक पं कणामुक्त दिलीचर्मों की है ।

११ ९. पट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—मकरण्ड पद्यावति पुरवाण । पत्र तं ५ । पा १ ५ × ५ इञ्च ।  
 चर्म—हिन्दी । विषय—चर्म । र काल तं १७ ६ । के काल × । पूर्ण । के तं ७१६ । अ नम्ब्यार ।

१११ पट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—। पत्र नं २२ के २६ । पा १२×२ इञ्च । चर्म—संस्कृत । विषय—  
 चर्म । र काल × । के काल × । पूर्ण । के तं २६६ । अ नम्ब्यार ।

११११ पोट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—पं शिवाशिवकण्ड । पत्र ७ ५६ । पा १२×२ इञ्च ।  
 चर्म—संस्कृत । विषय—चर्म । र काल × । के काल × । पूर्ण । के तं २ ४ । अ नम्ब्यार ।

१११२ पाट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—पं सदासुख । पत्र तं । पा १२×७ इञ्च । चर्म—हिन्दी चर्म ।  
 विषय—चर्म । र काल × । के काल × । के तं २६ । अ नम्ब्यार ।

विशेष—उत्तररत्नमय्याआचार चर्म के से है ।

१११३ पोट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—सकमल । पत्र तं २५ । पा १२×७ इञ्च । चर्म—  
 हिन्दी । विषय—चर्म । र काल तं १६२२ मास मुठी ५ । के काल × । पूर्ण । के तं ७१६ । अ नम्ब्यार ।

१११४ प्रति स ३ । पत्र नं २४ । के काल × । के तं ७५६ । अ नम्ब्यार ।

१११५ प्रति स ३ । पत्र नं २४ । के काल × । के तं ७५६ । अ नम्ब्यार ।

१११६ प्रति स ४ । पत्र नं १ । के काल × । पूर्ण । के तं ७२ । अ नम्ब्यार ।

१११७ पाट्टकर्मोपदेशरत्नमय्या—। पत्र नं २४ । पा १२×२ इञ्च । चर्म—हिन्दी । विषय—  
 चर्म । र काल × । के काल नं १६६६ कर्मिक मुठी १४ । पूर्ण । के तं ७२३ । अ नम्ब्यार ।

विशेष—राजमार्ग माल के प्रतिमिति की थी ।

१११८. प्रति स ७ । पत्र नं २१ । के काल × । के तं ७२४ । अ नम्ब्यार ।

११४१. प्रति स० ३ । पत्र म० ५ । ले० काल स० १८८४ प्रापाठ बुदी २ । वे० म० ८३ । च भण्डार  
११४२. प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८०४ । भादवा मुदी ६ । वे० म० १०२ ।

छ भण्डार ।

११४३. प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल ७ । वे० स० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल ४ । वे० स० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

भाषाशास्त्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति स० ७ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५५ । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—प० भागचन्द्र । पत्र स० १८६ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—भाषाशास्त्र । २० काल स० १६२२ प्रापाठ बुदी ८ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २८ ।

विशेष—प्रतिगति श्रावकाचार का भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार । पत्र सख्या १ से २१ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—भाषाशास्त्र ।

२० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसमें भाषा के पत्र नहीं हैं ।

११४९. श्रावकाचार । पत्र स० ७ । ग्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—भाषाशास्त्र ।

२० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० म० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—६० गायत्री हैं ।

११५०. श्रावकाचारभाषा । पत्र स० ५२ में १३१ । ग्रा० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

भाषाशास्त्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति स० ७ । पत्र स० ३ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० म० ६६६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति स० ३ । पत्र स० १११ से १७४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ७०६ । छ भण्डार ।

११५३. प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल म० १६६४ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ७८० ।

ड भण्डार ।

विशेष—शृणुभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । सबत् १५२६ चैत बुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैमिहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति में यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ६८२ । च भण्डार ।

११३१ आचक्षार—अमिष्टिगति । पत्र सं २७ । या ११×२ इक्ष । आया-संस्तुत । विपन-  
आचार धारण । र कल × । ले कल × । पूर्ण । के सं १२४ । अ नम्भार ।

विशेष—बड़ी बड़ी संस्तुत के टीका भी है । अथ वा नाम उपतथाचार भी है ।

११३० प्रति सं २ । पत्र सं १६ । ले कल × । अर्जुन । के सं ४४ । अ नम्भार ।

११३३ प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ले कल × । अर्जुन । के सं १४ । अ नम्भार ।

११३४ आचक्षार—कमालाामी । पत्र सं ३३ । या ११×२ इक्ष । आया-संस्तुत । विपन-  
आचार धारण । र कल × । ले कल × । पूर्ण । के सं १२ । अ नम्भार ।

११३६ प्रति सं २ । पत्र सं ३० । ले कल सं १२९६ अथवा नुरी २ । के सं १२ । अ  
नम्भार ।

११३६ आचक्षार—गुरुमूपलाआच । पत्र सं २१ । या १३×४२ इक्ष । आया-संस्तुत ।  
विपन-आचार धारण । र कल × । ले कल सं १२९२ बीबाळ नुरी ४ । पूर्ण । के सं १३ । अ नम्भार ।

विशेष—प्रशस्ति

अथ १२९२ वर्षे बीबाळ नुरी ४ श्री गुरुदेवे कलत्राएवले अस्सवतीअन्हे श्री गुरु गुरु आचार्यअन्हे अ  
भी पयसि देवतएवले अ श्री गुरुअन्हे देवतएवले अ श्री विपनअन्हे देवतएवले अ श्री अचक्षरदेवा अथान्हे  
अद्विजबलाअन्हे अ श्री के सं परवत अथ आर्मा टीहाअनुन गेवा अथ आर्मा आर्देवे । अथुन अद्विज अथ आर्मा  
अमरी नुरीअ पुन अर्मा अथ आर्मा दोरवी अनुन अथअ नुरीअ बीबा अ अर्दिव नुराअ अर्थाअन्हे अर्दिवअ  
अथान्हे अर्दिवअनिर्मा आचक्षार । अथिवा अथअतिअथिवा आर्दिव अथअनिर्मा ।

११३७ प्रति सं २ । पत्र सं ११ । ले कल सं १२९६ अथवा नुरी १ । के सं २१ । अ  
नम्भार ।

अथअति—अथ १२९६ वर्षे अथअ १ अथी श्री गुरुदेवे अ श्री विपनअन्हे अ अर्दिव अर्दिवअथान्हे  
अ अथअ आर्मा अथी पुन अथअ अथअ ।

११३८ आचक्षार—अमिष्टिगति । पत्र सं २ ते २६ । या १३×२ इक्ष । आया-संस्तुत । विपन-  
आचार धारण । र कल × । ले कल × । अर्जुन । के सं २१७ ।

विशेष—३६ के आने श्री पत्र नुरी है ।

११३६ आचक्षार—गुरुमूपला । पत्र सं १ । या ६ × १ इक्ष । आया-संस्तुत । विपन-आचार  
धारण । र कल × । ले कल सं १२४ बीबाळ नुरी ३ । पूर्ण । के सं १२ । अ नम्भार ।

विशेष—अथ वा नाम उपतथाचार तथा अथअथअथअ भी है ।

११४० प्रति सं २ । पत्र सं ११ । ले कल सं १ बीबाळ नुरी १२ । के सं १३ । अ  
नम्भार ।

११४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८८४ आषाढ सुदी २ । वै० स० ४३ । च भण्डार

११४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८०४ । भाद्रपद सुदी ६ । वै० स० १०२ ।

छ भण्डार ।

११४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वै० स० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५ श्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र स० ६६ । आ० ८३×६३ इच्छ । भाषा—सम्बृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६ प्रति स० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५५ । वै० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ श्रावकाचारभाषा—प० भागचन्द्र । पत्र स० १८६ । आ० १२×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल स० १६२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २८ ।

विशेष—अभिहित श्रावकाचार की भाषा टीका हैं । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८ श्रावकाचार । पत्र सख्या १ मे २१ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—सम्बृत । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नहीं हैं ।

११४९ श्रावकाचार । पत्र स० ७ । आ० १०३×४३ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—आचारशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गायत्रि हैं ।

११५० श्रावकाचारभाषा । पत्र स० ५२ मे १३१ । आ० ६३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ६६६ । क भण्डार ।

११५२ प्रति स० ३ । पत्र स० १११ से १७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ७०६ । ड भण्डार ।

११५३ प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६६४ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वै० स० ७१० ।

ड भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण वृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । सन् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह  
ग्रन्थ जिहानाबाद जैमिंहपुरा मे लिखा गया था । उस प्रति मे यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४ प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ६८२ । च भण्डार ।

११२४. सुतशान्तर्येण । पत्र नं ५। पा ११ × ७, इत्य । भाषा—हिन्दी । विपक—वर्ष । १

नाम ×। मे नाम ×। पूर्ण। के नं ७१। क मन्वार ।

११२५ प्रति स २। पत्र नं ५। मे नाम ×। के नं ७२। क मन्वार ।

११२६ समस्तशोभीगमिणा— । पत्र नं २। पा २ × ४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विपक—वर्ष । १

नाम ×। मे नाम ×। पूर्ण। के नं १७२। क मन्वार ।

११२७ समकृतहास्य—वासकरण । पत्र नं १। पा २ × ४ इत्य । भाषा—हिन्दी । विपक—वर्ष ।

नाम ×। मे नाम नं १५१२। पूर्ण। के नं ११९६। क मन्वार ।

११२८. समुद्रावभेद— । पत्र नं ४। पा ११ × २ इत्य । भाषा—संस्कृत । विपक—द्विवार । १

नाम ×। मे नाम ×। पूर्ण। के नं ७५। क मन्वार ।

११६ सम्मोदशिक्षर महात्म्य—वीक्षित वैवदत्त । पत्र नं १। पा ११ × १ इत्य । भाषा—

मध्यम । १ नाम नं १६४२। मे नाम नं १ । पूर्ण। के नं १५२। क मन्वार ।

११६१ प्रति स २। पत्र नं १४७। मे नाम ×। के नं ७६६। क मन्वार ।

११६२. प्रति स ३। पत्र नं ४। मे नाम ×। पूर्ण। के नं ३७२। क मन्वार ।

११६३ सम्मोदशिक्षर महात्म्य—शास्त्रात्म्य । पत्र नं १२। पा ११ × २। भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विपक—वर्ष । १ नाम नं १५४२ फणुण सुदी २। मे नाम ×। पूर्ण। के नं १६। क मन्वार ।

विशेष—अनुराह षोडशतीति के दिव्य महात्म्य मे रवाही मे वरु रूप रचना की थी ।

११६४ सम्मोदशिक्षर महात्म्य—सम्मनुष्यात्म्य । पत्र नं १२। पा ११ × २ इत्य । भाषा—

हिन्दी । विपक—वर्ष । १ नाम ×। मे नाम नं १६४१ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण। के नं १२६। क मन्वार ।

विशेष—रचना शंकर सम्बन्धी होना—

नाम के अन्तिमके विषयवर्तु पुत्र नाम ।

यद्यपि मित वद्यमी सुत्रव नाम समाप्त इत्य ।।

लोहावर्ष विरचित मन्त्र की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति स २। पत्र नं १२। मे नाम नं १५५४ वैश्व सुदी १। के नं ७। क मन्वार ।

११६६ प्रति स ३। पत्र नं १२। मे नाम नं १ । वैश्व सुदी १४। के नं ७६६। क

मन्वार ।

विशेष—रवीन्द्रोत्सव की भाषा मे अच्युत मे प्रतिमिति की ।

११६७. प्रति स ४। पत्र नं १४१। मे नाम नं १६११ वैश्व सुदी २२। के नं २९। क

मन्वार ।

११६८. सम्मोदशिक्षरविक्राम—कशारीसिद्ध । पत्र नं ३। पा ११ × ७ इत्य । भाषा—हिन्दी ।

विपक—वर्ष । १ नाम नं की धाराही । मे नाम ×। पूर्ण। के नं ३६७। क मन्वार ।

११६६ सम्मोदशिखर विलास—देवान्नद्य । पत्र स० ४ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—धर्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७० ससारस्वरूप वर्णन । पत्र स० ७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—मस्युत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । ज भण्डार ।

११७१ सागारधर्मामृत—प० आगाधर । पत्र स० १६३ । आ० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—श्रावको के आचार धर्म या वर्णन । २० काल स० १२६६ । २० काल स० १७६६ भादवा बुदी ७ । पूर्ण ।

वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ मस्युत टीका सहित है । टीका का नाम न्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा मवाई

जयसिंहजी के शासनकाल में आगेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि री थी ।

११७२ प्रति स० २ । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७७ ।

रु भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ़ वाल ने मवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ७७४ । क भण्डार ।

११७४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति मस्युत टीका सहित है ।

११७५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—८ से ४० तक के पत्र किन्ही प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६ प्रति स० ६ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ७ । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७ प्रति स० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० स० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टिप्पणी टीका सहित है । रचयिता एव लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८ प्रति स० ८ । पत्र स० १८० । ले० काल × । वे० स० १ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव शुद्ध है ।

११७९ प्रति स० ९ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० स० १८ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पादे डीठा तेन इद धर्माश्रितनामोपाध्ययन आचार्य नेमिचन्द्राय दत्त । म० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य म० धर्मचन्द्राम्नाथे ।





११६१ प्रति म० २ । पत्र म० ४३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० १६३ । अ भण्डार ।  
विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २ । ले० काल × । वै० म० ७७६ । क भण्डार ।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र म० १० । आ० ११३×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल स० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वै० स० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४ प्रति म० २ । पत्र म० ६८ । ले० काल स० १८६१ । वै० स० ७७७ । अ भण्डार ।  
विशेष—उदयचन्द न प्रतिलिपि की थी ।

११६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वै० स० १०११ । अ भण्डार ।

११६७ प्रति म० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० म० ७७८ । क भण्डार ।

११६८ प्रति म० ६ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२० कार्तिक बुदी २ । वै० म० ६५ । अ  
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थार्थ विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९ सामायिक पाठ । पत्र स० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—  
धर्म । २० काल × । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वै० स० ८१४ । क भण्डार ।

१२०० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ बुदी ११ । वै० स० ८१५ । क  
भण्डार ।

१२०१ प्रति म० ३ । पत्र स० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—पद्यों का चूहो ने खालिया है ।

१२०२ प्रति म० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३६१ । अ भण्डार ।

१२०३ प्रति स० ५ । पत्र स० २ मे १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४ सामायिकपाठ ( लघु ) । पत्र स० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ३८८ । अ भण्डार ।

१२०५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वै० स० ३८६ । अ भण्डार ।

१२०६ प्रति म० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ७१३ । क । अ भण्डार ।

१२०७ सामायिकपाठभाषा—सुध महाचन्द । पत्र स० ६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ७०८ । अ भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६५४ माघन बुदी ३ । वै० स० १६४१ । क  
भण्डार ।

१२०६। सामाजिकपाठभाषा—अथर्वण्डु इत्यादि। पत्र नं २। या १२×२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—वर्ग। र काल ×। ले काल तं १११७। पूर्ण। के तं ७। अथर्वण्डु।

१२१। प्रति स २। पत्र नं ४५। ले काल नं ११३१। के तं ७८१। अथर्वण्डु।

१२११। प्रति स ३। पत्र नं ४६। ले काल ×। के तं ७९। अथर्वण्डु।

१२१२। प्रति स ४। पत्र नं ४६। ले काल ×। के तं ७९। अथर्वण्डु।

१२१३। प्रति स १। पत्र नं २१। ले काल नं ११७१। के तं ५१। अथर्वण्डु।

विषय—श्री केसरलाल घोषा ने बनपुर में प्रतिष्ठित की थी।

१२१४। प्रति स ६। पत्र नं ११। ले काल नं १८७४। काष्ठ। मुद्रा १। के तं ११। अथर्वण्डु।

१२१५। प्रति स ७। पत्र नं ४२। ले काल नं ११११। काष्ठ। मुद्रा १। के तं २६। अथर्वण्डु।

१२१६। सामाजिकपाठभाषा—य श्री सिद्धाकचन्द्र। पत्र नं १४। या ११×२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—वर्ग। र काल तं ११२। ले काल ×। पूर्ण। के तं ७१। अथर्वण्डु।

१२१७। प्रति स २। पत्र नं ७२। ले काल नं १११। काष्ठ। मुद्रा ११। के तं ७११। अथर्वण्डु।

१२१८। सामाजिकपाठ भाषा—। पत्र नं ४२। या ११×२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—वर्ग। र काल ×। ले काल तं १७१। काष्ठ। मुद्रा २। पूर्ण। के तं ११८। अथर्वण्डु।

विषय—बनपुर में महापात्रा अर्थविज्ञानी के आसनकाल में श्री नैणालार ठाकुरजी के प्रतिष्ठित की थी।

१२१९। प्रति स २। पत्र नं २। ले काल तं १७४। काष्ठ। मुद्रा ३। के तं ७८१। अथर्वण्डु।

विषय—महापात्रा आसनकाल काल जाने के प्रतिष्ठित की थी। संस्कृत धर्मशास्त्र का पर्व विषय हुआ है।

१२२। सामाजिकपाठ भाषा—। पत्र नं २। के १। या ११×२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—वर्ग। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के तं ११। अथर्वण्डु।

१२२१। प्रति स २। पत्र नं १। ले काल ×। के तं ११। अथर्वण्डु।

१२२२। प्रति स ३। पत्र नं १२। ले काल ×। पूर्ण। के तं ४८१। अथर्वण्डु।

१२२३। सामाजिकपाठभाषा—। पत्र नं १७। या २×२ इञ्च। भाषा—हिन्दी (दुबारी)

विषय—वर्ग। र काल ×। ले काल तं १७२। काष्ठ। मुद्रा १। के तं ११। अथर्वण्डु।

१८८५ मासमनुष्य—कुलभद्र । पत्र म० १५ । सा ११ ८६ १५ । भाग—मन्वन्त । विषय—धर्म ।

१८८६ मास म० १६०७ पीप मुदी ८ । पत्र म० १४६ । अ भण्डार ।

विषय—पञ्चासार्ध धर्म म० के विषय पत्रभाज बोलाय न मय की प्रतिनिधि नर्यायो भी ।

१८८७ मासमनुष्य शंका—मुनि रामसिंह । पत्र म० ८ । सा० १०६ ८८ १५ । भाग—मन्वन्त ।

विषय—मासवार पात्र । १० वात । १० वात । पत्र म० १०१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विषय—प्रति प्रति प्राधान्य ।

१८८८. सिद्धों का स्वरूप । पत्र म० ८८ । सा० १३ ३ १५ । भाग—विश्व । विषय—धर्म ।

१० वात । १० वात । पूर्ण । पत्र म० ८८८ । अ भण्डार ।

१८८९. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—ट्रेकचन्द्र । पत्र म० ४०५ । सा० १५५६ १५ । भाग—विश्व ।

विषय—धर्म । १० वात म० १८८८ मास म० मुदी ११ । पत्र म० १८६१ भाग म० मुदी । पूर्ण । पत्र म० ३१ ।

अ भण्डार ।

विषय—प्रा तम पत्र पटा हुआ है ।

१८८८ प्रति म० ८ । पत्र म० ८० । पत्र म० १०१ । पत्र म० ६६८ । अ भण्डार ।

१८८९ प्रति म० ३ । पत्र म० ६११ । पत्र म० १६४८ । पत्र म० ८९१ । अ भण्डार ।

१८९० प्रति म० ५ । पत्र म० ३२१ । पत्र म० १८६३ । पत्र म० ६२ । अ भण्डार ।

विषय—आमान मात न प्रतिनिधि की थी ।

१८९१ प्रति म० ५ । पत्र म० १०५ म १०३ । पत्र म० १०३ । पत्र म० १०३ । अ भण्डार ।

१८९२ प्रति म० ६ । पत्र म० १८६ । पत्र म० १२८ । अ भण्डार ।

१८९३ प्रति म० ७ । पत्र म० ५४५ । पत्र म० १८६८ प्रायोग मुदी ६ । पत्र म० ८६८ । अ भण्डार ।

अ भण्डार ।

विषय—२ प्रतिमा या मिश्रण है ।

१८९४ प्रति म० ८ । पत्र म० ५०० । पत्र म० १६६० पत्रिक मुदी ५ । पत्र म० ८६६ ।

अ भण्डार ।

१८९५ प्रति म० ९ । पत्र म० २०० । पत्र म० १०३ । पूर्ण । पत्र म० ३०० । अ भण्डार ।

१८९६ प्रति म० १० । पत्र म० ८२० । पत्र म० १६४६ चैत बुदी ८ । पत्र म० १०१ । अ भण्डार ।

अ भण्डार ।

१८९७ प्रति म० ११ । पत्र म० १३५ । पत्र म० १८३६ पत्रिक मुदी ८ । पत्र म० ८६६ । अ भण्डार ।

अ भण्डार ।

१८९८ सुदृष्टि तरंगिणीभाषा । पत्र म० ११५७ । सा० १०१५७ १५ । भाग—हिन्दी ।

विषय—धर्म । १० काल ५ । पत्र म० ८ । पूर्ण । पत्र म० ८६७ । अ भण्डार ।

१२३३. मोनगिरपचीसी—भागीरथ । पत्र सं ३ । पा २२×४३ इञ्च । जाला—हिन्दी । विपय—  
अर्थ । १ पत्र सं १ ११ नैष्ठ कुटी १४ । मे कल × । के सं १४० । छ मण्डार ।

१२३४. सोलहकारस्यमाचनार्थम—यं मनुसुख । पत्र सं ४६ । पा १२×८ इञ्च । जाला—  
हिन्दी । विपय—अर्थ । १ पत्र सं ११ । मे कल । पूर्ण । के सं ०२६ । छ मण्डार ।

१२३५. प्रति सं १ । पत्र सं २३ । मे कल < । के सं १ । छ मण्डार ।

१२३६. प्रति सं ३ । पत्र सं ३० । मे कल सं १२३० पत्रस कुटी ११ । के सं १ । छ  
मण्डार ।

विषय—अर्थात् अकुर में मनेतलाल पांख मे जाली के अन्धिर मे प्रतिमिति की थी ।

१२३७. प्रति सं ४ । पत्र सं ३१ मे ६१ । मे कल सं १२३० पत्रस कुटी ० । अर्णु । के सं  
११ । छ मण्डार ।

विषय—अर्थात् के ३ पत्र नहीं है । कुचराल पांख मे चरु मे प्रतिमिति की थी ।

१२३८. सोलहकारस्यमाचनार्थम दृष्टव्यस्य अर्थं वर्द्धन—यं मनुसुख । पत्र सं ११४ । पात्र  
१ ३ १ इञ्च जाला—हिन्दी । विपय—अर्थ । १ पत्र सं ११४ । मे कल सं १२४१ मंत्रित कुटी १३ । पूर्ण । के  
सं १४ । छ मण्डार ।

१२३९. स्वाध्यायार्थम् — । पत्र सं ६ । पा १२×६ इञ्च । जाला—महारा । विपय—अर्थ । १  
पत्र सं ११ । मे कल × । पूर्ण । के सं १ । छ मण्डार ।

विषय—विद्यार्थीवर्द्धन के अर्थ वाक वा अर्थ उचाल है । हिन्दी टीका सहित है ।

१२४०. स्वाध्यायार्थम् — । पत्र सं १ । पा ६×१३ इञ्च । जाला—ग्राह्य संस्कृत । विपय—अर्थ ।  
१ पत्र सं ११ । मे कल × । पूर्ण । के सं ३३ । छ मण्डार ।

१२४१. स्वाध्यायार्थम् — । पत्र सं ७ । पा ११×८ इञ्च । जाला—हिन्दी । विपय—  
अर्थ । १ पत्र सं ११ । मे कल × । पूर्ण । के सं ३४२ । छ मण्डार ।

१२४२. विद्यायार्थम् — । पत्र सं १६ । पा ११ ३ इञ्च । जाला—ग्राह्य । विपय—  
अर्थ । १ पत्र सं ११ । मे कल × । पूर्ण । के सं २२१ । छ मण्डार ।

१२४३. दृष्टव्यस्य अर्थं वर्द्धन—मनुसुख । पत्र सं ६ । जाला—हिन्दी । विपय—अर्थ । १  
पत्र सं ११ । मे कल सं १२३० । पूर्ण । के सं ३३२ । छ मण्डार ।

विषय—जाला कुनीक मे प्रतिमिति की थी ।

## विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२७० अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र स० १० । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ल० काल × । पूर्ण । वे० म० २० । क भण्डार ।

१२७१ प्रति स० २ । पत्र म० ६ । ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० म० ८ । क भण्डार ।  
विषय—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२७२ प्रति स० ३ । पत्र म० ६ । ले० काल म० १६३८ माघाद बुदी १० । वे० स० ८२ । ज  
भण्डार ।

विषय—पति संस्कृत टीका सहित है । विद्युध पत्तिलाल ने प्रतिनिधि की थी ।

१२७३ अध्यात्मपत्र—जयचन्द्र द्यावडा । पत्र म० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) ।  
पत्र १६वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १० । क भण्डार ।

१२७४ अध्यात्मवत्तीमी—वनारसीदास । पत्र म० २ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( पद्य ) ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३६६ । अ भण्डार ।

१२७५ अध्यात्म वारहखड़ी—कवि मूरत । पत्र म० १७ । आ० १६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी  
( पद्य ) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६ । ज भण्डार ।

१२७६ अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० १० ने २७ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—प्राचीन ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १०२३ । अ भण्डार ।

विषय—प्रति जीर्ण है । १ म ६ तथा २४-२७वा पत्र नहीं है ।

१२७७ प्रति स० २ । पत्र म० ८८ । ले० काल म० १६६३ । वे० म० ७ । क भण्डार ।

१२७८ अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द्र द्यावडा । पत्र म० ८३० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी  
( गद्य ) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल स० १८६७ भादवा बुदी १३ । वे० काल × । पूर्ण । वे० स० १३ । क भण्डार ।

विषय—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द ह ।

१२७९ प्रति स० २ । पत्र स० १७ ने २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १८ । क भण्डार ।

१२८० प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल > । वे० स० १५ । क भण्डार ।

१२८१ प्रति स० ४ । पत्र स० १०७ । ले० काल × । वे० स० १६ । क भण्डार ।

१२८२ प्रति स० ५ । पत्र म० ३३८ । ले० काल स० १८२६ । वे० स० १ । क भण्डार ।

१२८३ प्रति स० ६ । पत्र म० ४४१ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० २ । क भण्डार ।

१०६४ प्रति स ७ । पत्र नं १६२ । मे काल × । के नं ३ । अ नम्बर ।

१०६५ प्रति स ८ । पत्र नं १६३ । मे काल नं १६३६ घण्टीय बुटी १५ । के नं ३ । अ नम्बर ।

विवेक—८१ पर प्राचीन प्रति ३ । मे १२३ पर फिर विभाजे भवे ३ तथा १२४ न १६३ एक के पर विधी घन प्रति के ३ ।

१०६६ प्रति स ९ । पत्र नं २४१ । मे काल नं १६३९ घण्टीय बुटी १४ । के नं ३६ । अ नम्बर ।

१०६७ प्रति स १ । पत्र नं १६७ । मे काल × । के नं २ । अ नम्बर ।

१०६८ प्रति स ११ । पत्र नं १४२ । मे काल नं १ । मात बुटी १ । के नं ३४ । अ नम्बर ।

१०६९ आत्मध्यान—वनास्तीवास । पत्र नं १ । मा ५×४ इक । माता—हिन्दी (नव) । विषय—भाष्यपत्र । र काल × । मे काल × । के नं १२७९ । अ नम्बर ।

१०७० आत्मप्रबोध—कुमारकवि पत्र नं १३ । मा १ २×४५ इक । माता—संस्कृत । विषय—ग्रन्थम् । काल १ । मे काल × । पूर्ण । के नं २२ । अ नम्बर ।

१०७१ प्रति स ७ । पत्र नं १४ । मे काल × । के नं ३ (क) अ नम्बर ।

१०७२ आत्मसुबोधनकाव्य—पत्र नं २७ । मा १ × ४६ इक । माता—व्याकरण । विषय—व्याकरण । र काल × । मे काल × । पूर्ण । के नं १ २४ । अ नम्बर ।

१२७३ प्रति स १ । पत्र नं ३१ । मे काल × । पूर्ण । के नं ३५ । अ नम्बर ।

१२७४ आत्मसुबोधनकाव्य—ज्ञानमूक । पत्र नं २ मे ९ । मा १ × ५५ इक । माता—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र काल १ । मे काल × । पूर्ण । के नं १२ ७ । अ नम्बर ।

१२७५ आत्मसुबोधनकाव्य—वीचन्य काम्ठीबाबू । पत्र नं २६ । मा १ ३×३३ इक । माता—हिन्दी (नव) । विषय—व्याकरण । र काल × । मे काल नं १ ४ घण्टीय बुटी । के नं १ । अ नम्बर ।

विवेक—कुपत्र के वशात् न लच्छीय के लक्षण कोपाल के प्रतिनिधि की थी ।

१२७६ आत्मानुशासन—गुरुभद्राचार्य । पत्र नं ४२ । मा १ × ४२ इक । माता—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र काल × । मे काल × । के नं २२५९ । पूर्ण । कीर्ण । अ नम्बर ।

विवेक—आसिद्ध — — — वर्ष — — — गाँव

धीनविद्याथरकेन्द्रके । धीनूचनने संघट्टानने कलाकारने तरकर्यायके धीनूचनूभाचार्यने अतारुधीनकरिरेवा तण्टे म धीनूचनूइरेवा तण्टे म धीनूचनूइरेवा तण्टे म प्रतापकरेवा तण्टे म गिपयंभाचार्य धीनूचनूचनूचनूचनूचनू । निमित्तं सर्वेण (की) धी नंवा तण्टे मने मिलि ।

१२७७ प्रति म० २ । पत्र म० ७४ । ले० काल स० १५६४ आषाढ सुदी ८ । वै० स० २६६ । अ  
भण्डार ।

१२७८ प्रति स० ३ । पत्र म० २७ । ले० कान म० १८६० माघ सुदी ४ । वै० स० ३१५ । अ  
भण्डार ।

१२७९ प्रति स० ४ । पत्र म० ३१ । ले० काल × । वै० स० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव प्राचीन है ।

१२८० प्रति स० ५ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० २७० । अ भण्डार ।

१२८१ प्रति म० ६ । पत्र न० ३८ । ले० काल × । वै० म० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० म० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३ प्रति स० ८ । पत्र न० २७ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० म० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४ प्रति स० ९ । पत्र म० १०७ । ले० कान म० १६८० । वै० म० ४७ । क भण्डार ।

१२८५ प्रति स० १० । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८८८ । वै० स० ४६ । क भण्डार ।

१२८६ प्रति स० ११ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वै० स० १५ । क भण्डार ।

१२८७ प्रति म० १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८७२ चैत सुदी ८ । वै० म० ५३ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले मस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८ प्रति स० १३ । पत्र स० २३ । ले० काल म० १७३० भाद्रपदा सुदी १२ । वै० म० ५८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—पद्मालाल बाकलायान ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९ प्रति स० १४ । पत्र म० ५६ । ले० काल स० १६७० फाल्गुन सुदी २ । वै० स० २६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—रहितगपुर निवासी चौधरी मोहल न प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९० प्रति स० १५ । पत्र स० ५६ । ले० काल म० १६६५ मगसिर सुदी ५ । वै० स० २२० । अ  
भण्डार ।

विशेष—मडनाचार्य धर्मचन्द्र ने शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१ आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५७ । प्रा० ११×५ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल म० १८८२ फाल्गुन सुदी १० । पूर्ण । वै० स० २७ । अ भण्डार ।

१२९२ प्रति स० २ । पत्र म० १०३ । ले० काल स० १६०१ । वै० स० ४८ । क भण्डार ।

१२९३ प्रति स० ३ । पत्र स० ८८ । ले० कान म० १६८१ मगसिर सुदी १४ । वै० म० ६३ । अ  
भण्डार ।



विभय—कुम्भापती वधर में प्रतिष्ठिति हुई ।

१०३४ प्रति स ४ । वधर्त् ४२ । ले वल्लर्त् १ ३२ वीण्य कुरी १ । वे न २ । अ  
मन्थार ।

विभय—सर्वार्त् वधरुर्त् में प्रतिष्ठिति हुई ।

१०३५ प्रति स ५ । वधर्त् ११ । ले वल्लर्त् १६१६ घापाह कुरी १ । वे न ३१ ।

विधेय—माङ्ग विद्वल्ल घटवत्त्त पर्व वीथीय में वत्त्त की प्रतिष्ठिति करवायी ।

१०३६ आरुमातुग्यासममापा—पर्व वीथीयमत्त्त । वधर्त् ७ । वा १००७ वत्त्त । वत्त्त—विष्ठी

(वध) विपद—वत्त्तवत्त्त । र वत्त्त ५ । ले वल्लर्त् १ ६ । वत्त्तर्त् १ ३०१ । अ मन्थार ।

१०३७ प्रति स ७ । वधर्त् १ ८ । ले वल्लर्त् १६ । वे न ३२६ । अ मन्थार ।

विधेय—प्रति कुम्भर्त् है

१०३८ प्रति स ३ । वधर्त् १४७ । ले वल्लर्त् ५ । वे न ३२ । अ मन्थार ।

१०३९ प्रति स ४ । वधर्त् १२६ । ले वल्लर्त् १२६२ । वे न ४३४ । अ मन्थार ।

१३ प्रति स ४ । वधर्त् २३१ । ले वल्लर्त् १२३ । वे न २ । अ मन्थार ।

विभेय—मन्थारवत्त्तवत्त्त वत्त्त वत्त्तवत्त्त वीथी की है ।

१३ १ प्रति स ३ । वधर्त् १ ३ । ले वल्लर्त् १२४ । वे न ३२ । अ मन्थार ।

१३ प्रति स ७ । वधर्त् ११ । ले वल्लर्त् १ २६ वार्त्तवत्त्त कुरी २ । वे न २ । अ  
मन्थार ।

१३ ३ प्रति स ८ । वधर्त् ७ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २२ । अ मन्थार ।

१३ ४ प्रति स ६ । वधर्त् २ ६ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २६ । अ मन्थार ।

१३ ७ प्रति स १ । वधर्त् १ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २७ । अ मन्थार ।

१३ ६ प्रति स ११ । वधर्त् १२१ । ले वल्लर्त् १२३१ वत्त्त कुरी १ । वे न २ । अ  
मन्थार ।

विधेय—प्रति वत्त्तवत्त्तवत्त्त है ।

१३ ७ प्रति स १२ । वधर्त् २७ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २६ । अ मन्थार ।

१३ ८ प्रति स १३ । वधर्त् ११ ६ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २ । अ मन्थार ।

१३ ९ प्रति स १४ । वधर्त् १ ६ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २२१ । अ मन्थार ।

१३१ प्रति स १२ । वधर्त् २२ । ले वल्लर्त् १२३४ वार्त्तवत्त्त कुरी १ । वत्त्तर्त् १ ।

१ न ३ । अ मन्थार ।

१३११ प्रति स १६ । वधर्त् १ । ले वल्लर्त् ५ । वत्त्तर्त् १ । वे न २२२ । अ मन्थार ।

१३१२ प्रति स १७ । वधर्त् २३ । ले वल्लर्त् १२४४ वत्त्तवत्त्त कुरी २ । वे न २२ । अ  
मन्थार ।

विशेष—रायचन्द्र साहवाढ ने स्वगठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१३१३ प्रति स० १८ । पत्र स० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है ।

१३१४ आध्यात्मिकनाथा—भ० लक्ष्मीचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० १०×४ डब्ब । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२४ । घ भण्डार ।

१३१५ कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र स० २४ । आ० १२×५ डब्ब । भाषा—प्राकृत ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वै० स० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वै० स० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाययें हैं ।

१३१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वै० स० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाययें हैं ।

१३१८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वै० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९ प्रति स० ५ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८८८ । वै० स० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२० प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१ प्रति स० ७ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ११६ । ख भण्डार ।

१३२२ प्रति स० ८ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६४३ सावरण मुदी ६ । वै० स० ११६ । ख

भण्डार ।

१३२३ प्रति स० ९ । पत्र स० २८ ने ७५ । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वै० स० ११७ । ख

भण्डार ।

१३२४ प्रति स० १० । पत्र स० ५० । ले० काल स० १८२५ पाँच मुदी १० । वै० स० ११६ । ख

भण्डार ।

विषय—हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५ प्रति स० ११ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १६३६ । वै० स० ४३७ । ख भण्डार ।

१३२६ प्रति स० १२ । पत्र स० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ४३८ । ख भण्डार ।

१३२७ प्रति स० १३ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६६ सावरण मुदी ६ । वै० स० ६३६ । ख

भण्डार ।

१३२८ प्रति स० १३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६२० मात्रण मुदी ८ । वै० स० ८६० । ख

भण्डार ।



१३४५ प्रति स० २ । पत्र स० २८१ । ले० काल × । वे० स० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६ प्रति स० ३ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७ प्रति सं० ४ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८ प्रति स० ५ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९ कुशलागुवधिभ्रज्जमुयण । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलागुवधिभ्रज्जमुयण समत्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इसके प्रतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतिया भी हैं ।

१३५०. चक्रवर्तिकीशारहभावना । पत्र स० ४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान । पत्र स० २ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ऋ भण्डार ।

१३५३ चिद्विलास—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र स० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वे० स० २१ । घ भण्डार ।

१३५४ जोगीरासो—जिनदास । पत्र स० २ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५ ज्ञानदर्पण—साहू दीपचन्द्र । पत्र स० ४० । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३५६ प्रति स० ० । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० स० ३० । घ

भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्द्रजी के मन्दिर में विराजमान की

गई ।

१३५७. ज्ञानत्रावनी—चनारसीदास । पत्र स० १० । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८ ज्ञानमार—मुनि पद्मसिंह । पत्र स० १२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल स० १०=६ सावण सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—एकतामस वाली बत्ता निम्न प्रकार है—

तिरि विष्णुस्तम्भायै दक्षकनक्यती बु भवि भद्रवालेह

बालरुद्रिण लघवीए संकस्तुपटीमन्त्र्यै नैर् ॥

१३२६. आभासीय—दुष्कर्मकायान। पत्र सं १२। भा १२ × २ रत्न। बत्ता—बंलुप।

विषय—बोद। २ बत्त ×। से बत्त सं १६७६ बीच कुटी १४। पूर्ण। के सं १०४। क मन्त्रार।

विशेष—बीरत मकर में भी मनुस्मृत्य में कर्म की प्रतिनिधि करवाती थी।

१३२७. प्रति सं २। पत्र सं १३। से बत्त सं १६३६ भावना कुटी १३। के सं ४२। क

मन्त्रार।

१३२८. प्रति सं ३। पत्र सं २७। से बत्त सं १६४२ बीच कुटी ६। के सं २२। क

मन्त्रार।

१३२९. प्रति सं ४। पत्र सं २६। से बत्त ×। पूर्ण। के सं २२१। क मन्त्रार।

१३३०. प्रति सं ५। पत्र सं १। से बत्त ×। के सं २३२। क मन्त्रार।

१३३१. प्रति सं ६। पत्र सं २६४। से बत्त सं १३३ भावना कुटी ३। के सं १३४। क

मन्त्रार।

विशेष—कर्मिय मन्त्रार की टीका नहीं है।

१३३२. प्रति सं ७। पत्र सं १ से २। से बत्त ×। पूर्ण। के सं १२। क मन्त्रार।

विशेष—ब्राह्मण के २ पत्र नहीं है।

१३३३. प्रति सं ८। पत्र सं १३१। से बत्त ×। के सं ३२। क मन्त्रार।

विशेष—प्रति आशीर्ष है।

१३३४. प्रति सं ९। पत्र सं १७६ से २१। से बत्त ×। पूर्ण। के सं २२३। क मन्त्रार।

१३३५. प्रति सं १०। पत्र सं १६५। से बत्त ×। के सं १२४। पूर्ण। क मन्त्रार।

विशेष—कर्मिय पत्र नहीं है। द्वितीय टीका लक्षित है।

१३३६. प्रति सं ११। पत्र सं १९। से बत्त ×। के सं २२६। क मन्त्रार।

१३३७. प्रति सं १२। पत्र सं ४४। से बत्त ×। पूर्ण। के सं १२६। क मन्त्रार।

१३३८. प्रति सं १३। पत्र सं १३। से बत्त ×। पूर्ण। के सं १२६। क मन्त्रार।

विशेष—ब्राह्मणाय मन्त्रार एक है।

१३३९. प्रति सं १४। पत्र सं १४२। से बत्त सं १३। के सं २२७। क मन्त्रार।

१३४०. प्रति सं १५। पत्र सं १४। से बत्त सं १३४ भावना कुटी १। के सं १२४।

क मन्त्रार।

विशेष—कर्मिय मन्त्रार बीच में प्रतिनिधि की थी।

१३७४ प्रति स० १६ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । वे० स० ६५ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सस्कृत मे सकेत भी दिये हैं ।

१३७५ प्रति स० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० स० २८२ । छ मण्डार ।

विशेष—बारहूँ भावना मात्र है ।

१३७६ प्रति स० १८ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० स० २५ । ज मण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनि जनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभावन्द्रदेवा । आर्चैर गण स्थानत् । कूरमवधे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनंक्रिया-वर्तनिवतबाद् धनाद्योग्यु घटापित कर्मक्षयनिमित ।

१३७७ प्रति स० १९ । पत्र स० ११५ । ले० काल × । वे० स० ६० । झ मण्डार ।

१३७८ प्रति स० २० । पत्र स० १०४ । ले० काल × । वे० स० १०० । ब मण्डार ।

१३७९ प्रति स० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्णा । वे० स० १५३ । ब मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८० प्रति स० २२ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १७८८ । वे० स० ३७० । ब मण्डार ।

१३८१ प्रति स० २३ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १६६२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२ प्रति स० २४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६०१ । अपूर्णा । वे० स० १६६३ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३ ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६१६ । अ मण्डार ।

१३८४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२५ । क मण्डार ।

१३८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२३ माघ सुदी १० । वे० स० २२६ । क मण्डार ।

१३८६ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३१ । ब मण्डार ।

विधाय—एकनाशक वाली वाता निम्न प्रकार है—

भिरि विषयमन्त्रवादे दण्डकपाती कु र्थि वृहत्स्येह

सामगतिव शुभनीए संवत्सरटीम्वर्यं केई ॥

१३२३. ज्ञानार्थेय—शुभचक्रावाच १ वच सं १ २ । वा १२ × २३ इव । वाता—मैतृ ।

विषय—मौष । १ वच × १ । मे वच सं १९०६ बीच मुटी १८ । पूर्ण । के सं २ ४ । क मन्त्र ।

विषय—वैश्व नवर में श्री चतुरस्र के वच की प्रतिमिति करवनी की ।

१३३६ प्रति सं ३ । वच सं १ ३ । मे वच सं १६२८ वाता मुटी १३ । के सं ४२ । क मन्त्र ।

मन्त्र ।

१३३९ प्रति सं ३ । वच सं २ ७ । मे वच सं १६४२ बीच मुटी २ । के सं ३२ । क मन्त्र ।

मन्त्र ।

१३६३ प्रति सं ४ । वच सं २६ । मे वच × १ । पूर्ण । के सं २२१ । क मन्त्र ।

१३६३ प्रति सं २ । वच सं १ । के वच × १ । के सं २२१ । क मन्त्र ।

१३६४ प्रति सं ६ । वच सं २२४ । मे वच सं १ ३२ वाता मुटी ३ । के सं २३४ । क मन्त्र ।

मन्त्र ।

विषय—कल्पित विचार की वीच गरी है ।

१३६७ प्रति सं ७ । वच सं १ । मे २ । मे वच × १ । पूर्ण । के सं १२ । क मन्त्र ।

विषय—वात के २ वच गरी है ।

१३६६ प्रति सं ८ । वच सं १३१ । मे वच × १ । के सं ३२ । क मन्त्र ।

विषय—वैश्व प्राणी है ।

१३६७ प्रति सं ९ । वच सं १०६ । मे २ । मे वच × १ । पूर्ण । के सं ३२१ । क मन्त्र ।

१३६८ प्रति सं १ । वच सं २६५ । मे वच × १ । के सं ३२८ । पूर्ण । क मन्त्र ।

विषय—कल्पित वच गरी है । दिष्टी वीच लदिव है ।

१३६९ प्रति सं ११ । वच सं १ ९ । मे वच × १ । के सं ३२२ । क मन्त्र ।

१३७० प्रति सं १३ । वच सं ४८ । मे वच × १ । पूर्ण । के सं ३२२ । क मन्त्र ।

१३१ प्रति सं १३ । वच सं १३१ । मे वच × १ । पूर्ण । के सं ३२६ । क मन्त्र ।

विषय—अज्ञान विचार लक है ।

१३७२ प्रति सं १४ । वच सं १४२ । मे वच सं १ २ । के सं ३२७ । क मन्त्र ।

१३३ प्रति सं १२ । वच सं १४ । मे वच सं १६८ कालेव मुटी १ । के सं १२८ ।

क मन्त्र ।

विषय—वाजीवन संक मे प्रतिमिति की की ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र म० १३ । मा० १०३×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६ । मा० १०३×५२ इक्ष । भाषा—हिंदी (गद्य) । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मृष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त । पत्र स० १ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा—गुजराती । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल म० १७०७ वैशाख बुदी १ । वे० स० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६ । मा० ११×८ इक्ष । भाषा—हिंदी । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल < । अपूर्ण । वे० म० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र न० २० । मा० १०३×४ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र म० १ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल < । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८४ । अ भण्डार ।

१४-८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० म० १६१ । क भण्डार ।

१४०८ द्वादशानुप्रेक्षा—कविद्वन्द्व । पत्र स० ८३ । मा० १२३×५ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६०७ भाद्रवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र मं० ८ । मा० ६३×४३ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १३ । मा० १०×५ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । क भण्डार ।

१४१२ प्रति स० २ । पत्र म० ७ । ले० काल × । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा । पत्र स० ७ । मा० ६३×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३० । अ भण्डार ।



१३८७. प्रति म ४ । वन नं १ । मे वल ल १०४१। कीर्ति । के लं २९ । क मपार ।  
विषय—जीवनसाध में आचार्य कथकीर्ति के विषय वं मद्यारण के प्रतिनिधि की थी ।

१३८८. प्रति म ३ । वन नं २ मे १२१। न वल × । कुर्त्त । के लं २२१ । क मपार ।

१३८९. प्रति म ७ । वन लं १२ । मे वल नं १०४२ मारवा । के लं २३ । क मपार ।  
विषय—वं राजकन्य के प्रतिनिधि की थी ।

१३९०. प्रति मं ८ । वन नं १ । मे वल × । के लं २२१ । क मपार ।

१३९१. आनन्दबटीका—वं मधु पिशास । वन नं २ १ । वा १३×७ दण्ड । भासा—नंदन ।

विषय—वीर । र वल × । मे वल × । कुर्त्त । के लं २२ । क मपार ।

विषय—अपिठम पुत्रिवा विन्म प्रकार है ।

इति सुवक्त्राचार्यविश्वविद्यालयबटीकाविहारे वं मयविनालेख मद्रु पाया लज्जु मद्रु टीकर लज्जुनकन्य-  
विद्यालयमद्रुविद्यालय मयलार्त्त वं विद्यालयों सर्वसाधारणिया जीवजन्म लमार्त्त ।

१३९२. प्रति मं ३ । वन नं ३२६ । मे वल × । के लं २२५ । क मपार ।

१३९३. आनन्दबटीकामाया—कविचिन्मगण्डि । वन नं १२ । वा ११×६ दण्ड । भासा-  
दिन्दी (वध) । विषय—वीर । र वल नं १०२ मलय मुरी १ । मे वल नं १०३ मलय मुरी ३ । कुर्त्त ।  
के लं १२४ । क मपार ।

१३९४. आनन्दबटीकामाया—अवधम् क्रावडा । वन नं १२३ । वा ११×७ दण्ड । भासा—दिन्दी  
(वध) विषय—वीर । र वल नं १ ६२ मलय मुरी २ । मे वल × । कुर्त्त । के लं २२३ । क मपार ।

१३९५. प्रति म ३ । वन नं ४२ । मे वल × । के लं २२४ । क मपार ।

१३९६. प्रति मं ३ । वन नं ४२१ । मे वल नं १ ३ मलय मुरी ७ । के लं ३४ । म  
मपार ।

विषय—मद्रु विद्यालय के मनुमान की वेरला के भासा (वना की वई) कज्जुरमजी मद्रु के मीपान  
भासा के प्रतिनिधि कराके मीचारी के मन्दिरे में मद्रुम ।

१३९७. प्रति मं ४ । वन नं ४ । मे वल × । के लं २६२ । क मपार ।

१३९८. प्रति मं ४ । वन नं १ ३ मे २११ । मे वल × । कुर्त्त । के लं २६६ । क मपार ।

१३९९. प्रति म ६ । वन नं ३६१ । मे वल नं १२११ मलय मुरी । कुर्त्त । के लं २६६ ।  
क मपार ।

विषय—भासा के २१ वन मठी है ।

१४०. मधुपाय — । वन नं ३ । वा १ ×२ दण्ड । भासा—मनुमान । विषय—मयल । र  
वल × । मे वल नं १ १ । कुर्त्त । के लं ३१ । क मपार ।

१४०१ त्रयोविणतिका । पत्र न० १३ । आ० १०३×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—घट्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त । पत्र स० १ । आ० १०×८ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—गुजराती । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल स० १७०७ वंदाप बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० न० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुदाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा " । पत्र न० २० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० न० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र न० १ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० ८८ । अ भण्डार ।

१४०८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

१४०९ द्वादशानुप्रेक्षा—कविदत्त । पत्र स० ८३ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल स० १६०७ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र न० ८ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । छ भण्डार ।

१४१२ प्रति स० २ । पत्र न० ७ । ले० काल × । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा । पत्र स० ७ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४ पद्मसूत्रविधी—वचन ४। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म।  
२। वचन ४। के वचन ४। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

विशेष—सुवचनान् इव एवीमन्वयटीम भाषा भी है।

१४१५ परमात्मसुखाद्य—हीनचन्द्र। वचन १४। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी (वच)।  
विषय—अध्यात्म। २। वचन ४। के वचन ४। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

विशेष—महत्त्वा समेत के प्रतिबिम्बि की भी।

१४१६ प्रति सं० ०। वचन २। के वचन २। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।  
विषय—अध्यात्म। २। वचन ४। के वचन ४। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

१४१७ परमात्मसुखाद्य—योगीश्वरदेव। वचन १३। के वचन १३। वा १ × २६ दश। भाषा—  
अरब। विषय—अध्यात्म। २। वचन १०। के वचन १०। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

विशेष—सुवचनान् इव एवीमन्वयटीम भाषा भी है।

१४१८। प्रति सं० २। वचन २०। के वचन २०। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१९। प्रति सं० ३। वचन ७२। के वचन ७२। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।  
विषय—अध्यात्म। २। वचन १०। के वचन १०। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

विशेष—अध्यात्म। वचन ७२। के वचन ७२। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

१४२०। प्रति सं० ४। वचन १२। के वचन १२। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

१४२१। प्रति सं० ५। वचन १६। के वचन १६। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

१४२२। प्रति सं० ६। वचन २३। के वचन २३। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४२३। प्रति सं० ७। वचन ३२। के वचन ३२। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

१४२४। प्रति सं० ८। वचन ४०। के वचन ४०। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।  
विषय—अध्यात्म। २। वचन १०। के वचन १०। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

विशेष—अध्यात्म। वचन ४०। के वचन ४०। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

संस्कृत में टीका भी है।

१४२५ परमात्मसुखाद्य—योगीश्वरदेव। वचन १३। के वचन १३। वा १ × २६ दश।  
भाषा—अरब। विषय—अध्यात्म। २। वचन १०। के वचन १०। कुर्स। के ४११। अ मन्सार।

१४२६। प्रति सं० ९। वचन ३६। के वचन ३६। वा १ × २६ दश। भाषा—हिन्दी।

१४२७ प्रति स० ३ । पत्र न० १६१ । ले० काल स० १७६७ पीप सुदी ५ । वे० स० ४५४ । च भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८ परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । प्रा० ११×५ उच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे १४९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र है ।

१४३० परमात्मप्रकाशटीका । पत्र म० १६३ । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल म० १६५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ८६७ । क भण्डार ।

१४३१ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० ६७ । प्रा० ११×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल म० १८६० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २०७ । च भण्डार ।

१४३२ प्रति स० २ । पत्र स० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । च भण्डार ।

१४३३ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र म० १७० । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६६६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रगति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—डौलतराम । पत्र स० ४४४ । प्रा० ११×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल म० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ८८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव दत्त मस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५ प्रति स० २ । पत्र म० २३० म २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३६ । छ भण्डार ।

१४३६ प्रति स० ३ । पत्र स० २७७ । ले० काल स० १६५० । वे० स० ४३७ । छ भण्डार ।

१४३७ प्रति स० ४ । पत्र म० ६० म १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२८ । ले० काल × । वे० स० १६२ । छ भण्डार ।

१४३९ परमात्मप्रकाशबालाप्रयोगिनीटीका—खानचन्द । पत्र स० २८१ । प्रा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इच्च ।

भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० ८४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुन्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है ।

१४४० परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र स० २१ । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४० । क भण्डार ।

१४४० प्रति स० २ । पत्र म० १८ । ले० काल स० १६४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार ।

१४४० प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४४६. प्रति स ४। वच सं २ के ११। ने कल मं ११७०। के सं ४४४। क मन्वार।

१४४७ परमात्मप्रकारामाषा—सूरजमान आसिवास वच सं ११४। वा १२३। एष।  
 माता-हिन्दी (वच)। विषय-ध्यानप। १ कल सं १४४। माता-हिन्दी ७। ने कल सं ११२१। मन्वार।  
 १। पूर्ण। के सं ४४४। क मन्वार।

१४४८. परमात्मप्रकारामाषा—। वच सं ११। वा ११। एष। माता-हिन्दी। विषय-  
 ध्यानप। १ कल ×। ने कल ×। के सं १११। क मन्वार।

१४४९. परमात्मप्रकारामाषा—। वच सं ११। वा ११। एष। माता-हिन्दी। विषय-  
 ध्यानप। १ कल ×। ने कल ×। पूर्ण। के सं ११०। क मन्वार।

१४५० परमात्मप्रकारामाषा—। वच सं ११ के १। वा १। एष। माता-हिन्दी।  
 विषय-ध्यानप। १ कल <। ने कल ×। पूर्ण। के सं ४२२। क मन्वार।

१४५१. मन्वचमसार—आचार्य कुम्भकुम्भ। वच सं ४०। वा १०। एष। माता-हिन्दी।  
 विषय-ध्यानप। १ कल मन्व कृतम्बी। ने कल सं ११४। माता-हिन्दी ७। पूर्ण। के सं १। क मन्वार।  
 विषय—मन्वच मन्वचमन्वी कल विषे हुये है।

१४५२. प्रति स ३। वच सं ३। ने कल ×। के सं ३१।

१४५३ प्रति स ३। वच सं ३। ने कल सं ११६। माता-हिन्दी २। के सं २६। क  
 मन्वार।

१४५४ प्रति सं ४। वच सं १। ने कल ×। पूर्ण। के सं १११। क मन्वार।

विषय—प्रति मन्वच दीना लक्षित है।

१४५५. प्रति स ४। वच सं १२। ने कल सं ११७। माता-हिन्दी १। के सं २४। क  
 मन्वार।

विषय—वचमन्वच बोद्धा वच के प्रतिमिति की थी।

१४५६ प्रति स ६। वच सं ११। ने कल ×। के सं १४४। क मन्वार।

१४५७ मन्वचमसारदीक्षा—आचार्य कुम्भकुम्भ। वच सं १०। वा १०। एष। माता-हिन्दी।  
 विषय-ध्यानप। १ कल १। माता-हिन्दी। ने कल ×। पूर्ण। के सं ११। क मन्वार।

विषय—दीक्षा का वच मन्वचमन्वी है।

१४५८ प्रति स ७। वच सं ११। ने कल ×। के सं ४२। क मन्वार।

१४५९ प्रति सं ३। वच सं १ के १। ने कल ×। पूर्ण। के सं ४२। क मन्वार।

१४६० प्रति स ४। वच सं ११। ने कल ×। के सं १। क मन्वार।

१४६१ प्रति सं ३। वच सं १। ने कल सं ११। के सं २०। क मन्वार।

विषय—मन्वचमन्वी के मन्वच के प्रतिमिति की थी।

१४५६ प्रति स० ६ । पत्र स० २३६ । ले० काल स० १६३८ । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६० प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल  $\times$  । वे० स० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

भण्डार ।

१४६१ प्रति स० ८ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १७८७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ५११ । क

भण्डार ।

१४६२ प्रति स० ९ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १६६० भाद्रपद शुदी २ । वे० स० ६१ । क

विशेष—प० फतेहगान ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३ प्रवचनमारटीका । पत्र स० ४१ । घा० ११५६ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।

१० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० स० ५१० । क भण्डार ।

विशेष—प्राप्त म मूल नष्ट म छाया तथा हिन्दी म अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४ प्रवचनमारटीका । पत्र स० १२१ । घा० १२५५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १८५७ भाद्रपद बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५ प्रवचनमारप्राभृतशुक्ति । पत्र स० ५१ म १३१ । घा० १२५५ इअ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १७६५ । अपूर्ण । वे० स० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के नामनवाल मे नेवटा मे महात्मा हरिरुप्य  
ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६ प्रवचनमारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र स० ८३ मे ३०५ । घा० १२५५ इअ । भाषा—  
हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १७०६ भाद्रपद बुदी १ । स० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वे० स०  
८३२ । अ भण्डार ।

विशेष—नागानर म मोसवाल गुजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७ प्रति स० २ । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । ले० काल  $\times$  । वे० स० ५१२ । क भण्डार ।

भण्डार ।

१४६९ प्रति स० ५ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ६३ । क

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।

भण्डार ।

१४७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १७४३ पौष बुदी २ । वे० स० ५१३ । क

१४७१ प्रति स० ६ । पत्र स० २४१ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ६४१ । क भण्डार ।

१४७० प्रतिम ७। पत्र तं १८४। मे काल तं १८३ क्रांतिक बुटी १। के तं ११३। छ  
अम्बार।

विशेष—अवगतु मिशली अम्बराल के पुत्र महारा बलेश मे प्रतिनिधि की की।

१४७१ अम्बरालसाराभाया—आमराज गाहीका। पत्र तं ३। या ११८२ दख। माया—हिन्दी  
(वच)। विपय—अम्बराल। र काल तं १७२९। मे काल तं १७३ पायल बुटी १२। पुर्ण। मे तं १४४।  
अम्बार।

१४७४ अम्बरालसाराभाया—हुम्दाननदास। पत्र तं २१७। या १२३८२ दख। माया—हिन्दी।  
विपय—अम्बराल। र काल ×। मे काल तं ११३३ अम्बर बुटी १। पुर्ण। के तं २११। अम्बार।

विशेष—अम्बर के अम्बर मे हुम्दाननदास का परिवार दिया है।

१४७५ अम्बरालसाराभाया—। पत्र तं ३। या ११८१३ दख। माया—हिन्दी। विपय—अम्बराल।  
र काल ×। मे काल ×। पुर्ण। के तं २१२। अम्बार।

१४७६ प्रतिम २। पत्र तं ३। मे काल ×। पुर्ण। के तं १४९। अम्बार।

विशेष—अम्बराल पत्र नहीं है।

१४७७ अम्बरालसाराभाया—। पत्र तं १९। या ११८४ दख। माया—हिन्दी (वच)। विपय  
अम्बराल। र काल ×। मे काल ×। पुर्ण। के तं ११२२। अम्बार।

१४७८ अम्बरालसाराभाया—। पत्र तं १४२ मे १२। या ११३०६ दख। माया—हिन्दी  
(वच)। विपय—अम्बराल। र काल ×। मे काल तं ११। पुर्ण। के तं १४२। अम्बार।

१४७९ अम्बरालसाराभाया—। पत्र तं २३२। या ११८२ दख। माया—हिन्दी (वच)। विपय—  
अम्बराल। र काल। मे काल तं ११२९। के तं १४९। अम्बार।

१४८० मायापासाराभाया—। पत्र तं ९। या १४८४ दख। माया—बीकानेर। विपय—अम्बराल।  
र काल ×। मे काल ×। पुर्ण। के तं ११९। अम्बार।

१४८१ बारह पायला—रघु। पत्र तं २। या २८९ दख। माया—हिन्दी। विपय—अम्बराल।  
र काल। मे काल ×। पुर्ण। के तं १४१। अम्बार।

विशेष—मिथिकार मे रघु हुत बारह पायला होना सिद्धा है।

मायय—पुत्रवत्त विष्णु कया अम्बराल अम्बराल।

अम्बराल को देखिये अम्बराल अम्बराल।

अम्बराल—अम्बराल अम्बराल अम्बराल अम्बराल अम्बराल।

अम्बराल मे बारह अम्बराल अम्बराल अम्बराल।

अम्बराल मे रघु हुत बारह पायला अम्बराल।

- १४८२ वारहभावना । पत्र स० १५ । मा० ६३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ५२६ । ङ मण्डार ।
- १४८३ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ६८ । ऋ मण्डार ।
- १४८४ वारहभावना—भूधरदास । पत्र स० १ । मा० ६३×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४७ । व्य मण्डार ।
- विशेष—पार्वपुराण से उद्धृत है ।
- १४८५ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २५२ । त्व मण्डार ।
- विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की वारह भावना है ।
- १४८६ वारहभावना—नवलकवि । पत्र स० २ । मा० ८×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५३० । ङ मण्डार ।
- १४८७ बोधप्राभृत—आचार्य कुदकुद । पत्र स० ७ । मा० ११×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५३५ ।
- विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।
- १४८८ भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । मा० १०×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म ।  
२० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्णा । वे० स० ४५५ । व्य मण्डार ।
- विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।
- १४८९ भावनाद्वात्रिंशिका । पत्र स० २६ । मा० १०×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५५७ । क मण्डार ।
- विशेष—निम्न पाठो का संग्रह ग्रीक है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपञ्चविंशतिका ग्रीक तत्त्वार्थसूत्र ।  
प्रति स्वर्णाक्षरों में है ।
- १४९० भावनाद्वात्रिंशिकाटीका । पत्र स० ४६ । मा० १०×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५६८ । ङ मण्डार ।
- १४९१ भावपाहृद—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ६ । मा० १४×५<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३३० । ज मण्डार ।
- विशेष—प्राकृत गायाम्रो पर संस्कृत श्लोक भी हैं ।
- १४९२ मृत्युमहोत्सव । पत्र स० १ । मा० ११<sup>३</sup>×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३४१ । अ मण्डार ।
- १४९३ मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । मा० ६३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल स० १६१८ भाषाद सुदी ५ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ८० । घ मण्डार ।
- १४९४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ६०४ । ङ मण्डार ।



१४३३ प्रति स ३। पत्र नं १। नि कल  $\times$ । के तं १५४। अ मन्थार।

१४३४ प्रति स ४। पत्र नं ११। नि कल  $\times$ । के तं १५४। अ मन्थार।

१४३७ प्रति स ०३। पत्र नं १। नि कल  $\times$ । के तं १६३। अ मन्थार।

१४३८ आर्गावितुम्बरस्य—आ हरिभद्रसूरि। पत्र नं १। पा १  $\times$ ४५ इत्थ। मत्ता-संस्कृत।

विषय-बीज। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६३। अ मन्थार।

१४३९ योगसक्ति—। पत्र नं १। पा १  $\times$ २३ इत्थ। मत्ता-संस्कृत। विषय-बीज। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६३। अ मन्थार।

१४ योगसास्त्र—हेमचन्द्रसूरि। पत्र नं १२। पा १  $\times$ ४५ इत्थ। मत्ता-संस्कृत। विषय-बीज। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६३। अ मन्थार।

१४ १ योगसास्त्र—। पत्र नं १४। पा १  $\times$ ४ इत्थ। मत्ता-संस्कृत। विषय-बीज। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६। अ मन्थार।

विषय—हिन्दी में वर्ण लिखा हुआ है।

१४ २ योगसास्त्र—योगीन्द्रदेव। पत्र नं १२। पा १  $\times$ ४ इत्थ। मत्ता-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं २। अ मन्थार।

विषय—मुञ्जराज काव्या के प्रतिबिम्बि की की।

१४ ३ प्रति स २। पत्र नं १७। नि कल  $\times$ । के तं १६४। अ मन्थार।

विषय—संस्कृत भाषा लिख है।

१४ ४ प्रति स ३। पत्र नं १२। नि कल  $\times$ । के तं १७। अ मन्थार।

विषय—हिन्दी वर्ण भी लिखा है।

१४ ५ प्रति स ४। पत्र नं १२। नि कल  $\times$ । के तं १६५। अ मन्थार।

१४ ६ प्रति स ५। पत्र नं १६। नि कल  $\times$ । के तं १६। अ मन्थार।

१४७७ प्रति स ६। पत्र नं ११। नि कल  $\times$ । के तं १५२ वर्ण मुद्रा ४। के तं १२। अ मन्थार।

१४८८ प्रति स ७। पत्र नं १। नि कल  $\times$ । के तं १४। अ मन्थार।

१४ ८ प्रति स ८। पत्र नं २। नि कल  $\times$ । के तं १६५। अ मन्थार।

१४९ योगसास्त्रभाषा—अनन्तराम। पत्र नं २७। पा १  $\times$ २३ इत्थ। मत्ता-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६६। अ मन्थार।

विषय—पत्र में संस्कृत में भाषा लिखा हिन्दी वर्ण की।

१४९९ योगसास्त्रभाषा—अनन्तराम चौधरी। पत्र नं ३३। पा १  $\times$ २४ इत्थ। मत्ता-हिन्दी (अब) विषय-अध्यात्म। र कल  $\times$ । नि कल  $\times$ । पूर्ण। के तं १६६। अ मन्थार।

१५१२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६१० । क भण्डार ।

१५१३ प्रति स० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल × । वे० स० ६१७ । छ भण्डार ।

१५१४ योगसारभाषा—प० बुधजन । पत्र स० १० । मा० ११×७३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पत्र) ।

विषय—अध्यात्म । र० काल स० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६ योगसारभाषा । पत्र स० ६ । मा० २१×६३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पत्र) । विषय—  
अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१८ । छ भण्डार ।

१५१७ योगसारसंग्रह । पत्र स० १८ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
र० काल × । ले० काल स० १७४० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८ रूपस्थध्यानवर्णन । पत्र स० २ । मा० १०<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५६ । छ भण्डार ।

‘धर्मनायस्तुवे धर्ममय सद्दर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्तक ॥

१५१९ लिंगपाहुड़—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० ११ । मा० १२×५<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० स० १०३ । छ भण्डार ।

विषय—शील पाहुड़ तथा गुरावली भी है ।

१५२० प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६ । झ भण्डार ।

१५२१ वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ७ । मा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८८५ सावण सुदी ६ । वे० स० ३३७ । च  
भण्डार ।

विषय—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३ प्रति स० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० स० १४३ । ब् भण्डार ।

१५२४ पटपाहुड़ (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० २ से २४ । मा० १०×४<sup>३</sup> इक्ष ।  
भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । अ भण्डार ।

१२२५ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० स० १८८ । अ  
भण्डार ।

१५२६ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८१७ माघ सुदी ६ । वे० स० ७१४ । क  
भण्डार ।

विषय—नरायणा ( जयपुर ) में प० रूपचन्द्रजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१२२० प्रति स० ४। पच सं ४२। मे काल सं ११० नासिक बुटी ७। मे सं १२३। अ  
 न्यवार।

विलेप—संशुद्ध चर्मो में की चर्ब विद्या है।

१२२८ प्रति सं ४। पच सं ४। मे काल ×। मे सं २ । अ न्यवार।

१२२९ प्रति स ६। पच सं १२। मे काल ×। मे सं १२७। अ न्यवार।

१२३० प्रति स ७। पच सं ११ से २२। मे काल ×। मूर्त्त। मे सं ७३७। अ न्यवार।

१२३१ प्रति सं ८। पच सं ११। मे काल ×। मूर्त्त। मे सं ७३ । अ न्यवार।

१२३२ प्रति सं ९। पच सं १७ से १२। मे काल ×। मूर्त्त। मे सं ७३९। अ न्यवार।

१२३३ प्रति स १। पच सं २४। मे काल ×। मे सं ७४ । अ न्यवार।

१२३४ प्रति स० ११। पच सं १३। मे काल ×। मे सं १२७। अ न्यवार

विलेप—सति संशुद्ध टीका तद्विद्य है।

१२३५ प्रति सं १२। पच सं २ । मे काल सं १२११ नीच बुटी १३। मे सं १ । अ  
 न्यवार।

१२३६ प्रति स १३। पच सं २२। मे काल ×। मे सं १२४१। अ न्यवार।

१२३७ प्रति स १४। पच सं २२। मे काल सं १०१२। मे सं १२४७। अ न्यवार।

विलेप—मलमुर में पाल्मिताम नीलमल में व पुष्पकेर के चर्माच नवीशुरवत्त मे प्रतिमिति की थी।

१२३८ प्रति स १५। पच सं १ से ३। मे काल ×। मूर्त्त। मे सं १ २। अ न्यवार।

विलेप—निम्न प्राकृत है— चर्बन सुच चर्मेप। चर्मेप प्राकृत की ४२ वाचा से माले गयी है। प्रति  
 शशील एवं संशुद्ध टीका तद्विद्य है।

१२३९ मूपाबुडटीका—। पच सं २१। वा १२×१ च्छ। माला—संशुद्ध। विलेप—मज्जाम।

२ काल ×। मे काल ×। मूर्त्त। मे सं २६। अ न्यवार।

१२४० प्रति स २। पच सं ४२। मे काल ×। मे सं ७१३। अ न्यवार।

१२४१ प्रति सं ३। पच सं २१। मे काल सं १ । अशुद्ध बुटी । मे सं १२९। अ  
 न्यवार।

विलेप—व लवचचाम के चर्माच मज्जामर मे प्रतिमिति हुई।

१२४२ प्रति स ४। पच सं २४। मे काल सं १ २२ अशुद्ध बुटी १ । मे सं २२ । अ  
 न्यवार।

अध्यात्म एवं योगशास्त्र ]

१५४३ पटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र स० २६५ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—वसुधत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४ प्रति स० २ । पत्र स० २६६ । ले० काल स० १८६३ माह बुदी ६ । वे० स० ७४१ । ड  
भण्डार ।

१५४५ प्रति स० ३ । पत्र स० १५२ । ले० काल स० १७६५ माह बुदी १० । वे० स० ६२ । छ  
भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६ प्रति स० ४ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० स० ६ । न  
विशेष—श्रीलालचन्द्र के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७ प्रति स० ५ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी ७ । वे० स० ६८ । न  
भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोत्रका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने ५० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि  
करायी थी ।

१५४८ सवोधपञ्चरवाधनी—द्यान्तराय । पत्र स० ५ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । च भण्डार ।

१५४९ सवोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र स ४ । मा० ८×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८४० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५० समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० २३ । मा० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत्त स० २६३ सब भवति । वे० स० १८१ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुद्धपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री  
मूलसधे नदिसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-  
देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमडलाचार्यथीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य  
श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की  
गई थी ।

१५५३ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६४२ । वे० स० ७३४ । क भण्डार ।



१५६६ प्रति स० ३ । पत्र म० १६ । ले० काल × । वे० स० १६२ । अ भण्डार ।  
 १५६७ प्रति स० ४ । पत्र म० ४१ । ले० काल × । वे० स० २१५ । अ भण्डार ।  
 १५६८ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७३६ । क भण्डार ।  
 विशेष—सरल सस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोको को टीका है ।

१५६९ प्रति स० ६ । पत्र स० १२४ । ले० काल × । वे० न० ७३७ । क भण्डार ।  
 १५७० प्रति स० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल न० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० स० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१ प्रति स० ८ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ७३९ । अ भण्डार ।  
 विशेष—सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२ प्रति स० ९ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ७४४ । अ भण्डार ।  
 विशेष—कलशो पर भी सस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३ प्रति स० १० । पत्र स० २४ । ले० काल × । वे० स० ११० । अ भण्डार ।  
 १५७४ प्रति स० ११ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ में सस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।  
 १५७५ प्रति स० १२ । पत्र स० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७२ । च भण्डार ।  
 १५७६ प्रति स० १३ । पत्र स० २६ । ले० काल म० १७१६ वार्तिक सुदी २ । वे० म० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७ प्रति स० १४ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । वे० स० ८७ । ज भण्डार ।  
 विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८ प्रति स० १५ । पत्र स० ३८ । ले० काल म० १६१४ पोष बुदी ८ । वे० स० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९ प्रति स० १६ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १६१४ । ट भण्डार ।  
 १५८० प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—श० नेतमीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१ समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० १३५ । मा० १०३ × ४३ इअ  
 भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८३३ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २ । अ  
 भण्डार ।

१२८८ प्रति स ०२। पत्र सं ११९। ले नाल सं १७३। के सं १४। अ नम्बरा।

विशेष—प्रकृत-संघ १७३ नालिह दृष्टान्तवर्णा विधी मुद्रादि लिखितम्।

१२८९ प्रति सं ३। पत्र सं ११। ले नाल ×। के सं ३। अ नम्बरा।

१२८९ प्रति स ४। पत्र सं ११। ले नाल ×। के सं ३। अ नम्बरा।

१२८९ प्रति स ५। पत्र सं ११। ले नाल सं १००३ ईशान्क मुदी १। के सं १११। अ नम्बरा।

विशेष—प्रकृत-संघ १०३ नालिह दृष्टान्तवर्णा विधी लिखितम्।

१२८९ प्रति स ६। पत्र सं ११९। ले नाल सं १२३। के सं ७४। अ नम्बरा।

१२८९ प्रति सं ७। पत्र सं ११। ले नाल सं १२३७। के सं ७४१। अ नम्बरा।

१२८९ प्रति स ८। पत्र सं ११। ले नाल सं १७९। के सं ७४१। अ नम्बरा।

विशेष—प्रकृत मुद्रा ने विरोध नाम में प्रतिविधि की थी।

१२८९ प्रति स ९। पत्र सं ११। ले नाल >। के सं ७४१। अ नम्बरा।

१२९ प्रति सं १। पत्र सं १११। ले नाल ×। के सं ४५। अ नम्बरा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१२९ प्रति सं ११। पत्र सं १०१। ले नाल सं ११४८ ईशान्क मुदी २। के सं ११। अ नम्बरा।

विशेष—प्रकृत वाग्भट्ट के कालावकाश में नालपुरा में निजक पुरि वीरान्क मुद्रि वीराने प्रतिविधि की थी। नीचे विम्बलिखित पंक्ति प्रकृत लिखी हैं—

नादे केतु वेट एन पुन नादे पाएतु पीली वेदुरे।

नाली सं ११०३ एन पुद्रु पीशान्कालक नम्बरा।

नीचे केतु वेट एन पुन नादे पाएतु पीली वेदुरे।

१२९ प्रति स १२। पत्र सं ११। ले नाल सं १२१। नाल मुदी १। के सं ७५। अ नम्बरा।

विशेष—संघटी कालावकाश में स्वकालार्थ प्रतिविधि की थी। १११ से १० तक नीचे पत्र है।

१२९ प्रति स १३। पत्र सं ११। ले नाल सं १०३ नालिह मुदी १२। के सं ११। अ नम्बरा।

१२९ प्रति स १४। पत्र सं ४। मा ×२ इका। नाल-नाल। विषय-प्रकृत।

१२९ प्रति स १५। पत्र सं ४। मा ×२ इका। नाल-नाल। विषय-प्रकृत।

१२९ प्रति स १६। पत्र सं १। मा १। ×२ इका। नाल-संघटी। विषय-प्रकृत।

१२९ प्रति स १७। पत्र सं ४। मा ×२ इका। नाल-संघटी। विषय-प्रकृत।

१५९६ ममयमारनाटक—जनारसीदास । पत्र स० ६७ । मा० ६६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० वान सं० १६९३ ग्रामोज मुदी १३ । ले० गान स० १८३८ । पूर्ण । वे० स० ४०६ । अ  
भण्डार ।

१५९७ प्रति स० २ । पत्र स० ७२ । ले० वान स० १८६७ फागुण मुदी ६ । वे० स० ४०६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—घागरे में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५९८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४ । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० स० १०६६ । अ भण्डार ।

१५९९ प्रति स० ४ । पत्र स० ८२ । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० स० ६८४ । अ भण्डार ।

१६०० प्रति सं० ५ । पत्र स० ८ में ११५ । ले० वान स० १७८६ फागुण मुदी ४ । वे० स० ११२८

अ भण्डार ।

१६०१ प्रति स० ६ । पत्र स० १८४ । ले० बाल स० १६३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० स० ७४६ । क

भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदागुप्त भासलीवाल वृत्त हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना स०  
१६१४ भाक्तिक मुदी ७ है ।

१६०२ प्रति स० ७ । पत्र स० १११ । ले० बाल सं० १६५६ । वे० स० ७८७ । क भण्डार ।

१६०३ प्रति स० ८ । पत्र स० ४ से ५६ । ले० बाल × । वे० स० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४ प्रति स० ९ । पत्र स० ८७ । ले० बाल स० १८८७ माघ मुदी ८ । वे० स० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५ प्रति स० १० । पत्र स० ३६६ । ले० बाल सं० १६२० वैशाख सुदी १ । वे० स० ८५ । ग

भण्डार ।

विशेष—प्रति छुटके के रूप में है । लिपि बहुत सुन्दर है । प्रथम मोटे है तथा एक पत्र में ५ लाइन भीर  
प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यों के नीचे हिंदी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों में है । यह ग्रन्थ तनमुख  
सानी का है ।

१६०६ प्रति स० ११ । पत्र स० २८ से १११ । ले० बाल स० १७१४ । अपूर्ण । वे० स० ७६७ । ङ

भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल वायस्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७ प्रति स० १२ । पत्र स० १२२ । ले० बाल स० १६५१ चैत्र सुदी २ । वे० स० ७६८ । ञ

भण्डार ।

विशेष—महोरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८ प्रति स० १३ । पत्र स० १०१ । ले० बाल स० १६४३ मगसिर बुदी १३ । वे० स० ७६९ ।

ट भण्डार ।



विशेष—नवमीनारम्यत्वात् इत्यणु ने अणुपर में प्रतिनिधि भी भी ।

१६६. प्रति सं १४ । पत्र सं १९ । ते नाल सं १६७७ प्रथम पात्रण कुटी १३ । के सं

७७० । क मथार ।

विशेष—हिन्दी नक्ष में भी दीया है ।

१६१ प्रति सं १५ । पत्र सं १ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं ७७१ । क मथार ।

१६११ प्रति सं १६ । पत्र सं २ से २२ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं ३२७ । क मथार ।

१६१२ प्रति सं १७ । पत्र सं ३७ । ते नाल सं १७६३ पात्रण कुटी १३ । के सं ७७२ ।

क मथार ।

१६१३. प्रति सं १८ । पत्र सं २ । ते नाल सं १३४ संवत्तर कुटी २ । के सं १६२ । क

मथार ।

विशेष—प्रांटे नालपत्रम ने सवादीपम बोधा से प्रतिनिधि पट्टी ।

१६१४ प्रति सं १९ । पत्र सं ६ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं १६२ । क मथार ।

१६१५ प्रति सं २० । पत्र सं ४१ से १३२ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं १६२ (क) । क

मथार ।

१६१६ प्रति सं २१ । पत्र सं १३ । ते नाल × । के सं १६२ (ख) । क मथार ।

१६१७ प्रति सं २२ । पत्र सं २६ । ते नाल × । के सं १६२ (ग) । क मथार ।

१६१८. प्रति सं २३ । पत्र सं ४ से ३ । ते नाल सं १७४ अणुर्ल कुटी २ । अणुर्ल । के

सं १२ (घ) । क मथार ।

१६१९ प्रति सं २४ । पत्र सं १३ । ते नाल सं १७८ पात्रण कुटी २ । के सं ३ । क

मथार ।

विशेष—विष्य विवादी किन्ती नालम ने प्रतिनिधि भी भी ।

१६२ प्रति सं २५ । पत्र सं ४ से १ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं १२२२ । क मथार ।

१६२१ प्रति सं २६ । पत्र सं १९ । ते नाल × । अणुर्ल । के सं १७०८ । क मथार ।

१६२२ प्रति सं २७ । पत्र सं २३७ । ते नाल सं १७४६ । के सं १६९ । क मथार ।

विशेष—अधि एतन्नक्षत्र नक्ष दीया इतिह है ।

१६२३ प्रति सं २८ । पत्र सं २ । ते नाल × । के सं १२ । क मथार ।

१६२४ समापसारभावा—अथयम् अथवा । पत्र सं २१३ । या १२ × इत्य । नाला—हिन्दी

(नक्ष) । विषय—नालम । र नाल सं १९४ कार्तिक कुटी १ । ते नाल सं १६४६ । अणुर्ल । के सं ७४८ ।

क मथार ।

१६२५. प्रति सं २९ । पत्र सं ४६६ । ते नाल × । के सं ७४६ । क मथार ।

१६२६ प्रति सं ३० । पत्र सं २१६ । ते नाल × । के सं ७३ । क मथार ।

१६०७ प्रति स० ४ । पत्र न० ३२५ । ले० बाल स० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—नदामुण्डी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिनिधि की थी ।

१६२८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल स० १८७७ प्रापाङ्ग बुदी १५ । वे० न० १११ । घ  
ण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लगनऊ मे नवाब गजुदीह बहादुर के राज्य मे प्रतिनिधि की ।

१६२९ प्रति स० ६ । पत्र न० ३७५ । ले० बाल स० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३० प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ ने ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१ प्रति स० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२ समयसारङ्गलशाटीका । पत्र स० २०० से ३३२ । मा० ११२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पञ्चात्म । २० बाल × । ले० बाल स० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—रूप मोक्ष सर्व विमुक्त ज्ञान और त्यागद्वारा चूलिया ये चार अधिकार पूर्ण हैं । दोष अधिकार नहीं

है । पहिले बलदा विद्ये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी मे अर्थ है । समयसार टीना श्लोक स० ५८६५ है ।

१६३३ समयसारङ्गलशाभाषा । पत्र स० ६२ । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—पञ्चात्म । २० बाल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका " । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९८ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० बाल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । मा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग

शास्त्र । २० बाल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० बाल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९ प्रति स० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ ।

क भण्डार ।

१६४० समाधितन्त्र । पत्र स० १६ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।

२० बाल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र स० १३८ से १९२ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२ समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी

विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३ प्रति सं० २। पत्र सं ७२। ले नम सं १६४२। के सं ७२३। क मध्याह्न।

१६४४ प्रति सं ३। पत्र सं १। ले नम ×। के सं ७२४। क मध्याह्न।

विषय—हिन्दी धर्म व्यवस्थाप विभोत्वा द्वारा मुद्र विवा मया है।

१६४५ प्रति सं ४। पत्र सं २। ले नम ×। के सं ७२५। क मध्याह्न।

१६४६ समाहितम्बमाया—नाथूराम शशी। पत्र सं ४१२। पा १२२×७ इज। मत्ता—हिन्दी

विषय—मोम। र नम सं १६२३ नैव मुदी १२। ले नम सं १६३। पूर्ण। के सं ७२६। क मध्याह्न।

१६४७ प्रति सं २। पत्र सं २१। ले नम ×। के सं ७२७। क मध्याह्न।

१६४८ प्रति सं ३। पत्र सं १९। ले नम सं १६२१ वि ग्रेड मुदी १। के सं ७

क मध्याह्न।

१६४९ प्रति सं ४। पत्र सं १७२। ले नम ×। के सं १६७। क मध्याह्न।

१६५० समाहितम्बमाया—वर्षेवर्षमर्षि। पत्र सं १५७। पा १२३×२ इज। मत्ता—मुद्रक

विधि हिन्दी। विषय—मोम। र नम ×। ले नम ×। पूर्ण। के सं १६८। क मध्याह्न।

विषय—वीच के मुद्र पत्र मुद्राच विदे मने है। कार्तदपुर निवासी वं ककरस के प्रतिनिधि वी वी।

१६५१ प्रति सं २। पत्र सं १५८। के नम सं १७४१ वार्तिक मुदी २। के सं १६९। क मध्याह्न।

मध्याह्न।

१६५२ प्रति सं ३। पत्र सं ११। ले नम ×। पूर्ण। के सं ७१। क मध्याह्न।

१६५३ प्रति सं ४। पत्र सं २१। ले नम ×। के सं ७२। क मध्याह्न।

१६५४ प्रति सं ५। पत्र सं १७४। ले नम सं १७१। के सं ११। क मध्याह्न।

विषय—छोरीपुर के वं कविनराय के प्रतिनिधि वी वी।

१६५५ प्रति सं ६। पत्र सं १३२। ले नम ×। प्रमुख। के सं १५२। क मध्याह्न।

१६५६ प्रति सं ७। पत्र सं १२४। ले नम सं १७३५ वीच मुदी ११। के सं ५४। क मध्याह्न।

मध्याह्न।

विषय—पार्थे उभोत्तम मत्ता के वैकरत्तम बोटी से बहिन मर्षी के पटमार्थ छोरीर के प्रतिनिधि वर

वाणी वी। प्रति मुद्रका वादन है।

१६५७ प्रति सं ८। पत्र सं २३। ले नम ७ १७१ वाक्य मुदी ११। के सं २६। क मध्याह्न।

मध्याह्न।

१६५८ समाधिमर्यादा—। पत्र सं ४। पा ७×१३ इज। मत्ता—नाथूर। विषय—वापसन।

र नम ×। ले नम ×। पूर्ण। के सं १६२६।

१६५९ समाधिमर्यादाया—घान्तराय। पत्र सं ३। पा ५×४ इज। मत्ता—हिन्दी। विषय—

वापसन। र नम ×। ले नम ×। पूर्ण। के सं ५४२। क मध्याह्न।

१६६० प्रति सं २। पत्र सं ४। ले नम ×। के सं ७७६। क मध्याह्न।

१६६१ प्रति सं ३। पत्र सं २। ले नम ×। के सं ७७७। क मध्याह्न।

१६६० समाधिभरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिभरणभाषा—सूरचन्द । पत्र स० ७ । आ० ७ $\frac{3}{4}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० म० १४७ । छ मण्डार ।

१६६४ समाधिभरणभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३ $\frac{3}{4}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८४ । ड भण्डार ।

१६६५ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६ समाधिभरणस्वरूपभाषा । पत्र स० २५ । आ० १० $\frac{3}{4}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८३१ । अ भण्डार ।

१६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८८३ मगसिर बुदी ११ । वे० स० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

१६६८ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ६९९ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति स० ४ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३४ भादवा सुदी १ । वे० स० ७०० । च भण्डार ।

१६७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ८ । वे० स० २३९ । छ भण्डार ।

१६७१ प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८५३ पौष बुदी ९ । वे० स० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवशा खुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२ समाधिशातक—पूज्यपाठ । पत्र स० १९ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० म० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १९२४ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५ समाधिशातकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५० । आ० १२ $\frac{3}{4}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १९३५ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ७६५ । क भण्डार ।

१६७७ प्रति स ३। पत्र सं २४। नै काल सं ११३। कण्डूयुगी १३। नै सं ३३। अ  
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। अथगुर मे प्रतिविधि हुई थी।

१६७८ प्रति स ४। पत्र सं ७। नै काल ×। नै सं १७४। अ अथगुर।

१६७९ प्रति सं ५। पत्र सं १४। नै काल ×। नै सं ७५३। अ अथगुर।

१६८० समाधिशास्त्रटीका—। पत्र सं १३। या १९×२५ इज। भाषा—संस्कृत। विषय—  
अभ्यन्तर। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ११३। अ अथगुर।

१६८१ संतोषपर्यायटीका—शैतमत्स्यमी। पत्र सं १६। या २५×४ इज। भाषा—प्रकृत।  
विषय—अभ्यन्तर। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ७५६। अ अथगुर।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१६८२ संतोषपर्यायटीका—रघु। पत्र सं ३। या ११×६ इज। भाषा—अभ्यन्तर। र काल ×।  
नै काल सं १७११ पीठ युगी ३। पूर्ण। नै सं १२६। अ अथगुर।

विशेष—यं विद्यापीठस्थ भी इसकी प्रतिविधि करवायी थी। अवधि—

अथ १७११ वर्षे विद्यु पीठ परि ७ गुण विने महात्मनादिपत्र भी संविहृती विषयसम्बन्धे इज भी  
इतरपत्र उपरुप सज्ज भी केशवपत्र उपरुप अथ अथगुर पुत्र सज्ज पारमलकी। द्वितीय पुत्र साह भी अथिफर्से तृतीय पुत्र  
साह देवकी। अथि अथगुर सज्ज भी अथमलकी अथ पुत्र अथिपत्र सज्ज भी विद्यापीठस्थ भी लिखायी।

शोधका—गुरुप भाषक भी अथे, कुछ अथपीठ विद्या।

शो पद्यादि देखिने अथि विद्यापीठस्थ ॥

विशेष महत्त्वा नु बरही पण्डित परमश्रीभी वा केवा अथगुर अथे पत्नी पीये शोधकात् मुकाम लिखी अथे।

१६८३ संतोषशास्त्र—दान्तराज। पत्र सं १४। या ११×७ इज। भाषा—हिन्दी। विषय—  
अभ्यन्तर। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ७५६। अ अथगुर।

विशेष—अथ २ पत्रों में अथका अथक भी है। अथि शीर्षी अथर से बनी हुई है।

१६८४ संतोषशास्त्र—। पत्र सं १६। या ११×७ इज। भाषा—प्रकृत। विषय—  
अभ्यन्तर। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १। अ अथगुर।

१६८५ त्वरीयुक्त—। पत्र सं १६। या ११×७ इज। भाषा—संस्कृत। विषय—वीथ। र  
काल ×। नै काल सं ११३ अथिगुर युगी १३। पूर्ण। नै सं १४३। अ अथगुर।

विशेष—अथि हिन्दी टीका सहित है। शैतमत्स्यी के विषय अथमल मे टीका लिखी थी।

१६८६ त्वरीयुक्त—भाषुपत्र। पत्र सं ११। या १३×२ इज। भाषा—हिन्दी (पठ)।  
विषय—अभ्यन्तर। र काल सं ११३ अथिगुर युगी १३। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १५७। अ अथगुर।

१६८७ अथमलश्रीविका—। पत्र सं ११। या ११×२ इज। भाषा—संस्कृत। विषय—वीथ।  
र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १५४। अ अथगुर।

## विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८ अर्ध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र स० २ से १२ । भा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भापा-संस्कृत । विषय-जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९७५ । अ मण्डार ।

१६८९ अष्टशती—अकलकदेव । पत्र स० १७ । भा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भापा-संस्कृत । विषय-जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७९४ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २२२ । अ मण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६९० प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८७५ फागुन सुदी ३ । वे० स० १५९ । अ मण्डार ।

१६९१ अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र स० १९७ । भा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भापा-संस्कृत । विषय-जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७९१ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २४४ । अ मण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि सुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । प० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति—

श्री भूरावल सध मडनमणि , श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसघाग्रणी सवत्सरे चद्र रघ्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पञ्चम्या तिथौ चोखचदेण विदुषा शुभ पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृत ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचद्रेण धीमता ।

प्रहीत शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४० । अ मण्डार ।

१६९३ आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र स० २५७ । भा० १२×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भापा-संस्कृत । विषय-जैन न्याय । २० काल × । ले० काल स० १९३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५८ । अ मण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६९४ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ५९ । अ मण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६९५ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३३ । अपूर्ण । अ मण्डार ।

१६६६ आश्रीमांसा—समस्तमहाभारत । पृष्ठ सं ४ । या १२५×११ इत्य । ज्ञाना—संस्कृत ।

विषय—येन ज्ञान । २ काल × । के जाल सं १२१२ ज्ञाना कुटी ७ । पूर्ण । के सं १ । क मध्यार ।

विशेष—इत एव क बुद्धता नाम 'वेदान्तमस्तौष सतीक मृष्ट्यती' विया सुधा है ।

१६६७. प्रति सं २ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । के सं ११ । क मध्यार ।

विषय—प्रति ७१७७ टीका बहित है ।

१६६८. प्रति सं ३ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । के सं ११ । क मध्यार ।

१६६९. प्रति सं ४ । पृष्ठ सं १ । के जाल × । के सं १२ । क मध्यार ।

१७०० आश्रीमांसासंस्कृति—विद्यामन्त्रि । पृष्ठ सं २२९ । या १६×७ इत्य । ज्ञाना—संस्कृत ।

विषय—जान । २ काल × । के जाल सं १७१६ ज्ञाना कुटी १२ । के सं १४ ।

विशेष—इसो ना नाम मृष्ट्यती ज्ञान एवा मृष्ट्यहोमी है । मालतुता ज्ञान मे महाताजविद्वान् राजविद्

मी के ज्ञानमजाल में ज्ञानु व ने एव की प्रतिष्ठिति करवायी थी । प्रति काशी बड़ी सारज थी है ।

१७०१ प्रति सं २ । पृष्ठ सं २२१ । के जाल × । के सं ४६६ । क मध्यार ।

विशेष—प्रति बड़ी सारज थी तथा तुल्य विधी हुई है । प्रति प्रबर्द्धन मीक है ।

१७०२ प्रति सं ३ । पृष्ठ सं १७२ । या १९×२५ इत्य । के जाल सं १७५ ज्ञाना कुटी

१ । पूर्ण । के सं ७१ । क मध्यार ।

१७०३ आश्रीमांसासामा—अक्षयम् ज्ञाना । पृष्ठ सं ६२ । या १९×२ इत्य । ज्ञाना शिपी ।

विषय—जान । २ काल सं १९९ । के जाल १ २ । पूर्ण । के सं ३६२ । क मध्यार ।

१७ ४ ज्ञानापपत्ति—वेदसेन । पृष्ठ सं १ । या १ × २ इत्य । ज्ञाना—संस्कृत । विषय—

वर्धन । २ काल × । के जाल × । पूर्ण । के सं २ । क मध्यार ।

विशेष—१ उठ से ४ उठ तक प्राकृतमार ४ से १ तक उत्तरार्ध एव थीर है ।

प्राकृतसार—श्रीद्विधिर भारतवर्ष विषयवर्षिक घटितकालेनेर्देव ववित ।

१७०५. प्रति सं २ । पृष्ठ सं १ । के जाल सं ११ ज्ञाना कुटी ४ । के सं १२७ । क

मध्यार ।

विशेष—जान मे प्राकृतसार तथा उत्तरार्ध है । कानपुर मे प्राकृतसार नाम के प्रतिष्ठिति थी थी ।

१७ ६ प्रति सं ३ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । के सं ७६ । क मध्यार ।

१७०७ प्रति सं ४ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । पूर्ण । के सं ३६ । क मध्यार ।

१७०८. प्रति सं ५ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । के सं ३ । क मध्यार ।

१७०९. प्रति सं ६ । पृष्ठ सं ११ । के जाल × । के सं ४ । क मध्यार ।

विशेष—तुल्य के ज्ञानार्थ विषय के उत्तरार्ध प्रतिष्ठिति थी वही थी ।

१७१० प्रति स० ७ । पत्र स० ७ से १५ । ले० काल स० १७८६ । अपूर्ण । वे० स० ५१५ । त्र

भण्डार ।

१७११ प्रति स० ८ । पत्र स० १० ले० काल × । वे० स० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२ ईश्वरवाद । पत्र स० ३ । भा० १०×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र०

काल × । पूर्ण । वे० स० २ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३ गर्भपट्टारचक्र—देवनदि । पत्र स० ३ । भा० ११×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । क भण्डार ।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स० २४ । भा० १२×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । र०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २३ । क भण्डार ।

१७१६ प्रति स० ३ । पत्र स० २७ से ६४ । ले० काल स० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स०

१५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुगो चित्तधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सबल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्ण ।

१७१७ ज्ञानदीपकवृत्ति । पत्र स० ८ । भा० ६<sup>३</sup>×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णचिद्रूप नित्योदितमनाश्रुत ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिङ्गितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरै ।

स्वरस्नेहन सयोग्य ज्वालयेदुत्तराघरै ॥२॥

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र स० ४० । भा० १०×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९ तर्कदीपिका । पत्र स० १५ । भा० १४×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०

काल × । ले० काल स० १८३२ माह सुदा १३ । वे० स० २२४ । ज भण्डार ।



१७२. तर्कप्रमास—। पत्र सं १२। मा २ × ४५ दण्ड। ग्वाण-संस्कृत। विषय-ग्नान।  
 र गाल ×। ले गाल ×। धर्म एवं शीर्ष। वे सं १९४२। अ मन्थार।

१७२१. तर्कभाषा—केरल मित्र। पत्र सं ४४। मा १ × ४५ दण्ड। ग्वाण-संस्कृत। विषय-ग्नान। र गाल ×। ले गाल ×। वे सं ७१। अ मन्थार।

१७२२. प्रति सं २। पत्र सं २६। वे गाल सं १७४२ ग्वाण कुटी १। वे सं १७१।  
 अ मन्थार।

१७२३. प्रति सं ३। पत्र सं ९। मा १ × ४५ दण्ड। ले गाल सं १९९२ ग्वाण कुटी १। वे सं २२२। अ मन्थार।

१७२४. तर्कभाषाप्रतिभा—वाल्कलम्बु। पत्र सं १३। मा १ × ११ दण्ड। ग्वाण-संस्कृत।  
 विषय-ग्नान। र गाल ×। ले गाल ×। वे सं ३११। अ मन्थार।

१७२५. तर्कप्रमासपीठिका—गुणरत्नसूरी। पत्र सं १११। मा १ × ४५ दण्ड। ग्वाण-संस्कृत।  
 विषय-ग्नान। र गाल ×। ले गाल ×। धर्म। वे सं २९९४। अ मन्थार।

विशेष—श्री हरिहर के चतुर्थेन समुक्त्येन ली टीका है।

१७२६. तर्कप्रमास—अर्जुनसूरी। पत्र सं ७। मा १ × ४५ दण्ड। ग्वाण-संस्कृत। विषय-ग्नान।  
 र गाल ×। ले गाल ×। धर्म। वे सं ४२। अ मन्थार।

१७२७. प्रति सं २। पत्र सं ४। ले गाल सं १२४ अ मन्थार कुटी २। वे सं ४७। अ  
 मन्थार।

विशेष—राज्य कुलराज के राज्या में लक्ष्मीराज के लक्ष्मीपुर के स्वाम्यार्थ प्रतिनिधि ली ली।

१७२८. प्रति सं ३। पत्र सं ६। ले गाल सं ११२ ग्वाण कुटी ११। वे सं ४५। अ  
 मन्थार।

विशेष—ली ली ग्वाणकुण्ड ग्वाणकुण्ड ली है। निरुक्त विवरण ली ली कुटी ११ संवत् १११ ग्वाण ली ली  
 हुआ है।

१७२९. प्रति सं ४। पत्र सं १। ले गाल सं १७९१ ग्वाण कुटी १२। वे सं १७२। अ  
 मन्थार।

विशेष—ग्वाण के वैदिक ग्वाण ग्वाण में ग्वाण ग्वाण ग्वाण के ग्वाण ( ग्वाण ) ग्वाण के स्वाम्यार्थ  
 प्रतिनिधि ली ली।

१७३०. प्रति सं ५। पत्र सं ४। ले गाल सं १४१ ग्वाण कुटी ४। वे सं १७१। अ  
 मन्थार।

विशेष—लेना ग्वाण ग्वाण ग्वाण।

१७३१. प्रति सं ६। पत्र सं ६। ले गाल सं १३६। वे सं १७२। अ मन्थार।  
 विशेष—ग्वाण ग्वाण ग्वाण के ग्वाण ग्वाण के ग्वाण ग्वाण के प्रतिनिधि ली ली।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अथ भण्डार में तीन प्रतिया ( वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६ ) ङ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २७४ ) च भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३६ ) ज भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० ४६, ४६, ३४० ) ट भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १७६६, १८३२ ) और हैं ।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका । पत्र सं० ८ । भा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । भा० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३५. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । भा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन ।  
२० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पादर्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० वस्तराम के शिष्य हरवदा ने नेमिनाथ चैत्यालय ( गोधों के मन्दिर ) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टक्का टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्रपदा बुदी ८ । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० श्रावण बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४०. दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । भा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा । पत्र सं० ७२ । भा० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । अ भण्डार ।

१७४३. द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१७४४ प्रति स २। पत्र सं ४। ले काल ×। के सं १७६। ट मन्थार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१७४५ नमकक्र—देवसेन। पत्र सं ४२। पा १ २×७ दण्ड। जला-मण्डप। विपय-उत्त मन्थे वा वर्तन। ८ काल ×। के काल सं १६४३ पीन सुरी १२। पूर्ण। के सं ११२। क मन्थार।

विशेष—इस का उद्घाटन नाम मुक्तवीरार्थ मला पत्रिणी भी है। उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क मन्थार में तीन प्रतिमां ( के सं १२१ १२४ १२६ ) का क मन्थार में एक एक प्रति ( के सं १७७ व १ १ ) भी है।

१७४६ नमकक्रमाया—हेमाद। पत्र सं २१। पा १ २×४७ दण्ड। जला-हिन्दी (वच)। विपय-उत्त मन्थे वा वर्तन। ८ काल सं १७२६ कादुण सुरी १। ले काल सं १६१५। पूर्ण। के सं १६७। क मन्थार।

१७४७ प्रति स २। पत्र सं ६। ले काल सं १७२६। के सं १२। क मन्थार।

विशेष—७७ वच से उत्तार्थ सुख टीका के अनुसार वच वर्तन है।

मोट—उक्त प्रतिमां के प्रतिरिक्त क क, क म मन्थारों में एक एक प्रति ( के सं १४२, १५७ १२१ १ ) क मन्थार भी है।

१७४८ नमकक्रमाया —। पत्र सं १६। पा १ ×४ दण्ड। जला-हिन्दी। ८ काल ×। ले काल सं १६४५ कादुण सुरी ६। पूर्ण। के सं ११६। क मन्थार।

१७४९. नमकक्रमायप्रकाशिबीटीका—मिह्राकचम् काप्रबन्ध। पत्र सं १२७। पा १ २×७६ दण्ड। जला-हिन्दी (वच)। विपय-व्याज। ८ काल सं १ १७। ले काल सं १६४४। पूर्ण। के सं १६। क मन्थार।

विशेष—यह टीका कालपुर बंद में भी गई थी।

१७५० प्रति स २। पत्र सं १४। ले काल ×। के सं १६२। क मन्थार।

१७५१ प्रति स ३। पत्र सं २२४। ले काल सं १६६ कादुण सुरी ६। के सं १६२। क मन्थार।

विशेष—कचुर में प्रतिमिति भी बनी थी।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—महू काचक्रंकेव। पत्र सं १२। पा १ २×४६ दण्ड। जला-उत्त मन्थे। विपय-वर्षण। ८ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २७। क मन्थार।

विशेष—क १ के ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय २ परिच्छेद तथा वेच पूर्णों में कृष्णलक्ष्मणव्यासपुत्रिणी ज्ञान वच प्रीत है।

१७५३ प्रति स ३। पत्र सं १५। ले काल सं १ ६४ पीन सुरी ०। के सं १। क मन्थार।

विशेष—इसमें उक्त में प्रतिमिति भी थी।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र स० ५८८ । प्रा० १८३/५ इक्ष । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । १० पान × । ले० पान स० १६३७ । पूर्ण । वे० म० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टाचरणक वृत्त न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५ न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र स० ३ स ८ । प्रा० १०३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतिभा ( य० स० ३०७, ३६८ ) घ एव च भण्डार में एव २ प्रति

( वे० स० ३६७, १८०, च भण्डार में ० प्रतिभा ( वे० स० १८०, १८१ ) तथा ज भण्डार में एव प्रति

( वे० स० ५२ ) प्रौर है ।

१७५६ न्यायदीपिकाभाषा—मदासुख फासलीवाल । पत्र म० ७१ । प्रा० १४/७ इक्ष । भाषा—

हिन्दी । विषय—दर्शन । १० काल स० १६३० । ले० काल म० १६३८ येनाय मुद्रा ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । अ

भण्डार ।

१७५७ न्यायदीपिकाभाषा—सधी पद्मालाल । पत्र म० १६० । प्रा० १२१/७ इक्ष । भाषा—

हिन्दी । विषय—न्याय । १० काल म० १६३५ । ले० काल न० १६४१ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

१७५८ न्यायमाला—परमहंस परिघ्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र स० ८६ ने १२७ ।

प्रा० १०३/५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल स० १६०० सायण बुदी ५ । अपूर्ण ।

वे० स० २०६३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र । पत्र स० २ में ५२ । प्रा० १०१/६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६७६ । अ भण्डार ।

१७६० प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० न० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—कित्ती न्याय ग्रन्थ में उद्धृत है ।

१७६१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० १५ । ज भण्डार ।

१७६० प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । ट भण्डार ।

१७६३ न्यायसार—माधवदेव ( लक्ष्मणदेव का पुत्र ) पत्र स० २८ में ८७ । प्रा० १०३/४ इक्ष ।

भाषा संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल स० १७४६ । अपूर्ण । वे० स० १३४३ अ भण्डार ।

१७६४ न्यायसार । पत्र स० २४ । प्रा० १०/६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रागम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र स० १४ ले ४६ । प्रा० ६३/३ इक्ष । भाषा—

संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल स० १७७४ । अपूर्ण । वे० स० १५७८ । अ भण्डार ।

१७६६ ग्याससिद्धांतमञ्जरी—महाभारतं ब्रह्मसूत्रम् । पत्र सं २ । या १३×९ दण्ड । पात्वा-  
 वस्तुतः । विपय—आम । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २३ । अ मन्वार ।

विशेष—श्रीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७ ग्याससूत्र— । पत्र सं ४ । या १ × ४<sup>१</sup> दण्ड । पात्वा—संस्तुत । विपय—आम । र  
 काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२२ । अ मन्वार ।

विशेष—इस व्याकरण में से ग्यास सम्बन्धी सुत्रों का संग्रह किया गया है । आचारान्त के प्रतिनिधि श्री श्री ।

१७६८. पट्टीति—विद्युत्सूत्रम् । पत्र सं २ से ९ । या १ × १<sup>१</sup> दण्ड । पात्वा—संस्तुत । विपय-  
 आम । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२१७ । अ मन्वार ।

विशेष—दक्षिण पूर्विका— इति शास्त्रार्थं श्रीवर्मा संश्लेषी विद्यालये विद्युत्सूत्रं पट्टीतिना बालमुत्तमे  
 कृत । प्रति प्राचीन है ।

१७६९. पत्रपटीका—विद्यालये । पत्र सं १२ । या ११<sup>१</sup> × ९ दण्ड । पात्वा—संस्तुत । विपय—आम ।  
 र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ७७६ । अ मन्वार ।

१७७० प्रति सं २ । पत्र सं १२ । ले काल सं १९७७ पात्रोप तुटी ९ । के सं १९४१ । अ  
 मन्वार ।

विशेष—केलुप में श्री विप श्रीवास्तव के विद्यार्थीपत्र के प्रतिनिधि श्री श्री ।

१७७१ पत्रपटीका—पात्र केवरी । पत्र सं १७ । या १९<sup>१</sup> × २ दण्ड । पात्वा—संस्तुत । विपय-  
 आम । र काल × । ले काल सं १९१४ पात्रोप तुटी ११ । पूर्ण । के सं ४२७ । अ मन्वार ।

१७७२ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले काल × । के सं ४२ । अ मन्वार ।

विशेष—संस्तुत टीका कथित है ।

१७७३ परीक्षासूत्र—माध्विकयतदि । पत्र सं २ । या १ × २ दण्ड । पात्वा—संस्तुत । विपय-  
 आम । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ४३९ । अ मन्वार ।

१७७४ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले काल सं १९९ पात्वा तुटी १ । के सं २११ । अ  
 मन्वार ।

१७७५ प्रति सं ३ । पत्र सं २७ से १९६ । ले काल × । पूर्ण । के सं १९४ । अ मन्वार ।  
 विशेष—संस्तुत टीका कथित है ।

१७७६ प्रति सं ४ । पत्र सं ९ । ले काल × । के सं २१ । अ मन्वार ।

१७७७ प्रति सं ५ । पत्र सं १४ । ले काल सं १९५ । के सं १४२ । अ मन्वार ।

लेखन काल ज्ञप्ते ज्योति विधि विधि श्रीवि से मध्यरात्रि )

१७७८ प्रति सं ६ । पत्र सं ९ । ले काल × । के सं १७१ । अ मन्वार ।

१७५६ परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छावडा । पत्र स० ३०६ । मा० १२×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल स० १८६३ भाषाड सुदी ५ । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वे० स० ४५१ । क भण्डार ।

१७८० प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर प्रक्षरो में है । एव पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । ग्रन्थ पत्रो पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ श्रुता छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १६३० मगसिर सुदी २ । वे० स० ५६ । घ भण्डार ।

१७८२ प्रति स० ४ । पत्र स० १२० । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । ले० काल स० १८७८ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३ प्रति स० ५ । पत्र स० २१८ । ले० काल × । वे० स० ६३६ । च भण्डार ।

१७८४ प्रति स० ६ । पत्र स० १६५ । ले० काल स० १६१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० स० ६४० । च भण्डार ।

१७८५ पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र स० ६ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६ प्रमाणनयतत्त्वालोकालकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र स० २८८ । मा० १२×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरायतारिका' है । मूलकर्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७८७ प्रमाणनिरणय । पत्र स० ६४ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६७ । क भण्डार ।

१७८८ प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानदि । पत्र स० ६६ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६३४ भासोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

१७८९ प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिरापाढमासस्यपक्षेप्यामलके तिथौ तृतीयाया प्रमाणाम्य परीक्षा लिखिता खतु ॥१॥

१७९० प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र स० २०२ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल स० १६१३ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

१७९१ प्रति स० २ । पत्र स० २१६ । ले० काल × । वे० स० ५०० । क भण्डार ।

१७९२ प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र स० ६७ । मा० १२×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३ प्रयागमीमांसा—विद्यानिधि । पत्र नं ५ । पृ ११२×७२ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । र काल × । नै काल × । पूर्ण । के नं १९ । क मन्थार ।

१७६४ प्रयागमीमांसा— । पत्र नं १९ । पृ ११ × इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । र काल × । नै काल नं १६२७ मत्ताग मुरी १३ । पूर्ण । के नं २९ । क मन्थार ।

१७६५ प्रयागमीमांसा—विद्यानिधि । पत्र नं १७६ । पृ ११×२ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—वर्षा । र काल × । नै काल × । पूर्ण । के नं १७५ । क मन्थार ।

विषय—कृ १३४ तथा १७६ के मते नहीं है ।

१७६६ प्रति स ३ । पत्र नं २३ । नै काल नं १२४२ ग्रेह मुरी ३ । के नं २९ । क मन्थार ।

१७६७ प्रति स ३ । पत्र नं २३ । नै काल × । पूर्ण । के नं २४ । क मन्थार ।

१७६८ प्रति स ५ । पत्र नं ११ । नै काल × । के नं १२१७ । क मन्थार ।

विषय—२ वर्षो वक्र संज्ञा दीया की है । सर्वज्ञ सिद्धि ने गणेशपति की कल्पना तक है ।

१७६९ प्रति स ५ । पत्र नं ५ नै १४ । पृ १ × ४२ इत्य । नै काल × । पूर्ण । के नं १२४७ । क मन्थार ।

१८ प्रमेयप्रमाण—अनन्तबीर्ष । पत्र नं १२६ । पृ १२×२ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । र काल × । नै काल नं १६३४ मत्ताग मुरी ७ । के नं ५२९ । क मन्थार ।

विषय—परीक्षासूत्र की टीका है ।

१८ १ प्रति स ३ । पत्र नं १२७ । नै काल नं १६ । के नं २३ । क मन्थार ।

१८ २ प्रति स ३ । पत्र नं १३ । नै काल नं १७६७ मत्ताग मुरी १ । के नं ११ । क मन्थार ।

विषय—गणेशपुर के प्लगवि के प्रतिनिधि की की ।

१८ ३ वाङ्मयादिनी—शास्त्र भगति । पत्र नं १३ । पृ १ × ४ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । र काल × । नै काल × । पूर्ण । के नं १३२२ । क मन्थार ।

१८ ४ भाष्यदीपिका—कृष्ण रामा । पत्र नं ११ । पृ ११×१२ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । नै काल × । पूर्ण । के नं ११२ । क मन्थार ।

विषय—विद्यानमन्त्र की व्याख्या की हुई है ।

१८ ५ भाष्यदीपिका— । पत्र नं १२ नै १२ । पृ १ ३ × ४ इत्य । मत्ता—संस्कृत । विषय—व्यास । र काल । नै काल नं १६३३ मत्ताग मुरी ११ । पूर्ण । के नं १२२ । क मन्थार ।

विषय—मन्त्र १२२३ वरें मन्त्र मुरी ११ की वरें मन्त्र की मत्ताग मुरी वरें वरें वरें विद्यानिधि ।

१८०६ युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ९ । मा० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०४ । क मण्डार ।

१८०७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । ६०५ । क मण्डार ।

१८०८ युक्त्यनुशासनटीका—त्रिद्यानन्दि । पत्र स० १८८ । मा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १९३४ पीप सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । क मण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ६०२ । क मण्डार ।

१८१० प्रति स० ३ । पत्र स० १४२ । ले० काल स० १९४७ । वे० स० ६०३ । क मण्डार ।

१८११ बीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र स० ७ । मा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २५२ । अ मण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी । सवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट  
दुर्गेऽनसत् ।

१८१२ बीरद्वान्निगतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र स० ३३ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७७ । अ मण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८१३ पद्दर्शनार्त्ता । पत्र स० २८ । मा० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५१ । ट मण्डार ।

१८१४ पद्दर्शनविचार । पत्र स० १० । मा० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७४२ । क मण्डार ।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया  
हुमा है ।

१८१५ पद्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र स० ७ । मा० १२३×५ इ च । विषय—दर्शन । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०९ । क मण्डार ।

१८१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ९८ । घ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ७४३ । क मण्डार ।

१८१८ प्रति स० ४ । पत्र स० ९ । ले० काल स० १५७० भादवा सुदी २ । वे० स० ३९९ । ब  
मण्डार ।

१८१९ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८६४ । ट मण्डार ।

१८२० पद्दर्शनसमुच्चय—गणरतनसूरि । पत्र स० १८५ । मा० १३×८ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १९४७ द्वि० भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ७११ । क मण्डार ।



१८२१ पञ्चद्वारांसमुखाप्रीका— पत्र सं २ । पा ११३×२२ इव । शाला-बंसकृत । विषय-वर्षन । १८ नाल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ७१ । छ अक्षर ।

१८२२. सङ्ग्रहवेदांशरात्रप्रक्रिया— । पत्र सं ४६ । पा १२×२३ इव । शाला-मंसकृत । विषय-वर्षन । १८ नाल × । ले काल सं १७२७ । के सं ३९७ । छ अक्षर ।

१८२३ सप्तमशाखशोध—मुनिनेत्रसिंह । पत्र सं ९ । पा १ × ४ इव । शाला-बंसकृत । विषय-वर्षन ( इत नमो का वर्णन है ) । १८ नाल × । ले काल सं १७४२ । पूर्ण । के सं ३४२ । छ अक्षर ।

प्रारम्भ— विषय-मुनि-नक्षत्राः सर्वशाखा सुविख्या ।  
 विषयवृद्धितन्मा शैठैषां सुप्रसन्ना ॥  
 उक्तप्रवृत्तारस्तैस्त्वमला तथा मे ।  
 विषयसु सुकृतं क्व वरम्प्रपत्ते ॥१॥  
 नावर्षं प्रकम्पायी उत्तमशाखशोधं  
 मे सुखा वैष मायेद्य बक्ष्यन्ति सुविधो वता ॥२॥

इसके पञ्चद्वीका प्रारम्भ होती है । बीसवीं प्रारम्भे पर्वोत्तैवेति तथा शीघ्र प्रारम्भे इति नक्षत्रम् ।

अन्तिम— उत्तुष्मं मुनि-वर्षकर्माधिकारं योर्षं कर्म निर्णयं ।  
 कर्म वेन वनेन निरवकनवाद् भी नेपूँक्षिषीषितः ॥  
 स्पष्टावतन्त्राभिहितो वचनः वे योष्यति धर्मनं सुतमवधोर्षं ।  
 शोष्यति नैवातमर्षं सुदीर्घं बीसं पविष्यति सुकृतं कम्पाः ॥

इति श्री उत्तमशाखशोधं शास्त्र मुनिनेत्रसिंहैव विरचितं शुभं कैव ।

१८२४ सप्तद्वार्या— पत्र सं ३६ । पा ११×२ इव । शाला-बंसकृत । विषय-वीन वतसुखा वत कर्षा का वर्णन है । ले काल × । १८ नाल × । पूर्ण । के सं १ । छ अक्षर ।

१८२५. सप्तद्वार्या—श्रीशिवित्थ । पत्र सं × । पा १ ३/४ × ४ इव । शाला-बंसकृत । विषय-वैदिक म्याक के प्रसुवात् उत्त पर्वो वा वर्णन । १८ नाल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२२९ । छ अक्षर । विषय—वक्तुर मे प्रतिशिवि श्री श्री ।

१८२६ सम्प्रदितर्क—सूक्ष्मकर्षा सिद्धसंन विद्याकर । पत्र सं ४५ । पा १ × ४ इव । शाला-बंसकृत । विषय-म्याक १८ नाल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ९३ । छ अक्षर ।

१८२७. सारसंमह—वरदण्ड । पत्र सं २ के ७३ । पा- १ × ४ इव । शाला-मंसकृत । विषय-वर्षन । १८ नाल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २१ । छ अक्षर ।

१८२८. सिद्धांशमुक्तप्रक्रिया—महाशेखरम्ह । पत्र सं २ । पा ११×४ इव । शाला-बंसकृत । विषय-म्याक १८ नाल × । के काल सं १७२२ । के सं ११७९ । छ अक्षर ।

विषय—वैदिक काल है ।

१८२६ स्याद्वाटचूल्निका । पत्र स० १५ । भा० ११३×५ द व । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल > । से० काल स० १६३० फात्तिक बुदी ५ । वे० स० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—नागयात्रा नगर मे राज तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । ममयगार के कुछ पाठो का अर्थ है ।

१८३० स्याद्वाटमखुरी —मल्लिषेणसूरि । पत्र स० ४ । भा० १२३×५ द व । भाषा—संस्कृत ।

विषय—दर्शन । २० काल > । से० काल > । पूर्ण । वे० स० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१ प्रति स० २ । पत्र स० ५८ से १०६ । से० काल स० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्णा । वे० स०

३६६ । अ भण्डार ।

१८३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । भा० १२×५० द न । से० काल > । पूर्ण । वे० स० ८६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—देवल कारिकामात्र है ।

१८३३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । से० काल > । अपूर्णा । वे० स० १६० । अ भण्डार ।



## विषय- पुराण साहित्य

१८३४ अश्विनुवाय—संहिताभाष्ये अरण्यमण्डि । पत्र ७ २०३ । पा १३×३२ इति । अना-  
संहार । विषय-नुवाय । १ नाल सं १०१६ । नाल सं १०५६ अष्टमुरी २ । पूर्ण । न सं २१ । अ  
मन्थार ।

प्रसूति—संन १०५६ पत्र विटी केष्ट मुरी २ । अह्लाकाराम्भे विषयस्ये पात्रमं हर्षीरिटी  
मयापान स्वयमन्थार ।

१८३५ प्रति सं २ । पत्र सं २९ । नाल × । मूर्त्त । न सं १० । अ मन्थार ।

विषय—१९वें पर्व के १४वें श्लोक तक है ।

१८३६ अश्विनुवायपुराण—विष्णुसंहिता । पत्र सं १२२ । पा २५×४ इति । अना-  
विषय-नुवाय । १ नाल सं १२ ३ नातिक मुरी १२ । नाल सं १२ ३ नाल मुरी २ । पूर्ण । न सं १२५ । अ  
मन्थार ।

विषय—सं १२ में इन्द्रादीन मुरी के अनासंहार के विष्णुसंहिता में प्रतिविम्बि हुई थी ।

१८३७ अनासंहारपुराण—गुणसम्राज्या । पत्र सं । पा १३×२ इति । अना-  
विषय-नुवाय । १ नाल × । नाल सं १०५२ अनासंहार मुरी १ । पूर्ण । न सं ७४ । अ मन्थार ।

विषय—अनासंहार के विषय मन्थार है ।

१८३८ आगामीत्रसटराजापुत्रपञ्चम । पत्र सं ५ के २१ । पा १२×६ इति । अना-  
विषय-नुवाय । १ नाल × । नाल सं १०५२ अनासंहार मुरी १ । पूर्ण । न सं १ । अ मन्थार ।

विषय—एक ही उच्छार पुत्र पुत्रों का ही वर्णन है ।

१८३९ आशिपुराण—त्रिभुवनभाष्ये । पत्र सं २२० । पा १३×२ इति । अना-  
विषय-नुवाय । १ नाल × । नाल सं ११४ । पूर्ण । न सं २२ । अ मन्थार ।

विषय—अश्विन के नुवायपत्र के प्रतिविम्बि की थी ।

१८४० प्रति सं २ । पत्र सं २९ । नाल सं ११९४ । न सं १२४ । अ मन्थार ।

१८४१ प्रति सं ३ । पत्र सं ४ । नाल × । मूर्त्त । न सं २४२ । अ मन्थार ।

१८४२ प्रति सं ३ । पत्र सं ४०१ । नाल सं १२२ । न सं २६ । अ मन्थार ।

१८४३ प्रति सं ४ । पत्र सं ४१० । नाल × । न सं २० । अ मन्थार ।

विषय—अश्विन के अनासंहार की सीमी पर प्रतिविम्बि हुई थी ।

१८४४ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७१ । ले० काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ६ । घ  
मण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर में टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५ प्रति स० ६ । पत्र स० ४६१ । ले० काल स० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० स० २५० । ज  
मण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पीयादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी ।  
प्रशस्ति काफी बड़ी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर स० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कहीं कहीं कठिन  
शब्दों का संस्कृत में अर्थ भी दिया है ।

१८४६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० स० १४६ । घ मण्डार ।

१८४७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १६०४ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २५२ । ङ  
मण्डार ।

१८४८ प्रति स० ९ । पत्र स० ४१० । ले० काल स० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० स० ४५१ । व  
मण्डार ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९ प्रति स० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८८ । ट मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अत्र मण्डार में एक प्रति ( वे० स० २०४२ ) क मण्डार में एक प्रति  
( वे० स० ५५ ) छ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ६६ ) च मण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियाँ ( वे० स० ३०, ३१, ३२ )  
ज मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ६८६ ) और है ।

१८५० आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० २७ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८०१ । अ मण्डार ।

१८५१ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८७० । अ मण्डार ।

१८५२ आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५२ में ६२ । आ० १०३×४ इच्छ । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६ । च मण्डार ।

विशेष—पुण्डन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३ आदिपुराण—महाकवि पुण्डन्त । पत्र स० ३२५ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६३० भाद्रिका सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५३ । क मण्डार ।

१८५४ प्रति स० २ । पत्र स० २६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २ । छ मण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । माह व्यहराज ने पंचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय  
निमित्त यह ग्रंथ लिखाकर महात्मा खेमचन्द्र को भेंट किया ।

१८५५ प्रति स० ३ । पत्र स० १०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५४ । क मण्डार ।

१८२६ प्रति स ४। पत्र लं २६२। के बाल लं १७१६। के लं २६१। अ अक्षर।  
विशेष—बड़ी बड़ी कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं।

१८२७ आदिपुराण—य शौकतटाम। पत्र लं ४। मा १२×६२ अक्ष। माला—हिन्दी अक्ष।  
विशेष—गुण्डल १२ बाल लं १२४। के बाल लं १७७३ बाणमुठी ७। पूर्ण। के लं २। अ अक्षर।

विशेष—बालराम बहू में प्रतिमिति कराई थी।  
१८२८ प्रति स २। पत्र लं ७४६। के बाल ×। के लं १४८। अ अक्षर।

विशेष—ब्राह्मण के तीन पत्र अतीव लम्बे लम्बे हैं।

१८२९ प्रति स ३। पत्र लं ३६। के बाल लं १२४ बाणोज मुठी ११। के लं १२२।  
अ अक्षर।

विशेष—उक्त प्रतिमा के प्रतिरिक्त अ अक्षर में एक प्रति (के लं ६) अ अक्षर में ४ प्रतिमा (के लं १० १ १६, ) अ अक्षर में २ प्रतिमा (के लं २१ २१६) अ अक्षर में एक प्रति (के लं १२२) तथा अ अक्षर में २ प्रतिमा (के लं ६ १४६) भी हैं। ये सभी प्रतिमा पूर्ण हैं।

१८३० अक्षपुराण—गुण्डमशाखा। पत्र लं ४१६। मा १२×२२ अक्ष। माला—तंतुत। विश्व-  
गुण्डल १२ बाल >। के बाल <। पूर्ण। के लं १३। अ अक्षर।

१८३१ प्रति स २। पत्र लं ३३। के बाल लं १९९ बाणोज मुठी १३। के लं १४  
अ अक्षर।

विशेष—बीच में ३ गुण्ड मदे लिखाकर रखे गये हैं। बाह्यतंत्री बालुज्ज्वली अक्षरक भी अक्षरकेन भी बड़ी  
प्रयत्न की हुई है। बाह्यतंत्री बालबहू के पाठ्यपत्र में बौद्धशास्त्रकारकेवल धनाक्षर ( धनकर ) के लिखा माल  
बाल में भी पाठ्यपत्र अक्षरकेन के भी बीछ के प्रतिमिति की थी।

१८६० प्रति स ३। पत्र लं २४। के बाल लं १६३२ अक्ष मुठी २। के लं २२। अ  
अक्षर।

विशेष—तंतुत में अक्षरार्थ दिया है।  
१८६३ प्रति स ४। पत्र लं ३६। के बाल लं १२७। के लं १। अ अक्षर।

विशेष—अर्थात् अक्षरकेन महात्म्या कुर्वीरिहू के अक्षरकेन के प्रतिमिति हुई। बा १७०७ में अक्षरकेन  
के लिख बालराम को भेंट किया। कठिन शब्दों के अक्षर में अर्थ भी दिये हैं।

१८६४ प्रति स २। पत्र लं ४२३। के बाल लं १७७ बाणोज मुठी ११। के लं ९। अ  
अक्षर।

विशेष—बाणोज में अक्षरकेन के लिख अक्षरकेन में प्रतिमिति की थी।  
१८६५ प्रति स ३। पत्र लं ४७४। के बाल लं १६२७ अक्ष मुठी २। के लं ९। अ  
अक्षर।

विशेष—अक्षरकेन अक्षरकेन के लिख अक्षरकेनकेन में प्रतिमिति की थी।

१८६६. प्रति स० ७ । पत्र स० ३६६ । ले० काल स० १७०६ फागुण सुदी १० । वै० स० ३२४ ।

ब भण्डार ।

विशेष—गाढे गोर्दने ने प्रतिलिपि की थी । वही कही ऋठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७ प्रति स० ८ । पत्र स० ३७२ । ले० काल स० १७१८ भाद्रवा सुदी १२ । वै० स० २७२ ।

ब भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और ह अक्षरों में एक-एक प्रतीति (वि० स० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतियां प्रपूर्ण हैं ।

१८६८ उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५७ । भा० १२५३ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल स० १०८० । ले० काल स० १५७५ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्णा । वै० स० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त वृत्त उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रयत्नित—

श्री विक्रमादित्य सवत्सरे सर्पाशामयी यधिक सहस्रे महापुराणविषयमखण्डविवरणनागरमेनमेद्रातात् परि-  
शाय मूलटिप्पणवाचावलोकन अक्षरमिदं समुच्चयटिप्पण । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् ब्रह्माकारगणश्रीसंपाचार्य सत्ववि-  
शिष्येण धीमन्त्रमुनिना निज दीर्घाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणक प्रभावद्राचार्यविरचितसमाप्त ॥ अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगतात्  
संवत् १५७५ अषे भाद्रवा सुदी ५ बुधदिने कुम्भागतदेगे सुलितात् सिक्कंदर पुत्र सुलितानमाहिमुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-  
सधे मायुरान्वये मुष्कारगणे भृशक श्रीगुणभद्रसूरिदेवा तवाम्नाये जसवालु चौ० जगन्नी पुत्रु चौ० टोहरमल्लु इदं  
उत्तरपुराण टीका लिखायित । शुभ भवतु । मागल्य दधति लेखक पाठकयो ।

१८६९ प्रति स० ९ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वै० स० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिना परापरभेदप्रणामोपाजितामलपुष्पनिराकृताखिलमल-  
कलकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पठितेन महापुराण टिप्पणक सतस्यधिक सहस्रत्रय प्रमाण कृतमिति ।

१८७० प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वै० स० १८७६ । अ भण्डार ।

१८७१ उत्तरपुराणभाषा—सुशालचन्द्र । पत्र स० ३१० । भा० ११×८ इच्छ । भाषा-हिंदी पद्य ।

विषय—पुराण । २० काल स० १७८६ मंगसिर सुदी १० । ले० काल स० १६२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्णा । वै० स०  
७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में सुशालचन्द्र, का ५३, पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । चत्वार्षरजाल ने जयपुर  
में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२ प्रति स० २ । पत्र स० २२० । ले० काल स० १६८३ वैशाख सुदी ३ । वै० स० ७ । ग  
भण्डार ।

विशेष—काशीराम साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३ प्रति स ३। पत्र सं ४१२। के काल सं १ ११ मंत्रिरपुरी १। के सं २। क  
नम्बर।

१८७४ प्रति स ४। पत्र सं ३७४। के काल सं १८२८ कालिकपुरी ११। के सं १८। क  
नम्बर।

१८७५ प्रति सं ५। पत्र सं ४४। के काल सं १ १७। के सं ११७। क नम्बर।

विशेष—क नम्बर में तीन पत्रों प्रतिबंध (के सं ३९९, ३९३ ३९४) धीरे हैं।

१८७६ लखरपुरमहाभाष्य—सभी बलाहाह। पत्र सं ७६१। या १२× १३। काल—हिन्दी  
नम्बर। विपत्र-गुण्ड। १ काल सं ११३ कालिकपुरी ३। के काल सं ११४२ मंत्रिरपुरी ११। पूर्ण। के  
सं ७२। क नम्बर।

१८७७ प्रति सं ३। पत्र सं ३९२। के काल ×। पूर्ण। के सं १। क नम्बर।

विशेष—३९४वां पत्र नहीं है। स्थान ही पत्र नहीं मिले हुए हैं।

१८७८ प्रति स ४। पत्र सं ४१६। के काल ×। के सं १। क नम्बर।

विशेष—शास्त्र के १६७ पत्र भी सं सं के हैं। क्वं बंधीति प्रति है। क नम्बर के एक प्रति (के  
सं ७१) क नम्बर के ही प्रतिपा (के सं ३२१, ३२२) तथा क नम्बर में एक प्रति धीरे है।

१८७९ अष्टमपुराण—दीराहाह। पत्र सं ३१९ या १४×२ १३। काल—हिन्दी नम्बर। विपत्र-  
गुण्ड। १ काल सं ११३३ कालिकपुरी ११। के काल ×। पूर्ण। के सं १७६। क नम्बर।

१८८० त्रिनेत्रपुराण—अष्टमक त्रिनेत्रपुराण। पत्र सं १११। या ११×११ १३। काल—  
हिन्दी नम्बर। विपत्र-गुण्ड। १ काल ×। के काल सं १ ४२ कालिकपुरी ७। के सं १४। क नम्बर।

विशेष—त्रिनेत्रपुराण के अष्टमक अष्टमक के अर्थ के। ११२ नम्बर है। गुण्ड के विपत्र  
विपत्र है।

१८८१ त्रिपक्षिस्मृति—स्थापित आशापर। पत्र सं १४। या १२×२ १३। काल—हिन्दी  
नम्बर। विपत्र-गुण्ड। १ काल सं १११२। के काल सं १ १२ काल सं १६। पूर्ण। के सं २११। क  
नम्बर।

विशेष—कालिकपुर में भी त्रिपक्षिस्मृतिक के काल की रचना की गई थी। केवल अष्टमक विपत्र  
है।

१८८२ त्रिपक्षिस्मृतिकापुराणवचन—। पत्र सं ३७३। या १ २×२ १३। काल—हिन्दी  
नम्बर। विपत्र-गुण्ड। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १९१२। क नम्बर।

विशेष—१७ ठे बने पत्र नहीं हैं।

१८८३ त्रिपक्षिस्मृतिकापुराणवचन—। पत्र सं १९६। या १९२× १३। काल—हिन्दी नम्बर।  
विपत्र-गुण्ड। १ काल सं ११ कालिकपुरी २। के काल ×। पूर्ण। के सं १। क नम्बर।

१८८४ नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र स० २६२ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ मण्डार ।

१८८५ नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० १६० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १४६ । अ मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा  
द्वितीय शिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीमुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीधमकीर्त्तिदेवा  
द्वितीयशिष्य मडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीसहसकीर्त्तिदेवा  
तत्पट्टे मडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द्र तदाम्नाये भ्रगरवालान्वये मुणिलगोत्रे साह जीराणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा  
पथ । प्रथम पुत्र सा जेता तस्य भार्या छानाही । सा जीराणा द्वितीय पुत्र सा जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय  
प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य भार्या माताही तयो पुत्रात्रय प्रथमपुत्र चि० सिरखत द्वितीयपुत्र चि० मागा तृतीयपुत्र चि०  
चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतायपुत्र सा चीमा तस्य भार्या मानु । सा जीराणा तस्य तृतीयपुत्र सा  
सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा गोविदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र  
चि० मोहनदास । सा जीराणातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्मा तस्य भार्या  
धनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरवराही ।  
सा जीराणा तस्य पंचमपुत्र सा साबू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदाम तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा  
मल्लूनेनेद शास्त्र हरिवंशपुराणाख्य ज्ञानावरणोर्कर्मक्षयनिमित्त मडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतस्यशिष्या अजिका शांति  
श्री योग्य घटापित ज्ञानावरणोर्कर्मक्षयनिमित्त ।

१८८६ प्रति स० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल स० १६६३ आनोज सुदी ३ । वे० स० ३८७ । क

मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति बाला पत्र विलकुल फटा हुआ है ।

१८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५७ । ले० काल स० १६४६ माघ सुदी १ । वे० स० १८६ । च

मण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती ( धामेर ) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ चैत्यालय मे  
लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८ प्रति स० ४ । पत्र स० १८८ । ले० काल स० १८३८ पौष सुदी १२ । वे० स० ३१ । छ

मण्डार ।

विशेष—इसने अतिरिक्त अ मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३३८ ) छ मण्डार मे एक प्रति ( वे० स०  
३२ ) तथा अ मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३१३ ) भीर हैं ।



१८८२ पद्मपुराण—रविपेशाशास्त्रे । पत्र सं २७३ । पृ ११×३ पृष्ठ । मन्त्रा-प्रसन्न । विष्णु-पुराण । २ काल × । के काल सं ३३ व नून मुदी १ । पूर्ण । के सं ३३ । म् नम्बार ।

विशेष—शेषा शान्तिवादी ब्राह्मणोंकी ही प्रतिनिधि बरकर सं भी पूर्व इत्यादि को कह दिया ।

१८८३ प्रति सं २ । पत्र सं ३३३ । के काल सं १७८२ प्राचीन मुदी ३ । के सं ३३ । म् नम्बार ।

विशेष—शैवराज शाह के चतुर्थाश्वी नाम के प्रतिनिधि बरवाई की ।

१८८४ प्रति सं ३ । पत्र सं ४४२ । के काल सं १७२२ मन्त्रा मुदी २ । के सं ४४२ । म् नम्बार ।

१८८५ प्रति सं ४ । पत्र सं ४४४ । के काल सं १७२२ मन्त्रा मुदी २ । के सं ४४२ । म् नम्बार ।

विशेष—शैवराज शास्त्री के शैवराज के प्रतिनिधि की थी ।

१८८६ प्रति सं ५ । पत्र सं ५५१ । के काल सं १७२२ मन्त्रा मुदी × । के सं ४४२ । म् नम्बार ।

विशेष—शैवराज शास्त्री के शैवराज के प्रतिनिधि की थी ।

१८८७ प्रति सं ६ । पत्र सं ५५२ । के काल सं १७२२ मन्त्रा मुदी × । के सं ४४२ । म् नम्बार ।

इसके अतिरिक्त क मन्त्रा में एक प्रति ( ६ सं ४५५ ) तथा क मन्त्रा में ही प्रति ( ६ सं ४५६ ) भी हैं ।

१८८८ पद्मपुराण (सम्पुर्ण) —महाराज श्रीमन्मन्त्र । पत्र सं ३३ । पृ ३०×३ पृष्ठ । मन्त्रा-प्रसन्न । विष्णु-पुराण । ३ काल काल सं ३३३ मन्त्रा मुदी ३ । के काल सं ३३३ मन्त्रा मुदी ३ । पूर्ण । के सं ३३ । म् नम्बार ।

१८८९ प्रति सं ३ । पत्र सं ३३३ । के काल सं ३३३ मन्त्रा मुदी ३ । के सं ३३३ । म् नम्बार ।

विशेष—शेषा शान्तिवादी के शेषा के शेष इत्यादि की सर्व देखा इनके मन्त्रा के लिये है । मन्त्रा प्रति की हुई है ।

१८९० प्रति सं ३ । पत्र सं ३३३ । के काल सं ३३३ मन्त्रा मुदी ३ । के सं ३३३ । म् नम्बार ।

विशेष—शेषा शान्तिवादी के शेषा के शेषा के शेषा के प्रतिनिधि की थी ।

१८९१ प्रति सं ४ । पत्र सं ३३३ । के काल सं ३३३ मन्त्रा मुदी ३ । के सं ३३३ । म् नम्बार ।

विशेष—शेषा शान्तिवादी के शेषा के शेषा के प्रतिनिधि की थी ।

१८६८ प्रति स० ५ । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।

च भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे मढूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ४२५, ४२६ ) च भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०४ ) तथा छ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ५६ ) भी हैं ।

१८६६ पद्मपुराण—भ० वर्मकीर्त्ति । पत्र स० २०७ । आ० १३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल स० १८३५ कार्तिक मुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१९०० पद्मपुराण ( उत्तरखण्ड ) । पत्र स० १७६ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्यपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१९०१ पद्मपुराणभाषा—प० दौलतराम । पत्र स० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

२० काल स० १८२३ माघ मुदी ६ । ले० काल स० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे प० शिवदीनजी के समय में भोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढ़ाया ।

१९०२ प्रति स० २ । पत्र स० ५४१ । ले० काल स० १८८२ आसोज मुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९०३ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५१ । ले० काल स० १८६७ । वे० सं० ४२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतिया के अतिरिक्त अ भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० ४१०, २२०३ ) क भीर ग भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० ४२४, ५३ ) घ भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ५५, ५६ ) च भीर ज भण्डार में दो तथा एक प्रति ( वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२ ) तथा क भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० १६, ८८ ) भी हैं ।

१९०४ पद्मपुराणभाषा—शुशालचन्द । पत्र स० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल स० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१९०५ प्रति स० २ । पत्र स० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ५५ । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में ( वे० सं० ३४१ ) पर एक अपूर्ण प्रति भी है ।

१६०६ वायव्यपुराण—सहस्रक शुभसम्पत् । पत्र सं १७१ । या ११५२ इत्य । मन्त्र—संस्तुत ।  
विषय—गुरु । र मन्त्र सं १६ । ते मन्त्र सं १७२१ प्राकृत बुद्धि ३ । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्त्र ।  
विशेष—अथ श्री इत्या श्री वाक्यान्वय मे हृदये श्री । पत्र १३२ तथा १३३ मन्त्र मे सं १७२१ के मन्त्र  
लिखे बने हैं ।

१६०७ प्रति सं २ । पत्र सं ३ । ते मन्त्र सं १३३ । के सं ४६२ । अ मन्त्र ।  
विशेष—अथ बहुश्रीपत्न्य श्री प्रेरणा सं लिखा बना वा । बहुश्रीपत्न्य ने इसका संयोग किया ।  
१६०८ प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ते मन्त्र सं १६१३ श्री बुद्धि १ । के सं ४७२ । अ  
मन्त्र ।

विशेष—एक प्रति सं मन्त्र के ( के सं १६ ) पीर है ।  
१६०९ वायव्यपुराण—स श्रीमूषल । पत्र सं २४९ । या १२५२ इत्य । मन्त्र—संस्तुत ।  
विषय—गुरु । र मन्त्र सं १६२ । ते मन्त्र सं १ संस्तुत बुद्धि ३ । पूर्ण । के सं २३७ । अ मन्त्र ।  
विशेष—अथ श्रीमन्त्र लिख्य है । पत्र बचले हैं ।

१६१० वायव्यपुराण—श्री श्रीमन्त्र । पत्र सं ३४ । या १ ५२ इत्य । मन्त्र—संस्तुत ।  
विषय—गुरु । र मन्त्र ५ । ते मन्त्र ५ । मन्त्र । के सं २३ । अ मन्त्र ।

१६११ वायव्यपुराण—श्री श्रीमन्त्र । पत्र सं २४६ । या १३५६ इत्य । मन्त्र—संस्तुत ।  
विषय—गुरु । र मन्त्र सं १७२४ । ते मन्त्र सं १ १२ । पूर्ण । के सं ४६२ । अ मन्त्र ।

विशेष—अथ श्रीमन्त्र मे वाईस पटीमह मन्त्र मन्त्र के हैं ।  
अ मन्त्र मे इसकी एक मन्त्र प्रति ( के सं १११ ) पीर है ।

१६१२ प्रति सं २ । पत्र सं १३२ । ते मन्त्र सं १ ६ । के सं ३२ । अ मन्त्र ।  
विशेष—अथ श्रीमन्त्र के प्रति लिखि करवायी श्री ।

१६१३ प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ते मन्त्र ५ । के सं ४७२ । अ मन्त्र ।  
१६१४ प्रति सं ४ । पत्र सं १४९ । ते मन्त्र ५ । के सं ४७७ । अ मन्त्र ।

१६१५ प्रति सं ५ । पत्र सं १३७ । ते मन्त्र सं १ ६ मन्त्र बुद्धि १ । के सं १३६ ।  
अ मन्त्र ।

१६१६ वायव्यपुराण—पद्माज्ञान श्रीमन्त्र । पत्र सं २२२ । या १३५ इत्य । मन्त्र—संस्तुत ।  
विषय—गुरु । र मन्त्र सं १६२३ श्रीमन्त्र बुद्धि २ । ते मन्त्र सं १६३ श्री बुद्धि २२ । पूर्ण । के  
सं ४६३ । अ मन्त्र ।

१६१७ प्रति सं ३ । पत्र सं ३२ । ते मन्त्र सं १६४६ मन्त्र बुद्धि १२ । के सं ४७५ ।  
अ मन्त्र ।

विशेष—अथ श्रीमन्त्र के प्रति लिखि श्री श्री ।  
अ मन्त्र मे इसकी एक प्रति ( के सं ४७५ ) पीर है ।

१६१८ पुराणमार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर ( आम्रगढ़ ) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५८३ फाल्गुण सुदी १० । वै० सं० ४७१ । अ भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० नमलकीर्ति । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल ×, ले० काल सं० १८५६ मंगमिर सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ वालपद्मपुराण—प० पद्मलाल धाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कनकते में राममधीन ( रामादीन ) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२ भागवत द्वाष्टगम स्कंध टीका । पत्र सं० ३१ । आ० १४×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पथो के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३ भागवतमहापुराण ( सप्तमस्कंध ) । पत्र सं० ६७ । आ० १४३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति सं० २ (षष्ठम स्कंध) । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५ प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध) । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२ । वै० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चोबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६ प्रति सं० ४ (अष्टम स्कंध) । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७ प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध) । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ में आगे पत्र नहीं हैं ।

वै० सं० २०८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८ भागवतपुराण । पत्र सं० १४ से ६३ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है ।

१६२६ प्रति सं० २। पत्र सं १६। नै काल ×। नै सं २११३। ङ मन्वार।

विशेष—द्वितीय स्तंभ के तृतीय ध्वजस्य एक की टीका पूर्ण है।

१६३० प्रति सं० ३। पत्र सं ४ से १२। नै काल ×। पदूर्ण। नै सं २१०२। ङ मन्वार।

विशेष—तृतीय स्तंभ है।

१६३१ प्रति सं ४। पत्र सं १। नै काल ×। पदूर्ण। नै सं २१०१। ङ मन्वार।

विशेष—प्रथम स्तंभ के द्वितीय ध्वजस्य एक है।

१६३२ मङ्गिनाम्पुराय—सकलकीर्ति। पत्र सं ४२। या १२×२ इञ्च। मन्वा—संस्कृत। विष्णु-

परिम। र काल ×। नै काल १। नै सं २। ङ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में एक प्रति (नै सं ३६) भी है।

१६३३ प्रति सं २। पत्र सं ३०। नै काल सं १०२ पञ्चमुरी १४। नै सं २१। ङ

मन्वार।

१६३४ प्रति सं ३। पत्र सं ४०। नै काल सं १६३३ मंगलिक मुरी १। नै सं २०२।

विशेष—उक्तकाल सुहृदिवा ने प्रतिनिधि करके दीवन्त प्रमत्तकाली के मन्दिर में रखी।

१६३५ प्रति सं ४। पत्र सं ४२। नै काल सं ११ काकुल मुरी ३। नै सं १११। ङ

मन्वार।

१६३६ प्रति सं ५। पत्र सं ४२। नै काल सं ११ काकुल मुरी ३। नै सं १११। ङ

मन्वार।

१६३७ प्रति सं ६। पत्र सं ४२। नै काल सं १११ काकुल मुरी ३। नै सं १११। ङ

मन्वार।

विशेष—बनपुर के विष्णुमाल भोवा ने प्रतिनिधि करवाई की।

१६३८ प्रति सं ७। पत्र सं ३१। नै काल सं १४६। नै सं १२। ङ मन्वार।

१६३९ प्रति सं ८। पत्र सं ३२। नै काल सं १०२ पञ्चमुरी ३। नै सं २१। ङ

मन्वार।

१६४० प्रति सं ९। पत्र सं ४। नै काल सं १११ काकुल मुरी ४। नै सं १११। ङ

मन्वार।

विशेष—विष्णुमाल काकुल ने एक काल की प्रतिनिधि करवाई की।

१६४१ मङ्गिनाम्पुरायमाता—सेवायाम पात्रकी। पत्र सं ३९। या १२×०६ इञ्च। मन्वा-

द्वितीय मन्वा। विष्णु-परिम। र काल ×। नै काल ×। पदूर्ण। नै सं १। ङ मन्वार।

१६४२ व्यापुण्ड्य (बीजित)। पत्र सं १०। या ११×४ इञ्च। मन्वा—संस्कृत। विष्णु-

पुराण। र काल ×। नै काल ×। पदूर्ण। नै सं ३१। ङ मन्वार।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ७०४ । मा० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वे० स० ७८ ) भौर है ।

१६४४ महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र स० ५१४ । मा० ६३×४३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण । पत्र स० ३२ । मा० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण ।

२० काल × । ले० काल स० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० म० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे इसकी दो प्रतिया ( वे० स० २३३, २४६, ) भौर हैं ।

१६४६ मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र स० १०४ । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल स० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० म० ५७८ ।

क भण्डार ।

१६४७ प्रति स० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल × । वे० स० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८ मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र स० ३२ । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

पुराण । २० काल स० १८४५ पीप बुदी २ । ले० काल स० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० स० ४७५ । ज भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने बटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४९ लिंगपुराण । पत्र स० १३ । मा० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४७ । ज भण्डार ।

१६५० वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र स० १५१ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा रामुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल १८७१ । वे० स० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० स० ३२८ । च

भण्डार ।

१६५३ प्रति स० ४ । पत्र स० ११३ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४ प्रति स० ५ । पत्र स० १४३ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० ५ । छ भण्डार ।

१३७३. प्रति स ६। पत्र सं १४१। ले पत्र सं १७२ वास्तविक पुरी ४। के सं १३। प  
अध्याय।

१३७६ प्रति स ७। पत्र सं १११। ले पत्र सं १४१। के सं ४६३। प अध्याय।

विशेष—या सुमनस्यनी चोक्तपत्नी रामचन्द्रनी भी पुस्तक है। ऐसा मिथा है।

१३७७ प्रति स ८। पत्र सं १७। ले पत्र सं १८२१। के सं १११। ट अध्याय।

विशेष—सवाई गाँवपुर में व सुरेन्द्रजी के भागिदार बीदादा के लिखवायी थी।

१३७८. प्रति स ६। पत्र सं १२३। ले पत्र सं १६६ यावदा पुरी १२। के सं १८११।

ट अध्याय।

विशेष—बापद गढ़ारेण के बापदादा वपर ये व पत्रपत्र के कारण से कुचक्रणीय बनिवाला गोन  
बाने बाबू भावा भावां बाई नामके से प्रतिभितिय करवायी थी।

एत कल्प नी व पीर व अध्याय ये एक एक प्रति (के सं ६ १२१) व अध्याय के २ इतिव  
(के सं ३९ ४१) पीर है।

१३७९. वर्तमानपुराण—प शरीरिंहि। पत्र सं ११८। या ११× १३। पत्रा—हिन्दी व।

विषय—गुण्ड। १ पत्र सं १७७३ वास्तविक पुरी १२। ले पत्र सं १७७३। के सं १४७।

विशेष—बालचन्द्रनी कावदा बीपल बन्दुर के बीन बालचन्द्र के माइय पर एत पुराण नी भावा रचना  
नी बई।

व अध्याय के तीन अपूर्ण इतिव (के सं १७४ १७१, १७९) व अध्याय में एक प्रति (के सं  
१२९) पीर है।

१३८६ प्रति स २। पत्र सं १। ले पत्र सं १७७३। के सं १७०। व अध्याय।

१३८१ बभ्रुवृक्षपुराण—। पत्र सं १। या १२३× १३। पत्रा—हिन्दी व। विषय—गुण्ड।

१ पत्र सं १। ले पत्र सं १। के सं १३। व अध्याय।

१३८२ विमानावपुराण—वृक्षपुराणवास। पत्र सं ७२। या १२×२३ व। पत्रा—हिन्दी व।

विषय—गुण्ड। १ पत्र सं १९७४। ले पत्र सं १३३ बीपल पुरी ४। पुरी। के सं १३१। व अध्याय।

१३८३. प्रति स ३। पत्र सं ११। ले पत्र सं १२ बीप पुरी १। के सं १६। व  
अध्याय।

१३८४ प्रति स ३। पत्र सं १७। ले पत्र सं १९२९ बीप पुरी ६। के सं १। व  
अध्याय।

विशेष—कालकार वा नाम व वृक्षपुराण नी विना है। अस्तित्व विना ज्ञात है—

अन्त १९२९ वर्षे कौटिल्ये इच्छांती थी वैशवाद्या कृष्णवरी थी भागिदार बीपलवनी थीक्य वल्लभने  
नटीपटपन्थे विद्यालये कृष्णक थी रामकेशवन्थे एतकपुराण व थी पलाकृष्ण काल ७० थी बनीति व थी

मंगलाग्रज स्वविराचार्य श्री केशवमेन तत् गिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्ति तत्पुत्र भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर पुत्रे लिखित स्वज्ञानावरणं कर्मधायकं । म० श्री ५ विरयमेन तत् गिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति प० दीपचन्द प० मयाचद युक्ते भ्रातृ पठनार्थे ।

१६६५ शान्तिनाथपुराण—महाराजि अशग । पत्र न० १८३ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल शक सवत् ६१० । मे० काल स० १५५३ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ६६ । अ  
मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—मवत् १५५३ वर्ष भादवा वदि वारोस रवी मघे ह श्री गधारमन्थे लिखित पुस्तक लेखक पाठकयो चिरजीयात् । श्री मूलमघे श्री कृदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मुभन्न्देवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाद्यिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थ हुंवड न्यातीम धे० हापा भाष्या संपूरित श्रुत श्रेष्टि घना स० धावर स० सोमा श्रेष्टि घना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे नयो पुत्र विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एते सर्वे शान्तिपुराण लखाय पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानत ।

घनदानान् मुनी नित्य निर्वाधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ल० काल स० १८६१ । वै० म० ६८७ । क मण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की छ, अ और ट मण्डार मे एक एक प्रति ( वै० स० ७०४, १६, १६३५ ) और हैं ।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—सुशालचन्द्र । पत्र स० ५१ । मा० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० स० १८६१ ) और है ।

१६६८ हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ३१४ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल शक स० ७०५ । मे० काल स० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वै० स० २१६ । अ मण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर मे प० हू गरमो के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० स० ८६८ ) और है ।

१६६९ प्रति स० २ । पत्र स० ३२४ । ले० काल स० १८३६ । वै० म० ८५२ । क मण्डार ।

१६७० प्रति स० ३ । पत्र स० २८७ । ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ७ । वै० स० १३२ । घ  
मण्डार ।

विशेष—गोपावल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।



१६७१ प्रति स ४। पत्र सं २४३ से २४७। नै काल सं १६२३ कार्तिक सुदी २। अर्जुन। के सं ४४७। अ अक्षर।

विवेक—श्री पूरुषगल के प्रतिमिति श्री श्री।

इसी अक्षर में एक प्रति (के सं ४४६) भी है।

१६७२ प्रति स ५। पत्र सं २७४ से ३१३ ३४१ के ३४३। नै काल सं १६६३ कार्तिक सुदी १। अर्जुन। के सं ७९। अ अक्षर।

१६७३ प्रति स ६। पत्र सं २४६। नै काल सं १६६३ वीज सुदी २। के सं २६। अ अक्षर।

विवेक—महाराजप्रविराज मालविह के चालनगल में तागलेर में धारिगल बीरान्त में प्रतिमिति हुई श्री। निष्क उपस्थित अर्जुन है।

जस प्रतिमें के प्रतिरिख अ अक्षर में एक प्रति (के सं २४६) अ अक्षर में दो प्रतिमें (के सं ७९ में) भी है।

१६७४ हरिबहापुराण—अच्छिमवास। पत्र सं १२। या ११३×२ इअ माला-वीरकठ। विरक-पुराण। नै काल सं १। अर्जुन। के सं २१६। अ अक्षर।

विवेक—अप बोधराम पणोरी के अनामे हुये मन्दिर में प्रतिमिति करवाकर विरालगल विना अक्ष। प्राचीन अर्जुन प्रति श्री श्री पूर्ण विना मना।

१६७५ प्रति स २। पत्र सं २३। नै काल सं १६६१ पालीज सुदी ६। के सं १११। अ अक्षर।

विवेक—देवश्री बुद्धवाले चर्मगल बीरान्तमें कछाएमें महीतअम्बे विरालगले राजतेवअम्बे—आचार्य कल्याणजीरामा प्रतिमिति हुई।

१६७६ प्रति सं ३। पत्र सं ३४६। नै काल सं १। ४। के सं १६६। अ अक्षर।

विवेक—देवश्री में प्रतिमिति श्री श्री श्री। विरिअर के महामन्त्रअक्ष वा अल्लकाल होता मिला है।

१६७७ प्रति सं ४। पत्र सं २६७। नै काल सं १। ३। के सं ४४७। अ अक्षर।

१६७८ प्रति सं ५। पत्र सं २२९। नै काल सं १७७३ कार्तिक सुदी २। के सं ६६। अ अक्षर।

विवेक—अक्ष मन्वन्तअम्बे के अक्षरमें श्री श्री राम में प्रतिमिति हुई श्री। अ विरालगल अ० अक्षरजीराम के अक्षर में।

१६७९ प्रति स ६। पत्र सं २६। नै काल सं १२३ वीज सुदी ३। के सं ३३३। अ अक्षर।

विवेक—अक्षरित—सं १२३७ वर्ष वीज सुदी ३ बीजे श्री श्री श्री अक्षरमन्त्रअम्बे मन्वन्तअम्बे श्री श्री

कुन्दकुदाचार्याचये भ० मन्मथीतिरुग भ० भृगुतीतिरुग भ० श्री शतभूपलेन शिव्यमुनि जयनदि पठनार्थे । हृदय  
जाताय ।

१६८० प्रति स० ७ । पत्र स० ८१३ । ले० काल स० १६३७ मास सुदी १३ । वे० स० ८६१ । अ  
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्राम्ति विवृत है ।

उक्त प्रतिमा के अतिरिक्त क, ख एव अ भण्डारों में एक प्रति ( वे० स० ८५१, ६०६, ६७ )  
भार है ।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूपरा । पत्र स० ३८५ । पृ० ११५५ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—  
गुण । २० पान × । ले० काल ✓ । अपूर्ण । व० स० ८६१ । अ भण्डार ।

१६८२ हरिवंशपुराण—भ० मन्मथीतिरु । पत्र स० २७१ । पृ० ११३५ इत्य । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० पान × । ले० काल स० १७५७ चंद्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८५० । अ भण्डार ।

विशेष—नेवक प्राम्ति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवंशपुराण—वत्सल । पत्र स० ५०२ मे १०३ । पृ० १०५४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० पान × । ले० काल ✓ । अपूर्ण । व० स० १६६६ । अ भण्डार ।

१६८४ हरिवंशपुराण—यज्ञ तीर्त्ति । पत्र स० १६६ । पृ० १०६×४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गुण । २० पान × । ले० काल स० १५७३ । पाशुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिनिधि श्री गई थी ।

मम मन्मथेतिरुमिन् गजने भवत् १५७३ वर्षे काल्युगि सुदि ६ रविवामने श्री तिजारा स्थाने । अलाव-  
लवा गज्ये श्री नाट । अपूर्ण ।

१६८५ हरिवंशपुराण—महाशिव स्वयम्भु । पत्र स० २० । पृ० ६×४ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पुराण । २० पान × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४५० । अ भण्डार ।

१६८६ हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र स० १०० ले २०० । पृ० १०×८ इत्य । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० पान स० १८२६ चंद्र सुदी १५ । वे० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । अ  
भण्डार ।

१६८७ प्रति स० २ । पत्र स० ५६६ । ले० काल स० १६२६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० स० ६०६ (क)  
अ भण्डार ।

१६८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ८२५ । ले० काल स० १६०८ । वे० स० ७२८ । अ भण्डार ।

१६८९ प्रति स० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल स० १६०३ मासोज सुदी ७ । वे० स० २३७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतिमा ( वे० स० १३४, १५१ ) हैं, तथा अ  
भण्डार में एक एक प्रति ( व० स० ६०६, १४८ ) भी हैं ।

१३६ हरिवरपुराणभाषा—सुराशासनम् । पत्र सं २७ । मा १४५७ द्वादश । ब्रह्मा—शिष्टी पत्र । विषय—पुराणम् । र काल सं १७०० ब्रह्माखण्डौ ३ । नै काल सं १९ पूर्ण । के सं ३७२ । अ न्याय ।

विशेष—दी प्रतिघों वा बन्धिमपठ है ।

१३६१ प्रति सं २ । पत्र सं २२ । नै काल सं १ ३ पौष सुदी ५ । अपूर्णा । के सं १९४ । अ न्याय ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र लगी है । अष्टम में प्रतिनिधि हुई थी ।

१३६२ प्रति सं ३ । पत्र सं २३४ । नै काल × । के सं ५६९ । अ न्याय ।

विशेष—आरम्भ के ४ वर्षों में महोद्धारका स्वरुप लेख सुख वर्त्मन है पर अपूर्णा है ।

१३६३ हरिवरपुराणभाषा— । पत्र सं १३ । मा १२५६ द्वादश । ब्रह्मा—शिष्टी । विषय—पुराणम् । र काल × । नै काल × । अपूर्णा । के सं ३७ । अ न्याय ।

विशेष—एक अपूर्णा प्रति । ( के सं ३ ) पौर है ।

१३६४ हरिवरपुराणभाषा— । पत्र सं ३१ । मा २४६६ द्वादश । ब्रह्मा—शिष्टी पत्र ( दत्तव्रता ) । विषय—पुराणम् । र काल × । नै काल सं १६७१ ब्रह्माखण्डौ सुदी । पूर्णा । के सं १२१ । अ न्याय ।

विशेष—अथवा तथा प्रतिव पत्र आया हुआ है ।

आदिभाग—अथ अथा अथवा शीघ्रचर है । ठेक कालों ठेक अपूर्णा बरसी अनंत अन्तरी एम्बै बर्षीअठीके ठेकीक काल लकी व तमड से अनंत की हीर बडंनल राजकी लकी पानी उबोकरा । ठे लका का नीतरप बरतीत पठिहइ कठी सइए बरतीत वपन बरती कठी बोधिउ वचबइहइ धम अतीव अथ वसेप्य । अनेक अथिक बोध प्रतिबोकरा श्रीरामकी बरती पानी उबोकरा । तिवारई बरतानी पा ी रज्या की ठेकीक काल । ब्रह्माखण्डौ विनी । लामी धाम की बडंनल पानी उबोकरा है । कैकीक ठे काल लालकी बई ब्रह्माखण्डौ बनी । एका धामक महोद्धारक बन्ध । ब्रह्मानी बरती कालक लमड । ते कि लामी बरती ---अथव । पछि धामक देरि लकी वय वचकरा वर वड । अनेक लोक ब्रह्माई धामक वरिषदा । वन वन अथवा लोक उबोकाई बरिषा बरिषा । अथ एका केरुक विषमक इली टिठलाठी कपि अइवड । बरती ठेक अथ वरमड । अथ पाठ बरत कावइ है । बंरी लका कइ वार वरइ है । बंरिण वरु वलि बोखइ है । पाव अथ बरिषा वरिषा । बरुदिविधी ठेका उबकठी । एका एका बंरिणीक पुनःअनी धामक वचरकिना----- ।

एक अथवा ब्रह्माखण्ड— पत्र १९

विष्णु ब्रह्मा अथ वचरक राजा राज वरु है । ठेक राजा वर वारकी एकी है । ठेक वर वच वरु उतर लका है । कैकी कुवि में सुव वरु उरनी । ठेक वर वच सुवनीक वरिषमड । ठे सुव सुव वरु कि वरु वरु है । वन कला ठे सुव बोध करिषा । तिवारई तिवार ठेक वरु राज वर वरु । तिवारई ठेक राज सुव बोधका नल पठिबनई है । वरु विठ वरु वरु वरु करइ है ।

पत्र सख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा साभलउ । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउ । पछइ मरी रोइ सर्प थयउ । सयम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहा थको मरण पाम्या । बीजे नरक गई तिहा तिन सागर भायु भोगवी । छेदन भेदन तापन दुख भोगवी । बली तिहा थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चांडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल भवतार पाम्यउ । पछइ ते एक वार वन माहि तिहा उवर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र सख्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन शिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउ । पछइ देस विदेस नगर पाटणाना भवीव लोक प्रबोधीया । बलीशिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक सबोध्या । पछइ सहस बरस प्राउपउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग घरी नइ । समो सरण त्याग कीयउ । तिवारइ ते घातिया कर्म पय करी चउदमइ गुणठाणइ रह्या । तिहा थका मोप सिद्धि थया । तिहा भाउ गुण सहित जाणवा । बली पाच सइ छत्रीस साध सायइ भूकति गया । तिणी सामी भचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद वात लिखाणी होई ते मोष तिरती कीज्यो । बली सामनी साखि । जे काई मइ प्रापणी बुध थकी । हरवस कथा माहि भ्रम कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकठ था ज्यो ।

सवत् १६७१ वर्षे भासोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथी । लिखित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये ।  
विज शिष्यणी भार्या सहजा पठनार्थ ।



## काव्य एव चरित्र

११११ अक्षयचरित्र—नाथूराम । पत्र सं १२ । पा १२× इत्थ । अयम-हिन्दी । विष्णु-  
देवाय विष्णु श्री बीम नवा । र कल × । मे कल × । पूर्ण । के सं १७१ । अ अकार ।

१११२ अक्षयचरित्र— । पत्र सं १२ । पा १२× इत्थ । अयम-हिन्दी नव । विष्णु-  
चरित्र । र कल × । मे कल × । पूर्ण । के सं २ । अ अकार ।

१११३ अक्षयचरित्र— । पत्र सं १ । पा १२× इत्थ । अयम-हिन्दी । विष्णु-  
कल × । मे कल × । पूर्ण । के सं २२६ । अ अकार ।

१११४ अक्षयचरित्र— । पत्र सं १ । पा १२× इत्थ । अयम-हिन्दी । विष्णु-  
कल × । मे कल सं १७६ । पूर्ण । के सं २२६ । अ अकार ।

१११५ अक्षयचरित्र—स अक्षयचरित्र । पत्र सं ११२ । पा १२× इत्थ । अयम-हिन्दी ।  
विष्णु अयम टीर्थचरित्र अयम अयम चरित्र । र कल × । मे कल सं ११२१ बीम कुटी ३ । पूर्ण । के  
सं २४ । अ अकार ।

विशेष—अयम वा नाथ अयमचरित्र तथा अयमचरित्र अयम भी है ।

प्रसिद्धि— ११२१ नवे बीम कुटी ३ एवी । श्री मुचरमे तरणतीर्थके अयमचरित्रके श्रीमुचरमुचरार्थ-  
अये अ भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अ  
भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अ भी ६ अयमचरित्रके अयमचरित्रके  
भी ६ अयमचरित्रके अयमचरित्रके भी २ बीमचरि विष्णु अयम भी अयमचरित्रके अयमचरित्रके ।

२ प्रसिद्धि सं १ । पत्र सं २६ । मे कल सं १२२ । के सं १२ । अ अकार ।

अयमचरित्र के अयमचरित्र ( के सं १२२ ) भी है ।

३ १ प्रसिद्धि सं ३ । पत्र सं १२ । मे कल सं १२२७ । के सं २२ । अ अकार ।  
अयमचरित्र के सं २२२ भी भी है ।

४ २ प्रसिद्धि सं ४ । पत्र सं १२४ । मे कल सं १२७ अयमचरित्र कुटी २ ५ के सं २४ । अ  
अकार ।

५ ३ प्रसिद्धि सं ५ । पत्र सं १२५ । मे कल सं १२७ अयमचरित्र कुटी ६ । के सं २२ । अ  
अकार ।

२००४ प्रति स० ६ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १८५५ प्र० आर्य सुदी ८ । वे० स० ३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—विमलराम ने प्रतिनिधि भी थी ।

२००५ प्रति स० ७ । पत्र स० १८१ । ले० काल स० १७७४ । वे० स० २८७ । अ भण्डार ।

इसने प्रतिरिक्त अ भण्डार ने एक प्रति ( वे० स० १७६ ) तथा अ भण्डार ने एक प्रति ( वे० स० २१८३ ) धोर है ।

२००६ अतुमहार—कालिदास । पत्र स० १३ । मा० १०×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।  
२० काल × । ले० काल स० १६०४ माताज सुदी १० । वे० स० ४७१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रगति—मंत्र १६० इ पत्र ध्वनि मुदि १० दिन श्री मलपारम्पर्ये भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव  
गुरु तृणित्यभारथेन लिखिता स्वहस्त ।

२००७ करकण्डुचरित्र—भुनि कनकागर । पत्र स० ६१ । मा० १०३×५ इच । भाषा—प्रपञ्च ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १७६५ काव्य सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नेमा प्रगति यात्रा समाप्त पत्र नहीं है ।

२००८ करकण्डुचरित्र—भट्ट शुभचन्द्र । पत्र स० ८५ । मा० १०×७३ इच । भाषा—मस्युत ।  
विषय—चरित्र । २० काल स० १६११ । ले० काल स० १८५६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रगति—मंत्र १८५६ पत्रे मगसिर सुदि ६ भोमे सोमंभद्रा ( मंगल ) ग्राम नेमनाथ चैत्यालय  
श्रीमत्ताडामने भ० श्री विश्वनेन तत्पट्टे भ० श्री विद्यामृग्य नृणित्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तृणित्य अ०  
नमसागर स्वहस्तेन लिखित ।

माचायावराचार्य श्री श्री चन्द्रोत्तिजा नृणित्य माचार्य श्री हर्षोत्तिजा की पुरतक ।

२००९ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० २८५ । अ भण्डार ।

२०१० कविप्रिया—केशवदेव । पत्र स० २१ । मा० ६×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य  
(शृङ्गार) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३ । अ भण्डार ।

२०११ कादम्बरीटीका । पत्र स० १५१ से १८३ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७७ । अ भण्डार ।

२०१२ काव्यप्रकाशसटीक । पत्र स० ८३ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३ किराताजुनीय—महाकवि भारवि । पत्र स० ४६ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—मस्युत ।  
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६०२ । अ भण्डार ।

२ १४ प्रति स० २ । पत्रं ३१ से ३३ । मे नाल  $\times$  । पूर्ण । के सं ३३ । क मन्थार ।  
 विशेष—अति संस्मृत टीका कथित है ।

२ १५ प्रति स ३ । पत्रं ५७ । मे नाल सं १३३ मन्थार कुटी । के सं १३२ । क  
 मन्थार ।

२ १६ प्रति सं ४ । पत्रं ११ । मे नाल सं १४२ मन्थार कुटी । के सं १३३ । क  
 मन्थार ।

विशेष—साहित्यिक टीका भी है ।

२ १७ प्रति स ५ । पत्रं १७ । के नाल सं ११७ । के सं १३४ । क मन्थार ।

विशेष—अय्युर नगर में माधोचिह्णजी के राज्य में ही कुर्वाणाराज ने प्रतिनिधि करावादी की ।

२ १८ प्रति स ६ । पत्र सं ५९ । मे नाल  $\times$  । के सं १६ । क मन्थार ।

२ १९ प्रति सं ७ । पत्र सं १९ । के नाल  $\times$  । के सं १४ । क मन्थार ।

विशेष—अति महत्त्वपूर्ण हल संस्मृत टीका कथित है ।

इसके साहित्यिक का मन्थार में एक प्रति ( के सं १३ ) का मन्थार में एक प्रति ( के सं १३ ) का  
 मन्थार में एक प्रति ( के सं ७ ) तथा क मन्थार में तीन प्रतियाँ ( के सं १४ २३१ २३२ ) थीं हैं ।

२ २ कुमारसंभव—दशकवि कालिदास । पत्र सं ४१ । मा० ११०/१२५ इय । मन्थार—संस्मृत ।  
 विपक्ष—नाल्य । १ नाल  $\times$  । के नाल सं १७५५ मन्थार कुटी २ । पूर्ण । के सं १३६ । क मन्थार ।

विशेष—कृष्ण विपक्ष वाले से प्रसार करवा हीनने हैं ।

२ २१ प्रति स० ९ । पत्र सं १११ । मे नाल सं १७२७ । के सं १५५१ । कीर्ति । क मन्थार ।

२ २२ प्रति स ३ । पत्र सं १७ । मे नाल  $\times$  । के सं १२३ । क मन्थार । अय्युर सं १३३ ।

इसके साहित्यिक का एक-एक मन्थार में एक-एक प्रति ( के सं ११५ ११६ ) का मन्थार में दो  
 प्रतियाँ ( के सं ७१ ७२ ) का मन्थार में दो प्रतियाँ ( के सं १३५ १३६ ) तथा क मन्थार में तीन प्रतियाँ  
 ( के सं २ ३२ ३३ ३४ ) थीं हैं ।

२ २३ कुमारसंभवद्वितीय—कन्नडसागर । पत्र सं १२ । मा १  $\times$  १५ इय । मन्थार—संस्मृत ।  
 विपक्ष—नाल्य । १ नाल  $\times$  । के नाल  $\times$  । पूर्ण । के सं २३ । क मन्थार ।

विशेष—अति कीर्ति है ।

२४ कृष्ण-बुद्धायसक्ति—बाहीमस्तिह । पत्र सं ४९ । मा ११  $\times$  १२ इय । मन्थार—संस्मृत ।  
 विपक्ष—नाल्य । १ नाल सं ११५७ मन्थार कुटी २ । पूर्ण । के सं १३३ । क मन्थार ।

विशेष—इसका नाल भोवंबर कथित की है ।

२ २५ प्रति स २ । पत्र सं ४६ । के नाल सं १११ मन्थार कुटी १ । के न ७३ । क  
 मन्थार ।

विशेष—टीका मन्थारकुटी में माधुवाली बीच के पत्रों में प्रतिनिधि की की ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ७४ ) और है ।

२०२६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०४ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र सं० ३ । भा० ८१×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल सं० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में भवावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय ( मन्दिर पाटोदी ) में प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे प्रारम्भ में रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

ग्रन्थिमा पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । भा० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

\* विशेष—२१ व २२वां पत्र नहीं है ।

२०२९ गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । भा० ११३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—कालरायाटन में गौड़ ब्राह्मण पडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसो भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० १७४६ ) और है ।

२०३१ गौतमस्वामीचरित्र—महर्षिचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । भा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३६ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

२०३३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १९०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । झ भण्डार ।

२०३५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । भा० १३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १९४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना सन् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।



२ ३० घटकपरिच्छेद—घटकपरि । पत्र सं ४ । वा १२×२३ इति । भस्मा—संस्तुत । विरच-  
कम्प । र क्त्व × । से कात् सं १५१ । पूर्ण । के सं २३ । अ मन्धार ।

विशेष—बभ्रुवसु में आदिनाम पोषाणय में क्व लिखा गया था ।

अ घोर अ मन्धार में दलनी एक एक प्रति ( के सं १२४ व ७२ ) घोर है ।

२ ३२ कम्पनाचरित्र—म० शुभमन्त्रु । पत्र सं ३१ । वा १ × २३ इति । भस्मा—संस्तुत । विरच-  
कम्प । र क्त्व सं १६२२ । से कात् सं १ ३३ भारवा कुटी ११ । पूर्ण । के सं १३ । अ  
मन्धार ।

० ३३ प्रति सं २ । पत्र सं ३४ । से कात् सं १ २२ मन्त्रु कुटी ३ । के सं १७२ । अ  
मन्धार ।

१ ४ प्रति सं ३ । पत्र सं ३७ । से कात् सं १५६३ डि भागण । के सं १६७ । अ  
मन्धार ।

२ ४१ प्रति सं ४ । पत्र सं ४ । से कात् सं १५१७ मन्त्रु कुटी ७ । के सं २४ । अ  
मन्धार ।

विशेष—आपातेर मे पं सवर्द्धनाम मीमा के मन्त्रि के स्वयम्भूत् प्रतिनिधि हुई थी ।

२ ४२ प्रति सं ५ । पत्र सं ५७ । से कात् सं १ ६१ भारवा कुटी । के सं २ । अ  
मन्धार ।

इसी मन्धार में एक प्रति ( के सं २७ ) घोर है ।

० ४३ प्रति सं ६ । पत्र सं ६ । से कात् सं १ ३२ मन्त्रि कुटी १ । के सं २ । अ  
मन्धार ।

२ ४४ कम्पनाचरित्र—वीरवदि । पत्र सं २३ । वा १२×२३ इति । भस्मा—संस्तुत । विरच-  
कम्प । र क्त्व × । से कात् सं १२ ६ वीव कुटी ११ । पूर्ण । के सं ११ । अ मन्धार ।

विशेष—ब्रह्मलि क्पुर्ण है ।

२ ४५ प्रति सं २ । पत्र सं १ ६ । से कात् सं १६४६ मन्त्रि कुटी १ । के सं १७४ ।  
अ मन्धार ।

२०४६ प्रति सं ३ । पत्र सं ५७ । से कात् सं १२२४ भारवा कुटी १ । के सं १६ । अ  
मन्धार ।

विशेष—अदिना अकालि मित्र प्रकार है—

की कर्त्तव्यता वही विदुष मुनि बगलवर्द्धने प्रविष्टं कालावधि बभ्रु क्वचप्रतिनामालोक कालि मन्-  
कालावधुने विरचर वचनारामको बगलवर्द्धनेव वान्नात्वं मित्रकविविष्टं कालावत्वं इति सं १२२४ वरं भारवा  
वरी ७ क्व लिखितं कर्मकथयित्तं ।

२०४७. प्रति स० ४ । पत्र स० ५७ से ७४ । ले० काल स० १७८५ । मूर्णो । वे० सं० २१७७ । ट  
मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरै श्रीमूलसधे बलात्कारिण्यौ श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक  
श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्ति  
देवातत्पिष्य श्र० सजयति इद शास्त्र ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्त लिखार्थित्वा ठीकुरदारस्यानो साधु लिखित ।

इन प्रतियो के अतिरिक्त अ मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० १५६ ) च मण्डार मे दो प्रतिया ( वे० स०  
६०, ८८ ) ज मण्डार में तीन प्रतिया ( वे० स० १०३, १०४, १०५ ) एव ट मण्डार मे एक एक प्रति ( वे० स०  
१६४, २१६० ) और हैं ।

२०४८ चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका—टीकाकार गुणानन्दि । पत्र स० ८६ । मा० १०×४ इ च । भाषा-  
संस्कृत । विषय-काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ११ । अ मण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता प्राचार्य वीरनदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १६ सर्गों मे है ।

२०४९ चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र स० २१ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ मासोज सुदी १३ । वे० स० ३२५ । ज मण्डार ।

२०५० चन्द्रप्रभचरित्र—यशकीर्ति । पत्र स० १०६ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-मपत्र श ।  
विषय-माठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे०  
स० ६६ । अ मण्डार ।

विशेष—मय सवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरै काष्ठसधे मा ( अमूर्ण )

२०५१ चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स० ६५ । मा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १ । अ मण्डार ।

विशेष—दमवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्राचार्येवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य  
नदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० स० ७३ । क  
मण्डार ।

२०५३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० स० १६६ । ट  
मण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त एव ट मण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ४८, २१६६ ) और हैं ।

२०५४ चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर ( शिष्य धर्मचन्द्र ) । पत्र सं० १४६ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल स० १७२७ भाद्रवा सुदी ६ । ले० काल स० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण ।  
वे० सं० १६ । अ मण्डार ।

विदेह—पद्मिनी—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री गणेशाय नमः ।  
 धिरे वीर्यवती विद्यावंश वन्द्य वाद्युतः ।  
 यत्र कुटुम्बप्रियवर्णस्यो विद्युः शिवात् ॥१॥  
 सुपालवचनो सुप्रवचनारण्यदेवरे ।  
 हेतु स्वराजस्युत्प्रेक्षितं वरोदः प्रकल्पितः ॥२॥  
 दुर्गाती देव सीर्येकावतीर्य इवलिप्त ।  
 तत्रहं वृत्तं वरे वृत्तं वृत्तमायकं ॥३॥  
 वती हीर्यवद वानो मुक्तिदियो गृहाराती ।  
 सातिनाका वसु सायि वसोयु वाः प्रयति इत् ॥४॥

पद्मिनी मन्त्र—

सुदुर्गा-मन्त्र ( १७३१ ) पद्मवर्ण प्रदे सर्वशक्ति  
 वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 एते एते विदेहवर्षिर् श्रीगङ्गापुत्रात्मि  
 वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 एतं वसुः शक्तिवर्षिर् श्रीगङ्गापुत्रात्मि वै  
 सुदुर्गा वसुधैव कुटुम्बकम् ॥१॥

इति श्री महासुविद्योदुत्तु वरदुर्गादेव श्रीवर्मवर्षिणा वसु धातोवर्षिणीने श्रीगङ्गादेव वीर्ये विरलि  
 मन्त्र वर्णनं मन्त्र कर्तव्यमिति वाक्यं कर्तं ॥१॥

इति श्री गङ्गादेववर्षिणं वसुधैव । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।

१ इति मन्त्रि स २ । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।

२ इति मन्त्रि स ३ । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।

विशेष— श्री गङ्गादेववर्षिणीने विद्यावंश वन्द्य वाद्युतः ।  
 २७२५. वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 विशेष— वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् । वसुधैव कुटुम्बकम् ।  
 इति मन्त्रा में हीन शक्ति ( १७३, १९७, १९ ) धीर है ।

२०५८ चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र स० १६५ आ० १०५×४५ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—मेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्णा । वे०  
स० ८७४ । अ मण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में प० अमोचन्द ने प्रति-  
लिपि की थी ।

आदिभाग— ॐ नम सिद्धेभ्य श्री सारदाई नम ॥

आदिजिनआदिस्तु प्रति श्री महावीर ।

श्री गौतम गणधर नमु वलि भारति गुणगभीर ॥१॥

श्री मूलसर्धमहिर्मा धर्यो सरस्वतिगद्य गृ गार ।

श्री सकलकीर्ति गुरु अर्नुक्रमि नमुध्रीपञ्चनदिं भवतार ॥२॥

तस गुष भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।

चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रचु नमी पाय ॥३॥

अन्तिम—

भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभागि अति विचक्षणं वदि वारण केशरी ।

भट्टारक श्री पद्मदिचरणकांज सेवि हरि ॥१०॥

एसहु रे गद्य नायक प्रणमि करि

देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।

धरिचित्त चरणो नमि कल्याणकीरति इम भणी ।

चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रक्षिमि आदर धरि ॥११॥

रायदेश मध्य रे भिलोठ डंबसि

निज रचनायि रे हरिपुर निहसि

हसि अमर कुमारनितिहा धनपति वित्त विलसए ।

प्रासाद प्रतिमा, जिन प्रति करि सुकृत संज्ञए ॥१२॥

मुकृत सधि रे व्रत बहु आचरि

दान महोद्दरे जिन पूजा करि

करि उद्द गान गद्यव चन्द्र जिन प्रासादए ।

बावन सिखर सोहामण भवज वनक कलष विलासए ॥१३॥

मंडप मर्षि समवसरण सोह

श्री जिन निबरे मनोहर मन मोहि ।

वीहि विनयन वरि उग्रत मज्जतोऽधिवासत् ।  
 विहा विनयनय विहात मुन्दर विनयतन एवपलत् ॥१७॥  
 त्वां भोमप्रति रे एवतां वरि  
 लीलावांशु रिरे धालो वनुमरि ।  
 वनुमरि वाधो मुल पंभनी श्रीबुध वरद्वयव वरि ।  
 कन्धरुपीरि वहि वज्जत क्कडो वाधर वरि ॥१८॥

वाहा—वाधर वज्ज संभ वीररि विनय वरिह मुकवार ।  
 ते वीरि वाधरत भो वरंभ एवो वनेव्जार ॥१॥  
 वरिह मुठि वाधर वरि वाचक विविध वान ।  
 इ हो वली एव ते वहि वाधर वीरि वनुमज्ज ॥२॥  
 वरि वी वाधरत मयव वज्जत ॥

विक्रम—वक्तु १ ३३ वने कालिक वरि ६ पुर्ववारे सिधित वहुमुत्तुरवामे वी विनयनी वीधामने वनु-  
 रव वी २ वरंभकुवठं एवट्टं वनुमर वी २ वेविहरीति एवविन्ध वरिह धवीरंभ वरहरीव विविध ।

॥ वी एतु ॥

२०५२. वाधरवचरिह—आराम्भ । वर वं २ । वा १२०८ दज्ज । वाता-हिनी । विनय-  
 वरिह । २ वज्ज वं १ १३ वज्ज वरुटी २ । वे वज्ज × । पुर्व । वे वं १७५ । व वज्जार ।

२ ६ वाधरवचरिह—वेदकवज्ज । वर वं १२ । वा १२५ × दज्ज । वाता-हिनी वर ।  
 विनय-वरिह । २ वज्ज वं १२२ वज्ज वरुटी १ । वे वज्ज × । वे वं १७२ । व वज्जार ।

२०६१ वानुवामिचरिह—अं विलदास । वर वं १ ७ । वा १२०८ दज्ज । वाता-वसुवट्ट ।  
 विनय-वरिह । २ वज्ज × । वे वज्ज वं १२२२ । पुर्व । वे वं १७२ । व वज्जार ।

२ ६२. वरि वं २ । वर वं १२२ । वे वज्ज वं १७२ वरुवट्ट वरुटी २ । वे वं २२२ । व  
 वज्जार ।

२ ६३. वरि व ३ । वर वं १२४ । वे वज्ज वं १५२ वरुवट्ट वरुटी २२ । वे वं १५४ । व  
 वज्जार ।

व वज्जार व वर वरि ( वे वं २३ ) वीर वी ।

२०६४ वरि वं ४ । वर वं १२५ । वे वज्ज × । वे वं २६ । व वज्जार ।

विक्रम—वरि वरुवट्ट वी । वज्ज २ वजा वरिह वर वने विक्री वरु वी ।

२ ६५. वरि व ५ । वर वं १२६ । वे वज्ज × । वे वं १२६ । व वज्जार ।

विक्रम—वज्ज एवा वरिह वर वने विक्री वरु वी ।

२०६६ प्रति स० ६ । पत्र स० १०४ । ले० बाल म० १८६४ पोप बुदी १४ । वे० म० २०० । क

मण्डार ।

२०६७ प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० म० १०१ । च

मण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८ प्रति स० ८ । पत्र स० १०१ । ले० काल म० १८२५ । वे० स० ३५ । छ मण्डार ।

२०६९ प्रति स० ९ । पत्र स० १२३ । ले० बाल × । वे० स० ११२ । च मण्डार ।

२०७० जम्बूस्वामीचरित्र—प० राजमहल । पत्र म० १२९ । भा० १२३×५३ इक्ष । भापा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल स० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । क मण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१ जम्बूस्वामीचरित्र—प्रिजयकीर्ति । पत्र स० २० । भा० १३×८ इक्ष । भापा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । २० काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० बाल × । पूर्ण । वे० स० ४० । ज मण्डार ।

२०७२ जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र स० १८३ । भा० १४३×५३ इक्ष ।

भापा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल स० १९३४ फागुण बुदी १४ । ले० बाल स० १९३६ । वे० स० ४२७ । अ मण्डार ।

२०७३ प्रति स० २ । पत्र स० १६६ । ले० बाल × । वे० स० १८६ । क मण्डार ।

२०७४ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र स० २८ । भा० १२३×८ इक्ष । भापा—हिन्दी गद्य ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वे० म० १६९ । छ मण्डार ।

२०७५ जिनचरित्र । पत्र स० ६ से २० । भा० १०×४ इक्ष । भापा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११०५ । अ मण्डार ।

२०७६ जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ६५ । भा० ११×५ इक्ष । भापा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १४७ । अ मण्डार ।

२०७७ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल स० १८१६ माघ बुदी ५ । वे० स० १८९ । क

मण्डार ।

विशेष—सेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल म० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० स० २०३ । ड

मण्डार ।

२०७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १९०४ मासोज बुदी २ । वे० स० १०३ । च

मण्डार ।

२७८० प्रति स० २। पत्र सं १४। मे वल सं १ ७ मंत्रित्तु गुरी ११। के सं १४। प  
 न्यवार ।

विशेष—यू प्रति पं बोधकाय एवं रायचंद्र की की देवा प्रलेख है।

३३ न्यवार में एक मयूरी प्रति ( के सं ७१ ) धीर है।

२ ८१ प्रति स० ६। पत्र सं २७। मे वल सं १६ ५ मंत्रित्तु गुरी १२। के सं १६। प

न्यवार ।

विशेष—बोरीदास बनवा वाले मे कभी में प्रतिमिति की की ।

२ ८२. प्रति स ७। पत्र सं ३ । मे वल सं १७ ३ मंत्रित्तु गुरी । के सं २४। प

न्यवार ।

विशेष—विनाय में पं बोधकाय मे प्रतिमिति की की ।

२७८३ किमपुत्रपरिवारा—पत्रासाहस चौधरी। पत्र सं ७६। या १३×२२ इंच। भाषा—हिन्दी  
 विषय—वर्णन। ८ वल सं १६३६ वाच गुरी ११। मे वल ×। पूर्ण। के सं १६। क न्यवार ।

२ ८४ प्रति स ३। पत्र सं ६। मे वल ×। के सं १६१। क न्यवार ।

२७८४. बीरबलपरिच—महाराज शुभचन्द्र। पत्र सं १२१। या ११×१५ इंच। भाषा—मैथिल।  
 विषय—वर्णन। ८ वल सं १२६६। मे वल सं १८४ कागुण गुरी १४। पूर्ण। के सं २९। क  
 न्यवार ।

दुनी न्यवार में २ मयूरी प्रति ( के सं ८७३ १२ ) धीर है।

२ ८६ प्रति स २। पत्र सं ७२। मे वल सं १ ३१ मंत्रित्तु गुरी १३। के सं २६। क

न्यवार ।

विशेष—मैथिल प्रणालि गरी हुई है।

२ ८७ प्रति स० ३। पत्र सं ६७। मे वल सं १ ६ कागुण गुरी । के सं ४१। क

न्यवार ।

विशेष—बनारस कलकत्ता में बहुराज कलकत्ता के छात्रवृत्त के मेथिलान विषय विषय ( बोरी पर  
 मन्दि ) के बचनराज दत्ताचार्य मे प्रतिमिति की की ।

२ ८८. प्रति स ४। पत्र सं १ ८। मे वल सं १८ मंत्रित्तु गुरी २। के सं ४२। क

न्यवार

२८८. प्रति स० २। पत्र सं २१। मे वल सं १ १३ मंत्रित्तु गुरी ३। के सं ३। क

न्यवार ।

२ ९० जीर्णपरिच—महाराज शिवाना। पत्र सं ११४। या १३ २४ इंच। भाषा—हिन्दी।  
 विषय—वर्णन। ८ वल सं १८४। मे वल सं १ २६। पूर्ण। के सं ४१। क न्यवार ।

२०६१ प्रति स० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १६३७ चंद्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च

मण्डार ।

२०६२ प्रति स० ३ । पत्र स० १०१ मे १५१ । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० १७४३ । ट

मण्डार ।

२०६३ जीवधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी । पत्र स० १७० । मा० १३X५ इक्ष । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—चरित्र । २० काल म० १६३५ । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २०७ । क मण्डार ।

२०६४ प्रति स० २ । पत्र म० १३५ । ले० काल X । वे० म० २१४ । छ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहा द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५ प्रति स० ३ । पत्र स० १३२ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । छ मण्डार ।

२०६६ जीवधरचरित्र । पत्र स० ४१ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{६}$  इक्ष । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

चरित्र । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० २०२६ । अ मण्डार ।

२०६७ रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अरुण के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । मा० ११X $\frac{५}{६}$  इक्ष ।

भाषा—मपन्न श । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल स० १५३६ एक १४०१ । पूर्णा । वे० सं० ६६ । अ मण्डार ।

२०६८ रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र म० ४३ । मा० १२X५ इक्ष । भाषा—मपन्न श । विषय—

काव्य । २० काल स० १२८७ । ले० काल स० १५८२ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १२५ । च मण्डार ।

विशेष—चंदेरी में प्राचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निर्मित लिखा गया ।

२०६९ त्रैसठशलाकापुरूपचरित्र । पत्र सं० ३६ मे ६१ । मा० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{६}$  इक्ष । भाषा—प्राकृत ।

विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० २०६० । अ मण्डार ।

३००० दुर्घटकाव्य । पत्र सं० ४ । मा० १२X $\frac{५}{६}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०

काल X । ले० काल X । वे० सं० १८५१ । ट मण्डार ।

३००१ द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । मा० १०X $\frac{५}{६}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० १८३२ । ट मण्डार । ( दो सर्ग हैं )

३००२ द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र म० ६२ । मा० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{६}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० ८५३ । अ मण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य

भी है ।

३००३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० ३३१ । क मण्डार ।

३००४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल स० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क

मण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री लक्ष्म के पुत्र पदारथ न प्रतिलिपि की थी ।



३ १ द्विसप्तशतिका—विनयचन्द्र। पत्र सं २२। भा १२२×२३ दश। भाषा—संस्कृत।  
विषय—काल। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। के सं ३३। क मन्थार।

३ २ द्विसप्तशतिका—मेदिनीश्वर। पत्र सं ३२१। विषय—काल। भाषा—संस्कृत।  
काल ×। के काल सं १६३२ वर्तमान सुदी ४। पूर्ण। के सं ३२६। क मन्थार।

विशेष—इसका नाम षष्ठ प्रश्नी भी है।

३ ००. प्रति सं २। पत्र सं ३२। के काल सं १७३ भाषा सुदी १। के सं १२७। क  
मन्थार।

३ ०१. प्रति सं ३। पत्र सं ७। के काल सं १२६ वर्तमान सुदी २। के सं ११३। क  
मन्थार।

विशेष—केवल प्रसारित मसूदा है। भोजपुर (आधिका) के म्हात्मा कुपट्ट के वाक्यकाल के प्रतिनिधि  
की गई थी।

३ ३. द्विसप्तशतिका—। पत्र सं २२४। भा २ २ × दश। भाषा—संस्कृत। विषय—  
काल। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। के सं ३२। क मन्थार।

३ ४. शम्भुमारचरित—भा शुभमन्त्र पत्र सं २३। भा १ ×२ दश। भाषा—संस्कृत।  
विषय—चरित। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ३३३। क मन्थार।

३ ११. प्रति सं २। पत्र सं २०४२। के काल सं १२६७ वर्तमान सुदी १। पूर्ण। के  
सं ३२२। क मन्थार।

विशेष—शुभ नाम के निवासी शम्भुमारचरित के प्रतिनिधि की थी। एक समय शुभ (कानपुर) पर  
अन्वीरण का एवम लिखा है।

३ १२. प्रति सं ३। पत्र सं ३६। के काल सं १६२२ द्वि ज्येष्ठ सुदी ११। के सं ४२। क  
मन्थार।

विशेष—कल्प प्रसारित की हुई है। धामेर में अरिपञ्चम शैलालय के प्रतिनिधि हुई। केवल प्रसारित  
मसूदा है।

३ १३. प्रति सं ४। पत्र सं ३२। के काल सं १६४। के सं १९। क मन्थार।

३ १४. प्रति सं ५। पत्र सं ३३। के काल ×। के सं ३९१। क मन्थार।

३ १५. प्रति सं ६। पत्र सं ४०। के काल सं १६३ वर्तमान सुदी ३। के सं ४२। क  
मन्थार।

विशेष—वामिका कीवानी के कल्प की प्रतिनिधि करने हुए की कल्पवृत्ति को संद किया था।

३ १६. शम्भुमारचरित—स कल्पवृत्ति। पत्र सं १७। भा ११×२३ दश। भाषा—संस्कृत।  
विषय—चरित। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। के सं ३३। क मन्थार।

विशेष—कानपुर अरिपञ्चम एक है।

३०१७ प्रति स० २ । पत्र म० ३६ । ले० काल स० १८५० आषाढ बुदी १३ । वै० स० २५७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८ प्रति म० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८२५ माघ सुदी १ । वै० स० ३१४ । अ  
भण्डार ।

३०१९ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वै० म०  
११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नहीं है । ग्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२० प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८१३ भाद्रवा बुदी ८ । वै० स० ४४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—देवगिरि ( दोसा ) में प० बस्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ  
दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१ प्रति स० ६ । पत्र म० ३१ । ले० काल × । वै० स० १७ । अ भण्डार ।

३०२२ प्रति स० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल स० १६६१ वैशाख सुदी ७ । वै० स० २१८७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे बुधनाम जोगे गुरुवासर नद्याम्नाये बलात्कारगणे  
सरस्वती गच्छे ।

३०२३ धन्यकुमारचरित्र—अ० नेमिदत्त । पत्र स० २४ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४ प्रति स० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६०१ पीप बुदी ३ । वै० स० ३२७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—फोडुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७६० श्रावण सुदी ५ । वै० सं० ८६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६ प्रति स० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ७ । वै० स० ८७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७ धन्यकुमारचरित्र—शुशालचंद । पत्र स० ३० । भा० १४×७ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३७४ । अ भण्डार ।

- ३ २८. प्रति स २। पच सं ११। ते काल ×। के सं ४१९। अथर्वार।  
 ३ २९. प्रति सं ३। पच सं १२। ते काल ×। के सं ३१४। अथर्वार।  
 ३०३ प्रति सं ४। पच सं १३। ते काल ×। के सं ३२९। अथर्वार।  
 ३ ३१ प्रति सं ५। पच सं १४। ते काल सं ११२४ नातिकपुरी ३। के सं २१९। अथर्वार।

अथर्वार।

- ३ ३२. प्रति सं ६। पच सं १५। ते काल सं १ २२। के सं २४। अथर्वार।  
 ३ ३३ प्रति सं ७। पच सं १६। ते काल ×। के सं ४१३। अथर्वार।

विशेष—बंशोपस्य क्षत्रया नीजमन्वाय काले ते प्रतिमिति की थी। इत्ये प्रथिति वादी विरक्त है।

इसके प्रतिरिक्त अथर्वार में एक प्रति (के सं ३२४) तथा ऊँ पीर अथर्वार में एक एक प्रति (के सं १९ व १२) की है।

३ ३४ अथर्वारपरिचर—। पच सं १। पा १ × २ इत्ये। अथा—द्विती। विपच—नया।  
 र काल ×। ते काल ×। पचुर्ली। के सं ३२३। अथर्वार।

३ ३३ प्रति सं २। पच सं १। ते काल ×। पचुर्ली। के सं ३२४। अथर्वार।

३ ३६ धर्मराम्निभ्युद्वय—महाकवि हरिचन्द्र। पच सं १२३। पा १ २ × २ इत्ये। अथा—  
 नंदवृत्। विपच—नाथ। र काल ×। ते काल ×। पचुर्ली। के सं २१। अथर्वार।

३ ३० प्रति सं २। पच सं १०। ते काल सं १२३ नातिकपुरी ३। के सं ३४५। अथर्वार।

विशेष—नीचे संवत् में धकेत विवेक है।

३ ३८. प्रति सं ३। पच सं १२। ते काल ×। के सं २३। अथर्वार।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अथर्वार में एक एक प्रति (के सं १४२ ३४९) की है।

३ ३९ धर्मराम्निभ्युद्वय—वराहोक्ति। पच सं ४। ते ११। वा १२ × २ इत्ये। अथा—  
 नंदवृत्। विपच—नाथ। र काल ×। ते काल ×। पचुर्ली। के सं २९। अथर्वार।

विशेष—टीका वा नाम 'अथर्व वेद टीका' है।

३ ४० प्रति सं २। पच सं ३४। ते काल सं १२२२ नातिकपुरी ३। पचुर्ली। के सं ३४०।  
 अथर्वार।

विशेष—अथर्वार में एक प्रति (के सं ३४२) की है।

३०४१ महावृद्धाथर्व—अथर्वपुरी। पच सं ३२। ते ११०। वा १ २ × २ इत्ये। अथा—नंदवृत्।  
 विपच—नाथ। र काल। ते काल सं १४२२ अथर्वपुरी ३। पचुर्ली। के सं ३४२। अथर्वार।  
 पच सं १ के ३१ २३, २६ तथा २९ के ७२ मही है। टीका नीचे के की है जिन पर पच सं मही है।

विशेष—इसका नाम 'महावृद्धाथर्व' तथा 'पुरीपुरा' की है। इसकी रचना म १४१४ के  
 पूर्व हुई थी। जिन रत्नसूत्र में अथर्वार वा नाम महीपुरी तथा अथर्वपुरी के नामों दिया हुआ है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाच्युन वदि न शुक्रे लिखितमिदं श्रीमदणहिलपतने ।

३०४२ नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र स० ६ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । २० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ । । अ भण्डार ।

३०४३ नवरत्नकाव्य । पत्र स० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३ ४४ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ११४६ । अ भण्डार ।

३-४५ नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरी । पत्र स० २२ । आ० १०<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे कुदकुदा-  
चार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये  
अप्पेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा नृप चु डा सा० सागा भार्या सूरहवदे द्वि०  
शृ गारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आमा, धणपाल आसा भार्या हकारदे, धणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा  
भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे ।  
चु डा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये आसा भार्या महकारदे इदशास्त्र  
लि०मडलाचार्य श्री धर्मचद्राय ।

३०४६ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८२६ पीप सुदी ५ । वे० स० ३६५ । क  
भण्डार ।

३०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ५० । अ  
भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० मे १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं ।  
पन्त में निम्न प्रकार लिखा है । पाडे रामचन्द्र के भार्ये पघराई पोथी । सवत् १८०६ चैत्र वदी ५ मनिवासरे दिल्ली ।

३०४८ प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५८० । वे० स० ३५३ । अ भण्डार ।

३०४९ प्रति स० ५ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० स० ४६६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—तक्षवगढ में कल्याणराज के समय में आ० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५० प्रति स० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०७ । अ भण्डार ।

३ ३१ नागकुमारवरिष्ठ—२० घमपर । पत्र सं २२ । भा १ ३×४ दण । भावा-संभव । विषय-वर्णन । र काल में १३११ मासल सुदी १२ । मे काल में ११११ वैशाल सुदी १ । पूर्ण । ३ न २३ । अ कथार ।

३०३२ नागकुमारवरिष्ठ— । पत्र सं २२ । भा ११×२ दण । भावा-संभव । विषय-वर्णन । र काल में १ २१ मारवा सुदी ४ । पूर्ण । मे सं १ । अ कथार ।

३ ३३ नागकुमारवरिष्ठतीक्ष्ण—तीक्ष्णसर प्रमाचमत्र । पत्र सं २ ११ । भा १०×४ दण । भावा-संभव । विषय-वर्णन । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं २१ न । अ कथार ।  
 विशेष—मति मधीम है । घणित्त बुधिका तिम्ब प्रवार है—

यो व्यर्थित्त्वोवरत्नने बीज्यात्तैवविधी परारनेष्टिबलागीर्यकित्तमभुध्यतिराहृत्यकिलकविष बीजान् कल्पविषेण यो कल्पयती विष्णुर्हं इत्यमिति ।

३०३४ नागकुमारवरिष्ठ—इष्टपद्मक । पत्र सं ३१ । भा ११× ३ दण । भावा-विष्णो । विषय-वर्णन । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १२४ । अ कथार ।

३ ३५ मति सं २ । पत्र सं ३२ । मे काल × । मे सं १२२ । अ कथार ।

३ ३६ नागकुमारवरिष्ठमाथा— । पत्र सं ४२ । भा १३× ३ दण । भावा-विष्णो । विषय-वर्णन । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १०० । अ कथार ।

३ ३७ मति सं २ । पत्र सं ४ । मे काल × । मे सं १०१ । अ कथार ।

३०३८ मेसिकी का परित्रभाण्ड । पत्र सं २ मे २ । भा १०×४ दण । भावा-विष्णो । विषय-वर्णन । र काल में १२ अ कथार सुदी ३ । मे काल में १ २१ । पूर्ण । मे सं २२२ । अ कथार ।

विशेष—मणित्त मण—

मेव त्तन वस्तु मपर मन्वे १ । रक्षा न वक्त मन्वे ।  
 परत मन्वे मल वारी वदत मरवता मण ॥  
 कथुव मरतवा मापव दुप मिलावर वदती मीवती ।  
 मण्ड मर्न वीवा मरदुप संघ मण माल मणान दुरा मी ।  
 मंघत । विदीतर मन्वुण मण मन्वारी ।  
 मुव मंघती मदीतर १ मीवी न एन उवारी ॥  
 मीवी परत ववार मन्वारी दण मन्वी मणान मन्वारी ।  
 मण १ मन्वुव मरमन्वारी मण मेव मन्वुव मण मन्वारी ॥१२॥  
 इति मी मेवती मे मन्वुव मणान ।

सं १ २१ मेमानी मी मी मीमन्वारी मी मित्तान मन्वुवारी मरवत मन्वे ।  
 मन्वे मेवती मे मण मण मन्वे मन्वे ।

२१५६ नेमिनाथ के दशभव । पत्र स० ७ । प्रा० ६×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६१८ । वे० स० ३५४ । कृ भण्डार ।

२१६० नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र स० २२ । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाट्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास दूत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७३ । अ भण्डार ।

२१६२ नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० २ मे ७८ । प्रा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाट्य । २० काल × । ले० काल स० १५८१ पीप सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र स० १०० । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६० । क भण्डार ।

२१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में ( वे० स० ३८६ ) भी है ।

२१६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८२ । ड भण्डार ।

२१६६ नेमिनिर्वाणपत्रिका । पत्र स० ६२ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

नाट्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिद्वर चित्ते लब्धवानस चतुष्टय ।

कुर्वेह नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पत्रिका ॥

२१६७ नैपथ्यचरित्र—हर्षकवि । पत्र स० २ से ३० । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

नाट्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८ पद्मचरित्रसार । पत्र स० ५ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का ससित भाग है ।

२१६९ पर्युषणकल्प । पत्र स० १०० । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वे० स० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं । श्रुतस्कंध का द्वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—स० १६६६ वर्षे भूलताणमध्ये सुधायक सोतू तत् वधू हग्नी तत् मुता मुलकणी मेल्लु धडाएहे

वत्तेन एषा प्रति प० श्री राजकीर्तिगणिना विहरेर्जिता स्वपुत्राय ।

२१७० परिशिष्टपर्यन्त—। पत्र सं २ के न । या १ १/४ × ४ इव । जला-संख्या । मि-  
परिव । ८ नाल × । मि नाल सं १९७३ । पूर्वी । के सं १२२ । अ नम्बरा ।

विशेष—११ व १२वां पत्र नहीं है । बीरमपुर नगर के प्रतिनिधि हुई थी ।

२१७१ पञ्चनदुतकायम्—बाविचन्द्रसुरि । पत्र सं १३ । या १२ × २ इव । जला-संख्या  
मिन्म-नाम्न । ८ नाल × । मि नाल सं १२२२ । पूर्वी । के सं ४२२ । अ नम्बरा ।

विशेष—सं १२२२ में एव के प्रत्येक के बाई हुनीकाल के धनसोपचारार्थ मन्त्रिपुर नगर के प्रतिनिधि हुई

२१७२ प्रति सं २ । पत्र सं १९ । मि नाल × । के सं ४२६ । अ नम्बरा ।

२१७३ पावडवपरित्र—काकवर्द्धन । पत्र सं २७ । या १ १/४ × ४ इव । जला-संख्या व ।  
विशेष-परिव । ८ नाल सं १७९ । मि नाल सं १ १७ । पूर्वी । के सं १२२३ । अ नम्बरा ।

२१७४ पार्ष्णीनामपरित्र—बादिटाजसुरि । पत्र सं २९ । या १२ × २ इव । जला-संख्या ।  
विशेष-पार्ष्णीनाम का जीवन परिव । ८ नाल सं २४७ । मि नाल सं १२७७ पञ्चदश बुदी २ । कुल । अन्त  
बीर्मा । के सं २२२ । अ नम्बरा ।

विशेष—पत्र सं २९ के एव के कुले हुए हैं । अन्त का सुपरा नाम पार्ष्णीनाम थी है ।

अधिति मिन्म प्रकार है—

पत्र १२७७ वसे पञ्चदश बुदी २ की मुखर्षी महात्कारकले कच्छवतीपन्थी नैचाम्नीके न्हाराव की पञ्चमी  
जन्म न्हाराव की मुखर्षीदेवसत्तरु न्हाराव बीरमपुरदेवसत्तरु न्हारावकोपमनामपत्रदेवसत्तरुनामने कानु वीने  
बाह्य अधिति एव नामां नांवकरी टाकी पुनः अनुविचवाल नहरकुच । ताह नका एव नामां पत्रमा ठकी । पुन वंभारस एव  
नामां नालाने ठकीपुनः । ताह हुण्ड ह्ये मिर्ष अण्यथि ।

१२५ प्रति सं २ । पत्र सं २९ । मि नाल × । पूर्वी । के सं १ ७ । अ नम्बरा ।

विशेष—२९ के एवके पत्र नहीं है ।

१७६ प्रति सं ३ । पत्र सं १२ । मि नाल सं १२२२ पञ्चदश बुदी २ । के सं २१ । अ  
नम्बरा ।

विशेष—केवल अचरित बाबा पत्र नहीं है ।

१७७ प्रति सं ४ । पत्र सं १४ । मि नाल सं १७७१ बीच बुदी १ । के सं २११ । अ  
नम्बरा ।

नम्बरा ।

२१७८ प्रति सं ५ । पत्र सं १२ । मि नाल सं १९७२ पञ्चदश बुदी २ । के सं १९ । अ नम्बरा ।

२१७९ प्रति सं ६ । पत्र सं १ । मि नाल सं १७७२ । के सं १२ । अ नम्बरा ।

विशेष—पञ्चवती के कच्छवती नामके नाम में बोर्ड'न के प्रतिनिधि थी थी ।

काव्य एवं चरित्र ]

२१८० पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र स० १२० । आ० ११×५ इ च । भाषा-  
संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी  
६ । पूर्ण । वे० स० १३ । अ भण्डार ।

२१८१ प्रति स० २ । पत्र स० ११० । ले० काल स० १८२३ कार्तिक बुदी १० । वे० स० ४६६ ।  
क भण्डार ।

२१८२ प्रति सं० ३ । पत्र स० १६१ । ले० काल स० १७६१ । वे० स० ७० । घ भण्डार ।

२१८३. प्रति स० ४ । पत्र स० ७५ मे १३६ । ले० काल स० १८०२ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे०  
स० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

सवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येमुश्रावक-पुण्यप्रभावक-  
श्रीदेवयुक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४ प्रति स० ५ । पत्र स० ५२ से २२६ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी २ । अपूर्ण । वे०  
सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द की थी ।

२१८५ प्रति स० ६ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८ । वे० स० २१७ ।  
च भण्डार ।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादाम मे लिखवायी थी ।

२१८६ प्रति सं० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० स० १५ । छ  
भण्डार ।

विशेष—प० श्याजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई ।

२१८७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८ प्रति स० ९ । पत्र स० ६१ मे १४४ । ले० काल स० १७८७ । अपूर्ण । वे० स० १६४५ ।  
ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० स० १०१३, ११७५, २३६ ) क तथा घ  
भण्डार में एक एक प्रति ( वे० स० ४६६, ७० ) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८ )  
ज तथा ट भण्डार में एक एक प्रति ( वे० स० २०५, २१८४ ) भी हैं ।

२१८९ पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गधू । पत्र स० ८ से ७६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—अनुप्रास ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९० पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र स० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल स० १७८६ भाषाठ सुदी ५ । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वे० स० ३५६ ।  
अ भण्डार ।





देवास्तत्पट्टे म० श्री प्रभावन्देवास्तद्धिष्य महलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदान्मानये रामसरनगरे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये खडेल-  
वालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरपरसू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्री द्वौ प्रथम साह दामा  
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गंगी तयो पुत्र सा० वीरदिय तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयो  
पुत्र सा० खरहय एतेषा मन्वे जिनपूजापुरद्वरेण सा० खेलाख्येन इद श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणोक्तर्म क्षयार्थ  
निमित्त सत्याग्राम श्री धर्म इन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र स० १९५ । मा० १२×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

त्रिपद्य-चरित्र । १० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० स० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सत्र 'ठ' प्रति मे से है । सवत् १७२१ वर्षे आसीज बदि ७ शुभ दिने लिखित प्रावर  
( घामेर ) मध्ये लिखित प्रावार्य श्री महोचद्रकीर्त्तिजी । लिखित जोसि श्रीधर ॥

२२०५ प्रति स० २ । पत्र स० २५५ । ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ११३ । ख  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति मपूर्णा है ।

भट्टारक रत्नभूषण की भ्राम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय सं  
ऐलिचपुर भाकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७ प्रति स० ४ । पत्र स० २२५ । ले० काल स० १८०२ । वे० स० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी ( भासी ) वाले भैया श्री डमल्ल प्रप्रवाल श्रावक ने ज्ञानावरणो कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि  
करवाई थी । प० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८ प्रति स० ५ । पत्र स० ११६ से १६५ । ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं०  
७०७ । छ भण्डार ।

विशेष—लिखित पंडित सगहोजी का मन्दिर वा महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित  
गोद्धनदामेन भ्रातृमार्थ ।

२२०९ प्रति स० ६ । पत्र स० २२१ । ले० काल स० १८३३ श्रावण सुदी ३ । वे० स० १९ । छ  
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सागानेइ मे प्रतिलिपि की थी । ये मा० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१० प्रति स० ७ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० ११११  
छ भण्डार ।

विशेष—बलराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११ प्रति स० ८। वचनं २७४। ते वचनं १५४ वचनानुपुटी १। वे सं ३७४। अ  
 न्यायः।

विशेष—अथर्ववेदकी खण्डिका में प्रतिनिधि वचनानुपुटी थी।

इसके प्रतिनिधि का अन्वयान्ते तीस प्रतिपा ( वे सं ४१६ २४५ १ १ तथा अन्वयान्ते में एक प्रति  
 ( वे सं ३ ) थीर है।

२२१२. अथर्ववेदखण्डिका—। वचनं ३। वा ११०२ इति। अथर्व-संस्कृत। विश्व-वर्णित।  
 १ काल ×। ते वचन ×। अनुपुटी। वे सं २३२। अन्वयान्ते।

२२१३ अथर्ववेदखण्डिका—सिद्धिकवि। वचनं ४ वे ५६। वा ११०२ इति। अथर्व-अथर्व।  
 विश्व-वर्णित। १ काल ×। ते वचन ×। अनुपुटी। वे सं २४। अन्वयान्ते।

२२१४ अथर्ववेदखण्डिका—सिद्धिकवि। वचनं ३। वा ११०२ इति। अथर्व-संस्कृत (वचन)।  
 विश्व-वर्णित। १ काल सं १११९ अथर्वानुपुटी २। ते वचन सं ११३० अथर्वानुपुटी ४। अनुपुटी। वे सं ४२४।  
 अन्वयान्ते।

२२१५. प्रति स० ३। वचनं ३२२। ते वचन सं ११३३ अथर्वानुपुटी २। वे सं २६। अ  
 न्यायः।

२२१६ प्रति स० ३। वचनं १००। ते वचन ×। वे सं १३५। अन्वयान्ते।

विशेष—अथर्वानुपुटी का पूर्ण अथर्वानुपुटी विद्या रूप है।

२२१७. अथर्ववेदखण्डिका—। वचनं २७२। वा ११०२ इति। अथर्व-संस्कृत। विश्व-  
 वर्णित। १ काल ×। ते वचन सं १११९। अनुपुटी। वे सं ४२। अन्वयान्ते।

२२१८. अथर्ववेदखण्डिका—अथर्वानुपुटी। वचनं २२। वा ११०२ इति। अथर्व-संस्कृत।  
 विश्व-वर्णित। १ काल ×। ते वचन सं १२० अथर्वानुपुटी १। अनुपुटी वे सं १२६। अन्वयान्ते।

२२१९ प्रति स० ३। वचनं २३। ते वचन सं ११४। वे सं २२। अन्वयान्ते।

२२२० प्रति स० ३। वचनं ३४। ते वचन ×। अनुपुटी। वे सं १२६। अन्वयान्ते।

विशेष—२२ वे ३१ वचन गृहीत है। प्रति प्राचीन है। तीस वचन की निधि है।

२२२१ प्रति स० ४। वचनं २। ते वचन सं ११ अथर्वानुपुटी। वे सं १२६। अन्वयान्ते।

२२२२ प्रति स० ४। वचनं २२। ते वचन सं ११७९ अथर्वानुपुटी १। वे सं १२२।

अन्वयान्ते।

२२२३ प्रति स० ६। वचनं १४। ते वचन सं १११ अथर्वानुपुटी ७। वे सं २१। अ  
 न्यायः।

विशेष—अथर्वानुपुटी के अन्वयान्ते अथर्वानुपुटी के अथर्वानुपुटी में प्रतिनिधि थी थी।

इसकी तीस प्रतिपा अन्वयान्ते में ( वे सं ११ २ २ ) थीर है।

२०२५ प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र स० १० । मा० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २० काल स० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८२ । अ मण्डार ।

२२२५ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १५६ । छ मण्डार ।

२०२६ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३६ । छ मण्डार ।

२२२७ भद्रवाहुचरित्र—रत्नतन्दि । पत्र स० २२ । मा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । अ मण्डार ।

२२२८ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ५५१ । क मण्डार ।

२२२९ प्रति स० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १६७४ पीप सुदी ८ । वे० स० १३० । ख मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३० प्रति स० ४ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १७८६ वैशाख वृदी ६ । वे० स० ५५८ । च मण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) मिशनगढ वालों ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२०३१ प्रति स० ५ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० ३७ । छ मण्डार ।

विशेष—दखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३२ प्रति स० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७६३ भासोज सुदी १० । वे० स० ५१७ । ज मण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बीली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३ प्रति स० ७ । पत्र स० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१३३ । ट मण्डार ।

२२३४ भद्रवाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र स० ४८ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ५५६ । छ मण्डार ।

२२३५ भद्रवाहुचरित्र—चपाराम । पत्र स० ३८ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । २० काल स० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० स० १६५ । छ मण्डार ।

२२३६ भद्रवाहुचरित्र । पत्र स० २७ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८५ । अ मण्डार ।

२२३७ प्रति स० २ । पत्र स० २८ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५ । छ मण्डार ।

२२३८ भरतेशवैभव । पत्र स० ५ । मा० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६ । छ मण्डार ।

२२३६. अविष्कृतचरित्र—यं भीषण । पत्र सं १ । या २२×४२ इत्थ । जना-बंशव ।  
विषय-चरित्र । ८ नाम × । ले नाम × । पूर्ण । के सं १२ । अ नम्बर ।

विलेख—प्रतिष पत्र कटा हुआ है । संसूच में अक्षिप्त टिप्पण भी विना हुआ है ।

२०४ प्रति सं २ । पत्र सं १४ । ले नाम सं १९१४ नाम मुदी ५ । के सं २२३ । क  
नम्बर ।

विलेख—राम की प्रतिनिधि त्वाकम्ब के हुई थी । लेखक अक्षिप्त जना अक्षिप्त पत्र नहीं है ।

२२४१ प्रति सं ३ । पत्र सं १२ । ले नाम सं १७२४ नाम मुदी २ । के सं १२१ । क  
नम्बर ।

विलेख—मेरठ निवासी लाल भी ईश्वर भोवाजी के बच के से सा राजपुत्र की भागी रहणसे के प्रति-  
निधि करवाकर भंडालाबाई चौधुराण के अक्षिप्त करवाण की कर्मकराई निमित्त विना ।

३३५० प्रति सं ४ । पत्र सं ७ । ले नाम सं १९९२ नाम मुदी ७ । के सं ७२ । क  
नम्बर ।

विलेख—धर्मदेर अक्षिप्त निधि अक्षिप्त मुद्रा लोभी सुरवाल ।

हुमरी घोर निम्न अक्षिप्त है ।

हुमरी अक्षिप्त राजा भी राजपुत्र राजा अक्षिप्त राजपुत्र राजा अक्षिप्त नामों के अक्षिप्त निमित्त  
करवायी थी ।

२२४३ प्रति सं ५ । पत्र सं १२ । ले नाम सं १७३७ नाम मुदी ७ । पूर्ण । के सं २९२ ।  
क नम्बर ।

विलेख—लेखक वं भोवाजी अक्षिप्त ।

३२४४ प्रति सं ६ । पत्र सं १ । ले नाम × । के सं २९३ । क नम्बर ।

३२४५. प्रति सं ७ । पत्र सं २ । ले नाम × । के सं ३१ । अक्षिप्त । क नम्बर ।

विलेख—यहाँ नहीं मिला अक्षिप्त के अक्षिप्त अक्षिप्त के अक्षिप्त पत्र नहीं मिले अक्षिप्त है ।

३२४६ प्रति सं ८ । पत्र सं १२ । ले नाम सं १९७७ नाम मुदी २ । के सं ७७ । क  
नम्बर ।

विलेख—बालू नाम के लिए रचना की गई थी ।

३२४७ प्रति सं ९ । पत्र सं १७ । ले नाम सं १९९७ नाम मुदी ६ । के सं १९४ । क  
नम्बर ।

विलेख—बादर में महात्मा नाम के अक्षिप्त नाम के प्रतिनिधि हुई थी । अक्षिप्त वा अक्षिप्त पत्र  
नहीं है ।

३२४८. अविष्कृतचरित्रनामा—बलाभाण चौधरी । पत्र सं १ । या ११२×७६ इत्थ ।  
जना-हिरी (बच) । विषय-चरित्र । ८ नाम सं ११२ । ले नाम सं ११२ । पूर्ण । के सं ३२४ । क  
नम्बर ।

२२५६ प्रति स० २ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । वे० स० ५५५ । क भण्डार ।

२२५० प्रति स० ३ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १६४० । वे० स० ५५६ । क भण्डार ।

२२५१ भोज प्रबन्ध—पठितप्रवर वल्लाल । पत्र स० २६ । मा० १२३ × ५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७७ । क भण्डार ।

२२५२. प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० स० ४६ । अपूर्ण ।

क भण्डार ।

२२५३ भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । मा० १० × ५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रगविनयगणि । पत्र स० २ से २४ । मा० १० × ४ इच्च ।

भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । २० काल स० १७१४ श्रावण बुदी ११ । ले० काल स० १७१७ । अपूर्ण ।  
वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—चीतोढा ग्राम में श्री रगविनयगणि के शिष्य दयामेर मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ ।

पुण्य पुरुषणा गुण धुणता छता पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥

शातिचरित्र धकी ए चउपई कोषी निज मति सारि ।

मंगलकलसमुनि सतरगा कहा गुण भातम हितकारि ॥२॥ ए० ॥

गद्य अरतर युग अर गुण भागलउ श्री जिमराज सुरिद ।

तसु पट्टधारी सुरि शिरोमणी श्री जिनरग मुण्डि ॥४॥ ए० ॥

तासु सोस मंगल मुनि रायनउ चरित कहैउ स सनेह ।

रगविनय वाचक मनरग सु, जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥

नगर भनइपुर अति रलिभामणउ जहां जिन गृहचउसात ।

मोहन मूरति वीर जियांदनी सेवक जन सु रसात ॥६॥ ए० ॥

जिन भनइबलि सोवत धणी जूणा देवल ठाम ।

जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ वधित काम ॥७॥ ए० ॥

निरमल नीर भरयउ सोहई यणु ऊक महेश्वर नाम ।

धाय विधाता जगि भवतरी कीषउ की मति काम ॥८॥ ए० ॥

जिहा किरण श्रावक सगुण शिरोमणी धरम भरम नेउ जाण ।

श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जियावर भाण ॥९॥ ए० ॥

- धाम्नु उणर धातुह ए चउरई-हीरौ नव ज्ञान ।  
 धामिचउ कृष्ण के इहां भाबिनउ पिहा कुनक ताब ॥१ ॥ ए ॥  
 धासाउ नाभक बीर प्रताप नी चउरी चउरी प्रयमउ ।  
 अलिखनई सुलिखनई के बर भावयु भादरई टालु बरबस ॥११॥ ए ॥  
 ए संभव करक रक गुणु बरबउ भयन भेति धनुधारि ।  
 भरयो वैरु कुणु बौबलु भग एली ऐबविनय सुंकरार ॥११ ॥ ए ॥  
 एह वा सुनिवर निधि विन नईवइ लई नावा हुहा ॥ ११२ ॥

इति श्री मंडलकुलतनहस्तुविचउपद्ये संसृतिनवम् विविधा श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री धर्मांगु कुं  
 विजय वतवी बालदे श्री बौलीका महादेवै चवि श्री बलभक्तिहवी विजयधन्ये वाचनाभावे श्री रंभविनकर्ये विज  
 रंभित वनादेव बुनि धरनभेकेवे सुवै भवयु । अन्वसतनरानु वैकफ वाठरयो ॥

२०७८. मदीयाकचरिषि—चारिप्रभूषण । वच सं ४१ । मा १११×२५ इज । धारा-बंदुव ।  
 विषय-वर्षि । १२ बल सं १७११ धातल मुरी ११ (अ) । मे बल सं ११ ककुल मुरी १४ । पूर्ण । के  
 सं ११२ । क मकार ।

विशेष—शिवीमाल बोधीवा के प्रतिनिधि बरवार ।

२०७९ प्रति सं ५ । वच सं ४५ । मे बल × । के सं १११ । क मकार ।  
 २ ४७ प्रति सं ३ । वच सं ४९ । मे बल सं ११२० ककुल मुरी १२ । के सं २०१ । व  
 मकार ।

विशेष—दोडूराव बीर के प्रतिनिधि श्री श्री ।

२०८० प्रति सं ४ । वच सं ३२ । के बल × । के सं ४५ । क मकार ।  
 २२३३ प्रति सं ७ । वच सं ४२ । के बल × । के सं १०० । क मकार ।

२०६ मदीयाकचरिषि—अ० रजनमिह । वच सं ३४ । मा १२×२३ इज । धारा-बौधव ।  
 विषय-वर्षि । १२ बल × । मे बल सं १०३६ धातल मुरी ६ । पूर्ण । के सं १०४ । क मकार ।

२०६९ मदीयाकचरिषिमाध—जयमल । वच सं १९ । मा ११×२ इज । धारा-द्विती वच ।  
 विषय-वर्षि । बल सं १११ । मे बल सं ११३१ धातल मुरी ३ । के सं ३०२ । क मकार ।

विशेष—सुनवती धरिषि सुला ।

२०६० प्रति सं ३ । वच सं ३ । मे बल सं ११३२ । के सं ११२ । क मकार ।

टीका—शास्त्र के १२ वर्षे वच लिखे हुये हैं ।

अदि वरिषय—नवमन भद्रसुख बलभौबल के विषय है । इतने लिखत वच नाव कुनीकर कवा लि ।  
 वा नाव लिखकर वा ।

२२६३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ ध्रुवण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ ।

चमण्डार ।  
२२६४ मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क मण्डार ।

२२६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाल सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट  
मण्डार ।

२२६८ मेघदूतटीका—परमहंस परिब्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । मा० १०३×४ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । व्य मण्डार ।

२२६९ यशस्विलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । मा० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत  
गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०  
८५१ । अ मण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ मण्डार ।

२२७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ  
मण्डार ।

विशेष—करमी गोधा के प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क मण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मर्गसिर सुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य  
मण्डार ।

विशेष—ये प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन हैं । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

प्रभावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्तीति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट  
मण्डार ।

२२७५ यशस्विलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भासोज सुदी ३० । पूर्ण । वे० सं० ३३७ । अ मण्डार ।

विशेष—मूलकर्तार सोमदेव सूरि ।



- प्रभु उरुह घातक ए वज्रही-हीमी पन खल्ल ।
- पथिक्क पृक्क के इहाँ बाधियर निक्का कुक्क ठाक ॥१॥ ए ॥
- घालरा ताम्ब बीर ज्वाय बी वज्री वहीव प्रमत्त ।
- अरिक्कय्य सुक्किरवाँ के तर भावमु बाट्ययँ ठामु वस्वत्त ॥११॥ इ ॥
- ए संभव सरस एठ कुक्क बरजठ बाप्प वेठि धमुत्तारि ।
- बरयो वेठ कुक्क वेँविठु मेग एतो ऐपयिवव कुँक्कवार ॥१२॥ ए० ॥
- एइ वा मुगिबर निठि विग बाईवइ कर्ब वावा बुवा ॥ २१२ ॥

इति श्री बंभलपुत्रसप्तमहाभूमिचरणी संसृष्टिपद्यत् विख्याता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री बालीय कुटी निवस्य ब्रह्मणी बालरे श्री श्रीतीर्था महाशाने पवि श्री वल्लभरत्नद्वयी निवस्यपन्ने वाचनाचार्य श्री रंभविभक्तसि विष्णु वंशिन ब्रह्मदेव मुनि धारवाधेको कुर्वं वस्तु । कनकालवरत्न वैद्यक पाठ्यप्रयोगः ॥

१ २४ महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं ४१ । वा ११३×२५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 निवस्य—विरिच । र पत्र सं १७११ भागल मुठी १२ (अ) । के पत्र सं ११ पञ्चल मुठी १५ । पूर्ण । के सं ११२ । अ पञ्चल ।

विलेप—श्रीहरीनाम पोथीका के प्रतिमिति करवाई ।

२२२६ प्रति सं २ । पत्र सं ४६ । के पत्र × । के सं ३११ । अ पञ्चल ।

२ २७ प्रति सं ३ । पत्र सं ४९ । के पत्र सं ३१२७ पञ्चल मुठी १९ । के सं २७१ । अ पञ्चल ।

विलेप—श्रीहरनाम वेद्य के प्रतिमिति श्री श्री ।

२ २८ प्रति सं ४ । पत्र सं ३२ । के पत्र × । के सं ४९ । अ पञ्चल ।

२२२६ प्रति सं ४ । पत्र सं ४२ । के पत्र × । के सं १७० । अ पञ्चल ।

२२६ महीपालचरित्र—सं० राजमिदि । पत्र सं ३४ । वा १९×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

निवस्य—विरिच । र पत्र × । के पत्र सं १२३६ भागल मुठी ६ । पूर्ण । के सं २७४ । अ पञ्चल ।

२२६१ महीपालचरित्रभाषा—नवमस । पत्र सं ६९ । वा १९×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र ।

निवस्य—विरिच । र पत्र सं १६१ । के पत्र सं १२३६ भागल मुठी ३ । के सं २७२ । अ पञ्चल ।

विलेप—भूलवर्ता चरित्र कुल्लु ।

२०६० प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । के पत्र सं १२३२ । के सं १६२ । अ पञ्चल ।

विलेप—आरम्भ के १२ श्लो वच मिले हुये हैं ।

अदि परिचय—नवमस वरत्तुल कलागीपाल के विषय के । इतने विष्णु का नाम तुनीचम क्या मिला वा नाम निवस्य वा ।

## काव्य एवं चरित्र ]

२२८७ प्रति स० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० स० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति स० २ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्णा । वे०

स० २८४ । च भण्डार ।

२२८९ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ भासोज सुदी ६ । वे० स० २८५ । च

भण्डार ।

विशेष—प० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९० प्रति स० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ भासोज सुदी ११ । वे० स० २२ । छ

भण्डार ।

२२९१ प्रति स० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० स० २३ । च

भण्डार ।

२२९२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० स० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९२ प्रति स० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र सुदी ६ । वे० स० २५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सकलतर १७७५ वर्षे मितो चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य प्राज्ञाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्ति । प० श्रीरामचन्द्र ने बसई प्राण मे प्रतिलिपि की थी—मन्त में यह शीर लिखा है—

सकल १३५२ घेली भोसे प्रतिष्ठा कराई लाढणा मे तदिस्वी ल्होडसाजण उपजो ।

२२९४ प्रति स० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० माघाढ सुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५ प्रति स० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० स० ११४ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, युगनकालीन प्रभाव है । प० गोवर्द्धनजी के दिव्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६ प्रति स० १० । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १७६२ ज्येष्ठ सुदी १४ । अपूर्णा । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

विशेष—प्राचार्य शुभचन्द्र ने टॉक मे प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ६०४ ) क भण्डार में दो प्रतिया ( वे० स० ५६६, ५६७ ) शीर हैं ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । मा० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६६ अष्टसिंहाश्वत्थीका—। पत्र सं १४१। या १२२×० इत्थ। शशा-संशुत। विप-  
काल। र काल ×। के काल सं १५१। पूर्ण। के सं २५५। क अथार।

२२७०. प्रति सं २। पत्र सं ११। के काल ×। के सं २५१। क अथार।

२२७८. प्रति सं ३। पत्र सं १५१। के काल ×। के सं २११। क अथार।

२२७९. प्रति सं ४। पत्र सं ४ २ ६ ५२१। के काल सं ११५५। पूर्ण। के सं २५०।  
क अथार।

२२८० अशोषरपरित—महाकवि पुत्रपत्न्य। पत्र सं ५२। या १ ×४ इत्थ। शशा-संशुत।  
विप-परित। र काल ×। के काल सं १४ ७ पाशोत्र सुरी १। पूर्ण। के सं २१। क अथार।

विशेष—संशुतः १४ ७ वरे यथागमो बुद्धये ? बुधवारं तस्मिन् कञ्चुटिबुर्वेहोत्रीमुपिपत्र  
मले महाशक्तिपत्रकस्तदागमोतीमेत्यवत्त खिलवीर्यं च उच्यते। सुविभक्तमहपुत्रघाहियन्ने तद्विकारान्ने जीवन्त-  
तनि मानुषान्ने पुत्रवपणे अष्टाक भी वैशेन वैशतलस्युं अष्टाक भी चित्तवदन वैशतलस्युं अष्टाक भीचनेन वैश-  
तलस्युं अष्टाक भी मानवेन वैशतलस्युं अष्टाक भी अक्षणीति वैशतलस्युं भीपुत्रमीति वैशतलस्युं अष्टाक भी  
अक्षणीति वैशतलस्युं अष्टाक अक्षणीति वैशतलस्युं महाशक्ति वैशतलस्युं वैशतलस्युं वैशतलस्युं वैशतलस्युं वैशतलस्युं  
वायु भीश्वरती तद्वर्णमुपवा तवी बुधवारः शुक्रे वा वैशरात्र शिवीक वा. बुधा श्लोका वा. अक्षय। वायु मित्तम,  
मर्त्ये ई वात्त बुधो। वा. अक्षय बुध अक्षय वाया श्लोकांन्ने इत्युत्तरं मानावलीकर्त्त अर्वा वा २ वरी २  
अशोषरपरित सिचान्ने महाशक्ति इतिवत्त्वेवा, एतं यज्यते। लिख्यं च विमर्शित्वेन।

२२८१ प्रति सं २। पत्र सं १४२। के काल सं ११११। के सं २१५। क अथार।

विशेष—यही वही संशुत में टीका भी ही हुई है।

२२८२. प्रति सं ३। पत्र सं १ १ १५। के काल सं १११ शशी—। पूर्ण। के सं २५५।  
क अथार।

विशेष—अतिविशिष्ट घाते के राग भासन के प्रत्ययवत्त के वैशोषर शेषान्ने में ही वही वी। इति  
पूर्ण है।

२२८३. प्रति सं ४। पत्र सं ११। के काल सं १ १७ पाशोत्र सुरी १। के सं २ १ १। क  
अथार।

२२८४ प्रति सं २। पत्र सं ५१। के काल सं १५०२ अशोषर सुरी १। के सं २५०। क  
अथार।

२२८५. प्रति सं ३। पत्र सं २। के काल ×। के सं २१११। क अथार।

२२८६ अशोषरपरित—म० सप्तमीति। पत्र सं २११। या १०३×२ इत्थ। शशा-संशुत।  
विप-राग अशोषर वा जीव वरत्त। र काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ११५१। क अथार।

काव्य एवं चरित्र ]

२२८७ प्रति स० २ । पत्र सं० ४९ । ले० काल X । वे० सं० ५९६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति स० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७९५ कात्तिक सुदी १३ । अपूर्णा । वे०

सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ भासोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च

भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिनिति की थी ।

२२९० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ भासोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ

भण्डार ।

२२९१ प्रति स० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च

भण्डार ।

२२९२ प्रति स० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत्सर १७७५ वर्षे मिति चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य भासाविधायि भाचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० श्रीरामचन्द्र ने जसई ग्राम मे प्रतिनिति की थी—ग्रन्थ मे यह शीर लिखा है—

सवत् १३५२ येली मोसे प्रतिष्ठा कराई लाठणा मे सदिस्यो ल्हौठमाजण उपजो ।

२२९४ प्रति स० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० भापाठ बुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५ प्रति स० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सधिय है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिनिति करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६ प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ जेठ सुदी १४ । अपूर्णा । वे० सं० ४९३ । ज भण्डार ।

विशेष—भाचार्य शुभचन्द्र ने टोंक में प्रतिनिति की थी ।

ज भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ९०४ ) क भण्डार में दो प्रतिया ( वे० सं० ५९६, ५९७ ) शीर हैं ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । भा० ११X४३ इज्ज । भाषा—संस्कृत । विशेष—चरित्र । ८० काल X । ले० काल सं० १८३२ पोष बुदी १२ । वे० सं० ५९२ । क भण्डार ।

२०६५ प्रति सं २ । पत्र सं ६ । नै काल सं १२६२ भाग्य सुदी १६ । वै सं १२२ । क  
 नम्बर ।

विवेच—यह एक वीरसिंघी के आत्मार्थ युवकनीति की विद्या मानिमा सुतिथी के लिए स्वभाव के  
 सिद्धनामा एवा वैवाह्य सुदी १ सं १० २ की संकलाचार्य की अकलनीतिथी के लिए भाग्युपजी ने तय्यि विद्य ।

२०६६ प्रति सं ३ । पत्र सं २४ । नै काल × । वै सं ८४ । क नम्बर ।

विवेच—अति कवीर है ।

२३ ० प्रति सं ५ । पत्र सं २ । नै काल सं १९६७ । वै सं १६ । क नम्बर ।

विवेच—बालसिंह महाराजा के आत्मन्याय में घाबर में अतिविधि हुई ।

२३ १ प्रति सं ५ । पत्र सं २३ । नै काल सं १९६९ वीच सुदी १६ । वै सं २१ । क  
 नम्बर ।

विवेच—सर्व अकुर में वं अकलराज ने वैविलाय वेत्यात्म में अतिविधि की थी ।

२३ २ प्रति सं ६ । पत्र सं ७६ । नै काल सं भाग्य सुदी १ । वै सं १६ । क नम्बर ।

विवेच—दोहरकवची के पठनार्थ एवै वीरकवचाल ने अतिविधि कराई थी । महामुनि कुलनीति के उदये  
 के अन्वकार ने अन्व की रचना की थी ।

२३ ३ अयोधरचरित्र—बाहिराजसुरि । पत्र सं २ से १२ । वा ११×२ दख । भाग्य-संस्कृत ।

विवेच—चरित्र । २ काल × । नै काल सं १ १६ । अयुर्ल । वै सं ८७९ । क नम्बर ।

२३ ४ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । नै काल १२२४ । वै सं २६२ । क नम्बर ।

२३ ५ प्रति सं ३ । पत्र सं २ से १९ । नै काल सं १३१ । अयुर्ल । वै सं ८३ । क  
 नम्बर ।

विवेच—सैक अकल अयुर्ल है ।

२३ ६ प्रति सं ४ । पत्र सं २२ । नै काल × । वै सं २१३ । क नम्बर ।

विवेच—अन्व एव कवीर सिद्धा नवा है ।

२३ ७ अयोधरचरित्र—गुराखदेव । पत्र सं ३ से २० । वा १ × ४ ३ दख । भाग्य-संस्कृत ।

विवेच—चरित्र । २ काल × । नै काल × । अयुर्ल । वीर्ल । वै सं २८१ । क नम्बर ।

२३ ८ अयोधरचरित्र—वासुदेव । पत्र सं ७१ । वा १ × ४ ३ दख । भाग्य-संस्कृत । विवेच-

चरित्र । २ काल सं १३६३ भाग्य सुदी १२ । अयुर्ल । वै सं २४ । क नम्बर ।

विवेच—अकलित-

अन्व १३६३ वर्षे भाग्यमै अकलको हाथवीरिदेवे अकलसिंहलदे युवककवे एव वीरकले एवअन्वर्त  
 मने एवत वी वीरवी अकली अकलित भाग्य कवे वीरकविमान विद्यामैलकवे वीरुनकवेकनकारकली, अकलनीति,

नद्याम्नाये श्रीकुन्दकुदाचार्यान्त्रये भट्टारक श्रीपद्मनिदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिष्णुचन्द्रदेवास्त-  
त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खड्गनवालान्वये दौर्नीगोधे-सा तिहुंगा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्तत्र प्रथम सा,  
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊर्हा ईसरभार्या मजपिरी तया पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय  
सा ऊधर चतुर्थ सा देवा सा लोहट भार्या लनिताने तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूणा  
चतुर्थ हाता पंचम राजा सा भूणा भार्या भृगुमिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधमिरी तयो पुत्रो द्वौ प्रथम  
लाता द्वितीय खरहय- सा० देवा भार्या चोमिरि तयो पुत्र घनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजो धीरा भार्या रमायी  
सा टोहा भार्ये द्वे बृहद्द्वीला लघ्वी मुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य नीलवान सा नान्हा तद्भार्या नयणी सा० ऊर्हा भार्या  
शाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणादात्केनत्रिपचासतश्रावकसत्क्रिया प्रति-  
पालण सावधानेन जिष्णुपूजापुरदरेण सदगुरुपदेश निर्वाहवेन सधपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्र लिखाप्य उत्तम-  
पात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति म० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० २०७३ । अ मण्डार ।

२३१० प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल म० १६६० चैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६३ । क  
मण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिनिधि की थी ।

२३११ यशोधरचरित्र । पत्र म० १७ मे ४५ । मा० ११×४३ इस्व । भाषा-संस्कृत । विषय-  
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १६६१ । अ मण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ६१३ । इ मण्डार ।

२३१३ यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । मा० ११×५ इस्व । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-चरित्र । २० काल स० १५८१ भादवा सुदी १२ । ले० काल स० १६३० मगसिर सुदी ११ । पूर्णा । वे० स०  
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचद । पत्र स० ३७ । मा० १२×५३ इस्व । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-चरित्र । २० काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ भासोज सुदी १ । पूर्णा । वे० स०  
१०४६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रयास्ति-

मिती भासोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पढिवा वार सनिवासरे स० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशालोजी तत्  
द्विष्येन निपिद्धत पं० खुशालचद श्री शृतधिलोलजी के देहरे पूर्ण कर्त्तव्य ।

दिवालो जिनराज की देखत दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२०१८. प्रति स ३ । प्रति स २ । के काव्य स १३२२ तावत मुदी १३ । के स १२२ । अ  
व्यापार ।

विशेष—एव एव पीठिनी के प्राचन पुननपीठि की शिष्या यद्विना मुक्तिभी के लिए इतनुपर के  
विद्यवावा एवा वीरान्त मुदी १ स १० ३ को मंडलानार्थी की प्रकल्पपीठिनी के लिए वागुरामनी के हवर्ति विद्य ।

२०१९. प्रति स ३ । पत्र स २४ । के काव्य  $\times$  । के स ५४ । अ व्यापार ।

विशेष—प्रति वहीन है ।

२०२ प्रति स ४ । पत्र स २ । के काव्य स १९६७ । के स १९ । अ व्यापार ।

विशेष—मालमिह महााराजा के प्राचनकाम में पायेर में प्रतिमिति हुई ।

२०३१ प्रति स ५ । पत्र स २३ । के काव्य स १३३ पीठ मुदी १३ । के स २१ । अ  
व्यापार ।

विशेष—सर्वार्थ वस्तुत में व वस्तुतम के वैदिमान वीरालय में प्रतिमिति की थी ।

२०३०२ प्रति स ६ । पत्र स ७६ । के काव्य स ३३३३ मुदी १ । के स १२ । अ व्यापार ।

विशेष—वस्तुतमकी के प्रस्ताव वंदि वीरववावा के प्रतिमिति कराई की । महापुलि कुलपीठि के वस्तु  
के व्यापार के वस्तु की रचना की थी ।

२०३३ करीपरपरिच—वाहिरावसुरि । पत्र स २ के १९ । या ११  $\times$  २ इका । वावा-वस्तुत ।

विशेष—परिच । २ काव्य  $\times$  । के काव्य स १३२ । वस्तुत । के स ५७२ । अ व्यापार ।

२०३४. प्रति स २ । पत्र स १२ । के काव्य १ २४ । के स २३२ । अ व्यापार ।

२०३५. प्रति स ३ । पत्र स २ के १६ । के काव्य स १३१ । वस्तुत । के स २ । अ  
व्यापार ।

विशेष—वैकिक वस्तुत वस्तुत है ।

२०३६ प्रति स ४ । पत्र स २२ । के काव्य  $\times$  । के स २३३ । अ व्यापार ।

विशेष—एवव वव मपीठ मिहा ववा है ।

२०३७. करीपरपरिच—पूखैवैव । पत्र स ३ के २ । या १  $\times$  ४ इका । वावा-वस्तुत ।

विशेष—परिच । २ काव्य  $\times$  । के काव्य  $\times$  । वस्तुत । वीर्य । के स २१ । अ व्यापार ।

२०३८. करीपरपरिच—वास्तवदेव । पत्र स ७१ । या  $\times$  ४ इका । वावा-वस्तुत । विश्व-  
परिच । २ काव्य स १३३३ वाव मुदी १३ । वस्तुत । के स २४ । अ व्यापार ।

विशेष—वस्तुत-

वस्तु १३३३ वने वाववाने वस्तुतके इववैदिवके वस्तुतपरिवाहरे वस्तुतके एव वीर्यतरी वावववार्थ  
वने वस्तु की वीर्यती वस्तुने वस्तुतके वाव वने वीर्यविवान वस्तुतके वस्तुतके वीर्यववैवववस्तुतके, वस्तुतके

विशेष—पुण्यदत्त कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। वादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३०४ रघुवशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र स० १४४। मा० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० ८२ से १०५ तक नहीं है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५ प्रति स० २। पत्र स० ७०। ले० काल स० १८२४ काती बुदी ३। वे० स० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पाठ्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३०६ प्रति स० ३। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८४४। वे० स० २०६६। अ भण्डार।

२३०७ प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल स० १६८० भादवा सुदी ८। वे० स० १५४। ख भण्डार।

२३२८ प्रति स० ५। पत्र स० १३२। ले० काल स० १७८६ मगसर सुदी ११। वे० स० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारो ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ में ५० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२६ प्रति स० ६। पत्र स० ६६ से १३४। ले० काल स० १६६६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २४२। छ भण्डार।

२३३० प्रति स० ७। पत्र स० ७५। ले० काल स० १८२८ पौष बुदी ४। वे० स० २४४। छ भण्डार।

२४३१ प्रति स० ८। पत्र स० ६ से १७३। ले० काल स० १७७३ मगभिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १६६५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्य हैं।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतिया ( वे० स० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५ ) ख भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १५५ [क] )। छ भण्डार में ७ प्रतिया ( वे० स० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५ )। च भण्डार में दो प्रतिया ( वे० स० २८६, २६० ) छ ओर ट भण्डार में एक एक प्रतिया ( वे० स० २६३, १६६६ ) ओर हैं।

२३३२ रघुवशटीका—सखिनाथसूरि। पत्र स० २३२। मा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। १० काल ×। ले० काल ×। वे० स० २१२। ज भण्डार।

२२३३ प्रति स० ९। पत्र स० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६८। ज भण्डार।





मधे बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये म० श्रीपद्मनिदि देवास्तत्पट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे म० श्रीजिण्चन्द्रदेवास्तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्रदेवारतच्छिष्य म० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदान्नायेवण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे सधाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्तत्रय प्रथम स श्री खीवा तद्भायें द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो मुहागदे तत्पुत्रास्तत्रय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय स० वेणा तद्भार्यें द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नीलादे । तृतीय सं ह्म गरमी तद्भार्या दाह्योदे एतेसा मध्ये सं विमलादे इदं शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ज्ञानावर्णा कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स० २ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८६३ भादवा सुदी १४ । वे० स० ६६६ । ख  
भण्डार ।

२३५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी ८ । वे० स० ३३० । च  
भण्डार ।

२३४५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० स० ४६ । छ  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतीपराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० स० ४७ । छ  
भण्डार ।

विशेष—सागावती ( सागानेर ) मे गोधो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८३१ भाषाठ सुदी ३ । वे० स० ४६ । ख  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय में प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८ प्रति स० ७ । पत्र स० ३० मे ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—दोनों सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९ वरागचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ मे १० । भा० १२३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल X । ले० फाल X । अपूर्ण । वे० स० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५० वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनिदि । पत्र स० ५० । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल X । ले० फाल स० १५१८ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । ख भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिप्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनिदि विरचिते सुखनामा दिने श्री  
वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३३४ रघुवराष्टीका—वंश सुमति विद्यमानि । पत्र सं १ के १७१ या १२×२३ दृश्य । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—नाम्न । १ काल × । १ काल × । पत्रांत । के सं १२७ ।

विशेष—टीकात्मक—

विनिर्वाहक कवि बंशधरे कालानुवर्तितापन्नो विधी बंधुतां पीरस्तु नमन क्वा मनुः टीकात्मक । विष्णु  
 पुर में टीका की गयी थी ।

२३३५ प्रति सं २ । पत्र सं २४ के १७० के काल सं १२४ बंधु मुदी क । पत्रांत । के सं  
 १२ । क अक्षर ।

विशेष—द्वितीयोपम के विषय में चन्द्रोपम में तालीराम के चन्द्रार्थ प्रतिबिम्बि की थी ।

विशेष—क अक्षर में एक श्लोक ( के सं १२२ ) भी है ।

२३३६ रघुवराष्टीका—भूमिपुस्तक । पत्र सं १ । या १ २×२२ दृश्य । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 नाम्न । १ काल सं ११११ । के काल × । पत्रांत । के सं १२७२ । क अक्षर ।

विशेष—तत्कालीन इय रघुवंश की टीका इत्यर्थक है । एक वर्ष की गयी है जो नाम्न का है तथा दूसरा  
 वर्ष वैशाखीक से है ।

२३३७ प्रति सं २ । पत्र सं २ के १७० के काल × । पत्रांत । के सं २७२ । क अक्षर ।

२३३८ रघुवराष्टीका—गुणविराजिता । पत्र सं ११७ । या १२×२२ दृश्य । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—नाम्न । १ काल × । १ काल × । के सं २२ । क अक्षर ।

विशेष—सत्वरामकवीर नामनाथी प्रभोवमासिककालि के विषय बंशधरमुद्रा बीरान् कवचोक्तक के  
 विषय दुष्टविराजिता में प्रतिबिम्बि की थी ।

२३३९ प्रति सं १ । पत्र सं १६ । के काल सं १२२२ । के सं १२६ । क अक्षर ।

इसके परिचित क अक्षर में ही श्लोक ( के सं १२४ १ १ ) भी है । केवल क अक्षर की  
 प्रति ही दुष्टविराजिता की टीका है ।

२३४ रामकृष्णनाम्न—दीव्यार्थ सूत्र । पत्र सं १ । या १ × २ दृश्य । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—नाम्न । १ काल × । के काल × । पत्रांत । के सं १२ । क अक्षर ।

२३४१ रामचन्द्रिका—कठकहास । पत्र सं १७१ । या १×२३ दृश्य । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 नाम्न । १ काल × । के काल सं १७१६ नाम्न मुदी १२ । पत्रांत । के सं १२२ । क अक्षर ।

२३४२ बरौचरित्र—म वर्द्धमानद्वैत । पत्र सं ४४ । या १२×२२ दृश्य । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 नाम्न । भाषा का बीरान् चरित्र । १ काल × । के काल सं १२२४ काठक मुदी १ । पत्रांत । के सं १२१ ।  
 क अक्षर ।

विशेष—सचरित्र—

सं १२२४ के काठक १४२२ काठकवाले मुद्राकवीर चण्डीचरित्र की कवीरचरित्र की चण्डीचरित्र की संश्लेष  
 भाषा नाम्न कहलवरी राम की पूर्ववर्द्धमान नाम्न काठक की मुद्राकृष्णवाले की काठकनाम विरचितनामने कीकृत

## काव्य एव चरित्र ]

सधे बलान्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री  
जिराचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभावचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावुडागोत्रे सधाधि-  
पति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्तय प्रथम स श्री खीवा तदमार्ये ह्ये प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो  
सुहायदे तत्पुत्रास्तय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय स० वेणा तद्भार्ये ह्ये प्रथमा विमलादे  
द्वि० नीलादे । तृतीय स हूगरसी तद्भार्या दंड्यादे एतेसा मध्ये स विमलादे इदं शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त  
ज्ञानावर्णा कर्मक्षयं निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स० २ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८६३ भाद्रवा सुदी १४ । वै० स० ६६६ । ङ  
मण्डार ।

२३४४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी ८ । वै० स० ३३० । च  
मण्डार ।

२३४५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वै० स० ४६ । छ  
मण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतोपराम के शिष्य वक्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १८७७ वैशाख सुदी १ । वै० स० ४७ । छ  
मण्डार ।

विशेष—सागावती ( सागानेर ) में गोधो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रति-  
लिपि की थी ।

२३४७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८३१ भाषाठ सुदी ३ । वै० स० ४६ । च  
मण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय में प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८ प्रति स० ७ । पत्र स० ३० से ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० स० २०५७ । ट मण्डार ।

विशेष—दोनों सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९ वरागचरित्र—भर्तृहरि । पत्र स० ३ से १० । भा० १२१×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वै० स० १७१ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५० वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनदि । पत्र स० ५० । भा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल स० १५१८ । पूर्ण । वै० स० ३६६ । घ मण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कयावतारे जिनरात्रिब्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरचिते सुखनामा दिने श्री  
वर्द्धमाननिर्वाणगमेन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३५१ बर्द्धमानकथा—अवमिच्छा। पत्र सं ७२। पा १ × २३ दृश्य। मत्स्य-पत्र सं १। विषय-  
 संख्या १२। पत्र × १ के पत्र सं १९९२ बीजाख सुटी ३। पूर्ण। के सं १२३। क मत्स्य।

विशेष—अस्तित्व—

सं १९९२ कट्टे बीजाख सुटी ३ सुकुमारी सुवर्णरत्नविक्रमे सुवर्णवै श्रीसुवर्णरत्नविक्रमे उत्पत्तौ बट्टाए की  
 इत्युक्त उत्पत्तौ म्प्राएक श्रीमद्विष्णुस्य उत्पत्तौ म्प्राएक श्रीमत्सर्वं उत्पत्तौ म्प्राएक श्रीमत्सर्वीति विरचित श्री मैत्रल  
 पाथर्षी संवत् १०११ महासुवीर्य श्रीमैत्रिलाल देवायने सुवर्णवर्णव महापाठविद्या महापाठना श्री मत्स्यवैश्याने धर्म-  
 वेदायने सा श्री १०११ वर्षापाठने उत्पन्न भवति प्रथम पुत्र— (संपूर्ण)

२३५२ प्रति सं २। पत्र सं ३२। के पत्र × १ के सं १२३३। क मत्स्य।

२३५३. बर्द्धमानचरित्र—। पत्र सं १६५ से ११९। पा १ × २३ दृश्य। मत्स्य-संख्या १।  
 विषय-चरित्र। १२ पत्र × १ के पत्र × १। संपूर्ण। के सं १२३३। क मत्स्य।

२३५४ प्रति सं २। पत्र सं ११। के पत्र × १। संपूर्ण। के सं १२३४। क मत्स्य।

२३५५. बर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह। पत्र सं १२। पा १ × २३ दृश्य। मत्स्य-संख्या १।  
 विषय-चरित्र। १२ पत्र सं ११ के पत्र सं ११४ काल सुटी २। पूर्ण। के सं १२३५। क मत्स्य।

विशेष—अशुभकी शोका के प्रतिबिम्बि की की।

२३५६. विक्रमचरित्र—बाचनाबाब कामवस्त्रेण। पत्र सं ४ से २। पा १ × २३ दृश्य। मत्स्य-  
 संख्या १। विषय-विक्रमचरित्र का कीवत्त। १२ पत्र सं १७२४। के पत्र सं १७२५ काल सुटी ४। संपूर्ण। के  
 सं १२३६। क मत्स्य।

विशेष—अशुभक मत्स्य के विषय उक्तपत्र के प्रतिबिम्बि की की।

२३५७ विष्णुसुखमहात्म्य—श्रीश्यामार्थे बर्द्धदास। पत्र सं २। पा १ × २३ दृश्य। मत्स्य-  
 संख्या १। विषय-मत्स्य। १२ पत्र × १ के पत्र सं १७२६। पूर्ण। के सं १२३७। क मत्स्य।

२३५८. प्रति सं २। पत्र सं १। के पत्र × १ के सं १२३८। क मत्स्य।

२३५९. प्रति सं ३। पत्र सं २०। के पत्र सं १२३९ के सं १२४०। क मत्स्य।

विशेष—अशुभक के महात्म्य के प्रतिबिम्बि की की।

२३६० प्रति सं ४। पत्र सं २४। के पत्र सं १७२४। के सं १२३९। क मत्स्य।

विशेष—संख्या के शोका की की है।

२३६१ प्रति सं २। पत्र सं २५। के पत्र × १ के सं १२४१। क मत्स्य।

विशेष—अपि संख्या के शोका की की है।

अथवा व अस्तित्व पत्र सं २५ मत्स्य है कि वर लिखा है श्री विष्णु मैत्रक का महापाठना वरिष्ठ शोका

२३६२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल स० १६१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ

भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १६५१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल स० १७५६ मगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । न

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १७५३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । व

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गरिण हैं ।

इनके प्रतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ११३, १४६ ) व भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०७ ) भी है ।

२३६६ विदग्धमुखमदनटीका—विनयरत्न । पत्र सं० ३३ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल स० १६८३ मासोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७ विहारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । मा० १२×५३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय मे लिखी गई थी ।

२३६८ शत्रुप्रद्युम्नप्रवर्ध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २-मे २१ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—

हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शत्रुकुमार एष प्रद्युम्न का जीवन । २० काल × । ले० काल स० १६५६ । अपूर्ण । वे० सं० ७०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सबन् १६५६ वर्षे विजयदशम्या श्रीस्तभतीर्थे श्रीवृहत्स्वरतरंगच्छापीश्वर श्री दिल्लीपति पातिमाह जलालद्दीन  
मकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि मूरश्वराणां ( सूरेश्वराणां ) साहिबमक्षस्वहस्तस्थापिता  
भावायश्रीजिनसिंहसूरिमुसरिकाराणा ( सूरेश्वराणां ) गिज्य मुम्य पठित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना  
श्रीनेतलमे६ रात्र्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक सर्वे सितरौत्र मममर्थनया कृत श्री शयप्रद्युम्नप्रवर्धे प्रथम खड ।

२३२१ वर्तमानकथ—अधिमिद्रहृत् । पत्र सं ७३ । या २३×२३ इत् । ज्ञान-द्वारद्वय । विषय-  
 विषय । र नाल × । ले नाल सं १११२ वैयास मुनी १ । पूर्ण । वे सं १२१ । अथर्वार ।

विशेष—अधिस-

सं ११२२ वरवे वैयास मुनी १ पुत्रारि मुनतीरुषिने दूनछने धीर्दुर्गुहाधाम्निने छट्टुं बट्टारक की  
 इगुमर छट्टुं बट्टारक धीमज्जिह्वल छट्टुं बट्टारक धीयवाचं छट्टुं बट्टारक धीबंरहीणि । विपिन धी वेवत  
 वावर्षे संवत्तीवड महापुर्णा । अनेविगत वेवतले कुञ्जात्तुं महापुत्रविदाय महापुत्रा की वमरसंघटने धन  
 वेरावीने सा बीर्य छट्टुर्जाघाते छट्टुन अवार प्रथम पुत्र----- ( धूर्त्त )

२३२३ प्रति स ० । पत्र सं २१ । ले नाल × । वे सं १२३ । अथर्वार ।

२३२३ वर्तमानकथ----- । पत्र सं ११६ से २१९ । या १ × २३ इत् । ज्ञान-द्वारद्वय ।  
 विषय-विषय । र नाल × । ले नाल × । पूर्ण । वे सं १२९ । अथर्वार ।

२३२४ प्रति सं २ । पत्र सं ११ । ले नाल × । पूर्ण । वे सं १२७ । अथर्वार ।

२३२४ वर्तमानकथ—केपीसिद्ध । पत्र सं १२ । या ११×२ इत् । ज्ञान-द्वारद्वय ।  
 विषय-विषय । र नाल सं १११ के नाल सं १७९ वायव्य मुनी २ । पूर्ण । वे सं १४० । अथर्वार ।

विशेष—सर्वमुत्रो बोधा मे प्रतिनिधि की की ।

२३२५ विक्रमकथ—वाचताचार्य अमवसोम । पत्र सं ४ ले २ । या १ × २३ इत् । ज्ञान-  
 द्वारद्वय । विषय-विषयविषय वा बीर्य । र नाल सं १७९ । ले नाल सं १७९ वायव्य मुनी ४ । पूर्ण । वे  
 सं १३१ । अथर्वार ।

विशेष—उपकुर वर वे विषय वाचक मे प्रतिनिधि की की ।

२३२६ विद्वन्मुलमहन—धौडाचार्य धर्मदास । पत्र सं ३ । या १२×२ इत् । ज्ञान-  
 संतुल । विषय-वर्ष । र नाल × । ले नाल सं १२१ । पूर्ण । वे सं १२७ । अथर्वार ।

२३२७ प्रति सं ० । पत्र सं १७ । ले नाल × । वे सं १३३ । अथर्वार ।

२३२८ प्रति सं ३ । पत्र सं २७ । ले नाल सं १२९ । वे सं १२७ । अथर्वार ।

विशेष—अथर्व मे महापुत्र मे प्रतिनिधि की की ।

२३३ प्रति सं ४ । पत्र सं १४ । ले नाल सं १७९ । वे सं १२९ । अथर्वार ।

विशेष—अथर्व मे दीवा की की है ।

२३३१ प्रति सं २ । पत्र सं २६ । ले नाल × । वे सं १३३ । अथर्वार ।

विशेष—अथर्व संतुल दीवा प्रति है ।

अथर्व व अथर्व पत्र पर अथर्व जोर है विषय वा विषय है श्री विषय वेवत वायव्य वरदाय प्रति बोधने

प्रारम्भ—

श्री सासण नायक सुमारिये वर्द्धमान जिनचंद ।

मलीइ विघन दुरोहर आपै प्रमानद ॥१॥

२३८० शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४९ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२९३ । अ भण्डार ।

२३८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—९ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या मलग मलग है ।

२३८३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७९ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज भण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ से १४४ । ले० काल सं० १७६९ । पूर्ण । वे० सं० १४५ । अ भण्डार ।

२३८६ श्रवणभूषण—नरहरिमट्ट । पत्र सं० २५ । मा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्ष्वनाथाय ।

हेरवचव किमव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला

कृत्य कि शरज्जन्मनोक्त मन पार्वतारू रं स्यादिति तात ।

कुस्पति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला—

माकाशे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥

य साहित्यसुधेन्दुर्नरहरि रत्नलालनदन ।

कुफ्ले सैशवण भूषणव्या विदग्धमुखमडणव्याख्या ॥२॥

प्रकारा संतु बहवो विदग्धमुखमडने ।

तथापि मत्कृत भावि मुख्य भुवण—भूषण ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरिमट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्णा ।



२३६६. शांतिनाथचरित्र—अश्विनामसूत्रि । पत्र सं १९९ । पृ २२×४२ इत्त । पत्रा-बंदपत्र ।  
विषय-चरित्र । र काल × । ले काल × । पत्रुर्त्त । सं सं १२४ । अ कथार ।

विषय—१९९ के पत्रों के पत्र नहीं हैं ।

२३७० प्रति सं २ । पत्र सं ३ से १२ । के काल सं १७१४ बीन कुटी १४ । पत्रुर्त्त । सं सं १२९ । अ कथार ।

२३७१ शांतिनाथचरित्र—महाक सफलाजीति । पत्र सं १९२ । पृ १३×२२ इत्त । पत्रा-  
बंदपत्र । विषय-चरित्र । र काल × । ले काल सं १७०९ बीन कुटी २ । पत्रुर्त्त । सं सं १२९ । अ कथार ।

२३७२ प्रति सं २ । पत्र सं २२५ । के काल × । सं सं ७०२ । अ कथार ।

विषय—टीन कथार की निमित्त हैं ।

२३७३ प्रति सं २ । पत्र सं २२१ । के काल सं १६३ मद्र कुटी ३ । सं सं ७०३ । अ  
कथार ।

विषय—निर्दिष्ट पुराणीयनाम कथारों अथवापत्रान्ते काली वेदका का इत्त बंधी कालावका के चरित्र  
जिन्हीं । निर्यान्तों बंधावकी कथारों कथार कथार ।

२३७४ प्रति सं ४ । पत्र सं १५७ । के काल सं १६४ मद्र कुटी १२ । सं सं २४१ । अ  
कथार ।

विषय—मद्र प्रति कथारोंपत्रान्ते बीन के चरित्र की हैं ।

२३७५ प्रति सं ५ । पत्र सं १२९ । के काल सं १७२२ मद्र कुटी ११ । सं सं १४ । अ  
कथार ।

विषय—सं १ ३ बीन कुटी १ के विषय कथारों के इत्त प्रति ना बंधीयन किया था ।

२३७६ प्रति सं ६ । पत्र सं १७ से १२७ । के काल सं १५५५ बीन कुटी २ । पत्रुर्त्त । सं सं २४४ । अ कथार ।

विषय—कथारोंपत्रान्ते के कथारों कथार के प्रतिनिधि की की ।

इन्के चरित्र के अथवा अ कथार के एक एक प्रति ( सं सं १९ २०९ १२९६ ) कीर हैं ।

२३७७ शांतिनाथचरित्र—महिसागर । पत्र सं १ । पृ १२×४२ इत्त । पत्रा-हिन्दी । विषय-  
चरित्र । र काल सं १९७० मद्र कुटी १ । के काल × । पत्रुर्त्त । सं सं २२३ । अ कथार ।

विषय—अथवा पत्र पाया कथा हुआ है ।

२३७८ प्रति सं २ । पत्र सं २४ । के काल × । सं सं १९२ । अ कथार ।

२३७९. शांतिनाथचरित्र— । पत्र सं ३ । पृ १४ इत्त । पत्रा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र  
काल × । के काल × । पत्रुर्त्त । सं सं १९ ।

विषय—रचना सं. ९ कथारों के अथवा मद्र कुटी की हैं । अथवा पत्र कुटी है ।

प्रारम्भ—

श्री सातण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।

अलीइ विघन कुरोहर आपे प्रमानद ॥१॥

२३८० शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४९ । मा० ११३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२९३ । अ मण्डार ।

२३८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ मण्डार ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । मा० ११३×५ इच्छ । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ मण्डार ।

विशेष—९ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है ।

२३८३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । ज मण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज मण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अ पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ  
मण्डार ।

२३८६ श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । मा० १२३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ मण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमदन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—श्रीं नमो पादर्वनाथाय ।

हेरववव किमव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला

श्रुत्य कि शरज्जमनोक्त मन पादंतारु र स्यादिति तात ।

कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहलुं मन्यां कला—

माकागे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥

य साहित्यमुषेदुर्नरहरि रल्लालनदन ।

कुप्ते सैशवण भूषणव्या विदग्धमुखमदनव्याख्या ॥२॥

प्रकारा सतु वहवो विदग्धमुखमदने ।

तयापि मत्कृत भावि मुख्यं भूषण—भूषण ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरिभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्ण ।

२३७७. श्रीवाङ्मयत्रिज—३७ मेदिनुत् । पत्र सं १७ । या १ २०३ इव । बला-कीर्तु । विष्ण-  
वरिष । २ । पत्र सं १२ । नै काल सं ११५१ । पूर्ण । के सं २२ । अ अकार ।

विशेष—नेत्रक अर्थात् मधुरां है । अस्तिति— १००

संस्कृत ११४३ वर्षे मातङ्ग मुनी २ समीपभरे श्रीकृतबर्नि संभार्याने संतानभारवसे शास्त्रगीतन्वे मीतुं-  
)शुभाचार्यानेने ग्दाराक भीषणवर्णिकेकाकल्लु ग्दाराक भीषणवर्णिकेकाकल्लु व "वी त्रिगुणवर्णिका"ल्लु वे "शर्वोर्ण-  
देवा संभार्याने भीषणवर्णिकेका कल्लुव्यं मं कुणवर्णिकेका ग्दुखियं मं शर्वोर्णिकेका श्रिताय विष्णवर्णिकेका  
विष्णवर्णिकेका कल्लुव्यं संभार्याने मन्वीशर्वदेवा कल्लुवे मं श्रुणुवर्णिकेका कल्लुवे संभार्याने शिवचर कल्लुवे  
संभार्यानेने देवता बालकान्ने यदा श्रीने सा भीता वृ —

२३८८. अति स ३ । पत्र सं १९ । नै काल सं १५४१ । के सं १११ । अ अकार ।  
२३८९. अति सं० ३ । पत्र सं ४२ । नै काल सं १५४२ अति मुनी १ । के सं ११२ । अ  
अकार ।

विशेष—मातङ्गदेव के पुत्रावा यदा में धारिणत्व शैलान्वय में कल्प यथा श्री श्री श्री । विष्णवर्ण के  
ताम्रमुद्र (दीवाराकर्णिक) में धारणे पुत्र वि शैलान्वय के शार्यानेने शर्वोर्णिके का कलि में अस्तिति श्री श्री ।  
अ अति सं कुलान्वय श्री है । श्रुणुवर्ण में अ अ कलि यथा एता कलिके है ।

२३९०. अति सं ३ । पत्र सं २१ । नै काल सं १ २२ पातोच मुनी ४ । के सं ११३ । अ  
अकार ।  
विशेष—शैलान्वय में अस्तिति श्री श्री श्री ।  
२३९१. अति सं ३ । पत्र सं २२ । नै काल सं १७९१ अति मुनी ४ । के सं ।  
अ अकार ।

विशेष—कुलान्वय में कल्प कुलान्वय के कलिके अस्तिति श्री श्री श्री ।  
२३९२. अति सं ३ । पत्र सं १ । नै काल सं १५४१ अति मुनी १ । के सं १ । अ  
अकार ।

विशेष—शार्याने अतिरु में शैलान्वय श्री श्री श्री अस्तिति श्री श्री श्री ।  
२३९३. अति सं ३ । पत्र सं २३ । नै काल सं १ २० श्री मुनी १४ । के सं १२० । अ  
अकार ।

विशेष—शार्याने अतिरु में श्री अस्तिति श्री श्री श्री ।  
२३९४. अति सं ३ । पत्र सं ४५ । नै काल सं १५४१ अति मुनी १ । के सं १ । अ अकार ।  
विशेष—शैलान्वय के शर्वोर्णिके का कलि में अस्तिति श्री श्री श्री ।

२३९५. अति सं ३ । पत्र सं २७ । नै काल सं १५४२ अति मुनी २ । के सं २११ । अ  
अकार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ मण्डार मे २ प्रतिपा ( वे० सं० २३३, २५६ ) क, छ तथा न मण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५ ) प्रौर हैं ।

२३६६ श्रीपालचरित्र—भ० समलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । मा० ११×४<sup>१</sup> इच्छ । भाषा-मन्वृत । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल दाक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । अ मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मघारी भाणरचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । छ मण्डार ।

विशेष—तारगुपुर मे मडनाचार्य रत्नवीरि के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । ज मण्डार ।

विशेष—यह अय चिरजीलाल मोढ्या ने सं० १६६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था ।

२३६९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ ( ६० ने ८८ ) ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । म मण्डार ।

विशेष—प० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी ।

२४०० श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १२ से ३४ । मा० ११<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इच्छ । भाषा-मन्वृत । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ मण्डार ।

२४०१ श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १७ । मा० ११<sup>३</sup>×५ इच्छ । भाषा-मपभ्र ष । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ मण्डार ।

२४०२ श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सं० १४४ । मा० ११×८ इच । भाषा-हिन्दी ( पद्य ) । विषय-चरित्र । १० काल सं० १६५१ । मापात्र बुदी ८ । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ मण्डार ।

२४०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ४२१ । अ मण्डार ।

२४०४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ से १४४ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४०४ । मपूर्ण । अ मण्डार ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । दीवान शिबचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था । २४०५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८८६ पोष बुदी १० । वे० सं० ७६ । ग मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ भागरे मे भालमगंज में लिखा था ।

२४०६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । क मण्डार ।

विशेष—महात्मा कान्हराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२५०० प्रति ५०० १। पत्र सं १ २। ले काल सं १५२० मास शुभ ७। के सं ७२१। क

संख्या ।

विशेष—सकुराम बोधा के समुद्र में प्रतिनिधि की थी।

२५०० प्रति ५०० १। पत्र सं १ २। ले काल सं १५२५ मास शुभ २। के सं १ ३। क

संख्या ।

२५०० प्रति ५०० १। पत्र सं १ २। ले काल सं १५२५ मास शुभ २। के सं १७४। क

संख्या ।

विशेष—इन्द्रा का रूप है। द्वितीय में प्रतिनिधि हुई थी। अतिस २ पत्रों में सर्वप्रथम वर्णन है विद्यया  
के समकाल १७२५ मास शुभ १३ है। तांभोर में दुग्धी मरुत्तम के कज्जीवस्य के पत्नार्थ किया था।

२५११ प्रति ५०० १। पत्र सं १३१। ले काल सं १ २ तांभोर शुभ २। के सं २२८। क

संख्या ।

विशेष—दो प्रतिमें का विषय है।

विशेष—इसके अतिरिक्त का संख्या के ५ प्रतिमें ( के सं १ ७०, ४१ ) का संख्या में एक प्रति  
( के सं १ ४ ) का संख्या के तीन प्रतिमें ( के सं ७२३, ७१ ७२ ) का, एक पौर का संख्या के एक पत्र  
प्रति ( के सं २२३, २२४ और २२२३ ) पौर है।

२५११ कीपाकपरिच—। पत्र सं २२। या १११×४ इका। भाषा—द्वितीय कथ। विषय—परिच।  
२ का सं ×। ले काल सं १ २१। पूर्ण। के सं १ ३। का संख्या ।

विशेष—समीपस्थती हीवाली लक्ष्मी काळोको मरुते विक्रवाकर विनीरामची पाठ्या के अन्तर में विराज-  
मान किया।

२५१२ प्रति सं २। पत्र सं ४२। ले काल ×। के सं ७। का संख्या ।

२५१३ प्रति सं ३। पत्र सं ४२। ले काल सं १६२५ मास शुभ ४। के सं १। का

संख्या ।

२५१४ प्रति सं ४। पत्र सं ११। ले काल सं १६३ मास शुभ १। के सं ४२। का

संख्या ।

२५१५ प्रति सं ५। पत्र सं ४२। ले काल सं १६३४ मास शुभ ११। के सं २२२। का

संख्या ।

विशेष—सकलान्त पाठोपान्त के प्रतिनिधि करवायी थी।

२५१६ प्रति सं ६। पत्र सं २३। ले काल ×। के सं १७४। का संख्या ।

२५१७ प्रति सं ७। पत्र सं २३। ले काल सं १६३२। के सं ४४। का संख्या ।

काल्य एवं चरित्र ]

२४१८ श्रीपालचरित्र । पत्र स० ३४ । मा० ११३ × ८ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७५ ।

विशेष—२४ से प्रागे पत्र नहीं है । दो प्रतियो का मिश्रण है ।

२४१९ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२० प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१ श्रेणिकचरित्र । पत्र स० २७ से ४८ । मा० १० × ४ ३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७३२ । छ भण्डार ।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ४६ । मा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३ प्रति स० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १८३७ कार्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० स० २७ ।

छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

२४२४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल × । वे० स० २८ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

२४२५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८१ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० २६ । छ भण्डार ।

२४२६ श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८४ । मा० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—टॉक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम भविष्यत् पटनामपुराण भी है ।

२४२७ प्रति स० २ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १७०८ वैश्व बुदी १४ । वे० स० १६४ । छ भण्डार ।

२४२८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० १०५ । घ भण्डार ।

२४२९ प्रति स० ४ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १८०१ । वे० स० ७३५ । द भण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखनौती में प्रतिलिपि की थी ।

२४३० प्रति स० ५ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १८६४ माघाठ सुदी १० । वे० स० ३५२ । च भण्डार ।

२४३१ प्रति स० ६ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८६१ भावण बुदी १ । वे० स० ३५३ । च भण्डार ।

१४०७- प्रति ५०० ५। पत्र सं ११। के काल सं १११० प्राचीन पुरी ७। के सं ७११। क

बन्धार ।

विवेक—बाबुराम बीजा के बाबुर में प्रतिष्ठित की थी।

१४०८- प्रति ५०० ५। पत्र सं ११। के काल सं ११२० प्राचीन पुरी २। के सं ११३। क

बन्धार ।

१४१०- प्रति ५०० ५। पत्र सं ११। के काल सं ११३० प्राचीन पुरी २। के सं ११४। क

बन्धार ।

विवेक—इसका स्थापन है। दिल्ली के प्रतिष्ठित हुई थी। मस्जिद २ वर्षों में निर्माहण पूर्ण है जिसका कैलाशमाल सं १७१५ प्राचीन पुरी १३ है। लुधियाने में कुम्भी बहुराम के बाबुरीवन्ध के पञ्चार्थ विद्या था।

१४१०- प्रति ५०० ५। पत्र सं १११। के काल सं ११२० प्राचीन पुरी २। के सं ११३। क

बन्धार ।

विवेक—बी प्रतिष्ठित का निबन्ध है।

विवेक—इसके प्रतिष्ठित का बन्धार में पु प्रतिष्ठित (के सं ११०० ४१) का बन्धार में एक प्रति (के सं ११५) का बन्धार में तीन प्रतिष्ठित (के सं ७१२, ७१३, ७१४) हैं, का बीर ह बन्धार में एक एक प्रति (के सं २२२, २२३ बीर १११३) बीर है।

१४११ श्रीपादशरित—। पत्र सं २२। का ११३× ११३। भाषा—हिन्दी का। विषय—वैदिक। २ काल ×। के काल सं १११। पुरी। के सं ११३। क बन्धार।

विवेक—बनोक्कली बीजापुरी कला बन्धार में बन्धुने लिखवाकर विज्ञानपत्नी शंकर के मन्दिर में विराजमान किया।

१४१२- प्रति सं २। पत्र सं ४१। के काल ×। के सं ७१। क बन्धार।

बन्धार ।

१४१३- प्रति सं ३। पत्र सं ४२। के काल सं ११२५ प्राचीन पुरी १। के सं ११३। क

बन्धार ।

१४१४- प्रति सं ४। पत्र सं ४३। के काल सं ११३० प्राचीन पुरी १। के सं ११४। क

बन्धार ।

१४१५- प्रति सं ५। पत्र सं ४४। के काल सं ११३५ प्राचीन पुरी १। के सं ११५। क

बन्धार ।

विवेक—बनोक्कली बाराहीवन्ध के प्रतिष्ठित निर्माहणी थी।

१४१६- प्रति सं ६। पत्र सं ४५। के काल ×। के सं ११४। क बन्धार।

१४१७- प्रति सं ७। पत्र सं ४६। के काल सं ११४५। के सं ४५। क बन्धार।

[ काल एवं चरित्र ]

२४१८ श्रीपालचरित्र । पत्र सं० २४ । मा० ११३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४१९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ग मण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । च मण्डार ।

२४२१ श्रेणिकचरित्र । पत्र सं० २७ से ४८ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-  
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । छ मण्डार ।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भा० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४६ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । च मण्डार ।

२४२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३७ कात्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० सं० २७ ।  
छ मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४२४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २८ । छ मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पुरा किया गया है ।

२४२५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० २६ । छ मण्डार ।

२४२६ श्रेणिकचरित्र—भा० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २४६ । छ मण्डार ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम मविष्यत् पञ्चनामपुत्राण भी है

२४२७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० १६४ । छ  
मण्डार ।

२४२८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १०५ । च मण्डार ।

२४२९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । छ मण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखनौती में प्रतिलिपि की थी ।

२४३० प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८६५ भाषाठ सुदी १० । वे० सं० ३५२ । च  
मण्डार ।

२४३१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ भावण बुदी १ । वे० सं० ३५३ । च  
मण्डार ।



विशेष—बनपुर में जयचन्दर सुबुद्धिवा ने प्रतिष्ठिति की थी।

२४३२. बौद्धिकचरित्र—भद्रारक विद्याकवीर्षि। पत्र सं १२६। भा १ × २६ ईश। जाला—हिन्दी।

विषय—चरित्र। १ कल सं १०२ कठपुत्र सुरी ७। २ कल सं १२ ३ टीप सुरी १। पूर्ण। के सं ४१७।  
भा नम्बर।

विशेष—दम्बकार चरित्र—

विद्यमान्ति श्दारक नाम छु जाला बीबी परवाह ।  
 संघट कलात्म बीब कठपुत्र सुरी कर्षी सु कवीर ॥  
 बुधवार छु पूरुठ कई, स्वर्षी नमन दुब सोन बुनई ।  
 बीठ पराठी है सुगिराम, विद्यमान्ति श्दारक नाम ॥  
 लुं कटवापी की सुगिरामि मकमलपाठहु बीठ विद्यमान्ति ।  
 विद्योकेनकीर्षिर्षिपिपाम विद्यमान्ति काल्य पाठन नाम ॥  
 विद्यमान्ति विधि सुगिराम बुनहल श्री बीठम केड लु पाठ ।  
 कर्षकत्र श्दारक नाम ठीक्य बीठ परंथो कर्षिपाम ।  
 मकमलेड विद्यापठ गही, कर्षकत्र वड बोना गही ॥

२४३३ प्रति सं ३। पत्र सं ७६। के कल सं १००३ कठपुत्र सुरी २। के सं ३। ग  
नम्बर।

विशेष—बहाउदा श्री कर्षकत्रकी के कालमकम में बनपुर में कर्षारिणम बीबा ने कर्षिणम बीबालम में  
प्रतिष्ठिति की थी। बौद्धिपाम बीबपी काल्य ने कल्य विद्यमान्तर कर्षिरीके बीबालम में कर्षकत्र।

२४३४ प्रति सं ३। पत्र सं ६। के कल ×। के सं १६१। छु नम्बर।

२४३५. बौद्धिकचरित्रभाषा—। पत्र सं २२। भा १ × २६ ईश। जाला—हिन्दी। विषय—  
चरित्र। १ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ७२१। छु नम्बर।

२४३६ प्रति सं ३। पत्र सं ३३ के १२। के कल ×। पूर्ण। के सं ७२४। छु नम्बर।

२४३७. संभवविद्यमान्तरचरित्र (संभवनाम चरित्र) कर्षपाठ। पत्र सं १२। भा १ × २ ईश।  
जाला—बनपुर। विषय—चरित्र। १ कल ×। के कल ×। के सं ३२२। छु नम्बर।

२४३८. सामरस्यचरित्र—हीरकवि। पत्र सं १ के २। भा १ × ४ ईश। जाला—हिन्दी।  
विषय—चरित्र। १ कल सं १७२४ कालीन सुरी १। के कल सं १७२७ कालीन सुरी १। पूर्ण। के सं  
३३१। छु नम्बर।

विशेष—दम्बकार के १७ पत्र गही हैं।

ढाल पञ्चतासीसगों गुरुबानी—

सवत् वेद गुग जाणोय मुनि ढागि वर्ष उदार ॥ मुग्गु नर मांभलो ॥  
 मेदपाढ माटे लिख्यो विजः दशमि दिन मार ॥ ५ ॥ मुग्गुण०  
 गढ जानोरद गुग तस्यु जिरतीउए अधिकार ।  
 भ्रमृत निधि योगइ सही त्रयोदमी दिनमार ॥ ६ ॥ मु०  
 भाद्रव मान महिमा धरणी पूरण वरया विचार ।  
 भविव नर सांभलो पचतालीस दाले मही गाया सातसरितार ॥ ७ ॥ मु०  
 छू कइ गच्छ लायक यनी वीर सीह जे माल ।  
 गुरु भाभरण श्रुत केवली धिवर गुगी चोमाल ॥ ८ ॥ मु०  
 समरथाधिवर महा मुनी मुदर रूप उदार ।  
 तत शिप भाव धरी भण्ड गुग्गु तरणइ आधार ॥ ९ ॥ मु०  
 उछी अधिययो कएयो ववि चातुगीय विजोत ।  
 मिय्या दु कृत तं होग्यो जिन सावइ चउमाल ॥ १० ॥ मु०  
 सजन जन नर नारि जे नभनी लहइ उल्हास ।  
 नरनारी धर्मातिमा पडित म करो वा हाम ॥ ११ ॥ मु०  
 दुग्जन नइ न मुहावई नही भावइ कहे दाय ।  
 माली चदन नादरद भ्रमुचितिहा चलि जाय ॥ १२ ॥ मु०  
 प्यारो लागइ संतनइ पामर चित्त मतोप ।  
 ढाल भली २ समली चित्त थी ढाल रोप ॥ १२ ॥ मु०  
 थी गच्छ नायक तेजसी जव लग प्रतपो भाए ।  
 हीर मुनि भासीस छः हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ मु०  
 सगस ढाल सरसी कथा सरसी सह अधिकार ।  
 हीर मुनि गुरु नाम धी भ्राणंद हरप उदार ॥ १५ ॥ मु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र सपूर्ण । सर्व गाया ७१७ सवत् १७२७ वर्षे कार्तिक सुदी १ दिने सोम-  
 षासरे लिखित श्री धयजी ऋषि श्री केवली तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातवतेवासी लिपिकृत  
 मुनिसावलं ग्रामार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभे भवतु ।

२४३६ मिरिपालचरिय—प० नरसेन । पत्र सं० ४७ । प्रा० ६३×४६ इ व । भाषा—प्रपन्न वा ।  
 विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । १० काल < । ने० काल सं० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्वा । वे० सं०  
 ४१० । व्र भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

विशेष—कनकुर में उमरचंद मुहम्मिना के प्रतिनिधि की थी ।

२४३२. श्रेष्ठिकश्रित्त—भट्टारक श्रित्तकीति । पत्र सं १२६ । का १ × २६ इंच । माला—हिन्दी ।

विषय—श्रित्त । ८ काल सं १७२ कानुन मुठी ७ । के काल सं १२ ३ पीच मुठी १ । कुर्ली । के सं ५१७ । अ मन्वार ।

विशेष—इन्धवार श्रित्तक-

श्रित्तकीति भट्टारक माल छह माला कीची बरमास ।  
 संवत् मन्मास पीच कानुन मुठी ७ की मु बनीत ॥  
 मुबवार छह पूण सं संवत् माल छह पीच मुबई ।  
 पीच मन्मास ही मुबिचय, श्रित्तकीति भट्टारक माल ॥  
 जं मु मन्मास भी मुबिचयि मन्मन्मन्मन्मन् पीच श्रित्तकीति ।  
 श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति ॥  
 श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति ॥  
 श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति ॥  
 श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति श्रित्तकीति ॥

२४३३ प्रति सं ३ । पत्र सं ७६ । के काल सं १७७३ कानुन मुठी १ । के सं १ । अ मन्वार ।

विशेष—भट्टारक माल की श्रित्तकीति के श्रित्तकीति में कनकुर में श्रित्तकीति माला के श्रित्तकीति की थी । श्रित्तकीति माला के श्रित्तकीति के श्रित्तकीति के श्रित्तकीति में मन्मास ।

२४३४ प्रति सं ३ । पत्र सं ७६ । के काल × । के सं १९१ । अ मन्वार ।

२४३५. श्रेष्ठिकश्रित्त—भट्टारक श्रित्तकीति । पत्र सं २२ । का १ × २६ इंच । माला—हिन्दी । विषय—श्रित्त । ८ काल × । के काल × । कानुन । के सं ७२३ । अ मन्वार ।

२४३६ प्रति सं ३ । पत्र सं २३ से २४ । के काल × । कानुन । के सं ७२४ । अ मन्वार ।

२४३७. समन्वित्तश्रित्तकीति (संमन्वित्त श्रित्तकीति) श्रित्तकीति । पत्र सं २२ । का १ × २६ इंच । माला—मन्मास । विषय—श्रित्त । ८ काल × । के काल × । के सं ३९३ । अ मन्वार ।

२४३८. श्रित्तकीति श्रित्तकीति—श्रित्तकीति । पत्र सं १ के सं १ । का १ × २६ इंच । माला—हिन्दी । विषय—श्रित्त । ८ काल सं ७७४ मन्मास मुठी १ । के काल सं १७२७ कानुन मुठी १ । कुर्ली । के सं ५१७ । अ मन्वार ।

विशेष—मन्मास के १७ पत्र मन्मास हैं ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० ३२ । छ मण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० ३४ । छ मण्डार ।

विशेष—सागानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४९ प्रति स० ६ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १८२६ पीप सुदी ५ । वे० स० ८६ । ज

मण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ तथा व्य मण्डार में एक एक प्रति ( वे० स० ८६५, ३३, २, ३३४ )

शोर हैं ।

२४५० सुकुमालचरित्रभाषा—प० नाथूलाल दोसी । पत्र स० १४३ । भा० १२३×४३ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । १० काल स० १९१८ सावन सुदी ७ । ले० काल स० १९३७ चैत्र सुदी १४ ।

पूर्णा । वे० स० ८०७ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं ।

२४५१ प्रति स० ७ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १९६० । वे० स० ८६१ । ङ मण्डार ।

२४५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६२ । ले० काल × । वे० स० ८६४ । ङ मण्डार ।

२४५३ सुकुमालचरित्र—हरचन्द गगवाल । पत्र स० १५३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । १० काल स० १९१८ । ले० काल स० १९२९ कार्तिक सुदी १५ । पूर्णा । वे० स० ७२० । च

मण्डार

२४५४ प्रति स० २ । पत्र स० १७४ । ले० काल स० १९३० । वे० स० ७२१ । च मण्डार ।

२४५५ सुकुमालचरित्र । पत्र स० ३६ । भा० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल स० १९३३ । पूर्णा । वे० स० ८६२ । ङ मण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६ प्रति स० ७ । पत्र सं० ६० से ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ८६० । ङ मण्डार ।

२४५७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ । पत्र स० ५१ । भा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल स० १७०० भासोज सुदी १० । ले० काल स० १७१४ । पूर्णा । वे० स० १९६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

४४ सीतापरिच—इति रामचन्द्र (वाक्य) । पत्र सं १ । पा १२×५ दृष्ट । अथ-  
 सिन्धी पत्र । विषय—परिच । र पत्र सं १०१३ अंतर्गत सुवी ३ । ले पत्र × । पूर्ण । वे सं ७० ।

विषय—रामचन्द्र इति वाक्य के नाम मे विख्यात है ।

४४४१ प्रति सं २ । पत्र सं १५ । ले पत्र × । वे सं ११ । अथकार ।

२४४७ प्रति सं ३ । पत्र सं १९६ । ले पत्र सं १५५४ कार्तिक सुवी १ । वे सं ७११ । अ  
 थकार ।

विषय—अति अविश्व है ।

२४४३ सुकुमारपरिच—श्रीधर । पत्र सं १३ । पा १ × ४५ दृष्ट । भावा-वाराणसी । विषय-  
 सुकुमार सुवि वा जीवन वर्तव्य । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं २५ । अथकार ।

विषय—अति प्राचीन है ।

२४४४ सुकुमारपरिच—म सप्तशतीति । पत्र सं ४४ । पा १ × ४५ दृष्ट । अथ-लैंगत ।  
 विषय—परिच । र पत्र × । ले पत्र सं १९७० कार्तिक सुवी । पूर्ण । वे सं १४ । अथकार ।

विषय—महाविद विद्वान् अथार है—

पंचम १६७ भाके १३९७ प्रवर्तमाने महाभावात्म्यकार्तिकनामे सुकुमारो महाम्यो सिन्धी लोकार्थे  
 बालपुराण्ये श्रीचंद्रमनोवालये श्रीकूलवर्षे महाकारण्ये धारण्ये लोकार्थे श्रीपुत्रपुत्राचार्योन्वये चतुर्लोकैरुत्तरिणो  
 तत्पुं न श्रीपुत्रचंद्रोवा तत्पुं न श्रीविमर्चंद्रोवा तत्पुं न श्रीप्रवर्चंद्रोवा संसत्तार्थं श्रीपुत्रमूर्तिवैवा तत्पुं  
 न श्रीवर्चमूर्तिवैवा तत्पुं न श्रीवृक्षमूर्तिवैवा तत्पुं संसत्तार्थं श्रीवैष्णवोवा तत्पुं संसत्तार्थं श्रीकवीरिणि  
 तत्पुं नये अथेवमनात्मने श्रीलापीने वा। लोभु तत्तत्तार्थं श्रीलपी तयो पुत्र वा। अथु तत्तत्तार्थं पुत्रनये तयो पुत्रा वः ।  
 अथ पुत्र वा तत्पुं नये तत्तत्तार्थं नपथिकने । द्वितीयपुत्र वा। तत्पुं नये तत्तत्तार्थं चतुर्वर्षे लोभु पुत्र वा। तत्पुं नये तत्तत्तार्थं  
 अथुनये । तृतीयपुत्र वा। श्रीवा तत्तत्तार्थं श्रीवर्षे तयोः पुत्री ही अथपुत्र वा। तत्पुं नये तत्तत्तार्थं रक्तुने तयोः पुत्री ही  
 न पि अथ द्वितीय पुत्र पि लोभु । द्वितीय पुत्र वा। चतु तत्तत्तार्थं पत्तनये तयोः पुत्री ही अथ पुत्र पि तत्पुं  
 नये पुत्र पि अथर्विक । चतुर्वं पुत्र वा। अथ तत्तत्तार्थं अथनये । पंचमपुत्र वा। तैवा तत्तत्तार्थं तैवतये । तयोः पुत्री ही  
 अथपुत्र पि तत्पुं नये द्वितीयपुत्र बुधतान । चतुपुत्र वा। श्रीवा तत्तत्तार्थं ही अथवा अथनये द्वितीय श्रीकनये । तयो पुत्रा-  
 अथार । अथ पुत्र वा। तत्पुं नये तत्तत्तार्थं ही अथवा नागिकने द्वितीय लोकार्थे तयोः पुत्र पि अथर्विक । वा। श्रीवा ।  
 द्वितीय पुत्र वा। हेवा तत्तत्तार्थं हेवतये । तृतीयपुत्र पि अथु तत्पुं नये पुत्र पि पुण्ड । एतेषामन्ये वा। श्रीवा तत्तत्तार्थं  
 लोभु श्रीकनये तयोः अथर्व सुकुमारपरिचार्थं बालपुराण्ये श्रीचंद्रमनोवालये चतुर्वर्षे लोकार्थे अथवा अथनये ।

२४४५ प्रति सं २ । पत्र सं ४५ । ले पत्र सं १७५३ । वे सं १९३ । अथकार ।

२४४६ प्रति सं ३ । पत्र सं ४९ । ले पत्र सं १९५ अथ सुवी १४ । वे सं ४११ । अ  
 थकार ।

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र स० २७ मे ३६ । आ० १२१×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७० प्रति सं० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार ।

२४७१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६६५ भादवा बुदी ११ । वे० स० ८८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरति श्रीपतृति ( श्री नृपति ) विक्रमादित्यराज्ये गतान्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुह-वासरे कृष्णशुभे अर्धलापुरदुर्ग शुभस्थाने अश्वरतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत् काष्ठामधे मायुरगच्छे पुष्करगरे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातपट्टे भट्टारक श्री गानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदान्नाये इक्ष्वाकवशे जैसवालावये ठाकुराणिगोत्रे पालव मुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० म० ३ । झ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ़ में राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ४ से ५६ । आ० ११३×५२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । झ भण्डार ।

२४७६ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ मे ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ८५६ । छ भण्डार ।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र स० ३७ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । २० काल स० १६८३ भादवा सुदी ५ । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

अथ १७१४ अश्विन सुवी १ भोज्यात् ( भोज्यात् ) अथै श्री धातोश्चर वेत्यात्वे चिन्ति १  
वातोश्चर ।

२४४८. प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । ले कञ्च ४ १५३ नासिक सुवी ११ । के सं १११ । अ  
अथार ।

२४४९. सुवर्षानश्रित्य—अ सकञ्चकोत्ति । पत्र सं १ । वा ११×४२ इत्थ । वाता-तैत्तव ।  
विपत्र-वतिव । ८ कञ्च × । ले कञ्च सं १७१२ । ध्युर्ल । के सं । अ अथार ।

विशेष—२६ से २ तक पत्र नहीं है ।

अथारि विष्णु प्रकार है—

तंत्र १७०३ अथै नात्र कुम्भकाम्ययोरोवे पुष्कच्छातीकेन निघञ्जवपादेतेन सुवर्षानश्रितं लेकक वद्वरयो  
सुत्र कुपत् ।

२४५१ प्रति सं २ । पत्र सं २ से १४ । ले कञ्च × । ध्युर्ल । के सं ४१३ । अ अथार ।

२४५१ प्रति सं ३ । पत्र सं २ से ४२ । ले कञ्च × । ध्युर्ल । के सं ४१६ । अ अथार ।

२४५२. प्रति सं ४ । पत्र सं २ । ले कञ्च × । के सं ४२ । अ अथार ।

२४५३ सुवर्षानश्रित्य—अ नेमिद्वत् । पत्र सं १२ । वा ११×२ इत्थ । वाता-तैत्तव । विपत्र-  
वतिव । ८ कञ्च × । ले कञ्च × । ध्युर्ल । के सं १२ । अ अथार ।

२४५४ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । ले कञ्च × । के सं ४ । अ अथार ।

विशेष—अथारि ध्युर्ल है । पत्र ३६ से २ तक नहीं है ।

२४५५. प्रति सं ३ । पत्र सं २ । ले कञ्च सं १६२२ अश्विन सुवी ११ । के सं २२६ । अ  
अथार ।

विशेष—अथारि के सुवर्षानश्रित्य के अथारि के अथारि ।

श्रीके- सं १६२५ के अथारि सुवी ११ के सुवर्षानश्रित्य के अथारि के अथारि ।

२४५६ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । ले कञ्च सं १३ वेत्त सुवी १ । के सं २२ । अ  
अथार ।

विशेष—अथारि के अथारि के अथारि के अथारि के अथारि ।

२४५७ प्रति सं ५ । पत्र सं १७ । ले कञ्च × । के सं ११२ । अ अथार ।

२४५८. प्रति सं ६ । पत्र सं ७१ । ले कञ्च सं ११६ अश्विन सुवी २ । के सं २१५ । अ  
अथार ।

विशेष—अथारि के अथारि के अथारि है ।

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र स० २७ मे ३६ । मा० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७० प्रति स० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार ।

२४७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६६५ भादवा बुदी ११ । वे० स० ४८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरति श्रीपतृति ( श्री नृपति ) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुरु-वासरे कृष्णशके अर्धलापुरदुर्गशुभस्थाने अश्वरतिगजपतिनरपतिराजयय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठामधे मायुरगच्छे पुष्करगरी लोहाचार्यन्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री मानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेण्णिस्तदान्मानये इक्ष्वाकवशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० स० ३ । भ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भोजिनचन्द्रदेव प्रमाचन्द्रदेव आदि शिष्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४ प्रति स० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ४ से ५६ । मा० ११३×५<sup>१</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । अ भण्डार ।

२४७६ प्रति स० २ । पत्र स० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५६ । ट भण्डार ।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र स० ३७ । मा० ८<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । २० काल स० १६८३ भादवा बुदी ५ । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगानिष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।





२४६१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मगसिर सुदी ४ । वै० सं० ३४७ ।  
व्य भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोश्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वै० सं० ५१२ । व्य भण्डार ।

२४६३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्णा । वै०  
सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके अतिरिक्त ऋ श्रीर व्य भण्डार में एक एक प्रति ( वै० सं० १७७ तथा ४७३ ) श्रीर है ।

२४६४ हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
चरित्र । सं० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वै० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८३ सावण बुदी ६ । वै० सं० ६७ । ग  
भण्डार ।

विशेष—साहू कानूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वै० सं० ६०२ । ङ  
भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बकी बालो के घड़ी पर संघोजी के  
मन्दिर में यह ग्रंथ भेंट किया गया ।

२४६८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वै० सं० ६०३ । ड  
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वै० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२५०० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२५०१ हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । सं० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२ होलीरेणुकाचरित्र—प० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । सं० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अत महत्त्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति धीमते सोमिवासाव । संवत् १९ न वर्षे ज्येष्ठमासि शुक्रवासे वधनीतिषी बुधवापरे इस्तमन्वने धी  
रसस्तंमूर्धत्य साध्यामरे सेतुरनामि श्रीघातिवत्यविवरेत्यामये धी धन्वत्तमम साहिवातम श्रीसत्येमहम्भराम्यजनार्  
वामे धीधुवद्वि वलत्तम्यरवणे गंधामाने तरस्वटीवन्थे धीधुवसुंभारार्थान्वये न धीपधर्नदिवेभस्तस्युर्त् न धीधुवधन  
दिवस्तस्युर्त् न धीधिनधमभ्यवेत्ततल्लु धीप्रवात्प्रवेवास्तपिञ्ज न धीधर्मवभ्रवेत्तवत्तमन्विकेद्विलवालात्यदि सैठीयोने  
सा धौल्लु तद्भूमि दुता ल्पुवत्तमक इ. सा. पचास्य डि. ध. बीडा लुटीव सा. करवा । सा. पचास्य धार्वा श्रीसु  
ल्पुव सा वामोत्तर ल्पुवार्ध ई इ. सैमी डि नौवाये ल्पुवत्तमक प्रथम सा. वैमा द्वितीय ध. धीधु लुटीव धा सेवा ।  
सा. वैमा धार्वा ल्पुव । सा. धीधु धार्वा कधीप सा. बीडा धार्वा सीपं ल्पुव सा. ह्वा तद्भूमि ई प्रथम धौल्लु  
द्वितीय मुद्रामने ल्पुवत्तमक अथ सा. धीधु द्वितीय ध. ल्पुव लुटीव धा. धौवत्तु । सा. करवा धार्वा टरपी ल्पुवपी  
ही इ. सा. धर्मवात डि सा. लघवंत । सा. धर्मवात धार्वा विचारये वलवंत धार्वा लघवाने ल्पुव धिरंदीपी ईत्तरत्त  
पौपान्थे त्रिकुवजसुरवेरेत्त वत्तमभुटमहात्तह्वावारेण सा. कर्मात्तम्ये वेनेर्धामवलिधत्तम धार्वा धी ललिद्धपीर्यै  
वत्तपिंत्त वलवत्तमहत्तपीधपार्थ ।

२३ ३. प्रति सा २। वष सं २। ले बाल  $\times$ । वै सं ३२। ट बध्दार ।

२४ ४ प्रति सा ३। वष सं ३४। ले कल सं १७२९ मान बुदी ७। वै सं ४४१। ध  
कध्दार ।

विकल्प—इ प्रति सं राववत्त के द्वारा बुधवापी ( बुधी ) ई स्वपलार्थ कंठपडु श्रीबलाव मे लिखी गई  
धी । नवि विनवत्त एण्बनीरवट के लमिय नवत्तकुर का रहुने बला वा । प्रथमे सेतुर के घातिवत्त श्रीबलाव मे  
सं १९ न मे वत्त कन्व धी रचवा पी धी ।

२५ ५ प्रति सं ४। वष सं ३६। ले बाल  $\times$ । ल्पुवर्त्। वै सं २१७१। ट बध्दार ।

विकल्प—प्रति प्राचीन ई ।



## कथा-साहित्य

२५०६ अकलकदेवकथा । पत्र स० ४ । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा-पस्कृत । विषय-कथा ।

२५०७ अक्षयनिमित्तमुष्टिकाविधानत्रयकथा । पत्र स० ६ । भा० २२×६ इञ्च । भाषा-पस्कृत ।

विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १८३४ । ट भण्डार ।

२५०८ अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द्र । पत्र स० ४२ । भा० १०×५ इञ्च । भाषा-

हिन्दी । विषय-कथा । २० काल स० १८०५ माह सुदी ५ । ले० काल स० १८८३ कार्तिक सुदी ८ । वै० स० ६६८ ।  
ष भण्डार ।

विषय—प्रतिम भाग—

नवल मठारह पचढोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार ।

भरण्य मुहरत सुभ जोग में जी हो कथण मह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥

श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम ।

श्री सीध डोलती वो घणो जी हो मोघ की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥६७०॥

तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार ।

घेटा वेटी पोतरा जी हो मनघन मधीक मपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का घणो, जी हो छाजड सो नगरा मेठ ।

धा रावत मुराणा एगोवर्दीपता जी हो मौर बाप्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज बाखाण ।

पाट घणार भातर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

सामागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याण ।

परवारा पूरो सही जी हो सकल वार्ता सु बीयाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥

श्री बीजयेगर्छे गोडवोघणो जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट ।

श्री तालक सुरद वीर जीबज्यो जी हो सहसगुणो का थार्ट ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥

साध सकल मे सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द सुसीम ।

मठारा नता चोधी कधी जी हो ढाल भणो इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस मठारा नाता चरीत्र सपूर्ण ममासा ॥

सिन्धु मैत्री सुरपुर जी घाटमा पी भी १ = भी भी भी ब्याजी लु धमली पी भी भी ब्याजी  
पी रामपुर जी । पी मेवपुर भी भी बंनलाजी भी बुद्धी भलतां कुण्डां संपूर्ण ।

संवत् १० ३ वर्षे घांके नप किटी घातोव ( बाली ) बरी मे विन वार लोभरे । घात संवामनवमे  
संपूर्ण भोगाओ लीओ बीओ क्क्या १॥ भी भी छो जरी लपी व भी । पी भी १ = भी भी गाल्वा भी क जवम  
नलेह छ मेकुनी ॥ भी भी गाल्वा भी बांधवाले घएव । घाएव भी बांधवम घएव क्क्या ॥ १ ॥

३४ ८. अनन्तचतुर्दशी कथा—महा ज्ञानसागर । पत्र सं ११ । भा १ × २ इज । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४३३ । अ नम्बार ।

३४१. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्ति । पत्र सं ३ । भा ११ × २ इज । भाषा—वाङ्मय ।  
विषय—कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ३ । अ नम्बार ।

३४११. अनन्तचतुर्दशीकथा—। पत्र सं ३ । भा २ × १ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
र काल × । ले काल × । पुरा । वे सं २३ । अ नम्बार ।

३४१२. अनन्तचतुर्दशीकथा—मद्गकीर्ति । पत्र सं ६ । भा ११ × २ इज । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२ । अ नम्बार ।

३४१३. अनन्तचतुर्दशीकथा—ब्रह्मसागर । पत्र सं ७ । भा १ × ४ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६ । अ नम्बार ।

विषय—संस्कृत पत्रों के हिन्दी पत्र भी विने हुये हैं ।

इन्के प्रतिरिक्त ग नम्बार मे १ प्रति ( वे सं २ ) क नम्बार मे ४ प्रति ( वे सं २ १  
११ ) अ नम्बार मे १ प्रति ( वे सं ७४ ) बीर है ।

३४१४. अनन्तचतुर्दशीकथा—म पद्मानिधि । पत्र सं ३ । भा ११ × २ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । र काल × । ले काल सं १७२२ बालम बुरी १ । वे सं ७४ । अ नम्बार ।

३४१५. अनन्तचतुर्दशीकथा—। पत्र सं ४ । भा ७२ × २ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र  
काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७ । अ नम्बार ।

३४१६. प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले काल × । पूर्ण । वे सं २१ । अ नम्बार ।

३४१७. अनन्तचतुर्दशीकथा—। पत्र सं १ । भा १ × १ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (बीर) ।  
र काल × । ले काल सं १ ३ बाल्वा बुरी १ । वे सं १२७ । अ नम्बार ।

३४१८. अनन्तचतुर्दशीकथा—सुराधरम् । पत्र सं २ । भा १ × ४ इज । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । र काल × । ले काल सं १ ३ बाल्वा बुरी १ । पूर्ण । वे सं १२२ । अ नम्बार ।

२५१६ अजनचोरकथा । पत्र स० ६ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६१४ । ट मण्डार ।

२५२० अषाढएकादशीमहात्म्य । पत्र स० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११४६ । अ मण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१ अष्टागसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति । पत्र स० २ से ३६ । आ० ७३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२१ । ट मण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं हैं । भाठो मज्जो की मलग २ कथायें हैं ।

२५२२ अष्टागोपाख्यान—प० मेधावी । पत्र स० २८ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१८ । अ मण्डार ।

२५२३ अष्टाहिकाकथा—भ० शुभचंद्र । पत्र स० ८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में ३ प्रतिमा ( वे० स० ४८५, १०७०, १०७२ ) ग मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ३ ) ङ मण्डार में ४ प्रतिमा ( वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४ ) च मण्डार में ६ प्रतिमा ( वे० स० १५, १६, १७, १८, १९, २० ) तथा छ मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ७४ ) और हैं ।

२५२४ अष्टाहिकाकथा—नथमल । पत्र स० १८ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—कथा । २० काल स० १६२२ फायुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२५ । अ मण्डार ।

विशेष—पथों के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क मण्डार में ४ प्रतिमा ( वे० स० २७, २८, २९, ७६३ ) ग मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ४ ) ङ मण्डार में ४ प्रतिमा ( वे० स० ४५, ४६, ४७, ४८ ) च मण्डार में ४ प्रतिमा ( वे० स० ५०६, ५१०, ५११, ५१२ ) तथा छ मण्डार में १ प्रति ( वे० स० १७६ ) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है ।

२५२५ अष्टाहिकाकौमुदी । पत्र स० ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७११ । ट मण्डार ।

२५२६ अष्टाहिकाव्रतकथा । पत्र स० ४३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२ । छ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० १४५ ) की और है ।

२४२७ अष्टादशिकाशतकवासंस्कृत—गुणवन्मुखि । पत्र सं १८। या २३×२३ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के सं ७२। छ मन्थार।

२४२८ अष्टोत्तराशिकाशतकवासंस्कृत—भुवसागर। पत्र सं १। या २ ×२ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल सं १२४। पूर्ण। के सं १२। छ मन्थार।

२४२९ अष्टोत्तराशिकाशतकवासंस्कृत—। पत्र सं १। या २ ३/४ ×२ इंच। माता-हिन्दी कथा। विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के सं १९। छ मन्थार।

२४३० अष्टोत्तराशिकाशतकवासंस्कृत—। पत्र सं १। या २ ३/४ ×२ इंच। माता-हिन्दी कथा। र कल सं १७८४ बीप मुठी ११। पूर्ण। के सं २१। छ मन्थार।

२४३१ अष्टोत्तराशिकाशतकवासंस्कृत—भुवसागर। पत्र सं १। या १ ३/४ × १ ३/४ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल सं १२। काल मुठी ११। पूर्ण। के सं ३२। छ मन्थार।

२४३२ अष्टोत्तराशिकाशतकवासंस्कृत—। पत्र सं २ से ११। या १ × २ ३/४ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। अपूर्ण। के सं २। छ मन्थार।

२४३३ आठपनाकथाकोप—। पत्र सं ११। या १ १/२ × १ ३/४ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। अपूर्ण। के सं १२७३। छ मन्थार।

विशेष—छ मन्थार में १ प्रति (के सं १७) तथा छ मन्थार में १ प्रति (के सं १२७४) बीप हैं तथा दोनों ही अपूर्ण हैं।

२४३४ आठपनाकथाकोप—। पत्र सं १४। या १ २ × २ इंच। माता-संस्कृत। विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। अपूर्ण। के सं १२९। छ मन्थार।

विशेष—बीप की कथा एक पूर्ण है। अन्वयार्थ का विपय परिवर्तन दिया है।

श्री कुरुक्षेत्री वरदाद्योने कथ्ये वनव्यासस्यैति उच्ये ।

श्रीकुरुक्षेत्रीकथयन्तीत्ये वातं प्रयागव्यासस्यैति ॥१॥

श्रीकुरुक्षेत्रीकथयन्तीत्ये वातं प्रयागव्यासस्यैति ॥१॥

श्रीकुरुक्षेत्रीकथयन्तीत्ये वातं प्रयागव्यासस्यैति ॥१॥

श्रीकुरुक्षेत्रीकथयन्तीत्ये वातं प्रयागव्यासस्यैति ॥१॥

श्रीकुरुक्षेत्रीकथयन्तीत्ये वातं प्रयागव्यासस्यैति ॥१॥

अनेक कथा के अन्त में परिवर्तन दिया गया है।

२४३५ आठपनाकथाकोप—प्रयागव्यास। पत्र सं १२९। या १ १/२ × २ इंच। माता-संस्कृत।

विपय-कथा। र कल ×। से कल ×। अपूर्ण। के सं २१२। छ मन्थार।

विशेष—२९ से अन्त तथा बीप में श्री कुरुक्षेत्री कथा नहीं है।

२५३६ आरामशोभाकथा । पत्र स० ६ । भा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३६ । अ मण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथार्ये हैं ।

प्रारम्भ—

अथदा श्री महावीरस्वामी राजशुहेपुरे  
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥  
सद्धर्ममूलसम्यक्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा ।  
यत्त्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्वदि ॥२॥  
देवपूजादिश्रीराज्यमपद सुरसपद ।  
निर्वाणकमलांचापि लभते नियत जन ॥३॥

प्रतिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्य नाम्ना मलयसुदरे ।  
क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निर्जं जनु ॥७५॥  
सूरि नत्वा शुहे गत्वा राज्य क्षिप्त्वा निजागजे ।  
आरामशोभयायुक्ते राजाव्रतमुपाददे ॥७६॥  
अधीत सर्वसिद्धात् सविग्नगुणसयुत ।  
एव सस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥  
गीतार्थायै तथारामशोभायै गुणभूमये ।  
प्रवृत्तिनीपद प्रादात् गुरुस्तद्गुणरजित ॥७८॥  
सबोध्य भविकान् सूरि वृत्वा तेरनशन तथा ।  
विषयद्वावपि स्वर्गसपद प्रापतुर्वर ॥७९॥  
ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।  
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वती सिद्धिमेष्यत ॥८०॥  
एवं भोस्तीर्थकृद्भक्ते, फलमाकर्षे सुदर ।  
कार्यस्तत्करणेपन्नो युष्मामि प्रमदात्सदा ॥८१॥  
॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२५३७ उपागलजितव्रतकथा । पत्र स० १४ । भा० ८३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
कथा ( जैनेतर ) १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२३ । अ मण्डार ।



२५३८ ब्राह्मणसमयकथा—अममयचन्द्रादि । पत्र सं ४ । धा १ × ४२ इ च । भाषा—ब्राह्मण ।

विषय—कथा । २ काल × । मे काल सं १९२९ क्रैष्ट जुरी १ । पूर्ण । मे सं ४४ । धा नम्बर ।

विलेप—वाराणसीकाशी शीषेण बभन्वैरवशिष्टान् भाद्रकालत्रयमस्तं कदाचिन्मं व्याकल्पयत् ॥१२॥

इति रिक्त संकेतः ॥१॥

श्री श्री श्री श्री श्री धर्मसंविद्य बुद्धिकोशिका । श्री सिंहरीकल्पे संवत् १९२२ वर्षे वैश्व कृति १ दिने ।

२५३९ श्रीचन्द्रात्मकथा—अ मेदिहत् । पत्र सं ५ । धा १ × ४ इ च । भाषा—ब्राह्मण । विषय—

कथा । २ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १ । १ । धा नम्बर ।

विलेप—२ से २ एक पत्र मही है ।

२५४० कठिबाराधनकरीचौपूर्य—वामसागर । पत्र सं १४ । धा १ × ४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २ काल सं १७७० । मे काल × । पूर्ण । मे सं १ । १ । धा नम्बर ।

विलेप—घटित नाम ।

श्री कुम्भवीरव- बाल बंधुवीरव नम्बर पूरणी प्रथम—

कुम्भार धर्मपुत्रसिंहसिंह एक धर्मतरह मकर कथेकी घटिकावारी ।

बराह करण कथकार कुम्भारी धारण बहू परिवारी परिवारम् ॥१॥

नव भागी विद्याम मेट तिष्टा रह्या वीर बुद्धि लखर पञ्चविधा ए ।

नामक माफला कथ बुद्धिपर मालुटा पालन करि घटिकावारी ॥२॥

वेठनी बड़े ठाम किन्त पुम्हें केवलात्मे कर्म घाल्या छी न ।

धर्मपुत्रसिंहना बीच धम्हें छी घटिकावारी कथाले बुद्धि छी तिहाय ॥३॥

कथित—

उत्तरी हीराले कथे व तिष्टा नीची नीराल ॥ मं ॥

तबहुव ना परबाल श्री म पुत्री नव श्री बाल ॥ म ॥

मालावर बुद्ध संकटा म कति मालरवलि हीन ॥ मं ॥

बाहुतला कुम्भालता म पुत्री मल्ल कपीन ॥

दिन कट कथा नीच नीच रबीनी ए घटिकार ।

कठि फो उयी भावीनी मं तिष्टा बुद्ध कर ॥

नवनी बाल बीरालनी मं नीची दाल बुद्ध ।

मालावर बड़े माफलो दिन दिन कथाले सं ॥ १ ।

इति श्री बीन विद्यव कटीमार मालकरी चौर्य बंधुर्भ ।

२५४१ कथाकोश—हरिपेणाचार्य । पत्र स० ४६१ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल स० ६८६ । ले० काल स० १५६७ पीप मुदी १४ । वे० न० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—सभी पदार्थ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२ प्रति स० २ । पत्र स० ३१८ । मा० १०×४३ इ च । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ३३ । वे०  
न० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३ कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३६ ने १०६ । मा० १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १७६७ अषाढ बुदी ६ । अपूर्णा । वे० स० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ मे ३८, ५३ से. ७० एव ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रयासि—

संवत् १७६७ ता असाढमाने गृष्णपक्षे नवम्या शनिवारे अजमेराय्ये नगरे पातिस्वाहाजी अहमदस्याहजी  
महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसधेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नद्याम्नाये  
कुदबुदाचार्यान्नाये मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीविद्यानदिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी  
तत्पट्टे मडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् दिाप्य पठित  
मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापित धर्मोपदेशदानार्थं जानावरणीकर्मक्षयार्थं मंगलमूयान्चतुर्विधसधाना ।

२५४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ऋ० नेमिदत्त । पत्र स० ४६ से १६२ । मा० १२×६  
इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८०२ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्णा । वे० स०  
२२६६ । अ भण्डार ।

२५४५ प्रति स० २ । पत्र स० २०३ । ले० काल स० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० स० ६८ । क  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रयासि कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त ङ भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ७४ ) च भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ३४ ) छ  
भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० स० ६४, ६५ ) भीर है ।

२५४६ कथाकोश । पत्र स० २५ । मा० १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ५७, ५८ ) ङ भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० स० २११७  
२११८ ) भीर हैं ।

२५४७ कथाकोश । पत्र स० २ से ६८ । मा० १२×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ६६ । ङ भण्डार ।

२५६८. कथासमाप्त—आर्यभट्ट । वन में २ । वा १ १/४ इंच । भाग-मंसूर । विषय-  
 कथा । ८ वन  $\times$  । मे वन  $\times$  । पूर्ण । वे में १२२४ । अ. अकार ।

विषय—वीच के १७ के २१ वन है ।

२५६९. कथासमाप्त—अष्टाशतसमाप्त । वन में २२ । वा १२  $\times$  १२ इंच । भाग-हिन्दी । विषय-  
 कथा । ८ वन  $\times$  । मे वन में १२२४ बीघाज कुटी २ । पूर्ण । वे में ११५ । अ. अकार ।

नाम कथा	वन	वृक्ष संख्या
[१] श्रीमोक्ष वीच कथा	१ मे ३	२२
[२] विष्णुपुत्री कथा	४ के ७	१४
[३] विष्णु उद्विग्न कथा	७ के १२	१६
[४] महाशक्ति का वन कथा	१२ के १२	२२
[५] राजवंश कथा	१२ के १२	७६
[६] रोहिणी का वन कथा	१२ के २३	१२
[७] अविष्णुवार कथा	२३ के १२	३७

विषय—१ २४ वा बीघाजमले दुपरासे विषी २ कुशावरे । निरालं बहुवचन एवंदुपराज लार्ड अक्षुट  
 मन्त्रे । निगलन विरहीय कायरी वृक्षवनी कावि सीमा वनार्थे ।

२५७०. कथासमाप्त— । वन में ३ मे १ । वा १  $\times$  १ इंच । भाग-भाजन हिन्दी । विषय-  
 कथा । ८ वन  $\times$  । मे वन  $\times$  । पूर्ण । वे में १२६३ । अ. अकार ।

२५७१. कथासमाप्त— । वन में १४ । वा १२  $\times$  ७ इंच । भाग-लक्ष्मण हिन्दी । विषय-कथा ।  
 ८ वन  $\times$  । मे वन  $\times$  । पूर्ण । वे में ११६ । अ. अकार ।

विषय—वन कथासे भी है । इसी अकार के वन अति ( वे में १ ) भीर है ।

२५७२. कथासमाप्त— । वन में ७ । वा १  $\times$  २ इंच । भाग-मंसूर । विषय-कथा । ८  
 वन  $\times$  । मे वन  $\times$  । पूर्ण । वे में १८४ । अ. अकार ।

२५७३. अति म ३ । वन में ७६ । मे वन में १२३ । वे में ५ २३ । अ. अकार ।

विषय—३४ कथासे वा मंसूर है ।

२५७४. अति म ३ । वन में ९ । मे वन  $\times$  । पूर्ण । वे में २२ । अ. अकार ।

विषय—विष्णु कथासे ही है ।

१. श्रीमोक्षवचनका—अक्षुटमन्त्रे ।

२. राजवंशवचनका—अक्षुटमन्त्रे ।

४ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६७ ) प्रौर है ।

२५५५ कथवन्नाचौपई—जिनचन्द्रसूरि । पत्र सं० १५ । आ० १२०<sup>१</sup>/<sub>२</sub> × ४२<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इव । भाषा—हिन्दी ( राजस्थानी ) । विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगद मे प्रतिलिपि की थी ।

२५५६ कर्मविपाक । पत्र सं० १८ । आ० १० × ४ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ मगसिर बुदी १४ । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठीका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्यारणसवादरूपकर्मविपाक सपूर्ण ।

२५५७ कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ५ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १०६ ) तथा व्य भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६४२ ) प्रौर है ।

२५५८ कृष्णकृष्णमणीमगल—पदमभगत । पत्र सं० ७३ । आ० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub> × ५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इव । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ११६० । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नम । श्री गुरुभ्यो नम । अथ रुक्मणि मगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय ।

कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीया हजुरी बुलाय ॥

पावा लाग्यो पदमयोजी, जहाँ बड़ा रुक्मणी जादुराय ।

क्या करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥

आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि ।

रुक्मणि मगल सुणै जी, ते ममरापुरि जाहि ॥

नरनारियो मगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय ।

वे नारी इ द्र की अपछरा जी, वे नर वैकुण्ठ जाय ॥

व्याह वेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव ।

गावतो ममरापुरी जी पाव(व)न हीम सब गाव ॥

चोले राणी रुक्मणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण ।

या किम्पा रति केशो तरणी जी, येसडीर करोजी बखारण ॥

बो मगल परगट करो जी, सत की सबद विचारि ।

बीबा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

कुछ भोँपिर मैं बिगदा थी व धम्मिनी थी देव ।  
 लल बन तो घानै बरा थी, कठानी कुछ को भी देव ॥  
 कुछ भोँपिर बठारवा थी हरी मानै बहुरव ।  
 कुछ भोँपिर के बरने घाने हीथी कुल की लाल बर वेनी ।  
 ह्युतु ह्या है काल हमारो, कलवा पवन को ऐनी ॥

बच ४ - राज तिहु ।

ललियाल राजा भोलियो की बुलि के राज कबार ।  
 जो बानु कुल धम्मिनी तो बोल बनाऊ लार ॥  
 के के लाल बार बच बैरवा बाल नई धमार ।  
 भोला लालि घानेक लुई धारण्य री मार ॥  
 बहुरवलि पनी लकी पर धार बुलिनी राज के बार ॥  
 कुल बठमारवा की----- ।

बलिब—

मज्जा करी वी अकुनी रो धारियो भोँपि बाल का होम ।  
 भबलु बठ कुल बालो बोल न लानी लोम ॥  
 बीह्युतु को लालकी, पुथी ललल पिठलाल ।  
 हरि पुरवै बच काला, लयलि कुकलि ललबाल ॥  
 हाठललि धालल ह्या, मुदिबन के बलीब ।  
 बच लिल बावकिया लीबललि बवरीब ॥

कललि थी संवल संपुरै ॥

संवल १५७ का लाले १७१२ का धारण्यवाके बुद्धाणे संकल्प विवाहीवतलने सिटीबवरके तुललनेवै लललनेवै ॥ बुवै ॥

२२२३ कोमुदीकथा—धम्मिनी धर्मकीलि । बच सं ३ से १४ । वा ११×४ बल । बला-संभल । विबन-बला । र कल × । से कल सं १९९३ । ध्युलै । से सं १३२ । क ललार ।

लिबेव—बल हू बरती के लिल । बीब के १९ से १ लक के भी बच लही है ।

२२२६ कथाके गोपीकथा— । बच सं १९ । वा २×१२ बल । बला-भिली पव । विबन-बला । र कल × । से बल × । धुलै । से सं २५३ । म् ललार ।

लिबेव—बंत से धीर थी ललिदिथी के बच लिले हुवे है ।

२२२९ लमुदरीविधानकथा— । बच सं ११ । वा ×७ बच । बला-संभल । विबन-बला । र कल × । से बल × । धुलै । से सं ५७ । ल ललार ।

२५६२ चंद्रकुवर की वार्ता—प्रतापसिंह । पत्र स० ६ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ भादवा । पूर्ण । वे० स० १७१ । ज भण्डार ।

विशेष—६६ पद्य हैं । पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कधिजन सदा सुहाइ ।

जुग जुग जीवो चंद्रकुवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ।

२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन । पत्र स० ६ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । भादि अत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणामों श्री जगदीश ।

तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

वरदाइक श्रुत देवता, भति विस्तारण मात ।

प्रणामों मन धरि मोद सों, हरै विघन सघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण भक्षर दातार ।

बदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुदै, भीर लिये पुर सग ।

भासुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥

दुख जु मन मे सुख भयो, भागी विरह विजोग ।

आनन्द सों च्यारों मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चदन राधा, कच्छव मलयागिरिविते ।

कच्छ जोहि पुण्यवन होई, दिक्ता सजोगो ह्वइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं । ६ कलिका हैं ।

२५६४ चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर । पत्र स० १० । भा० १०<sup>३</sup>×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल स० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही अत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥

अनुकरमइ सुख पायीयाजी, पाप्यो अमर विमाराण ॥ १ ॥ गुणवता साधनमु ॥

कुछ बाल हीन उप पावना, क्या है बाल प्रयाग ॥  
 मुबद्द बिल से पावद की पायी कुछ कम्बल ॥ २ ॥ कुल ॥  
 इतिथयः कुछ पावता की कम्बल पतिपि दूर ॥  
 कनी भावना भावद की बार उपतल दूर ॥ ३ ॥ कुल ॥  
 संगत सचलद इकोतलद की बीयो प्रथम प्रचल ॥  
 वे बर भाटी होबको की बच नल हीर कलल ॥ ४ ॥ कुल ॥  
 एकी गवर हो पावली की बचद ठई कलक लोक ॥  
 देव दुरा नाटा बला की लावद कम्बल लोक ॥ ५ ॥ कुल ॥  
 कुवदति बन्ध बाठीवद की की दून्य की कलल ॥  
 पावात कटी लोको की ई.....बीज कलल ॥ ६ ॥ कुल ॥  
 एव बच मरिह कोन्दा की सोना विवर कुवल ॥  
 बीहला की वा बच कला की बीमा कुडि विचल ॥ ७ ॥ कुल ॥  
 बीर बचन कम्बल बीज हो बच पति बरबल ॥  
 बाळ विवर बरबलीवद की पतिह कुडि विचल ॥ ८ ॥ कुल ॥  
 एव देवक इव बीलवद की बरद कम्बल किलल ॥  
 कुलकला कुला बलदुनी एव नल बीजल बल ॥ ९ ॥ कुल ॥

॥ इति बीर्बलकलपतिविरिचिबमाला ॥

२२६३. बन्धुवदिकथा—३० सुतसागर । वच ई ४ । वा १२५९ दृष । कथा—संस्कृत ।

विषय—कथा । र कथा । र कल × । ई कल × । पूर्ण । ई ई १७ । ब कथा ।

विशेष—ब कथा में कुछ इति ई ई १९९ की धीर है ।

२२६६ बन्धुवदिकथा—१ । वच ई २४ । वा ११८३ दृष । कथा—संस्कृत । विषय—कथा ।

र कल × । ई कल × । पूर्ण । ई ब १ । ब कथा ।

विशेष—कथा कालों की है ।

२२६७ बन्धुवदिकथा—कथा—सुतसागर । वच ई १ । वा ११८५ दृष । विषय—

कथा । र कल × । ई कल × । पूर्ण । ई ई १९१ । ब कथा ।

२२६८ बन्धुवदिकथा—कथा—कथा । वच ल ७० । वा १२५९ दृष । कथा—हिन्दी । विषय—कथा ।

र कल ई १०० । ई कल ई १०११ । पूर्ण । ई ई १ । ब कथा ।

विशेष—कथा में इतिथयः विवरकला एकीकल लोच कटी धीर है ।

२५६६ चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । च भण्डार ।

२५७० चित्रसेनकथा । पत्र सं० १८ । मा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२१ वीष बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २२ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्लोक सख्या ४६५ ।

२५७१ चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ मग्निर सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२ । घ भण्डार ।

विशेष—म० १८०१ की प्रति में लिखी गई है । जमनालाल साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

स० १८०१ 'चामसू' इतना और लिखा है । मूल्य—५) ≡) ॥) इस तरह कुल ५॥≡ लिखा है ।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा " ; पत्र म० १६ । मा० ७×८ $\frac{१}{२}$  इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

२५७३ जिनगुणसपत्तिकथा । पत्र सं० ४ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ( वे० सं० १८८ ) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मागीलाल बज ने  
प्रतिलिपि की थी ।

२५७४ जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । मा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के सग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५ ज्येष्ठजिनवरकथा । पत्र सं० ४ । मा० १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ( वे० सं० ४८४ ) की एक प्रति और है ।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ से १४ । मा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७३७ मासोज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । अ  
भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७ दोलामारुवणी चौपई—कुशलताभगणि । पत्र सं० २८ । मा० ८×६ इ च । भाषा—  
हिन्दी ( राजस्थानी ) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ह भण्डार ।



कुल बल हीस लव बलना, म्या रे बरन ब्रथाव ॥  
 मुबद विरत के पल्लव की पासी मुख कल्याण ॥ २ ॥ कुल ॥  
 ब्रधियला कुल पल्लव की बावत पप्रिय हूर ॥  
 कती बावना बावद की बाव उपलख हूर ॥ ३ ॥ कुल ॥  
 बंभत लवबद इभेताव की बीनो ब्रवम यवत ॥  
 वे बर पाटी सांको की लक मल हीव कलाव ॥ ४ ॥ कुल ॥  
 एकी बरर सो पावलो की बसद ल्यां घावक लोक ॥  
 देव कुल बारा मला की लावद कला लोक ॥ ५ ॥ कुल ॥  
 कुबलपि बन्ध बालीबद की की कुल की बसवत ॥  
 पावार कटे घोको की धं.....वीरव कवतव ॥ ६ ॥ कुल ॥  
 वर पद बरहि सोका की बोवा विवर मुबल ॥  
 नीला की वा कल मला की बीना मुदि विवत ॥ ७ ॥ कुल ॥  
 वीर बचन ब्रुव वीरव ही लव पति बरवतव ॥  
 बाल विवर बरवलीवद की विय कुलहि विवत ॥ ८ ॥ कुल ॥  
 लव लवक दूव बीनवद की वरर बहद विवतव ॥  
 कुलकला कुला बावतुनी लव वन बीडि बल ॥ ९ ॥ कुल ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवतव्यविरचितवतवत ॥

२२६२. बन्धवप्रियकथा—अ० कुतसागर । वन धं ४ । भा १२×६ दव । मला—६८१ । विवक—मवा । र मला । र मल × । ले मल × । पूर्ण । धं १७ । क मथार ।

विवेक—क मथार धे एक ब्रधि धे लं १९६ की वीर है ।

२२६३. बन्धवप्रियकथा— । वन धं २४ । भा ११×२ दव । मला—६८१ । विवक—मवा । र मल × । ले मल × । पूर्ण । धं १ । य मथार ।

विवेक—कल ववार्ने की है ।

२२६४. बन्धवप्रियकथा—सुरजबद मला । वन धं १ । भा ११×४ दव । विवक—मवा । र मल × । ले मल × । पूर्ण । धं १९१ । क मथार ।

२२६५. ब्रह्मसती कथा—टीकम । वन धं ७ । भा १०×१ दव । मला—६८१ । विवक—मवा । र मल नं १७ । ले मल धं १७११ । पूर्ण । धं १ । य मथार ।

विवेक—लक विवित कियुवकल एवीवत लोव ब्रधि वीर है ।

कथा साहित्य ]

२५६६ चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । अ मण्डार ।

२५७०, चित्रसेनकथा । पत्र सं० १८ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१० काल × । ले० काल सं० १८२१ पीप बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ मण्डार ।

विशेष—श्लोक मध्या ४६५ ।

२५७१ चौश्रा राधनाद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । भा० १२३×७ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६६६ मगनिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ मण्डार ।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति मे लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

सं० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है । मूल्य—५) ३) ॥) इस तरह कुल ५॥३ लिखा है ।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा " । पत्र सं० १६ । भा० ७×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ मण्डार ।

२५७३ जिनगुणसपत्तिकथा । पत्र सं० ४ । भा० १०३×५ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—

कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ मण्डार ।

विशेष—क मण्डार मे ( वे० सं० १८८ ) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर मे मांगीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२५७४ जीवजीतमहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसमे कवि ने मोह और चेतन के सग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५ ज्येष्ठजिनवरकथा । पत्र सं० ४ । भा० १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे (वे० सं० ४८४) की एक प्रति और है ।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ से १४ । भा० १२×५ इ च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७३७ आसाज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । अ  
मण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेद्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७ दोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगण्ण । पत्र सं० २८ । भा० ८×४ इ च । भाषा—  
हिन्दी ( राजस्थानी ) । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । अ मण्डार ।

२२७८. हाहायाकृषी की बात । पत्र नं १ से ७ । पृ० १५० ई० । भाषा—हिन्दी ।

विषय—बचा । १ नाल × । के नाल नं १२ । प्रकाश कुटी । धर्म । के नं १२११ । ट मथार ।

विषय—१ ४ ३ तथा १४५ पत्र नरी है ।

हिन्दी मध्य तथा बोधे हैं । पुन १ । बोधे हैं विनये बोलायक की बात तथा राजा नल की विपति याचि वा वर्तन है । अतिवक्त अत प्रकार है—

मालवी पीरवी नामक सिद्धि प्रोहित के लोच दीनी । ई मालि मरक की राज नरी थी । मालवी की पु क नंबर सिद्धमल स्वयं की हुआ । मालवली की कूर्चि नंबर पीरमाल की हुआ । रोम नंबर बोधा की क लुना । बोधा की की मालवी को की महादेव की की विरवा तु अमर बोधी हुई । सिद्धमल स्वयं की नंबर तु बीमार मुद्धमा की नली । बोधा तु राजा राजस्वयं की तर्पे बोधी एक लीरत हुई । राजविराज महापद्मा की लनार् ईशरीरिहरी लीकी बोधी एक ली नार हुई ॥

इति की बोमालनकी वा राजा नल वा विवा की बाटा संपुरल । पिटी मल कुटी । पुनवार नं १२ । सिद्धमलराज वांरवाड की पोधी तु अठार लिखित—राजस्व ये—

पत्र ७७ वर मुद्ध गृ नार एक के कवित तथा बोधे हैं । मुद्धमल तथा राजमल के कवित एवं विरवर की मुद्धमिया की हैं ।

२२४६. हाहायाकृषी की बात । पत्र नं २ । पृ० २५ ई० । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—

बचा । नाल × । के नाल × । धर्म । के नं १२६ । ट मथार ।

विषय—२२ पत्र एक पत्र तथा पत्र विहित है । बीच बीच ये बोधे की दिने बने हैं ।

२२८ खमोकारमत्रकबा । पत्र नं ४२ के १ । पृ० १२ × ६ ई० । भाषा—हिन्दी । विषय—

बचा । १ नाल × । के नाल × । धर्म । के नं २३ । ट मथार ।

विषय—खमोकार मत्र के प्रकाश की वचाव है ।

२२८१ त्रिकाशचौकीकीकथा (रोटलीकथा) —पं० चन्द्रदेव । पत्र नं २ । पृ० ११२ × २२ ई० । भाषा—हिन्दी । विषय—बचा । १ नाल × । के नाल नं १२२ । धर्म । के नं २१२ । ट मथार ।

विषय—इकी मथार के १ प्रति ( के नं १ ) की नीर है ।

२२८२ त्रिकाशचौकीकी ( राटलीक ) कथा—गुलनमि । पत्र नं २ । पृ० १३ × ४ ई० । भाषा—हिन्दी । विषय—बचा । १ नाल × । के नाल नं १२६ । धर्म । के नं ४८२ । ट मथार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १३३७ ) ख भण्डार में एक प्रति ( वे० स० २५४ )  
ह भण्डार में तीन प्रतिया ( वे० स० ६६२, ६६३, ६६४ ) और हैं ।

२५८३. त्रिलोकसारकथा । पत्र स० १२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।  
२० काल स० १६२७ । ले० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स० १८५० शाके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविविने लिखायित प० जी श्री भागचन्दजी माल कोटै  
पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेवा । दक्षप्याकौर उ भाई कै राठि हुई सूवादार तकूजी भाग्यो राजा जी की  
फने हुई । लिखित गुरुजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४ वृत्तात्रय । पत्र स० ३६ । आ० १३३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०  
२० काल × । ले० काल स० १९१५ । पूर्ण । वे० स० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५ दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र स० २३ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ४१४ ) क भण्डार में १ प्रति ( वे० स०  
२६३ ) ख भण्डार में १ प्रति ( वे० स० ३६ ) च भण्डार में १ प्रति ( वे० स० ५८६ ) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया  
( वे० स० २६५, २६६, २६७ ) और हैं ।

२५८६ दर्शनकथाकोश । पत्र स० २२ से ६० । आ० १०१×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । ख भण्डार ।

२५८७ दशमूर्खीकी कथा । पत्र स० ३६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।  
२० काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वे० स० २९० । ख भण्डार ।

२५८८ दशलक्षणकथा—लोकसेन । पत्र स० १२ । आ० ९३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० स० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष—घ भण्डार में दो प्रतिया ( वे० स० ३७, ३८ ) और हैं ।

२५८९ दशलक्षणकथा । पत्र स० ५ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ह भण्डार में १ प्रति ( वे० स० ३०२ ) की और है ।

२५९० दशलक्षणप्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । अ भण्डार ।

२५२१ कामकथा—मातृमङ्गल । पत्र सं १ । पा ११ × ५ दृश्य । गत्या—द्वितीया । विषय—  
कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ५१६ । अ मन्थार ।

विषय—इसके प्रतिरिक्त अ मन्थार में १ प्रति ( के सं १७६ ) अ मन्थार में १ प्रति ( के सं  
१५ ) अ मन्थार में १ प्रति ( के सं १५ ) अ मन्थार में १ प्रति ( के सं १ ) तथा अ मन्थार में १ प्रति  
( के सं २६५ ) धीर है ।

२५२२ कामशीलतपभाषनात्म्य आवास्या—समबन्धुस्वरमिहि । पत्र सं ३ । पा १ × ५६ दृश्य ।  
गत्या—द्वितीया । विषय—कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३२ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं २१७६ ) भी धीर है । जिस पर केवल वन भीम तप  
बालना ही विवा है ।

२५२३ देवराजमन्थाराज चौपई—सोमवैश्वसुरि । पत्र सं २३ । पा ११ × २२ दृश्य । गत्या—  
द्वितीया । विषय—कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३७ । अ मन्थार ।

२५२४ देवछाजनकथा— । पत्र सं २ मे २ । पा १९ × २६ दृश्य । गत्या—तृतीय । विषय—  
कथा । र काल × । से काल सं १५२३ कातिक सुदी ७ । पूर्ण । के सं १६९१ । अ मन्थार ।

२५२५ ह्यद्वाराजकथा—र्ष अग्रदेव । पत्र सं ७ । पा १० × २२ दृश्य । गत्या—तृतीय । विषय—  
कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३२३ । अ मन्थार ।

विषय—अ मन्थार में ही प्रति ( के सं ७३ एक ही स्थान ) धीर है ।

२५२६ ह्यद्वाराजकथामंथ—अग्रबन्धुसागर । पत्र सं २२ । पा १२ × १२ दृश्य । गत्या—द्वितीया ।  
र काल × । से काल सं १२५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । के सं ३६६ । अ मन्थार ।

विषय—विन्ध कथा में धीर है ।

भीम एकलधीकथा— अ कालकात्तर गत्या— द्वितीया ।

भुवनालकतपथा— " " " "

कीर्तिनाचमीकथा— अ हर्षा " द्वितीया र काल सं १७३६

विष्णुसुतवृत्तिकथा— अ कालकात्तर गत्या— द्वितीया ।

पवित्रीकथा— " " " "

२५२७ ह्यद्वाराजकथा— । पत्र सं ७ । पा १२ × २२ दृश्य । गत्या—तृतीय । विषय—कथा । र  
काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २ । अ मन्थार ।

विषय—र्ष अग्रदेव की कथा के अन्तर्गत पर इसकी कथा भी गई है ।

न भण्डार मे ३ प्रतिपा ( वे० स० १७२, ४३६ तथा ४४० ) और हैं ।

२५६८ धनदत्त सेठ की कथा । पत्र स० १४ । मा० १२३×७३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल स० १७२५ । ले० काल × । वे० स० ६८३ । अ भण्डार ।

२५६९ धन्नाकथानक । पत्र स० ६ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । घ भण्डार ।

२६०० धन्नासालिभद्रचौपई । पत्र स० २४ । मा० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं । २४ से आगे के पत्र नहीं है । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१ धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र स० ३७ । मा० ११३×४३ इञ्च । विषय—कथा । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काव स० १७३६ । ले० काल स० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—खरतरगन्धर्पति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है । ( पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२ धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा । पत्र स० १२ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८५५ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३ धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र स० २४ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल स० १८०७ । ले० काल स० १६२७ सावण बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । क भण्डार ।

नदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८ । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

विशेष—सागानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ७४ ) स० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०४ नदीश्वरविधानकथा—हरिपेण । पत्र स० १३ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

२६०६ नदीश्वरविधानकथा । पत्र स० ३ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७ नागमता । पत्र स० १० । मा० १२×५ इच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—घरि घंठ नाम बिना प्रकर है ।

बी मालमठा लिखते—

बनर हीरपुर पदक अलीबद, माहि हूर केकरेव ।  
 मयलि करद नर बांग तेई नद करद गुम्हाटी घेव ॥१॥  
 करद गुम्हाटी घेवनद बधिबराह ठैकलीया ।  
 कन्द कंजीबदद लिखबिख नर, धनर केव बोखलीया । २॥  
 बल बेर मालाह बलिका, करद गुम्हाटी घेव ।  
 बनर हीरपुर पदक अलीबद, माहि हूर केकरेव ॥३॥  
 राज वैष्टातर बहदर घाले निरमत नीर ।  
 रंक बबद मानीरबी, बबुदद वरुनद वीर ॥४॥  
 नीर तेई रंक कोकमद लानी घलि कएवार ।  
 घारि बवारण पनीड कोबद, बबुदद वरुनवार ॥५॥  
 बबुल घजाली बिहू बैवठा, बाई ठिल्लबि वरुदद ।  
 नंवा वलद मबद बु घजवद राज वैष्टा वरुवद बर ॥६॥  
 राम मोकम्या बै वारीनी घाले बुर ही बाह ।  
 घाले गुण्डी वलटी घाले गुण्डी बाह ॥७॥  
 घाले गुण्डी बाह नद, घाले गुण्डी वलटी ।  
 बाबुबु बनिद वलबी हरि कउ वीर बुउठरी ॥८॥  
 बाह वैवक करउव, वेकरो राह मय मुंर बु वारी ।  
 गुण्ठ करेवक मरीनद, घालो रावनी वलबदद वारी ॥९॥

१०४—

एक कविलि बबर वाली विखीही बठार ।  
 इक ठकद बिर बरुही ठकदुण बनी बंधारी ॥  
 ठकदुण बनीब बपारी, गुण्ठ मिय नरद धनुदद ।  
 बधि लहरि विव बंधासिद ठकदु बबक नरु कउद  
 कन करद बुब बब हई गु ठगेहा टली ।  
 विखीही बठार एक कविलि बर वाली ॥१॥  
 बलमुंदा बल बान्ही बह वानी कनकार ।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउ, तिम घण मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिराणउ तूठउ बोलइ, ममीयविप गयउ छडी ।

डक तरणइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हई मन सती ॥

मू घ मगलक छाजइ, ।

बहु कासी भमकार डाक छडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमता सपूर्णांम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोयी ग्रा० मेरुकीत्ति जी की ॥ कथा के रूप मे है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८ नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० १६ । ग्रा० ११३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३६७ ) तथा ज भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० १०८ ) की  
घौर है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरुडमलजी गोषा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०९ नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र स० २७५ । ग्रा० ७३×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । १० काल स० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल स० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । क  
भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी मे है किन्तु  
अपूर्णा है ।

२६१० नि शल्याष्टमीकथा । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० २११७ । अ भण्डार ।

२६११ निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० ४० से ५५ । ग्रा० ८३×६३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में १ प्रति ( वे० स० ९८ ) की घौर है जिसकी कि स० १८०१ म महाराजा ईश्वर  
सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२ निशिभोजनकथा । पत्र स० २१ । ग्रा० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३ नेमिष्याहलो । पत्र स० ३ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२५५ । अ भण्डार ।



विशेष—आरम्भ—

सखीगुटी रसिवाणु खमरविजय रण्य भारे ।  
 तस संन भी वेमनी हुं बावत वरण्य ठपीये ॥  
 वन वन बरे छे ज्यो रैव पावडरतण्य नरठा ।  
 वाडररवर्षे भीमनी को कोरयो हुं हुयो ॥  
 तववरवनी रो रंन घटेये ते धारण्य भी ।  
 हुयो बानबी हुं भी रो मने कल्याण्य तु पानरो भी ॥

अति प्रसुत एवं बीरुं है ।

२६१४ मैमिराडडडडडडडड—गोपीकृष्ण । वन र्ध १ । धा १ × ४५ इड । जगता—हुनी ।

विशेष—नका । र नका र्ध १ १३ म बावरा कुरी ४ । ते कल × । क्युर्से । वे र्ध २२१ । धा नका ।

आरम्भ—

भी विण्य वरण्य कलत बनी मनी परण्यार ।  
 वेवनाथ र बल ठरो म्याहव वहुं मुकधाम ॥  
 डारावटी मनी कबी बीरुं वेत नका ।  
 इण्युटी भी कनना मुंवर वहुं विरठार ॥  
 भीम को बीरुं कलता मनी नारा वरण्य ।  
 तडि केडि रंन वरिं दे वारु वरुं वरण्य ॥२॥

अतिशय—

पानन तेन ठयो म्याहनी भी वरण्य को वरण्यटी ।  
 कण्य डुल मुकटी कबी भी वरण्यी मुक धपार ॥

कवच—

अवन लानक वोन कुननी वार संनका १ ।  
 तवत् धमरा वरण्य ठरेडि वीण कुन कुनार १ ।  
 भी वेव पानन कलत गोपी ठाड वरण्य वरण्यार ।  
 मुठार बीरुं ठाडि वरिं कबी वही नका वरण्य १ ॥  
 अति भी वेव वरण्य विवडुको वरण्य ।

इतत वाने वन वन भी वल भी है वहुं क्युर्से ।

२६१५ नकाक्यात—विष्णु ठमरी । वन र्ध १ । धा १२३ × २३ इड । जगता—वीरुं । विशेष—

नका । र कल × । ते कल × । क्युर्से । वे र्ध २ १ । धा नका ।

विशेष—वेव वरण्य २२५ वन है । क नका र्ध १ अति ( वे र्ध ४ १ ) क्युर्से वीरुं है ।

२६१६ परमरामकथा । पत्र सं ६ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-मन्दित । विषय-कथा ।

२० काल ✓ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं १०१७ । अ मण्डार ।

२६१७ पन्थविवानकथा—खुशालचन्द्र । पत्र सं २१ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पत्र ।

विषय-कथा । २० काल सं १७८७ फागुन बुदा १० । पूर्ण । वे० सं २० । म मण्डार ।

२६१८ पल्लविधानत्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं ११७ । मा० ११<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा-मङ्कन । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ४५४ । क मण्डार ।

विशेष—य मण्डार में एक प्रति ( वे० सं १०६ ) तथा ज मण्डार में १ प्रति ( वे० सं ८३ ) विना ले० काल सं १६१७ शर्त है और है ।

२६१९ पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं ५ । मा० ११×८ इञ्च । भाषा-मन्दित । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं २७८ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्राम में प० मनोहलालजी पाटनी न लिखी थी ।

२६२० पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र सं २०० । मा० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ४६८ । क मण्डार ।

विशेष—ह मण्डार में एक प्रति ( वे० सं ४६७ ) तथा छ मण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं ६६, ७० ) और हैं किन्तु तीनों ही अपूर्ण हैं ।

२६२१ पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र सं २४८ । मा० ११<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-कथा । २० काल सं १७७७ भाद्रवा मुदी ५ । ले० काल सं १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं ३७० । अ मण्डार ।

विशेष—महमदाबाद में श्री अमरनेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में ५ प्रतिया ( वे० सं ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७ ) तथा ह मण्डार में ६ प्रतिया ( वे० सं ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९ ) तथा च मण्डार में १ प्रति ( वे० सं ६३५ ) छ मण्डार में १ प्रति ( वे० सं १७७ ) ज मण्डार में १ प्रति ( वे० सं १३ ) म मण्डार में १ प्रति ( वे० सं २६८ ) तथा ट मण्डार में एक प्रति ( वे० सं १६४६ ) और है ।

२६२२ पुण्याश्रवकथाकोश । पत्र सं ६४ । मा० १६×७<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल सं १८८४ ज्येष्ठ मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं ५८ । ग मण्डार ।

विशेष—काठाराम साहू ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनयाल में कराकर चौधरियों के मंदिर में चढ़ाई ।

इसके अतिरिक्त ह मण्डार में एक प्रति ( वे० सं ४६२ ) तथा ज मण्डार में एक प्रति ( वे० सं २६० ) [ अपूर्ण ] और हैं ।

२६३. पुत्रवाचनकथाकोट—टेकचम् । पत्र सं १४१ । पा ११२× इड । भावा-हिन्दी पत्र । विपय-नवा । र काल सं १२२ । ले काल × । पूर्ण । के सं ४६० । छ मन्थार ।

२६४. पुत्रवाचनकथाकोट की सूची— । पत्र सं ४ । पा २३×२ इड । भावा-हिन्दी । विपय-नवा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १४६ । छ मन्थार ।

२६५. पुष्पाञ्जलीश्रवकथा—भूतकीर्ति । पत्र सं २ । पा ११×२ इड । भावा-दोहर । विपय-नवा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२६ । छ मन्थार ।

विशेष—इ मन्थार मे एक प्रति ( के सं २६ ) भीर है ।

२६२६. पुष्पाञ्जलीश्रवकथा—जिनदास । पत्र सं ११ । पा १५×५ इड । भावा-दोहर । विपय-नवा । र काल × । ले काल सं १९०० कानुल बुरो ११ । पूर्ण । के सं ४०४ । छ मन्थार ।

विशेष—इ प्रति बायड देव सिधु वाटसल नगर मे भी कानुल मे भैलास मे इड ठानकी के मिय कसदास मे लिखी थी ।

२६२७. पुष्पाञ्जलीश्रवविधानकथा — । पत्र सं १६१ । पा १ ×५ इड । भावा-दोहर । विपय-नवा । र काल × । ले काल × । मपूर्ण । के सं २२१ । छ मन्थार ।

२६२८. पुष्पाञ्जलीश्रवकथा—सुरासकचम् । पत्र सं ६ । पा १२×२ इड । भावा-हिन्दी पत्र । विपय-नवा । र काल × । ले काल सं १९४२ कर्मिक बुरो ४ । पूर्ण । के सं १ । छ मन्थार ।

विशेष—इ मन्थार मे एक प्रति ( के सं १६ ) भी भीर है जिसे बहुला जोधी पत्रालय मे कयूर मे प्रतिनिधि भी थी ।

२६२९. वैताडपचीसी— । पत्र सं २२ । पा ×५ इड । भावा-दोहर । विपय-नवा । र काल × । ले काल × । मपूर्ण । के सं २२ । छ मन्थार ।

२६३०. महाभारतवाचकथा—मकमल । पत्र सं ६ । पा १३×२ इड । भावा-हिन्दी । विपय-नवा । र काल सं १२६ । ले काल सं १२६ कानुल बुरो ७ । पूर्ण । के सं १२२ । छ मन्थार ।

विशेष—इ मन्थार मे एक प्रति ( के सं ७११ ) भीर है ।

२६३१. महाभारतवाचकथा—विमोहीश्राव । पत्र सं १५७ । पा १२ ×७ इड । भावा हिन्दी पत्र । विपय-नवा । र काल सं १७४० कानुल बुरो २ । ले काल न १९४६ । मपूर्ण । के सं १९१ । छ मन्थार ।

विशेष—भीष वा केवल एव पत्र वर है ।

इसे मनिरिड इ मन्थार मे २ प्रति ( के सं २२६ २२४ ) छ मन्थार मे २ प्रति ( के सं १७ २२ ) तथा छ मन्थार मे ( के सं १९६ ) भी भीर है ।

२६३२ भक्तामरस्तोत्रकथा—पद्मालाल चौधरी । पत्र स० १२८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल स० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० म० ५४० । क भण्डार ।

२६३३ भोजप्रबन्ध । पत्र स० १२ से २५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ५७६ ) की और है ।

२६३४ मधुकैटभबध (महिषासुरवध) । पत्र स० २३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५ मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदाम । पत्र स० ४८ । आ० ६×६ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६२८ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५८० । इ भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ६२८ । सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । अन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार मे १ प्रति [ अपूर्ण ] ( वे० म० ५८२ ) तथा १ प्रति ( वे० स० ५८२ ) की [ पूर्ण ] और हैं ।

२६३६ मृगापुत्रचण्डाला । पत्र स० १ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चोडाला है ।

२६३७ साधवानलकथा—आनन्द । पत्र स० २ से १० । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८ मानहुगमानवतिचौपई—मोहनविजय । पत्र स० २६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८५१ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रादि अ तभाग निम्न प्रकार है—

प्रादि—

ऋषभ जिराद पदाबुजे, मधुकर करी लीन ।

भागम पुण सोडसवर, अति आरव थी लीन ॥१॥

यान पान सम जिनकन, तारण भवनिधि तीय ।

भाष तर्या तारे अवर, नेहने प्रणवति होइ ॥२॥

भावे प्रणमु भारती, वरदाता मुविलास ।

चावन अख्यर की भरयो, अख्य खजानो जाम ॥३॥

पुत्रक नरमा कैई छानि बनाउ, एहू-बीजे हुनो धरि ।

विम मुकाइ ठेहना पर मोहो विदे भलि । ४ ।

प लम— पूर्ण नाम मुनीबइ रूप बर्ष बुद्धि मात्र बुधि पये है । ( यन्ने पत्र पढा हुमा है ) ४७ डाल है ।

३३३ मुक्ताबलिप्रतकथा—मुत्तसागर । पत्र सं ४ । या ११×२ इच । माया-संस्कृत । विषय-  
कथा । १ काल × । ले काल सं १५७३ पीप बुरी २ । पूर्ण । के सं ७४ । छ मथार ।

विषय—इति बनावंर के प्रतिनिधि होयो ।

३३४ मुक्ताबलिप्रतकथा—मामप्रभ । पत्र सं ११ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल सं १३२ सामन बुरी २ । के सं ७४ । छ मथार ।

विषय—बकुर मे मैमिनाक पोथालय में नानुवाल के बठनार्थ प्रतिनिधि हुई हो ।

३३५ मुक्ताबलिप्रतकथा— । पत्र सं २ से ११ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल सं १३४९ पञ्चम बुरी २ । पूर्ण । के सं १३३ । छ मथार ।

विषय—सन् १३४९ वर्षे पञ्चम बुरी २ थीमूलकमे बलत्ताएवरी घटवलीकमे बीहुबलुवाबामर्षमे

बहुतिक बीपधरिबेवा ठारहुँ बहुतिक बीपुबर्षरेवा ठारिप्य बुनि विमकनरेवा बलिबालकमे बलघावोमे धरवी  
केवा मर्षा होनी ठारुवा बंधवी बइर घासल ननु, जालय सखमल देवाममे संघवी ननु बासी बीनधिटी ठारुवा  
इतयान रिपवमल सेवे टी बाइ देवराज मर्षा द्विबिटी एत रिई ठेहिणीबुद्धवलीकमलक निब्यारत ।

३३६ मेघमाहात्म्योद्यानकथा— । पत्र सं ११ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १ । छ मथार ।

विषय—ए कथार मे एक प्रति ( के सं २७२ ) थीर है ।

३३७ मेघमाहात्म्यकथा । पत्र सं २ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत । विषय-कथा ।

१ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ३३ । छ मथार ।

विषय—ए कथार मे एक प्रति ( के सं ७४ ) थी थीर है ।

३३८ मेघमाहात्म्यकथा—सुरासर्षद । पत्र सं २ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २१ । छ मथार ।

३३९ मौनिस्रतकथा—गुणमत्र । पत्र सं २ । या ११×४ इच । माया-संस्कृत । विषय-

कथा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ४४१ । छ मथार ।

२६४६ मौनित्रतकथा । पत्र स० १२ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८२ । घ भण्डार ।

२६४७ यमपालमातगकीकथा । पत्र स० २९ । भा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ९ तक पंचरथ राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १९ तक पंच नमस्कार कथा दी हुई है । कहीं २ हिन्दी ग्रंथ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश में से ली गई हैं ।

२६४८ रत्नावधनकथा—साथूराम । पत्र स० १२ । भा० १२३×८ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६९१ । अ भण्डार ।

२६४९ रत्नावन्धनकथा । पत्र स० १ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० स० ७३ । छ भण्डार ।

२६५० रत्नत्रयगुणकथा—प० शिवजीलाल । पत्र स० १० । भा० ११३×५ इ च । भाषा संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १५७ ) और है ।

२६५१ रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ४ । भा० ११३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १९०४ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६५२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७३ ) और है ।

२६५२ रत्नावलिभ्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र स० ४ । भा० ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६९ । पूर्ण । वे० स० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३ रविभ्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० १८ । भा० ६३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३९ । ज भण्डार ।

२६५४ रविभ्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १८ । भा० ६×३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल स० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

२६५५ रविभ्रतकथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । भा० ९३×६ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १७९५ । पूर्ण । वे० स० ६९० । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७४ ), ज भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ४१ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ११३ ) तथा ट भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १७५० ) और हैं ।

२६२६ राठीकरतनमहेराशोचरी —। वन सं ३६ । मा २३×४ इंच । माता-हिन्दी

[राजस्थानी] विषय-कथा । र काल सं १२१३ बीघम कुछ २ । के काल × । पयुर्ल । के सं २७० । अ  
कथा ।

विशेष—प्रन्तित पाठ विष्णु प्रकार है—

कथा—

छाविनीउमना धीमा धानी छम्ही धार्य ।

मुंवर छोचने इबिर लह कथा ॥१॥

हुना वपति मंगल हरेव कथीना नेहू कथन ।

तुर एतन कतीयं छरीय विधीमा भाद कछ ॥२॥

धी कुवर कुवरवरे, वीकुंड कीवाला ।

एला एकलामएछी छुव धविषम लह कथ ॥३॥

वच वीवाक्य दिनि लवपी कथीतरं बरसा ।

वार कुलन कीमविहूद, हीकु तुरक बहुल ॥४॥

बीधि कती विधीवी वने एलो एतन एला ।

तुरा तुरा संकलन मड मोटा तुराल ॥५॥

हिन्दी राज कथा ज्येष्ठी दासा का आधार मुंवर दिधी कवि कथ वीती ॥ इति श्री रामेश्वरतन महेरा  
कथीतकरी कथनिका संयुक्त ।

२६२७ रात्रिमोहनकथा—मायाकछ । वन सं । मा ११×४ इंच । माता-हिन्दी वच ।

विषय-कथा । र काल × । के काल × । पयुर्ल । के सं ४१२ । अ कथा ।

२६२८ प्रति स २ । वन सं १२ । के काल × । के सं १६ । अ कथा ।

विशेष—इसका हुता नाम विधिमोहन कथा की है ।

२६२९ रात्रिमोहनकथा—किरासिंह । वन सं १४ । मा ११×२ इंच । माता-हिन्दी वच ।

विषय-कथा । र काल सं १७०३ भावस कुरी १ । के काल सं १६२ भावस कुरी २ । पयुर्ल । के सं १३२ ।  
अ कथा ।

विशेष—य कथा में १ प्रति धीर है जिसका के काल सं १५ ३ है । कजुदान कछ के प्रतिनिधि  
करने की ।

२६३० रात्रिमोहनकथा—। वन सं ४ । मा १२×२ इंच । माता-मंडूत । विषय-कथा ।

र काल × । के काल × । पयुर्ल । के सं २६६ । अ कथा ।

विशेष—य कथा में एक प्रति ( के सं १६६ ) धीर है ।

२६६१ रात्रिभोजनचौपई । पत्र सं० २ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ मण्डार ।

२६६२ हृषसेनचरित्र । पत्र सं० १७ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ मण्डार ।

२६६३ रैदघ्नतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १०×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ मण्डार ।

२६६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—सफर ( जयपुर ) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १८५७ ) तथा छ मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६१ ) भी मौजूद हैं ।

२६६५ रैदघ्नतकथा । पत्र सं० ४ । मा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ३६५ ) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ मामोज सुदी ४ है ।

२६६६ रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्ति । पत्र सं० १ । मा० ११३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६०८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६७ ) छ मण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) तथा ज मण्डार में १ प्रति ( वे० सं० १७२ ) मौजूद हैं ।

२६६७ रोहिणीव्रतकथा । पत्र सं० २ । मा० ११×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ६६७ ) तथा क मण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ६५ ) जिसका ले० काल सं० १६१७ वैशाख सुदी ३ मौजूद हैं ।

२६६८ लक्ष्मिविधानकथा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० ६ । मा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०७ भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति का सक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रवा सुदी १४ सोमवासरे श्री भादिनाथचैत्यालये तत्समग्रमहादुर्गे महाराज



वीरामर्षदण्डप्रवर्तवाने भी तुलसीने कलाकारपदके उरसवटीवचने कुंदकुंदावर्तनीवने—मंडनापार्श्व वर्मचक्रामाने  
अभ्येतपालान्वये प्रमथेत्प्रीतिं वा तथा उत्पार्श्व केतवदे———————————————————————  
वर्त ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा—। पत्र सं ५ । मा १ × ४३ दृष्य । मत्ता-संस्कृत । विषय-कथा ।

१ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ नम्बर ।

२६७. शोकाप्रत्याकान्तार्थमिश्रकथा—। पत्र सं ७ । मा १ × २२ दृष्य । मत्ता-संस्कृत । विषय-

कथा । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं १५३ । अ नम्बर ।

विशेष—श्लोक सं ९४३ हैं । अति प्राचीन है ।

२६७१. वारिषेयमुनिकथा—शोकाप्रत्याकान्तार्थमिश्र । पत्र सं ३ । मा १ × २२ दृष्य । मत्ता-हिन्दी ।

विषय-कथा । १ काल × । १ काल सं १७६६ । पूर्ण । के सं १७४ । अ नम्बर ।

विशेष—छद्मान्तक विद्याला के प्रतिनिधि की कवी की ।

२६७२. विक्रमचौबीसीचौपई—आमपत्रम्बसुरि । पत्र सं १३ । मा १ × ४२ दृष्य । मत्ता

हिन्दी । विषय-कथा । १ काल सं १७२४ मालक कुटी १ । १ काल × । पूर्ण । के सं १२२१ । अ  
नम्बर ।

विशेष—मठिसुन्दर के विश्व काल की रचना की थी ।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—सुतसागर । पत्र सं ३ । मा १ × २२ दृष्य । मत्ता-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं ३१ । अ नम्बर ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा—। पत्र सं ३ । मा १ × ४३ दृष्य । मत्ता-संस्कृत । विषय-

कथा । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं १७२ । अ नम्बर ।

२६७५. वैदरमीविवाह—प्रेमराज । पत्र सं ६ । मा १ × ४३ दृष्य । मत्ता-हिन्दी । विषय-कथा ।

१ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं २२२४ । अ नम्बर ।

विशेष—प्राचीन कालकाय मिला प्रकृत है—

श्लोक—

विसु वरव मही दीपदा कटी वरव मुर्ख ।

श्री राजा राजा एतेव वरव मनु रोष ॥१॥

एव विसुएव म मलही निवदा कटी विचार ।

पठ्या अवि मुच संपने वृषव माल हावद माल ॥

मुच मालसे ही रोष मस्त के निवु वरव पीछी तेजवी ।

वीच वरवदा वरवमा मालेवचार विज्ञोएव दिवनी ॥

अन्तिम—

कवनाथ सुजाण छै वेदरभी वेस्वार ।  
 सुख धनता भोगिया बेले हुवा भ्रमणार ।  
 दान देई खारित लीयी होवा तो जम जयकार ।  
 पेमराज गुरु इम भणी, पुकत गया तत्काल ॥  
 भरी गुरो जे साभली वेदरभी तणो विवाह ।  
 भरण तास वै सुख सपजे पढुत्या मुकत मभार ।  
 इति वेदरभी विवाह सपूर्ण ॥

अन्त्य जीर्ण है । इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६ व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र स० ७६ । मा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 कथा । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वै० स० ८७८ । अ मण्डार ।

२६७७ प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १६४७ कार्तिक सुदी ३ । वै० स० ६७ । छ  
 मण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारे इद पुस्तक लिखायत श्रीमद्काष्ठासधे नदीतरगच्छे  
 विशागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्ति तत्पट्टे म० यश कीर्ति तत्पट्टे म० श्रीउदयसेन तत्प-  
 ट्टाधारणधीर म० श्रीत्रिभुवनकीर्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिकर लिखायित खड्येवलज्जातीय कानलीवाल  
 गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमलदे तु० पुत्र  
 उत्तर तस्य भार्या ब्रह्मकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पञ्चम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र  
 लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह बालेन इद पुस्तक कथाकोशनामधेय ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं  
 लिखाय्य प्रदत्त । लेखक लपमन श्वैतान्बर ।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवातरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य महलाचार्य श्री ३ जय-  
 कीर्ति प० दीपचद प० मयाचद युक्तै ।

२६७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ से १२६ । ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २ । मपूर्णा । वै० स०  
 ७४ । छ मण्डार ।

२६७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी ६ । वै० स० ६३ । छ  
 मण्डार ।

इनके अतिरिक्त क मण्डार में २ प्रतिया ( वै० स० ६७५, ६७६ ) क मण्डार में १ प्रति ( वै० स० ६८८ )  
 तथा ट मण्डार में २ प्रतियां ( वै० स० २० ७३, २१०० ) मौजूद हैं ।

२६८० व्रतकथाकोश—प० दामोदर । पत्र स० ६ । मा० १२×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० ६७३ । क मण्डार ।

२६८१ अतकवाकोरा—सम्बन्धीति । पत्र सं १९४ । या ११×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
नवा । ८ कल × १ से कल × १ प्यूर्स । के सं ७७१ । अ नम्बर् ।

विशेष—इ नम्बर् मे १ प्रति ( के सं ७२ ) की पीर है जिसका मे कल सं १ ११ सलग बुटी  
२ है । लीटाम्बर पूष्पीराज मे बरफुर मे किशकी प्रतिबिधि की बी ।

२६८२ अतकवाकोरा—द्वैतेन्द्रकीर्ति । पत्र सं २ । या १२×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
नवा । ८ कल × १ से कल × १ प्यूर्स । के सं ७७० । अ नम्बर् ।

विशेष—बीज के धनेक पत्र नहीं है । कुछ नमने पं बानीबर की भी है । क नम्बर् मे १ प्यूर्स प्रति  
( के सं ९७४ ) पीर है ।

२६ ३ अतकवाकोरा— । पत्र सं १ से १ । या ११×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत धनध ध ।  
विषय—नवा । ८ कल × १ से कल सं १९ २ कमुल बुटी ११ । प्यूर्स । के सं ७९ । अ नम्बर् ।

विशेष—बीज के २२ से २२ तथा २२ से २२ तक के भी पत्र नहीं है । बिना क्वाथो का संघ है—

- १ पुष्पाञ्जलिबिनाल कथा — संस्कृत पत्र ३ से २
- २ अथवाहावरीकथा—अमृतभूषण के सिध्द प आभरैष " २ से ७

अन्तिम—बंङ्गुलकिल्नेस बरबं पाय्मिज्मि ।  
सम्बन्ध पंदितात्रैल इता अमृत सुवत्त ॥

३. रत्नचक्रविभानकथा—पं रत्नकीर्ति	—	संस्कृत पत्र पत्र	से ११
४. पौडराकारकथा—बं आभरैष	—	" पत्र "	११ से १४
५. विनरात्रिविभानकथा—	—	" " "	१४ से १६
			२६३ पत्र है ।
६. मेघमालाप्रकथा —	—	पत्र "	१६ से १९
७. ब्रह्माण्डसिद्धिकथा—आचसम ।	—	" " "	१९ से २२
८. सुभाब्रह्मीप्रकथा—	—	" " "	२२ से ४
९. त्रिपञ्चकम्बीसीकथा—आभरैष ।	—	" पत्र "	४ से ४३
१०. रत्नचक्रविधि—आभरैष	—	" पत्र "	४३ से ११

पारम्भ— बीचडं बलवान्गव नीउवाठीवचवडुवडु ।  
रत्नचक्रविधि बरबे अलालाविभुडवे ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— ताथो पंडितबलबंधुपुत्रो लज्जेनपुत्रान्तो ।  
बलान्कल्पुना प्रीतवर्हिवा पीतानदेवोऽन्यत् ॥१॥

य शुक्लादिपदेषु मालवपते द्वात्रातियुक्त शिव ।  
 श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ॥२॥  
 श्रोमत्केशवमेनार्यवर्धवान्मादुपेयुषा ।  
 पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ॥  
 सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् ग्रहस्याचार्यकुजर ।  
 पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त सम्यगेकदा ॥३॥  
 प्रायेण राजकार्यैऽवरुद्धर्माश्रितस्य मे ।  
 भाद्र किञ्चिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥  
 ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर ।  
 उपविष्टसतामिष्टमस्तस्याय विधिसत्तम ॥५॥  
 तेनार्यश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठित ।  
 ग्र यो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृत ॥६॥  
 विक्रमार्कव्यशीत्यप्रद्वादशाब्दगतात्यये ।  
 दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथता कथा ॥७॥  
 पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धर्मैरेण नायिका ।  
 यासीद्रत्नत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि समाप्त ॥

११	पुरदरविधानकथा ।	सस्कृत पद्य	५१ मे ५४
१२	रत्नानिधानकथा ।	गद्य	५४ से ५६
१३	दशलक्षणजयमाल—रङ्गधू ।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४	पल्यविधानकथा " ।	सस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५	अनयमोत्रतकथा—प० हरिचन्द्र ।	अपभ्रंश	६३ से ६६

अगरवाल वरवसि उप्पण्णइ हरियदेण ।

भत्तिणं जिणायुयणपणवेवि पयडिउ पद्धडियाछदेण ॥१६॥

१६	चदनपष्ठीकथा—	"	"	६६ मे ७१
१७	मुखावलोकनकथा	—	सस्कृत	७१ से ७५
१८	रोहिणीचरित्र—	देवनटि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९	रोहिणीविधानकथा—	"	"	८१ से ८५

२	आङ्गवनिविधिपानकथा	—	संस्कृत	पृ ३ से ८
२१	मुकुटसप्तमीकथा—प आश्रय			५५ से ५६
२२	मौनश्रावणकथा—रत्नकीर्ति		संस्कृत कथ	६ से ६४
२३	कन्याविधिपानकथा—कृष्णसेन		संस्कृत पद्य	१ [अपूर्व]

संस्कृत ११ ६ पत्रे प्रस्तुत कवि १ वीमलवदरे धीमूषधने वनप्रकारणतो वरस्वरीकण्ठे मुकुटसप्तमी-  
कथा—

२६८४ अतकथाकोश—। पत्र सं १२२। भा १२×२ इच्छ। कथा-संस्कृत। विपय-कथा। १  
कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ११। अकार।

२६८५ अतकथाकोश—सुराजयद। पत्र सं ६। भा १२३×१ इच्छ। कथा-हिन्दी। विपय-  
कथा। १ कल सं १७५० पाजुल बुदी ११। के कल ×। पूर्ण। के सं ११७। अकार।

विषय—१५ कथाने हैं।

इसके प्रतिरिक्त अकार मे एक प्रति (के सं ६१) अकार मे १ प्रति (के सं १६) तथा  
अकार मे १ प्रति (के सं १७५) दीर हैं।

२६८६ अतकथाकोश—। पत्र सं ३। भा १×२३ इच्छ। कथा हिन्दी। विपय-कथा। १  
कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं १७३१। अकार।

विषय—विपय कथाओ का संख्या है—

नाम	कथा	विषय
श्लेषकनिन्दककथा—	सुराजयद	१ कल सं १७५२
आदिशकारकथा—	माऊ कवि	×
कन्यारविशयकथा—	प्र ज्ञानस्यार	—
सप्तपत्नीकथाकथा—	सुराजयद	—
मुकुटसप्तमीकथा—	"	१ कल सं १७५३
आङ्गवनिविधकथा—	"	—
शोभाकथाकथा—	"	—
मेघमाहाकथा—	"	—
बन्धनपट्टीकथा—	"	—
कविविधामकथा—	"	—
विन्मूजापुरकथा—	"	—
वत कथा—	"	—

नाम	वर्ता	विशेष
पुष्पाजलिप्रतकथा—	नुगालचन्द्र	—
श्यामाशर्पचमीकथा—	"	२० भाग मं० १७५५
मुक्तावलीप्रतकथा—	"	—

पृष्ठ ३६ मे ५० तक दीमक लगी हुई है ।

२६८७. प्रतकथासमष्ट । पत्र म० ६ म ६० । भा० ११३×५३ इत्य । भागा-नररुत । विषय-  
 तथा । २० भाग × । ले० भाग × । पूर्ण । दे० स० २०३८ । ट मण्डार ।

विशेष—६० ने भागे भी पत्र लगी है ।

२६८८. प्रतकथानसमष्ट । पत्र म० १२३ । भा० १२×४३ इत्य । भागा-नररुत मण्डार व । विषय-  
 तथा । २० भाग × । ले० भाग ७० १५१६ भागण बुद्धी १५ । पूर्ण । दे० म० ११० । व्य मण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का मंत्र है ।

नाम	वर्ता	भागा	विशेष
सुगन्धनशमीप्रतकथा ।		मपत्र व	—
अनन्तप्रतकथा ।		"	—
रोहिणीप्रतकथा—	×	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	"	—
दुधारमविधानकथा—मुनिविनयचद्र ।		"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—पिमलकीर्ति ।		"	—
निर्गुरपञ्चमीविधानकथा—विनयचद्र ।		"	—
पुष्पाजलिविधानकथा—पं० हरिश्चन्द्र ।		"	—
श्रमणद्वादशीकथा—प० अन्नदेव ।		"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	"	—

प्रारम्भ— जिन प्रणाम्य नेमीक्ष सासारार्णवितारक ।  
 रुक्मिणिचरित वक्ष्ये भव्याना योधकारण ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पद्मविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशरथसुविधानकथा—	शोकसेन	—	"	—
बम्बनपन्दीविधानकथा—	×	—	व्यस्य	—
विमलाश्रितिविधानकथा—	×	—	"	—
विनयुवापुरद्वारविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
विनयुवाशोककथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रथम—संभव १२१६ वन पालरा दुरी १२ भीमलसने सारस्वतीकण्ठे बलात्कारके म भीषण मधिरैवा उत्पट्टे म भीषुमफरैवा उत्पट्टे म भीषिकफरैवा । म्हात्क भीषणमि किय युमि मरमकीर्ति किय म मर्तनह मिक्ति । कडिनवात्कण्ठे कोठीरीये लंबी राजा बर्मा वेड मुपुन कौशा बर्मा मलोपुन मनु क्थना बर्मा मरम मर्कबार्ने इर्ब यत्न विद्याय वात वापयत्त ।

२६८. प्रकथासमूह—। वन लं २ । का १२०७२ दश । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२ वन × । ले वन × । दुर्ल । वे लं ११ । क कथार ।

विशेष—मिन्न कथायो का संज्ञ है ।

द्वादशप्रकथा—	वं अक्षयेव ।	संस्कृत	—
कथकथान्नाकथकथा—		"	—
बम्बनपन्दीकथा—	सुराक्षयम् ।	हिन्दी	—
बहीरवकथा—		संस्कृत	—
विनयुवसंपत्तिकथा—		"	—
दोली की कथा—	कीवर ठासिवा	हिन्दी	—
रैवकथा—	म विनदास	"	—
रत्नाशक्तिप्रकथा—	शुचमीदि	"	—

२६९. प्रकथासमूह—म महिसागर । वन लं २० । का १२०७३ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २ वन × । ले वन × । दुर्ल । वे लं १०० । क कथार ।

२०६१ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० ४ । आ० ८×४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७२ । क मण्डार ।

विशेष—रविप्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणाव्रतकथा इनका संग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२०६२ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० २२ में १०४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७८ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

२०६३ षोडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव । पत्र न० २६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६० भादवा सुदी ५ । वे० स० ७२२ । क मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुमिमणिकथा एवं अनतव्रतकथा के कर्ता का नाम प० मदनकीर्ति है । ङ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० २०२६ ) और है ।

२०६४ शिवरात्रिविद्यापनविविधकथा—शकरभट्ट । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ( जैनेतर ) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७२ । अ मण्डार ।

विशेष—३२ में आगे पत्र नहीं हैं । स्कंधपुराण में है ।

२०६५ शीलकथा—भारामल्ल । पत्र स० २० । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$  इक्ष । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ६६६, १११६ ) ङ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ६६२ ) घ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० १०० ), ङ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७०८ ), छ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० १८० ), ज मण्डार में एक प्रति ( ले० स० १६६७ ) और हैं ।

२०६६ शीलोपदेशमाला—मेरुमुन्दरगणि । पत्र स० १३१ । आ० ६×४ इक्ष । भाषा—गुजराती लिपि हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । छ मण्डार ।

विशेष—४३वीं कथा ( धनथी तक प्रति पूर्ण है ) ।

२०६७ शुक्रसप्तति । पत्र स० ६४ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४५ । च मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२०६८ भावगद्गादशोपाख्यान । पत्र स० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ( जैनेतर ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८० । अ मण्डार ।



२६६६. ज्ञानयज्ञाद्वारीकथा..... पद सं १५। पा १२×२३ इ. च। भाषा-उत्कृष्ट मल। विपम-  
नया। र काल ×। ले काल ×। पुरी। के सं ७११। छ मन्थार।

२७७७ श्रीपालकथा..... पद सं २७। पा ११×७ इ. च। भाषा-हिन्दी। विपम-नया। र  
काल ×। ले काल सं १६२९ वैशख सुदी ७। पुरी। के सं ७१३। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ७१४) भी है।

२७७९ श्रेणिकचौपई—कृष्णा बेद। पद सं १४। पा २१×४ इ. च। भाषा-हिन्दी। विपम-  
नया। र काल सं १८२९। पुरी। के सं ७१४। छ मन्थार।

विशेष—यदि बालपुरा के लक्ष्मी मन्थे में।

अन्य श्रेणिक चौपई लीखते—

प्राणिनाम् बंदी बनवीस । बहुरि बलि के होई बनवीस ॥  
 कृष्णा बंदी हुए निरखेव । कृष्णा कल्प दीक्षान्त बंधे ॥१॥  
 दीक्षा घातु छई का बार । नीचा सरलवटी कटी रहस्य ।  
 बहुरि बेया के बन मुनि होय । कटी चौपई बन मुनि कोई ॥२॥  
 माता हवन कटी छहारी । बस्तर हीण बघारो मारी ।  
 श्रेणिक बलि बस के गही । बंदी बाली चौपई गही ॥३॥  
 राखी बही बेसना बालि । बर्न बेधि केने बलि धरिण ।  
 राखा बर्न बनारस बोन । बर्न बर्न की बर्न बोन ॥४॥

पद ७ पर-बोझा—

बो झुटी बुध के गही, धरणीमवा के बोन ।  
 के भर बाली बरक में बस बोह माली टोक ॥१२१॥

चौपई—

गई कटी एक बस मुबाल । पावक एक पखी घटि बालि ।  
 बर की बुध गही को घाम । छई लीन एक बाली बर ॥१२२॥  
 कटी बरि बाली निरवाह । बुबैक बाप एक के बार ।  
 बाली बही बाली बुध । बनी बनी बालि बरक ॥१२३॥  
 एक बिरक बालक विचारि । पाली मैबा बाली मारि ।  
 बालक बालक कैली छई । लीन बचन ए बाली बहो ॥१२४॥

अन्तिस—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुणिसी ते उत्तरै पार ।  
 हीन पद अक्षर जो होय । जको सवारो गुणियर लोय ॥२८॥  
 में म्हारी बुधि सात् कही । गुणियर लोग सवारो सही ।  
 जे ता तणो कहै निरताय । सुणता सगला पातिय जाइ ॥२९०॥  
 लिखिवा चाल्यो सुख नित लही, जै साधा का गुण यो कही ।  
 यामे भोलो कोइ नही, हूगै वैद चौपइ कही ॥६१॥  
 वास भलो मालपुरी जाणि । ठीक मही सो कियो वखाण ।  
 जठे वसै माहाजन लोग । पान फूल का कीजै भोग ॥६२॥  
 पीणि छतीसौं लीला करै । दुख ये पेट न कोइ भरै ।  
 राइस्यघ जो राजा वखाणि । चौर चवाहन राखै भाणि ॥६३॥  
 जीव दया को अधिक सुभाव । सर्व भलाई साथै ढाव ।  
 पतिसाहा वदि दीन्ही छोटि । बुरी कही भवि सुणी वहोटि ॥६४॥  
 धनि हिदवाणो राज वखाणि । जह में सीसोद्यो मो जाणि ।  
 जीव दया को सदा बीचार । रैति तणो राखै भाधार ॥६५॥  
 कीरति कही कहा लागि जाणि । जीव दया सहू पाले भाणि ।  
 इह विधि सगला करै जगोस । राजा जीज्यौ तौ भर बीस ॥६६॥  
 एता बरस मै भोलो नही । बेटा पोता फल ज्यो सही ।  
 दुखिया का दुख टालै भाय । परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥  
 इ पुन्य तणो कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार ।  
 वाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म भापणी चालै खोइ ॥६८॥  
 सबत् सौलह से प्रमाण । जपर सहो इतासो जाण ।  
 निन्याणवे कछा निरदोष । जीव सबै पावै पोष ॥६९॥  
 भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कछा तीन से पट अघिकाय ।  
 इ सुणता सुख पासी देह । भाप समाही करै सनेह ॥७०॥

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीतो कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्क सं १८२६ काठी ग्रामे लीखत  
 बखतसागर वाचै जहने निम्सकार नमोस्त वाच ज्यो जी ।

२७०२ सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र सं ११ । भा० ६३×४ इच । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं १६८६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं ३५० । च  
 भण्डार ।

२००३. सप्तशतककथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं ४१ । भा १ २४४४ पृष्ठ । मत्स्य-  
विषय-कथा । १ काल सं १२२६ माघ सुदी १ । के काल X । पूर्ण । के सं १ । अ मत्स्यार ।

विषय—यति प्राचीन है ।

२००४ प्रति सं २ । पत्र सं १४ । के काल सं १७७२ माघ सुदी १३ । के सं १ । अ मत्स्यार ।

विषय—सं १७७२ वर्षे जालपुरवासे इच्छुपदे मयोरस्यं दिवा मरुतलारे विनीतायेत विविक्त  
मत्स्यपुर लनीनेतु वैरवाक्ये ।

२००५. प्रति सं २ । पत्र सं १२ । के काल सं ११४ माघ सुदी १ । के सं ३१३ । अ  
मत्स्यार ।

विषय—मैत्रय निवर्ती मङ्गलया हीरा मे मत्स्य मे प्रतिनिधि की थी । हीरास्य लंगही मत्स्यरंजनी किमुवा  
मे प्रतिनिधि हीरास्य स्वोदीयस्य के मंदिर के लिए करवाई ।

२००६ प्रति सं ४ । पत्र सं १४ । के काल सं १७७६ माघ सुदी १ । के सं १११ । अ  
मत्स्यार ।

विषय—य मर्तुह मे धारक मीमिन्वत्स्य के पदमार्त्त दिव्यात्त में प्रतिनिधि की थी ।

२००७ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । के काल सं ११४ माघ सुदी १ । के सं १११ । अ  
मत्स्यार ।

२००८. प्रति सं ६ । पत्र सं ७७ । के काल सं १७२१ माघ सुदी १ । के सं ११६ । अ  
मत्स्यार ।

विषय—य मत्स्यरंज के मत्स्यार्त्त प्रतिनिधि की थी थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ मत्स्यार के एक प्रति ( के सं ११ ) अ मत्स्यार के एक प्रति ( के सं ७२ )  
भीर है ।

२०१ सप्तशतककथा—भाटम्य्य । पत्र सं ४६ । भा १ ११२४२ पृष्ठ । मत्स्य-लिपी पत्र ।  
विषय-कथा । १ काल सं ११४ माघ सुदी १ । पूर्ण । के सं १ । अ मत्स्यार ।

विषय—यत्र विरके हुये है । यंत में यति का परिवर्तन भी विना हुआ है ।

२०१ सप्तशतककथाभाटम्य्य । पत्र सं ११ । भा १ १२४४ पृष्ठ । मत्स्य-लिपी । विषय-कथा ।  
१ काल X । के काल X । पूर्ण । के सं १३ । अ मत्स्यार ।

विषय—मोमकीर्ति इत मत्स्यरंजकथा का लिपी अनुगत है ।

अ मत्स्यार के एक प्रति ( के सं १४१ ) भीर है ।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । भा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । २० काल सं० १५४२ । ले० काल सं० १८८७ घ्रापाद बुदी । वे० सं० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाढी ( पञ्जाब ) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२ सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । भा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । २० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३ सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । भा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—भा भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६१ ) तथा अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३० ) और है ।

२७१४ सम्यक्त्वकौमुदीकथा । पत्र सं० १३ से ३३ । भा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे पष्ठम्या शनौ श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री अरतरंगच्छे श्री गुणलाल नहोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता सीवाच्यमाना चिर नदनात् ।

२७१५ सम्यक्त्वकौमुदीकथा " । पत्र सं० ८६ । भा० १०<sup>३</sup>×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खैतक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । अ० धर्मदास भगवान् गोयल गोश्रीय मरुताणापुर निवासी के वश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

श्री हू गर ने इस ग्रंथ को ब्र० राममल को भेंट किया था ।

अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपञ्चमीदिने भट्टारक श्रीमानुकीर्तितदात्मनाये अग्रबालान्त्ये भित्तलगात्रे साह दासु तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा गोपी सा दीपा । सा गोपी तस्य भार्या चोवो तयो पुत्र सा भावन साह उवा सा भावन भार्या बूरदा क्षही तस्य पुत्र तिपरदाश । साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र हू गरसो साम्प्र सम्यक्त कौमदो अथ ब्रह्मचार राममल्लदद्यात् पठनार्थं ज्ञानावर्णो कर्मक्षयहेतु । शुभ भवतु । लिखित जीवात्मज गोपालदाश । श्रीचन्द्रप्रभु जैत्यालये अहिपुरमध्ये ।

२०१७ प्रति सं० २। पत्र सं १। से काल सं १७१६ पात्र सुटी १४। पूर्ण। से सं ७२६।

क मन्थार।

२०१८ प्रति सं० ३। पत्र सं ७४। से काल सं १८११ पात्र सुटी २। से सं ७२४। क

मन्थार।

विशेष—श्यामराम बाहू के बन्धुग नगर से प्रतिनिधि की थी।

इसके प्रतिरिक्त क मन्थार में २ प्रतिभों ( से सं २ २६, ८१४ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं ११२ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं ७ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं ७७ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं ६१ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं १ ) तथा क मन्थार में २ प्रतिभों ( से सं २१२६, २१३ ) [ दोनों अपूर्ण ] थीं हैं।

२०१६. सम्भवतः कौमुदीकथाभाष्य—विनोदीबाहू। पत्र सं १६। या ११×२ सं०। पत्र-  
हिन्दी पत्र। विषय-कथा। ८ काल सं १७४६। से काल सं १६। अलग सुटी २। पूर्ण। से सं ७७। क  
मन्थार।

२०२. सम्भवतः कौमुदीकथाभाष्य—अज्ञात। पत्र सं १२१। या ११×२ सं०। पत्र-  
हिन्दी पत्र। विषय-कथा। ८ काल सं १७७२ पात्र सुटी ११। से काल सं १। पूर्ण। से सं ७२३। क  
मन्थार।

२०२१ सम्भवतः कौमुदीकथाभाष्य—शोभराज गोपीका। पत्र सं ४७। या १२×७ सं०। पत्र-  
हिन्दी पत्र। विषय-कथा। ८ काल सं १७२४ फल सुटी ११। से काल सं १२२२ पात्र सुटी ७। पूर्ण।  
से सं ११२। क मन्थार।

विशेष—शोभराज के भी कुलकर्णरानी गोपीका के वाचनार्थ कथाई बन्धुग में प्रतिनिधि की थी। सं  
१ ६ से पोली की विद्यालय विचारों के कुलकर्णी के विद्यालय की गोपीका से इसके महत्त्वा कथाई सं २०  
(१) दिया।

२०२२. प्रति सं २। पत्र सं ४६। से काल सं १७६६ पात्र सुटी १। से सं २११। क  
मन्थार।

२०२३ प्रति सं ३। पत्र सं ६४। से काल सं १७४। से सं ७६। क मन्थार।

२०२४ प्रति सं० ४। पत्र सं ६७। से काल सं १६४। से सं ७०३। क मन्थार।

२०२५. प्रति सं ५। पत्र सं २२। से काल सं ११२ सं० सुटी ११। से सं १। क  
मन्थार।

इसके प्रतिरिक्त क मन्थार में एक प्रति ( से सं ७४ ) क मन्थार में एक प्रति ( से सं १२४१ )  
थी है।

२७२६ सम्यक्त्वकौमुदीभाषा । पत्र स० १७४ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७ सयोगपत्रमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

कथा । २० काल × । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वे० स० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—द्व भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ८०१ ) और है ।

२७२८ शालिभद्रघनानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र स० ४६ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । २० काल स० १६७८ भासोज बुदी ६ । ले० काल स० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८४२ । द भण्डार ।

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९ सिद्धचक्रकथा । पत्र स० २ से ११ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४३ । द भण्डार ।

२७३० सिंहासनवत्तीसी । पत्र स० ११ से ६१ । आ० ७×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५६७ । ट भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१ सिंहासनद्वान्त्रिशिका—क्षेमकरमुनि । पत्र स० २७ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । स भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेण्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्ध ।

पुरा महाराष्ट्रपरिष्टभाषा मय महाश्चर्यकरनराणा ॥

क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यवधेनमुत्तिकृतसंस्कृतवधुरेण ॥

विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनायचक्रे चिरादमरपडितहर्षहेतु ॥

२७३२ सिंहासनद्वान्त्रिशिका । पत्र स० ६३ । आ० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल स० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३ सुकुमालमुनिकथा । पत्र स० २७ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

कथा । २० काल × । ले० काल स० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३४ सुगन्धहरामीकथा—। पत्र सं १। पा ११२×१५ द. व। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा।

१ कल ×। १ कल ×। पूर्ण। १ सं २। १ क मन्थार।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अमूर्त है।

२०३५ सुगन्धहरामीकथा—होमराज। पत्र सं २। पा २२×७ द. व। भाषा—हिन्दी। विषय—

कथा। १ कल ×। १ कल सं ११५२ पत्र सं मुद्रा २। पूर्ण। १ सं १२३। १ क मन्थार।

विशेष—विषय मकर के रामचन्द्र के प्रतिनिधि भी भी।

अर्थ—यह सुगन्धहरामी कथा का सार है—

शौर्य— बर्द्धमान बंदी तुम्हारे, दूर पीछा बंदी चित्तमन।  
सुगन्धहरामीकथा मुनि कथा बर्द्धमान परकामी कथा ॥१॥  
सुदृष्ट राजाहू भाष मेदिनी राज करे अचिन्त।  
नाम कैलना सुगन्धहरामी अंतरोक्षिणी वय समान।  
गुण विहायन बैठे कथा बपवली फल स्वामी तथा ॥२॥

अर्थ— बहू बड़े लीज दिन रात जीवनर्म को करेअच्यत ॥  
सम नामक अंत जीवन करे, बाल पुत्रा ही अचिन्त हरे।  
हैमचल अचिन्त भी बड़ी विभवकुल परकामी कथा।  
को मर लखे अचरपति होय, मन बच कय मुने को लीज ॥३॥  
इति कथा अंतुत्तर

शौर्य— बालक सुगन्धहरामी अंतमार बुध बाल।  
वीथिय बुधक अंतमारो विद्वं विद्या परि प्यल ॥  
अंतु विद्वान बुध करे, इक लव धाम बुधल।  
छाने उतर बाध लखि लीज अंतु बुधल ॥  
केव अंतार के विने विज मकर बुध अंत।  
छाही में हन अंतु है, राजबाल है बाय ॥

२०३६ सुगन्धहरामीकथा—शौर्य—मुनि कथा। पत्र सं २७। पा १२×२ द. व। भाषा—

हिन्दी। विषय—कथा। १ पत्र सं ११२७। १ कल सं १२७। १ सं १२४१। १ क मन्थार।

विशेष—मकर में लिखा कथा।

२०३७ सुगन्धहरामीकथा (कथा) —। पत्र सं २। पा १२×२ द. व। भाषा—हिन्दी।

विषय—कथा। १ कल ×। १ कल ×। पूर्ण। १ सं २१। १ क मन्थार।

२७३८ सोमशर्माविराषेणकथा ' ' । पत्र सं० ७ । मा० १०×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ मण्डार ।

२७३९ सौभाग्यपचमीकथा—सुन्दरविजयगण । पत्र सं० ९ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

२७४०. हरिवंशवर्णन । पत्र सं० २० । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ मण्डार ।

२७४१ होलिकाकथा ' ' । पत्र सं० २ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । अ मण्डार ।

२७४२ होलिकाचौपई—दू गरकवि । पत्र सं० ४ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । २० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी २ । ले० काल सं० १७१८ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । अ मण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक श्लोक से फटा हुआ है । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार ।

नयर सिकदरावाद ' गुणकरि भागाध, वाचक महरण श्री खेमा साध ॥८५॥

तासु सीस दू गर मति रली, भण्यु चरित्र गुण साभली ।

जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि बहली हुई सपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई । मुनि हरचंद लिखित । स्वत् १७१८ वर्षे..... ' ' भागारामध्ये लिपिकृत ॥ रचना मे कुल ८५ पद्य हैं । चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं ।

२७४३ होलीकीकथा—छीतर ठोलिया । पत्र सं० २ । मा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५८ । अ मण्डार ।

२७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७५० । वे० सं० ८५६ । अ मण्डार ।

विशेष—लेखक भोजमावाद [ जयपुर ] का निवासी था इसी गाव में उसने प्रथम रचना की थी ।

२७४५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६६ । अ मण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रथम लिखवाकर चौघरियो के मन्दिर में चढाया ।

२७४६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२ । वे० सं० १६४२ । अ मण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।



२०४० होशीकथा—बिन्मुन्वरसूरि। पत्र सं १४। या १ २०४२ इ. व। मत्पा-बंस्तुत। विषय-  
 कथा ×। र कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ७४। अ मन्वार।

विलेप—इसी मन्वार में इसके प्रतिष्ठित ३ प्रतिष्ठा के सं ७४ में ही थीर है।

२०४२ होशीकथा—। पत्र सं ३। या १ २०४२ इ. व। मत्पा-बंस्तुत। विषय-कथा। र  
 कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ४४२। अ मन्वार।

२०४३. प्रति सं ३। पत्र सं २। के कल सं १ ४ मत्पा मुनी ३। के सं १२२। अ  
 मन्वार।

विलेप—इसके प्रतिष्ठित ४ मन्वार में २ प्रतिष्ठा (के सं ३१ ३११) थीर है।



## व्याकरण-साहित्य

२७५० अनिटकारिका -। पत्र स० १। भा० १०३×५ $\frac{१}{२}$  इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २०३५। अ मण्डार।

२७५१ प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वै० स० २१४६। ट मण्डार।

२७५२ अनिटकारिकावचुरि \*। पत्र स० ३। भा० ११३×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-

व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २५०। अ मण्डार।

२७५३ अव्ययप्रकरण। पत्र स० ६। भा० ११ $\frac{१}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २०१८। अ मण्डार।

२७५४ अव्ययार्थे। पत्र स० ८। भा० ८×५ $\frac{३}{४}$  इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। २०

काल ×। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वै० स० १२२। अ मण्डार।

२७५५ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल ×। मपूर्णा। वै० स० २०२१। ट मण्डार।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७५६ उणादिसूत्रमग्रह—सग्रहकर्ता—उज्ज्वलदत्त। पत्र स० ३८। भा० १०×५ इ च। भाषा-

संस्कृत। विषय-व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १०२७। अ मण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२७५७ उपाधिव्याकरण। पत्र स० ७। भा० १०×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १८७२। अ मण्डार।

२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचुरि—चारित्रसिंह। पत्र स० १३। भा० १०३×५ $\frac{३}{४}$  इ च। भाषा-

संस्कृत। विषय-व्याकरण। २० काल ×। ले० काल स० १६६६ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वै० स० २४७। अ मण्डार।

विशेष—भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेद्र स्वशुद्ध च भक्त्या तत्सत्प्रसादात्समुत्पिद्धिगन्त्या।

सत्संप्रदायादवचुरिमेता लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

२०४७ होखीकथा—बिन्ध्युत्तरसुरि। पत्र सं १४। भा १ २०४२ इव। माता-संस्कृत। विषय-  
कथा ×। १ काल ×। १ काल ×। पूर्ण। के सं ७४। अ मन्थार।

विषय—इसी मन्थार में इसके पठिरिक्त ३ प्रतिभा के सं ७४ में ही पाए हैं।

२०४८ होखीपर्यंकथा—। पत्र सं ३। भा १ २०४२ इव। माता-संस्कृत। विषय-कथा। १  
काल ×। १ काल ×। पूर्ण। के सं ७४। अ मन्थार।

२०४९ प्रति सं २। पत्र सं २। १ काल सं १ ४ मास मुठे ३। के सं २०९। अ  
मन्थार।

विषय—इसके पठिरिक्त ४ मन्थार में २ प्रतिभा (के सं ३१ ३११) पाए हैं।



प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरग्राणमलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलान्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पश्चिप्य ब्रह्मतीक्ष्ण निमित्त । खडेलवालान्वये पाटण्णोगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र स० ३५ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । अ मण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ मण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ८ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज मण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ५ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । अ मण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६६ । अ मण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९ गणपाठ—चादिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । ट मण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल स० १८३५ फागुन बुधी ६ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ज मण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२६ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३१ ।

विशेष—ग्रथ का नाम पञ्चाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पञ्चवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के सिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० भासोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण ष हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

शब्द प्रयोगानुबन्धे वा लिख्यतेऽपि विभक्तौ ।  
 केतु मी सुकृते श्रेष्ठः धात्विकीऽपि नवा नक्त् ॥२॥  
 कर्त्तव्यमुपदिशतः क्तु वाप्यर्त् ।  
 नवापि इतिह दृष्ट्वापि करीमरीयत् ॥  
 स्वकीयतामेव न पुत्रोपविशन्मार्त् ।  
 प्रीत्यात्वं मन्त्रान् कृत्वा विभक्तं प्रयात् ॥

कश्चित् वाच—

वाङ्मयविश्वामित्रोऽपि संन्यसि कथमननपुत्रवरे क्वचिद् ।  
 श्रीकृष्णोऽप्युत्सुक्त्वात्पुत्रविश्वामित्रवाप्यर्त् ॥१॥  
 श्रीकृष्णोऽप्युत्सुक्त्वात्पुत्रविश्वामित्रवाप्यर्त् ।  
 क्तुं करे विजम्बितु श्रीकृष्णोऽप्युत्सुक्त्वात्पुत्रवाप्यर्त् ॥२॥

मीति

वाचनवदित्युत्पत्तेः शिष्यस्तदुत्पत्तयत्तवत्तवत् ।  
 वाचनवदित्युत्पत्तेः शिष्यस्तदुत्पत्तयत्तवत्तवत् ॥३॥  
 कश्चित् पठित्वात्कृतं इत्येतदेव लिखितम् ।  
 तत्तन्मन्त्रं शब्दार्थं धीर्मान् स्वपरोपवात् ॥४॥  
 इति नानाविधप्रमाणैश्चि संभूता विभक्तौ ।

आचार्य श्रीरामकृष्णलालशिरान्नर बंदिठ केवच देवेवं लिपि हवा पञ्चमशब्दार्थं । कुर्मं कतु । संवत् १९१६  
 वच नार्त्तिक सुदी २ दिवो ।

२७४६. कृतप्रवृत्तीका—। वच नं ३ । वा १ २ × ४२ ६ व । वाचा—वैद्वत् । विभक्त—आचार्य ।

२. वल × । मे वल × । पुनर्त् । वे तं १६ १ । इ कथार ।

विशेष—इति संकृत टीका लक्षित है ।

२७५ कृतप्रवृत्तमात्राटीका—दीर्गादि । वच तं २६४ । वा १ २ × ४२ ६ व । वाचा—

वत्तु । विभक्त—आचार्य । २ वल × । मे वल नं १६३० । पुनर्त् । वे तं १११ । क कथार ।

विशेष—टीका वा वाच नवाय व्यापण्य श्री है ।

२७६१ इति तं २ । वच नं १४ । मे वल × । पुनर्त् । वे तं १११ । क कथार ।

२७६२ इति तं ३ । वच नं ७७ । मे वल × । पुनर्त् । वे तं १७० । क कथार ।

२७६३ कृतप्रवृत्तमात्राटीका—। वच नं १४ मे २ । वा १ × ४२ ६ व । वाचा—वैद्वत् ।

विभक्त—आचार्य । २ वल × । मे वल नं १२२४ नार्त्तिक सुदी २ । पुनर्त् । वे तं ११४४ । इ कथार ।

## व्याकरण-साहित्य ]

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरभ्राणभलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीर्थम निमित्त । खडेलवालान्वये पाटलीगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीवर्म्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपापाम दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र स० ३५ । भा० १०×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । भा० १०३×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६ कारकविशेषचन । पत्र स० ८ । भा० ११×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ५ । भा० ११×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । भा० ६३×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९ गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । भा० १०३×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । ट भण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । भा० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८३५ फायुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२६ । भा० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७१० फायुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पञ्चाव्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पञ्चवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० मासोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को सह श्री लूणा वधेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२ प्रति स २। पत्र सं ११। के काल सं १२९३ अक्षुण्ड गुरी १। के सं २१२। क  
अक्षर।

२७७३. प्रति स ३। पत्र सं १४ ठे ११४। के काल सं १२९४ महा गुरी २। अक्षर। के सं  
२१३। क अक्षर।

२७७४ प्रति सं ४। पत्र सं १। के काल सं १९९ अक्षुण्ड गुरी ३। के सं २१। क  
अक्षर।

विशेष—अक्षुण्ड में संक्षिप्त अक्षरों के विवेक हैं। पञ्चमाला बीमा के प्रतिनिधि की थी।

२७७५. प्रति सं ५। पत्र सं १। के काल सं ११५। के सं ३२५। क अक्षर।

२७७६ प्रति सं ६। पत्र सं १२२। के काल सं १९ अक्षर गुरी १४। के सं १। क  
अक्षर।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त क अक्षर के एक प्रति ( के सं १२१ ) का अक्षर म २ प्रतिपा ( के सं  
३२३ अक्षर ) भी है। ( के सं ३२३ ) अक्षर काल में जोनसेनपुरि कृत अक्षरालय अक्षरालय नाम की टिका भी है।

२७७७ जैनसुत्रावृत्ति—अक्षरालय। पत्र सं १४ ठे २१२। भा १२२×६ इञ्च। भाषा—  
अक्षुण्ड। विषय—व्याकरण। र काल ×। के काल ×। अक्षर। के सं १४९। क अक्षर।

२७७८ प्रति सं २। पत्र सं १३। के काल सं १२४६ अक्षर गुरी १। के सं २११। क  
अक्षर।

विशेष—पञ्चमाला बीमा के इसकी प्रतिनिधि की थी।

२७७९. अक्षरालय। पत्र सं १९। भा १ × ३ इञ्च। भाषा—अक्षुण्ड। विषय—व्याकरण।  
र काल ×। के काल ×। अक्षर। के सं १७०। क अक्षर।

२७८० बाणुपाठ—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं १३। भा १ × ४ इञ्च। भाषा—अक्षुण्ड। विषय—  
व्याकरण। र काल ×। के काल सं १७२७ अक्षर गुरी २। के सं २२९। क अक्षर।

२७८१ बाणुपाठ—। पत्र सं १३। भा १ × ३ इञ्च। भाषा—अक्षुण्ड। विषय—व्याकरण। र  
काल ×। के काल ×। अक्षर। के सं २९। क अक्षर।

विशेष—बाणुपाठ के पाठ हैं।

२७८२. प्रति स २। पत्र सं १७। के काल सं १२९४ अक्षर गुरी १२। के सं २९। क  
अक्षर।

विशेष—अक्षरालय के प्रतिनिधि करवाली थी।

इसके प्रतिरिक्त क अक्षर में एक प्रति ( के सं १९३ ) तथा क अक्षर में एक प्रति ( के सं  
२१ ) भी है।

व्याकरण-साहित्य ]

२७२३ धातुरूपावलि " । पृ० स० २२३ । आ० १२×५३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६ । ज भण्डार ।

विशेष—शब्द एक धातुओं के रूप हैं ।

२७२४ धातुप्रत्यय " । पृ० स० ३ । आ० १०×४३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १२०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—श्रीमदान्द्रानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७२५ पंचसधि । पृ० स० २ मे ७ । आ० १०×४ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल स० १७३२ । मपूर्णा । वे० स० १२६२ । अ भण्डार ।

२६६, पंचिकरणवार्तिक—सुरेश्वराचार्य । पृ० स० २ मे ४ । आ० १२×४ इक्ष । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १७४४ । ट भण्डार ।

२७२७ परिभाषासूत्र । पृ० स० ५ । आ० १०३×४३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल स० १५३० । पूर्णा । वे० स० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुण्यका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्णा ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५३० वर्षे श्रीहरतरगच्छेभोजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायनिष्यमक्तिलाभगणित्वा  
लिखिता वाचिता च ।

२७२८, परिभाषेन्द्रोत्तर—नागोजीभट्ट । पृ० स० ६७ । आ० १५×३३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा वे० स० ५८ । ज भण्डार ।

२७२९ प्रति स० २ । पृ० स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १०० । ज भण्डार ।

२७६० प्रति स० ३ । पृ० स० ११२ । ले० काल × । वे० स० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका की नाम भैरवी टीका है ।

२७६१ प्रक्रियाकौमुदी । पृ० स० १४३ । आ० १२×५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पृथ नहीं हैं ।

२७६२ पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पृ० स० ३६ । आ० ६३×३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पृथ के एक और ही लिखा गया है ।



२७६. प्राकृतरूपमात्रा—भीरायमह सुत बरहराज । पत्र सं ४० । पा २२×४ इक्ष । मात्रा-  
 प्रकृत । विषय-व्याकरण । १ काल × । ले काल सं १०२४ मात्रा कुटी १ । पूर्ण । ले सं ३२२ । क  
 नम्बर ।

विशेष—भाषार्थ नवकमीति न इत्यपुत्र (बालपुत्र) में प्रतिबिम्बि की थी ।

२७६.४ प्राकृतरूपमात्रा— । पत्र सं ३१ २ ४६ । मात्रा-प्रकृत । विषय-व्याकरण । १ काल × ।  
 ले काल × । पूर्ण । ले सं २४६ । क नम्बर ।

विशेष—बंलुक में नवनिवासी राज विषे है ।

२७६.५. प्राकृतव्याकरण—बडकवि । पत्र सं १ । पा ११२×२२ इक्ष । मात्रा-वैकृत । विषय-  
 व्याकरण । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । ले सं १६४ । क नम्बर ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है । वैकृत प्राकृत, मात्रा क वैकृतिकी मात्रा की तथा लीलेती  
 प्रादि मात्राओं पर प्रकाश डाला गया है ।

२७६.६ प्रति स २ । पत्र सं ७ । ले काल सं १७६६ । ले सं ३२३ । क नम्बर ।

२७६.७. प्रति स ३ । पत्र सं ११ । ले काल सं १२३ । ले सं ३२४ । क नम्बर ।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति ( ले सं ३२२ ) भीर है ।

२७६.८ प्रति स ४ । पत्र सं ४ । ले काल सं १७४४ संशिर कुटी १२ । ले सं १ । क  
 नम्बर ।

विशेष—बनपुर के लीचो के मात्रा वैगिराज वैकृतव के प्रतिबिम्बि हुई थी ।

२७६.९ प्राकृतम्युत्पत्तिदीपिका—श्रीमाम्माश्रि । पत्र सं २२४ । पा ११२×१३ इक्ष मात्रा-  
 वैकृत । विषय-व्याकरण । १ काल × । ले काल सं १६६ पातोव कुटी २ । पूर्ण । ले सं ३२७ । क  
 नम्बर ।

२८ माण्यप्रदीप—कैटक । पत्र सं ११ । पा १२३×९ इक्ष । मात्रा-वैकृत । विषय-  
 व्याकरण । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । ले सं १३१ । क नम्बर ।

२८ १ कव्यमात्रा— । पत्र सं ४ ६ २ । पा ३×४ इक्ष । मात्रा-वैकृत । विषय-व्याकरण ।  
 १ काल × । ले काल × । पूर्ण । ले सं ३६ । क नम्बर ।

विशेष—बन्धुओं के रूप विषे है ।

इसके प्रतिबिम्ब इसी नम्बर में २ प्रतिमा ( ले सं ३७ १ ) भीर है ।

२८०.२. कव्यमात्रा— । पत्र सं १२७ । पा १ × ४ इक्ष । मात्रा-वैकृत । विषय-  
 व्याकरण । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । ले सं १७०३ । क नम्बर ।

२८०३ लघुरूपसर्गवृत्ति । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४८ । ट भण्डार ।

२८०४ लघुशब्देन्दुशेखर । पत्र स० २१५ । मा० ११३×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं ।

२८०५ लघुमारभ्यत—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र स० २३ । मा० ११×५ इच्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० स० ३११, ३१२, ३१३, ३१४ ) भी हैं ।

२८०६ प्रति स० २ । पत्र स० २० । मा० ११३×५३ इच्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३११ । च भण्डार ।

२८०७ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८ । वे० स० ३१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतिया ( वे० स० ३१३, ३१४ ) भी हैं ।

२८०८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज । पत्र स० १०४ । मा० १०×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । ख भण्डार ।

२८०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० १७३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्राठ मध्याय तक है ।

च भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ३१५, ३१६ ) भी हैं ।

२८१० लघुसिद्धान्तकौस्तुभ । पत्र स० ५१ । मा० १२×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है ।

२८११ वैय्याकरणभूषण—कौहनभट्ट । पत्र स० ३३ । मा० १०×४ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७७४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६८३ । ड भण्डार ।

२८१२ प्रति स० २ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १६०५ कार्तिक सुदी २ । वे० स० २८१ । ड भण्डार ।

२८१३ वैय्याकरणभूषण । पत्र स० ७ । मा० १०३×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८६९ पीप सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६८२ । ड भण्डार ।

२८१४ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल सं १७९९ वीं वृत्ति ५। के सं ११२। क मन्थार।

विशेष—वाङ्मयवचन के पठानार्थ अन्य की प्रतिनिधि हुई थी।

२८१५ व्याकरण—। पत्र सं ४२। पा १ ३×२ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।  
२ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं ११। क मन्थार।

२८१६ व्याकरणदीक्षा—। पत्र सं ७। पा १ ६×४ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।  
२ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं ११। क मन्थार।

२८१७ व्याकरणमाषादीक्षा—। पत्र सं १। पा १ × २ दश। वाचा—संस्कृत हिन्दी।  
विषय—व्याकरण। २ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं १६। क मन्थार।

२८१८ शब्दरोमा—कवि मीरकठ। पत्र सं ४१। पा १ ३×२ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—  
व्याकरण। २ काल सं १६९१। ले काल सं १७९। पूर्ण। के सं ७। क मन्थार।

विशेष—महत्त्वा मार्गवचन के प्रतिनिधि की थी।

२८१९ शब्दरूपाकली—। पत्र सं ३। पा १×२ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।  
२ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं १३९। क मन्थार।

२८२० शब्दरूपिणी—आचार्य वरवृत्ति। पत्र सं २७। पा १ १×२ दश। वाचा—संस्कृत।  
विषय—व्याकरण। २ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं १२। क मन्थार।

२८२१ शब्दानुशासन—श्रेमन्मन्त्राचार्य। पत्र सं ११। पा १ × २ दश। वाचा—संस्कृत।  
विषय—व्याकरण। २ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं ४८। क मन्थार।

२८२२ प्रति स २। पत्र सं १। पा १ ३×४ दश। ले काल × १। पूर्ण। के सं ११९। क मन्थार।

विशेष—क मन्थार में १ प्रतिष्ठा (के सं १ १ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०) तथा क मन्थार में एक प्रति (के सं ११९) थी।

२८२३ शब्दानुशासनद्वितीय—श्रेमन्मन्त्राचार्य। पत्र सं ३८। पा १ ३×४ दश। वाचा—संस्कृत।  
विषय—व्याकरण। २ काल × १। ले काल × १। पूर्ण। के सं ५ १२९१। क मन्थार।

विशेष—क मन्थार का नाम शब्दरूप व्याकरण ही है।

२८२४ प्रति सं २। पत्र सं १। ले काल सं १ १९ वीं वृत्ति २। के सं १२२। क मन्थार।

विशेष—वाच्य निवाची पिठवचन बहुधा वाच्य के प्रतिनिधि की थी।

२८२५ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६६ चैत्र सुदी १ । वे० स० २६३ । च  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३३६ ) प्रौर है ।

२८२६ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १५२७ चैत्र सुदी ८ । वे० स० १६५० । ट  
भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भीमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजधीकीर्तिसिंहदेवराज-  
प्रवर्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्मे ।

२८२७ शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ ने २० । मा० १५×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत ।  
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

२८२८ शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र स० ६ । मा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल स० १७३६ माघ सुदी २ । वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमोदवर ।

क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. सहाप्रक्रिया । पत्र स० ४ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविघ्नता । पत्र स० २४ । मा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१ सस्कृतमञ्जरी । पत्र स० ४ । मा० ११×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्णा । वे० स० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठ । पत्र स० ५ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३ सारस्वतपञ्चसधि । पत्र स० १३ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्णा । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १२१ ने १४५ । मा० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च ।  
भाषा—सम्बृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८४६ । प्रपूर्णा । वे० स० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५ प्रति स० २ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति स ३। पत्र सं १०१। ले काल सं १ ११। के सं १२१। अक्षर।  
 २८३७ प्रति स ४। पत्र सं ११। ले काल सं १ १२। के सं १३१। अक्षर।  
 विशेष—बीजसंज्ञ के सिद्ध हृत्कारण के प्रतिनिधि की थी।

अक्षर ।

२८३८ प्रति स ५। पत्र सं १ के १०४। ले काल सं १०३८। अक्षर। के सं १०३। अक्षर।  
 अक्षर ( अक्षर ) अक्षर के प्रतिनिधि हुई थी।

२८३९ प्रति स ६। पत्र सं ११। ले काल सं १०३९। के सं १०४९। अक्षर।  
 विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि की थी।

२८४० प्रति सं ७। पत्र सं १२। ले काल सं १०४०। के सं १०५०। अक्षर।

२८४१ प्रति सं ८। पत्र सं १३। ले काल सं १०४१। अक्षर। के सं १०६०। अक्षर।

अक्षर ।

२८४२ प्रति सं ९। पत्र सं १४। ले काल सं १०४२। अक्षर। के सं १०७२। अक्षर।  
 विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि की थी।

२८४३ प्रति स १०। पत्र सं १५। ले काल सं १०४३। के सं १०८३। अक्षर।  
 विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि हुई थी।

२८४४ प्रति स ११। पत्र सं १६। ले काल सं १०४४। के सं १०९४। अक्षर।

२८४५ प्रति स १२। पत्र सं १७। ले काल सं १०४५। अक्षर। के सं ११०५। अक्षर।

अक्षर ।

विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि अक्षरकारण के प्रतिनिधि की थी। केवल अक्षरकारण के प्रतिनिधि है।

२८४६ प्रति सं १३। पत्र सं १८। ले काल सं १०४६। अक्षर। के सं १११६। अक्षर।

अक्षर ।

२८४७ प्रति स १४। पत्र सं १९। ले काल सं १०४७। के सं ११२७। अक्षर।  
 विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि हुई थी।

२८४८ प्रति सं १५। पत्र सं २०। ले काल सं १०४८। के सं ११३८। अक्षर।  
 विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि की थी। के प्रतिनिधि का प्रतिनिधि है।

२८४९ प्रति स १६। पत्र सं २१। ले काल सं १०४९। के सं ११४९। अक्षर।

विशेष—अक्षरकारण के प्रतिनिधि अक्षरकारण के प्रतिनिधि की थी। के प्रतिनिधि का प्रतिनिधि है।

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२ ) ख भण्डार में ७ प्रतिया ( वे स० २१५, २१५ [म], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८ ) घ भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० स० ११६, १२०, १२१ ) ङ भण्डार में १५ प्रतिया ( वे० स० ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३१, से ८३८, ८३९ ) च भण्डार में ५ प्रतिया ( वे० स० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३ ) छ भण्डार में ६ प्रतिया ( वे० स० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७ ) झ भण्डार में ३ प्रतिया ( वे स० १२१, १४०, २२२ ) ञ भण्डार में १ प्रति ( वे० स० २० ) तथा ट भण्डार में ५ प्रतिया ( वे० स० १६८८, १६९०, २१००, २०७२, २१०५ ) शीर हैं ।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतिया भी हैं ।

२८५० सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र स० ६७ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१ सङ्गाप्रक्रिया । पत्र स० ६ । भा० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । ज भण्डार ।

२८५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जितप्रभसूरि । पत्र स० ३ । भा० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल । ले० काल स० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे स० । ज भण्डार ।

विशेष—सवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र स० ८ । भा० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४ प्रति स० २ । पत्र स० २४० । ले० काल × । वे० स० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूवाद्ध है ।

२८५५ प्रति स० ३ । पत्र स० १७६ । ले० काल × । वे० स० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तराद्ध पूर्ण है ।

इसके प्रतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ६५, ६६ ) तथा ट भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० १६३४, १६६६ ) शीर हैं ।

२८५६ सिद्धान्तकौमुदी " । पत्र स० ४३ । भा० १२½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४७ । ङ भण्डार ।

२८२६ प्रति स० ३। पत्र सं १८१। ले काल सं १८१६। के सं १२१। अ नम्बर।

२८२७ प्रति स ४। पत्र सं १९। ले काल सं १२१। के सं १२१। अ नम्बर।

विशेष—बोधचक्र के विषय इच्छावास से प्रतिबन्धित ही थी।

२८२८. प्रति स० ५। पत्र सं ६ के १२४। ले काल सं १८२। अगुर्ल। के सं १८२। अ

नम्बर।

बचई ( कसौ ) नगर में प्रतिबन्धित हुई थी।

२८२९. प्रति स ६। पत्र सं ७। ले काल सं १७२२। के सं १९२२। अ नम्बर।

विशेष—अत्रधामरत्न के प्रतिबन्धित ही थी।

२८३० प्रति सं ७। पत्र सं ८। ले काल सं १७२। के सं १७०। अ नम्बर।

२८३१ प्रति स ८। पत्र सं ९। ले काल सं १७२। के सं १७०। अ

नम्बर।

२८३२ प्रति सं ९। पत्र सं १०। ले काल X। अगुर्ल। के सं १७२। अ नम्बर।

विशेष—अत्रकीर्ति इच्छा संस्कृत टीका लिखित है।

२८३३ प्रति स १०। पत्र सं ११। ले काल सं १८२२। के सं ७२। अ नम्बर।

विशेष—विपलराम के पत्रार्थ प्रतिबन्धित हुई थी।

२८३४ प्रति स ११। पत्र सं १२। ले काल सं १७२। के सं ७२२। अ नम्बर।

२८३५ प्रति स १२। पत्र सं १३। ले काल सं १७२। पत्र मुनी १४। के सं १२। अ

नम्बर।

विशेष—१ अक्षरपत्र के बुधोपन के पत्रार्थ नगर इतिपुर में प्रतिबन्धित ही थी। केवल विद्वत्

संघि लक्ष है।

२८३६ प्रति स १३। पत्र सं १४। ले काल सं १८२४। काल कुरी २। के सं २६६। अ

नम्बर।

२८३७. प्रति स १४। पत्र सं १५। ले काल सं १७२। के सं १२७। अ नम्बर।

विशेष—गुर्वादास वर्मा के पत्रार्थ प्रतिबन्धित हुई थी।

२८३८. प्रति सं १५। पत्र सं १६। ले काल सं १८२७। के सं ७८। अ नम्बर।

विशेष—मलेखाल राजा के पत्रार्थ प्रतिबन्धित ही गई थी। दो प्रतिबन्धों का सम्बन्ध है।

२८३९. प्रति स १६। पत्र सं १७। ले काल सं १८२६। के सं १२२। अ नम्बर।

विशेष—इसके पत्रार्थ अ नम्बर के १७ प्रतिबन्धों ( के सं १७, १२९, २२९, २२९, २२९ )

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । मा० ११३×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र स० १७३ । मा० ११×४३ इच्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । २ काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज

भण्डार ।

विशेष—पं० महात्रय ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारभूतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १६० । मा० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल स० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ से ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—गुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४)

और है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । मा० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

। २० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कुम्भवादास ने प्रतिलिपि की थी ।

सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

। २० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । छ भण्डार ।



विशेष—परिवारिक का अथवा एक अथवा दो एक एक प्रति ( के सं १४४४ व ७ १७२ ) पीर है ।

२८२७ सिद्धान्तकौमुदीटीका - - - १४ सं १२ । का ११३ × ११ सं १ । अथवा ११३ । विशेष—  
व्याख्यान । १ कल × १ के काव × १ पूर्ण । के सं १२ । अथवा १२ ।

विशेष—पत्तों के कुछ संक पायी के संक नये हैं ।

२८२८ सिद्धान्तकौमुदीटीका—रामचंद्राभय । १४ सं १४ । का ११३ × ११ सं १ । अथवा ११३ ।

विशेष—व्याख्यान । १ कल × १ के काव × १ पूर्ण । के सं १२२१ । अथवा १२२१ ।

२८२९ प्रति सं २ । १४ सं २६ । के काव सं १४४७ । के सं १२२२ । अथवा १२२२ ।

विशेष—व्याख्यान के अथवा मुद्रितकौमुदी के परिवारिक भी हैं ।

२८३० प्रति सं ३ । १४ सं ११ । के काव सं १४७१ । के सं १२२३ । अथवा १२२३ ।

विशेष—इसी अथवा के २ प्रति ( के सं १२२४ १२२५ १२२६ १२२७, १२२८ १२२९

१ १२७ ११ १ २१ ) पीर है ।

२८३१ प्रति सं ४ । १४ सं १४ । का ११३ × ११ सं १ । के काव सं १४७४ अथवा मुद्रित १४ ।

के सं ७४२ । अथवा ७४२ ।

२८३२ प्रति सं ५ । १४ सं २७ । के काव सं १६२१ । के सं २२३ । अथवा २२३ ।

विशेष—इसी अथवा के २ प्रति ( के सं २२४ तथा ४ ) पीर है ।

२८३३ प्रति सं ६ । १४ सं १६ । के काव सं १७२२ अथवा मुद्रित २ के सं ६ । अथवा ६ ।

विशेष—इसी अथवा के एक प्रति पीर है ।

२८३४ प्रति सं ७ । १४ सं १६ । के काव सं १८२४ अथवा मुद्रित १ ) के सं २२४ । अथवा २२४ ।

अथवा २२४ ।

विशेष—अथवा मुद्रित एक है । अथवा के नयी अथवा भी हैं । इसी अथवा के एक प्रति ( के सं २२४ )

पीर है ।

इसी परिवारिक का अथवा के २ प्रति ( के सं १२२४ १२२५ १२२६, १२२७, १२२८,

१ १२७ ११ ) का अथवा के २ प्रति ( के सं २२४, ४ ) का अथवा के एक एक प्रति ( के सं २२४ पीर है । अथवा के २ प्रति ( के सं १२७ १२२८, १२२९ ) का अथवा के २

प्रति ( के सं ४ ६, ११ ) का अथवा के एक प्रति ( के सं १२६ ) तथा अथवा के ३ प्रति ( के सं १२६, १२७, १२८ ) पीर है ।

के नयी प्रति का अथवा है ।

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । मा० ११३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगण्ड । पत्र स० १७३ । मा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १६० । मा० १०×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल स० १६५६ । वे० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ से ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ च मोर ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४) मोर है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । मा० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रतिदिन ४ अथवा ४ अक्षरों में एक एक अक्षर ( के सं १४४ य ७ २७२ ) पीर है ।

२८७ मिथ्यामृतधौमुदीश्रीका —। पत्र सं १२। या ११३×११३ अक्षर। अथवा साहचर। विषय—

व्याख्यारह । १ अक्षर × । के अक्षर × । पूर्ण। के सं १२। अक्षर।

विशेष—पत्रों के कुछ अक्षर पत्रों के अक्षर हैं ।

२८८ मिथ्यामृतधौमुदीश्रीका—रामचंद्रात्मज । पत्र सं १४। या ११३×११३ अक्षर। अथवा—साहचर ।

विषय—व्याख्यारह । १ अक्षर × । के अक्षर × । पूर्ण। के सं १२२१। अक्षर।

२८९ प्रति सं ०। पत्र सं ११। के अक्षर सं १४४। के सं १२२१। अक्षर।

विशेष—वृष्णवचन में अक्षरक मुद्राप्रतीति के प्रतिविधि भी हैं ।

२९० प्रति सं ३। पत्र सं ११। के अक्षर सं १४४। के सं १२२१। अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में १ अक्षर ( के सं १२११ १२२४ १२२५ १२२६ १२२७ १२२८

१ १२७ ११ २ २१ ) पीर है ।

२९१ प्रति सं ४। पत्र सं १४। या ११३×११३ अक्षर। के अक्षर सं १४४ अक्षर मुद्रा १४।

के सं ७ १। अक्षर।

२९२ प्रति सं ५। पत्र सं १७। के अक्षर सं ११२। के सं २२१। अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में २ अक्षर ( के सं २२२ तथा य ) पीर है ।

२९३ प्रति सं ६। पत्र सं ११। के अक्षर सं १४२२ अक्षर मुद्रा २ के सं २ । अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में एक अक्षर पीर है ।

२९४ प्रति सं ७। पत्र सं ११। के अक्षर सं १ १४ अक्षर मुद्रा १। के सं २२१। अक्षर।

अक्षर।

विशेष—अथवा प्रति एक है । अक्षर के अक्षर अक्षरों भी हैं । इसी अक्षर में एक अक्षर ( के सं २२१ )

पीर है ।

इसके प्रतिदिन अक्षर में २ अक्षर ( के सं १२२५, १२२४ १२२५, १२२६, १२२७

१ १२७ ११ ) अक्षर में २ अक्षर ( के सं २२२, य ) अथवा अक्षर अक्षर में एक एक अक्षर ( के

सं २ २२१ पीर है । अक्षर अक्षर में ३ अक्षर ( के सं ११७७ १२२६, १२२७ ) अक्षरों । अक्षर अक्षर में २

अक्षर ( के सं ४ २ ४१ ) अक्षर अक्षर में एक अक्षर ( के सं ११२ ) अथवा अक्षर अक्षर में ३ अक्षर ( के

सं २४२, २४३, २४४ ) पीर है ।

के अक्षर अक्षर अक्षरों हैं ।

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । प्रा० ११३×४३ इव । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणित । पत्र स० १७३ । प्रा० ११×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १ काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैस्थालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि । पत्र स० १६० । प्रा० १०×४ इव । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल सं० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ मे ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४)

भी है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । प्रा० १०३×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । प्रा० १०×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । छ भण्डार ।

१८७५. सिद्धान्तविन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पत्र सं २ । भा १ ×९ इव । भाग-  
संख्य । विषय—व्याकरण । र काल × । नै काल सं १७४९ धत्तोय मुनी ११ । पूर्ण । वै सं ५१७ । अ  
मकार ।

विलेख—इति पीकारान्तवृत्त वर्तमानवाचार्थ श्रीविररीवर सरस्वती उमवाचक विषय श्रीमधुसूदन सरस्वती  
विरचित सिद्धान्तविन्दुमन्त्रा ॥ संवत् १७४९ वर्षे प्राथमिकतो इत्युक्तो प्रबोधनां कुवदाहरी उमवमन्त्रिणवरे विषय  
श्री उमानन्त मुनीय उमववाच्य सिद्धान्तविन्दुनेति । कुवमानु ॥

१८७६ सिद्धान्तमंजूषिका—श्रीगोरामह । पत्र सं २३ । भा १९ ×२ इव । भाग-संख्य ।  
विषय—व्याकरण । र काल × । नै काल × । अगुली । वै सं ३३४ । अ मकार ।

१८७७ सिद्धान्तमुक्तवक्त्री—पञ्चानन मन्नाचार्य । पत्र सं ७० । भा १९ × १३ इव । भाग-  
संख्य । विषय—व्याकरण । र काल × । नै काल सं १३३ मन्नाचारी मुनी ३ । वै सं ३ । अ मकार ।

१८७८. सिद्धान्तमुक्तावली --- । पत्र सं ७ । भा १९ × १३ इव । भाग-संख्य । विषय-  
व्याकरण । र काल × । नै काल सं १७०२ संत मुनी ३ । पूर्ण । वै सं २९ । अ मकार ।

१८७९. हेमनीशुद्धवृत्ति----- । पत्र सं २४ । भा १ × २ इव । भाग-संख्य । विषय-  
व्याकरण । र काल × । नै काल × । अगुली । वै सं १४२ । अ मकार ।

१८८० हेमम्याकरकमुक्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं २४ । भा १९ × ९ इव । भाग-संख्य ।  
विषय—व्याकरण । र काल × । नै काल × । पूर्ण । वै सं १४४ । अ मकार ।

१८८१ हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं ३ । भा १ × २ इव । भाग-संख्य ।  
विषय—व्याकरण । र काल × । नै काल × । अगुली । वै सं १३ ।

विलेख—श्रीय वै चक्रिणव पत्र मन्त्री ह । इति प्राचीन ह ।



## कोश

२८८२ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी—महीचरण कवि । पत्र स० ११ । मा० १२×५३ इ च । भापा-

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १४ । ङ भण्डार ।

२८८३ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी । पत्र स० १४ । मा० १०×४ इ च । भापा—संस्कृत । विषय-

कोश । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० १६१५ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय ग्रन्थिकार तक पूर्ण है ।

२८८४ अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र स० २१ । मा० ८३×४३ इ च । भापा—संस्कृत । विषय-

कोश । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० २१८ । ऋ भण्डार ।

२८८५ अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्त्ति । पत्र स० २३ । मा० १०१×४३ इ च । भापा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल स० १६६७ ब्रैशाल बुदी ५ । पूर्णा । वे० स० १५ । ङ भण्डार ।

२८८६ अनेकार्थसमग्रह—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ४ । मा० १०×५ इ च । भापा—संस्कृत । विषय-

कोश । २० काल × । ले० काल स० १६६६ म्पाठ बुदी ४ । पूर्णा । वे० स० ३८ । क भण्डार ।

२८८७ अनेकार्थसमग्रह । पत्र स० ४१ । मा० १०×४३ इ च । भापा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८ अभिधानकोष—गुरुपोत्तमदेव । पत्र स० ३४ । मा० ११३×६ इ च । भापा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८९ अभिधानचिन्तामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ६ । मा० ११×५ इ च । भापा-

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९० प्रति स० २ । पत्र स० २३५ । ले० काल स० १७३० म्पाठ बुदी १० । वे० स० ३६ । क

भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८२१ प्रति सं ३। पत्र सं १९। ले काल सं १५ एकेह मुदी १। ले सं १७। क  
नम्बरा।

विशेष—स्वोक्तवृत्ति है।

१८२२ प्रति सं ४। पत्र सं ७ के १३४। ले काल सं १७५ पाचोय मुदी ११। अपूर्ण। ले  
सं २। क नम्बरा।

१८२३ प्रति सं ५। पत्र सं ११९। ले काल सं ११२६ अष्टात्र मुदी २। ले सं २। क  
नम्बरा।

१८२४ प्रति सं ६। पत्र सं २५। ले काल सं ११३ बीपात्र मुदी १३। ले सं १११। क  
नम्बरा।

विशेष—बं बीमरुय के प्रतिविधि की बी।

१८२५ अमिभामरुकर—बर्मनमूगण्डि। पत्र सं २६। पा १×४३ हन। बाला—बंभुट।  
विषय—बीष। १ काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। ले सं २७। क नम्बरा।

१८२६ अमिभामरुकर—बं शिपजीकात्र। पत्र सं २९। पा १२×२३ हन। बाला—बंभुट।  
विषय—बीष। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। ले सं १। क नम्बरा।

विशेष—बैबकात्र एक है।

१८२७ अमरकोश—अमरसिद्धि। पत्र सं २९। पा १२×६ हन। बाला—बंभुट। विषय—बीष।  
१ काल ×। ले काल सं १ एकेह मुदी १४। पूर्ण। ले सं २७२। क नम्बरा।

विशेष—इका नाम विषमनुब्रजन की है।

१८२८ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल सं ११२। ले सं ११११। क नम्बरा।

१८२९ प्रति सं ३। पत्र सं ३४। ले काल सं १५११। ले सं ११२२। क नम्बरा।

१९ प्रति सं ४। पत्र सं १५ से ११। ले काल सं १२ पाचोय मुदी १। अपूर्ण। ले  
सं १११। क नम्बरा।

२० प्रति सं ५। पत्र सं १६। ले काल सं ११४। ले सं १४। क नम्बरा।

२१ प्रति सं ६। पत्र सं १७ से ११। ले काल सं ११४। ले सं १५। अपूर्ण। क  
नम्बरा।

२६०३ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ भासोज सुदी ६ । वै० स० २४ । ड

भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति स० ८ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३ । वै० स० २७ । ङ

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में दीवारा अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम माह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५ प्रति स० ९ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८१८ कार्तिक बुदी ८ । वै० स० ३३६ । छ

भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । स० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) ६० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने ध्वेताम्बर अत्ती से ली ।

२६०६ प्रति स० १० । पत्र स० ६१ से १३१ । ले० काल स० १८३० आषाढ बुदी ११ । मपूर्णा ।

वै० स० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति स० ११ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वै० स० ३४४ । ज

भण्डार ।

विशेष—कड़ी २ टीका भी ली हुई है ।

२६०८ प्रति स० १२ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । वै० स० ७ । घ

भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त छ भण्डार में २१ प्रतिया ( वै० स० ६३८ ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५ ) क भण्डार में ५ प्रतियां ( वै० स० २१, २२, २३, २५, २६ ) ख भण्डार में ५ प्रतिया ( वै० स ६, १०, ११, २६६ २६६ ) ङ भण्डार में ११ प्रतिया ( वै० स० १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६ ) च भण्डार में ७ प्रतिया ( वै० स० ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४ ) छ भण्डार में ४ प्रतिया ( वै० स० १३६ १३६, १६१, २४ [क] ) ज भण्डार में ४ प्रतिया ( वै० स० ५६, ३५०, ३५२, ६२ ) क भण्डार १ प्रति ( वै० स० ६५ ), तथा ट भण्डार में ४ प्रतिया ( वै० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६ ) भी हैं ।



२८२१ प्रति स ३। पत्र सं ११। ले काल स १८१ स्नेह गुरी १। के सं ३०। क  
अन्वय।

विशेष—स्वोन्नति है।

२८२२ प्रति सं ४। पत्र सं ७। ले ११४। ले काल सं १७८ पातोत्र गुरी ११। अगुर्त्त। के  
सं १। क अन्वय।

२८२३ प्रति सं ५। पत्र सं ११२। ले काल सं ११२१ पातोत्र गुरी २। के स २। क  
अन्वय।

२८२४ प्रति सं ६। पत्र सं २। ले काल सं ११३ वीरकाल गुरी १३। के सं १११। क  
अन्वय।

विशेष—व श्रीवराज के प्रतिनिधि जी जी।

२८२५ अमिधान्तरकाल—अमिधान्तरकाल। पत्र सं २६। पा १२४२ दण। पाता-संस्कृत।  
विषय-बोध। १ काल ×। ले काल ×। अगुर्त्त। के सं २७। क अन्वय।

२८२६ अमिधान्तरकाल—अमिधान्तरकाल। पत्र सं २३। पा १२४२ दण। पाता-संस्कृत।  
विषय-बोध। १ काल ×। ले काल ×। अगुर्त्त। के सं १। क अन्वय।

विशेष—द्विपत्रक एक है।

२८२७ अमरकोश—अमरकोश। पत्र सं २१। पा १२४२ दण। पाता-संस्कृत। विषय-बोध।  
१ काल ×। ले काल सं १ स्नेह गुरी १४। अगुर्त्त। के सं २७२। क अन्वय।

विशेष—इसका नाम विद्वानुवाचन ही है।

२८२८ प्रति सं २। पत्र सं ३५। ले काल सं ११२। के सं ११११। क अन्वय।

२८२९ प्रति सं ३। पत्र सं ३४। ले काल सं १११। के सं ११२। क अन्वय।

२९ प्रति सं ४। पत्र सं ३५ के ११। ले काल सं १२ पातोत्र गुरी १। अगुर्त्त। के  
सं १११। क अन्वय।

२९१ प्रति सं ५। पत्र सं ३६। ले काल सं ११४। के सं १४। क अन्वय।

२९२ प्रति सं ६। पत्र सं ३६ के ११। ले काल सं ११४। के सं १२। अगुर्त्त। के  
अन्वय।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र स० ४३ । घ्रा० ११×५ इ च । भाषा-

सस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८० । ङ मण्डार ।

२६२० प्रति स० २ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० १४४ । च मण्डार ।

२८२१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६०३ घ्रासीज बुदी ६ । वे० स० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में प० सदामुखजी के दिव्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६२२. नाममाला—धनजय । पत्र स० १६ । घ्रा० ११×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय—बोध ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४७ । अ मण्डार ।

२६२३ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० स० २८२ । अ

मण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में कुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ मण्डार में ३ प्रतिया ( वे० स० १४, १०७३, १०८६ ) भी हैं ।

२६२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १३०६ कार्तिक बुदी ८ । वे० स० ६३ । ख

मण्डार ।

विशेष—ङ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३२२ ) भी है ।

२६२५ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० स० २४६ । छ

मण्डार ।

विशेष—प० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० २६६ ) तथा ज मण्डार में ( वे० स० २७६ ) की एक प्रति भी है ।

२६२६ प्रति स० ५ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० १८५ । झ मण्डार ।

२६२७ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० स० ५२२ । ज

मण्डार ।

२६२८ प्रति स० ७ । पत्र स० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०८ । ट मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ मण्डार में ३ प्रतिया ( वे० स० १०७३, १४, १०८६ ) ङ, छ तथा ज मण्डार में १-१ प्रति ( वे० स० ३२२, २६६, २७६ ) भी हैं ।

२३१. अमरकोपरीका—मातुकीसीकित। पत्र १ १५ वा १ × ५ इंच। माता—बंगलुट।  
विषय—नोच। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के १ ५ अक्षर।

बिंदव—बनेल संकोद्रुष भी कहीपर भी नीतिविद्वेष की ब्रज्या से टीका मिली है।

२३१ प्रति सं २। पत्र १ २५। से कल ×। अपूर्ण। के ५ ७। अक्षर।

२३११ प्रति सं ३। पत्र १ ३५। से कल ×। के १ ६। अक्षर।

बिंदव—अनन्यथा एक है।

२३१२. एकामरकोरा—कपकप। पत्र १ ४। वा ११ × २ इंच। माता—बंगलुट। विषय—नोच।  
र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के १ २२। अक्षर।

२३१३ प्रति सं २। पत्र १ २। से कल १ ५ कालिकापुरी २। के १ ३१। अक्षर।

२३१४ प्रति सं ३। पत्र १ २। से कल १ १२ ५ बंगलुट १। के १ ३३। अक्षर।

बिंदव—अ कलकुचनी के बनेल विषय के प्रतिबोधार्थ प्रतिभिति की थी।

२३१५. एकामरकोरा—बरकषि। पत्र १ २। वा ११ × २ इंच। माता—बंगलुट। विषय—  
नोच। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के १ २। अक्षर।

२३१६ एकामरकोरा—। पत्र १ १। वा ११ × २ इंच। माता—बंगलुट। विषय—नोच। र  
कल ×। से कल ×। अपूर्ण। के १ १। अक्षर।

२३१७ एकामरकोरा—। पत्र १ १। वा १२ × २ इंच। माता—बंगलुट। विषय—नोच।  
र कल ×। से कल १ १२ ५ बंगलुट १। पूर्ण। के १ १२। अक्षर।

बिंदव—उपार्थ ककुर में महात्मा उमरिह के बालकाल में अ कलकुचनी के विषय कोलाल के प्रतिभिति की थी।

२३१८. अमरकोरा—अमरसिंह। पत्र १ ३५। वा ११ × २ इंच।  
माता—बंगलुट। विषय—नोच। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। के १ २५। अक्षर।

बिंदव—अमरकोरा के बान्धों में धाले बान्धों की लीला बंगलुट की हुई है। अनेक लीला वा प्राचीनक  
५.५ की किताब है।

इसके अतिरिक्त इसी अक्षर में ३ प्रतिभिति (के १ २५, २५९ २५२) की है।

२६४०. लिङ्गानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३ विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका । पत्र सं० २६ । भा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५ शतक । पत्र सं० ६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । छ भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सफल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । भा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्दरत्न । पत्र सं० १६६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीयानाममाला । पत्र सं० २४ से ४७ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९ शिलोच्चकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । भा० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ( तृतीयखंड तक ) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेपाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिङ्गानुशासनम् ।

पद्यानिबोधयत्यक्कं शास्त्राणि कुर्वते कवि

तत्सौरभनमस्वत सतस्तान्वन्तितद्गुणा ॥

२६२६ साममात्रा— । पत्र नं १९ । पा १ × २३ इव । मात्रा—संगुण । विषय—बोध । ८  
 काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं ११२ । छ मन्थार ।

२६३ साममात्रा—बनारसीवास । पत्र नं १४ । पा ५ × २ इव । मात्रा—हिन्दी । विषय—भाव ।  
 ८ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १४ । छ मन्थार ।

२६३१ शीघ्रक(कारा)— । पत्र नं २३ । पा ६ × ४ इव । मात्रा—हिन्दी । विषय—बोध ।  
 ८ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १४ । छ मन्थार ।

विशेष—रिक्तमहंनमति के प्रतिविधि की थी ।

२६३२ साममात्रा—मदवास । पत्र नं २२ । पा ५ × ६ इव । मात्रा—हिन्दी विषय—बोध । ८  
 काल × । ले काल नं १ २३ अष्टौ पुटी ११ । पूर्ण । के नं २१२ । छ मन्थार ।

विशेष—कनकाल वर के प्रतिविधि की थी ।

२६३३ मेदिनीकाशा । पत्र नं २४ । पा १ २ × ४ इव । मात्रा—संगुण । विषय—भाव ।  
 ८ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं २२ । छ मन्थार ।

२६३४ प्रति सं २ । पत्र नं ११६ । ले काल × । के नं २७ । छ मन्थार ।

२६३५ रूपमञ्जरीन्यममात्रा—गोपाकवास सुव रूपमन्त्र । पत्र नं १५ । पा १ × २ इव ।  
 मात्रा—संगुण । विषय—बोध । ८ काल नं ११४४ । ले काल नं १७ । पत्र पुटी १ । पूर्ण । के नं  
 १५७१ । छ मन्थार ।

विशेष—वाक्य के मात्रामा की तरह लीक है ।

२६३६ कबुनाममात्रा—हर्षाक्षितिसूरी । पत्र नं २३ । पा ६ × ६ इव । मात्रा—संगुण । विषय—  
 बोध । ८ काल × । ले काल नं १५२ अष्टौ पुटी १ । पूर्ण । के नं ११२ । छ मन्थार ।

विशेष—घर्षाराल के प्रतिविधि की थी ।

२६३७ प्रति सं २ । पत्र नं २ । ले काल × के नं ४१ । छ मन्थार ।

२६३८ प्रति सं ३ । पत्र नं ३ । के १६, २७ के ४२ । ले काल × । पूर्ण । के नं १२४ । छ  
 मन्थार ।

२६३९ विद्यापुरासल— । पत्र नं २ । पा १ × ४ इव । मात्रा—संगुण । विषय—बोध ।  
 ८ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १६१ । छ मन्थार ।

विशेष—२ ले वाली पत्र लड़ी है ।

२६४०. लिगानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३ विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका ” । पत्र सं० २६ । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५ शतक । पत्र सं० ६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । ह भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । भा०  
१०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्दरत्न । पत्र सं० १६६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीयानाममाला ” । पत्र सं० २४ से ४७ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९ शिलोञ्जकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ( तृतीयखंड तक ) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेपाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिगानुशासनम् ।

पद्यानिबोधयत्यर्कं शास्त्राणि कुर्वते कवि

तत्सौरभनभस्वत सतस्तन्वन्तितद्गुणा ॥

मूल्यमर्पित्वेन भागवित्तेषु धर्मिणुः ।  
एष बाह्यपत्रेषु धर्मोच्चिच्छिद्यते मया ॥

२.६५० सर्वावसायिणी—भद्रवर्षिणि । पत्र सं १०१५ । भा० १२५२ पत्र । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—बीस । र काष्ठ X । के कला सं १२६७ बंभतिर कुटी ७ । मयूरु । के सं २१२ । का मय्यार ।  
विशेष—द्विपार विरोज्यकोट में छायाशीलाभ्य के वैशुवर्ष के पट्ट में धर्मिणोवसुति के प्रतिबिम्बि की थी ।



## ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहत केवली पाशा । पत्र सं० १४ । भा० १२×५ इच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२ अरिष्ट कर्ता । पत्र सं० ३ । भा० ११×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३ अरिष्टाध्याय । पत्र सं० ११ । भा० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—५० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से भागे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४ अयजद केवली । पत्र सं० १० । भा० ८×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६ । ब्य भण्डार ।

२६५५ लक्ष्मण फल । पत्र सं० १ । भा० १०३×७३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६ करण कौतूहल । पत्र सं० ११ । भा० १०३×४३ इच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७ करलखण्ड । पत्र सं० ११ । भा० १०३×५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८ कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । भा० १४३×११ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । ५० शुभाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।



२३७६ इति म० २। वष सं १। ले बाल सं १५४। दे सं १११६ अ मन्वार।

विशेष—विष मारणीकर के मालगुद में प्रतिनिधि की की।

२३६० कमराशि कल (कर्म विचारक)। वष सं ३१। मा २३×४४ द०। मत्ता-भंतुठ।

विषय-श्रीतिथि। र बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११३१। अ मन्वार।

२३६१ कर्म विचारक कल। वष सं ३। मा १ × ४६ द०। मत्ता-द्विती। विषय-श्रीतिथि

र बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११। अ मन्वार।

विशेष—रोगियों के अनुकार वनों का वन दिया हुआ है।

२३६२ काक्यग्राम—। वष सं १। मा ६×४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि। र

बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११। अ मन्वार।

२३६३ काक्यग्राम—। वष सं २। मा १ × ४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि।

र बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११५६। अ मन्वार।

२३६४ कौमुद कीजावती—। वष सं ३। मा १ × ४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय

श्रीतिथि। र बाल ×। ले बाल सं १५६२। वीरगण मुठी ११। पूर्ण। दे सं १११। अ मन्वार।

२३६५ कृष अन्वहार—। वष सं १। मा ३×४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि।

र बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११६०। अ मन्वार।

२३६६ गर्भमोचन—। वष सं ७। मा ७×४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि।

र बाल ×। ले बाल सं १५। पूर्ण। दे सं ११२। अ मन्वार।

२३६७ गर्भसंज्ञिता—गर्भसंज्ञि। वष सं ३। मा ११×४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि

र बाल ×। ले बाल सं १५५६। पूर्ण। दे सं ११६०। अ मन्वार।

२३६८ मह हृदा बर्धन—। वष सं १। मा १×४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि।

र बाल ×। ले बाल सं ११६। पूर्ण। दे सं १०२०। अ मन्वार।

विशेष—बड़ी भी बधा तथा अन्वहारों के उत्तर एवं बल दिने हुए हैं।

२३६९ मह कल—। वष सं १। मा १ × ४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-श्रीतिथि। र

बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ११२। अ मन्वार।

२३७० महसायन—महोदय देवता। वष सं ५। मा १ × ४६ द०। मत्ता-भंतुठ। विषय-

श्रीतिथि। र बाल ×। ले बाल ×। पूर्ण। दे सं ५५। अ मन्वार।

## ज्योतिष एव निमित्तज्ञान ]

२६७८ चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच" ... । पत्र स० ५-२३ । मा० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६८ । ढ भण्डार ।

विशेष—इसके प्रागे पचन्नत प्रमाण लक्षण भी है ।

२६७९ चमत्कारचिन्तामणि " । पत्र स० २-६ । मा० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० × । १८१८ फागुण बुदी ५ । पूर्णा । वे० स० ६३२ । अ भण्डार ।

२६८० चमत्कारचिन्तामणि । पत्र स० २६ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७३० । ट भण्डार ।

२६८१ छायापुरुषलक्षण" । पत्र सं० २ । मा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

सांमुद्रिक शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

विशेष—नौनिघराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८२ जन्मपत्रीग्रहविचार " । पत्र स० १ । मा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २२१३ । अ भण्डार ।

२६८३ जन्मपत्रीविचार " । पत्र स० ३ । मा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६१० । अ भण्डार ।

२६८४ जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य । पत्र स० २-२० । मा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८३१ । अपूर्णा । वे० स० १०४८ । अ भण्डार ।

विशेष—घांकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८५ जन्मफल " । पत्र स० १ । मा० ११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २०२४ । अ भण्डार ।

२६८६ जातककर्मपद्धति श्रीपति । पत्र स० १४ । मा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६३८ वैशाख सुदी १ । पूर्णा । वे० स० ६०० । अ भण्डार ।

२६८७ जातकपद्धति—केशव । पत्र स० १० । मा० ११×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २१७ । ज भण्डार ।

२६८८ जातकपद्धति । पत्र सं० २६ । मा० ८×६<sup>३</sup> । भाषा-संस्कृत । २० काल × । ले०

काल × । अपूर्णा । वे० सं० १७४६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२३५८. ज्ञानश्यामलम्—ईशानपुर विद्यालय । वन नं ४३ । भा १ ३०४ द. ५ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ग्योतिष । र. काल × । ले. काल नं १०२६ मासिक कुटी ११ । पूर्ण । के. नं १७ । अ. मथारा ।

विशेष—कालपुर, ले. नं. मुक्तमुक्तपत्रिका के प्रतिनिधि की थी ।

२३५९. प्रति सं ३ । वन नं १ । ले. काल नं १५४ मासिक कुटी १ । के. नं १२७ ।

अ. मथारा ।

विशेष—कट्ट पंजाब के कालपुर के प्रतिनिधि की थी ।

२३६१. ज्ञानश्यामलम्—। वन नं १ ले ११ । भा १ ३०४ द. ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्योतिष । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. नं १७२ । अ. मथारा ।

२३६२. श्यामलपत्रिका—। वन नं २ ले २४ । भा १ २०४ द. ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्योतिष । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. नं १६३ । अ. मथारा ।

२३६३. प्रति सं २ । वन नं ३२ । ले. काल × । के. नं १२४ । अ. मथारा ।

विशेष—अति संस्कृत शैली का ग्रन्थ है ।

२३६४. श्यामलपत्रिका—। वन नं २ ले २७ । भा १ २०४ द. ५ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ग्योतिष । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. नं २२२ । अ. मथारा ।

२३६५. श्यामलपत्रिका—। वन नं २ । भा १ २०४ द. ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्योतिष

र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. नं २१४ । अ. मथारा ।

२३६६. श्यामलपत्रिका—। वन नं ३ ले २१ । भा १ २०४ द. ५ । भाषा—हिन्दी

(बच्च) । विषय—ग्योतिष । र. काल × । ले. काल नं १५४ मासिक कुटी ११ । पूर्ण । के. नं १२१३ । मथारा ।

विशेष—श्रीराम वीर के लेखित ग्रन्थ का प्रकृत के सिद्धा ।

अति काल—( वन ३ वर )

अन्य संदर्भों का विवरण यहाँ नहीं है—

श्रीराम वीर के लेखित ग्रन्थ का प्रकृत के सिद्धा ।

अन्य संदर्भों का विवरण यहाँ नहीं है ।

श्रीराम वीर के लेखित ग्रन्थ का प्रकृत के सिद्धा ।

अन्य संदर्भों का विवरण यहाँ नहीं है ।

## ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान ]

ग्रन्थि—

घरप लग्यो जा ग्रस में सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लग्न लिखे ते गिरह जो जा घर वैठी आय ।

ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७ ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र स० ६३ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८६३ पीप सुदी २ । पूर्ण । वे० म० ६३ । ख भण्डार ।

२६६८ ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र स० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं ।

२६६९ ज्योतिषशास्त्र " । पत्र स० ११ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २०१ । छ भण्डार ।

३००० प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० म० ५२१ । ख भण्डार ।

३००१, ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६८४ । ट भण्डार ।

३००२, ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ५८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० म० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है । इनमें मुख्यरूप में निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म स० १७४५ मगसिर
महाराजा विशनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह	जन्म स० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र	स० १७६६
रामचन्द्र ( जन्म नाम भाफूराम )	स० १७१५ फागुण सुदी २
दौलतरामजी ( जन्म नाम बेगराज )	स० १७४६ भाषाठ बुदी १४

३० ३ तादृक्प्रसङ्गवत्—। पत्र सं १२। मा ११×४, इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र काल ×। मे काल सं १ २६। पूर्ण। के सं २२२। अक्षर्या।

विशेष—बड़ा कालके में भी पारसगण भैरवकाल के प्रतिनिधि की की।

३ ४ तादृक्प्रसङ्गवत्—। पत्र सं ३। मा १ ×४ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—ज्योतिष। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं १२२। अक्षर्या।

३ ०२ त्रिपुरावधमुहूर्त—। पत्र सं १। मा ११×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं ११२। अक्षर्या।

३००६ श्रीकामधर्या—। पत्र सं १६। मा ११×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं ११२। अक्षर्या।

विशेष—१ के १ तब कुमरी प्रति के पत्र है। २ के १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतिभों का प्रतिफल है।

३००७ शरीरममुहूर्त—। पत्र सं ३। मा ७ १/२ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं १०२२। अक्षर्या।

३ ८ मङ्गलविचार—। पत्र सं ११। मा ४ × २ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। मे काल सं १ ९। पूर्ण। के सं २०६। अक्षर्या।

विशेष—टीक पत्रि विचार की विसे हुये है।

विश्वविश्व रचनाओं की है—

सप्तमपत्रादादा— पत्रि डागुर शिपी [ १ पत्रि ]

मित्रविषय के दादे— शिपी [ ४४ दादे है ]

रत्नगुणादत्त— शिपी [ मे काल सं १११० ]

विशेष—काल विरही का मेवम भाषा बड़ा है विमये काल लेके मे क्या पत्रर इत्या है इनका वर्तन ११ दोहो मे विद्या बदा है।

३ ९ मङ्गलविषयीशाहाम—। पत्र सं २। मा १ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र काल ×। पूर्ण। के सं १४। अक्षर्या।

३ १ मङ्गलमन्त्र—। पत्र सं ३ के २४। मा ६ × ३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। मे काल सं १ १५ विरही की। पूर्ण। के सं ११। अक्षर्या।

## ज्योतिष एव निमित्तज्ञान ]

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र स० १४८ । आ० १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्णा । वै० स० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वै० स० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३ । वै० स० ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५ निमित्तज्ञान ( भद्रवाहु सहिता )—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६ निपेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । आ० ८×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३०१७ नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ । पत्र स० १४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८ पञ्चागप्रबोध । पत्र स० १० । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९ पचाग—चण्डू । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचाग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२० पचाग । पत्र स० १३ । आ० ७३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्णा । वै० स० २४७ । ख भण्डार ।

३०२१ पचागमाधन—गणेश ( केशवपुत्र ) । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८२ । वै० स० १७३१ । ट भण्डार ।

३०३ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं १२। का ११५२ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—  
श्लोक्ति। १ काल ×। मे काल सं १०२६। पूर्ण। मे सं १२२। अक्षरम्।

विलेप—बड़ा बरतने में भी चारदशान्तर्निबन्ध के बीच-बीच में प्रतिनिधि की थी।

३ ०४ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं २। का १ ५५२ इव। भाषा—अंगुष्ठ।

विषय श्लोक्ति। १ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२२। अक्षरम्।

३ ०२ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं १। का ११×२ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।

१ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ११। अक्षरम्।

३ ० श्रीशिवशक्तिः—। पत्र सं ११। का ११×२ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।

१ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १११। अक्षरम्।

विलेप—१ में १ काल पुनः ही कट के पत्र हैं। २ में १५ तक वाली प्रति श्लोक्ति है। ही प्रति को का  
तन्निबन्ध है।

३ ० ७ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं १। का ७×५ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।

१ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२२। अक्षरम्।

३ ०८ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं ११। का ५२ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।

१ काल ×। मे काल सं ११५। पूर्ण। मे सं १०१। अक्षरम्।

विलेप—श्लोक्ति विषय की विलेप है।

निबन्धिका रूपमें की है—

शिवशक्तिः— पत्र सं ११। का ५२ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।

शिवशक्ति के प्रति— श्लोक्ति [ ५२ सं ११ ]

शिवशक्ति— श्लोक्ति [ मे काल सं ११० ]

विलेप—काल श्लोक्ति का शिवशक्ति का प्रति के काल के मे का काल है। प्रति सं ११  
११ सं ११ में विलेप है।

३ ० ९ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं १। का १ ५ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—  
श्लोक्ति। १ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२२। अक्षरम्।

३ १ त्रिदशसमुच्चयः—। पत्र सं १। का १ ५ इव। भाषा—अंगुष्ठ। विषय—श्लोक्ति।  
१ काल ×। मे काल सं १ १ सं ११। पूर्ण। मे सं १११। अक्षरम्।

## ज्योतिष एव निमित्तज्ञान ]

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र स० १४८ । आ० १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६४६ । अ मण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं है ।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्णा । वे० स० १७२ । अ मण्डार ।

३०१३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । अ मण्डार ।

३०१४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० स० ६५ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५ निमित्तज्ञान ( भद्रवाहु सहिता )—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७७ । अ मण्डार ।

३०१६ निपेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । आ० ८×६३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १७४८ । ट मण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं है ।

३०१७ नीलकण्ठतजिक—नीलकण्ठ । पत्र स० १४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १०५८ । अ मण्डार ।

३०१८ पञ्चागप्रबोध । पत्र स० १० । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७३५ । ट मण्डार ।

३०१९ पचाग—चण्डू । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचाग हैं ।

सवत् १८२६, ५२, ५४, ५४, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२० पचाग । पत्र स० १३ । आ० ७३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्णा । वे० स० २४७ । ख मण्डार ।

३०२१ पचागसाधन—गणेश ( केशवपुत्र ) । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८२ । वे० स० १७३१ । ट मण्डार ।



३ २२. पक्ष्यविचार—। पक्ष सं ६। धा १३×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-अनुमत्तव।

२ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १३। अ नम्ब्यार।

३ २३. पक्ष्यविचार—। पक्ष सं २। धा ६७×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-अनुमत्तव।

२ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १३१९। अ नम्ब्यार।

३ २४. पाराशरी—। पक्ष सं १। धा १३×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-अधीन। २

काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १३२। अ नम्ब्यार।

३ २५. पारमशीसखनरजनीटीका—। पक्ष सं ३१। धा १२×६ इव। मत्वा-हृषी।

विषय-अधीन। २ काल ×। नै काल सं १३३६. धाकोन सुदी २। पूर्ण। नै सं १३३। अ नम्ब्यार।

३ २६. पाराशकेवली—सर्गमुनि। पक्ष सं ७। धा १३×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-भित्त

वत्तव। २ काल ×। नै काल सं १३४। पूर्ण। नै सं १३३। अ नम्ब्यार।

विषय—वत्त अ नाम अनुमत्तवो यो ई।

३ २७. प्रति सं २। पक्ष सं ४। नै काल सं १३३। धा। नै सं १३६। अ नम्ब्यार।

विषय—अधि मनोहर नै प्रतिनिधि नो यो। अधीनसुदि उचित नैविगत स्वप्न नो विद्या हुमा ई।

३ २८. प्रति सं ३। पक्ष सं ११। नै काल ×। नै सं १३६। अ नम्ब्यार।

३ २९. प्रति सं ४। पक्ष सं २। नै काल सं १३७. धा सुदी १। नै सं ११। अ

नम्ब्यार।

विषय—भित्तसुदी (सापलेर) ई अन्तम नैत्वत्तव नै तवार्थान नै अन्त नोत्वत्तव नै प्रतिनिधि

नो यो।

३ ३०. प्रति सं २। पक्ष सं ११। नै काल ×। नै सं ११। अ नम्ब्यार।

३ ३१. प्रति सं ३। पक्ष सं ११। नै काल सं १३८. धा सुदी १९। नै सं १३४। अ

नम्ब्यार।

विषय—अन्तम नै नै प्रतिनिधि नो यो।

३ ३२. पाराशकेवली—श्यामपाकड। पक्ष सं ५। धा ६×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-

भित्त वत्तव। २ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १३९। अ नम्ब्यार।

३ ३३. पाराशकेवली—। पक्ष सं ११। धा ६×४३ इव। मत्वा-हृषी। विषय-भित्तवत्तव।

२ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं १३४९। अ नम्ब्यार।

३ ३४. प्रति सं ३। पक्ष सं ६। नै काल सं १३९६. धा सुदी १। नै सं २१६। अ

नम्ब्यार।

विषय—नो तवार्थान नो यो नै धातेर नै अन्तम नैत्वत्तव नै प्रतिनिधि नो यो।

इसके प्रतिरिक्त अथ भण्डार मे ३ प्रतिपा ( वे० स० १०७१, १०८८, ७६८ ) ख भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० १०८ ) छ भण्डार मे ३ प्रतिपा (वे० स० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० १८२४ ) श्रोर हैं ।

३०३५ पाशाकेवली । पत्र स० ५ । ग्रा० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० ११६ । व भण्डार ।

३०३८ पाशाकेवली । पत्र स० १ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९ पाशाकेवली । पत्र स० १३ । ग्रा० ८३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८५० । अपूर्ण । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विद्यालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं हैं ।

३०४० पुरश्चरणविधि । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये हैं जिसमे कई जगह पठा नहीं जा सकता ।

३०४१ प्रश्नचूडामणि । पत्र स० १३ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८०८ ग्रामोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० १६५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३ प्रश्नविद्या । पत्र स० २ से ५ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४ प्रश्नविनोद । पत्र स० १६ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५ प्रश्नसनोरमा—गर्ग । पत्र स० ३ । ग्रा० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १६२८ भाद्रवा सुदी ७ । वे० स० १७४१ । ट भण्डार ।

३०४६ प्रत्ययाभासा—। पत्र सं १ । या २×२२ दृष्य । ज्ञाना-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल ×। कपूर्व । के सं १ २२ । अ नम्बरा ।

३ ४७ प्रत्ययान्ताभासाभिरस्य—। पत्र सं ४ । या १२×२ दृष्य । ज्ञाना-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल ×। पूर्व । के सं ४६ । अ नम्बरा ।

३०४८ प्रत्यावसि—। पत्र सं ७ । या १×१२ दृष्य । ज्ञाना-ईश्वर । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल ×। कपूर्व । के सं १०१७ । अ नम्बरा ।

विशेष—प्रतिष्ठ पत्र गरी है ।

३ ४९ प्रत्ययार—। पत्र सं ११ । या १२२×२ दृष्य । ज्ञाना-ईश्वर । विषय-बहुत ज्ञान । २ काल ×। से काल सं १२२२ काल कुटी १४ । के सं ३१६ । अ नम्बरा ।

३ ५ प्रत्ययार—इषप्रीष । पत्र सं १२ । या १×२२ दृष्य । ज्ञाना-ईश्वर । विषय-बहुत ज्ञान । २ काल ×। से काल सं १२२२ । के सं ३११ । अ नम्बरा ।

विशेष—जो वर कीजक बने हैं विषय पर प्रत्यय मिले हुए हैं कलमें प्रत्यय बहुत पत्र विद्वाना है ।

३ ५१ प्रत्यावसिमाश्रित्यभासा—संभवकर्त्ता ज्ञानसंगार । पत्र सं २७ । या १२×२२ दृष्य । ज्ञाना-ईश्वर । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल सं १०६ । पूर्व । के सं २११ । अ नम्बरा ।

३०५३ प्रति सं २ । पत्र सं ३० । से काल सं १ ११ वीं कुटी १ । कपूर्व । के सं ११ । विशेष—प्रतिष्ठ पुत्रिया निम्न प्रत्यय है ।

इति ज्ञानोत्तर अश्रित्यभासा महात्म्ये श्वाक श्री वरकार्त्तव्य वसुकरायवा नमः । अज्ञानोत्तर अश्रित्ये श्री विषयविषय अश्रित्ये ॥ अत्र पत्र गरी है ।

३०५३ प्रत्यावसिमाश्रित्यभासा—। पत्र सं २ से २२ । या ७×२२ दृष्य । ज्ञाना-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल सं १ २४ । कपूर्व । के सं २ २५ । अ नम्बरा ।

विशेष—श्री वरदेव ज्ञानोत्तरी ज्ञाने से ज्ञाना अज्ञानोत्तर के अज्ञानार्त्त अश्रित्ये की थी ।

३ ५४ प्रति सं २ । पत्र सं ३६ । से काल सं १०१७ प्रतीक कुटी २ । के सं ११४ । अ नम्बरा ।

३०५४ अश्रित्यभासा—। पत्र सं २ । या २×२१ दृष्य । ज्ञाना-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २ काल ×। से काल ×। पूर्व । के सं १२ १ । अ नम्बरा ।

विशेष—सं १२ २ से ३२२२ तक के अश्रित्ये का अश्रित्ये काल दिया हुआ है ।

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान ]

३०५६ भडली । पत्र स० ११ । मा० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, वररतना तथा बिजली आदि चमकने से वर्षा फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७ भाष्वती—पद्मनाभ । पत्र स० ६ । मा० ११×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०५८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० २६५ । च भण्डार ।

३०५९ भुवनदीपिका । पत्र स० २२ । मा० ७ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ज भण्डार ।

३०६० भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र स० ५८ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८५६ फागुण बुदी १० । वे० स० ६१२ । अ

भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई भाग ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३ भृगुमहिता । पत्र स० २० । मा० ११×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४ मुहूर्त्तचिन्तामणि । पत्र स० १६ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वे० स० १४७ । अ भण्डार ।

३०६५ मुहूर्त्तमुक्तावली । पत्र स० ६ । मा० १०×४ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र स० ६ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा-

संस्कृत । विषय ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८७१ वैशाख बुदी १ । वे० स० १४८ । छ

भण्डार ।

३ ६८ प्रति सं ३। पत्र सं ७। वे काल सं १७ २ मार्गशीर्ष शुक्ल ३। अ मघार।

विशेष—घण्टाया नगर में मुनि शोधकचर ने प्रतिष्ठित की थी।

३ ६९ सुहृत्समुदायक—। पत्र सं १३। पा १ २४ ६४। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विषय—ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पुरी। वे सं १४१। अ मघार।

३ ७० सुहृत्समुदायक—। पत्र सं १। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। ले काल सं १४१७ कालिक शुक्ल ११। पूर्ण। वे सं १३१४। अ मघार।

३ ७१ सुहृत्सुदीपक—महादेश। पत्र सं १। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। वे काल सं १७१७ वैशाख शुक्ल ३। पूर्ण। वे सं १३४। अ मघार।

विशेष—ई हारकी के पठनार्थ प्रतिष्ठित की गई थी।

३ ७२ सुहृत्सुसमाह—। पत्र सं ३२। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। ले काल ×। पुरी। वे सं १३। अ मघार।

३ ७३ मेघमाहा—। पत्र सं १। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पुरी। वे सं १३। अ मघार।

विशेष—वर्षा ऋतु के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। स्लोक सं ३४१ हैं।

३ ७४ प्रति सं २। पत्र सं ३३। ले काल सं १ ३३। वे सं ११३। अ मघार।

३ ७५ प्रति सं ३। पत्र सं २। ले काल ×। पुरी। वे सं १७४। अ मघार।

३ ७६ वागवृत्त—। पत्र सं ११। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष र

वैश्व। ले काल ×। पुरी। वे सं २३। अ मघार।

३ ७७ रासवृत्त—रासवृत्ति। पत्र सं २३। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। ले काल सं १२। पूर्ण। वे सं १३। अ मघार।

३ ७८ रासवृत्त—। पत्र सं ३। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र

काल ×। ले काल सं ११। पूर्ण। वे सं १११। अ मघार।

विशेष—अन्वयनी विचार की है।

३ ७९ रामसरारथ—वीं विश्वामि। पत्र सं १३। पा १ २४ ६४। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पुरी। वे सं १३४। अ मघार।

३ ८० रामसरारथ—। पत्र सं १३। पा १ २४ ६४। भाषा—हिन्दी। विषय—निर्मित धान्य

र काल ×। ले काल ×। पुरी। वे सं १३१। अ मघार।

३८६१ स्वल्पज्ञान । पत्र सं० ५ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी तथा । विषय-निमित्तज्ञान ।

२० पान ५ । वै० पान २० । १८६६ । वै० सं० ११८ । ७ म अक्षर ।

विषय—आदिवासी संस्थापन में आचार्य राजकीर्ति के प्रतिष्ठित मंगलद्वारा में विषय जोड़कर । प्रतिलिपि की थी ।

३८८० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ में ८८ । वै० पान सं० १२७८ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । १० पान ५ । वै० पान २० । १८६६ । वै० सं० ११८ । ७ म अक्षर ।

३८८३ राजादिपत्र । पत्र सं० ५ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान सं० १८२१ । पूर्ण । १० सं० ११८ । ७ म अक्षर ।

३८८४. राजपत्र । पत्र सं० ८ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान सं० १८०३ । ज्येष्ठ शुद्ध ८ । पूर्ण । वै० सं० ११८ । ७ म अक्षर ।

३८८५ कृष्णज्ञान । पत्र सं० १ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान सं० १७५७ । वै० सं० २१११ । अ अक्षर ।

विषय—उद्योगों में लानेवाले के प्रतिलिपि की थी ।

३८८६ लक्ष्मणिकाभाषा । पत्र सं० ८ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० ११८ । ७ म अक्षर ।

३८८७. लक्ष्मणिकाभाषा—संस्कृत । पत्र सं० ३ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० २१६ । अ अक्षर ।

३८८८ लक्ष्मणिकाभाषा—संस्कृत । पत्र सं० १७ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० १६३ । अ अक्षर ।

३८८९ वर्षभ्रम । पत्र सं० १० । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० २६३ । अ अक्षर ।

विषय—भ्रम पत्र नहीं है । वर्षभ्रम नियामन की विधि का दृष्टि है ।

३८९० विद्याशोधन । पत्र सं० २ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० २१६० । अ अक्षर ।

३८९१ वृद्धजातक—संस्कृत । पत्र सं० ८ । भा० ११ । ७ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-उद्योग । २० पान ५ । वै० पान ५ । पूर्ण । वै० सं० १८०२ । अ अक्षर ।

विषय—भ्रम महेद्वीति के विषय भारतमें के प्रतिलिपि की थी ।

३१२. पटपंचाभिक्र—बराहमिह्वर । पत्र सं १ । वा ११×४२ इव । मया—संस्तुत । विषय—  
ज्योतिष । र काल × । ले माल स १७१९ । पूर्ण । के सं ७३९ । अ मन्थार ।

३१३. पटपंचाभिक्र—सद्योत्पन्न । पत्र सं २२ । वा १२×२ इव । मया—संस्तुत । विषय—  
ज्योतिष । र काल × । ले माल स १७२२ । पूर्ण । के सं १४४ । अ मन्थार ।

विशेष—हेयरात्र भिन्न के तथा सद्योत्पन्न के प्रतिनिधि नो नो । इत्ये १२, ८ ११  
पत्र नहीं है ।

३०६४ शकुन्तलिका— । पत्र सं ३ । वा १२×४२ इव । मया—हिन्दी मया । विषय—सद्युत  
माल । र काल × । ले माल × । पूर्ण । के सं १४५ । अ मन्थार ।

३१४. शकुन्तलिका— । पत्र सं २ । वा ११×२ इव । मया—संस्तुत । विषय—ज्योतिष । र  
काल × । ले माल × । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्थार ।

विशेष—१२ पत्रों का संघ बना हुआ है ।

३१५. प्रति सं ० । पत्र सं ४ । ले माल सं १११ । के सं १२ । अ मन्थार ।

विशेष—यं सद्युत्पन्न के प्रतिनिधि नो नो ।

३१७. शकुन्तलिका—गरी । पत्र सं २ ये २ । वा १२×२ इव । मया—संस्तुत । विषय—  
ज्योतिष । र काल × । ले माल × । पूर्ण । के सं १२४ । अ मन्थार ।

विशेष—इतना नाम मयाभिनयो नो है ।

३१८. प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले माल × । के सं ११९ । अ मन्थार ।

विशेष—सद्युत्पन्न के प्रतिनिधि नो नो ।

३०६६. प्रति सं ३ । पत्र सं १ । ले माल सं ११३ मयाभिनयो नो ११ । पूर्ण । के सं  
१७१ । अ मन्थार ।

३१ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ ये ७ । ले माल × । पूर्ण । के सं ११ । अ मन्थार ।

३१९ शकुन्तलिका—अदम्य । पत्र सं ७ । वा ११×२ इव । मया—हिन्दी । विषय—सद्युत  
माल । र काल × । ले माल सं ११२ मयाभिनयो नो ७ । पूर्ण । के सं २२ । अ मन्थार ।

३१० शकुन्तलिका— । पत्र सं १३ । वा १४ इव । मया—पुरानी हिन्दी । विषय—सद्युत  
माल । र काल × । ले माल × । पूर्ण । के सं ११४ । अ मन्थार ।

३१३. प्रति सं २ । पत्र सं १९ । ले माल सं १७२ मयाभिनयो नो १४ । के सं ११४ । अ  
मन्थार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे राणा सग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी । २० वमलावार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं । पत्र ५ से आगे प्रश्नो का फल दिया हुआ है ।

३१०४ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ३४० । ऋ भण्डार

३१०५ शकुनावली । पत्र स० ५ से ८ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८६० । अपूर्णा । वे० स० १२५८ । अ भण्डार ।

३१०६ शकुनावली । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है ।

३१०७ शनश्चरदृष्टिविचार । पत्र स० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४६ । अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिक्रमे से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र स० ११ से ३७ । आ० ८३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४३ । अ भण्डार ।

३१०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८३० । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० माणिकचन्द्र ने घोड़ीग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

३११० प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८४८ आसोज सुदी ६ । वे० स० १३८ । छ भण्डार ।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११ प्रति स० ४ । पत्र स० ७१ । ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४ । वे० स० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२०० ) ख भण्डार में १ प्रति ( वे० स० १८७ ) छ, ऋ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० स० १३८, १६२ तथा २११६ ) और हैं ।

३११२ शुभाशुभयोग । पत्र स० ७ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८७५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प० हीरालाल ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

३११३ सक्कातिफला । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१ । ख भण्डार ।



३११४ संक्रान्तिघ्नम्—। वन सं ११। या १५×४२ इव। भावा—मंसूत। विषय—ज्योतिष  
 र वज्र ×। मे वज्र सं ११। वारा सुदी ११। के सं २११। अ मघार

३११५ संक्रान्तिघ्नम्—। वन सं २। या १५×४२ इव। भावा—मंसूत। विषय—ज्योतिष  
 र वज्र ×। मे वज्र ×। पूर्ण। के सं ११४२। अ मघार

३११६ समरसार—। वन सं १५। या ११×४ इव। भावा—मंसूत। विषय—  
 ज्योतिष। र वज्र ×। मे वज्र सं १७११। पूर्ण। के सं १७१२। अ मघार

विषय—दोषिभेद ( विष्णो ) में प्रतिक्रिया हुई। स्वर धारण में लिया हुआ है।

३११७ सप्तसती विचार—। वन सं १। या १५×४२ इव। भावा—हिमो मघ। विषय—  
 ज्योतिष। र वज्र ×। मे वज्र ×। पूर्ण। के सं १७११। अ मघार

विषय—सं ११६ के सं २ एक वा वर्णक है।

३११८ सामुद्रिकप्रणालम्—। वन सं १। या १५×४ इव। भावा—मंसूत। विषय—निति  
 पान्थ। स्त्री युगा के धर्मों के पुनरावृत्त कथन पर्यंत विवेक है। र वज्र ×। मे वज्र सं ११४४ पीठ सुदी १२  
 पूर्ण। के सं १७११। अ मघार

३११९ सामुद्रिकविचार—। वन सं १५। या १५×४२ इव। भावा—हिमो। विषय—निति  
 पान्थ। र वज्र ×। मे वज्र सं १७११ पीठ सुदी ५। पूर्ण। के सं १। अ मघार।

३१२० सामुद्रिकप्रणालम्—। वन सं ११। या ११×४२ इव। भावा—मंसूत। विषय—निति  
 पान्थ। र वज्र ×। मे वज्र ×। पूर्ण। के सं ११६। अ मघार।

विषय—मघ में हिमो में ११ अक्षर एव के बोधे हैं तथा स्त्री युगों के धर्मों के कथन विवेक है।

३१२१ सामुद्रिकप्रणालम्—। वन सं १। या १५×४ इव। भावा—मंसूत। विषय—निति  
 र वज्र ×। मे वज्र ×। पूर्ण। के सं ७७४। अ मघार।

विषय—एक एक संस्कृत में वर्णवर्णो घन विवेक है।

३१२२ सामुद्रिकप्रणालम्—। वन सं ४१। या १५×४ इव। भावा—मंसूत। विषय—निति।  
 र वज्र ५। मे वज्र सं ११७ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। के सं ११६। अ मघार।

विषय—स्वामी केवलक में पुनरावृत्त के पठनार्थ प्रतिक्रिया की थी। १, २, ३, ४ वन गरी है।

३१२३ प्रति स २। वन सं ११। मे वज्र सं १७११ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। के सं  
 १७२। अ मघार।

विषय—बीध के नई वन गरी है।

३१०४ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र नं० ८ । आ० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ल० काल स० १८८० । पूर्ण । वै० न० ८६२ । अ भण्डार ।

३१०५ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० कान × । अपूर्ण । वै० न० ११४७ । अ भण्डार ।

३१०६, सामुद्रिकशास्त्र । पत्र न० १८ । आ० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।

२० कान × । ले० काल स० १६० = आमाज बुदी ८ । पूर्ण । वै० न० २७७ । क भण्डार ।

३१०७ मारणी । पत्र न० ८ मे १३४ । आ० १२×६<sup>३</sup> इ च । भाषा—प्रपत्र दा । विषय—

ज्योतिष २० कान × । ले० काल स० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वै० न० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डा मे ८ अपूर्ण प्रतिषा ( वै० स० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७ ) मौर हैं ।

३१०८ मारावती । पत्र स० १ । आ० ११×३<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० न० २०२५ । अ भण्डार ।

३१०९ सूर्यगमनविधि । पत्र स० ५ । आ० ११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२ काल × । ल० काल × । पूर्ण । वै० न० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३११० सोमउत्पत्ति । पत्र स० २ । आ० ८<sup>३</sup>×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ल० काल स० १८०३ । पूर्ण । वै० स० १३८६ । अ भण्डार ।

३१११ स्मृतत्रिचार । पत्र स० १ । आ० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वै० स० ६०६ । अ भण्डार ।

३११२ स्वप्नाध्याय । पत्र स० ४ । आ० १०×६<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ल० काल × । पूर्ण । वै० स० २१४७ । अ भण्डार ।

३११३ स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र स० ३ । आ० १२×७<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८५८ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ८३६ । क भण्डार ।

३११४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ८३७ । क भण्डार ।

३११५ स्वप्नावलि । पत्र न० २ । आ० १०×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८३५ । क भण्डार ।

३११६ होराज्ञान । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०

काल × । अपूर्ण । वै० न० २०४५ । अ भण्डार ।

## निषय-आयुर्वेद

३१३०. आजीर्णसमझारी—। वष बं २। वा २१२×२३ २५। जला-संशुद्ध। विषय-  
मानुषर। ८ कल ×। के कल बं १०५५। पुर्त। के बं १२१। छ मन्थार।

३१३१. प्रति स० २। वष बं ७। के कल ×। के बं ११६। छ मन्थार।

विशेष—अति प्राचीन है।

३१३२. आजीर्णसमझारी—आटीर्याज। वष बं २। वा १३×२२ २५। जला-संशुद्ध। विषय-  
मानुषर। ८ कल ×। के कल ×। पुर्त। के बं २९। छ मन्थार।

३१३३. अज्जस्यार—। वष बं ४। वा ११३×४३ २५। जला-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।  
८ कल ×। के कल ×। पुर्त। के बं ११४। छ मन्थार।

३१३४. अज्जस्यार—महाशरणा सखाई प्रचारसिद्ध। वष बं ११० के ११४। वा १२५×२  
२५। जला-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ८ कल ×। के कल ×। पुर्त। के बं ११। छ मन्थार।

विशेष—संशुद्ध रूप के मन्थार पर है।

३१३५. प्रति स० १। वष बं २१। के कल ×। पुर्त। के बं ३२। छ मन्थार।

विशेष—संशुद्ध रूप को दिया है।

छ मन्थार के २ प्रतिशत (के बं २ ११) पुर्त की है।

३१३६. प्रति स ३। वष बं १४ के १२। के कल ×। पुर्त। के बं २ ११। छ मन्थार।

३१३७. अर्धमन्थार—अर्धमन्थार। वष बं ८७। वा १३×४५ २५। जला-संशुद्ध। विषय-  
आयुर्वेद। ८ कल ×। के कल बं १२५४। कल पुर्त। ४। पुर्त। के बं ५५। छ मन्थार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक रूप है। अन्यक विषय को उपर के विषयक किया गया है।

३१३८. आत्रेयस्यार—आत्रेयस्यारि। वष बं ४२। वा १ ×४३ २५। जला-संशुद्ध। विषय-  
मानुषर। ८ कल ×। के कल बं १ ७। वापरा पुर्त। १४। के बं ११। छ मन्थार।

३१३९. आयुर्वेदिक तुम्हो का समझ—। वष बं १२। वा १ ×४ २५। जला-हिन्दी।  
विषय-आयुर्वेद। ८ कल ×। के कल ×। पुर्त। के बं ११। छ मन्थार।

३१४०. प्रति स २। वष बं ४। के कल ×। के बं ११। छ मन्थार।

आयुर्वेद ]

३१४८ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।  
विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे । पत्र स० ४ से २० । आ० ८×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५० प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० २६०, २६६, २६६ ) और हैं ।

३१५१ आयुर्वेदिकग्रथ । पत्र स० १६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति स० २ । पत्र स० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३ आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र स० २४ । आ० ९३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३५५ । व्य भण्डार ।

३१५४ कल्पपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र स० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५ कल्पस्थान ( कल्पव्याख्या ) । पत्र स० २१ । आ० ११३×५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १७०२ । पूर्णा । वे० सं० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतोयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्त ॥

३१५६. कालज्ञान । पत्र स० ३ से १९ । आ० १०×४<sup>३</sup> इच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख  
भण्डार ।

विशेष—भिरुद ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१३६. प्रति स ४। वन तं ७। मे कल ×। मे तं ११८। अथ प्यार।

३१३७. प्रति स ७। वन तं १। मे कल ×। मे तं १६७४। अथ प्यार।

३१३८. चिकित्सांजनम्—इषाण्यवविद्यापति। वन तं २। मा ६×४ इव। माता-संस्कृत।

विषय-यामुर्वेद। ८ कल ×। मे कल तं ११३१। पूर्ण। मे तं ३२२। अथ प्यार।

३१३९. चिकित्सासार—। वन तं ११। मा ११×१२ इव। माता-हिन्दी। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं १८। अथ प्यार।

३१४०. प्रति स २। वन तं ५-३१। मे कल ×। पूर्ण। मे तं २७६। अथ प्यार।

३१४१. चूर्णविचार—। वन तं १२। मा ११×१२ इव। माता-संस्कृत। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं १५१६। अथ प्यार।

३१४२. अरककण्ड—। वन तं ४। मा ११×१२ इव। माता-हिन्दी। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं ११९। अथ प्यार।

३१४३. अरविचिकित्सा—। वन तं २। मा १ ×४ इव। माता-संस्कृत। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं १२३७। अथ प्यार।

३१४४. प्रति स ३। वन तं ११ ते ३१। मे कल ×। पूर्ण। मे तं २१४। अथ प्यार।

३१४५. अरविमिरमासिकर—यामुर्वेद। वन तं १४। मा १ ×१२ इव। माता-संस्कृत।

विषय-यामुर्वेद। ८ कल ×। मे कल तं ११ मङ्गलपुटी १३। मे तं १३७। अथ प्यार।

विषय—यामुर्वेद के विषयमूलक के प्रतिनिधि की थी।

३१४६. चिदावी—शाङ्गधर। वन तं ३२। मा १ ३×२ इव। माता-संस्कृत। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। मे तं १३१। अथ प्यार।

३१४७. प्रति स २। वन तं १२। मे कल तं १६१६। मे तं १२३। अथ प्यार।

विषय—वन तं १२३ है।

३१४८. नृकमीपाठविधि—। वन तं ३। मा ११×२ इव। माता-हिन्दी। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं १३६। अथ प्यार।

३१४९. माडीपरीक्षा—। वन तं १। मा ११×२ इव। माता-संस्कृत। विषय-यामुर्वेद।

८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। मे तं ११। अथ प्यार।

आयुर्वेद ]

३१७० निघट्ट । पत्र स० ७ से ८८ । पत्र स० ११५५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७७ । अ मण्डार ।

३१७४ प्रति स० ७ । पत्र स० २१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८४ । अ मण्डार ।

३१७५ पत्रप्ररूपणा । पत्र स० ११ । भा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल स० १५५७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । ट मण्डार ।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है । अन्य से पुत्र १५८ दलोक हैं ।

प्रशस्ति—स० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने अ० प्राडू लिखित कर्म-  
शयनिमित्त । अ० जालप जोयु पठनार्थं दत्त ।

३१७६ पथ्यापथ्यविचार । पत्र स० ३ से ४४ । भा० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । ट मण्डार ।

विशेष—दलोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । विषय पथ्यापथ्य अधिकार तक है । १६ से  
प्रागे के पत्रों में दीमक लग गई है ।

३१७७ पाराविधि । पत्र स० १ । भा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख मण्डार ।

३१७८ भाष्यप्रकाश—मानमिश्र । पत्र स० २७५ । भा० १०<sup>१</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ज मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भाष्यप्रकाश संपूर्ण ।

प्रशस्ति—सवत् १८८१ मिति वैशाख शुक्ला ६ शुक्रे लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७९ भाष्यप्रकाश । पत्र स० १६ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२२ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जयु पंडित तनयशस पंडितकृते त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८० भाष्यसमूह । पत्र स० १० । भा० १०<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट मण्डार ।

३१८१ अथमविनोद—अथमपात्र । पत्र तं १३ से १२ । या २२×१२ इंच । माता—संस्कृत ।  
विषय—आमुर्षेह । र कल × १ से कल तं १०१३ ज्येष्ठ सुदी १२ । पयुर्षे । से तं १०१ । मोर्षे । या  
अथार ।

विशेष—यत्र १३ पर मित्र पुत्रिका है—

इति श्री अथमपात्र विदिते अथमविनोदे अथमविनोदः ।

पत्र १ पर— यो एतां बुधार्थकम् अथमपात्रेण श्रीमदलङ्कारेण विनितेण ज्येष्ठसिन्धु अथमविनोदे अथमि वंशमर्षे ।

विषय प्रकृत—

ज्येष्ठ सुदी १२ सुदी पदिने ति—आमनी विषयकेन अथमपात्रेण । संस्कृत १०१३ विनोद अथमि—  
अथमपात्रविदिते अथमविनोदे विनोदे प्रकृत अथमविनोदः ॥

३१८२ अथम विनोदिका मुक्ता—पत्र तं १ । या १ × १ इंच । माता—हिन्दी । विषय—  
आमुर्षेह । र कल × १ से कल × १ पुरी । से तं २२५ । अथमपात्र ।

विशेष—विष्णो अथमि का कल भी है ।

३१८३ अथमविनोद—अथम । पत्र तं १२४ । या १×१ इंच । माता—संस्कृत । विषय—  
आमुर्षेह । र कल × १ से कल × १ पुरी । से तं २२६३ । अथमपात्र ।

३१८४ अथमि एत २ । पत्र तं १२४ । से कल × १ पयुर्षे । से तं २ । अथमपात्र ।

विशेष—यं अथमि एत हिन्दी टीका अथमि है ।

अथमि पुत्रिका मित्र अथमि—

इति श्री अथमविनोद विदिते अथमविनोदे अथमविनोदः ।

यं अथमपात्र अथमपात्र अथमपात्र की पुत्रिका है ।

इति अथमि एत का अथमपात्र से ३ अथमि ( से तं य १२४, १२४ ) का अथमपात्र में यो अथमि  
( से तं १२४, १२४ ) यथा अथमपात्र में एक अथमि ( से तं ७४ ) भी है ।

३१८५ अथमविनोद—अथमि । पत्र तं १७ । या १ इंच । विषय—  
आमुर्षेह । र कल × १ से कल × १ पयुर्षे । से तं १४४ । अथमपात्र ।

अथमि हिन्दी टीका अथमि है । १७ से अथमपात्र अथमि है ।

३१८६ अथमपात्र—अथमि अथमपात्रेण ।

विषय—आमुर्षेह अथमि । र कल × १ से कल ३ ।

३१८७ योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र स० १२ से ४८ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१०२१ ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ में श्रमो नहीं हैं ।

द्वितीय ग्रन्थकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा स्तराजगण अत्रेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि चालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय ।

३१८८ योगचिन्तामणि । पत्र स० ४ । मा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९ योगचिन्तामणि । पत्र स० १२ से १०५ । मा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८५४ ज्येष्ठ बुदो ७ । अपूर्ण । वे० स० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्य प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९० योगचिन्तामणि । पत्र स० २०० । मा० १०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

३१९१ योगचिन्तामणिबीजक । पत्र स० ५ । मा० ६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२ योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्ति । पत्र स० १५८ । मा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में सक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३ प्रति सं० २ । पत्र स० १२८ । ले० काल × । वे० स० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४१ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८३८ आषाढ बुदो २ । वे० सं० ८८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सागानेर में गोधों के चैत्यालय में प० ईश्वरदास के चेलों की पुस्तक  
में प्रतिलिपि की थी ।

३१९६ प्रति सं० ५ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १७७९ वैशाख सुदो २ । वे० स० ६६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवरज वैद्य ने स्वपठनार्य प्रतिलिपि की थी ।



३१६७ प्रति स० ६। पत्र नं १३। मे वाच नं १०६९ अनेत्र कुटी ४। घूर्ण। के नं १६।  
अ मन्वार ।

विशेष—अति लठीक है। मन्वस सो पत्र लठी है।

३१६८. आंगारान—बरमधि। पत्र नं २२। या १३५० इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—मनुष्य।  
१ वाच ×। मे वाच नं १२१ पाण्डु कुटी १। घूर्ण। के नं २२। अ मन्वार ।

विशेष—चातुर्वेद वा मंडूक काल है तथा जलरी दीया है। अंगारान ( चातुर्वेद ) के नं गिरधर के अन्वय  
पुष्पकाल के निगवाया था।

३१६९. योगदानदीना—। पत्र नं २२। या १३५१ इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—चातुर्वेद।  
१ वाच ×। मे वाच ×। घूर्ण। के नं २७६। अ मन्वार ।

३२०. आंगारान—। पत्र नं ७। या १३५२ इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—चातुर्वेद।  
१ वाच ×। मे वाच नं १९९। घूर्ण। के नं ७२। अ मन्वार ।

विशेष—यं विषय मनुष्य के अंगारान अतिनिधि की थी। अति दीया कहित है।

३२०१. आंगारान—। पत्र नं ७०। या १३५३ इक्ष। भावा—द्विषी। विषय—चातुर्वेद।  
१ वाच ×। मे वाच ×। घूर्ण। के नं १३३। अ मन्वार ।

३२०२. रसमन्त्रादी—शास्त्रिताथ। पत्र नं १२। या १३५४ इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—  
चातुर्वेद। १ वाच ×। मे वाच ×। घूर्ण। के नं १३६। अ मन्वार ।

३२०३. रसमन्त्रादी—शास्त्रिताथ। पत्र नं १९। या १३५५ इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—  
चातुर्वेद। १ वाच ×। मे वाच नं १३५६ वाचन कुटी २। घूर्ण। के नं १६६। अ मन्वार ।

विशेष—यं पद्यकाल सोमनेर निवली न जलपुर में किन्दासिधि के कल्पित के अन्वय जयपत्र के पत्र  
वर्ष प्रतिनिधि की थी।

३२०४. रसमन्त्रादी—। पत्र नं ४। या १३५६ इक्ष। भावा—द्विषी। विषय—चातुर्वेद। १  
वाच ×। मे वाच ×। घूर्ण। के नं १३३। अ मन्वार ।

३२०५. रसमन्त्रादी—। पत्र नं १२। या १३५७ इक्ष। भावा—मंडूत। विषय—चातुर्वेद।  
१ वाच ×। मे वाच ×। घूर्ण। के नं १३६६। अ मन्वार ।

३२०६. रामविन्दोद—रामचन्द्र। पत्र नं २१६। या १३५८ इक्ष। भावा—द्विषी पत्र।  
विषय—चातुर्वेद। १ वाच नं १६२। मे वाच ×। घूर्ण। के नं १९४४। अ मन्वार ।

विशेष—चातुर्वेद पत्र इत ईश्वरचार काल वा द्विषी पत्राचरत है।

आयुर्वेद ]

३००७ प्रति स० २ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १८५१ वैशाख सुदी ११ । वै० स० १६३ । ख

भण्डार ।

विशेष—जीवणालालजी के पठनार्थ भैमलाना ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३००८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वै० स० २३० । छ मण्डार ।

३००९ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १८८२ । ट मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिमा अपूर्ण ( वै० स० १६६६, २०१८, २०६२ ) शीर हैं ।

३०१० रासायनिकशास्त्र । पत्र स० ४२ । आ० ५<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ६६८ । च मण्डार ।

३२११ लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८६ । आ० ११<sup>३</sup>×५ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १०८४ । अ मण्डार ।

३२१२ लङ्घनपथ्यनिर्णय । पत्र स० १२ । आ० १०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वै० स० १६६ । ख मण्डार ।

विशेष—प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३०१३ विषहरनविधि—सतोष कृषि । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

आयुर्वेद । २० काल स० १७४१ । ले० काल स० १८६६ भाव सुदी १० । पूर्ण । वै० स० १४४ । छ मण्डार ।

सिस रिप वैद भर खडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।

चद्रापुरी सवत् गिनो चद्रापुरी भुकाम ॥२७॥

सवत् यह सतोष कृत तादिन कविता कीन ।

सशि मनि गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३०१४ वैद्यकमार । पत्र स० ५ से ५४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । वै० काल × । पूर्ण । वै० स० ३३४ । च मण्डार ।

३०१५ वैद्यजीवन—लोलिम्बरराज । पत्र स० २१ । आ० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१५७ । अ मण्डार ।

विशेष—५वीं जिलास तक है ।

३२१६ प्रति स० २ । पत्र स० २१ से ३२ । ले० काल स० १८३८ । वै० स० १५७१ । अ

मण्डार ।

३१६७ प्रति स० ३। पत्र तं ११। के बाल तं १७६६ क्केठ दुरी ४। घूर्ण। के तं १६।  
अ भयार।

विशेष—प्रति लठीक है। प्रथम दो पत्र यही हैं।

३१६८ योगरात—बरुशि। पत्र तं २१। मा १३×५ दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—आयुर्वेद।  
र बाल /। के बाल तं १६१ भागक दुरी १। घूर्ण। के तं १२। अ भयार।

विशेष—आयुर्वेद का संज्ञक पत्र है तथा उसकी बीजा है। बंजाली ( बाटू ) में पं दिवसके के ब्यात  
पुत्रीताय के निरूपणका बा।

३१६९. योगरातटीका—। पत्र तं २१। मा ११ $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—आयुर्वेद।  
र बाल ×। न बाल ×। घूर्ण। के तं २७६। अ भयार।

३० योगरातक—। पत्र तं ७। मा १ $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—आयुर्वेद।  
र बाल ×। के बाल तं १६६। घूर्ण। के तं ७२। अ भयार।

विशेष—यं विषय लघुत्र के स्वयच्छर्मा प्रतिनिधि की थी। प्रति बीजा बहिन है।

३० १ योगरातक—। पत्र तं ७। मा १ $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—द्विधी। विषय—आयुर्वेद।  
र बाल ×। के बाल ×। घूर्ण। के तं १२३। अ भयार।

३० २ रसमञ्जरी—शक्तिनाम। पत्र तं १२। मा १×२ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—  
आयुर्वेद। र बाल ×। के बाल ×। घूर्ण। के तं १३६। अ भयार।

३० ३. रसमञ्जरी—शाङ्गधर। पत्र तं १६। मा १×२ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—  
आयुर्वेद। र बाल ×। के बाल तं १६४ बाणक दुरी २२। घूर्ण। के तं १६१। अ भयार।

विशेष—यं बालनाम जोधनेर निवासी ने जयपुर में विश्वामणि के कबिर के विषय जयपत्र के पद  
कार्य प्रतिनिधि की थी।

३०४ रामचन्द्रक—। पत्र तं ४। मा १ $\frac{१}{२}$ ×२ दण्ड। भाग—द्विधी। विषय—आयुर्वेद। र  
बाल ×। न बाल ×। घूर्ण। के तं २३२। जीर्ण। अ भयार।

३०५ रामचन्द्रक—। पत्र तं १२। मा १×२ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—संस्तुत। विषय—आयुर्वेद।  
र बाल । के बाल ×। घूर्ण। के तं १३६९। अ भयार।

३०६ रामविनाय—रामचन्द्र। पत्र तं ११६। मा १×२ $\frac{१}{२}$  दण्ड। भाग—द्विधी वः।  
विषय—आयुर्वेद। र बाल तं १६१। के बाल ×। घूर्ण। के तं १३४८। अ भयार।

विशेष—आयुर्वेद का इव संस्तुत काल का द्विधी वयमुत्तर है।

आयुर्वेद ]

३२२६ वैद्यकसारोद्धार—ममहर्कृता श्री हर्षकीर्तिसूत्रि । पत्र स० १६७ । प्रा० १०×४ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १७८६ प्राणोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८० । म्र भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगरि के शिष्य गरिगुन्दरगुण ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३०३० प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७७३ माप । वे० सं० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१ वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र स० २० । प्रा० ६×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वे० स० ३५८ । ज भण्डार ।

विशेष—माणिक्यभट्ट महामदावाद के रहने वाले थे ।

३२३२ वैद्यविनोद । पत्र स० १८३ । प्रा० १०३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३०६ । म्र भण्डार ।

३२३३ वैद्यविनोद—भट्टशकर । पत्र स० २०७ । प्रा० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७२ । म्र भण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी सवेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । म्र भण्डार ।

३२३५ प्रति स० ३ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १८७७ । वे० स० १७३३ । म्र भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ वैशाख सुदी ५ । वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम कौजदार खानमच्छुल्लाखाजी के नामवरूपलमवा स्याहीजी श्री म्याहमालमजी की तरफ मिया साहबजी मच्छुलफनेजी का राज्य श्रीमस्तु फन्याएक । स० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ शुक्रवारलिखित मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायणे पठनार्थ ।

३२३६ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ से ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७० । म्र भण्डार ।

३२३७ शाङ्गवरसहिता—शाङ्गधर । पत्र स० ५८ । प्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८५ । म्र भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिधा ( वे० स० ८०३, ११४२, १५७७ ) मौजूद हैं ।

३२१७ प्रति सं ३। पत्र सं ३१। ले कल सं १८७२ फलपुत्र । के सं १७२। छ मन्थार।

विलेप—इसी मन्थार में ही प्रतिष्ठा ( के सं १८ १ १ ) पीर है।

३२१८. प्रति सं ४। पत्र सं ३१। ले कल ×। मयूर। के सं ११। छ मन्थार।

३२१९. प्रति सं ५। पत्र सं ३१। ले कल ×। के सं २३। छ मन्थार।

३२२ बैद्यजीवनमन्थार—। पत्र सं ३११। या १ ×४ दण्ड। भाषा—बंरहट। विषय—  
मयूर। र कल ×। ले कल ×। मयूर। के सं ३३३। छ मन्थार।

विलेप—प्रतिष्ठा पत्र भी बड़ी है।

३२२१ बैद्यजीवनमन्थार—कृत्रमट्ट। पत्र सं २३। या १ ×२ दण्ड। भाषा—बंरहट। विषय—  
मयूर। र कल ×। ले कल ×। मयूर। के सं ११११। छ मन्थार।

विलेप—इसी मन्थार में ही प्रतिष्ठा ( के सं १ ११, १ १७ ) पीर है।

३२२२. बैद्यजीवनमन्थार—नवनमसुख। पत्र सं ३२। या ११ × २३ दण्ड। भाषा—बंरहट शिल्पी।

विषय—मयूर। र कल सं ११४२ भाषा-पुष्टी २। ले कल सं १८३३ म्हेल मुनी १। पूर्ण। के सं १८७१। छ मन्थार।

३२२३ प्रति सं २। पत्र सं ११। ले कल सं १ २। के सं १७२। छ मन्थार।

विलेप—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं १११२ ) पीर है।

३२२४ प्रति सं ३। पत्र सं २ ले ११। ले कल ×। मयूर। के सं १। छ मन्थार।

३२२५. प्रति सं ४। पत्र सं १। ले कल सं १ १३। के सं १२७। छ मन्थार।

३२२६ प्रति सं ५। पत्र सं १२। ले कल सं १ १२ लालपु पुष्टी १४। के सं २ ४। छ

मन्थार।

विलेप—पत्र सं २ में कुविशुभत वैराज्य के म्हेल कुशेज्योति के विषय में भाषा-पत्र के स्वयं प्रतिनिधि भी है।

३२२७ बैद्यजीवनमन्थार—। पत्र सं ११। या १ २ × २ दण्ड। भाषा—बंरहट। विषय—मयूर।

र कल ×। ले कल सं १२ १। पूर्ण। के सं १८७१।

विलेप—वैशाख में कपार अक्षर में प्रतिनिधि भी है।

३२२८. प्रति सं २। पत्र सं २। ले कल ×। के सं १२७। छ मन्थार।

३२४७ सज्जिपातकलिका । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ मण्डार ।

विशेष—धौवनपुर मे पं० जीवरादास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८ सप्तविधि । पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ मण्डार ।

३२४९ सर्षप्वरसमुच्चयदर्पण । पत्र सं० ४२ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ मण्डार ।

३२५० सारसमह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १७४७ कालिक । अपूर्ण । वे० सं० ११४६ । अ मण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ सात्तोत्तररास । पत्र सं० ७३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज वृदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ मण्डार ।

३२५२ मिद्धियोग । पत्र सं० ७ से ४६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ मण्डार ।

३२५३ हरद्वैकल्प । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ मण्डार ।

विशेष—मालवागढ़ी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)



३०३८. प्रति सं० २। वष सं० १७। ले कल  $\times$ । वे सं १८३। छ मन्थार।

विलेय—इसी मन्थार में २ मठियाँ (वे सं २७ २७१) घोर हैं।

३२३३. प्रति सं० ३। वष सं ४-४। ले कल  $\times$ । मपूर्त्त। वे सं २ ८२। छ मन्थार।

३०४ शाङ्ग धरसंज्ञिताटीका—भाङ्गमङ्ग। वष सं ४१३। पा ११ $\times$ ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—संस्कृत।

विलेय—आमुर्षेय। र कल  $\times$ । ले कल सं १ १२ वीं वृत्ति १३। पूर्त्त। वे सं १३१३। छ मन्थार।

विलेय—टीका का नाम काङ्ग बरवीपिका है। यन्त्रिय बुद्धिका गिन्य प्रथार है—

मत्तप्यमन्थारकाल बीच भीमलतिहरमर्षेयमन्थारलेन विरचितप्राम धाङ्ग बरवीपियामुत्तरकाले मन्थारकाल  
वर्षेविति इति मन्थारकालः। इति मन्थार है।

३२४१ प्रति सं २। वष सं १ १। ले कल  $\times$ । वे सं ७। छ मन्थार।

विलेय—मन्थारकाल तक है विलेय ७ मन्थार है।

३२४२. शक्तिहोत्र (अध्यात्मिकता)—अनुष्ठान पद्धित। वष सं १। पा १  $\times$  ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—

संस्कृत हिन्दी। विलेय—आमुर्षेय। र कल  $\times$ । ले कल सं १७३९। पूर्त्त। वे सं १२३९। छ मन्थार।

विलेय—मत्ताअनुष्ठान के मन्थारका मुठर्षेयके मन्थारकाल हरिद्वार के इतिवृत्ति की थी।

३२४३. शाक्तिहोत्र (अध्यात्मिकता)। वष सं १। पा ७ $\frac{१}{२}$  $\times$  ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—संस्कृत।

विलेय—आमुर्षेय। र कल  $\times$ । ले कल सं १७१८ मत्ता वृत्ति १। पूर्त्त। वीर्त्त। वे सं १२ ३। छ मन्थार।

३२४४ सम्प्राप्तवित्ति—। वष सं ३। पा ११ $\times$  ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—हिन्दी। विलेय—आमुर्षेय।

र कल  $\times$ । ले कल  $\times$ । मपूर्त्त। वे सं १३ ७। छ मन्थार।

विलेय—मत्ता मन्थार होने के सम्बन्ध में नहीं मुन्थे है।

३२४५. सतिपाठनिदान—। वष सं ८। पा १  $\times$  ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—संस्कृत। विलेय—आमुर्षेय।

र कल  $\times$ । ले कल  $\times$ । पूर्त्त। वे सं २३। छ मन्थार।

३२४६. सतिपाठनिदानवित्ति—भाङ्गमङ्ग। वष सं १४। पा १२ $\times$  ४ $\frac{१}{२}$  दण। मत्ता—

संस्कृत। विलेय—आमुर्षेय। र कल  $\times$ । ले कल सं १८३३ वीं वृत्ति १२। पूर्त्त। वे सं २३। छ मन्थार।

विलेय—हिन्दी धर्म संहिता है।

३२४७ सन्निपातकलिका । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ मण्डार ।

विशेष—बीबनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८ सप्तविधि । पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ मण्डार ।

३२४९ सर्षज्वरसमुच्चयदर्पण । पत्र सं० ४२ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ मण्डार ।

३२५० सारमग्रह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १७४७ कार्तिक । अपूर्ण । वे० सं० ११५६ । अ मण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ सालोत्तररास । पत्र सं० ७३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ मण्डार ।

३२५२ सिद्धियोग । पत्र सं० ७ से ४६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ मण्डार ।

३२५३ हरढैकल्प । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ मण्डार ।

विशेष—मालवागढ़ी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)





## विषय-छंद एव अलङ्कार

३२४४ अमरवर्षिका—। पत्र सं ७३। या ११×४६ दृष। मत्ता-हिन्दी पत्र। विषय-छंद  
मलङ्कार। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १३। छ मन्थार।

विशेष—बहुवर्षीय पत्रिकार एक है।

३२४५ अशंकाररश्मिकर—वक्रिपतराज बहीभर। पत्र सं ३१। या २×२५ दृष। मत्ता-  
हिन्दी। विषय-मलङ्कार। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १४। छ मन्थार।

३२४६ अलङ्कारवृत्ति—मिलनबैन सूरि। पत्र सं २७। या १२×५५ दृष। मत्ता-हिन्दी।  
विषय-रत्न मलङ्कार। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १४। छ मन्थार।

३२४७ अलङ्कारटीका—। पत्र सं १४। या ११×४६ दृष। मत्ता-हिन्दी। विषय-मलङ्कार।  
र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १५। छ मन्थार।

३२४८ अलङ्कारस्यारत्र—। पत्र सं ७ वे ११९। या ११३×२२ दृष। मत्ता-हिन्दी। विषय-  
मलङ्कार। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं २। छ मन्थार।

विशेष—प्रति शीर्ष शीर्ष है। बीच के पत्र भी गड़े हैं।

३२४९ अविचर्यटी—। पत्र सं ९। या १२×९ दृष। मत्ता-हिन्दी। विषय-रत्न मलङ्कार।  
र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १३। छ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२५० कुमलवाचनम्—। पत्र सं २। या ११×२२ दृष। मत्ता-हिन्दी। विषय-मलङ्कार।  
र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। वे सं १७। छ मन्थार।

३२५१ प्रति स ३। पत्र सं ३। मे मल ×। वे सं १७। छ मन्थार।

३२५२ प्रति स ३। पत्र सं १। मे मल ×। पूर्ण। वे सं २२। छ मन्थार।

३२५३ कुमलवाचनम्—आप्यय हीनित। पत्र सं ९। या १२×९ दृष। मत्ता-हिन्दी। विषय-  
मलङ्कार। र मल ×। मे मल सं १७४३। पूर्ण। वे सं १३३। छ मन्थार।

विशेष—सं १ ३ पाठ दुटी २ को मूलकार मे बनपुर मे प्रसिद्धि भी भी।

छंद एव अलङ्कार ]

३२६४ प्रति स० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १२६ । ङ्ग भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५ प्रति स० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल स० १६०४ वंशाब्द सुदी १० । वे० स० ३१४ । ज

भण्डार ।

विशेष—प० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८०६ । वे० स० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७ कुवलयानन्दकारिका । पत्र स० ६ । प्रा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

मलङ्कार । २० काल × । ले० काल स० १८१६ भाषाब्द सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २८६ । ङ्ग भण्डार ।

विशेष—प० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकाएँ हैं ।

३२६८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९ चन्द्रावलोक । पत्र स० ११ । प्रा० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मलङ्कार ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७० प्रति स० २ । पत्र स० १३ । प्रा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मलङ्कारशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । वे० स० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र माह ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७१ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६२ । अ भण्डार ।

३०७२ छदानुशासनवृत्ति—हैमचन्द्राचार्य । पत्र स० ८ । प्रा० १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—छन्दशास्त्र । २० काल / । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्याख्यानानाम् अष्टमाऽध्याय समाप्त । समाप्तोऽग्रन्थ । श्री भुवनकीर्ति

शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थ निरूपित । मु० विनयमेस्त्वाम् ।

३०७३ छद्दोशतक—हर्षकीर्ति ( चद्रकीर्ति के शिष्य ) । पत्र स० ७ । प्रा० १०३×४३ इ च ।

भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—छन्दशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४ छदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र स० ३८ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

छन्दशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५ । अ भण्डार ।

## विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२४४ अमरचंद्रिका—। पत्र सं ७२। पा ११×४६ दं.। अला—दिग्धी पत्र। विषय—छंद  
धनद्वार। १ अल ×। १ अल ×। अपूर्व। १ सं ११। छ अक्षर।

विशेष—अनुर्ध्व अक्षर लभ्य है।

३२४५ अक्षरप्रमाणिकर—वृत्तिपठराज बरीधर। पत्र सं २१। पा ३२×३५ दं.। अला—  
दिग्धी। विषय—धनद्वार। १ अल ×। १ अल ×। पूर्ण। १ सं १४। छ अक्षर।

३२४६ अक्षरप्रमाणिकर—विमलचंद्र मुरारि। पत्र सं २७। पा १२×४४ दं.। अला—अंशुवत्।  
विषय—रस धनद्वार। १ अल ×। १ अल ×। पूर्ण। १ सं १४। छ अक्षर।

३२४७ अक्षरप्रमाणिकर—। पत्र सं १४। पा ११×४४ दं.। अला—अंशुवत्। विषय—धनद्वार।  
१ अल ×। १ अल ×। पूर्ण। १ सं १३। छ अक्षर।

३२४८ अक्षरप्रमाणिकर—। पत्र सं ७ से ११२। पा ११×४४ दं.। अला—अंशुवत्। विषय—  
धनद्वार। १ अल ×। १ अल ×। अपूर्व। १ सं २। छ अक्षर।

विशेष—प्रति शीर्ष शीर्ष है। बीच के पत्र भी गड़ी हैं।

३२४९ अक्षरप्रमाणिकर—। पत्र सं १। पा १२×११ दं.। अला—अंशुवत्। विषय—रस धनद्वार।  
१ अल ×। १ अल ×। अपूर्व। १ सं १५३। छ अक्षर।

विशेष—प्रति अंशुवत् टीका महि है।

३२५० अक्षरप्रमाणिकर—। पत्र सं २। पा ११×२२ दं.। अला—अंशुवत्। विषय—धनद्वार।  
१ अल ×। १ अल ×। पूर्ण। १ सं १७५। छ अक्षर।

३२५१ प्रति स ३। पत्र सं २। १ अल ×। १ सं १७३। छ अक्षर।

३२५२ प्रति स ३। पत्र सं १। १ अल ×। अपूर्व। १ सं २२३। छ अक्षर।

३२५३ अक्षरप्रमाणिकर—अप्यक्षरीकृत। पत्र सं १। पा १२×११ दं.। अला—अंशुवत्। विषय—  
धनद्वार। १ अल ×। १ अल सं १७५३। पूर्ण। १ सं १२३। छ अक्षर।

विशेष—सं १५ ३ मध्य बुटी २ को मैलालर में अक्षर के अक्षरलिपि की थी।

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोपन कछु देह ।  
 भूष्यो भ्रम तै हो बहा जहा सोधि किन सेहु ॥८॥  
 सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।  
 सित वाण भ्रुति दिन रच्यो माखन छंद विलास ॥९॥

पिंगल छंद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा प्रादि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग

किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र में नहीं है ।

३०७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ मण्डार ।

३२७९ पिंगलशास्त्र । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ मण्डार ।

३०८ पिंगलशास्त्र । पत्र सं० ४ । आ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ मण्डार ।

३०८१ पिंगलछंदशास्त्र ( छन्द रत्नावली )—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छंद शास्त्र । २० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । अ मण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।  
 डिब्बवाना हद कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी वृत छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३०८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ९८ । आ० ९×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस मलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ मण्डार ।

३०८३ प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ मण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्हू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९३ पीप बुदो ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । क मण्डार ।

३२८५ प्राकृतछंदकोश " । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७९२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२०६ अक्षयोराम—। पत्र सं १ से १३ । भा १ × ४ इव । मया-सकृत । विषय-अंश  
पत्रप । र फल × । से फल × । प्रसूरी । से सं २७ । अ नम्बार् ।

३२०७ नमिता-अक्षयोराम—। पत्र सं ७ । भा २ × ४ इव । मया-सकृत । विषय-अंश मत्प ।  
र फल × । से फल × । से सं ४२७ । अ नम्बार् ।

३२०८ विगच्छ-अक्षयोराम—। मालनकवि । पत्र सं ४१ । भा १ × ४ इव । मया-सकृत ।  
विषय-अंश मत्प । र फल सं १ १३ । से फल × । प्रसूरी । से सं १४४ । अ नम्बार् ।

विशेष—४६ में आने पर नहीं है ।

आदिभाग— श्री मन्मथस्वयमः अथ विवत । तथैवा ।

अंश भी सुन्दर मन्मथ अिवाल सुवाल विवत अरुवागी ।  
अंश भी अर पंक्रम अलम माअम अंश अिवाल अवागी ॥  
सोविअ वृ र वृ अवि श्री अमनहुन का मनु का अम अिवाली ।  
मत्प ईदु मनुप अिवाअम सुअर अंश सुवाअठ अली ॥१॥

दाहा— अिअ अलर अंशअठ अरल अरल अरुअरु ।  
अरु अमा अमीअ ती सुअर अरल अरल ॥२॥  
अठी अली अिअरि अे अर अीठी अरुअ ।  
अरुअरल अरु अल अे अरल सुअठि अमेठ । ३॥  
अिअल अरल अरुअ अमिअ अली अमिअ अलल ।  
अरु सुअठि अीअल अी, अी अीअल अरुअल ॥४॥  
अिअ अरु अलल अम है, अरिअ अठि अ हीअ ।  
अरु अरु अीअल अठि अलल अरुअरु अीअ ॥५॥  
अिअल अरु अिअरि अम अरी अीठीअ अरुअल ।  
अरु सुअठि अी अीअरि अलल अंश अिअल ॥६॥

दाहाअमीअ— अरु सुअठि अी अीअल अी सुअ अरु अलल है अम ।  
अरु अरुअ अंश अरुअरु अरु सुअठि अली है अरु ।  
अठि अिअ अिअल अिअ अी अरुअरु अरु अरि अरुअरु ।  
अठि अरुअ अंश अिअल अलल अरुअ अी अरुअरु अली ॥

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ ही मति दोपन कब्यु देह ।  
मूल्या भ्रम ते ही वहा जहा सोधि किन लेहु ॥८॥  
सवत वबु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।  
सित बाए श्रुति दिन रच्यौ माखन छद विलास ॥९॥

पिगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा भादि किलने ही प्रकार के छदों का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र में नहीं है ।

३०७८ पिगलशास्त्र—नागराज । पत्र स० १० । आ० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—सम्स्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३२७ । अ मण्डार ।

३२७६ पिगलशास्त्र । पत्र स० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—सम्स्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । अ मण्डार ।

३२८८ पिगलशास्त्र । पत्र स० ४ । आ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—सम्स्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ । अ मण्डार ।

३२८१ पिगलछदशास्त्र ( छन्द रत्नावली )—हरिरामदास । पत्र स० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्दशास्त्र । २० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० म० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष—

सवतदार नव मुनि दासीनभ नवमी गुरु मानि ।

डिडवाना हठ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र स० ६८ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस मलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ मण्डार ।

३२८३ प्राकृतछदकोष—रत्नशेखर । पत्र स० ५ । आ० १३×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ११६ । अ मण्डार ।

३२८४ प्राकृतछदकोष—अल्लू । पत्र म० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६३ । पौप बुदी ६ । पूर्ण । वे० म० ५२१ । अ मण्डार ।

३२८५ प्राकृतछदकोश । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७६२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२०२. अलक़ार—। पर नं २ से २१ । या १ × ४२ ह ब । अलक़ा-अलक़ । विषय-अलक़  
 घमन । र कल × । से कल × । अलक़ । से न २७ । अलक़ार ।

३२०३. अलक़ार—। पर नं ७ । या १ × ४ ह ब । अलक़ा-अलक़ । विषय-अलक़ार  
 र कल × । से कल × । से ४२७ । अलक़ार ।

३२०४. अलक़ार—। पर नं ४१ । या १ × ४२ ह ब । अलक़ा-अलक़ ।  
 विषय-अलक़ार । र कल से १ ११ । से कल × । अलक़ । से १४४ । अलक़ार ।

विषय—४४ से धारै पर मही है ।

आदिभाग— श्री मण्डलपत्र पर लिखत । तर्कना ।

मंसल श्री मण्डलपत्र पर लिखत अलक़ार विरा अलक़ारी ।  
 अलक़ार से पर अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ारी ॥  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ारी ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ारी ॥१॥

आदि—

अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ॥२॥  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ॥३॥  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ॥४॥  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ॥५॥

अलक़ारगीत—

अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ।  
 अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार अलक़ार ॥

दोहा—

हे कवि प्रनः सर्वज्ञ हो भति दोषन कछु देह ।  
भूल्यो भ्रम तै ही वहा जहा सोधि किन लेहु ॥८॥  
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिधि मास ।  
सित वारण श्रुति दिन रच्यो माखन छद विनास ॥९॥

पिंगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पम, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पद्य भी नहीं है ।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पद्य स० १० । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९ पिंगलशास्त्र । पद्य स० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५९ । अ भण्डार ।

३२८० पिंगलशास्त्र । पद्य स० ४ । आ० १०<sup>३</sup>×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१ पिंगलछदशास्त्र ( छन्द रत्नावली )—हरिरामदास । पद्य स० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । २० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२९ । पूर्ण । वे० स० १८६९ । अ भण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शदीनभ नवमी गुरु मानि ।  
डिडवाना हृद कूप तहि प्राय जन्म-थल जयानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पद्य स० ६८ । आ० ९×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३ प्राकृतछदकोष—रत्नशेखर । पद्य स० ५ । आ० १३×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ प्राकृतछदकोष—अल्लू । पद्य स० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९३ । पोष बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५ प्राकृतछदकोश । पद्य स० ३ । आ० १०×४ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७९२ आवरण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ भण्डार ।  
विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।



३२८६ प्राकृत्यपिगङ्गाप्रदेश—। पत्र सं २। पृ ११५३। पृ १। भाषा—प्राकृत । विषय—  
अंगवस्त्र । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ११५३। अ. नम्बर ।

३२८७ मायामुद्रा—उसवतसिंह राठौड़ । पत्र सं १६। पृ ३५६। पृ १। भाषा—हिन्दी ।  
विषय—यत्नहार । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ३७१। अ. नम्बर ।

३२८८ रघुनाथ विद्यालय—रघुनाथ । पत्र सं ३१। पृ १५४। पृ १। भाषा—हिन्दी । विषय—  
यत्नहार । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ११२। अ. नम्बर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रघुनाथजी भी है ।

३२८९. राजमञ्जुषा—। पत्र सं ६। पृ ११३×२३। पृ १। भाषा—संस्कृत । विषय—अंगवस्त्र ।  
र काल × । के काल × । अपूर्ण । के सं ३१६। अ. नम्बर ।

३२९०. राजमञ्जुषा—। पत्र सं २७। पृ १५४। पृ १। भाषा—संस्कृत । विषय—अंगवस्त्र ।  
र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ५४। अ. नम्बर ।

विशेष—प्रथम मुद्रिका विन्म नम्बर है—

एतत्त एतन्मञ्जुषायाः शब्दो विभिन्नोऽस्मिन्प्रयोगात् ।

मङ्गलाचरण—ः पत्रसंवेष्टिणी नवी मत्र ।

३२९१. बाम्नाथसङ्घार—बामनाथ । पत्र सं १६। पृ १५३। पृ १। भाषा—संस्कृत । विषय—  
यत्नहार । र काल × । के काल सं १६१८. वार्षिक मुद्रा १। पूर्ण । के सं ३३३। अ. नम्बर ।

विशेष—यत्नहार— सं १९४६ वर्षे कार्तिकमासे बुद्धज्येष्ठे तृतीया तिथौ बुद्धज्येष्ठे भिक्षुसंघे संघे कृत्वा  
मङ्गलप्रयोगे स्वस्वभक्तो पद्मनाभः ।

३२९२. प्रति सं २। पत्र सं २६। के काल सं १९२४. वार्षिक मुद्रा ७। के सं १२१। अ.  
नम्बर ।

विशेष—केवल प्रतिलिपि नही हुई है । वरिष्ठ लोगों के पत्र भी मिले हुए हैं ।

३२९३. प्रति सं ३। पत्र सं १६। के काल सं १९२६. वार्षिक मुद्रा ६। के सं १७१। अ.  
नम्बर ।

विशेष—अधि संस्कृत टीका सहित है या कि चारों ओर छठिसे पर लिखी हुई है ।

इसके परिशिष्ट अ. नम्बर में एक प्रति ( के सं ११६ ) अ. नम्बर में एक प्रति ( के सं ३७२ )  
अ. नम्बर में एक प्रति ( के सं ११ ) अ. नम्बर में दो प्रतियाँ ( के सं ६ १५१ ), अ. नम्बर में एक प्रति  
( के सं ११७ ) अ. नम्बर में एक प्रति ( के सं १५६ ) भीर है ।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । क  
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हसा ने सादरी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १४६ ) और है ।

३२६५ वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र सं० ४० । आ० ६३×५३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—प्रलङ्कार । २० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ३३ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण  
वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवस्तरे निघट्टगदवशशाक्युक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवस सगुरो सचित्रे ।

लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिर प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेय ॥

श्रीराजसिंहनृपतिजयसिंह एव श्रीटाडाक्षकारणनगरी अपहृत्य तुल्या ।

श्रीवादिराजविषुषोऽपर वाग्भट्टीय थीसूत्रवृत्तिरिह नदतु चावर्कचन्द्र ॥

श्रीमद्भूमनृपात्मजस्य बलिन शोराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका किंशूना हिता ।

हीनाधिकवचोयदत्र लिखित तद्वद्बुधै क्षम्यतां गार्हस्थ्यवनिनाय मेवनाधियोक्तैक स्वेषुतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पौमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचिताया कविचन्द्रिकाया पञ्चम परिच्छेद  
समाप्त । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखत महात्मोरूपनगरका हमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभ भूयात् ॥

३२६६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ  
भण्डार ।

३२६७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—सक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे खण्डेलवालानाव्ये सांगारणी गौत्र वाले  
मम्राट गयामुद्दीन से सम्मानित साह महिणा साह पोमा सुत वादिराज की भाषा लीहदी न इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि  
करवायी थी ।

३२६९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३०० प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१ वाग्भट्टालङ्कार टीका । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण ( पञ्चम परिच्छेद तक ) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०३. वृत्तरत्नाकर—महृ केशार। पत्र सं ११। पा १ ×४ दृष। माता—संस्कृत। विषय—श्रीर  
पातन। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं १५२१। अक्षरद्वारा।

३३०४ प्रति स २। पत्र सं ११। मे मल सं १५५४। के सं १५५४। अक्षरद्वारा।

विशेष—इसके अतिरिक्त अक्षरद्वारा में एक प्रति (के सं १२२) का अक्षरद्वारा में एक प्रति (के सं २०२) का अक्षरद्वारा में दो प्रति (के सं १०० १ १) धीरे हैं।

३३०५ वृत्तरत्नाकर—काशिदास। पत्र सं १। पा १ ×२ दृष। माता—संस्कृत। विषय—श्रीर  
पातन। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं १०६। अक्षरद्वारा।

३३०६ वृत्तरत्नाकर—। पत्र सं ७। पा १२×२२ दृष। माता—संस्कृत। विषय—श्रीरत्नम  
र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं १२। अक्षरद्वारा।

३३०७ वृत्तरत्नाकरटीका—सुब्रह्मण्य कवि। पत्र सं ४। पा ११×११ दृष। माता—संस्कृत।  
विषय—श्रीरत्नम। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं १६। अक्षरद्वारा।

विशेष—सुब्रह्मण्य द्वारा नावक टीका है।

३३०८. वृत्तरत्नाकरद्वयीका—समथसुन्दरगण्डि। पत्र सं १। पा १ ×२ दृष। माता—  
संस्कृत। विषय—श्रीरत्नम। र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं २२११। अक्षरद्वारा।

३३०९. अक्षरद्वारा—काशिदास। पत्र सं १। पा १ ×४ दृष। माता—संस्कृत। विषय—अक्षरद्वारा।  
र मल ×। मे मल ×। पूर्ण। के सं १२११। अक्षरद्वारा।

विशेष—अक्षरद्वारा विचार एक है।

३३१०. प्रति स ३। पत्र सं ४। मे मल सं १५५६ अक्षरद्वारा नुही १। के सं १२। अक्षर  
द्वारा।

विशेष—यं अक्षरद्वारा के पठनार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

३३११ प्रति स ३। पत्र सं १। मे मल ×। के सं ३२६। अक्षरद्वारा।

विशेष—श्रीरत्नम वृत्त विच्छेद कथित है।

३३१२ प्रति स ४। पत्र सं ७। मे मल सं १२२ अक्षरद्वारा नुही १। के सं ३२२। अक्षर  
द्वारा।

३३१३. प्रति स ४। पत्र सं २। मे मल सं १४ अक्षरद्वारा नुही २। के सं ३२०।  
अक्षरद्वारा।

विशेष—यं अक्षरद्वारा के विचारी अक्षर में प्रतिनिधि की थी।

३३१३ प्रति स० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८१ क्षेत्र मुदी १ । वे० स० १७८ । ज्य  
मण्डार ।

विशेष—प० सुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३३१४ प्रति स० ७ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स १८११ । ट मण्डार ।

विशेष—भाचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ मण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१ ) क, ङ, च और ज मण्डार  
मे एक एक प्रति ( वे० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७ ) ज्य मण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० १५६, १८७ )  
और हैं ।

३३१५ श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ मण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र स० ८ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत ।  
विषय—छन्दशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८६१ मासोज मुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क मण्डार ।

३३१७ श्रुतबोधटीका । पत्र स० ३ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अ मण्डार ।

३३१८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क मण्डार ।

३३१९ श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्ति । पत्र स० ७ । मा० १०३×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—  
दशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७१६ कालिक मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख मण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिमुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२० प्रति स० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ मुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं०  
२३३ । छ मण्डार ।



## विषय-सूची एवं नाटक



१३३१ आश्विनाटक—श्री मन्मथनाथ । पृष्ठ नं २३ । या १२५६ इव । भाषा—हिन्दी ।  
विषय-नाटक । १ काल × । २ काल × । पृष्ठांश नं १ । क म्पार ।

१३३२ अग्नि स १ । पृष्ठ नं २१ । क म्पार नं १३३३ अग्नि सृष्टी २ । ३ नं १०२ । क  
म्पार ।

१३३३ अग्निमान शाकुन्तल—वाग्भिराज । पृष्ठ नं ० । या १२५७ इव । भाषा—संस्कृत ।  
विषय नाटक । १ काल × । २ काल × । पृष्ठांश नं ११५० । क म्पार ।

१३३४ कर्तृसञ्ज्ञा—राजशेखर । पृष्ठ नं १३ । या १२५८ इव । भाषा—संस्कृत । विषय-  
नाटक । १ काल × । २ काल × । पृष्ठांश नं १०११ । क म्पार ।

विवेक—यदि प्राचीन है । बुद्धि प्राचीन में प्रतिबिम्बि की थी । काल के बीता बीत पत्र एक संस्कृत  
में व्याख्या की हुई है ।

१३३५ आत्मसूक्तोद्घमाटक—वाग्भिराजसूत्र । पृष्ठ नं २१ । या १२५९ इव । भाषा-  
संस्कृत । विषय-नाटक । १ काल नं १९४५ भाषा सृष्टी ५ । २ काल नं १९४० । पृष्ठांश नं १० । क  
म्पार ।

विषय—वाग्भिर में प्रतिबिम्बि हुई थी ।

१३३६ अग्नि स २ । पृष्ठ नं १२ । क म्पार नं १५५० भाषा सृष्टी २ । ३ नं १३१ । क  
म्पार ।

१३३७ अग्नि स ३ । पृष्ठ नं १० । क म्पार नं १५६० भाषा सृष्टी २ । ३ नं १३२ । क  
म्पार ।

विवेक—कुलुवट विद्याजी महर्षिना राजाशुक्ल के समयपर में प्रतिबिम्बि की थी । तथा इने में ही अथर्ववेद  
वीथान के अन्दर में विद्यावलय की ।

१३३८ अग्नि स ४ । पृष्ठ नं ११ । क म्पार नं १६१२ भाषा सृष्टी २ । ३ नं १३३ । क  
म्पार ।

१३३९ अग्नि स ५ । पृष्ठ नं १३ । क म्पार नं १०९ । ३ नं १३४ । क म्पार ।

विवेक—कुलुवट अथर्ववेद के विषय की आत्मसूक्ति में प्रतिबिम्बि करते हैं वीथान को भेद स्वयं ही  
की । इनके अतिरिक्त इनी म्पार में २ अतिरिक्त ( ३ नं १६० १३५ ) की है ।

३३३० ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र स० ४१ । आ० १२×८ इच ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १९१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १९१७ पीप ११ । पूर्ण । वे०  
स० २१९ । ङ भण्डार ।

३३३१. प्रति स० २ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९३९ । वे० स० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ से ११५ । ले० काल स० १९३९ । अपूर्ण । वे० स० ३४४ । ङ  
भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द । पत्र स० ८१ । आ० १३×७ इच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १९३४ । पूर्ण । वे० स० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र स० ४० । आ० ११×७ इच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १८७७ भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २२० । ङ  
भण्डार ।

३३३५ ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—वस्तावरलाल । पत्र स० ८७ । आ० ११×५ इच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १८५४ ज्येष्ठ बुदी २ । ले० काल स० १९२८ वैशाख बुदी ८ । वे० स० ५६४ ।  
पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जीहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६ धर्मदशाधतारनाटक । पत्र स० ६६ । आ० ११×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
नाटक । २० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम  
धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयती नाटक । पत्र स० ३ से २४ । आ० ११×४ इच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९९८ । ट भण्डार ।

३३३८ प्रबोधचन्द्रिका—चैजल भूपति । पत्र स० २९ । आ० ६×४ इच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १९०७ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० २१९ । ङ भण्डार ।

३३४० भविष्यदत्त तिलकामुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र स० ५४ । आ० १३×८ इच ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१ मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र स० ३६ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं २ सं ७ २० पत्र सं ११ है तथा ११ है मंत्र के पत्र भी नहीं है।

३३४२ प्रति सं २। पत्र सं ४२। के काल सं १ २१। के सं ३१७। क नम्बर।

३३४३ प्रति सं ३। पत्र सं ४१। के काल ×। के सं ३०७। क नम्बर।

विशेष—आरम्भ के २३ पत्र महीन लिखे बने हैं।

३३४४ प्रति सं ४। पत्र सं ४१। के काल ×। के सं १। क नम्बर।

३३४५ प्रति सं ५। पत्र सं ४०। के काल सं १११५। के सं १८। क नम्बर।

३३४६ प्रति सं ६। पत्र सं ३१। के काल सं १०१५ माह सुदी १। के सं ४०। क

नम्बर।

विशेष—कहाँ कलहर में कलत्र न होना तब में वं जो कलत्र के उपाय वं रामचन्द्र ने कपारदाय के पञ्चार्थ प्रतिमिति की थी।

३३४७ प्रति सं ७। पत्र सं ४। के काल ×। के सं २१।

विशेष—अब कल आठवीं मिला बोन वाले में प्रतिमिति कपारदी थी।

३३४८ मदनपराजय—। पत्र सं ३ सं २३। या १ × ४२ इंच। माता-बाल्य। विषय

मातृक। र काल ×। के काल ×। पुरी। के सं १११५। क नम्बर।

३३४९ प्रति सं ३। पत्र सं ७। के काल ×। पुरी। के सं १११५। क नम्बर।

३३५० मदनपराजय—। स्वल्पकाल। पत्र सं ३२। या ११२ × ५ इंच। माता-हिन्दी।

विषय-मातृक। र काल सं १११ मंत्रित सुदी ७। के काल ×। पुरी। के सं ३०१। क नम्बर।

३३५१ रागमाहा—। पत्र सं ६। या ४ × २ इंच। माता-बाल्य। विषय-बाल्य। र

काल ×। के काल ×। पुरी। के सं ११०१। क नम्बर।

३३५२ राग रागमिथों के मन्त्र—। पत्र सं ४। या २ × १ इंच। माता-हिन्दी। विषय-

काल ×। के काल ×। पुरी। के सं ३०। क नम्बर।



# विषय-लोक-विज्ञान

३३५३ अढाईद्वीप वर्णन । पत्र सं० १० । भा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक  
विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराब्द द्वीप का वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८१५ । पूर्ण । वे० सं०  
३ । ख भण्डार ।

३३५४ ग्रहोंकी ऊचाई एव आयुवर्णन । पत्र सं० १ । भा० ८३×६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी  
गद्य । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११० । अ भण्डार ।

३३५५ चन्द्रप्रज्ञप्ति । पत्र सं० ६२ । भा० १०३×४१ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा  
सम्बन्धी वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १६६४ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—मन्त्रिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपण्यत्तसी ( चन्द्रप्रज्ञप्ति ) संपूर्णा । लिखत परिप करमचद ।

३३५६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । भा० १२×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत ।  
विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०० । च  
भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७ तीनलोककथन । पत्र सं० ६६ । भा० १०३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक  
विज्ञान-तीनलोक वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ भण्डार ।

३३५८ तीनलोकवर्णन । पत्र सं० १५४ । भा० ६३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-  
लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १० ।  
अ भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में मेमिनाथ के दश भव का वर्णन  
है । प्रारम्भ में लिखा है— दू द्वार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य  
पं० सदासुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भादवा सुदी १० सं० १९११ ।

३३५९ तीनलोकचार्द । पत्र सं० १ । भा० ५×९ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।



विशेष—विशोषण के कारण पर बनता पत्रा है। तीव्रता की सम्बन्धी के विषय बड़ा उपकारी है।

३३३ प्रियोक्वित्र—। मा २ × २ इंच। माता—एच। विरव-भोरविज्ञान। २  
माता ×। मे माता सं १२०२। पूर्ण। ३ सं २३९। क म्प्यार। ३

विशेष—बनने पर तीव्रता का विषय है।

३३३३ प्रिक्वाक्वीरट—बामनेव। पत्र सं ७२। मा १९ × ७ इंच। माता—संगुत। विरव-  
भोरविज्ञान। २ माता /। मे माता सं १२२ माता मुदी २। पूर्ण। ३ सं २। क म्प्यार।

विशेष—बनने पर विषय है। अम्लीय तथा विरेह के कारण विषय सुन्दर है तथा बनने पर बने हुए भी है।

३३३७ प्रिक्वाक्वीरट—ममिक्वाक्वीरट। पत्र सं १। मा १९ × २ इंच। माता—माता। विरव-  
भोरविज्ञान। २ माता ×। मे माता सं १२६ संवितर मुदी ११। पूर्ण। ३ सं ४६। क म्प्यार।

विशेष—पट्टिन बने पर ६ विषय है। पट्टिन के विनाश की पूर्णता का विषय है जिसके बाद घोर बनने तथा  
बाई घोर भीष्मक द्वारा बोड़े गये हैं। तीव्रता विषय के विनाशकार्य का ६ के लक्ष्य के मिश्रण पर बने हैं। बानने लक्ष्य  
के लक्ष्य पर बनने हैं। बानने लक्ष्य की बानने मुदी है। उनके बाद ही विषय और हैं जिसमें एक बाहुल्य तथा तथा हुनता  
घोर विषय की माता का विषय है। तीव्रता द्वारा बोड़े बोड़ी बानने बने हैं। विषय बने सुन्दर है। इसके लक्ष्य पर घोर भी  
तीव्र-विज्ञान सम्बन्धी विषय है।

३३३३ प्रति सं ५। पत्र सं ४२। मे माता सं १२६ माता मुदी ११। ३ सं ७५।  
क म्प्यार।

३३३४ प्रति सं ३। पत्र सं २२। मे माता सं १०२२ माता मुदी २। ३ सं २३। क  
म्प्यार।

३३३५ प्रति सं ४। पत्र सं ७२। मे माता × २। ३ सं २५२। क म्प्यार।

विशेष—अति लक्ष्य है।

३३३६ प्रति सं २। पत्र सं ५। मे माता × १। ३ सं २६। क म्प्यार।

विशेष—अति लक्ष्य है। बने हुनता पर हुनता मे सुन्दर विज्ञान है।

३३३७ प्रति सं ६। पत्र सं ६६। मे माता सं १०२२ माता मुदी २। ३ सं २३। क  
म्प्यार।

विशेष—बनने पर लक्ष्य के लक्ष्य तथा मे लक्ष्य मे लक्ष्य तथा मे प्रतिनिधि लक्ष्य की।

३३३८ प्रति सं १। पत्र सं १९। मे माता सं १२२२। ३ सं १६४। क म्प्यार।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० स० २६२, २६३, ) च भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० स० १४७, १४८ ) तथा ज भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ४ ) और है ।

३३६६ त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन । पत्र स० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल स० १७१३ श्वेत सुदी ५ । ले० काल स० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति स० २ । पत्र स० १३६ । ले० काल स० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी ४ । वे० स० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१ त्रिलोकमारभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २८६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल स० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२ प्रति स० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३ प्रति स० ३ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

३३७४ प्रति स० ४ । पत्र स० १२५ । ले० काल × । वे० स० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३६४ । ले० काल स० १६६६ । वे० स० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल मुगनचन्द सोनी अजमेर वाले ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० ४५२ । आ० १२३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० २६२ । क भण्डार ।

३३७७ त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० १०८ । आ० ११३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८ त्रिलोकसारभाषा " । पत्र स० १५० । आ० १२×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९ त्रिलोकसारभाषा ( वचनिका ) । पत्र स० ३१० । आ० १०३×७३ इ च । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल स० १८६५ । वे० स० ८५ । झ भण्डार ।

३३८ शिक्षासामर्थ्य—माध्यमकत्रु त्रिविधदेव। वन में २४। पा १३×८ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-साह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं २२। क मया।

३३८१ प्रति म २। वन में १४२। मे वन ×। के तं २६। क मया।

३३८२ शिक्षासामर्थ्य—। वन में १। पा १×११ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं १। क मया।

३३८३ शिक्षासामर्थ्य—। वन में ३०। पा १३×२२ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं ७। क मया।

३३८४ शिक्षासामर्थ्य—। वन में ३२। पा १×२२ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं १११। क मया।

३३८५ शिक्षासामर्थ्य—। वन में १३। पा १३×२ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं २२७। क मया।

विषय—प्र ७ मनीष है।

३३८६ शिक्षासामर्थ्य—। वन में १३। पा १३×५ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं २४। क मया।

३३८ शिक्षासामर्थ्य—। वन में २। पा १३×७ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं १। क मया।

विषय—दु बलवान श्रीमान् एवं विद्वान्मनी की श्रेष्ठो मे प्रथम रचना हुई थी।

३३८८ शिक्षासामर्थ्य—। वन में १९। पा १२×९ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं ७०। क मया।

विषय—वाच्ये मही है केवल वर्तमान है। लोक के विषय में है। समुद्रोत्पत्ति तक पुर्ण है ज्ञानवान् के वर्तमान वदुत मे प्रतिनिधि हुई थी।

३३८९ शिक्षासामर्थ्य—। वन में १२ के ३७। पा १×२२ दव। ज्ञान-संयुत। विषय-सोह विद्या। र वन ×। मे वन ×। पुर्ण। के तं ७९। क मया।

विषय—प्रति वचन है। १ के १४ १ २१ २३ के २१ २ के ३४ तक वन मही है। वन में १२ ३९ तथा ३७ पर वचन मही है। इतने प्रतिनिधि तीन पर वचन मही है जिनके के एक के एक के, मुझे हैं पर सुवचन सुवचनीय मही तीनों मे मही वचनी वचनपूरा के विषय है। विषय सुवचन एवं वर्तनीय है।

३३६० त्रिलोकवर्णन । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० सं० ७७ । ख भण्डार ।

विशेष—तिद्धदिला में स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कहीं कहीं पीछे कपटा भी चित्रका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी विन्दुओं में बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१ प्रति स० २ । पत्र सं० २ में १० । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० ५२७ । ख भण्डार ।

३३६२ त्रिलोकवर्णन । पत्र सं० ५ । मा० १७X११ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लाक विज्ञान । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३ त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्ति । पत्र सं० ७६ । मा० १२X५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २८६ । ड भण्डार ।

३३६४ प्रति स० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० सं० २८७ । ड भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण । पत्र सं० ३ । मा० १०X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल X । ले० काल सं० १५७१ । पूर्णा । वे० सं० ८६८ । ख भण्डार ।

विशेष—१० हर्षागम गणि वाचनार्थ लिखित कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जेनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एवं त्रेता में होने वाले भवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६ सधषण्टपत्र । पत्र सं० ६ में ४१ । मा० ६३X४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल X । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टुन्वा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २३, २६ । २८ में ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ में प्रागे त्र नहीं हैं ।

३३६७ सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६६ । मा० १३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३११ । ख भण्डार ।



## विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र



३३६८. अज्ञानमदुवाचा—[पत्र सं २ । भा १२] ४५५ पृष्ठ । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित ।

१ नाल × १ से नाल × १ पुर्ण । की की ११ । क मकार ।

३३६९. प्रति सं २ । पत्र सं २ । से नाल × १ की की ११ । क मकार ।

३४ • उपदेशद्वयसी—विनम्र । पत्र सं २ । भा १२ ४५५ पृष्ठ । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । १ नाल × १ से नाल सं १५३६ । पुर्ण । की की ४२५ । क मकार ।

विषय—

भारतम्—की सर्वश्रेष्ठो मता । यत्र भी विद्यमाने वीर विद्यार्थयन्त्रेण ज्ञानीषो अस्मद्भवेन लल्लो भवन् ।

विमलशुद्धि—

लज्जल क्य माने बबुला मसूर हूँ  
 हूँ ज्ञाना भाई है न बबरीच हूँ ।  
 मुझ हि न पत्र के बरिष्ठ है न छात्र है,  
 बाल के ज्ञान कहे करम बरिष्ठतु ॥  
 ज्ञान की संवत् पुंज मुझ मुझ के विदुंज  
 प्रतिबन्ध नीतिव्युत्पत्ति अथवा वै विदुंज ।  
 वीर विनम्रज विनम्रज प्रत्यभि उपदेश  
 की बरिष्ठो कही कथर बबरीचतु ॥१॥

अभिराम कवचन—

धरे विर बरिष्ठगीठ हाथु पटी अमार वीर,  
 वी बरिष्ठगीठ वटी की वरी बरिष्ठ है ।  
 तु वी वरी बरिष्ठ है वरिष्ठ है वरी वरिष्ठ  
 वी वी वरिष्ठ वरिष्ठ वरिष्ठ वरिष्ठ है ॥  
 ज्ञान की वीर वीर वीर न बबरी,  
 वी वी वरिष्ठ वी वी वरिष्ठ वरिष्ठ है ।  
 वी वी वरिष्ठ वरिष्ठ वरिष्ठ वरिष्ठ वरिष्ठ  
 वरिष्ठ वी वरी वरी वी वी वरिष्ठ ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सर्वैया—

धरम धरम वहै मरम न कोउ लहे,  
 भरम में भूलि रहै कुल रुढ कीजीये ।  
 कुल रुढ छोरि कै भरम फद तोरि कै,  
 सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीये ॥  
 दया रूप सोइ धर्म धर्म तैं कटै हे मर्म,  
 भेद जिन धरम पीसूप रस पीजीये ।  
 करि कै परीक्षया जिनहरप धरम कीजीये,  
 बसि कैं कसोटी जैंने कचरण क लीजीये ॥३५॥

अथ प्रथ समाप्त कथन सर्वैया इकतीसा  
 भई उपदेस की छतीभी परिपूर्णा चतुर नर  
 है जे याकौ मच्य रस पीजीये ।  
 मेरी है अलपमति तो भी में कोए कवित,  
 कविताह सी ही जिन ग्रन्थ मान लीजीये ॥  
 सरस है है बखाण जोऊ भवसर जाण,  
 दोइ तीन याकै भैया सर्वैया कहीजीयो ।  
 कहै जिनहरप सवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,  
 जु गुण कै सावास मोकु दीजीयो ॥३६॥  
 इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्णा ।

सवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि भा, कवरा मले री देश ।  
 सपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ॥  
 सूरबलि तो सूहामणी, कर मोहि गग प्रवाह ।  
 माडल तरौ प्रगणो पाणी अथग अयाह ॥२॥

३४०१ उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र स० १४ । भा० १२३×७३ इच । भाषा—हिंदी । विषय—  
 सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२ कर्पूरप्रकरण... । पत्र स० २४ । भा० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६३ ।

विशेष—१७६ पद्य ॥ अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

वी बन्धनेनान्दुःखीनिवयति  
 सार प्रबन्धानुत्तरानुत्तरम् ।  
 विप्रेक्ष्य च हृदितोय निपुण  
 सुतामनी वैविधिरिव वर्ता ॥१७६॥

इति ननु शान्ति सुभाषित बीष्म सम्प्रदा ॥

३४०३ प्रति स २। पद्य ३। २। के नाल ३। १२४० ज्येष्ठ सुदी २। के मं १३। क  
 न्यकार ।

३४०४ प्रति स ३। पद्य ३। १२। के नाल ३। १७०६ कार्तिक ४। के ३। २०६। क  
 न्यकार ।

विशेष—बुधरथस्य के प्रतिनिधि वी वी ।

३४०५ कामन्दकीय नीतिशार भाष्य—। पद्य ३। २। के १७। पा १२४० दश। मत्स्य-द्विती  
 पद्य। विपद्य-दीति। २। नाल ×। के नाल ×। पशुर्ली। के ३। २। म् न्यकार ।

१४। ६। प्रति स ३। पद्य ३। १३। के नाल ×। पशुर्ली। के ३। २। म् न्यकार ।

३४०७ प्रति स ३। पद्य ३। १३। के नाल ×। पशुर्ली। के ३। १५। म् न्यकार ।

३४०८ वायुसूक्तनीति—वायुसूक्त। पद्य ३। १३। पा १ × ४६। दश। मत्स्य-संज्ञित। विपद्य-  
 नीतिशार। २। नाल ×। के नाल ३। १६। संवत्तर सुदी १४। पूर्ण। के ३। ११। म् न्यकार ।

इसी न्यकार के ३। प्रतियां (के ३। ११। २२। ११। १२४४। १२४४।) धीर हैं।

३४०९ प्रति स २। पद्य ३। १। के नाल ३। १५४२ बीष्म सुदी ३। के ३। ७। म  
 न्यकार ।

इसी न्यकार के ३। प्रतियां (के ३। ७।) धीर हैं।

३४१। प्रति स ३। पद्य ३। १४। के नाल ×। पशुर्ली। के ३। १७। म् न्यकार ।

इसी न्यकार के ३। प्रतियां (के ३। १७। १४।) धीर हैं।

३४११ प्रति स ४। पद्य ३। १३। के नाल ३। १५। ३। संवत्तर सुदी ३। पशुर्ली। के  
 ३। २३। म् न्यकार ।

इसी न्यकार के ३। प्रतियां (के ३। २४।) धीर हैं।

३४१२ प्रति स ३। पद्य ३। १३। के नाल ३। १५४४ ज्येष्ठ सुदी ११। के ३। २४। म्  
 न्यकार ।

## सुभाषित एव नीतिशास्त्र ]

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० स० १३८, २४८, २५० ) और हैं ।

३४१३ चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । सम्रहकर्त्ता—मयुरेश भट्टाचार्य । पत्र स० ७ ।  
भा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१० ।  
अ भण्डार ।

३४१४ चाणक्यनीतिभाषा । पत्र स० २० । भा० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियो का अधिक प्रयोग  
हुआ है ।

३४१५ छद्मशतक—चुन्दावनदास । पत्र स० २६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
सुभाषित । २० काल स० १८६८ माघ सुदी २ । ले० काल स० १६४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १७८ । क  
भण्डार ।

३४१६ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी ६ । वे० स० १८१ । क  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० स० १७६, १८० ) और हैं ।

३४१७ जैनशतक—भूवरदास । पत्र स० १७ । भा० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
२० काल स० १७८१ पौष सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १६७७ फागुण सुदी ५ । वे० स० २१८ । क  
भण्डार ।

३४१९ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजो पर है । इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० २१६ ) और है ।

३४२० प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ५६० । च भण्डार ।

३४२१ प्रति स० ५ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८८६ । वे० स० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० २८४ ) और है जिसमे कर्म छतीसी पाठ भी है ।

३४२२ प्रति स० ६ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १८८१ । वे० स० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १६५१ ) और है ।

३४२३ ढालगण्य ... । पत्र स० ८ । भा० १२×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । क भण्डार ।



३४२४ लक्ष्यार्थमाप्तम्—। पत्र ७ ३३ । पा ११०२ इव । असा—असह्य । विषय—मुभाषित ।

२ कल × । ले कल ४ ११३६ क्वेत्त मुदी १ । पूर्ण । के ४ ४६ । अ कथार ।

विलेप—कैकट प्रकृति—

एवम् ११३६ वर्षे अहेतुमाके सुहृदोः बन्धुव्यतिथी सुबनजरे विवाहमन्त्रे परिचयोः अथा विवसे । असीधर  
 वैद्यामये । श्रीपाणिनामनगरे श्रीभुतसर्वे तस्वटीकन्धे बहुराजाज्वले श्रीपुत्रमुभाषानामये कृत्वा पद्यमन्त्रेणस्तस्य  
 म श्री सुबनजरेवामन्त्रेण श्री श्री विनयनयैवामन्त्रेण श्री श्री ब्रह्मात्मनैवामन्त्रेण श्री ब्रह्मात्मने श्री कर्म (४) इ  
 देवामन्त्रेण श्री महाशक्ति श्री लक्ष्मीनि देवामन्त्रेण श्री महाशक्ति श्री कर्मक्रीति देवामन्त्रेण श्री श्रीकल्याणदेवामन्त्रेण श्री श्री  
 मीर मातृ इत्येवाम् अर्थं पुत्र द्विव प्रत्येक बहवुः श्रुतिक पुत्र देवामन्त्रे । सप्त एवम् अर्थं एवमादे तत्र पुत्र लक्ष्मी  
 मत् । सप्त देवामन्त्रे एव अर्थं द्विव प्रत्येक अर्थं सप्तमन्त्रे इति श्रीक—। अर्पुर् ।

३४२५ अवि सं० २ । पत्र ४ ३ । ले कल × । अर्पुर् । के ४ ११४२ । अ कथार ।

विलेप—१ के माने एव मदी है ।

श्रावण—

शुद्धलक्ष्मणवार्त्तं श्रुतिलक्षं टुटी कुर्त्त ।

लक्ष्मणवार्त्तं नाम कर्त्तये अहेतुम् ॥

वर्षे सुते पापमुर्दिता नात्त वर्षे कृते पुष्य मुर्दिता कृत्ति ।

स्वर्गायनर्त्तं असीधर वीर्यं वर्षे सुते देव न कल्पतामि ॥२॥

३४२६ ब्राह्मणे—। पत्र ४ ३ । पा १ × १३ इव । असा—हिन्दी । विषय—मुभाषित । २  
 कल × । ले कल × । अर्पुर् । के ४ १२४० । अ कथार ।

३४२७. उद्योगविराट—। पत्र ४ ३७ । पा २२ × ४२ इव । असा—असह्य । विषय—मुभाषित ।  
 २ कल × । ले कल × । पूर्ण । के ४ ३२ । अ कथार ।

विलेप—हिन्दी वर्ष विवा है । पत्र १२ के माने ३३ कुत्तर लीन्दी का संवत् पीर है ।

३४२८ ध्यानविक्षास—धामतराय । पत्र ४ ३ के १३ । पा २ × ४ इव । असा—हिन्दी । विषय—  
 भाषित । २ कल × । ले कल × । अर्पुर् । के ४ ३४ । अ कथार ।

३४२९. वर्षविक्षास—धामतराय । पत्र ४ २३४ । पा १२ × ७२ इव । असा—हिन्दी । विषय—  
 मुभाषित । २ कल × । ले कल ४ १२३५ क्वेत्त मुदी १ । पूर्ण । के ४ ३४२ । अ कथार ।

३४३ अवि सं २ । पत्र ४ ११६ । ले कल ४ १२४६ मातोव मुदी १ । के ४ ४२ । अ  
 कथार ।

विलेप—असह्यवरी सप्त के पुत्र विवाहवरी के निविवाह सेवक ( श्रीविर्यो का मन्त्र ) के लिए  
 विवाहमन्त्र वेदावरी के वीर्य के श्रुतिक विवाहवरी के ।

३४३१ प्रति स० ३ । पत्र स० २६१ । ले० काल स० १६१६ । वे० स० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३४० ) श्रीर है ।

३४३२ प्रति स० ४ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । वे० स० ५१ । ञ भण्डार ।

३४३३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त, । पत्र स० २ । ग्रा० ८×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १७८ । च भण्डार ।

३४३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६३४ । वे० स० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पचरत्न श्रीर है । श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७ नीतिसार । पत्र स० ६ । ग्रा० १०३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८ नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६३७ भादवा सुदी ४ । वे० स० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ३८६, ४०० ) श्रीर हैं ।

३४४० प्रति स० ३ । पत्र स० २ में ८ । ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८४ । वे० स० १७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—फलापनगर में पादर्वनाथ चैत्यालय में गोर्दनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३ नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ६ । ग्रा० १०३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । ङ भण्डार ।

३४४४ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १४२ । ञ भण्डार ।

३४४४. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि। पत्र सं ३३। भा ११५२ इव। भाषा—उत्तर।

विषय—नीतिवाक्य। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ३५४। छ मन्थार।

३४४५. नीतिविन्दु—। पत्र सं ४। भा १५४२ इव। भाषा—हिन्दी। विषय—नीतिवाक्य।

र काल ×। ले काल सं १११। के सं ३३३। छ मन्थार।

विषय—ममालाल पांड्या ने संकलित करवाया था।

३४४६. नीतिमूल। पत्र सं ११। भा १३५४ इव। भाषा—उत्तर। विषय—सुभाषित। र

काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ३३५। छ मन्थार।

३४४७. नीतिरेखां वाचसाह की इस छात्र। पत्र सं २। भा ४२५६ इव। भाषा—हिन्दी। विषय—

उपदेश। र काल ×। ले काल सं ११४३ बीबाब गुरी १४। पूर्ण। के सं ४। छ मन्थार।

विषय—सबोकाबाल पाण्डे ने इतिहासि की थी।

३४४८. पञ्चतन्त्र—यं विष्णु शर्मा। पत्र सं १४। भा १२५२ इव। भाषा—उत्तर। विषय—

नीति। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। के सं १५। छ मन्थार।

इसी मन्थार में एक इति (के सं ३३७) भी है।

३४४९. इति सं २। पत्र सं १। ले काल ×। के सं ११। छ मन्थार।

विषय—इति प्राचीन है।

३४५०. इति सं ३। पत्र सं २४ से ११५। ले काल सं १५३२ बीन गुरी १। अपूर्ण। के सं

११४। छ मन्थार।

विषय—पूर्वकाल सूरि द्वारा संकलित पुरीहित मनीरव प्योबाल बज्जरा ने कर्नाट अयतनर (अमरुट)

में पूर्णरिहनी के वाचनकाल में इतिहासि की थी। इस इति का बीरब्रज सं १ २२ अमरुट गुरी ६ के द्वारा था।

३४५१. इति सं ४। पत्र सं २५। के काल सं १५५७ बीन गुरी ४। के सं १११। छ मन्थार।

विषय—इति हिन्दी वर्ष संकलित है। प्राण्य में संवही बीबल अमरुटनी के वाच्य में मयलकुच अल के

द्विज्य माखिनयनर ने वाचन्य की हिन्दी अंश लिखी।

३४५२. पञ्चतन्त्रभाषा—। पत्र सं २२ से १४३। भा १५७२ इव। भाषा—हिन्दी पत्र।

विषय—नीति। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। के सं १३७५। छ मन्थार।

विषय—विष्णु शर्मा के संकलित पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुबाव है।

३४५३. पांचबोझ—। पत्र सं २। भा १५४ इव। भाषा—उत्तर। विषय—उपदेश। र

काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ११६१। छ मन्थार।

३४५५ पैसठवोल । पत्र स० १ मा० १०×४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७६ । अ्र भण्डार ।

विशेष—अ्रय बोल ६५

[१] अ्रय लोभी [२] निरदई मनस्त्र होसी [३] विसवासघाती मत्री [४] पुत्र सुना अ्ररना लोभा [५] नीचा पेपा भाई बंधव [६] अ्रसतोप प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [८] पान्णडी शास्त्र बाच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगअ्रही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छत्र छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घण्टु करसी दुष्ट बलवत सुभ सो [१६] जोवनवतजरा [१७] अ्रकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अ्रगहीण मनुष्य होसी [२०] अ्रलय मेघ [२१] उल्ल सात घीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष्य होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सया " [२५] [२६] [२७] " " [२८] [२९] अ्रराकीषा न कीषो कहसी [३०] आपकी कीषो दोप पैला का लगावसी [३१] अ्रसुद्ध साप भएसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेप धारावैरागी होसी [३४] महकार द्वेप मुख घणा [३५] सुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंदा घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भगतए लज्या करसी [४२] अ्रफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होमी [४८] धरती मे मेह थोडो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोडो होसी [५०] बिना देस्या चुगली करसी [५१] जाको मरणो लेसी तामू ही द्वेप करी खोटी करसी [५२] गज हीणा चाजा होसासी [५३] न्याइ कहाँ हान क लेसी [५४] अ्रवर्चसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [५७] नीच जात अ्रदान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अ्रस्त्री कलेस गराघण [६०] अ्रस्त्री सील हीण घणी होसी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होमी [६३] ससार चलावाता से दुखी जाण जोसी ।

॥ इति श्री पचावण बोल सपूरण ॥

३४५६ प्रबोधसार—यश कीर्ति । पत्र स० २३ । मा० ११×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७५ । अ्र भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल अ्रपत्र श का उल्या है ।

३४५७ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० स० ४६५ । क भण्डार ।

३४२८ मरनोत्तर रत्नमाळा—मुक्कसीवास । पत्र सं २ । पा २३×२२ द.व । भाषा—ब्रजभाषा ।  
विषय—सुभाषित । र काल × । नि काल × । पूर्ण । नि सं १२७ । छ मन्थार ।

३४२९ मरनोत्तररत्नमाळिका—समाजवर्ष । पत्र सं २ । पा ११×२२ द.व । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—सुभाषित । र काल × । नि काल × । पूर्ण । नि सं २७ । छ मन्थार ।

३४३० प्रति सं २ । पत्र सं २ । नि काल सं १२७१ मंत्रादि सुवी २ । नि सं ३१९ । छ  
मन्थार ।

३४३१ प्रति सं २ । पत्र सं २ । नि काल × । नि सं ११ । छ मन्थार ।

३४३२ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । नि काल × । नि सं १७१२ । छ मन्थार ।

३४३३ प्रस्थापित रत्नोक्त— । पत्र सं ३९ । पा ११×२२ द.व । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । र काल × । नि काल × । पूर्ण । नि सं २१४ । छ मन्थार ।

विषय—हिन्दी पर्व बहिव है । विविध प्रश्नों के उत्तर पद्यों का संग्रह है ।

३४३४ बाणसूत्री—सूरत । पत्र सं ७ । पा २×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
र काल × । नि काल × । पूर्ण । नि सं २२६ । छ मन्थार ।

३४३५ वारहसूत्री— । पत्र सं २ । पा १०×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
र काल × । नि काल × । पूर्ण । नि सं २२६ । छ मन्थार ।

३४३६ वारहसूत्री—वारहंदास । पत्र सं २ । पा १०×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
र काल सं १२२ पीठ सुवी १ । नि काल × । पूर्ण । नि सं २४ ।

३४३७ सुपजनविवास—सुपजन । पत्र सं १४ । पा ११×२२ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—  
संस्कृत । र काल सं १११ कर्त्तिक सुवी २ । नि काल × । पूर्ण । नि सं ८ । छ मन्थार ।

३४३८ सुपजन सवसर्ग—सुपजन । पत्र सं ४४ । पा १०×२२ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । र काल सं १२२ श्रेष्ठ सुवी ४ । नि काल सं ११८ भाष सुवी २ । पूर्ण । नि सं ४४४ । छ  
मन्थार ।

विषय—७ दोहों का संग्रह है ।

३४३९ प्रति सं ३ । पत्र सं २२ । नि काल × । नि सं ७१४ । छ मन्थार ।

दली मन्थार के २ प्रतिमा ( नि सं १२४ १२४ ) कीर हैं ।

३४४० प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । नि काल × । पूर्ण । नि सं १२४ । छ मन्थार ।

३४७१ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ७२९ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ७४६ ) और है ।

३४७२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल स० १९५४ आषाढ सुदी १० । वे० स० १६४० । ट

भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० १६३२ ) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र स० ३०३ । ले० काल × । वे० स० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ५३६ ) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४ ब्रह्मविनास—भैया भगवतीदास । पत्र स० २१३ । आ० १३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल स० १७५५ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २३२ । ले० काल × । वे० सं० ५३९ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति मुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ५३८ ) और है ।

३४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२० । ले० काल × । वे० स० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७ प्रति स० ४ । पत्र स० १३७ । ले० काल स० १८५७ । वे० स० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोधनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मित्ती माह सुदी ९ स० १८८६ में गोविन्दराम साहवडा ( छावडा ) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८ प्रति स० ५ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १८८३ चैत्र सुदी ९ । वे० स० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी वज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था ।

३४७९. प्रति स० ६ । पत्र स० २०३ । ले० काल × । वे० स० ७३ । न भण्डार ।

३४८० ब्रह्मचर्याष्टक । पत्र स० ५६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । वे० स० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१ भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ वा नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

एही अण्डार में ८ प्रतिष्ठा ( के नं १२४, १२९ १२ १२६, ७९१ १ ७४, ११३१, ११७१ )  
पीर है ;

३४-७ प्रति स० ७ । पत्र तं १२ । के नं १११ । अण्डार ।  
एही अण्डार में २ प्रतिष्ठा ( के नं २९२, २९३ ) अण्डार पीर है ।

३४-८ प्रति स ३ । पत्र तं ११ । के नं ११३ । अण्डार ।

३४-९ प्रति स० ४ । पत्र तं १० । के नं १०२ । अण्डार ।

एही अण्डार में एक प्रति ( के तं २०० ) पीर है ।

३४-१० प्रति तं ४ । पत्र तं ३२ । के नं ११२० । के तं २०४ । अण्डार ।

विशेष—अति संसूत हीरा हीरक है । मुक्तकाल के अण्डार के प्रतिष्ठा की थी ।

३४-११ प्रति सं० ६ । पत्र तं ३२ । के नं ११२२ । अण्डार ।

३४-१२ प्रति सं ७ । पत्र तं ३३ । के नं ११२३ । अण्डार ।

३४-१३ आभरावक—श्री आभरावक । पत्र तं १४ । या १४४९ । अण्डार । अण्डार—संसूत । विशेष—  
मुक्तकाल । २ नं ११२४ । के नं ११२४ । अण्डार ।

३४-१४ मनमात्रकालहीरा—अण्डार के अण्डार । पत्र तं ३३ । या ११२५ । अण्डार । अण्डार—  
हिन्दी पत्र । विशेष—मुक्तकाल । २ नं ११२६ । के नं ११२६ । अण्डार । के तं २९६ । अण्डार ।

विशेष—अती लज्जित विशेषों पर हीरों का अण्डार है ।

एही अण्डार में एक प्रति ( के तं २९६ ) पीर है ।

३४-१५ मात आभरी—मातकवि । पत्र तं २१ । या ११२६ । अण्डार । अण्डार—हिन्दी । विशेष—  
मुक्तकाल । २ नं ११२७ । के नं ११२७ । अण्डार ।

३४-१६ मित्रविद्या—पासी । पत्र तं ३४ । या ११२७ । अण्डार । अण्डार—हिन्दी पत्र । विशेष—  
मुक्तकाल । २ नं ११२८ । अण्डार । अण्डार । के नं ११२९ । अण्डार । के तं २०६ । अण्डार ।

विशेष—अण्डार के अण्डार अण्डार अण्डार अण्डार अण्डार अण्डार अण्डार अण्डार ।

३४-१७ अण्डार— । पत्र तं १ । या ११२९ । अण्डार । अण्डार—संसूत । विशेष—मुक्तकाल । २  
नं ११३० । के नं ११३० । अण्डार ।

## सुभाषित एव नीतिशास्त्र ]

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०२१ ) तथा व्य भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३४५ क ) भी है ।

३४६३ रत्नकोष । पत्र सं० १४ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विषय—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवश, ७ अगराज्य, राजाघो के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राव्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । भा० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । क भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनम अथ राजनीत जसुराम कृत लीखत ।

दोहा—

भछर भगम भवार गति कितहु पार न पाय ।

सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय ॥

छप्पय—

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग भसरन सरनी ।

कर करुनो करन तरन सब तारन तरनी ॥

धार पर धरनी छत्र भरन सुख सपत भरनी ।

भरनी भ्रमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥

धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी ।

सकल भय जग बध आदि वरनी जसु जे जग धरनी ॥ मात जे० '

दोहा—

जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि भवार ।

करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

प्रन्तिम—

लोक सीरकार राजी ओर सब राजी रहे ।

चाकरी के कीये विन लालच न चाइये ॥

किन हु की भली धुरी कहिये न काहु भागी ।

सटका दे लछन कडु न आप साई है ॥

राय के उजीर नमु राख राख लेत रग ।

येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये ॥

रीक लीक सिरकु चढाय लीजे जसुराम ।

येक परापत्त कु येते गुन चाहीये ॥४॥



३४२८. राजनीति शास्त्र—द्वैतीदास । वचन ५ । पा १७ । पा २३ × ६ इव । भाषा—हिन्दी वच । विषय—राजनीति । र वचन × । ले वचन सं ११७१ । पूर्ण । के सं ३४३ । अक्षर १ ।

३४२९. कबुचाधिकार राजनीति—आशुबचन । वचन सं ९ । पा १९ × २३ इव । भाषा—नेपाल । विषय—राजनीति । र वचन × । ले वचन × । पूर्ण । के सं ३४१ । अक्षर १ ।

३४३०. बुद्धसदसई—कवि बुद्ध । वचन सं ४ । पा १३ × १५ इव । भाषा—हिन्दी वच । विषय—सुभाषित । र वचन सं ३७९१ । के वचन सं ११४ । पूर्ण । के सं ७७१ । अक्षर १ ।

३४३१. प्रति सं २ । वचन सं ४१ । ले वचन × । के सं १७१ । अक्षर १ ।

३४३२. प्रति सं ३ । वचन सं ४४ । ले वचन सं १८७ । के सं १११ । अक्षर १ ।

३४०. बुद्ध आशुबचनीतिशास्त्र भाषा—मिर्जरामराव । वचन सं ३८ । पा २ × ६ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । र वचन × । ले वचन × । पूर्ण । के सं ३४१ । अक्षर १ ।

विषय—बौद्धिकवचन के अतिविधि की थी ।

३४१ प्रति सं २ । वचन सं ४८ । ले वचन × । पूर्ण । के सं ३४१ । अक्षर १ ।

३४०२. पट्टिपत्रक विषय—अतिपत्रक । वचन सं २ । पा १ × ४ इव । भाषा—नेपाल । विषय—सुभाषित । र वचन × । ले वचन सं १३७२ । पूर्ण । के सं ३२ । अक्षर १ ।

विषय—अभिज्ञ सुभाषा—

इति पट्टिपत्रकं उपन्यतं । श्री अक्षयानन्दोपाध्याय विषय सं वचन कई अक्षरिणि ।

वचन सं ३९१ वाचन सं ६ । अर्थ की भाषा में अन्वयार्थ का भाव दिया है । १६ की भाषा की अन्वय टीका विज्ञ प्रकार है—

वचन सुभाषा । श्री मेदिनीय भांडारीक पूर्व इव विद्ये सर्वस्य अक्षयानन्द । श्री विपश्चिकुटि कुशलसुभाषा लक्ष्मणे निव विपश्चिकुटि वरिचयमे सर्वलक्षणो लक्ष्मीय सर्ववर्न मूल अन्वयस्य बुद्धि हठवर्तुहृता ॥ १६ ॥ अथवा भाषा विरचयते अर्थ इति अन्वय ।

अथवा अथ बुद्धिअर्थसि रवभुवर्तुहृता ।  
सुभाषं वचन अन्वय विज्ञ वा अर्थ अन्वयार्थ ॥

अर्थ— सं १३७२ वचन की विज्ञानवचने की वचन अक्षयानन्द विषय की लक्षणोपाध्याय विषय की अतिपत्रको अन्वय हता अक्षयान्द वा अक्षयान्द सं वचन अक्षयान्दविषयान्द विरं नववचन । श्री अन्वय अथवा श्री अन्वय अन्वय ।

३४३ सुभाषीक—) वचन सं ३ । पा २३ × ४ इव । भाषा—हिन्दी वच । विषय—सुभाषित । र वचन × । ले वचन × । पूर्ण । के सं १२७ । अक्षर १ ।

३५०४ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—१३६ सोखो का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिपेण । पत्र म० ३ । मा० ११३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० १०५७ । अ मण्डार ।

३५०६ प्रति स० २ । पत्र म० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० स० ७३१ । क मण्डार ।

३५०७ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६५४ पीप बुदो ३ । वे० स० ७२८ । क

मण्डार ।

३५०८ प्रति स० ४ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । छ मण्डार ।

३५०९ प्रति स० ५ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १७४६ मासीज सुदी ६ । वे० स० ३०४ । अ

मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१० सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । मा० ११×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६ । अ मण्डार ।

३५११ सज्जनचित्तवल्लभ । पत्र स० ४ । मा० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख मण्डार ।

३५१२ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३ सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र स० ६६ । मा० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । २० काल स० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतिया ( वे० स० ७२६, ७३० ) भी हैं ।

३५१४ सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचन्द्र । पत्र स० ३१ । मा० ११×७ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । २० काल स० १६२१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क मण्डार ।

३५१५ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० ७२५ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३२१६ महाविद्यालय—सकाशकीर्ति । पत्र सं १४। वा १६०२ हज। भाषा—संस्कृत।

विषय—सुभाषित । ८ काल ×। से काल ×। पुस्तिका सं ४२३। के सं ४२३। क मन्थार।

विशेष—दही मन्थार में १ प्रति (के सं १२) पीर है।

३२१७ प्रति सं २। पत्र सं २२। से काल सं २१ संघटित पुस्तिका के सं ४२२। क मन्थार।

विशेष—बांतीराम चौध के मन्थार में एक कल्प बंदावा था।

३२१८ प्रति सं ३। पत्र सं २२। से काल ×। के सं १९४२। क मन्थार।

३२१९ महाविद्यालयकीभाषा—पसाकाश चौबेरी। पत्र सं १९९। वा १९०५ हज। भाषा—

हिन्दी। विषय—सुभाषित । ८ काल ×। से काल सं १९४२ ज्येष्ठ। पुस्तिका सं १९। पुस्तिका के सं ४२२। क मन्थार।

विशेष—पुस्तिका पर चर्चों की सूची लिखी हुई है।

३२२० प्रति सं २। पत्र सं ११७। से काल सं १९४२। के सं ४२३। क मन्थार।

३२२१ महाविद्यालयकीभाषा—। पत्र सं १२। वा १९०२ हज। भाषा—हिन्दी। पत्र।

विषय—सुभाषित । ८ काल सं १९११ धनुष। पुस्तिका सं २। पुस्तिका के सं २२१। क मन्थार।

३२२२ सम्यैवसुख—सर्वमन्थारसूत्रि। पत्र सं १५। वा १०५ हज। भाषा—संस्कृत।

विषय—सुभाषित । ८ काल ×। से काल ×। पुस्तिका सं १९४२। क मन्थार।

३२२३ समाचार बाटक—सुखराम। पत्र सं १३ से ४३। वा ३५५ के हज। भाषा—हिन्दी।

विषय—सुभाषित । ८ काल ×। से काल सं ११। पुस्तिका के सं २७। क मन्थार।

विशेष—बाटक में सुभाषित एवं कथोत्तरवर्ति पुस्तिका है।

३२२४ समाचार—। पत्र सं ३५। वा ११०२ हज। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित । ८

काल ×। से काल सं १७ ज्येष्ठ। पुस्तिका सं २। पुस्तिका के सं ११। क मन्थार।

विशेष—सोमो के मेमिनगल श्रीवास्तव बाटले के हरिप्रसाद के शिष्य सुभाषित में प्रतिनिधि की थी।

३२२५ समाचार—। पत्र सं ४२। वा ११०२ हज। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—

सुभाषित । ८ काल ×। से काल सं १७३१ कर्मठक। पुस्तिका सं १। पुस्तिका के सं १५७७।

विशेष—शास्त्र—

सकाशकीर्ति वनेत्र भी भी भी बापु विषयसहितसुभाषितमन्थार। कथा समाचारद्वारा कल्प लिखी। भी भाषण

नाभि नदनु सकलमहीमडनु पचशत धनुष मानु तो । तोरों सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंनलावली  
विभूषित स्कवु केवलज्ञान लक्ष्मी सनायु भव्य लोकाह्लिमुक्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई । साध ससार शधरूप ( अघरूप )  
प्राणिवर्ण पडता दद हाय । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री मादिनाथ श्री संघतरणो मनोरथ पुरो ॥१॥  
वीतराग वांणा समार ममुत्तारिणी । महामोह विध्वसनी । दिनकरानुकारिणी । क्षोधाग्नि दावानलोपधामिनीमुक्तिमार्ग  
प्रकाशिनी । सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी । प्रागमोदगारिणी वीतराग वाणी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहाघकारविद्येदन भानु त्रिभुवन सकलसेदेह छेदक । अध्येय अभेद्य  
प्राणिगण हृदय भेदक अनतानत विज्ञान इसिउ अपनु केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अथस्त्री गुणा— १ कुलीना २ शीलवती ३ विवेकी ४ दानसीला ५ कीर्तिवती ६ विज्ञानवती ७  
श्रुणयाहारी ८ उपकारिणी ९ कृतज्ञा १० धर्मवती ११ सोत्साहा १२ सभममत्रा १३ क्लेशसही १४ अनुपतापीनी  
१५ सूपाम मधीर १६ जितेन्द्रिया १७ समूहा १८ अत्याहारा १९ अलडोला २० अल्पनिद्रा २१ मितभाषिणी  
२२ चित्तज्ञा २३ जीतरोपा २४ अलोभा २५ विनयवती २६ मरुपा २७ सौभाग्यवती २८ सूचिवेया २९  
श्रुवाश्रूया ३० प्रमत्तमुखी ३१ सुप्रमाणशरीर ३२ सूलपणवती ३३ स्नेहवती । इतियोद्गुणा ।

इति सभाशृङ्गार संपूर्ण ॥

प्रथमप्रथ सख्या १००० सवत् १७३१ वर्षेमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे, लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाप्रो के लक्षण एव सुभाषित के रूप मे विविध बातें दी हुई है ।

३५२६ सभाशृङ्गार । पत्र सं० २८ । भा० १०×४३ इक्षी भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४१ रु भण्डार ।

३५२७ सवोधसत्ताणु—वीरचद । पत्र सं० ११ । भा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।

परमारथ पणि पकरण्थु, सवोधसत्ताणु वीसार ॥१॥

मादि भनादि ते आत्मा, मडवड्यु ऐहमनिवार ।

धर्म विहृणो जीवणो, वापटु पड्यो ये सेसार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानदी जयो श्रीमह्निभूषण मुनिचद ।

तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६ ॥

तेषु पुनः वनस दीव्यवती अकली कती वीरवन्द ।

मुहुरता अकला ए वानना वीनीवे वरनाकम् ॥१७॥

इति श्री वीरवन्द विरचिते बंधोबलताराशुभ्या लंगुर्से ।

३१९८. सिम्बूरप्रकर—घामप्रभाभाष्ये । पत्र सं १ । पा १ × ४ दण । मत्ता—कैरुव । विषय—  
मुनर्षिव । र काल × । मे काल × । पूर्ण । वीर्य । वे सं २१७ । क मत्तार ।

विशेष—इति प्राचीन है । ब्रह्मसूत्र के विषय कीर्तिघरर मे कला मे प्रतिबिम्बि श्री श्री ।

३१९९. प्रति सं २ । पत्र सं २ के २७ । मे काल सं ११३ । मत्तार । वे सं २१८ । क  
मत्तार ।

विशेष—इति श्री विरु इत संस्कृत व्याख्या बह्वि है ।

धर्मिक—इति सिम्बूर प्रकरअक्षय व्याख्यायां इति श्री विरु इति विरु इति ।

३२००. प्रति सं ३ । पत्र सं २ के १४ । मे काल सं १२०० मत्तार श्री १ । मत्तार । वे  
सं २१९ । क मत्तार ।

विशेष—इति श्री विरु इत संस्कृत व्याख्या बह्वि है ।

३२०१. सिम्बूरप्रकरअभाषा—बनारसीवास । पत्र सं २१ । पा १ × ४२ । मत्ता—हिन्दी ।

विषय—मुनर्षिव । र काल सं ११११ । मे काल सं १२२ । पूर्ण । वे सं २२० ।

विशेष—सर्वशुभ भाषणा मे प्रतिबिम्बि श्री श्री ।

३२०२. प्रति सं २ । पत्र सं १३ । मे काल × । वे सं ७१५ । क मत्तार ।

इति मत्तार मे १ प्रति ( वे सं ७१७ ) श्री है ।

३२०३. सिम्बूरप्रकरअभाषा—मुम्बईवास । पत्र सं २७ । पा १ × ४२ दण । मत्ता—हिन्दी ।

विषय—मुनर्षिव । र काल सं ११११ । मे काल सं ११११ । पूर्ण । वे सं ७२० । क मत्तार ।

३२०४. प्रति सं २ । पत्र सं २ के ३ । मे काल सं १११७ मत्तार श्री १ । वे सं २२१ ।  
क मत्तार ।

विशेष—वायनात मत्तार के धुने वाले वे । मत्तार मे वे मत्तारवेस के इ वासविशु मे धुने लगे वे ।

इति मत्तार मे १ प्रति ( वे सं ७२५ मत्तार २७ ) श्री है ।

३२०५. सुसुसुसुसुसु—मिन्नास गाथा । पत्र सं ४ । पा १ × २ दण । मत्ता—हिन्दी पत्र ।

विषय—मुनर्षिव । र काल सं १२२२ वीर श्री ५ । मे काल सं १११७ मत्तार श्री १ । पूर्ण । वे सं  
२२ । क मत्तार ।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र ]

३५३६ सुभाषितमुक्तावली । पत्र स० २६ । आ० ६×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दाह—आ० अमितिगति । पत्र स० ५४ । आ० १०×३<sup>३</sup> इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल स० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० २६ ) और है ।

३५३८ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० स० ८२१ । क

भण्डार ।

विशेष—नगामपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ से ४६ । ले० काल स० १८६२ रामोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे०

स० ८७६ । अ भण्डार ।

३५४० प्रति स० ४ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १९१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ४२० । च

भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाठ्या नाथूलाल ने पार्ष्वनाथ मंदिर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१ सुभाषितरत्नमन्दीहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८८ । आ० १२<sup>३</sup>×७ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । २० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले मोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० स० ८१९, ८२०, ८१६, ८१६ ) और हैं ।

३५४२ सुभाषितारणव—शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । आ० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० १९७९ ) और है ।

३५४३ प्रति स० ७ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० २३१ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० स० २३०, २६८ ) और हैं ।

३५४४ सुभाषितसमूह । पत्र स० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैरावा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

एती यथार मे १ प्रति पूर्ण ( के म २२३२ ) तथा २ प्रति पूर्ण ( के म ११६२ १३५ )

मीर है ।

३२४४ प्रति म ३। पत्र ब ३। मे काल X। के म २। य यथार ।

३२४६ प्रति म ३। पत्र ब २। मे काल X। के म १२४। य यथार ।

३२४७ प्रति स ४। पत्र ब १७। मे काल X। पूर्ण। के म १२४। य यथार ।

३२४८ सुभाषितसंग्रह—। पत्र ब ४। या १ X ४७ ह ब। यथा-भर्तृगु प्राणु । विषय-  
दुष्कर्मित । र काल X। मे काल X। पूर्ण। के म १२। य यथार ।

विषय—द्विती में दम्बा टीका बी हुई है । अति अर्थवत् मे प्रतिनिधि को भी ।

३२४९ सुभाषितसंग्रह—। पत्र म ११। या ७ X २ ह ब। यथा-भर्तृगु द्विती । विषय-  
दुष्कर्मित । र काल X। मे काल X। पूर्ण। के म २२१४। य यथार ।

३२५ सुभाषितवाक्यी—सकलप्रति । पत्र ब ३२। या १२ X २ ह ब । यथा-कल्पग ।  
विषय-दुष्कर्मित । र काल X। मे काल स १७४५ अंशित मुठी १। पूर्ण। के म १५२। य यथार ।

विषय—निर्दिष्टनिर्दि केने कर्मनी बीचबी चरुपत्र अति अतन्त्र कल्पटा मन्ने निरुक्त  
बसापत्र । म १७४५ वर्षे मन्त्रार्थी छुटा ३ टिक्कलरी ।

३२६ प्रति स ३। पत्र ब ११। मे काल म १ २ पीर मुठी १। के २२४। य  
यथार ।

विषय—कालगुण हान मे पं तीथिय मे स्वयम्भाष प्रतिनिधि को भी ।

३२६२ प्रति स ३। पत्र ब १३। मे काल म १ २ पीर मुठी १। के म ३२७। य  
यथार ।

विषय—नेत्रक मप्रति निम्न प्रकार है—

वर्ष ११ २ मन्ने पीर मुठी २ बुकलमरी धीमुलसवे बलकारकले उरारतीकले दुष्कर्मिचारार्थने  
म्हारक बी चरुपत्रिहेवा उरारु म्हारक बी बुकलमरीवा उरारु म्हारक भी विषयमरीवाः उरारमने मन्त्रार्थार्थ पी  
विष्कर्मिहेवः उरारु मन्त्रार्थार्थ कीमन्त्रनीतिहेवः उरारिष्कर्मि वंशमन्त्रमन्त्ररिही बीईकोटिदि उरारिष्कर्मि मरि  
उरारुटिदि मन्त्रार्थ अनेतमन्त्रवे निरुक्तमन्त्रे वापु भीकले मन्त्रि देवा उरारु मुचः मन्त्रः अन्तन्त्र तापु भी एरुक्त  
मन्त्रि मन्त्रार । अरारु मुच मन्त्रार मन्त्रि अरारुटिदि उरारु मन्त्रार । म्त्रिमुच [तन्त्रमु विष्कर्मिरेमन्त्रमन् एरारु  
मन्त्रिना बाकेल विषयमन्त्र उरारुटिदिवापु तापु पी कीकला मन्त्रि मन्त्रि वेरुक्त उरारु इरु एरु निरुक्त मन्त्रि  
निमित्त । विष्कर्मिरेमन्त्रमन्त्रमन्त्रिहेवः उरारु मन्त्रि ।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र ]

३५५३ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६५७ माघ सुदी । वे० स० २३५ । अ

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमच्छ्रीपद्मनागरसूरिविजयराज्ये तत्र १६५७ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपौकृत श्रोत्रुनि शुभमस्तु । लेखक पाठय्यो ।

सबत्सरे पृथ्वीमुनीयतौन्द्रमिते ( १७७७ ) माघशितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीमदिनायचैत्यानये शुद्धौ-  
कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाठेध्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० स० २८१, ७८७, ७८८, १८६४ ) श्रीर है ।

३५५४ प्रति स० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६३६ । वे० म० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ८१४ ) श्रीर है ।

३५५५ प्रति स० ६ । पत्र ० २६ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० २३३ । ख भण्डार

विशेष—प० माणकचन्द की प्रेरणा से प० स्वरूपचन्द ने प० कपूरचन्द मे जवनपुर ( जोवनेर ) मे  
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० स० ८७४ । छ

भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा वाक्लीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया ( वे० स० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८ ) श्रीर है ।

३५५७ प्रति स० ८ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १७६५ भासोज सुदी ८ । वे० स० २६५ । झ

भण्डार ।

३५५८ प्रति स० ९ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६०४ माघ सुदी ४ । वे० स० ११४ । ज

भण्डार ।

३५५९ प्रति स० १० । पत्र स० ३ से ३० । ले० काल स० १६३५ वैशाख सुदी १५ । धपूर्णा । वे०  
स० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६० सुभाषितावली । पत्र स० २१ । भा० ११३×५३ इच्छ । माया—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८१८ । पूर्णा । वे० स० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—मह ग्रन्थ दीवान सगही जानचन्दजी का है ।



ब बन्धार में २ प्रतिमां (के सं ४१० ४११) ब बन्धार में २ वपुर्ण प्रतिमां (के सं ११२, १२१) तथा ब बन्धार १ (के सं १ १) वपुर्ण प्रतिमां ही।

३२६१ सुभाषितावलीमाया—पद्माकाश चौबरी। पम सं ११। या १२३×२२ दण। बला—हिन्दी। विषय—मुवाकित। र काल ×। से काल ×। पुर्ण। के सं ५२२। ब बन्धार।

३२६२ सुभाषितावलीमाया—दुखीचन्द। पम सं १११। या १२३×२२ दण। बला—हिन्दी। विषय—मुवाकित। र काल सं ११११ वही कुटी १। से काल ×। पुर्ण। के सं ५। ब बन्धार।

इसी बन्धार में एक प्रति (के सं ५५१) भी है।

३२६३ सुभाषितावलीमाया—। पम सं ४२। या ११×४२ दण। बला—हिन्दी पम। विषय—मुवाकित। र काल ×। से काल सं ११११ वाना कुटी २। पुर्ण। के सं ११। ब बन्धार। विषय—२२ वी है।

३२६४ सुकिमुक्तावली—बोसप्रसाधार्थ। पम सं १७। या १२×२२ दण। बला—लंकाट्ट। विषय—मुवाकित। र काल ×। से काल ×। पुर्ण। के सं १११। ब बन्धार।

विषय—इसका नाम मुवाकितवली भी है।

३२६५ प्रति सं २। पम सं १७। से काल सं ११५४। के सं ११७। ब बन्धार।

विषय—अज्ञात नाम प्रकार है—

सं ११५४ वसे नीकठमंने मदीठरकणे विषयको ब भीरानवेवकने लण्ट म भी विषयदुपण लण्ट म भी म्वाभीति ब्रह्म भीवेवकने लण्टिमण्ड भी कालकी स्वमनेव लुटीव विविध पदार्थ।

ब बन्धार में ११ प्रतिमां (के सं ११२, ११४ ११५ ११ ७११ १७२ २१ २ ४७ ११५ २ ११ १११) भी है।

३२६६ प्रति सं ३। पम सं २२। से काल सं ११५४ वाना कुटी १। के सं २२। ब बन्धार।

इसी बन्धार में एक प्रति (के सं ५२४) भी है।

३२६७ प्रति सं ४। पम सं १। से काल सं १७७२ वाना कुटी २। के सं २१४। ब विषय—शुभाषी वही पदार्थ मावपुत्र से प्रतिमिति हुई भी।

३२६८ प्रति सं ५। पम सं २४। से काल ×। के सं २२१। ब बन्धार।

विषय—वीरल वाठरान् विष्णुका के पुत्र कुवर बरठरान् के पदार्थ प्रतिमिति भी वही भी। बन्धार में एव कुवर है।

इसी बन्धार में २ वपुर्ण प्रतिमां (के सं २२२, २२५) भी है।

३५६६ प्रति स० ६ । पत्र स० २ मे २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३ मण्डार मे ३ अपूर्णा प्रतिया ( वे० स० ८८३, ८८४, ८८५ ) भीर हैं ।

३५७० प्रति स० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल स० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ५५ । वे० स० ४२१ ।

च मण्डार ।

इसी मण्डार मे २ प्रतिया ( वे० स० ४२२, ४२३ ) भीर हैं ।

३५७१ प्रति स० ८ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । वे० स० १०३ । छ

मण्डार ।

विशेष—रत्नवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे ( वे० स० १०३ ) मे ही ४ प्रतिया भीर हैं ।

३५७२ प्रति स० ९ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ पीप बुदी २ । वे० स० १८३ । छ

मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टप्पा टीका सहित है ।

इसी मण्डार मे १ प्रति ( वे० स० ३६ ) भीर है ।

३५७३ प्रति स० १० । पत्र स० १० । ले० काल स० १७६७ भाद्रवा बुदी ८ । वे० स० ८० । छ

मण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० स० १६५, २८६, ३७७ ) तथा छ मण्डार मे २ अपूर्णा प्रतिया ( वे० स० १६६४, १६३१ ) भीर हैं ।

३५७४ सूकावली । पत्र स० ९ । भा० १०×४<sup>१</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वे० स० ३४७ । अ मण्डार ।

३५७५ भृकुटश्लोकमह । पत्र स० १० से २० । भा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८८३ । अपूर्णा । वे० स० २५७ । छ मण्डार ।

३५७६ स्वरोदय—रत्नजीतवास (चरनदास) । पत्र स० २ । भा० १२<sup>२</sup>×६<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी ।

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१५ । अ मण्डार ।

३५७७ हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र स० ३६ । भा० १२<sup>२</sup>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

नीति । २० काल × । ले० काल स० १८७३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ८५४ । क मण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३७८. प्रति स० २। पत्र सं २। ले कल ×। वे सं २४६। अ नम्बर्।

३३७९. विद्योपदेशमाप्य ---। पत्र सं २९। पा ×३ बज्ज। अला-दिल्ली। विषय-मुद्रप्रति।

८ कल ×। ले कल ×। दुर्गा। वे सं २१११। अ नम्बर्।

३३८० प्रति स० २। पत्र सं ७९। ले कल ×। वे सं १३२। अ नम्बर्।



# विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल । पत्र स० २ से ४२ । आ० ८३×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७७८ वैशाख सुदी ६ । अपूर्णा । वै० स० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख नाव वक्ष वेसरीसिंह समाहितेन मनि मडन मिश्र विरचितेन पुरंदरमाया नाम ग्रंथ बद्धित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मंत्र संस्कृत में ही अजमेर में प्र तलिये हुई थी ।

३५८२ कर्मवहनत्रतमन्त्र । पत्र स० १० । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र धाम्नी । १० काल × । ले० काल म० १६३४ भाद्रपदा सुदी ६ । पूर्णा । वै० स० १०४ । छ भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र । पत्र स० ८ । आ० ८३×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्णा । वै० स० ११३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५८४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ३८ । ग भण्डार ।

३५८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६६६ । वै० स० २८२ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है ।

३५८६ घटाकर्णकल्प । पत्र स० ५ । आ० १२३×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२२ । अपूर्णा । वै० स० ४५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७ घटाकर्णमन्त्र । पत्र स० ५ । आ० १२३×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्णा । वै० स० ३०३ । ख भण्डार ।

३२८८. चंडाकारवृद्धिकल्पः—। पत्र सं १। पा १२×३३ इत्यं। भाषा-हितो। विषय-मन्त्र  
 पत्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र सं १२१३ वीयात्त मुनी २। पूर्ण। के सं १२। अ मन्त्रार।

३२८९. शतुर्विंशतिस्वरविधानः—। पत्र सं ३। पा १२३×२३ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-  
 मन्त्रमन्त्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं १२६। अ मन्त्रार।

३२९०. विष्णुस्यस्तोत्रः—। पत्र सं २। पा २×६ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-मन्त्र  
 पत्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं १२७। अ मन्त्रार।

विशेष—ब्रह्मस्यै स्तोत्रे नी रिक्तं रूपं है।

३२९१. प्रति सं २। पत्र सं २। के मन्त्र ×। के सं २२८। अ मन्त्रार।

३२९२. विष्णुस्यस्तोत्रः—। पत्र सं ३। पा १×२ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-मन्त्र।  
 र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं २२७। अ मन्त्रार।

३२९३. सौम्ययोगिनीस्तोत्रः—। पत्र सं १। पा ११×२३ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-  
 मन्त्रमन्त्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं २२९। अ मन्त्रार।

विशेष—इसी मन्त्रार मे ३ प्रतियं ( के सं ११७७ ११८६, ११८७ ) पीर है।

३२९४. प्रति सं २। पत्र सं १। के मन्त्र सं १। के सं २२७। अ मन्त्रार।

३२९५. सौम्ययोगिनीस्तोत्रविधानः—। पत्र सं २। पा ११×२३ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-  
 मन्त्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं २। अ मन्त्रार।

३२९६. शुक्रीकारकल्पः—। पत्र सं ४। पा ४×६ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-मन्त्रमन्त्र।  
 र मन्त्र ×। के मन्त्र सं १२४२। पूर्ण। के सं २२। अ मन्त्रार।

३२९७. शुक्रीकारकल्पः—। पत्र सं १। पा ११×२३ इत्यं। भाषा-उत्तर। विषय-मन्त्र  
 मन्त्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र सं १२। पूर्ण। के सं ३२२। अ मन्त्रार।

३२९८. प्रति सं २। पत्र सं २। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं २७४। अ मन्त्रार।

३२९९. प्रति सं ३। पत्र सं ३। के मन्त्र सं १२२२। के सं २३२। अ मन्त्रार।

विशेष—हिन्दी मे मन्त्रशास्त्र नी विधि एव मन्त्र विद्या रूपं है।

३३००. शुक्रीकारकल्पः—। पत्र सं ४। पा १२×२३ इत्यं। भाषा-उत्तर मन्त्रमन्त्र।  
 विषय-मन्त्रमन्त्र। र मन्त्र ×। के मन्त्र ×। पूर्ण। के सं २३२। अ मन्त्रार।

३३०१. प्रति सं २। पत्र सं ३। के मन्त्र ×। के सं १२२। अ मन्त्रार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिद्धन्दि । पत्र स० ४५ । भा० ११३×५ इ च । भाषा-  
संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । अ भण्डार ।

३६०३ नवकारकल्प । पत्र स० ६ । भा० ६×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रक्षरो की स्याही मिट जाने से पढ़ने में नही आता है ।

३६०४ पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २ । भा० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६७६ फागुण सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २४ । ज भण्डार ।

३६०५ पद्मावतीकल्प । पत्र स० २ ने १० । भा० ८×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र-  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६८२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— सद्यत् १६८२ आनादेर्गलपुरे श्री मूलसघसूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तदतेवासिभिराचार्य श्री  
हर्षकीर्तिभिरदमलेखि । चिर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६ वाजकोश । पत्र स० ६ । भा० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—सग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मानुका निर्घट भी है ।

३६०७ भुवनेश्वरीस्तोत्र ( सिद्ध महामन्त्र )—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स० ६ । भा० ६३×४ इ च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८ भूवल । पत्र स० ८ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य में 'अयात सप्रवश्यामि भूवलानि समालत ' आये हुये भूवल के आशय  
पर ही लिखा गया है ।

३६०९ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिपेण सूरि । पत्र स० ०४ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतिमां ( वे० स० ३२२, १२७६ ) भी हैं ।

३६१० प्रति स० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७६३ वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६५ )  
क भण्डार ।

विषय—प्रति मन्त्रिण है।

इसी मन्त्र में १ यजुर्गी मन्त्रिण प्रति ( वे सं १११ ) की है।

११११ प्रति सं ३। पत्र सं ११। मे मन्त्र  $\times$ । वे सं १०२। मन्त्रार।

१११२ प्रति सं ४। पत्र सं २। मे मन्त्र सं १०१० नेट मुयी —। वे सं १११। मन्त्रार।

विषय—इसी मन्त्र में १ प्रति संज्ञित टीका सहित ( वे सं २० ) की है।

१११३ प्रति सं ५। पत्र सं १३। मे मन्त्र  $\times$ । वे सं ११११। मन्त्रार।

विषय—बीजाङ्करो में ३३ मन्त्रों के विषय है। यन्त्रविधि तथा मंत्रों सहित है। संज्ञित टीका भी है।

पत्र पर बीजाङ्करो में बीजाङ्करो को विषयों का संज्ञित टीका विधि भी हुई है। एक विषय में प्राकृतिक विधि के मन्त्र भी का विषय है जिसमें मन्त्र २ मन्त्र विधि है। दूसरी ओर भी ऐसा ही मन्त्र विषय है। यन्त्रविधि है। ३ में १ म २ से ५ मन्त्र पत्र का है। ३-२ पत्र पर मंत्र मंत्र मुयी की है।

१११४ प्रति सं ६। पत्र सं ५ से १०। मे मन्त्र सं ११० मन्त्र मुयी २। यजुर्गी। वे सं १११०। मन्त्रार।

विषय—सर्वाङ्करो में १ मन्त्र के विषय मन्त्रार में प्रतिविधि की थी।

इसी मन्त्र में एक प्रति यजुर्गी ( वे सं ११११ ) की है।

१११५ मन्त्रारामयन्त्रिकायम् । पत्र सं ५। भा १  $\times$  १५ मन्त्र। भाषा संज्ञित। विषय—मन्त्र मन्त्रार। मन्त्र  $\times$ । मे मन्त्र  $\times$ । यजुर्गी। वे सं १०५। मन्त्रार।

१११६ मन्त्रारामयन्त्रिकायम् । पत्र सं ५। भा  $\times$  १५ मन्त्र। भाषा—हिन्दी। विषय—मन्त्रारामयन्त्रिकायम्। मन्त्र  $\times$ । मे मन्त्र  $\times$ । यजुर्गी। वे सं १११। मन्त्रार।

विषय—मन्त्र मन्त्रों का संग्रह है।

१ बीजाङ्करो में २ मन्त्रों विधि १ मंत्र ५ यजुर्गी मंत्र ३, विधि का मन्त्र १ यजुर्गी मन्त्र ४ यजुर्गी का ३ मंत्र मन्त्रों का यजुर्गी मन्त्र ४, यजुर्गी मन्त्र ३, यजुर्गी मन्त्र ३, यजुर्गी मन्त्र ३ ( भाषा संज्ञित पर टीका संज्ञित का नाम दिया हुआ है ) ११ मन्त्र यजुर्गी का मन्त्र।

१११७ मन्त्रारामयन्त्रिकायम् । पत्र सं १० से १०। भा १  $\times$  १५ मन्त्र। भाषा—हिन्दी। विषय—मन्त्रारामयन्त्रिकायम्। मन्त्र  $\times$ । मे मन्त्र  $\times$ । यजुर्गी। वे सं १५। मन्त्रार।

विषय—इसी मन्त्र में भी प्रतिविधि ( वे सं ११, १२ ) की है।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—५० महीधर । पत्र स० १२० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वै० स० ६१६ । अ भण्डार ।

३६१९ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वै० स० ५८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२० मन्त्रसग्रह । पत्र स० फुटकर । आ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५८८ । क भण्डार ।

विशेष—करीब ११५ मन्त्रों के चित्र हैं । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं ।

३६२१. महाविद्या ( मन्त्रों का सग्रह ) । पत्र स० २० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ७९ । घ भण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२ यज्ञिणीकल्प । पत्र स० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्र

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६०५ । छ भण्डार ।

३६२३ यज्ञ मन्त्रयिफल । पत्र स० १५ । आ० ६३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १६६६ । छ भण्डार ।

विशेष—६२ यज्ञ मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यज्ञों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों में हैं ।

३६२४ वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र स० ६ से २६ । आ० १०३×४ इ च । भाषा—संस्कृत

हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १४९५ । अपूर्ण । वै० स० १९९७ । छ भण्डार ।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एव जोर्या है ।

द्वेष्टेष्ट पर— श्री विबुधचन्द्रगणमृच्छिष्य श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्मलविशदमनालिखत  
वानकल्प ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्प ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पक्ति ५—

जाइ पुण्य सहस्र १२ जान । गूगल गड बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाम हुई ।

पत्र ८ पक्ति ९— श्री कुरु कुरु कामाख्यादेवी, कामाख्या आजीव २ । जग मन मोहनी सूती बड़ी उठी  
जगमण हाथ जोडिकरि साम्ही भावइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति वायदेवी कामाख्या माहरी भक्ति आर्कषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकार ॥ अथाप्रत्य १७५ अक्षर १६  
स० १४९५ वर्षे सगरकूपशालाया अणुहल्लपाटकपरपर्याये श्रीमत्तनमहानगररेज्जेलि ।



।। २२— दुर्धिकाओं के बसन्तार हैं। वी शीत है। पत्र २५ पर नासिकेर कल्प विद्या है।

३६२३ विद्यापत्रविद्या—। पत्र सं ७। धा १ ३×२ ३ च। माया—संस्कृत। विषय—कल्प  
घात १। २ कल ×। ३ कल ×। पूर्वा। ३ सं ५। ४ च मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रविकी (के सं ३५५ ३५६) तथा क मन्थार में १ प्रविकी (के सं  
३३१) मौल है।

३६२४ विद्यापुरासन—। पत्र सं ३०। धा ११×२३ ३ च। माया—संस्कृत। २ कल ×।  
३ कल सं १६ १३ च माया कुरी २। पूर्वा। ३ सं ३६१। क मन्थार।

विशेष—एक शम्भुविद्य कल्प भी है। यह कल्प श्रीसीतामती श्रीविद्या के पत्न्या व श्रीसीतामती के  
हाथ हीपाल कल्पनीयक से शक्तिविधि कराई। पारंपरिक रचना—।

३६२५ प्रति संक २। पत्र सं २५२। ३ कल म १६३३ संकित कुरी ३। के सं ६३। क  
मन्थार।

विशेष—बहुमूलक बाइसक से शक्तिविधि की थी।

३६२६ पद्मसम्भू—। पत्र सं ७। धा १३×१३ ३ च। माया—संस्कृत। विषय—कल्पघात।  
२ कल ×। ३ कल ×। पूर्वा। ३ सं ३५२। क मन्थार।

विशेष—कल्पघात ३६ कर्मा का संकल है।

३६२७ कटकर्मकल्प—। पत्र सं ३। धा १ ३×३ ३ च। माया—संस्कृत। विषय—कल्पघात।  
२ कल ×। ३ कल ×। पूर्वा। ३ सं २१ ३। क मन्थार।

विशेष—कल्पघात का कल्प है।

३६२८ सरस्वतीकल्प—। पत्र सं २। धा ११३×९ ३ च। माया—संस्कृत। विषय—कल्पघात।  
२ कल ×। ३ कल ×। पूर्वा। ३ सं ७७५। क मन्थार।



## विषय-कामशास्त्र

३६३१ कोकशास्त्र - । पत्र स० ६ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । २०

काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १६५६ । ट मण्डार ।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिस्पर्शकारविधि आदि ।

३६३२ कोकसार । पत्र स० ७ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६ । ड मण्डार ।

३६३३ कोकसार—आनन्द । पत्र स० ५ । आ० १३३×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१६ । झ मण्डार ।

३६३४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६ । ख मण्डार ।

३६३५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० २६५ । म मण्डार ।

३६३६ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० स० १५५२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जट्टू व्यास ने नरामय्या में प्रतिलिपि की थी ।

३६३७ कामसूत्र—कविहाल । पत्र स० ३२ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५ । ख मण्डार ।

विशेष—इसमें कामसूत्र की गायकों की हुई हैं । इसका दूसरा नाम सप्तसप्तसप्त भी है ।



## विषय- शिष्य शास्त्र



३३३८ विष्णुनिर्वाहविधि-----। पृष्ठ सं १। भा ११३×७२ दृष्ट। भाषा-हिन्दी। विषय-विष्णु  
शास्त्र। ८ कल ×। म कल ×। पूर्ण। के सं २१३। छ मन्थार।

३३३९. विष्णुनिर्वाहविधि-----। पृष्ठ सं १। भा ११×७२ दृष्ट। भाषा-हिन्दी। विषय-विष्णु  
शास्त्र। ८ कल ×। म कल ×। पूर्ण। के सं २१४। छ मन्थार।

३३४० विष्णुनिर्वाहविधि-----। पृष्ठ सं ११। भा ७२×११ दृष्ट। भाषा-संस्कृत। विषय-  
विष्णुशास्त्र [प्रतिष्ठा] ८ कल ×। म कल ×। पूर्ण। के सं २१७। छ मन्थार।

विषय-मन्त्री शास्त्र है। पं कसूरदासजी काजू द्वारा लिखित हिन्दी वर्ण बद्धित है। शास्त्र में ३ वेद  
की सूचिका है। पृष्ठ १ के २३ तक प्रतिष्ठा वस्तु के क्लोर्णों का हिन्दी अनुवाद दिया गया है। पृष्ठ २१  
से ३६ तक विष्णु निर्वाहविधि बताया ही गई है। इसी के साथ ३ प्रतिभाषाओं के विषय भी दिये गये हैं। (के सं २४६)  
छ मन्थार। कलपाटीकाल विधि भी है। (के सं २४८) छ मन्थार।

३३४१ वास्तुविम्बास-----। पृष्ठ सं ३। भा २२×४२ दृष्ट। भाषा-संस्कृत। विषय-विष्णुशास्त्र।  
२० कल ×। म कल ×। पूर्ण। के सं २४२। छ मन्थार।



## विषय- लक्षणा एवं समीक्षा

३६४२ आगमपरीक्षा— । पत्र सं० ३ । भा० ७×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ममीक्षा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट मण्डार ।

३६४३ छद्मदर्शरोमण्यि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । भा० १×६ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

लक्षण । २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १९३६ । ट मण्डार ।

३६४४ छद्मकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ९ । भा० १२×६३ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट मण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छद्मकीयकवित्ते कामधेन्वाल्ये भट्टारकभोपुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समवृतप्रकरणे समाप्त । प्रारम्भ मे कमलवध कवित्त मे चित्र दिये हैं ।

३६४५ धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । भा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत

हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टोकाकार का परिचय—

साहू श्री हेमराज सुत मान हमीरदे जाणिए ।

कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तज्ञ वखाणिए ॥

सवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।

फागुण तम एकादशी पूरण भई मुभाय ॥

धर्म परीक्षा वचनिका सुवरदास सहाय ।

साधर्मो जन समम्भि नै दशरथ कृति चितलाय ॥

टीका— विषया की वसि पढ्या क्रियए जीव पाप ।

करै छै सह्यो न जाई ती ये दुखी होइ मरे ॥

लेखक प्रशस्ति— सवत् १७५७ वर्षे पोप शुक्ला १२ भृगोचारे विजया नगर्या (दीसा) जिल चैम्पालये लि० भट्टारक-  
भोनरेन्द्रकीर्ति तत्वशिष्य प० ( सिग्धर ) कटा हुआ ।

३६४६ प्रति सं २। पत्र सं ४२। ले नम्बर १७१२ मन्दिरे मुदी १। ले सं ३३। अ  
 नम्बर।

विषय—इति श्री अमिठिगतिदृष्टा अर्धपरीक्षा शुभ विद्वही बल्लभोक्तापटीका ठम अर्धार्थी वधरथेन कृताः  
 अमताः।

३६४७ प्रति सं ३। पत्र सं १३२। ले नम्बर १२६ पाठवा मुदी ११। ले सं ३३१। अ  
 नम्बर।

३६४८ अर्धपरीक्षा—अमिठिगति। पत्र सं २। पत्र १२५५५ इव। पाठा संसृष्ट। विषय-  
 तमीका। ले नम्बर १७। ले नम्बर १५४। पूर्ण। ले सं ३११। अ नम्बर।

३६४९ प्रति सं २। पत्र सं ७२। ले नम्बर ११५५५ मुदी १२। ले सं ३३२। अ  
 नम्बर।

विषय—इही नम्बर में २ प्रतिमां ( ले सं ७५४ २४२ ) पीर है।

३६५० प्रति सं ३। पत्र सं १३१। ले नम्बर १२३२ पाठवा मुदी ७। ले सं ३३२। अ  
 नम्बर।

३६५१ प्रति सं ४। पत्र सं २४। ले नम्बर १२७७ पाठवा मुदी १। ले सं ३३२। अ  
 नम्बर।

३६५२ प्रति सं २। पत्र सं १६। ले नम्बर १। ले सं १७१। अ नम्बर।

विषय—इति प्राचीन है।

३६५३ प्रति सं ६। पत्र सं १३३। ले नम्बर ११२३ पाठवा मुदी १। ले सं ३२। अ  
 नम्बर।

विषय—अन्तर्गत के पाठवा नम्बर के लिखा गया है। लेखक अमिठिगति पूर्ण है।

इही नम्बर में २ प्रतिमां ( ले सं १ ११ ) पीर है।

३६५४ प्रति सं ७। पत्र सं ११। ले नम्बर १। ले सं ११२। अ नम्बर।

विषय—इही नम्बर में २ प्रतिमां ( ले सं १५४ ५७५ ) पीर है।

३६५५ प्रति सं ८। पत्र सं ७५। ले नम्बर १। ले सं १३२३ पाठवा मुदी ११। ले सं ३३२७।  
 अ नम्बर।

विषय—रामपुर में श्री अन्तर्गत वीरवलय के अन्तर्गत लिखवाए व श्री अर्धार्थी की विवा। अमिठिग  
 वन अन्तर्गत है।

३६५६ धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०० । प्रा० १०१×८३ इ च । भाषा—  
हिन्दी पद्य । विषय—समीक्षा । २० काल १७०० । ले० काल स० १८०१ काष्ठुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ७७३ ।  
अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति अपूर्ण ( वे० स० ११६६ ) भी है ।

३६५७ प्रति स० २ । पत्र न० १११ । ले० काल स० १६५४ । वे० स० ३३६ । क मण्डार ।

३६५८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११४ । ले० काल स० १८२६ माघ शुदी ६ । वे० स० ५६५ । च  
मण्डार ।

विशेष—हमराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं ।

इसी मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ५६६ ) भी है ।

३६५९ प्रति स० ४ । पत्र स० १६३ । ले० काल स० १८३० । वे० स० ३४५ । क मण्डार ।

विशेष—वेधरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में १ प्रति ( वे० स० १३६ ) भी है ।

३६६० प्रति स० ५ । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १८२५ । वे० स० ५२ । च मण्डार ।

विशेष—वन्तराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ३१४ ) भी है ।

३६६१ धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३८६ । प्रा० ११×५३ इ च । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल स० १६३२ । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । वे० स० ३३८ । क मण्डार ।

३६६२ प्रति स० २ । पत्र स० ३२२ । ले० काल स० १६३८ । वे० स० ३३७ । क मण्डार ।

३६६३ प्रति स० ३ । पत्र स० २५० । ले० काल स० १६३६ । वे० स० ३३४ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा ( वे० स० ३३३, ३३५ ) भी हैं ।

३६६४ प्रति स० ४ । पत्र स० १६२ । ले० काल × । वे० स० १७०७ । ट मण्डार ।

३६६५ धर्मपरीक्षाभाषा—ब्र० जिनदास । पत्र स० १८ । प्रा० ११×५३ इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—समीक्षा । २० काल × । ले० काल स० १६०२ काष्ठुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ६७३ । अ मण्डार ।

विशेष—१६ व १७वा पत्र नहीं है । अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र है ।

प्रादिभाग—

धर्म जियोमर २ नमू ते सार,

तीर्थकर जे पनरमु वाछित फल बढ़ दान दातार,

सारदा स्वामिणि चली तहु बुधिसार,



लक्षण एवं समीक्षा ]

३६६६ रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । मा० ११×५ इंच । भाषा-

संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट मण्डार ।

विशेष—१२ से भागे पत्र नहीं ह ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल म० १८२७ पीप मुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ मण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र म० ३७ । ले० काल सं० १६१५ मासोज मुदी १३ । वे० सं० २३६ । ज

मण्डार ।

३६७२ वक्ताश्रोतालक्षण । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण

ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । क मण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क मण्डार ।

३६७४ वक्ताश्रोतालक्षण । पत्र सं० ८ । मा० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षण

ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । क मण्डार ।

३६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६४५ । क मण्डार ।

३६७६ शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षण

ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ मण्डार ।

३६७७ शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । मा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ मण्डार ।

इति श्री कालिदास कृती शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवम्बेदु मिते असाढमुषी १३ त्रयोदश्यां पङ्क्तिजी श्री हीरानन्दजी तस्त्रिष्य पङ्क्तिजी श्री चोक्षचन्द्रजी तस्त्रिष्य पङ्क्ति विनयवताजिनदासेन लिपीकृत । भूरामलजी या भ्रात्रा ॥

३६७८ स्त्रीलक्षण । पत्र म० ४ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८१ । अ मण्डार ।





## विषय- साग् रासा एवं वेलि साहित्य

**३१५१. अङ्गुवाटास—रासिपुरास ।** पत्र सं १२ से २७ । या १ × ४३ इ. च. मत्स्य-हिन्दी ।  
**विषय—**मत्स्य । १८ कल सं १११७ मास्य गुरी २ । से कल सं ११७१ । पुर्त । से सं २ । छ मत्स्यार ।  
**विषय—**अभिलष प्रचस्ति निम्न प्रकार है—

एतत् एषु लीं अङ्गना यद् बूनी यजर्षी वीर्षे ।  
 धलिं उच्चं ये कश्च बुद्ध निम्ना लोच्य होर्षे ॥  
 संबद् बोलद् कण्ठे तठि ब्रह्मा धुषि मी बीष कञ्चतु रे ।  
 लोचन निरिरास्य मापीड यद् बोचर पुत्र मत्तु रे ॥  
 एत मत्स्य नामक कुल निबन्ध विबन्ध सेन मूर्ति लण्यारद् रे ।  
 पात्ररिण्य महिषा कर्तो विष देव गुरी यद् कञ्चर रे ॥  
 एतत् यथास्ति लोच्यु यद् महिषा कीरति मत्तित ।  
 यत्त प्रेनसे उरि कर्ता सेन कद् पाठ्यो यथास्ति रे ॥  
 विषयुक्तल पठित कद् पात्ररि कुलधीर रे ।  
 परस्य ममक केषा लक्षी साठिपुत्रक इन एत कर्ति रे ॥  
 धविषयनीरति यङ्गना या एति एत हीरद् याकञ्च रे ।  
 यद् कुलद् ये बोलिद् एहि मत्स्यी एत यद् पाठ्य रे ॥

**३१५२. आशीधरप्रसा—अनभूपय ।** पत्र सं ५ । या ११ × २ इ. च. मत्स्य-हिन्दी । विषय-  
 क्क ( कपल प्रचिनास क्क वर्स है ) । १८ कल × । से कल सं १२१२ यैवत्स गुरी १ । पुर्त । से सं  
 ७१ । छ मत्स्यार ।

**विषय—**भी बुद्धयि मट्टरिण्य भी कालकुल कुक्षिना यार् मत्स्यारनयी कर्मकवार् मत्स्यार ।

**३१५३ प्रति सं २ ।** पत्र सं ११ से २ । से कल × । से सं ७२ । छ मत्स्यार ।

**३१५४. अमोदविभिनानरास—वनारसीरास ।** पत्र सं १ । या १ × ४ इ. च. मत्स्य-हिन्दी ।

**विषय—**मत्स्य । १८ कल सं १ । से कल सं १ । ४ । पुर्त । से सं ११२७ । छ मत्स्यार ।

३६८३ चून्दनवालारास पत्र स० २ । आ० ६३×४३ इ च । भापा-हिन्दी । विषय-मती चन्दनवाला की कथा है । २० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६५ । अ भण्डार ।

३६८४ चन्द्रलेहारास-मतिशाल । पत्र स० २६ । आ० १०×४ इ च । भापा-हिन्दी । विषय-रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल स० १७२८ आमोज बुदी १० । ले० काल स० १८२६ आमोज बुदी । पूर्ण । वे० स० २१७१ । अ भण्डार ।

विशेष-—अक्षरावाद में प्रतिलिपि की गयी थी । दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एव अशुद्ध है । प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं ।

श्रुतिम-

सामाङ्क सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल ।  
 सद्यु मित्र समतागरिण, तिमतुटै जग जाल ॥३॥  
 मरुदेवि भरथादि मुनि, करी समाङ्क सार ।  
 केवल कमला तिए वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥  
 सामाङ्क मन सुद्ध करी, पामी द्वाम पकत्त ।  
 तिय ऊपरिन्दु सामलो, चद्रलेहा चरित्र ॥५॥  
 वचन कला तेह वनिछै, सरसध रसाल ।  
 तीरो जारु सक्त पडसो, सोभलता खुस्याल ॥६॥  
 सबत् सिद्धि वर मुनिससी जी वद भासू दसम विचार ।  
 श्री पभीयाव मँ प्रेम सु, एह रच्यो अघिकार ॥१२॥  
 खरतर गरापति सुखकरुजी, श्री जिन सूरिद ।  
 चढवती जिम साखा खमनीजी, जो धू रजनीस दिराद ॥१३॥  
 मुगुण श्री सुगुणकीरति गराजी, वाचक पदवी धरत ।  
 अतयवामी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महत ॥१४॥  
 प्रथमत सुसी अति प्रेम स्यु जी, मतिकुसल कहै एम ।  
 सामाङ्क मन सुद्ध करो जी, जीव बए भ्रइ लेहा जेम ॥१५॥  
 रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अम्पास ।  
 छसय चौबीस गाहा अछै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ॥१६॥  
 भरौ गुरो सुरो भावस्यु जी, गरुभातरण गुण जेह ।  
 मन सुध जिनधर्म तँ करै जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥  
 सर्व गाया ६२४ । इति चन्द्रलेहारास सपूर्ण ॥

३६८. अङ्गाराखण्डरास—ज्ञानमूपय । पत्र सं २ । पा १ × ४२ इव । भाषा—हिन्दी कुम्हली  
विषय—रत्ना । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२७ । अ म्भार ।

विषय—यस ज्ञाने की विधि का वर्णन रास के अन्त में किया गया है ।

३६९. पाञ्चाराक्षिमद्रास—किन्नराक्षसुरि । पत्र सं २९ । पा ७ × ४२ इव । भाषा—हिन्दी  
विषय—रत्ना । र काल सं १६७२ पाञ्चोष मुदी ६ । ले काल × । पूर्ण । के सं १२४७ । अ म्भार ।

विषय—बुधि इन्द्राविजयनि के विरसे, मन्त्र में प्रतिनिधि की थी ।

३७०. वर्मरासा— । पत्र सं २ के २ । पा ११ × ९ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्म । र  
काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२४७ । अ म्भार ।

विषय—बहिष्ता, छडा तथा ९ के घाले के अन्त में है ।

३७१. नक्षत्राररास— । पत्र सं २ । पा १ × ४२ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—राशिवार मन्त्र  
बहुमन्त्र वर्तन है । र काल × । ले काल सं १५३१ अक्षुप्त मुदी १२ । पूर्ण । के सं ११२ । अ म्भार ।

३७२. नेमिमाषरास—विजयदेवसुरि । पत्र सं १ । पा १ × ४२ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—  
रत्ना ( अक्षय्य नेमिमाष का वर्तन है ) । र काल × । ले काल सं १२९ बीष मुदी २ । पूर्ण । के सं  
१२९ । अ म्भार ।

विषय—अक्षुप्त में अक्षय्यरास के प्रतिनिधि की थी ।

३७३. नेमिमाषरास—अरि रामचन्द्र । पत्र सं ३ । पा २१ × ४२ इव । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—रत्ना । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ११४ । अ म्भार ।

विषय—आविशाल—

इहा— अर्चित विष के घालीया जगामा अलुकार ।  
अक्षर देवदनु प्रदीपार लो धार ॥१॥  
बीचवारी बीनु हुब, पात्रवती खू मैप ।  
विषेअर लोवा कली लामन के अर कैय ॥२॥

काल मिलेगुद बुधिरत्ना ———— ।

मुक्तापी लोख केने पात्र बीषन १७ अन्त मेंदीपान ।  
दीपती अर्पटी पुषारपाय ॥३॥  
अक्षुप्त विदे विहंगुद मैषा केजी रत्नी करेक ।  
बहारवती कली कली ॥४॥

जाण जन(म)भीया अविहस्त देव इह वोसट सारे ।  
ज्यारी तेव मे वाल प्रहाचारी बावा ममोए ॥३॥

प्रत्तिम—

मित ऊर पत्र ढालियो दीठी दोय मुया मे निचोडरे ।  
तिरण ममुवार माफक है, रिपि रामच जी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजारी तत् मीपणी छाटाजारी चेलाह सतु लोखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि  
हुई थी ।

३६६१ नेमोश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र स० ८ मे ७० । प्रा० ६×४<sup>१</sup> इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ३८३ । छ भण्डार ।

३६६२ पचेन्द्रियरास । पत्र स० ३ । प्रा० ६×४<sup>१</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा ( पाचो  
इन्द्रियो के विषय का वर्णन है ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३ पल्पविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । प्रा० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—गमा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४३ । छ भण्डार ।

विशेष—पल्पविधानग्रन्थ का वर्णन है ।

३३६४ बकचूलराम—जयकीर्ति । पत्र स० ४ से १७ । प्रा० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
रासा ( कथा ) । २० काल स० १६८५ । ले० काल स० १६६३ फागुग बुदी १३ । प्रपूर्ण । वे० स० २०६२ । अ  
भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र मही है । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।  
धीरनि चादी भावसु पृहुत राजग्रह वास ॥१॥  
सवत सोल पन्थासीइ शूर्जरे देस मकार ।  
कल्पबल्लीपुर सोमती इन्द्रपुरी धवतार ॥२॥  
नरसिंहपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकद ।  
चैत्यालि श्री धूपभवि प्रावि भवीयण बु द ॥३॥  
फागुसघ विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।  
विजयसेन विजयाकर यशकीर्ति यशस्तोम ॥४॥  
उदयमेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।  
रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरक्षण जेहजात ॥५॥

एत एतु मुरीवरकनु बबरीति वरकार ।  
 वे अधिकरु नचि ब्रांमनी वे पायी बबपार ॥१॥  
 बयदुमर रलीया मगु बबपुन बीपु नाय ।  
 वेह एत एतु बबपु बबरीति मुननाम ॥२॥  
 बीय बल निर्भत हुई पुएवकने विहार ।  
 गांमलता नंयु मनि वे बलि नरतिनार ॥३॥  
 बाउ बामर नक महीबंद वुर त्रिबवास ।  
 बबरीति कहिता एतु बंकरुनपु एत ॥४॥  
 इति बंकरुनपु उवता ।

संयु १६६३ मय 'छात्रुठ बुयी १३' तिल्लाह एते मघई बगुरक भी बबरीति जगप्याम भी बीरबंद  
 बगु भी बसबंध बाह बगुरा वा बीच एतु बगु भी बबबंध मघई ।

३६६५ मविध्वन्तरास—मगुरावमगु । पम सं ३६ । पा १२× इज । मया शिपी । विच-  
 एता-मविध्वरत भी कया है । र मल सं १९३३ कातिव मुयी १४ । के मल × । कुई । के सं ९९ । अ  
 मघार ।

३६६६ मति सं २ । पम सं ९६ । मे मल सं १७२४ । के सं १६९ । अ मघार ।  
 विधेय—बावेर म भी मगुरावम नैवताम मे भी बगुरक वेकेबरीति के विच्य ब्यापाम लोनी मे प्रतिमिपि  
 भी भी ।

३६६७ प्रति सं ३ । पम सं ९ । मे मल सं १७१५ । के सं २९९ । अ मघार ।  
 विधेय—द बगुराव मे बबपुर में प्रतिमिपि भी भी ।

इके प्रतिरिठ अ मघार मे १ प्रति ( के सं १३२ ) अ मघार मे १ प्रति ( के सं १६१ ) एता  
 म मघार मे १ प्रति ( के सं १३२ ) बीर है ।

३६६८ रुबमिहीविनाहवेकि ( कृप्यकमिसीबकि )—पुपीराव राठीह । पम सं ३१ के  
 १२१ । पा १×९ इज । मया-शिपी । विच-बैलि । र मल सं १६३ । मे मल सं १७१६ बीच मुयी २ ।  
 मयुरी । के सं १९४ । अ मघार ।

विधेय—बैचविटी मे मगुराव जगप्याम मे प्रतिमिपि भी भी । ९३ मय है । शिपी मय में टीम्य भी भी  
 हुई है । ११२ अ वे बगो एतु मय है ।

३६६६ शीलरामा—विजयदेव सूरि । पत्र स० ४ मे ७ । प्रा० १०३×८ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रामा । २० काल × । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी १३ । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीश्वरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नमूरि शिष्य १० नदिगग  
लिखत । उसवसेसघ वालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन मु आविका नाली पठनार्थ लिखित दाग्मच्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचद तरगुइ सुपनाय

सीस धरी निज निरमल भाइ ।

नयग जालउरहि जागतु,

नेमि नमउ नित वेकर जोडि ॥

वीनतो एह जि वीनवउ,

इक विणु अन्ह मन वीन विछोडि ।

सील सघातइ जी प्रीतडी,

उत्तराध्ययन वाबीसमु जोइ ॥

वली अने राय थवी अरथ आना विना जे कहसु होइ ।

विफल हा यो मुअ पातक मोइ, जिम जिन भाप्यठ ते सही ॥

दुरित नइ दुवल सहरइ दूरि, वेगि मनोरथ माहरा पूरि ।

आणामुसयम आरिया, इम वीनवउ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति नील रामउ समाप्त ॥

३७०० प्रति स० २ । पत्र स० २ मे ७ । ले० काल स० १७०५ आशुवि सुदी १८ । वे० स० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१ प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० २५७ । अ भण्डार ।

३७०२ श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र १० १० । प्रा० १०×४३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा ( श्रीमान रासा की कथा है ) । २० काल स० १७४२ वैश्व बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एक अन्त भाग निम्न प्रकार है—

बीजिमात्र नमः ॥ इत्य निष्ठी ॥

बडबीमे म्हापु खिलाम् काम पनापद बकमिदि पाम ।  
 मुदरेषा गरि रिचम नमार्द्रि, महिनु नवरदमड अविपार ॥  
 नम च्च न्द्र अचर कषैक पिणि नवपार नमड व्दी एक ।  
 विद्वेषक नवरद मुपनमड मुक नम्यी श्रीपाल वररामड ॥  
 धादिच तर नम पर धंजीन नमिठ लटीर वयो बीरोव ।  
 पाम चरिच न्द्र द्विष काटी मुक्तिन्मो नज्जाटी मुक नम्यी ॥

अन्तिम—

श्रीपाल चरिच मिहूलनड, मिद्वेषक नवरद चरिः ।  
 प्यारिचर लड मुक पारिचरि चरया च्च विस्तार ॥७९॥  
 श्री नक्षत्राडर वरि प्रयड श्री विचयत्र नरोम  
 नमिठ काति हरप वाचक लयी न्द्र विचहरप मुनील । १॥  
 लठरी वयलीधी लमे चरि नैच ठेरिडि काटा ।  
 ए रास काडल ना ल्की, मुक्ता लवा नम्यम ॥८०॥  
 इति श्रीपाल रास च्चर्तुर्ल । च्च तं २ ७६ ।

३०३ प्रति स २ । च्च तं १० । के काल तं १००२ वाचका मुदी ११ । के तं ७२२ । च्च  
 नम्यार ।

३०४ व नक्षत्रावेदि—साह कोडर । च्च तं १२ । या २ × २ १/२ इंच । च्चारा—हृत्वी । विचन-  
 मिजाठ । र काल तं १०३ वाचका मुदी ६ । के काल × । तुर्ल । के तं । च्च नम्यार ।

३०५. सुकुम्भलक्ष्मीरास—अष्टा खिलवास । च्च त १४ । या १ १/२ × २ १/२ इंच । च्चारा-  
 हृत्वी कुकराटी । विचन—पचा ( मुकुम्भल मुदि ना चर्येन ) । न काल तं १६१३ । तुर्ल । के तं १६९ । च्च  
 नम्यार ।

३०६ इ सुदरालरास—अष्टा राचमड । च्च तं १३ । या १९ × १ इंच । च्चारा—हृत्वी । विचन  
 लसा ( केड मुचर्यन ना चर्येन इ ) । र काल तं १६१३ । के काल तं १७२६ । तुर्ल । के तं १७६ । च्च  
 नम्यार ।

विचन—अष्ट कालचच नक्षत्रीचल मे इतिमिदि श्री श्री ।

३०७. प्रति स २ । च्च तं ११ । के काल तं १७२२ वाचका मुदी १ । के तं १६ । च्च  
 च्च नम्यार ।

३७८८ सुभौमचक्रवर्तिराम—नामचिनदास । पद्य न० १३ । मा० १०३×४ इञ्ज । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-रघु । २० वात × । ले० बाल × । पूर्ण । वे० न० १६० । कृ भण्डार ।

३७८९ हमीररासो—महेज करि । पद्य न० ८८ । मा० ६×६ इञ्ज । भाषा-हिन्दी । विषय-राम ।  
( ऐतिहासिक ) । २० वात × । वे० बाल न० १८८३ घासोज गुटा ३ । प्रपूर्ण । वे० न० ६०४ । कृ भण्डार ।





## विषय- गरिमात शास्त्र

—

३०१ गणितनाममासा—हरदत्त । पत्र नं १४ । पृ ६३×६६ पं । भाषा—बंल्लुप । विषय—  
नक्षत्रपात्र । १ बाल × १ ले बाल × १ पूर्ण । के नं ४ । अ अक्षर ।

३०११ गणितशास्त्र— । पत्र नं ११ । पृ ६×११ पं । भाषा—बंल्लुप । विषय—नक्षत्र । १  
बाल × १ ले बाल × १ पूर्ण । के नं ७९ । अ अक्षर ।

३०१२ गणितशास्त्र—हेमराज । पत्र नं ३ । पृ १२×१२ पं । भाषा—हिन्दी । विषय—नक्षत्र ।  
१ बाल × १ ले बाल × १ पूर्ण । के नं २२२१ । अ अक्षर ।

विषय—हरदत्त के पत्र मुद्रक केनचूरी हैं । पत्र नीचे हैं कवा बीच से एक पत्र नहीं है ।

३ १३ कृती बहादुरों की तुलना— । पत्र नं ४ । पृ ६×६ पं । भाषा—हिन्दी । विषय—  
नक्षत्र । १ बाल × १ ले बाल × १ पूर्ण । के नं १९९५ । अ अक्षर ।

विषय—शास्त्र के बहा के कौनों की कौरी हरदत्त केनचूरु नामे की विधि की है । पुनः पत्र १ से ३ तक  
धीमे बर्तन नाममासा । हरदत्त की भाषा में विषय ( कविता ) का वर्णन है । पत्र ४ में १ तर नाक्षत्र नामे की  
बर्तन है । पत्र १ से ३ तक पढ़ाये हैं । विन्दी २ जगह पढ़ाया पर मुद्रकपत्र पत्र है । ३१ से ३६ तक तीन भाग के  
मुद्रक पत्र हैं । सिद्ध पाठ भीर हैं ।

१ हरिनाममासा—राजुराचार्य । बंल्लुप पत्र ३ तक ।

२ गोपुलगांधकी शीला— हिन्दी पत्र ४३ तक ।

विषय—कृष्ण ऊपर का वर्तन

३ समस्काशीगीता— पत्र १६ तक ।

४ स्नेहशीला— पत्र ४७ ( पूर्ण )

३०१४ राजसूयमासा— । पत्र नं २ । पृ ६×६ पं । भाषा—हिन्दी । विषय नक्षत्रशास्त्र ।  
१ बाल × १ ले बाल × १ पूर्ण । के नं १४२७ । अ अक्षर ।

३०१५ श्रीकृष्णगीता—सोहमसिंह । पत्र नं १ । पृ ११×६ पं । भाषा—हिन्दी । विषय—  
नक्षत्रपात्र । १ बाल नं १७१४ । ले बाल नं १ ३ काकुल कुरी ६ । पूर्ण के नं ६४ । अ अक्षर ।

विषय—नेकन प्रकृति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरावास । पत्र न० ३ । पृ० ६४४३ इष । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० न० ६८१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स० २ । पत्र न० ५५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । व्य भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र न० १३ । पृ० १३×८ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९ प्रति स० २ । पत्र न० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८२ । ट भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । पृ० ११३×४ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एव नवीन है ।

३७२१ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल न० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० न० १७० । व भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में भागवतचन्द्र के पुत्र मनोरथराम मेठी ने हिण्डौन में प्रति-  
लिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल × । वे० स० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिमा ( वे० न० ३२४ में ३२७ तक ) भी हैं ।

३७२३ प्रति स० ४ । पत्र न० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० स० २१६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिमा ( वे० स० २२०, २२१ ) भी हैं ।

३७२४ प्रति स० ५ । पत्र न० ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



## निषय- गरीत-शास्त्र

—

३०१ गणितनाममाहा—हरद्वय । पत्र सं १४ । वा २२×८ दंश । भाषा—संस्कृत । विषय—  
वस्तुतत्त्वज्ञान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ८ । अक्षरमात्र ।

३०११ गणितशास्त्र— । पत्र सं ११ । वा १×१६ दंश । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । र  
काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ७९ । अक्षरमात्र ।

३०१२ गणितसार—हमराज । पत्र सं २ । वा १२७ दंश । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।  
र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं ११२१ । अक्षरमात्र ।

विषय—शामिषे पर मुन्दर केनदूरे है । पत्र जीर्ण है तथा बीच में एक पत्र खरी है ।

३०१३, पट्टी पहाड़ों की पुस्तक— । पत्र सं ८७ । वा २×६ दंश । भाषा—हिन्दी । विषय—  
गणित । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं ११२ । अक्षरमात्र ।

विषय—ब्राह्मण के चचा में सेतो की डाँटी धाँदि कलकर बाने की विधि दी है । पुत्र पत्र १ में ३ एक  
सीधा बर्तन ब्याप्त्याजः । अर्द्ध की भाषा लखिवा ( बरदिवा ) वा वर्णन है । पत्र ४ में १ एक बालिष्णु शीत के  
स्लोक है । पत्र १ में ३१ एक पद्य है । विगी २ जनक पहाड़ी पर मुद्रापित पद्य है । ३१ में ३९ एक लोक गार के  
द्वय विधे दूजे है । किन्तु पत्र धीर है ।

१ हरिनाममाहा—रामुराधाव । अमृत पत्र ३० एक ।

२ शास्त्रशास्त्रकी शीका— हिन्दी पत्र ४२ एक ।

विषय—दृष्ट कथन वा वर्णन

३ समस्योषीगीता— पत्र ८९ एक ।

४ हनेहमीका— पत्र ४७ ( अपूर्ण )

३०१४ राजममाहा— । पत्र सं २ । वा ×४ दंश । भाषा—हिन्दी । विषय वस्तुतत्त्वज्ञान ।  
र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १४१० । अक्षरमात्र ।

३०१५, अज्ञानवतीमाया—स्येहनमिश्र । पत्र सं १ । वा ११×६ दंश । भाषा—हिन्दी । विषय—  
वस्तुतत्त्वज्ञान । र काल सं ३०१४ । ले काल सं १३ अमृत मुठी ६ । पूर्ण । के सं १४ । अक्षरमात्र ।

विषय—नैकन प्रकृतित पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—ज्यास मथुरादास । पत्र स० ३ । प्रा० ६×४३ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । ख भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र स० १३ । प्रा० १३×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । प्रा० ११३×५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६७ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है ।

३७२१ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० स० १७० । ख भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में मारणचन्द के पुत्र मनोन्धराम नेठी ने हिण्डीन में प्रति-  
लिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १५४ । ले० काल × । वे० स० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० स० ३२४ में ३२७ तक ) और हैं ।

३७२३ प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० स० २१६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया ( वे० स० २२०, २२१ ) और हैं ।

३७२४ प्रति स० ५ । पत्र स० ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



# विषय-सूची



३०२४. आचार्यों का ज्योतिष—। पृष्ठ १। भा १२२×२२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल १०१६। पूर्ण। के १२७। अ. नम्बर।
- विषय—नुवाजगढ़ सीपगढ़ी के प्रविष्टि की की। इती केटम में १ प्रति की है।
३०२५. अठेखवालोपतिचक्र—। पृष्ठ १। भा ७×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के ११। अ. नम्बर।
- विषय—८४ बोधो के नाम की विने हुए हैं।
३०२६. गुर्वाचलीचक्र—। पृष्ठ २। भा १×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के २३। अ. नम्बर।
३०२७. शौरसीमादिचक्र—। पृष्ठ १। भा १×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के ११३। अ. नम्बर।
३०२८. शौरसीमादिकी अक्षमात्र-विशदीमात्र—। पृष्ठ २। भा ११×२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल १८७३ पीप मुठी २। पूर्ण। के २४१। अ. नम्बर।
- के ३० छटा भाग का विस्तार—। पृष्ठ २। भा १×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के ११६। अ. नम्बर।
३०३१. अक्षपुर का प्राचीन ऐतिहासिक नयन—। पृष्ठ १२७। भा २×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के १६२। अ. नम्बर।
- विषय—उत्तमक तपार्जनागुर भाषि बहाने का पूर्ण विवरण है।
३०३२. अक्षवर्ती मूकवर्ती की अक्ष-अ सुरेन्द्रकीर्ति। पृष्ठ ४। भा १×२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के ३। अ. नम्बर।
३०३३. तीर्थहोपतिचक्र—। पृष्ठ ४। भा १२×३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के २८। अ. नम्बर।
३०३४. तीर्थहोपति का अक्षमात्र—। पृष्ठ १। भा ११×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। १ काल ×। से काल १०३८ पालोत्र मुठी १२। पूर्ण। के ११४२। अ. नम्बर।

३७३५ दादूपद्यावली । पत्र म० १ । आ० १०×३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरोब मसकीन ठाट ।

जुगलवाई निराट निराणो बिराज ही ॥

बखनांस कर पाक जसौ चावी प्राय टाक ।

घडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजधमु देवल दयाल दास ।

घडयो कडाला बसै धरम कीया जही ॥

ईड वैहू जनदास तेजानन्द जोषपुर ।

माहन सु भजनीक आसोपनि वाज ही ॥

गूलर मे भाषोदास विदास मे हरिसिंह ।

चतरदास सिध्याबट कौयो तनकाज ही ॥

विहाणी पिरागदास डोडवानै है प्रसिद्ध ।

सुन्दरदास बू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बावो वनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।

नाबु एक माडोडी में नीकै नित्य छाजही ॥

सुंदर प्रह्लाद दास घाटबेसु छोड माहि ।

पूरव चतरगुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥

निराणदास माडाल्यी सडांग माहि ।

इकलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियो ॥

हाडोती गेगाइ जामे माखुजी मगन भये ।

जगाजी भडौंच मध्य प्रजाधारी मानियो ॥

लालदास नायक सो पौरान पटणदास ।

फाफली मेवाड माहि टोलोजी प्रमानियो ॥

साधु परमानंद इशोखती मे रहे जाय ।

जैमन खुहाण भलो खालड हरगानियो ॥

जेमल जोगी कुछाहो वनमाली चोकन्यौस ।

साभर भजन सो वितान तानियो ॥

मोहन बचठिनु नारोठ बिठारै मल्ल ।  
 बन्नाच मेवठैनु बल्लकर धामिनी ॥  
 बल्लैबहुरै बभवाड डीफेभल्ल बाबन मँ ।  
 भोटवाडै भंडूवांकु लजु बीरल्ल धामिनी ॥  
 ध्यंभल्लरी वनबल्ल लहोरी बल्लबोपल ।  
 बाप्लुवरुटी बंठबल्ल बाबल्लनु भादिनी ॥  
 धापी ये नरीबराठ बल्लबड भाबन भँ ।  
 मोहन मेवाडा भोन बाबन छीं रडे ॥  
 रड्टई मँ नामर बिभल्ल हू बजम फियो ।  
 बल्ल बल्ल पीबब डौला हूर लहे ॥  
 मोहन हरिदासीरो लम बल्लल्लबल्ल मय्य ।  
 बोनबल्ल संत बुद्धि बोल्लमिर भव ॥  
 बीबल्लम बाकीला मँ भोवेर कल्लमुनि ।  
 ल्वाभवाड बल्लल्लोनु बीरु के मँ भ्ये ॥  
 लीन्ना लाल्हा नरहर मनुदे बजम कर ।  
 म्हुन्नल्ल बंठेनल्ल बल्लु डुर पड़े ॥  
 पुरल्लल्ल लाराल्ल म्हुन्नल्ल मुन्नेर बली ।  
 धापी मँ बजम कर कम्म भोव रडे ॥  
 रल्लबल्ल रल्लोवाडै लंकेल्ल लयट बई ।  
 म्हुन्नल्ल बिनाइबनु बरुठि बील्ल लड़े ॥  
 बल्लम ही बाबा मय बल्लम ही म्हुंन डाल ।  
 बल्लुपंथी बल्लबल्ल बुने बींके कये ॥ १ ॥  
 भे तमी डुर बल्लु बरमल्लम बल्लु लम भेनल्ल के हिल्लमरो ।  
 मँ धापी बरलि मुन्हाटी ॥ टेक ॥  
 भे बिप्लंब बिरमल्ल हूर बंठ ते बल्ल ।  
 लंठलि श्री लरला बीने धम मोहिं धल्लु कर बीने ॥१॥  
 लमके धल्लल्लानी भम करो कुना मोरे ल्वानी  
 धमबलि धमबली रीब, दे बरल्ल बल्ल ली ठेबा ॥२॥  
 भे बल्लु रीब बल्ल्हा कम्मो भम बंभल्ल्हा ।  
 लल्लबिठ बाल्लं मँ बल्ल्हा बाने बल्लल्लल्लल्ल ॥३॥

खोरठ—

## राग रामगरी—

श्रीसे पीव वयू पाइये, मन चचल भाई ।  
 भाल मीच मूनी भया मळी गढ काई ॥टंक॥  
 छापा तिलक बनाय वरि नाचे अरु गावै ।  
 आपरण तो समझे नही, श्रीरा समझावै ॥१॥  
 भगति करे पाखड की, करणी का काचा ।  
 वही कबीर हरि वयू मिलै, हिरदै नही साचा ॥२॥  
 ॥ इति ।'

३७३६ देहली के बादशाहों का ज्यौरा । पत्र स० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—इतिहास । २० काल × । ले० वान × । पूर्ण । वे० सं० २६ । म्क भण्डार

३७३७ पञ्चाधिकार । पत्र म० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनमेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ मे आचार्यों का ऐतिहासिक वर्गन है ।

३७३८ पट्टावली । पत्र म० १२ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । म्क भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के सब्द की पट्टावलि है । अन्त मे खडेलवान वशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९ पट्टावलि । पत्र म० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—स० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४० पट्टावलि । पत्र स० २ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम हैं । पीछे सब्द १७६६ मे नागौर के गच्छ मे अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । स० १५७२ मे नागौर मे अजमेर का गच्छ निकला । उसके स० १८५२ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१ प्रतिष्ठाकुसुमपत्रिका । पत्र स० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।



सोहन कपटीपु नारीक विठार्क कर्क ।

बल्लभ मेवठेपु मलकर प्राथिनी ॥

नार्कबहुरै नवबाध टीक्येभाम नाकन री ।

भोटबाई क्येहुनाम्ह ननु सोपल नर्तनयी ॥

धम्बालयी कपनाम राहीपी कनपोपल ।

बारम्बाली संतबाध नाबळ्ळु भागिनी ॥

पायी मे कटीबकल कानपड नावर कँ ।

सोहन केवाडा जोन सज्जल लीं एहे ॥

टूटई रीं नत्तर निजान हु मजग विबो ।

बल्ल कप बीचन बीठा हर नहे ॥

सोहन बरिवासीपी लन नत्तरजान कप ।

बोळ्ळल संठ कुहि कोमनिर भये ॥

बीनराम क्येसीटा मे बोवेर काननुनि ।

स्यापकल म्हात्मापिु बीड कँ में क्ये ॥

सीला नत्था नत्तर भसुरै कनन कर ।

महामन बरिवाकल ननु डुर नहे ॥

पुरसुबळ ताटाकळ म्हात्मान मुम्हेर बली ।

दांभी मे कनन कर नाग बीच क्ये ॥

राजकल राह्यीबाई कननया प्रनद कँ ।

म्हामन किनाइकनु जांठि बील नहे ॥

कानन ही नांवा प्रन कानन ही म्हेल कान ।

कानुर्गनी कनकल कुने वींके नहे ॥ २ ॥

ये नवो डुर ननु परकजान कानु सन संतन के हिलवाटी ।

रिं कानो कानि तुम्हाटी ॥ टंक ॥

जे निरालंब निरवाता इय संत लीं काना ।

संतनि को काना वींजे प्रन बींहे कानु कर लींजे ॥१॥

कनके संतकानी प्रन कटी कृपा मोदे स्वानी

कनकति कनकली देवा, दे कानन कनक वीं केवा ॥२॥

ये कानु वीच कवाना कानो कन प्रंजला ।

कठकित कानन मे काना, काने कानाककाना ॥३॥

सोरठ—

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हमराज । पत्र सं० १ । प्रा० ८×९ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । अ मण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हमराज न जयपुर के जैन पंचा के नाम प्रयत्ना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का मकन पंच साधर्मो बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी नाहिव का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समन्त नाधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हमराज की या विज्ञप्ति हे सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैना का अच्युत वर्गन है । अमरचन्द्रजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र ( मावडी पत्र ) भी है जिसमें हमराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पड़ता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार व प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४ शिलालेखसंग्रह । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।  
२० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न लिखो का संग्रह है ।

- १ चातुर्व्य वसोराक्ष पुलकेशी का शिलालेख ।
- २ भद्रवाहू प्रशस्ति
- ३ मल्लियेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन । पत्र सं० १ । प्रा० ११×२८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । अ मण्डार ।

विशेष—चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६ श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३१ । अ मण्डार ।

३७५७ श्रावकों की ७० जातिया । पत्र सं० २ । प्रा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।  
विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ मण्डार ।

विशेष—जातिया के नाम निम्न प्रकार हैं ।

- १ गोलाराडे २ गोलसिघाड़े ३ गालापूर्वी ४ लवेनु ५ जैसवाल ६ खंडेलवाल ७ बधेलवाल ८
- अगरवाल, ९ सहलवाल, १० असरवापोरवाल, ११ बोसखापोरवाल, १२ दुसरवापोरवाल, १३ जागडापोरवाल,
- १४ परवार, १५ बरहोया, १६ भेसरपोरवाल, १७ सोरठीपोरवाल, १८ पन्नावतीपोरमा, १९ खंथड, २० पुसर

विशेष—सं ११२७ काकुल पाल का कुम्भुमपवित्रा की प्रतिष्ठा वा है। पत्र कार्तिक शुभी १३ का तिथि है। इसके साथ सं ११३१ की कुम्भुमपवित्रा श्री हुई विष्णु वन्द्ये की पीर है।

३७४२. प्रतिष्ठानाम्नावलि—। पत्र सं १। मा १०० ई. व। माया—हिन्दी। विषय—इतिहास।  
२ कल ×। मे काळ ×। पूर्ण। के सं १४३। अ मन्थार।

३७४३. प्रतिष्ठ २। पत्र सं १। मे कल ×। के सं १४३। अ मन्थार।

३७४४. बसालकारगणपुर्वावलि—। पत्र सं ३। मा ११० ई. व। माया—उदरुत। विषय—  
इतिहास। २ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के सं २१। अ मन्थार।

३७४५. महारक पट्टवलि। पत्र सं १। मा ११० ई. व। माया—हिन्दी। विषय—इतिहास। २  
कल ×। मे काळ ×। पूर्ण। के सं १४३। अ मन्थार।

विशेष—सं १७०० तक की च्छादक पट्टवलि की हुई है।

३७४६. प्रतिष्ठ २। पत्र सं १। मे कल ×। के सं ११०। अ मन्थार।

विषय—संस्कृत १ एक हीमे मने च्छादकों के नाम विषे है।

३७४७. आत्रायणवलि—। पत्र सं २ से २६ मा १०० ई. व। माया—हिन्दी। विषय—इतिहास।  
२ कल ×। मे काळ ×। अपूर्ण। के सं ११४। अ मन्थार।

३७४८. रचवात्रायणमात्र—अमोक्षकणव्। पत्र सं ३। मा १०० ई. व। माया—संस्कृत।  
विषय—इतिहास। २ काळ ×। मे कल ×। पूर्ण। के सं ११०। अ मन्थार।

विशेष—बन्धु की रचवात्रा का वर्णन है।

११३ पत्र है— अन्तिम—

एकीमविद्यतिवैषय सहस्रस्ये वात्सल्यव्यपी विनेतिष्ठ एतन्नुभस्य पीयत्रिनेके वर सुर्वरचस्यवाचा विभाक्तं  
बन्धु प्रसदे बन्धु ॥११३॥

एवमन्तव्यव्योर्त्तं वधितो हट्टुर्वयः

मन्मा नीमित्तवक्त्र स तच्छ्रुत्वापि वा संभुवा ॥११३॥

॥ इति रचवात्रा प्रकाश संयज्ञा ॥ कुर्वे मुनव् ॥

३७४९. राजमर्यादिति—। पत्र सं २। मा १०० ई. व। माया—उदरुत। विषय—इतिहास। २  
कल ×। मे काळ ×। अपूर्ण। के सं ११३। अ मन्थार।

विशेष—वी प्रथित ( अपूर्ण ) है धरिवा व्यापक दकिता के विरलेक विषे हुए है।

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हसरराज । पत्र सं० १ । ग्रा० ८×९ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल म० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसरराज ने जयपुर के जैन पंचो के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा

है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मी बड़ी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी माहिद का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हसरराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमे जयपुर के जैनों का अन्ध्या वर्णन है । अमरवन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र ( भावडी पत्र ) भी है जिसमे हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । म० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४ शिलालेखसंग्रह । पत्र म० ८ । ग्रा० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

- १ चालुक्य वशोत्तम पुलकेशी का शिलालेख ।
- २ मद्रवाहू प्रशस्ति
- ३ मल्लिपण प्रशस्ति

३७५५ श्रावक उत्पत्तिवर्णन । पत्र सं० १ । ग्रा० ११×२८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९०८ । अ भण्डार ।

विशेष—चौरासी गोत्र, वन तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६ श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७ श्रावकों की ७० जातिया । पत्र सं० २ । ग्रा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१ गोलाराडे २ गोलसिघाड़े ३ गालापूर्व ४ लवेचु ५ जैसवाल ६ खडेलवाल ७ बघेलवाल ८ अग्रवाल, ९ सहलवाल, १० असरवापोरवाड, ११ वासन्वापोरवाड, १२ दुसरवापोरवाड, १३ जागडापोरवाड, १४ परवार, १५ बरहीया, १६ असरपोरवाड, १७ सोरठीपोरवाड, १८ पयावतीपोरमा, १९ खंध, २० पुसर

२१ बहुरमेत २२ बहाइ २३ धणुग लकी २४ छहल २५ कमीष्मलुटी २६ मोरवाइ २७ मिडलवा, २  
 कठौण २८ नाग १ कुन्गच्छीवाल ३१ कीकडा ३२ मलरवाडा ३३ मोरवाइ ३४ खरेवाइ ३५ हू  
 तुल, ३६ मेवडा ३७ छहौण १ मेवाडा ३६ बडाडा ४ पीठोडा ४१ नरसंगपुण, ४२ तापडा ४३  
 बल ४४ हुमड ४५, रामनवाडा ४६ बरनोरा ४७ बमगापावक ४८ रंभमपालक ४९ कलभरपालक, ५  
 लखरपालक ५१ हुमर ५२ लभर ५३ बबल ५४ बलवाटो ५५, कर्मजावक ५६ बरिर्कमपालक ५७ कैर  
 ५ गुडेवड ५८ बबबीपुल ६ क्येमडी ६१ गंवरका ६२, पुनपुट, ६३ तुनामावक, ६४ कर्भमपावक  
 ६५, डेवनाभावक ६६ मोमाभावक ६७, सोममपावक ६ बाववापालक ६८ रंभनलीपालक ७ पक्षीरंभा  
 ७१ बभोरिका ७२ बलमीवाल

नोट—हुमड बरिठि की बी बार विधाने त १ संख्या बड परै ई ।

३०६८. सुतरकंब—इ हुमचन्द्र । पत्र सं ७ । भा ११ × १२ इंच । भाषा—ब्राह्मण । विषय—  
 इतिहास । र कल × । ले कल × । पुर्र्ण । के त २१ । अ मथार ।

३०६९. प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले कल × । के त ७२१ । अ मथार ।

३०७०. प्रति सं ३ । पत्र सं ११ । ले कल × । के त २१६१ । अ मथार ।

विषय—पत्र ७ के भावे सुतावतार थीवर कुठ भी ई पर पत्रो बर कथार फिट बने ई ।

३०७१. सुतावतार—रं श्रीवर । पत्र सं ३ । भा १ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 इतिहास । र कल × । ले कल × । पुर्र्ण । के त ३६ । अ मथार ।

३०७२. प्रति सं ३ । पत्र सं १ । ले कल सं १ २१ नीप सुटो १ । के त २१ । अ  
 मथार ।

विषय—कमलाच टोष्वा के प्रतिसिपि की बी ।

३०७३. प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ले कल × । के त ७२ । अ मथार ।

३०७४. प्रति सं ४ । पत्र सं १ । ले कल × । पुर्र्ण । के त ३२१ । अ मथार ।

३०७५. संभवशीमी—धानवराच । पत्र सं ६ । भा × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय इतिहास ।  
 र कल × । ले कल सं १ । पुर्र्ण । के त ११३ । अ मथार ।

विषय—विवाग्निवाच भाषा बीवा जनपतीवाल कुठ भी ई ।

३०७६. सबसरबहील— । पत्र सं १ के १७ । भा १ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 इतिहास । र कल × । ले कल × । पुर्र्ण । के त ७६२ । अ मथार ।

३७६७ स्थूलभद्र का चौमारा वर्णन । पत्र स० २ । भा० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २११८ । अ मण्डार ।

### ईंढर आवा आवली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीठ होवे पास ।  
अरज कटं घरे आवजो रे लाल हू छू ताहरी दास ।  
चतुर नर आवो हम चर द्वा रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥  
भादवडे पीठ वेगली रे लाल हू कीम करू तरणगारे ।  
अरज करूं घर आवजो रे लाल मोरा छद्यत सार ॥२॥  
श्रासोजा मासनी चादणी रे लाल फुलतणी वीछाइ सेज ।  
रग रा मत्त कीजिय रे लाल आणी हीयडे तेज ॥३॥  
कालीक महीने कामीनि रे लाल जो पीठ होवे पास ।  
सदेसा सयण भण रे लाल अलनायो केम ॥४॥  
नजर निहाली बाल हो रे लाल आवो मीगसर मास ।  
लोक कहावत कहा करो जी पीठडा परम निवास ॥५॥  
पोस बालम वेगलो रे लाल भवडो मुज दोस ।  
परीत पनीतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥  
सीयाले मती घरणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।  
पोताने घर आवज्यो रे लाल डीलन कीजे नाह ॥७॥  
लाल गुलाल भवीरमु रे लाल खेलण लागा लोग ।  
तुज विण मुज नेइहा एरुली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥  
सुदर पान सुहामणो रे लाल कुल तरणो मही मास ।  
वीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥  
वीसारयो न वीसरें रे लाला जे तुम बोल्या बोल ।  
बेसाळे तुम नेम छु रे लाल तो वजड डोल ॥१०॥  
केहता दीमे कामो रे लाल काइ करावो वेठ ।  
ठीठ वणो हवे कराहा करो लाल भाद्री लागो जेठ ॥११॥

घटाओ बरबुरसोरे लाल बीज बीज जसुके बीजली रे बाब ।  
 मुज बीजा मुज नैहारै लाल बरन बाबै बीज ॥१२॥  
 रे रे कबी उवावली रे लाल कबी लीका उखुमार ।  
 बेर बनी पंथी लुपरदरे लाल के लीमी गार ॥१३॥  
 बार कबी नी धन छनी रे लाल घासी माल अरबाब ।  
 कमण बली कंठ बी रे लाल कबी न घाल्यो घाल ॥१४॥  
 ठे कबी बगद बरी रे लाल बालब बोने धाब ।  
 बुलबल बुब घालेब बी रे लाल रेह कओ बीमाल ॥१५॥

३०६८. हमीर बीपई—। पत्र ४ ११ से ३० । पृ ५६ । माला—कृष्णी । निपक-  
 रतिहल । र माल × । नै माल × । मसुरी । प १३१६ । ट मन्वार ।

विशेष—रचना में बायोमिथोस नहीं नहीं है । हमीर व महाकाव्यीय के मुद्र का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



## विषय-स्तोत्र साहित्य



- ३७६६ अकलकाष्टक । पत्र सं० ५ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० । ज मण्डार ।
- ३७७० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २५ । व्य मण्डार ।
- ३७७१ अकलकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-  
 हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल सं० १६१५ धावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क मण्डार ।
- विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिपा ( वे० सं० ६ ) भी हैं ।
- ३७७२ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । छ मण्डार ।
- ३७७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१५ धावण सुदी २ । वे० सं० १८७ षष्ठ  
 मण्डार ।
- ३७७४ अजितशातिस्तवन । पत्र सं० ७ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 २० काल × । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । व्य मण्डार ।
- विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है ।
- ३७७५ अजितशातिस्तवन—नन्दिपेण । पत्र सं० १५ । मा० ८३×४ इंच । भाषा-प्राकृत ।  
 विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ मण्डार ।
- ३७७६ अनाघीष्ठापिस्वाध्याय । पत्र सं० १ । मा० ६३×४ इंच । भाषा-हिन्दी गुजराती ।  
 विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट मण्डार ।
- ३७७७ अनादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । व्य मण्डार ।
- ३७७८ अरहन्तस्तवन । पत्र सं० ६ से २४ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
 स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १६८४ । अ मण्डार ।
- ३७७९ अश्वतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
 विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । व्य मण्डार ।
- विशेष—७८ पद्य हैं ।



३७८ आरामिहाराखवन—छाकर। पत्र सं २। मा २२×४ इंच। भाग—बंदूक। विषय—  
१ कल × १ ले कल × १ पूर्ण। के सं १७। छ मथार।

विषय—२२ लोच है। इन्व आराम करने से पूर्व ये विजयबलि यति को बकरवार किया गया है। ये  
बन विजयबलि के प्रतिनिधि की थी।

३७९ आरामना—। पत्र सं २। मा ४× इंच। भाग—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १ कल  
× १ ले कल × १ पूर्ण। के सं १९। छ मथार।

३८० इष्टोपदेश—सूक्तपाठ। पत्र सं २। मा ११२×४२ इंच। भाग—बंदूक। विषय—स्तोत्र।  
१ कल × १ ले कल × १ पूर्ण। के सं २२। छ मथार।

विषय—बंदूक में संविष्ट दीया की हुई है।

३८१ प्रति सं २। पत्र सं १२। ले कल × १ के सं ७१। छ मथार।

विषय—इसी मथार में एक प्रति (के सं ७२) थीर है।

३८२ प्रति सं ३। पत्र सं १। ले कल × १ के सं ७। छ मथार।

विषय—देवीपाल की हिन्दी इन्वा टीका सहित है।

३८३ प्रति सं ४। पत्र सं ११। ले कल सं ११४। के सं १। छ मथार।

विषय—संघी पनालाल कुनीराने इन हिन्दी पत्र सहित है। सं १११२ में भागों की थी।

३८४ प्रति सं ५। पत्र सं ४। ले कल सं ११७२ कीर कुटी ७। के सं ४। छ  
मथार।

विषय—बैठीराव के बचक में प्रतिनिधि की थी।

३८५ इष्टोपदेशटीका—आराधन। पत्र सं ११। मा ११२×४ इंच। भाग—बंदूक। विषय  
स्तोत्र। १ कल × १ ले कल × १ पूर्ण। के सं ७। छ मथार।

३८६ प्रति सं ७। पत्र सं १४। ले कल × १ के सं ११। छ मथार।

३८७ इष्टोपदेशभाषा—। पत्र सं २५। मा ११०×४ इंच। भाग—हिन्दी पत्र। विषय—  
स्तोत्र। १ कल × १ ले कल × १ पूर्ण। के सं १२। छ मथार।

विषय—बन की निवाले व वास्तव में (1100)। पत्र हूँ है।

३८८ इष्टोपदेशमध्य—शक्ति रामचन्द्र। पत्र सं १। मा १ × ४ इंच। भाग—हिन्दी। विषय  
स्तोत्र। १ कल × १ ले कल × १ पूर्ण। के सं १४। छ मथार।

स्तोत्र साहित्य ]  
[ ३०११ ]

३०६१ उपदेशसञ्ज्ञाय—रगविजय । पत्र सं ४ । भा० ११४४ । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं २१६३ । अ मण्डार ।

विशेष—रगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३०६२ प्रति सं २ । पत्र सं ४ । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं २१६१ । अ मण्डार ।

विशेष—इरा पत्र नहीं है ।

३०६३ उपदेशसञ्ज्ञाय—देवादि । पत्र सं १ । भा० ११४४ । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं २१६२ । अ मण्डार ।

३०६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य । पत्र सं १४ । भा० ३३४४ । भाषा—संस्कृत

प्राकृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं १५५३ आसोज सुदी १२ । वे० सं ४१ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुरुदेवसूरि के शिष्य गुरानिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति

यन्त्र सहित है । निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र वृत्ति ( ० - ०० ) भाषा—संस्कृत । विषय—

१ अजितशातिस्तवन—प्राकृत संस्कृत ३०१ हीसे ६००=३६ गाथा

विशेष—आचार्य गोविंदकृत संस्कृत वृत्ति सहित है ।

२ भयहरस्तोत्र—संस्कृत

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गभित सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि ११५५३ आसोज सुदी १२

को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल में श्रोत्रारिया नगर में श्री गुरुदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी ।

३ भयहरस्तोत्र—

विशेष—इसमें पादबंधक मन्त्र गभित अष्टादश प्रकार के मन्त्र श्री कृष्णाय नमः । मानतु गौडार्थ कृत हैं ।

३०६५ ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं ७ । भा० ११४४ । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं १४६ । अ मण्डार ।

३०६६ ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि । पत्र सं ११ । भा० १२४३ । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ५५६ । अ मण्डार ।

विशेष—यह षष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में नयी प्रवाची नन्द दिये

हये हैं ।

३०६७ अथमस्तुति—। पत्र सं ३। मा १३×२६ व। भावा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र। १  
काल ×। ले काल ×। मूर्त्ति। के सं १३१। अथ मन्थार।

३०६८ अस्मिन्ब्रह्मस्तोत्र—शैवमत्स्यमी। पत्र सं ३। मा १३×२६ व। भावा—संस्तुत। विषय—  
स्तोत्र। १ काल ×। ले काल ×। मूर्त्ति। के सं १४। अथ मन्थार।

३०६९ प्रति सं २। पत्र सं १६। ले काल सं १४२९। के सं ११९०। अथ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां ( के सं ११ १४२९ १९ ) भीर है।

३०७० प्रति सं ३। पत्र सं ४। ले काल ×। के सं ११। अथ मन्थार।

विशेष—द्वितीय दर्भ तथा मन्थ साधन विधि भी भी हुई है।

३०७१ प्रति सं ४। पत्र सं ३। ले काल ×। के सं २१।

विशेष—इच्छला के पदार्थ प्रति लिखी गई थी। ल मन्थार में एक प्रति ( के सं २११ ) भीर है।

३०७२ प्रति सं ३। पत्र सं ४। ले काल ×। के सं ११६। अथ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं २६ ) भीर है।

३०७३ प्रति सं ६। पत्र सं २। ले काल सं १०६। के सं १४। अथ मन्थार।

३०७४ प्रति सं ७। पत्र सं ७६ के ११। ले काल ×। के सं १३६। अथ मन्थार।

३०७५ अस्मिन्ब्रह्मस्तोत्र—। पत्र सं ३। मा १३×२६ व। भावा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र।  
१ काल ×। ले काल ×। मूर्त्ति। के सं ३४। अथ मन्थार।

३०७६ एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)। पत्र सं ३। मा ११×२६ व। भावा—संस्तुत।

विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल सं १८११ श्लेष मुरी। मूर्त्ति। के सं १३१। अथ मन्थार।

विशेष—संस्तुत टीका सहित है। प्रार्थन बोध्य है।

३०७७ एकीमात्रस्तोत्र—बादिदात्र। पत्र सं ११। मा १ ×२६ व। भावा—संस्तुत। विषय—  
स्तोत्र। १ काल ×। ले काल सं १८ ३ मात्र इच्छा १। मूर्त्ति। के सं १३४। अथ मन्थार।

विशेष—संस्तुत मन्थार में स्वयंभूत प्रतिनिधि की थी।

इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं ११ ) भीर है।

३०७८ प्रति सं २। पत्र सं २। ले ११। ले काल ×। मूर्त्ति। के सं १३६। अथ मन्थार।

३०७९ प्रति सं ३। पत्र सं ३। ले काल ×। के सं १३। अथ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्तुत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६४ ) और है ।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति मम्कृत टीका तहित है ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ५२ ) और है ।

३८११ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । व्य भण्डार ।

३८१२ एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इच । भाषा—हिं शो पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शान्तिनाथ स्तोत्र और है ।

३८१३ एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६४ ) और है ।

३८१४ एकीभावस्तोत्रभाषा । पत्र सं० १० । आ० ७×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । क भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका । पत्र सं० ३ । आ० १२३×५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । क भण्डार ।

३८१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज वृदी ५ । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६७ ) और है ।

३८१७ कल्पसूत्रमहिमा । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८ कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—

परमविचि चरवीसधि त्रिस्थयर,

सुरणर विसहर धुव चलणा ।

पुणु भणमि पच कय्याण दिगु,

भवियहु रिणुणह इवकमणा ॥

पन्थि—

हरि वन्द्यारजुम विन्द्यारजुमी

पणु विन्दु विता मविचन ।

वहिन मणुण्ड हउते केविता ।

। विन्दु हउते मणुण्ड मणुण्ड ॥

इति श्री मणुण्ड हउते वन्द्यारजुम विता ॥

३२१६. कल्याणमण्डिरस्तात्र—कुमुदवन्त्राशाम । पत्रे सं ५ । मा १५ <sup>१५</sup> ५५ । वाप-संस्तुत ।

विपण-वाल्मीकि स्तव १२ । मा ५ । मे कल ५ । पुर्ण १५ । सं १२११ । वन्द्यार ।

विन्दु—इसी वन्द्यार मे ३ प्रतिपा ( के सं १५५ १२११ १२१२ ) मीर ह ।

३२१७ प्रति सं २ । पत्र सं १५ । मे कल ५ । पुर्ण १५ । वन्द्यार ।

विन्दु—इसी वन्द्यार मे ३ प्रतिपा मीर ह ( के सं १५५ १२११ १२१२ ) ।

३२१८ प्रति सं ३ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२१९ प्रति सं ४ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२० प्रति सं ५ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२१ प्रति सं ६ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२२ प्रति सं ७ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२३ प्रति सं ८ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२४ प्रति सं ९ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२५ प्रति सं १० । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२६ प्रति सं ११ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२७ प्रति सं १२ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२८ प्रति सं १३ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२२९ प्रति सं १४ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३० प्रति सं १५ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३१ प्रति सं १६ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३२ प्रति सं १७ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३३ प्रति सं १८ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३४ प्रति सं १९ । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३२३५ प्रति सं २० । पत्र सं १५ । मे कल सं १५५ १२११ १२१२ । वन्द्यार ।

३८२७ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका—प० आशाधर । पत्र स० ४ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-  
संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८ कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र स० १५ । भा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-  
संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेद्यगणाधिचन्द्रमहेशा विद्वज्जनाह्लादयद्,  
प्रवीण्याधनसारपाठनवरा राजति भास्वातर ।  
तच्छिष्य कुमुदापिदेवतिलक सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा,  
श्रेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधादद्भुत ॥१॥  
कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी ।  
वान्यमानाज्जनेनदाच्चव्रावर्क मुदा ॥२॥  
इति श्रेयोमदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका । पत्र स० ४ से ११ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वै० स० ११० । अ भण्डार ।

३८३० प्रति स० २ । पत्र स० २ मे १२ । ले० काल × । मपूर्ण । वै० स० २३३ । अ भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र चौधरी कनेसु मुन्दरदास मजमेरी मोल लीमी । ऐसा प्रतिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र स० ४७ । भा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०७ । क भण्डार ।

३८३२ प्रति स० ७ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वै० स० १०८ । क भण्डार ।

३८३३ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र स० ५ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १८७१ । ट भण्डार ।

३८३४ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास । पत्र स० ८ । भा० ६×३ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-  
हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० १११ । ट भण्डार ।

३८३६ केवलज्ञानीसम्भाषण—विनयचन्द्र । पत्र स० २ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३० शैलशालामावली—। पत्र सं १। मा १ × ४६ पं। अरुण-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।  
१ कल ×। से कल ×। पूर्ण। से सं १४४। अ मध्यार।

३८३८ गीतप्रबन्ध—। पत्र सं २। मा १ × ४६ पं। अरुण-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।  
१ कल ×। से कल ×। पूर्ण। से सं १२४। अ मध्यार।

विषय—हिन्दी में अष्टावक्र में एक अक्षर है।

३८३९ गीत भीतराग—पंडिताचार्य अमिषचचार्यकीर्ति। पत्र सं २१। मा १ × ४२ पं।  
अरुण संस्कृत। विषय-स्तोत्र। १ कल ×। से कल सं १। १ अष्ट कुटी ५५। पूर्ण। से सं २२। अ  
मध्यार।

विषय—अकूर नगर में श्री कुशीनाल के प्रतिबिम्ब की थी।

गीत भीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें १४ अक्षरों में जिस जिस रूप रत्नवियों में अक्षराल  
परिचाल का पौराणिक आशय दर्शाया है। अक्षराल की पंडिताचार्य अक्षराल से ऐसा अक्षर होता है कि वे अपने समय  
के विद्वान् विद्वान् के। अक्षर का निर्वाह सब रूपों में रचना से अक्षर की होता किन्तु यह समय अक्षराल ही संस्कृत  
१ ५६ से पूर्व है क्योंकि अष्ट कुटी अक्षराल सं १ ६ की अक्षराल नगर के अक्षराल के अक्षराल रत्नवों की  
कुशीनालकी छत्र में इस अक्षर की प्रतिबिम्ब की है अक्षराल अक्षराल से अक्षराल की है तथा अक्षराल है। अक्षराल से अक्षर  
को अक्षराल तथा अक्षराल में अक्षराल गीतों में पूजा है—

अक्षराल—अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल  
अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल

अक्षराल—अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल

अक्षराल में अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल  
अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल

३८४० प्रति सं २। पत्र सं १२। से कल सं १६१४ अष्ट कुटी। से सं १२२। अ  
मध्यार।

विषय—अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल  
अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल

अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल अक्षराल

३८४१ प्रति सं ३। पत्र सं १४। से कल ×। से सं ४२। अ मध्यार।

## स्तोत्र साहित्य ]

३८४० गुणस्तवन । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । ट मण्डार ।

३८४३ भुरुसङ्ग्रहनाम । पत्र सं० ११ । आ० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १७४६ वैशाल कुन्ती ६ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख मण्डार ।

३८४४ गोम्मटसारस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३ । व्य मण्डार ।

३८४५ घण्टरनिसाणी—जिनहपे । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ मण्डार ।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है ।

आदि—

सुख नपति नुर नायक परनपि पास जिरादा है ।

जाकी अरि कति अनोपम उपमा दीपत जात दिरादा है ।

अन्तिम—

मिढा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवदा है ।

घण्टर नीसाणी पास वल्लाणी गुणी जिनहरप कहदा है ।

इति श्री घण्टर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६ चक्रेश्वरीस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । ख मण्डार ।

३८४७ चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र सं० ६ । आ० ८×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ख मण्डार ।

३८४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल । पत्र सं० १ । आ० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ मण्डार ।

३८४९ चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पद्यों में वसुधारा स्तोत्र है । ५० विजयगरि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५० चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र सं० ४ । आ० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।



प्रथम चतुर्विंशत्यं प्रकाश है—

अथाथोत्रविद्योत्तरीयत्वात्ते विस्तारिण्यन्वितौ  
 एतन्नाथान्तरिकवर्तमानाह्वयता परावन्तुरे ।  
 अन्तर्वा विस्तारान्तरपवित्रुतां वंशवर्तनीतिभ्यः ।  
 एतन्नाथान्तरिकवर्तमानाह्वयता परावन्तुरे ॥१॥

३२२१ अतुर्विंशति तीर्थहस्तोत्र—अन्तर्वाविद्योत्तरीय । पत्र सं १२ । या १९ × २२ इंच ।  
 भागा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १२९ । अ मन्थार ।

विषय—अति संस्कृत टीका सहित है ।

३२२२ अतुर्विंशतितीर्थहस्तोत्र—आथर्वन्दि । पत्र सं ३ । या १२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत ।  
 विषय—स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं २१ । अ मन्थार ।

३२२३ अतुर्विंशति तीर्थहस्तोत्र— । पत्र सं १ । या १२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १२९१ । अ मन्थार ।

३२२४ अतुर्विंशतितीर्थहस्तोत्र— । पत्र सं ३ । या १२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । र कल × । ले कल × । वे सं २३० । अ मन्थार ।

विषय—अति संस्कृत टीका सहित है ।

३२२५ अतुर्विंशतितीर्थहस्तोत्र— । पत्र सं २ । या १२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १२२ । अ मन्थार ।

विषय—स्तोत्र मठूर वीरवन्दी धामनाथ का है । सभी वेदी वैद्यतामी या वर्तन स्तोत्र में है ।

३२२६ अतुर्विंशतिस्तोत्र— । पत्र सं ११ । या २२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
 र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १२७२ । अ मन्थार ।

३२२७ आमुचरस्तात्र—दृष्टीवराथाव । पत्र सं २ । या २२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १११ । अ मन्थार ।

३२२८ विष्णुसामयिपार्ष्णनाथ अन्तर्वाविद्योत्तरीय— । पत्र सं ४ । या २२ × २२ इंच । भागा—संस्कृत ।  
 विषय—स्तोत्र । र कल × । पूर्ण । वे सं ११२४ । अ मन्थार ।

३२२९ विष्णुसामयिपार्ष्णनाथ अन्तर्वाविद्योत्तरीय— । पत्र सं १ । या १२ × २२ इंच । भागा—  
 संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र कल × । ले कल × । पूर्ण । वे सं १९ । अ मन्थार ।

३८६० प्रति स० २ । पत्र म० ६ । ले० काल स० १८३० । आसोज सुदी २ । वै० म० १८१ । वृ  
भण्डार ।

३८६१ चित्रवधस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० २४८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२ चैत्यवदना । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३ चौबीसस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २०  
काल × । ले० काल स० १६७७ फायुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० स० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—वल्लभोराम ने भरतपुर में रणधीरसिंह के राज्य में प्रतिनिधि की थी ।

३८६४ छंदसग्रह । पत्र स० ६ । आ० ११२×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद हैं—

नाम छंद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द्र	१ पर	×
विजयकीर्ति छंद	"	२ "	×
गुरु छंद	"	३ "	×
पार्श्व छंद	प्र० लेखराज	३ "	×
गुरु नामावलि छंद	×	४ "	×
भारती सग्रह	ब्र० जिनदास	४ "	×
चन्द्रकीर्ति छंद	—	४ "	×
कृष्ण छंद	चन्द्रकीर्ति	५ "	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ "	×

३८६५ जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
( जैनेतर साहित्य ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २३३ । अ भण्डार ।

३८६६ विष्णुस्तोत्र—। पत्र सं ३। पा ११२×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल सं १ वन १। पूर्ण। वै सं १२। अक्षरधार।

विशेष—श्रीगीजाल के प्रतिमिति की थी।

३८६७ विष्णुस्तोत्र—। पत्र सं १६। पा ४९ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २४१। अक्षरधार।

३८६८ विष्णुस्तोत्र—। पत्र सं २। पा १ × २ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १३२। अक्षरधार।

३८६९ विष्णुस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १

कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २२६। अक्षरधार।

३८७० विष्णुस्तोत्र—। पत्र सं २। पा २ × २ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २१२। अक्षरधार।

३८७१ विष्णुस्तोत्र—कमलप्रभाषार्थ। पत्र सं ३। पा ३ × २ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ३६। अक्षरधार।

विशेष—यं कमलप्रभाषार्थ के प्रतिमिति की गई थी।

३८७२ प्रति सं २। पत्र सं २। ले कल ×। वै सं ३। अक्षरधार।

३८७३ प्रति सं ३। पत्र सं ३। ले कल ×। वै सं २३। अक्षरधार।

३८७४ प्रति सं ४। पत्र सं ४। ले कल ×। वै सं २६२। अक्षरधार।

३८७५ विष्णुस्तोत्र—पद्मार्थ। पत्र सं २। पा १ × २ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। १ कल ×। ले कल सं १ इंच। पूर्ण। वै सं १। अक्षरधार।

३८७६ विष्णुस्तोत्र—अष्टाशुभ। पत्र सं २। पा ११ × २ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ७३३। अक्षरधार।

३८७७ विष्णुस्तोत्र—शुभसाधु। पत्र सं २६। पा १ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १६१। अक्षरधार।

विशेष—शुभसाधु—इति शब्दु बाहुविकल्प विष्णुस्तोत्र के अष्टाशुभ नाम कर्तव्यविशेष के अर्थ।

३८७८ प्रति सं २। पत्र सं ३४। ले कल ×। वै सं ४६। अक्षरधार।

३८७६ जिनशतकटीका—नरमिहभट्ट । पत्र स० ३३ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० स० २६ । अ मण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८० प्रति स० ७ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५६ पौष बुदी १० । वे० स० २०० । क

मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतियां ( वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४ ) भी हैं ।

३८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० स० १०० । छ

मण्डार ।

३८८२ जिनशतकालङ्कार—समतभट्ट । पत्र स० १४ । भा० १३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३० । ज मण्डार ।

३८८३ जिनस्तवनद्वारिषिका । पत्र स० ६ । भा० ६३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । ट मण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४ जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र स० ६ । भा० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १८७ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५ जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र स० १७ । भा० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां ( वे० स० ५२१, ११२६, १०७६ ) भी हैं ।

३८८६ प्रति स० ७ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ५७ । ख मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ५७ ) भी है ।

३८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० स० ११४ । च

मण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करी की स्तुति भी है ।

इसी मण्डार में २ प्रतियां ( वे० स० ११६, ११७ ) भी हैं ।

३८८८ प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १३४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० २३३ ) भी है ।

३८८ प्रति स २। पत्र नं १२। मे वल सं १५९१ बालोज बुटी ५। के न २। अ  
 नम्बर।

विषय—इसके प्रतिष्ठित तनु नामविष, तनु स्वयंभुवनीय तनुतृणकाम एवं श्रीचरंवर्य श्री हैं। संतुष्ट  
 पोषण मंडल का विषय भी है।

३८९ प्रति सं ६। पत्र नं ५२। मे वल सं १६२१। के नं ५७। अ नम्बर।

विषय—संघन मील १९२१ सेनाकर्ष श्रीगुणमणि अ श्री विद्यामणि छगट्ट म श्री त्रिभुवणछगट्ट  
 म श्री लक्ष्मीचंद्र छगट्ट म श्रीश्रीचंद्र छगट्ट म ब्रह्मकृष्ण छगट्ट म श्री प्रभावण छगट्ट म श्रीचरंवर्य  
 देवामध्ये श्री प्रभावण के श्री बाहू देवमयो देवकेमार्ग बाहू प्रवीतमयो बाहूकृष्णछात्रे एवं तदुक्तान् स्तोत्र विवरण  
 कथार्य मिले।

इसी नम्बर मे एक प्रति ( के नं १५२ ) भी है।

३८९ द्विमहद्वयनामस्त्र—द्विमहद्वयनामस्त्र। पत्र नं २। वा १२×२५ इंच। अना-  
 संभृत। विषय—स्तोत्र। र वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के नं ३३६। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर मे ५ प्रतिष्ठा ( के नं ३३२ ३५१ १ २५ १ २ ) भी है।

३८९२ प्रति सं २। पत्र नं १। मे वल ×। के नं ३३१। अ नम्बर।

३८९३ प्रति स ३। पत्र नं ५२। मे वल ×। के नं ११७५। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर मे २ प्रतिष्ठा ( के नं ११९ ११ ) भी है।

३८९४ प्रति स ४। पत्र नं ५। मे वल सं १२३ बालोज बुटी ११। के नं ११२। अ  
 नम्बर।

विषय—इसी नम्बर मे एक प्रति ( के नं ११२ ) भी है।

३८९५ प्रति सं २। पत्र नं ३३। मे वल १। के नं ३३६। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर मे एक प्रति ( के नं ३३७ ) भी है।

३८९६ प्रति स ६। पत्र नं ३। मे वल नं १ ५। के नं ३३१। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर मे एक प्रति ( के नं ३३६ ) भी है।

३८९७ द्विमहद्वयनामस्त्र—द्विमहद्वयनामस्त्र। पत्र नं ५। वा ११×२५ इंच। अना-  
 संभृत। विषय—स्तोत्र। र वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के नं २। अ नम्बर।

३८९८ प्रति स ७। पत्र नं ३। मे वल नं १५९१ बालोज बुटी १। पुर्ण। के नं ५।  
 अ नम्बर।

विषय—इसके प्रतिष्ठित तनु नाम विषय के ३२ स्तोत्र विषय हैं।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचित श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्णं । बुधे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका

ने आत्मपठनार्थं प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६ जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० २६ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८११ । छ भण्डार ।

३६०० जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं— घटाकरण मंत्र, जिनपजरस्तोत्र पद्यो के दोनो विनारो पर सुन्दर बेलबूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १८० । आ० १२×७ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६४ च आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १६२ । क भण्डार ।

३६०३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८१० । छ भण्डार ।

३६०४ जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति । पत्र स० ८१ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८४ पीप सुदी ११ । पूर्ण । वै० स० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५ प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १७२५ । वै० स० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—बघ गोपालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वै० स० २०६ । छ भण्डार ।

३६०७ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र

२० काल × । ले० काल स० १८२२ आषाढ । पूर्ण । वै० स० ३०६ । व्य भण्डार ।

३६०८ जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र स० १६ । आ० ७×६ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल स० १६५६ । ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वै० स० २१० । छ भण्डार ।

३६०९ जिनोपकारस्मरण । पत्र स० १३ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १८७ । क भण्डार ।

३६१ प्रति सं० २। पत्र सं० १७। मंत्र काल ×। वै सं० २२२। क मन्वार।

३६११ प्रति सं० ३। पत्र सं० १। मंत्र काल ×। वै सं० १९। क मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार वै क प्रतिमां ( वै सं० १७ से १११ तक ) पीर है।

३६१२ छमोकाटविपाठ—। पत्र सं० १४। या ११×७<sup>१</sup> इय। भाषा—अष्टक। विषय—

स्तोत्र। १ काल ×। वै काल सं० १७२ ज्येष्ठ सुवी ७। पूर्ण। वै सं० २१३। क मन्वार।

विशेष—११ मन्वार सुवीकार मन्त्र लिखा हुआ है। अष्टक में बालराम कृत तन्त्रानि अष्टक वाठ तथा

११८ मन्त्र श्रीमद्ब्रह्मसंहिता ब्रह्मसंहितासमीपतः। मन्त्र पाठ लिखा हुआ है।

३६१३ प्रति सं० २। पत्र सं० १। मंत्र काल ×। वै सं० २१४। क मन्वार।

३६१४ छमोकारस्तोत्र—। पत्र सं० १। या ११×७<sup>१</sup> इय। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। वै काल ×। पूर्ण। वै सं० २१५। क मन्वार।

३६१५ वकाटकीस्तोत्र—। पत्र सं० २। या ११<sup>१</sup>×१ इय। भाषा—अष्टक। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। वै काल ×। पूर्ण। वै सं० ११। क मन्वार।

विशेष—स्तोत्र की संख्या में अन्तर्गत की ही हुई है। अष्टक अष्टी अष्टी अष्टी अष्टी अष्टी अष्टी

बना हुआ है।

३६१६ तीसरीतीसस्तोत्र—। पत्र सं० ११। या ११×१ इय। भाषा—अष्टक। विषय—

स्तोत्र। १ काल ×। वै काल सं० १७३ मनुष्य। पीर। वै सं० २७२। क मन्वार।

३६१७ वकाटकीनी सप्तमस्तोत्र—। पत्र सं० १। या ११×१ इय। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। वै काल ×। पूर्ण। पीर। वै सं० २१७। क मन्वार।

३६१८ वैश्यास्तुति—पद्यमन्त्र। पत्र सं० ३। या ११×१ इय। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। वै काल ×। पूर्ण। वै सं० २१७। क मन्वार।

३६१९ वैश्यास्तोत्र—आचार्य समस्तमन्त्र। पत्र सं० ४। या ११×१ इय। भाषा—अष्टक।

विषय—स्तोत्र। १ काल ×। वै काल सं० १७३ मनुष्य। पीर। वै सं० १७। क मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार वै एक प्रति ( वै सं० ३ ) पीर है।

३६२ प्रति सं० २। पत्र सं० २७। मंत्र काल सं० ११९ श्रीबाल सुवी ४। पूर्ण। वै सं० १९९।

क मन्वार।

विशेष—अष्टक में ब्रह्म के अष्टाई मन्त्र के अष्टकान्त प्रतिविधि की की।

इसी मन्वार वै २ प्रतिमां ( वै सं० १९४ १९२ ) पीर है।

## स्तोत्र साहित्य ]

३६०१ प्रति म० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० स० १३४ । छ  
भण्डार ।

३६२० प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६२३ वैशाख सुदी ३ । वे० स० ७६ । ज  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० २७७ ) भीर है ।

३६२३ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १७२५ फागुन सुदी १० । वे० स० ६ । म  
भण्डार ।

विशेष—पाडे कीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी, साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पीत  
दी गई है ।

३६२४ प्रति स० ६ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८१ । व्य भण्डार ।

३६२५ देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनदि । पत्र म० २५ । मा० १३×५ इ च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र ( दर्शन ) । २० काल × । ले० काल स० १५५६ भाद्रवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १२३ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये  
भट्टारक श्री पवनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-  
देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचन्द्र देवास्तदाम्नाये श्रीपयावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुवागोत्रे सा मदन भार्या हरिसिणी पुत्र  
सा परिसराम भार्या भयी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्त ।

३६२६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४४ भाद्रवा सुदी १२ । वे० स० १६० । ज  
भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोडे गल गये हैं । यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐमा लिखा हुआ है ।

३६२७ देवागमस्तोत्रभाषा—जयचन्द छावड़ा । पत्र स० १३४ । मा० १२×७ इ च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल स० १८६६ चैत्र सुदी १४ । ले० काल स० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वे० स०  
३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३१० ) भीर है ।

३६२८ प्रति स० ७ । पत्र स० ५ मे ८ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३०८ ) भीर है ।



३३२६ देवाग्रमस्तोत्रप्रमाणा—। पत्र प ५। वा ११×७८ इच। भाषा—हिन्दी कव। विप-  
स्तोत्र। ८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। ( द्वितीय परिच्छेद तत्र ) के सं ३७। अ मन्धार।

विशेष—प्राय प्रकरण किया हुआ है।

३३२७ देवाग्रमस्तोत्रवृत्ति—विजयसेकसुरि क शिष्य आनुमा। पत्र प ६। वा ११× इच।  
भाषा संस्कृत। विप-स्तोत्र। ८ कल ×। मे कल ७। १ १४ ज्येष्ठ गुरी व। पूर्ण। के सं १२६। अ  
मन्धार।

विशेष—प्रति उत्कल टीका लक्षित है।

३३२९ कामधनुप्रबन्ध—धर्मधनुः। पत्र प १। वा ११×४६ इच। भाषा—भारत। विप-  
स्तोत्र। ८ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के सं २७२। अ मन्धार।

विशेष—गुरी प्रति लिप्य प्रचार है—

बीठरामप्रमाण । सदा खंर—

कल्पनो लक्ष्यं विभाव विपन्नं तथैव वस्तुनाम् ।  
विस्तारकल्पनो त वा मयिबद्ध भो ईष बाद्ध वरी ।  
सम्मर्दितकल्पनस्य परिधारी ईषो मुहूर्त्तानां वरो वतामस्य  
त नक्तद्वयं तस्मिन्वो दिव्यो वधं कुञ्जरी ॥१॥

विष्णुमाला खंर—

देवतां देवा वन्द्येणं भारतीयं संवासात्म्यं ।  
कुञ्जरीं वाटकीराम विष्णुमाला लोहीदाम् ॥२॥

दुर्जनप्रणय खंर—

नरे दुर्जनैः कवचभारपण्यो हरस्तोत्रपद्ये पञ्चरीयकण्ठे ।  
नरी तस्य सिस्यो वन्द्येणु बीपी बुद्धी वाक्यवरीता दुर्जनवीपी ॥३॥

वाग्देव—

सप्तत वतामन्वीपी लीलो परवतामस्य कल्पनि ।  
अनि वन्द्येण पञ्जरो कल्पवो वधो मुहूर्त्तौ ॥४॥

कामधनुप्रबन्ध—

विष्णुव प्रबन्धेण भारतीरेण धारद्विमुक्तस्य कल्पवन्निवास ॥१॥  
सिस्तस्य मालेण कल्पस्य वन्द्येण वन्द्येणैण वृद्धास्यैण ॥२॥  
विष्णु—कल्पवन्द्येण वृद्धास्यैण वृद्धास्यैण ॥३॥  
कल्पवन्द्येण वीरस्य वीरस्य वन्द्येण वन्द्येण वृद्धास्यैण ॥४॥  
चित्तोद वन्द्येण वन्द्येण वन्द्येण वन्द्येण वन्द्येण ॥५॥

जसाचदेजाण भव्त्राज्जणोभाण भत्ताजईप्राण कत्तासुहभय ॥६॥  
धम्मदुकदेण सद्धम्मचदेण एम्मोत्थुकारेण भत्तिव्वभारेण ॥  
त्थुअरिट्ठेण ऐमीवि तित्थेण दासेण बूहेण सकुज्जमत्तेण ॥८॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलचप ॥

भार्याछंद—

कोहो लोहोवत्तो भत्तो भजईण सासणे लीणो ।  
मा भमोह्वि खोणो मारत्थी ककणो छेत्ती ॥६॥

भुजगप्रयात्तछंद—

मुचित्तो वित्तित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।  
सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विभामो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

भार्याछंद—

सम्मद सणणण सव्वारित्त तहे वसु णाणो ।  
चरइ चरावड धम्मो चदो भविपुण्ण विक्खामो ॥११॥

मीत्तिकदामच्छंद—

तिलग हिमाचल मालव भग वरव्वर केरल वण्णह वग ।  
तिलात्त कलिंग कुरगडहल करडम गुज्जर डड तमाल ॥१२॥  
सुपोट भवति विरात अवीर सुत्तुक्क तुरुक्क वराड भुवीर ।  
भरुत्थल दक्खण पूरवदेस सुण्णागवचाल सुकुभ लमेस ॥१३॥  
चरुड गऊड सुककणलाट, सुवेट सुभोट सुदन्विड राट ।  
सुदेस विदेसह आचइ राम, विवेक विचक्खण पूजइ पाप ॥१४॥  
सुचक्कल पीरणमोहरि णारि, रण्णकण्ण रोउर पाइ विघारि ।  
सुविम्मम भंति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥  
मुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ रिणम्मल रगिहि वाल ।  
चउक्क विउप्परि धम्मविचद वधामउ अक्खहि वाउ सुभद ॥१६॥

भार्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिणो, सम्मदिट्ठि साव भाइ परि आरिउ ।  
जिण्णधम्मभवण्णभो विस अंख अकरो जणो जणइ ॥१०॥

सावित्रीसंहर—

यत्त तस्मिन् विवाहं यद्वाक्यं हित्वा सत्पाण्डु इत्युक्तं ।  
 अन्वयि तस्मिन्वाया सु अन्वयि तस्मिन् वाचकस्य सुत इत्युक्तं ॥१६॥  
 अद्वा अन्वयि वाचकस्य सुत इत्युक्तं यत्त अन्वयि तस्मिन् ।  
 वाक्यं यस्मिन् हित्वा तस्मिन् अन्वयि तस्मिन् ॥१७॥

वचनसंहर—

गुरुरात् वचनसंहर वाक्यं यस्मिन् यत्त वचनसंहर ।  
 यत्त वचनसंहर वचनसंहर वचनसंहर वचनसंहर ।  
 वचनसंहर वचनसंहर वचनसंहर वचनसंहर ।  
 अद्वा अन्वयि अन्वयि अन्वयि अन्वयि ।  
 अन्वयि अन्वयि अन्वयि अन्वयि ।  
 यत्त अन्वयि अन्वयि अन्वयि अन्वयि ॥२॥  
 इति वचनसंहरसंहरसंहरसंहरसंहर ॥

३६३२ अन्वयि अन्वयि—। यत्त वचनसंहर ३। या ३००२ इत्युक्तं । वाचक—अन्वयि अन्वयि । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर ।

वचनसंहर—अन्वयि अन्वयि इति ।

वचनसंहर—	अन्वयि	—
अद्वा अन्वयि—	अन्वयि	अन्वयि
अन्वयि अन्वयि—	अन्वयि	अन्वयि
अन्वयि अन्वयि—	अन्वयि	अन्वयि ( २ वचनसंहर )
अन्वयि अन्वयि—	अन्वयि	अन्वयि

३६३३ अन्वयि अन्वयि—। यत्त वचनसंहर ३। या ३००२ इत्युक्तं । वाचक—अन्वयि अन्वयि । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर ।

वचनसंहर—अन्वयि अन्वयि अन्वयि अन्वयि इति ।

३६३४ अन्वयि अन्वयि—। यत्त वचनसंहर ३। या ३००२ इत्युक्तं । वाचक—अन्वयि अन्वयि । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर ।

३६३५ अन्वयि अन्वयि—। यत्त वचनसंहर ३। या ३००२ इत्युक्तं । वाचक—अन्वयि अन्वयि । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर । यत्त वचनसंहर ।

वचनसंहर—अन्वयि अन्वयि अन्वयि अन्वयि ( ३ वचनसंहर ) इति ।

३६३६. प्रति स० ४ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतिमा ( वे० स० १३६, २५६ २५६/२ ) शीर हैं ।

३६३७. प्रति स० ५ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ४०३ । व्य मण्डार ।

३६३८. प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट मण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका । पत्र स० २४ । मा० १०×५ इच्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । ख मण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० ३ । मा० ६×६ इच्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तवन । २० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । ड मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिमा ( वे० स० ३७३, ३७४ ) शीर हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति । पत्र स० २४ । मा० ११×७ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८२ । क मण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति । पत्र स० ६ । मा० ६ इच्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तवन । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७५ । ट मण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र । पत्र स० ६ । मा० ८ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १६२३ मासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० । ज मण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र । पत्र स० ३ से ५ । मा० १०×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र स० ८ । मा० ६ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७०४ मादवा बुद २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । व्य मण्डार ।

विशेष—प० दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—प० शाली । पत्र स० १ । मा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ३४० । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्ताय है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १८३० । ट मण्डार ।

३३४८. नमिस्तवन—अपि शिव । वन मं १ । धा १ × २२ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तवन । र नाल × । म नाल × । पूर्ण । के मं १२ म । छ अकार ।

विशेष—बीज लोचंष्टुर स्तवन भी है ।

३३४९. ममिस्तवन—अतिसागरगङ्गी । वन मं १ । धा १ × ४ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । र नाल × । म नाल × । पूर्ण । के मं १२१२ । छ अकार ।

विशेष—बुधग वैशिलस्तवन भी है ।

३३५०. पञ्चकस्यालकपाठ—हरचन्द्र । वन मं १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र नाल  
१ ३३ अक्षेण मुनी ७ । म नाल × । पूर्ण । के मं २३३ । छ अकार ।

विशेष—आदि अष्ट नाम दिव्य है—

आरम्भ—

वस्तुना वाजक मनी वन कुट्टु मुलचंद्र ।

वस्तुन दुर वस्तुन वर, बुधि मुल वनक विरंच ॥१॥

अपक वाजक बरिदी अंनल रंच अकार ।

अर अंनल मुक बीजिबे अमल अमल तार ॥२॥

अन्तिम नाम संक—

अर अंनल अला अर अरविधि है

सिध ताला कल मे अरनी ।

अला अर अमल अर अर वी,

मुक अरुद भी है अरनी ॥

अन अर अर अमल कर मुन

अमके अमरिधि मुक अरनी ॥

अन अरिअन अदि अदि अरनी

अंनल अदि अमल अरनी ॥३३३॥

श्लोक—

अमल अंनल व अरिअने अदिने अमल अर ।

अमल अदि अ वीअनी अने अमल अरनी तार ॥३३३॥

अदि अदि अमल अंनल, अंनल अर के अंनल ।

अदि अमल अमल अमल, अमल अने अदिअने ॥३३३॥

॥ अदि अंनलअमल अंनल ॥

३६५१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र स० ४ । प्रा० १०३५४<sup>३</sup> इ च । भाषा-

सम्भृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ने० काल स० १७६६ पाण्डुग । पूर्ण । वे० स० ३५ । अ भण्डार ।

३६५२ पञ्चमगलपाठ—रूपचन्द्र । पत्र स० ६ । प्रा० १०३५४<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ने० काल स० १८४४ वर्तमान मुद्रा २ । पूर्ण । वे० स० ४०२ ।

विशेष—ग्रन्थ में तीस चौकीमी के नाम भी दिये हुए हैं । ये० गुग्गुलुगन्ध ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिमा ( वे० स० ६५७, ७७१, ६६० ) प्रौर हैं ।

३६५३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ने० काल स० १६३७ । वे० स० ६७४ । क भण्डार ।

३६५४ प्रति स० ३ । पत्र स० २२ । ने० काल × । वे० स० ३६४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति प्रौर है ।

३६५५ प्रति स० ५ । पत्र स० १० । ने० काल स० १८८६ प्रालोचन मुद्रा १५ । वे० स० ६५८ । क

भण्डार ।

विशेष—पत्र ५ खोया नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० २३६ ) प्रौर है ।

३६५६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ने० काल × । वे० स० १५५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० २३६ ) प्रौर है ।

३६५७ पञ्चस्तोत्रसमग्र । पत्र स० ५३ । प्रा० १०४५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पाचा ही स्तोत्र टीका सहित है ।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१ एकीभाव	नागबन्धु सूरि	संस्कृत
२ बन्ध्याणुमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३ विद्यापहार	नागबन्धुसूरि	"
४ भूपालचतुर्विधाति	प्रासाधर	"
५ सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८ पञ्चस्तोत्रसमग्र । पत्र स० २४ । प्रा० ६२४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

ने० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०० । अ भण्डार ।

३६५९ पञ्चस्तोत्रटीका । पत्र स० ५० । प्रा० १२५८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० स० २००६ । क भण्डार ।

विशेष—अन्नाहार, विद्याहार, एकीभाव ब्रह्माण्डविदित, कुलालचतुर्विधिति इन पाँच स्तोत्रों की टीका है।

३६६ पद्यावत्प्रह्वकृति—पारसैहिक। पत्र सं १३। पा ११×४५ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—  
स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४४। अक्षरसंख्या।

विशेष—यतिगण—यस्याया पञ्चदेवद्विष्टविद्यायां यथाप्यष्टवृत्तौ यत् किञ्चयंबंधति तालं नवार्थि  
भंग्यं देवनाभिरि। बर्षायां द्वावर्षाणि कर्तव्येतिस्तुतरेति वृत्ति रीत्याने पूर्विके नमस्त्या मुञ्जनायां यत्नाद्धरवागुत्त  
र्यवगापानि यत्नादिभ्यैरुत्तराणि यत्नरनुष्णंरनाश्रमः।

इति यथाप्यष्टवृत्तिसप्तमः।

३६६१ पद्यावतीस्तोत्र—। पत्र सं १३। पा ११५×३५ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १३२। अक्षरसंख्या।

विशेष—यथावती बुद्धा तथा ब्रह्मिष्ठदावस्तोत्र एकीभावस्तोत्र यीर विद्याध्यास्वीय भी है।

३६६२ पद्यावती की बाल—। पत्र सं २। पा २५×४५ इक्षु। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।  
र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१। अक्षरसंख्या।

३६६३ पद्यावतीवचन—। पत्र सं १। पा ११५×३ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २३१। अक्षरसंख्या।

३६६४ पद्यावतीमहलनाम—। पत्र सं १२। पा १×३५ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—  
स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १६२। पूर्ण। वे सं २६२। अक्षरसंख्या।

विशेष—ब्रह्मिष्ठदावस्तोत्र एवं यथावती वचन (अर्थ) भी विद्ये बुद्धे है।

३६६५ पद्यावतीस्तोत्र—। पत्र सं ६। पा ६५×६ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र  
काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११३६। अक्षरसंख्या।

विशेष—इसी अक्षरसंख्या में २ प्रतिभा (वे सं १३२, १९) यीर है।

३६६६ प्रति स ३। पत्र सं १। ले काल सं १६३३। वे सं १६४। अक्षरसंख्या।

३६६७ प्रति स ३। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं १६। अक्षरसंख्या।

३६६८ प्रति स ४। पत्र सं १६। ले काल ×। वे सं ४२६। अक्षरसंख्या।

३६६९ परमात्मविस्तार—बभारसीदास। पत्र सं १। पा १३५×१५ इक्षु। भाषा—हिन्दी।  
विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २३११। अक्षरसंख्या।

३६७० परमात्मरात्रस्तवत—यद्यनदि। पत्र सं १। पा ६×३५ इक्षु। भाषा—संस्कृत। विषय—  
स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १९१। अक्षरसंख्या।

३६७१ परमात्मराजस्तोत्र—भ० सरुलकीर्ति । पत्र स० ३ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ६६५ । अ भण्डार ।

### प्रथ परमात्मराज स्तात्र लिख्यते

यन्नामसस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवति पूर्णा ।  
 सर्वार्थसिद्धजनका स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥  
 यद्ग्रहानवज्जहन्नान्महता प्रयाति, धर्माद्रयोति विपसा क्षतचूर्णता च ।  
 अतातिगावरगुणा प्रकटाभत्रेयुर्भक्त्यास्तुवनमनिश परमात्मराज ॥२॥  
 यन्पावबोधवल्लनात्त्रिजगत्प्रदीप, श्रीकेवलोदयमनतमुखावधिमाशु ।  
 सत श्रयन्ति परम भुवनार्च्य वद्य, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥३॥  
 यद्दृशेनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्वदार्थान् ।  
 पश्यन्ति केवलहृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥४॥  
 यद्भावनादिकरणाद्भुवनाशानाच्च, प्रणयति कर्मरिपवोभवकोटि जाता ।  
 अभ्यन्तरेऽत्रविविधा सकलाद्द्वय स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥५॥  
 सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवति  
 दक्षा जिनेन्द्रगणामृतमुपद लभते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥६॥  
 य स्वात्तरेतु विमल विमलाविवुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसम परमार्थरूप ।  
 महत्पद त्रिजगता शरणा श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥  
 यद्ग्रहानशुक्लपविनाखिलकर्मक्षीलान्, हृत्वा समाप्यशिवदा स्तवच्चदनाच्चा ।  
 सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजना स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥८॥  
 यस्यास्ये सुगणितो विधिनाचरति, ह्याचारयति यमिनो धरपञ्चभेदात् ।  
 आचारसारजनितान् परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥९॥  
 य ज्ञातुमात्मसुविदो यातपाठकाश्च, मर्वागपूर्वजलधेर्लघु याति पार ।  
 अन्याश्रयतिशिवदं परतत्त्वबीज, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१०॥  
 ये साधयति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ ।  
 श्रीसाधव शिवगते करम तिरस्र्य, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥११॥  
 रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वञ्जित ।  
 कर्मवानपि कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य स नन्दतु ॥१२॥



अथपुनर्विनीतवर्णक इव इव इह व्याप्येववा ।

आद्य एव विनीतं च सुविनीतं च आद्यमेव इत्यनुविद्यमान ॥१३॥

वर्णार्थं व्याप्येवमर्थं वराहवदं तीर्थैर्वावर्तिनेभ्यः ।

वर्णार्थं व्याप्येवमर्थं वराहवदं इत्यनुविद्यमान ॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१४॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१५॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१६॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१७॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१८॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥१९॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥२०॥

अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥२१॥

इति श्री भवभूतिप्रसादविद्यायाम् अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

३३७२ परमात्मवर्णकविराट्— । वचनं ३ । वा ३५४ इव । व्याप्य-वर्णक । विषय-व्याप ।

५ वर्ण × । मे वर्ण × । पुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

३३७३ परमात्मवर्णकविराट्— । वचनं ३ । वा ३५४ इव । व्याप्य-वर्णक । विषय-व्याप ।

५ वर्ण × । मे वर्ण × । पुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

३३७४ अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

३३७५ अथपुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

विषय—व्याप्येवमर्थं वराहवदं तीर्थैर्वावर्तिनेभ्यः इत्यनुविद्यमान ॥

३३७६ परमात्मवर्णकविराट्— । वचनं ३ । वा ३५४ इव । व्याप्य-वर्णक । विषय-व्याप ।

५ वर्ण × । मे वर्ण × । पुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

विषय—व्याप्येवमर्थं वराहवदं तीर्थैर्वावर्तिनेभ्यः इत्यनुविद्यमान ॥

३३७७ परमात्मवर्णकविराट्— । वचनं ५ । वा ३५४ इव । व्याप्य-वर्णक । विषय-व्याप ।

५ वर्ण × । मे वर्ण × । पुनर्विनीतवर्णक इत्यनुविद्यमान ॥

विषय—व्याप्येवमर्थं वराहवदं तीर्थैर्वावर्तिनेभ्यः इत्यनुविद्यमान ॥

३६५ पाठसमूह पत्र न० ३६ । मा० ४३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६०८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ है— जैन गायत्री उर्क वज्ररत्नर, शान्तिस्तोत्र, एतीभावस्ताय, शुभोपारत्न, ज्ञाय

३६७६ पाठसमूह । पत्र न० १० । मा० १२×७ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । २० म० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसमूह—समूहकर्त्ता-जैतराम त्राफना । पत्र न० ७० । मा० ११×७ इ च । भाषा-

हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१ पात्रेशरीस्तोत्र । पत्र न० १७ । मा० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रत्न प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र न० ७ । मा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल म० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० स० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—शृंदावन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८३ पार्थिवेश्वर । पत्र न० ३ । मा० ७×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-त्रैदिक

साहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० म० १५८८ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४ पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र न० ३ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र न० १ । मा० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २६८ । ख भण्डार ।

३६८६ प्रति स० ० । पत्र न० ४ । ले० काल × । वे० स० ६२ । क भण्डार ।

३६८७ पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन । पत्र न० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र न० ३ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३६८८. पार्ष्णीनाबस्तोत्र—। पत्र सं १९। पा १ × ४ $\frac{1}{2}$  इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २३३। अ म्पार।

विशेष—कल्प संहिता स्तोत्र है। यस्कर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३६८९. पार्ष्णीनाबस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १२ $\frac{3}{4}$  × ७ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ७९९। अ म्पार।

३६९०. पार्ष्णीनाबस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १  $\frac{3}{4}$  × २ इव। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ६९३। अ म्पार।

३६९१. पार्ष्णीनाबस्तोत्रश्रीका—। पत्र सं १ पा ११ × १ $\frac{1}{2}$  इव। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। ८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ३४३। अ म्पार।

३६९२. पार्ष्णीनाबस्तोत्रश्रीका—। पत्र सं २। पा १ × २ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। ८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ६७७। अ म्पार।

३६९३. पार्ष्णीनाबस्तोत्रभाषा—बालवराह। पत्र सं १। पा १ × २ $\frac{1}{2}$  इव। भाषा—हिन्दी।

विषय—स्तोत्र। ८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ९३३। अ म्पार।

३६९४. पार्ष्णीनाबस्तोत्र—। पत्र सं ४। पा १२ × २ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ३६७। अ म्पार।

विशेष—अति कल्प संहिता है।

३६९५. पार्ष्णीनाबस्तोत्र—सद्गामुनि राजसिंह। पत्र सं ४। पा ११ × ९ इव। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। ८ कल ×। ले कल सं १६७। पूर्ण। वै सं ७७। अ म्पार।

३६९६. प्रस्तावनास्तोत्र—। पत्र सं ७। पा × ९ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। ८

कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १९। अ म्पार।

३६९७. प्रस्तावनास्तोत्र—। पत्र सं १। पा × ४ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १४७६। अ म्पार।

३६९८. भक्त्यमरसंहिता—। पत्र सं १। पा ११ × २ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

८ कल ×। ले कल सं ११। पूर्ण। वै सं ३९७। अ म्पार।

विशेष—श्री हीरानन्द के शब्दपुर के प्रतिबिम्ब की थी।

४००० भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × १ ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२०३ । अ मण्डार ।

४००१ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १७२० । वै० स० २९ । अ मण्डार ।

४००२ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७४५ । वै० स० १०१५ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वै० स० २२०१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति ताठपत्रीय है । आ० ५×२ इ च है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुष्टों की जगह है । २×१३ इ च चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४ प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वै० स० १०१५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ९ प्रतियाँ ( वै० स० ४४१, ६५९, ६७३, ८६०, ९२०, ९५६, ११३५, ११८६, १२६६ ) भी हैं ।

४००५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६७ पौष सुदी ८ । वै० स० २५१ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मथुरावास ने निमखपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी मण्डार में तीन प्रतियाँ ( वै० स० १२८, २८८, १८५६ ) भी हैं ।

४००६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० स० ७४ । अ मण्डार ।

४००७ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ में ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । मपूर्णा । वै० स० २४६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १२ प्रतियाँ ( वै० स० ५३९ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२ ) भी हैं ।

४००८ प्रति स० ९ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० स० ७३८ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी मण्डार में ७ प्रतियाँ ( वै० स० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९ ) भी हैं ।

४००९ प्रति स० १० । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८२२ चैत्र बुदी ९ । वै० स० १३४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ६ प्रतियाँ ( वै० स० १३४ (४) १३६, २२६ ) भी हैं ।

४०१० प्रति स० ११ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वै० स० १७० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार एक प्रति ( वै० स० २१५ ) भी है ।

४०११ प्रति सं १२। पत्र सं २। ले काल  $\times$  १६। सं १७२ अ मध्याह्न ।

४ १२ प्रति सं १३। पत्र सं १३। ले काल सं १७७ पीप मुरी १। के सं २६३। अ  
विशेष—इसी मध्याह्न में ३ प्रतिमा ( के सं २६१ ३७२ ४२३ ) खीर है।

४ १३ प्रति सं १४। पत्र सं ३। ले काल सं १६३२। मयूर। के सं ० १३। ट  
मध्याह्न ।

विशेष—इस प्रति के २२ श्लोक हैं। पत्र १ २ ४ ६ ७ ८ १६ म्द पत्र बड़ी है। प्रति हिन्दी म्द-  
का लक्षित है। इसी मध्याह्न में ४ प्रतिमा ( के सं १६३४ १७०४ १६६२, २ १४ ) खीर है।

४ १४ मन्नामरत्नाश्रुति—अ राकमल। पत्र सं ३। पा ११<sub>२</sub>  $\times$  ६ द्वा। भाषा—संस्कृत।  
विषय—तोष। र काल सं १६१६। ले काल सं १७११। पुल। के सं १ ७२। अ मध्याह्न ।

विशेष—एक ही टीका बीरपुर में बन्धुव बेलवाल में भी बनी। प्रति बना लक्षित है।

४ १५ प्रति सं २। पत्र सं ४०। ले काल सं १ २४ पाद्यो म मुरी १। के सं १७७। अ  
मध्याह्न ।

विशेष—इसी मध्याह्न में एक प्रति ( के सं १४३ ) खीर है।

४ १६ प्रति सं ३। पत्र सं ४। ले काल सं १६११। के सं २४४। अ मध्याह्न ।

४ १७ प्रति सं ४। पत्र सं १४६। ले काल  $\times$  १। के सं ६२। अ मध्याह्न ।

विशेष—कौचक बचवाल के मन्नामल बाल्मीपाल के प्रतिनिधि कराई।

४ १८ प्रति सं ५। पत्र सं २२। ले काल सं १७२४ पीप मुरी १। के सं २२७। अ  
मध्याह्न ।

४०१६ प्रति सं ६। पत्र सं ४७। ले काल सं १ ३२ पीप मुरी २। के सं ६२। अ  
मध्याह्न ।

विशेष—भावाहर के सं तवाईदास के मैत्रिण बेलवाल के बिंदरदास की मुराह के प्रतिनिधि की भी।  
४ १९ प्रति सं ७। पत्र सं ४१। ले काल सं १ ७३ पीप मुरी ११। के सं १२। अ  
मध्याह्न ।

विशेष—इतिहासक बन्धुव के सं बन्धुव के पदमार्थ परचित्त बेलवाल के प्रतिनिधि की भी।

४ २१ प्रति सं ८। पत्र सं ४८। ले काल सं १६८ मयूर मुरी १। के सं २। अ  
मध्याह्न ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षत्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महा-  
राजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजो बू दीरान्ये इवधुम्तक लिखाइत । साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलान तत् पुत्र  
साह श्री धराराज भाई मन्तराज मात्रे पटवोड जाती बघेरवान इद पुस्तके पुनिमय दीयते । लिखत जोसी नराइण ।

४०००. प्रति स० ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७६१ फागुण । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

४०२३ भक्तामरस्तोत्रटीका—द्वर्पकीर्तिसूरि । पत्र स० १० । मा० १०×४½ इच्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ३० रा० २७६ । अ भण्डार ।

४००४ प्रति स० ० । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६४० । वे० स० १६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० १२ । मा० १०×८ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६६७ । अ भण्डार ।

४००६ प्रति स० ० । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिह्ने हुये हैं ।

४००७ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८७२ पीप बुदी १ । वे० स० २१०६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे०  
स० ११६८ ) भी है ।

४०२८. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

४०२९ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १४६ ।

विशेष—३६वें काव्य तक है ।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० ११ । मा० १२२×८ इच्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १६१८ चैत बुदी ८ । पूर्णा । वे० स० १६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—अधर भाटे है । संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है । मगही मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।  
अ भण्डार में एक अपूर्णा प्रति ( वे० स० २०८२ ) भी है ।

४०३१ भक्तामरस्तोत्र अष्टद्विमात्र सहित । पत्र स० २७ । मा० १०×४½ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८४३ बेनाल बुदी ११ । पूर्णा । वे० स० २८५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री कृष्णसुन्दर ने कम्पूर में प्रतिमिति की थी। अक्षर २ छ ५२ अक्षरों का स्तोत्र विना  
हुआ है। श्री कृष्णार ने एक प्रति (के अ ३२१) धीर है।

४०३३. प्रति सं २। पत्र सं ११। नैऋत नाल सं १११ वैशाल सुदी ७। के अ १२१। अ  
न्यथा।

विशेष—श्रीविश्वरूप में पुष्पोत्तमदासर ने प्रतिमिति की थी।

४ ३३. प्रति सं ३। पत्र सं २२। नैऋत नाल ×। के अ १७। अ न्यथा।

विशेष—कर्मों के विषय की है।

४ ३४ प्रति सं ४। पत्र सं २१। नैऋत नाल सं १२२ वैशाल सुदी ११। के अ १। अ  
न्यथा।

विशेष—५ सत्कार के शिष्य कुशल ने प्रतिमिति की थी।

४०३६. महाभारतस्तोत्रभाषा—अथवात् कुशल। पत्र सं १४। वा १२२×२ इका। भाषा-  
हिन्दी अथ। विश्व-स्तोत्र। र नाल सं १७ अक्षर सुदी ११। पूर्ण। के अ २४१।

विशेष—अ न्यथा ने २ प्रतिमा (के अ २४२, २४३) धीर है।

४ ३६ प्रति सं ५। पत्र सं २१। नैऋत नाल सं १२३। के अ २४२। अ न्यथा।

४ ३७ प्रति सं ६। पत्र सं २२। नैऋत नाल सं १२३। के अ २४४। अ न्यथा।

४ ३८ प्रति सं ७। पत्र सं २२। नैऋत नाल सं १२४ वैशाल सुदी ११। के अ १७१। अ  
न्यथा।

४०३९ प्रति सं ८। पत्र सं २२। नैऋत नाल ×। के अ १७३। अ न्यथा।

४०४ महाभारतस्तोत्रभाषा—श्रीमत्साम। पत्र सं १५। वा २×६ इका। भाषा-हिन्दी। विश्व-  
स्तोत्र। र नाल ×। नैऋत नाल ×। पूर्ण। के अ १२२२। अ न्यथा।

४ ४१ प्रति सं ९। पत्र सं ४। के नाल सं १२४ नाल सुदी २। के अ १४। अ  
न्यथा।

विशेष—श्रीमान् अक्षररूप के अक्षर के प्रतिमिति की गयी थी।

४०४२ प्रति सं ३। पत्र सं १५। नैऋत नाल ×। पूर्ण। के अ २४१। अ न्यथा।

४ ४३ महाभारतस्तोत्रभाषा—श्रीमत्साम। पत्र सं १६। वा ३२२×२५ इका। भाषा-संस्कृत  
हिन्दी। विश्व-स्तोत्र। र नाल ×। नैऋत नाल सं १५। पूर्ण। के अ २७। अ न्यथा।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर गगाराम कृत सवैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा

इसमें प्राये ऋद्धि मन्त्र सहित है।

ग्रन्थ मे लिखा है—साहजी जानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलाजी, लघु भ्राता चैतन्यजी ने ग्रन्थि

भागचन्दजी जती को यह पुस्तक पृष्ठाथ दिया सु० १८७२ का साल में ककोड़ में रहे छै।

४०४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १० । मा० १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

स्तोत्र । ७० काल × । ले० काल स० १७८७ । मूर्ण । वे० स० १२६४ । अ मण्डार ।

४०४५ प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८२८ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २३६ । अ

मण्डार ।

विशेष—सूधरदास के पुत्र के लिये मसूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४६ प्रति स० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ६५३ । अ मण्डार ।

४०४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १५७ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में पत्र लाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८ प्र त स० ५ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० स० २६० । अ

मण्डार ।

४०४९ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३ । मा० १०<sup>३</sup>×७<sup>३</sup> इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५२ । अ मण्डार ।

४०५० भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कृषि । पत्र स० ८ । मा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा-

सम्बन्धित । विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वे० स० ४१ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्का टीका सहित है । अ मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३२३ ) भी है ।

४०५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २६८ । अ मण्डार ।

४०५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५७२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ५७३ ) है ।

४०५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र स० १४ । मा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा-सम्बन्धित ।

विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १७७८ भाद्रवा बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ ५० आशाधर ने टीका लिखी थी । ५० हीराचन्द के शिष्य चोसचन्द्र

के मठवार्थ मौजमावाद में प्रतिलिपि कराई गई ।



प्रसक्ति विन्म प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिवृत्तौ ( १७७८ ) किते अत्रत्य वृत्त्या द्वावती तिनी श्रीमन्महादेवमने श्रीमन्मने श्रीमान्ने बलन्काएणे वरस्वतीकण्ठे दुर्गदुर्गवापनिने श्वाकीतम की थी १ ५ वैश्वकीतिनी वस्व घातनवादि दुबदी श्रीहीरमन्मजीवस्व विन्नेक विन्मवत्ता श्रीकचमई श्वापददीन स्वपदानी निशिदीने कृत्तम अनुविचरिता दीना विन्मकप्रसादीविन्मघावटीविन्मिठानुनामचतुर्विधौ विन्मस्तुष्टीका वरितमज्ञा ।

अ अकार मे एक प्रति ( १ लं ४ ) धोर है ।

४ २४ प्रति सा २ । वम लं २९ । मे नाम लं १२३२ मंधकिर सुदी १ । मे लं २३१ । क अकार ।

विन्मेक—प्रघीत—ल १२३२ कर्मे मार्ग सुदी १ दुर्गवाणे श्रीघाटमनुकुम्भवाणे श्रीमन्मनुर्बलाम निम्ने श्रीदुनमने वरस्वतीकण्ठे वरस्वतीकण्ठे दुर्गदुर्गवापनिने----- ।

४ २५ मूपाकचतुर्विधिकास्वोच्छ्रीका—विन्मकचक्र । वम लं १ । मा १९५२ इव । प्रसा- नवृत् । विन्म स्तोत्र । २ वल × । मे कम् × । पुर्न । मे लं ३२ ।

विन्मेक—श्री विन्मकचक्र वीचर द्वाते कृत्तम अनुविचरि स्थाव रवा वना वा ऐना टीका श्री गुरितारा मे तिन्या वृत्त्या है । इतका बलैक २७०० वम मे विन्म प्रकार है ।

क विन्मकप्रसादीकरी वदि कचक्र । ललितचक्र । धरममहोत्सवकीटोवमुपराय- क्षामानुलिवात् ता कचक्र । ललितचक्र । इत वरिष्ठा एव चरीया टीका वरीके द्वितीयकम्प कस्वपुत्रि वरिष्ठा वरिष्ठा सुवि क ललीने व ललित मील सुवि वरिष्ठा वरिष्ठा लल वरी वरिष्ठा उचस्वतीवपकिर्ने-ल कचक्रवाव- अनुपमनी कचक्रने वाना वारवकील- वरिष्ठावर्चमर्मा घावराष्ट्र वरिष्ठा विन्मा एव वरिष्ठावर्चमर्मा वरिष्ठा वरिष्ठा ॥२७॥ इति विन्मकप्रसादीक विरचित कृत्तम स्वीय वरिष्ठा ।

वारव मे टीकावाठ वा संनकावाठ मर्ही है । कुल स्तोत्र की टीका घाटने करती कई है ।

४०२६ मूपाकचतुर्विधिका—वन्मकचक्र श्रीपरी । वम लं २४ । मा १२३५ इव । प्रसा- जिदी । विन्म-स्तोत्र । २ वल लं १२३ वीच सुदी ४ । मे नाम लं १२३ । पुर्न । मे लं २३१ । क अकार ।

इसो अकार मे एक प्रति ( १ लं २३१ ) धोर है ।

४०३७ वसुमहोत्सव----- । वम लं १ । मा १९५२ इव । वाना-द्वितीय । विन्म-स्तोत्र । २ वल × । मे नाम × । पुर्न । मे लं २३१ । क अकार ।

४०३८ वरिष्ठावर्चमर्मा----- । वम लं ३१ मे ७४ । मा ३५३ इव । वाना-द्वितीय । विन्म स्तोत्र । २ वल मे नाम × । पुर्न । मे लं ३ । क अकार ।

४०५६ महर्षिस्तवन । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त में पूजा भी दी हुई है ।

४०६० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० ६११ । अ  
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

४०६१ महामहिम्नस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ज भण्डार ।

४०६२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३१५ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६३ महामहर्षिस्तवनटीका । पत्र सं० २ । आ० ११३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र सं० १० । आ० ८३×६३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४०६५ महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र सं० ६ मे ६ । आ० ६×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

वैदिक माहित्य स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८२ ।

४०६६ महात्रीराष्ट्रक—भागचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं ।

४०६७ महिम्नस्तोत्र । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । झ भण्डार ।

४०६८ यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ पीव बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

४०६९ युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र । पत्र सं० २ से १४ । आ० ११×७ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं । इसमें आगे महिम्नस्तोत्र हैं ।

४००० राधिकानाममाख्या—। पत्र सं १। भा १ × ४ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं १७११। छ मन्थार।

४००१ रामचन्द्रस्तोत्र—। पत्र सं ११। भा १ × २ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के काव ×। पूर्ण। के सं ११। छ मन्थार।

विशेष—विशेष— श्रीहनुमानसंहितामें गारुडोक्त श्रीरामचन्द्रस्तोत्रम् ईश्वरस्तुतः ॥ १ पद्य है।

४००२ रामवतीसी—अमृतकवि। पत्र सं १। भा १ × १ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के कल सं १७११ प्रथम बीच मुही ७। पूर्ण। के सं १११। छ मन्थार।

विशेष—अभि वीहकरना (पुष्करवा) अष्टि के के। गराकला में बट्टु आवा के प्रतिबिम्ब की की।

४००३ रामस्तोत्र—। पत्र सं ११। भा १ × १ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ११११। छ मन्थार।

विशेष—११ से भागे पत्र बड़ी है। पत्र नीचे की ओर से चमे हुए है।

४००४ रामस्तोत्र—। पत्र सं १। भा १ × ४ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के काव सं १७११ अमृत मुही ११। पूर्ण। के सं १११। छ मन्थार।

विशेष—बीचपत्र बीचिका के प्रतिबिम्बिकरवामी की।

४००५ अमुष्मिस्तोत्र। पत्र सं १। भा १ × ४ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं ११४१। छ मन्थार।

४००६ अर्धश्रीस्तात्र—पद्मप्रभदेव। पत्र सं १। भा १ × १ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के काव ×। पूर्ण। के सं १११। छ मन्थार।

विशेष—अष्टि संस्कृत टीका बद्धि है। इसी मन्थार के एक अष्टि (के सं १११) और है।

४००७ त्रिदिश १। पत्र सं १। के कल ×। के सं १४१। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक अष्टि (के सं १४४) और है।

४००८ त्रिदिश २। पत्र सं १। के कल ×। के सं १४१। छ मन्थार।

विशेष—अष्टि संस्कृत आख्या सहित है।

४००९ अर्धश्रीस्तात्र—। पत्र सं ४। भा १ × १ इ. च। भाषा—संस्कृत ॥ विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं १४११। छ मन्थार।

विशेष—इ मन्थार में एक अमूर्त अष्टि (के सं १४०) और है।

स्तोत्र साहित्य ]

४०८०. लघुस्तोत्र । पत्र, मं० २ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६६ । छ मण्डार ।

४०८१. वज्रपजरस्तोत्र । पत्र स० १ । मा० ८<sup>३</sup>×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० ६६८ । छ मण्डार ।

४०८२. प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र मे ह्रीं का मन्त्र है ।

४०८३. वद्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन विद्वापर । पत्र स० १२ । मा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६७ । छ मण्डार ।

४०८४. वद्धमानस्तोत्र—श्राचार्य गुणभद्र । पत्र स० १० । मा० ४<sup>३</sup>×७ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६३३ । मामोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १४ । छ मण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तमपुराण की राजा श्रेणिक को स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । सरहकर्ता श्री  
फतेहलाल शर्मा है ।

४०८५. वद्धमानस्तोत्र " । पत्र स० ५ । मा० ७<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३२८ । छ मण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाया भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ ' । पत्र स० १६ । मा० ८×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६० । छ मण्डार ।

४०८७. वसुधासस्तोत्र । पत्र स० १६ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । छ मण्डार ।

४०८८. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । छ मण्डार ।

४०८९. विद्यमानवीसतीर्थकरस्तोत्र—मुनि द्वीप । पत्र स० १ । मा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—  
हिंदी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३३ ।

४०९०. विषापहारस्तोत्र—धनजय । पत्र स० ४ । मा० १२<sup>३</sup>×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १८१२ । फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि प० मोहनदासजी ने अपने मिष्य गुमानीरामजी के  
पठनार्थ क्षेमकरराजी की पुस्तक मे बसई ( बम्बई ) नगर मे शान्तिनाथ चैत्यालय मे की थी ।

४०६१ प्रति स २। पत्र नं ४। ले नम  $\times$ । के सं १०६। छ मन्थार।

४०६२ प्रति स ३। पत्र नं १२। ले नम  $\times$ । के सं १२२। छ मन्थार।

विशेष—विद्विप्रिकन्तोष की है।

४०६३ प्रति स ४। पत्र नं १३। ले नम  $\times$ । के सं १३१। छ मन्थार।

विशेष—कवि संसृष्ट टीका बाह्य है।

४ १४ विद्यापद्वारस्तात्रटीका—जागन्नाथसूरि। पत्र नं १४। वा १  $\times$  ४२ हवा। माता-संसृष्ट। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ल नम  $\times$ । पुर्ण। के सं ३। छ मन्थार।

४०६४ प्रति स ५। पत्र नं ५। ले १६। ले नम सं १७०० मातवा कुो ६। के ल मन्थार।

विशेष—श्रीमन्मातर मन्त्र मंत्र श्रीमन्मातर ने इक्ष्वाकू प्रतिनिधि की की।

४०६५ विद्यापद्वारस्तात्रमाया—पद्माज्ञा। पत्र सं ११। वा १२२  $\times$  ४ हवा। माता-शिल्पी। विश्व-स्तोत्र। र नम सं १६६ मन्थार कुो ११। ले नम  $\times$ । पुर्ण। के सं ११४। छ मन्थार।

विशेष—ही मन्थार के एक प्रति (के सं ११२) धीर है।

४ १७ विद्यापद्वारस्तात्रमाया—मन्थारकीति। पत्र नं ६। वा ११  $\times$  २१ हवा। माता-शिल्पी। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ल नम  $\times$ । पुर्ण। के सं १३२। मन्थार।

४ १८ श्रीवाराणसी—श्रीमन्मातार। पत्र नं २। वा १२  $\times$  ४ हवा। माता-संसृष्ट। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ले नम  $\times$ । मन्थार। के सं २२७। छ मन्थार।

४ १९ श्रीवाराणसी—। पत्र सं ३। वा १  $\times$  ४२ हवा। माता-संसृष्ट। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ल नम  $\times$ । पुर्ण। के सं २२२। छ मन्थार।

४१ ० श्रीवाराणसी—। पत्र सं १। वा १२  $\times$  ४ हवा। माता-संसृष्ट। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ले नम सं १७६। पुर्ण। के सं १२४५। छ मन्थार।

४१०१ श्रीवाराणसी—मन्थार। पत्र नं १। वा  $\times$  १२ हवा। माता-शिल्पी। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ले नम  $\times$ । पुर्ण। के सं २२२६। छ मन्थार।

विशेष—'कुन्दी मन्थार के वार्द मन्थार' ११ मन्थार है।

४१ २ श्रीवाराणसी—कुन्दीमन्थार। पत्र नं १। वा १४  $\times$  ४ हवा। माता-शिल्पी। विश्व-स्तोत्र। र नम  $\times$ । ले नम सं १२। पुर्ण। के सं २१२। छ मन्थार।

४१०३ षट्पाठ । पत्र स० ६ । आ० ४×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । अ मण्डार ।

४१०४ शान्तिघोषास्तुति । पत्र स० २ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल म० १५६६ । पूर्ण । वे० स० ८३४ । अ मण्डार ।

४१०५ शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । २० काल स० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२३५ । अ मण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन श्रौत है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ । अ मण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्ये विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरे ।

रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्र संपूर्ण ।

४१०७ शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र स० १ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०७० । अ मण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—

नाना विचित्र भवदु खराशि, नाना प्रकार मोहाग्निपाश ।

पापानि दोषानि हरति देवा, इह जन्मशरणा तव शान्तिनाथ ॥१॥

ससारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्मणिवध ।

ते वध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणा तव शान्तिनाथ ॥२॥

काम च क्रोध मायाविलोभ, चतु क्रपार्य इह जीव वध ।

ते वध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणा तव शान्तिनाथ ॥३॥

नोद्वाक्यहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवनिदा मतसा च वाचा ।

ते वध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणा तव शान्तिनाथ ॥४॥

चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं ।

ते वध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणा तव शान्तिनाथ ॥५॥

आनन्द तर्जनी कुण्डल्य बचनं ही मालिनीवीध कृष्णकण्ठु मं ।  
 ते वंश द्वैष्टित वैवाचिकेरेरे इह अममररर्गं तव मालिनीवार्ध ॥१॥  
 पद्यम्भाठी परराजैका, मयर्धवला मयभूवर्धे ।  
 ते वंश द्वैष्टित वैवाचिकेरेरे इह अममररर्गं तव मालिनीवार्ध ॥२॥  
 पुनर्धित्ति विवाणि मलिनीवर्धे इवैरुममे कञ्जीवर्धेका ।  
 ते वंश द्वैष्टित वैवाचिकेरेरे इह अममररर्गं तव मा म्नाय ॥ ॥

कर्धित वरधित किन्धे धी मर्धितनावादिम्यानि  
 म्नायकपुत्राद्यो वाग्यारोपडापी ।

इतनुनिवह कर्धेवायेनु दिन्धे

— — — — — ॥१॥

इतिभीषाणितनामस्ताव तंभूर्ग । पुण्ड ॥

४१८. शक्तिनामस्ताव—। पद्य सं २। मा १४४ इव । मया-मंभूत । विपय-स्तीप ।  
 २० वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के सं १७१८। छ म्भार ।

४१९. शक्तिनामस्ताव—। पद्य सं ३। मा ११×२२ इव । मया-मंभूत । विपय-स्तीप ।  
 २० वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के सं ११९। छ म्भार ।

४२०. शक्तिनामस्ताव—। पद्य सं ७। मा ११ × २२ इव । मया-मंभूत । विपय-स्तीप ।  
 २० वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के सं २३१। छ म्भार ।

४२१. भीषाणितनामस्ताव—। पद्य सं ३। मा ११ × २२ इव । मया-मंभूत । विपय-स्तीप ।  
 २० वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के सं ७१२। छ म्भार ।

४२२. भीषाणितनामस्ताव—। पद्य सं २। मा ११ × २२ इव । मया-मंभूत । विपय-स्तीप ।  
 २० वल ×। मे वल सं १२ × वंश कुटी ३। पुर्ण। के सं १११। छ म्भार ।

विपय—शक्ति तंभूत दीप्य तद्विष्ट है ।

४२३. म्नायकपुत्राद्यो वाग्यारोपडापी—। पद्य सं १। मा १२ × २२ इव । मया-मंभूत । विपय-  
 स्तीप । २० वल ×। मे वल ×। पुर्ण। के सं ३३२।

विपय—१७ पद्य है ।

४११४ समवशरणास्तोत्र । पत्र स० ८ । आ० १०×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २६६ । छ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

धूपभादानभिवगान् वदित्वा वीरपश्चिमजिलेंद्रात् ।

भवत्या नतीत्तमाग स्तोत्रे तन्ममवशरणाणि ॥२॥

४११५ समवशरणास्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र स० २ मे ६ । आ० ११½×५ इ च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७ । अ मण्डार ।

४११६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ७७८ । अ मण्डार ।

४११७ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३०५ । अ  
मण्डार ।

विशेष—प० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० मनाहर न प्रतिलिपि की थी ।

४११८ मभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणानदि । पत्र स० २ । आ० ८½×४२ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । छ मण्डार ।

४११९ समुदायस्तोत्र । पत्र स० ५३ । आ० १३×८३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वे० स० ११५ । घ मण्डार ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

४१२० समवशरणास्तोत्र—विश्वसेन । पत्र स० ११ । आ० १०½×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत श्लोको पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१ सर्वतोभद्रमत्र । पत्र स० २ । आ० १५×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल स० १८६७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १८२२ । अ मण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र स० ३ मे ५ । आ० ११½×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२५७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पद्य नहीं हैं ।

नि लघुकवि— इति भारतयाललघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णातामागतम् ।

४१२३ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ११५५ । अ मण्डार ।



४१२४ सरस्वतीस्तोत्र—बृहत्सवि । पत्र सं १ । पृ ३४४३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ( शैलेन्द्र ) । र काल × । ले काल सं १ २१ । पूर्ण । के सं १२२ । अ मन्थार ।

४१२५ सरस्वतीस्तोत्र—सुतमातर । पत्र सं २६ । पृ १३४३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १ ७४ । अ मन्थार ।

विशेष—बाच के पत्र बड़ी है ।

४१२६ सरस्वतीस्तोत्र— । पत्र सं ३ । पृ ४४३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १ । अ मन्थार ।

४१२७ प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले काल सं १ २२ । के सं ४३६ । अ मन्थार ।

विशेष—रामचन्द्र के प्रतिमिति की थी । भारतीयस्तोत्र भी काव है ।

४१२८ सरस्वतीस्तोत्रमाहा ( शारदा-स्तोत्र )— । पत्र सं २ । पृ २४४ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२६ । अ मन्थार ।

४१२९ सङ्घमाम ( जनु )—भाचार्य मयम्साम् । पत्र सं ४ । पृ ११३४ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १ १४ वाचिन मुदी १ । पूर्ण । के सं १ । अ मन्थार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अनेक विरचित मन्त्राङ्क पाठ भी है । पत्र स्तोक है । अन्त-संस्कृत के स्वर जोषराव गोपीका के पठनार्थ प्रतिमिति की थी । 'गोपी गोषराव गोपीका की पठिका की है' पत्र ४ दु मापार ।

४१३० सारस्वतीविरचित— । पत्र सं १११ । पृ १२४२ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १२६ पौष मुदी १३ । पूर्ण । के सं २ । अ मन्थार ।

विशेष—अप्य १२ कुठों में सफलवीरिण्ड कृत काव्यमन्थार है ।

४१३१ शार्ङ्गसम्भाषापाठ— । पत्र सं ७ । पृ १४३३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १ २४ । पूर्ण । के सं २७८ । अ मन्थार ।

४१३२ सिद्धचन्द्रा— । पत्र सं १ । पृ ११३३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १८ १ कालमुन मुदी ११ । पूर्ण । के सं २ । अ मन्थार ।

विशेष—भीमसिंहकवच के प्रतिमिति की थी ।

४१३३ सिद्धस्वयम्— । पत्र सं १ । पृ १४३३ दृष्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १३२२ । अ मन्थार ।

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनदि । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २००८ । अ मण्डार ।

४१३५ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ८०६ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २६२ । ख मण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्ष—काफी मोटे हैं ।

मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० २६३, २६८ ) और ह ।

४१३७ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ८५३ । छ मण्डार ।

४१३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ४०६ ।

च मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में अमयचन्द साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९ प्रति स० ६ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० १०२ । झ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी मण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० ३८, १०३ ) और हैं ।

४१४० प्रति स० ७ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० १०९ । ज मण्डार ।

४१४१ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १६८ । ब मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० २८७ )  
भार है ।

४१४२ प्रति स० ९ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८२५ । ट मण्डार ।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका । पत्र स० ५ । आ० १३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७५९ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३६ । व मण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३६ । आ० १२५×५ इच्च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल स० १९३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०५ । क मण्डार ।

४१४५ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल । पत्र स० ८ । आ० ११×६ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४७ । क मण्डार ।

४१४६ प्रति सं ३। वने तं ३। वे० वन्तं × १। वै सं २२१। अक्षरवार।

विशेष—४१० अक्षर में एक इति ( वै सं २२ ) जोर है।

४१४७ सिद्धिदिवस्तोत्र—। पत्र सं ३। पा ११<sup>१</sup> × २ हं व। अथा—द्विषी। विषय स्तोत्र।  
 वान × मे काल ×। पूर्ण। वै सं ४। अक्षरवार।

४१४८ सुगुणस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ × ६ हं व। अथा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र। र  
 काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वै सं २३। अक्षरवार।

४१४९ वसुधारास्तोत्र—। पत्र सं १। पा २२ × ४ हं व। अथा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र। र  
 वान ×। मे काल ×। पूर्ण। वै सं २४। अक्षरवार।

विशेष—एतत् मे लिखा है— एतत् बंदात्मकं एतत् विक्रमो।

४१५० सौर्वर्ष्यइरीरठात्र—अष्टारक अष्टशतम्पद्य। पत्र सं १। पा १२ × २<sup>१</sup> हं व। अथा—  
 मन्वृत्त विषय—स्तोत्र। र काल ×। मे काल सं १ ४४। पूर्ण। वै सं १२६७। अक्षरवार।

विशेष—बृहस्पती वर्षीत मे वर्त्मनाथ वेत्तज्जाव मे मृदारक मुनेष्वरीति धामेर वन्तो मे सर्वभुज मे अस्मत्  
 प्रतिनिधि वी वी।

४१५१ सौर्वर्ष्यइरीरठास्तोत्र—। पत्र सं ७४। पा २२ × २<sup>१</sup> हं व। अथा—संस्तुत। विषय—  
 स्तोत्र। र काल ×। मे काल सं १ ६७। अक्षरवार। पूर्ण। वै सं २७४। अक्षरवार।

४१५२ श्रुति—। पत्र सं १। पा १२ × २ हं व। अथा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र। र काल ×।  
 मे काल ×। पूर्ण। वै सं १ ६७। अक्षरवार।

विशेष—एतत् वान महावीर वी श्रुति है। प्रति संस्तुत टीका लक्षित है।

शास्त्र—

ब्रह्मा ब्रह्मा महाब्रह्मा ब्रह्मा ब्रह्मा ब्रह्मब्रह्म

वीरो वीरो महावीरोस्त्वं वैवासि ममाश्रुति ॥१॥

४१५३ श्रुतिमह—। पत्र सं २। पा १ × ४ हं व। अथा—द्विषी। विषय—स्तोत्र। र  
 काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वै सं १२४। अक्षरवार।

४१५४ श्रुतिमह—। पत्र सं २ के १७। पा ११ × ४ हं व। अथा—संस्तुत। विषय—स्तोत्र।  
 र वान ×। मे काल ×। पूर्ण। वै सं २१६९। अक्षरवार।

विशेष—एतत् वीरो वीरो महावीरोस्त्वं वैवासि ममाश्रुति है।

४१५५ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ६ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	वर्ति	भाषा
१ शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	प्राकृत
२ भयहरस्तोत्र	×	"
३ लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४ बृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५ अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२१ पत्र नहीं है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र हैं ।

४१५६ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० १० । भा० १०×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१ पद्मावतीस्तोत्र —	×
२ कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×
३ चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एव स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४ पार्श्वनाथपूजा —	×
५ लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रमदेव

४१५७ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० २३ । भा० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह हैं— १ एकीभाव, २ विषापहार, ३ स्वर्गमूस्तोत्र ।

४१५८ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ४६ । भा० ८३×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल स० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्णा । वे० स० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है । निम्न सग्रह हैं—

१ निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२ श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३ पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	"

- ४ गौरीवाहनोप २. श्वाशामादिनी ३ त्रिवारह्वारोप ७ मन्मथोप  
 चार्द्धवाहनोप
- १ शीतवाहलोप— वयसदि संयुग
- १ वरु वरुलोप × ४ यूर्ग
- ११ शीतवाह मन्मथोप १२ यन्मथोप १३ वात्सेयुव १४ विषमश्रीवीलीकान
- १५ वर १६ विदर्भी (व्यज्जिनवाप) १७ शशा के सोमहमथ १ वसे-लक्षणवप ।

गुणावध के गान्त मंत्रकुल म प्रतिनिधि की थी ।

४१३३ स्नात्रमसह— । वय म २३ । पा < ३ इ व । शशा-संयुत । विषम-श्रीव । १

वय म वय × यूर्ग । के म ३३ । अ मथार ।

विषम—विषम श्राव है ।

- १ त्रिवारह्वारोप २ अग्निर्ब्रह्मलोप ( मीतम वाजपय ) ३ लघुमानवकव  
 ४ उरुमर्षीह्वारोप ५ विरुध्वमलोप ।

४१३४ स्नात्रमसह — । वय म २३१ । पा ११५, २२ इ व । शशा-संयुत श्राव । विषम-  
 श्राव । वय म वय × यूर्ग । के म ३४ । अ मथार ।

विषम—वय म १७ । १३ मरी है । विषम मंत्रिनिध स्तोत्र शशी का संकर है ।

४१३५ स्नात्रमसह । वय म २७६ । पा १ ४३ इ व । शशा-संयुत । विषम-श्रीव ।

वय म वय × यूर्ग । के म ३७ । अ मथार ।

विषम— वय २८६ का वय मदी है । वात्सेयुव गुणावध तथा यूर्ग संकर है ।

४१३६ स्नात्रमसह — । वय म १२३ । पा ११ २ इ व । शशा-संयुत । विषम-श्रीव । १

वय म वय । यूर्ग । के म ३८ । अ मथार ।

४१३७ स्नात्रमसह— । वय म १ । पा ८ इ व । शशा-संयुत । विषम-श्रीव । १

वय म वय गुग । के म ३९ । अ मथार ।

४१३८ अग्नि म ३ । वय म १३ । वय म ३२८ । अ मथार ।

४१३९ स्नात्रमसह— । वय ११ । पा ४ ८ इ व । शशा-संयुत । विषम-श्रीव । १

वय म वय यूर्ग । के म ४१ । अ मथार ।

विषम—विषम संकर है—

नगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्वतीनामस्तोत्र, षण्ढाकरगणेशस्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ८२ । पृ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८३७ । क भण्डार ।

विशेष—शक्तिम शीघ्र प्रपूर्णा है । कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है ।

४१६७ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५७ । ले० काल × । प्रपूर्णा । वै० सं० ८३३ । क भण्डार ।

४१६८ स्तोत्रपाठसंग्रह । पत्र सं० ५७ । पृ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वै० सं० ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—पाठों का संग्रह है ।

४१६९ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ८१ । पृ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत, प्रागुन । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नामस्तोत्र	कर्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तपा शान्त्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	”	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	”
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाक्षर्य	”
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”
विषाहहारस्तोत्र	धनञ्जय	”
भूपालचतुर्विधात्मिका	भूपालकवि	”
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	”
समवधारण स्तोत्र	विष्णुसेन	”

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
महर्षि लघन	×	गुरुव
ब्रह्मांडस्तोत्र	×	"
विश्वस्तोत्र	×	"
सक्रीतस्तोत्र	ब्रह्मरूप	"
वेदिकाय एतन्महीस्तोत्र	६ वाशि	"
ननु सामप्रश्न	×	"
ननु विद्युत्स्तोत्र	×	"
पद्मस्तोत्र	म ब्रह्मरूपि	"
ब्रह्मस्तोत्र	×	"
गार्ग्यस्तोत्र	×	"
बृहस्पतिस्तोत्र	×	"
त्रिभुवनस्तोत्र	×	"
ननु वीरस्तोत्र	ब्रह्मरूप	"
ननुमायास्तोत्र	×	"

४१ प्रति स २। पत्र १२। मे कल ×। वे १२। क ब्रह्मरूप।

विशेष—यदिवाच उक्त पाठ्ये वा ही उक्त है।

४२ प्रति स ३। पत्र १२। मे कल ×। वे १२। क ब्रह्मरूप।

विशेष—उक्त पाठ्ये के यद्विहित नियमाल लीर है।

वीरस्तोत्र	×	ब्रह्मरूप
वीरस्तोत्र	×	"

४३ प्रति स ३। पत्र १२। मे कल ×। वे १२। क ब्रह्मरूप।

विशेष—यदिवाच उक्त पाठ्ये वा ही उक्त है।

४४ प्रति स ३। पत्र १२। मे कल ×। वे १२। क ब्रह्मरूप।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
ब्रह्मस्तोत्र	×	ब्रह्मरूप
गार्ग्यस्तोत्र	×	"
बृहस्पतिस्तोत्र	×	"

नाम स्तोत्र

कर्त्ता

भाषा

तत्त्वार्थसूत्र

उमास्वाति

संस्कृत

स्वयंभूस्तोत्र

समन्तभद्र

"

४१७३ स्तोत्रसमग्रह

। पत्र स० १० । भा० ११३×७ $\frac{१}{२}$  इंच ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३० । क भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

विशेष—निम्न समग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक

×

संस्कृत

द्वचक्षरस्तवन

×

"

स्वयंभूस्तोत्र

×

"

चन्द्रप्रभतात्र

×

"

४१७४ स्तोत्रसमग्रह

। पत्र स० ८ । भा० १२३×११ $\frac{१}{२}$  इंच ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३६ । ख भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र

कुमुदचन्द्र

संस्कृत

विद्यापहारस्तोत्र

धनञ्जय

"

सिद्धिप्रियस्तोत्र

देवनदि

"

४१७५ स्तोत्रसमग्रह

। पत्र स० २२ । भा० १२३×१५ $\frac{१}{२}$  इंच ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । ख भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकी भाव

बादिराज

संस्कृत

सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित

×

"

श्रुतिमण्डलस्तोत्र

×

"

भक्तामरस्तोत्र श्रुतिमन्त्र सहित

×

"

हनुमानस्तोत्र

×

"

ज्वालामालिनीस्तोत्र

×

"

बकेश्वरीस्तोत्र

×

"



४१५६ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १४। पा ७४४३ इ व। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। १ काल सं १५४४ माह सुदी २। पूर्वा। १ सं २१७। क मन्थार।

विशेष—विष्णु स्तोत्रों का संग्रह है।

अज्ञानमंत्रिणी, सुनीसवरी वी अथवाल अविर्बद्धस्तोत्र एवं मनस्वास्तोत्र।

४१७७ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं २४। पा ६४४ इ व। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। १ काल ×। पूर्वा। १ सं २१६। क मन्थार।

विशेष—विष्णु स्तोत्रों का संग्रह है।

वधानदीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ सं १ पत्र
बर्हिषदीस्तोत्र	×	"	११ सं २ पत्र
स्वर्णमन्त्रिणी	महीभर	"	२४

४१७८ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ५१। पा ७२४४ इ व। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। पूर्वा। १ सं २२। क मन्थार।

४१७९ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १७। पा १३४४३ इ व। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। १ काल ×। पूर्वा। १ सं २। क मन्थार।

विशेष—गण स्तोत्र है।

मन्थार, पत्नीमाल विद्याव्यास, एवं भूगणभुगुणविद्याविषय।

४१८० स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३ सं २२। पा ६४६ इ व। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। १ काल ×। मपूर्वा। १ सं २७। क मन्थार।

४१८१ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं २३ सं १४१। पा ४४ इ व। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। १ काल ×। मपूर्वा। १ सं २६। क मन्थार।

विशेष—विष्णु काशी का संग्रह है।

वज्र स्तोत्र	मर्ता	भाषा	
ईश्वरेश्वर	कनकेश	हिन्दी	मपूर्वा
कालाविधि	×	संस्कृत	
ईश्वरिण्डुवा	×	"	
पद्मिपत्र	×	"	
विष्णुमन्त्रिणीस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	वर्तु	भाषा
पत्न्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनदास	भूधरदास	"
निर्वाणिकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेजस्वाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यवंशना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचवल्पाणुपूजा	×	"

४१=२, स्तोत्रसंग्रह । पत्र म० ५१ । भा० ११×७३ छन । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । २० वान × । १० वान × । पूर्ण । पे० म० ६६५ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है ।

निर्वाणिकाण्डभाषा	शैवा भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्णा
मामाधिकपाठ	प० महाचन्द्र	"	पूर्ण
मामाधिकपाठ	×	"	अपूर्ण
वंशपरमेष्टीगुण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बार्हभारता	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणिकाण्डभाषा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विधातिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदण्ड	बौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानहु श	संस्कृत	पूर्ण
पत्न्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयभूस्तोत्रभाषा	धानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	"
मालोचनापाठ	×	"	अपूर्ण
सिद्धिप्रिमस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	माया	
विष्वक्सारस्तोत्रमाया	५	द्विती	पूर्व
संबोधनचण्डिका	५	"	

४१२३ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३१। पा १ २×७ इ च। मया-मस्तुत। विष्वक्-स्तोत्र। र  
 काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वीर्त्ता। वे सं ३४। क मया।

विशेष—द्विज स्तोत्रो का संज्ञा है।

मयबहुस्तोत्र सो मनीस्तोत्र पयावतीस्तोत्र तीर्थद्वारस्तोत्र भागवतिकास्तोत्र पा. र है।

४१२४ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३२। पा १ २×२ इ च। माया-मस्तुत। विष्वक्-स्तोत्र।  
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३३। क मया।

विशेष—महात्मर धर्मि स्तोत्रो का संज्ञा है।

४१२५ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३३। पा २ २×६ इ च। माया-मस्तुत। विष्वा। विष्णु-मयव।  
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३३। क मया।

४१२६ स्तोत्र—आचार्य अस्तुत। पत्र सं ३। पा १ २×३ इ च। मया-मस्तुत। विष्णु-  
 स्तोत्र। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३३। क मया।

४१२७ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३। पा १ २×७ इ च। मया-द्विती। विष्णु स्तोत्रद्वारा।  
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३। क मया।

४१२८ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३३। पा १ २× इ च। माया-द्विती। विष्णु-स्तोत्र। र  
 काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३। क मया।

४१२९ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ७ मे ४७। पा १ २×४ इ च। माया-मस्तुत। विष्णु-स्तोत्र।  
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३। क मया।

४१३ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ३३ ३३। पा १ २×३ इ च। मया-मस्तुत। विष्णु  
 स्तोत्र। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ४२३। क मया।

विशेष—मया स्तोत्र है।

पदीप्रस्तोत्र	धारिण	मस्तुत
मन्त्रप्रस्तोत्र	द्विती	"

इति प्रथम है मन्त्र टीका खण्डित है।

४१६१ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ० ने १८ । आ० ८५४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३० । च भण्डार ।

४१६२ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० १४ । आ० ८३५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०  
काल × । न० काल स० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह है ।

१ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत
२ कल्याणमन्दिर	कुमुदवन्दाचार्य	"
३ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"

४१६३ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ७ म १७ । आ० ११५८ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० २४ । आ० १२५७ इ च । भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६३ । ट भण्डार ।

४१६५ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ५ से ३५ । आ० १५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
२० काल × । न० काल स० १८७५ । अपूर्ण । वे० स० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० १५ से ३४ । आ० १२५६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह है ।

मामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
मामायिक लघु	×	"	पूर्ण
महलनाम लघु	×	"	"
महलनाम बडा	×	"	"
श्रुतिमडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृष्टदनवकार	×	"	"
श्रीतरागस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	"
जिनपजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
वपाम्नीयकं स्वीयस्तोत्र	×	"
वपाम्नीयस्वीय	×	"
इन्द्रमन्त्रस्वीय	×	हिन्दी
वपाम्नीय	×	संस्कृत
वपाम्नीय	×	ब्राह्मण

४३३७. स्तोत्रसंग्रह—। पृ. सं. ४। भा. १। ४२३। ४। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय। पृ. सं. ४। भा. १। ४२३। ४। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय।

विषय—विश्वामित्र (संस्कृत)।

वपाम्नीय वपाम्नीयस्वीय विषय—संस्कृत, वैदिकीय वपाम्नीय हिन्दी में है।

४३३८. स्तोत्रसंग्रह—। पृ. सं. ७। भा. ४३३। ४३३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय। पृ. सं. ७। भा. ४३३। ४३३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय।

विश्वामित्र (संस्कृत)।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
वपाम्नीयस्वीय	×	संस्कृत
वपाम्नीयस्वीय	×	संस्कृत

विषय—वपाम्नीय के दो में विषय वपाम्नीय की शक्ति है।

वपाम्नीयस्वीय	×	संस्कृत
वपाम्नीयस्वीय	कमलप्रसाद	संस्कृत

वपाम्नीयस्वीय वपाम्नीय वपाम्नीयस्वीयस्वीय।

वपाम्नीयस्वीयस्वीय वपाम्नीय वपाम्नीयस्वीय।

४३३९. स्तोत्रसंग्रह—। पृ. सं. १४। भा. ४३३। ४३३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय। पृ. सं. १४। भा. ४३३। ४३३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्वीय।

वपाम्नीयस्वीय	वपाम्नीय	संस्कृत
वपाम्नीय	×	"
वपाम्नीयस्वीय	×	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० १३ । मा० १३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । ज भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमंदिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१ स्तोत्रपूजारूपग्रह " । पत्र सं० १५२ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ३२ । मा० ४३×६३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । म भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३ स्तोत्रसंग्रह " । पत्र सं० ११ से २२७ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । म भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४ स्तोत्रसंग्रह " । पत्र सं० १४ । मा० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । व भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५ स्तोत्रत्रय " । पत्र सं० २१ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । व भण्डार ।

विशेष—कल्याणमंदिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६ स्वयंभूरस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । मा० १२३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्का टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विधसि स्तोत्र भी है ।

४२०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च

भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियाँ ( वे० सं० ४३४, ४३६ ) भी हैं ।

८. प्रति सं० ३। वच सं २४। नै कल ×। नै सं २६। अ नम्भार।

विशेष—संस्कृत टीका संक्षिप्त है।

४२०. प्रति सं० ४। वच सं २४। नै कल ×। प्रपूर्व। नै सं २२४। अ नम्भार।

विशेष—संस्कृत में अतिठोस दिने वये है।

४२१. स्वर्णमूर्त्याक्रीडा—प्रभाकराचार्य। वच सं ४१। या ११×९ रज। माला—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। १ कल ×। नै कल सं १ ११ अक्षरिद मुदी १२। प्रूर्व। नै सं ४१। अ नम्भार।

विशेष—कल का बुझा नाम क्रियापदान टीका भी विद्य है।

इसी नम्भार में दो प्रतिभा ( नै सं ५३९, ५३९ ) भी हैं।

४२११ प्रति सं ३। वच सं ११६। नै कल सं १११२ वीच मुदी १३। नै सं ५४। अ

नम्भार।

विशेष—उत्तुलकाल राजा जीवती नमस्तु के मार्कट अक्षर नमस्ती के प्रतिनिधि कर्ता।

४२१२. स्वर्णमूर्त्याक्रीडा— वच सं ३२। या १ ×४२ रज। माला—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। १ कल ×। नै कल ×। प्रूर्व। नै सं ५५४। अ नम्भार।



# पद भजन गीत आदि



४२१३ अनाथात्तोचोढाल्या—लेम । पत्र स २ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा श्रेष्ठिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको मनाय कहा था उसी पर चार ढालो के प्रार्थना की गयी है ।

४२१४ अनाथात्तोचोढाल्या—लेम । पत्र स० ५ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७३ । अ भण्डार ।

४२१५ अर्हन्कचौढाल्यागीत—विमल विनय ( विनयरग ) । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल १६८१ भासोज सुवी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रादि मन्त्र भाग निम्न है—

प्रारम्भ—	वर्द्धमान चउवीसमठ जिनवदी जगदीस । अरहन्क मुनिवर क्षरीय भणिए लुधरीय जमीस ॥१॥
श्रीपद—	सु जमीमधरी मनमाहे, कहिसि सधध उछाहे । अरहमकि जिमवत लीधउ, जिम ले तारी वसि कीधउ ॥२॥ निज मात एइ उपदेसइ, बलिभत भादरीय विसेसइ । पहुतउ ते देव जिमानि, सुणिण्यो भवियण तिम कानि ॥३॥
श्रीहा—	नगडा नगरी जाणीयइ मलकापुरि अवतार । वसइ तिहा बिबहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥
श्रीपद—	सुविचार, सुभद्रा धरणी " " " " ) तसु नदन रूप निषान, अरहन्क नाम प्रधान ॥५॥
पन्तिम—	भ्यार सरण चित्त चीतवइ जी, परिहरि भ्यारि कश्यप । शेष तजइ त्रत उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥६॥



यद्वनपत्तन भ्रातृय बन्धी श्री शारिङ्ग मेरी विहार ।  
 धर्मिण्य यत्र ए बन्धि परिहृष्टी श्री मन मनरद् भववार ॥१२५॥  
 तिला मन्वारत धाररवा श्री गुर विरल्ल तमि ठार ।  
 लहद वरीतह् सार्वी श्री दीरद भवना वार ॥१२७॥  
 बन्धवारत यद्भि भीमवत श्री बनेवतत मुच ध्यात् ।  
 बल्ल कपी शिष्टो पामीयत श्री मुंवर देव विवात् ॥१२८॥  
 गुरुव तया मुच भोवरी श्री परमार्थद ब्रह्मत् ।  
 शिष्टो श्री बन्धि बन्धि वामेवत श्री यदुबन्धि तिरपुर बल ॥१२९॥  
 यद्भिन्क ि बने वरद् श्री, र्धत तयव मुचमल्ल ।  
 बन्ध बन्धन परि ते लही श्री पामद् वरत्त वरुत्त ॥१३०॥  
 श्री अठर वन्धु वीरता श्री श्री शिर्षद पुष्टि ।  
 यद्भिन्ता वन बालीयद् श्री वरत्त वरमार्थ ॥१३१॥  
 श्री मुल्ल सेवत पुष्टि मिलत श्री वाचन श्री वरत्त ।  
 बन्धु भीत वामद् अठर श्री विमलविभव मठिरव ॥१३२॥  
 ए वरत्त मुद्गावत श्री श्री वामद् वर मठि ।  
 ते वामद् मुच भंरदा श्री विन विन वन वरुत्त ॥१३३॥  
 इति यद्भिन्क वरुत्तमिवालीतम् ब्रह्मवत् ॥

अंशत् १६ । वरं यत्तु मुठी १४ दिने बुधवार वीरिठ श्री हर्षविह्वलविशिष्टवर्षरीतिवन्धिदिनेन  
 वरुत्तमु भवा मेदि । श्री बुधवारवरे ।

४२१६ आदिभिनवरुत्ति—कमलकीर्ति । वरुत्त ३ । या १३×२२ वत्त । मत्ता—मुचरती ।  
 विरुत्त—वीरिठ ॥ वीरिठो ह्री के कर्ता वरुत्तकीर्ति ॥

४२१७ आदिनाथगीत—मुधिह्वयसिद्ध । वरुत्त १ । या २२×२२ वत्त । मत्ता—श्रीवी । विरुत्त-  
 नीत्त । वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ ।

विरुत्त—मत्ता वरुत्तवरी श्री वरुत्त ॥  
 ४२१८ आदिनाथ सन्ध्यावत्— । वरुत्त १ । या २३×२४ वत्त । मत्ता—श्रीवी । विरुत्त—नीत्त ।  
 वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ । वरुत्त १९१६ ।

पद भजन गीत आदि ]

४२१६ आदीश्वरविठ्ठलति । पत्र सं० १ । मा० ६२×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत ।

२० काल स० १५६२ । ले० काल स० १७६१ देवाय सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विषय—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

प्रतिम पद्य—

पनखासट्टि जिनमूर अविचल पद पाथी ।

वीनतदो मुलट पूणोभा मामुमस वहि दलम दिहाटे मनि धैराने इय भणोवा ॥४५॥

४२२० कृष्णबालविलास—श्री निशानलाल । पत्र सं० १५ । मा० ८×५३ इक्ष । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । छ मण्डार ।

४२२१ गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । मा० ८३×६३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१ । छ मण्डार ।

४२२२ चतुर्विंशति तीर्थहस्तवन—हेमचिमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । मा० ८३×४६ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । छ मण्डार ।

विषय—प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाघाट । पत्र सं० २४ । मा० १२×८३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-पद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । छ मण्डार ।

विषय—एक प्रति और है । चण्पाई न ६६ वर्ष की उम्र में रग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव में रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल प्रतीक (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४ चैतना मञ्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । मा० ६३×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल स० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । छ मण्डार ।

४२२५ चैत्यपरिपाटी । पत्र सं० १ । मा० ११३×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५५ । छ मण्डार ।

४२२६ चैत्यवदना । पत्र सं० ३ । मा० ६×८३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६५ । छ मण्डार ।

४२२७ चौबीसी जिनस्तुति—खेमचद । पत्र सं० ६ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

४२२८ चौबीसतीर्थहस्तपरिचय । पत्र सं० १ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । छ मण्डार ।



द्वितीय—प्रारम्भ—

सीता ता मनि सेकर दाल—

रमती चरणौ सीम नमावी, प्रणामी मतमुद्र पाया रे ।

भांकरिया श्रुति ना गुण गाता, उलटे भ्राज सयाया रे ॥

भविष्यण वदो मुनि भांकरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे ।

सबल साहा परिसा मन मुषे, सील रखण गरि भारियो रे ॥२॥

पदठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।

तस सुत मदन भरम बालुडो, कित्त जास कहानी रे ॥

नीजी ढाल धरुणो है । भांकरिया मुनि का वर्णन है ।

४०४१ एमोकारपथीसी—श्रुति ठाडुरसी । पत्र स० १ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल स० १८२८ भागद सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७८ । अ भण्डार ।

४०४२ तमाखू फी जयमाल—आशादमुनि । पत्र स० १ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७० । अ भण्डार ।

४०४३ दर्शनपाठ—धुधजन । पत्र स० ७ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पान ।

२० काल > । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८८ । अ भण्डार ।

४०४४ दर्शनपाठस्तुति — । पत्र स० ८ । प्रा० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०

२० काल × । ले० काल × । धरुणो । वे० स० १६२७ । अ भण्डार ।

४२४४ देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र स० ४ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल स० १८८५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १२४६ । अ

भण्डार ।

तिस्रोप—प्रारम्भ दोहा—

रठ नेमा नामे हुवा सखण सरव संजोग ।

भाठ सहस सखण धरो गोमकार गख जोग ॥१॥

सहत भठारा साथ जी भजाया चालीस हजार ।

भोठार मुनिवर विचरज्या रो सार ॥२॥

बसुदेव राजा ठाकरा देवाकीण प्रगजात ॥३॥

नन्दन छ देव का तरण सा राका के उणहार ।

बाणी सुण श्री नेम का लाघव सजसत्र ॥४॥

सावलों मुख धारतो वैभ बध्नायो वाच ।

वैभवावस्य (वापी भी बरयो जीव जीव ॥२॥

क.व.व.व.—

वैभ भी उल्लाह मंचल वाचवारे बही भी नेम रिखेववार ।

नाबया बाबा न वैभ नर वाचवत्ताना इम घट्टीनार ॥

बन्ना बामही वैभरो वैभी नर उवा पद्म न नरर तीहल ॥

वल्ती—बान्न नरन बन्नामहीर हुदी वै हुव ठलीए वार ॥२॥

बनमव बन्न भोवुवरो बरान्यो २ कल में मुनी वै वैव्या वारो ।

बन्ना नान्ना तो वाच पद्म २ वैभ तो नीकव तीरतल व वारो ॥३॥

वैभकी तो बन्नाल न पिछा नरो २ बाधा पाइ न बन्नीलो बन्नारे ।

जीव चिनर वैभवीरे व्हीर भोवुवली ए वारो ॥४॥

बाही तो बन्नी भी वैभवीरे एतो बहू वाच वारो ।

बन्ना माही वान्नु वहीरे बन्नी भी व्हीरे हुदा वारो ॥५॥

द.वि.व.—

नरकी वाच जोको बन्ना वार बन्नारो

हुनुवाया वीवै व्हीरे नरिण बन्नाक बन्नार ।

नरिण बन्नाक वहु वीना वैभवी वनरा इना नर व वल्ती ॥

वचवत्त ए बन्न व वाना तीन जीव बहवी ए वल्ती ए ॥६॥

एति भी वैभकी भी बन्न व ॥ ॥ वनमयी ॥

वचवत्त वृत्तीमान बावरा वीरवान ठारवरा वैदा वीयाका जो वांच वही व्हीवा वन्ना जीव वाचव्यो । किली  
वैभल वृत्ती २४ वं १ २ ।

वैभकी की बान्न— एतनवन्नुवत्त वीर है । वरिण वल वही है । वही वंन वहु वीवये है । वन्ने के वही  
बन्ना है ।

व.वि.व.—

हुनु वाना भी वान्नाक वन्ना वर वीवै वनवन्नु वल्ती ॥१॥

४२४६ वृत्तीकनबान्न—गुणुधारावत्तुरी । वच वं १ । वा १ २×४२ इल । वाना—किली वृत्त  
वल्ती । वचवत्त—वच वं १ । कल × १ । वल्ती । वै नं २१५४ । क वचवत्त ।

४२४७ नेमिताव क मवमहुवत्त—विमारीकान्न । वच वं १ । वा १६६×६ इल । वाना—किली ।  
वचवत्त वृत्ती । व कल नं १७७४ । वै कल नं १ २९ वचवत्त वृत्ती २ । वै नं २४ । व वचवत्त ।

वितेव—वोवु में वरिणवत्त वृत्ती की । वचवत्त की वाच वीव वचवत्त वृत्ती है ।

४०४८ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट मण्डार ।

विशेष—लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपलाना ।

१० पद्य से आगे नेमिराजुलपद्मोसी विनोदीलाल वृत्त भी है ।

४०४९ नागश्री सङ्गाय—विनयचद । पत्र सं० १ । भा० १०×४३ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ मण्डार ।  
विशेष—केवल ३रा पद्य है ।

प्रतिम—

आपण चाधो आप भोगवै कोण ग्रुप कुण्य चेला ।

सजम लेह गई स्वर्ग पांचमे मजुही नादी न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासो भोटी गर्भ वसेरा रे ।

विनयचद जिनधर्म भराघो सब हुल्ल जान परेरारे ॥१६॥

इति नागश्री सङ्गाय कुचामरो लिखिते ।

४२४० निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० ८ । भा० ८×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तुति । २० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । म मण्डार ।

४२४१ नेमिगीत—पासचन्द्र । पत्र स० १ । भा० १२३×४ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—स्तवन ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ मण्डार ।

४२४२ नेमिराजमतीकी घोड़ी । पत्र स० १ । भा० ९×४ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ मण्डार ।

४२४३ नेमिराजमती गीत—हीतरमल । पत्र स० १ । भा० ९३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ मण्डार ।

४२४४ नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र स० १ । भा० ८१×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ मण्डार ।

सूखतर ना पीर दोहिलोरे, पान्यो नर भवसार ।

धालइ जन्म महारिड मोरै, काइ करधारे मन माहि विचार ॥१॥

मति राचो रे रमणी ने रग क सेवोरे जीण वारणी ।

सुम रमळ्यो रे सजम न सगक चेतो रे चित्त प्राणी ॥२॥

भरिहत देव भराषाइघोजी, रे ग्रुप गच्छा श्री साध ।

धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाडक ॥३॥

पहिलो समर्थित तैयार है वे क्षेत्र बर्षको मुख ।  
 तबम समिष्ठ बर्षिरो विणु बाल्यो है तुम बंजर तुमिक ॥१०॥  
 उद्युत कटेल धरयो है, वे बाबो बलगाय ।  
 पावेह बाल्यन परिष्टो, निम मिनीह है मिमपुर्वो बाल्यक ॥११॥  
 बीन छडुको बीषया बाधिरे, बरए न बाधि बीर ।  
 अन्त पाखा बीषया, उद्युत बाबर है ह्युत जो मय बीर ॥१२॥  
 कोटी लीने पर उद्यो है, विणु ली लाने बर ।  
 मन बंजरस निम कोरिज विणु बाबर है मन मनगा संतान क ॥१३॥  
 अन्त अन्तर ल मन है, वेरे मन मुख मनेक ।  
 कुन नहता पाबीह, क्यह पासी है मन बाहि निनेक ॥ ॥  
 नहिता संन मुख ह्यु, मन लक्ष उद्युत ।  
 कुन मुख अन्तर ए उद्युत, निम लाने है हिस्या नतिवत ॥१४॥  
 कुन अन्त बर ह्युत अन्त, मनगा लाने पोक ।  
 कु परिबह मन नहि है वे बाबर है मया बडुन लोच ॥१५॥  
 मन पिठा बंजन कुटो, कुन अन्त बरवार ।  
 सधार्मका बडु नी लया बीर बर मन है ली उद्युतवार ॥१६॥  
 अन्त मन बीपरे है, विणु है कुटह पाय ।  
 बाह है लीना ली है बडुनि बरा बाबरै पीनन न बाज ॥१७॥  
 अन्त बरा मन मन ली है, उद्युत लक्ष बंजन ।  
 बाज ह्यु अन्त बरुटी बीर समन्त है लीनीपाल क ॥१८॥  
 अन्त बीषय नी पाहसा है, लु कु बीरस संतार ।  
 एक विन उद्ये बाबरन अन्त बाबर है विणु ही अन्तारक ॥१९॥  
 अन्त मन लीना ली है, अन्त बीषयने बीपरे ।  
 अन्तारक मनपुर्वीन ली बीषिको है लक्ष अन्तारक ॥२०॥  
 धार्मिक बाबा अन्तपा है पीर बंजन लुपुर् ।  
 विन बडु है लु नी ली है लक्ष बीर लक्ष लक्ष ॥२१॥

पद भजन गीत आदि ]

बाल वृमचारही जिएण वाइमममा ॥

समदविजइजी रा नद हो, बैरागी माहरो मन लागो हा नेम त्रिएणद सू

जादव कुल केरा चद हो ॥ बाल० ॥१॥

पेव घणा छइ हो पुम जोदोवता ( देवता )

तेतो न चढइ चेत हो, कँइक रे चेत म्हामत हो ॥ बाल० ॥२॥

कँइक दीम करइ नर नारनइ मामइ तेलसिद्धर हर हो ।

चाके इक बन वासै वासै वास, यक बनवासो करइ ।

( कष्ट ) कस्तट सहइ गरपुर हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर माया तयो, तु जग दीनदया हो ।

नाजोवनवती ए मु दरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिणणे उदरो पहुतीउ मुकति मकार ।

हीरानद सवेग साहिवा, जी वी नव म्हारी वीनतेडा म्रवघारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४२५५ नेमिराजुलसञ्जाय ... पत्र सं० १ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र

२० काल म० १८५१ चैत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६ पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्गभ सूरि । पत्र सं० २ । मा० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी

विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७ पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । मा० १०×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२८ । अ भण्डार ।

विलेप—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा म्रधे ॥या०॥

जैसे पछी वीरछ वसेरा, वीदुरे होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाढा ।

भंत समे चलण की वेला, ज्याँ गाढा राहो छाढारे ॥२॥

ऊचा २ महल बणाये, जीव कह इहा रेखा ।

चल गया हस पडो रही काया, लेय कलेवर दणा ॥३॥

मात पिता मु पतनी रे धारी, तीण धन जोवन लाया ।

उठ गया हँस काया का मडण, काढा प्रेल परया ॥४॥



कटी कनार हरा जो धारा, जलटी पुझी खोर ।  
 मेरी २ कण्ठी बचन बनाना चलता संक न होइ ॥१॥  
 पार की बँस बशी बिर लीनी हे मुरख बोरा ।  
 हचथी पीट कटी पु भाई, ठो हीन कुटुम्बनुं ल्याप ॥२॥  
 घास पिठा बुझ ठामन मेघ मेरा बन बरिचारी ।  
 मेरा ९ पडा फुकारे चलता नही कबु लारी ॥३॥  
 जो ठेरा ठेरे संक न चलता, मेघ न बाला पत्रो ।  
 मोइ संत नवारन बीरपट्टी हीरा बनन बनाना ॥४॥  
 घाका बैलत कैरी चल पए बचनी घाखर धामुही चलता ।  
 घोबर बीटा बडु पछानै नानी कु हीन चलतया ॥५॥  
 बाल कव बंजन कल कने, कबु न नीपड बारी ।  
 कल घासांसे बंडी बकनी बन कवा काएन लारी ॥६॥  
 ए मोनबाह वाइ बुझेनी केर न बाक लारी ।  
 हीनत होन ठो बीन न नीने कुन बडो बिरबायो ॥७॥  
 हीइ बुझे बीन नीरबनी बडो केर नइ छुल्ल हाटी ।  
 हल पीबरी बज्ज बुझे बीन नरा कटी बिरबायो ॥८॥  
 कुनर बुदेन बरन कु बनी, बेरो बीन का बरना ।  
 ठीक मोननान्न नहे जो बडो घासन नारन करणा ॥९॥

।।।।।

४२२२. पदसंग्रह—। पद सं २२। पं १२०२ दश। भाषा—हिन्दी। विषय—बनन । र  
 बल ×। मे बल ×। पदसंग्रह। पद सं ४२७। क नम्बर।

४२२३. पदसंग्रह—। पद सं १। मे बल ×। पं सं १२७३। प नम्बर।  
 विषय—विजुवन बालु बरिना—।

इसी नम्बर के १ पदसंग्रह ( पं सं १११७, ११३ ) धीर है।

४२२४. पदसंग्रह—। पद सं ५। मे बल ×। पं सं ४२। क नम्बर।  
 विषय—इसी नम्बर के ११ पदसंग्रह ( पं सं ४४ ४०६ के ४२२ ) एक धीर है।

४२२५. पदसंग्रह—। पद सं २। मे बल ×। पं सं १२२। क नम्बर।

५२६२ पदसंग्रह । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० ३३ । मृ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह ( वे० स० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ मे ६ तक, ३११ मे ३२४ ) और हैं ।

नोट—वे० स० ३१८वें मे जयपुर की राजवशावलि भी है ।

४२६३ पदसंग्रह । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसंग्रह ( वे० स० १७५२, १७५३, १७५८ ) और हैं ।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूषणदास, दौलतराम आदि कवियों के पद हैं ।

५२६४ पदसंग्रह । पत्र स० ३ । भा० १०X४<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल

X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

- १ मोहि तारो सामि भव सिधु ते ।
- २ राजुल कहै तुमे वेग सिधावे ।
- ३ मिद्धचक्र वदो रे जयकारी ।
- ४ चरम जियोसर जिहो साहिवा  
चरम धरम उषगार बाल्हेसर ॥

५२६५ पदसंग्रह । पत्र स० १२ मे २५ । भा० १२X७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागवन्द, नयनसुख, धानत, जगताराम, जादूाराम, जोषा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल वलतराम, भूभूाराम, खेमराज, नवल, भूषण, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कविया के पद ह ।

४२६६ पदसंग्रह—उत्तमचन्द । पत्र स० १८ । भा० ६X६<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका संग्रह है । पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं ।

४२६७ पदसंग्रह—अ० कपूरचन्द । पत्र स० १ । भा० ११<sup>३</sup>X५<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २०४३ । अ भण्डार ।

४२६८ पद—केशरगुलाध । पत्र स० १ । भा० ७X४<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२४१ । अ भण्डार ।

विशेष—मातृम-

बीषद लघन मन्त्रामन्त्रन शिवायेव हुमाये श्री ।

दिसवाली त्रिगवर प्याप वो

दिल दे बीष वषय है विरविन कम्पू न होमय प्याप वो ॥

४४६१ पदसमूह—बीषमूर्त्ति । पम सं २ । पा २४×२६ द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद । २ कल × । ले नाप × । पूर्त्ति । वे सं १७२७ । छ मन्त्रार ।

४४७० पदसमूह—अवधन्व जाषदा । पम सं २२ । पा ११×२२ द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद । २ कल सं १५७४ भाषाद सुरी १ । ले कल सं १५७४ भाषाद सुरी १ । पूर्त्ति । वे सं ४१७ । छ मन्त्रार ।

विशेष—प्रतिम २ वयो में विषय सुची दे रकी है । अवधन २ परो का संवह है ।

४४७१ प्रति सं २ । पम सं २ । ले कल सं १५७४ । वे सं ४१५ । छ मन्त्रार ।

४४२. प्रति सं ३ । पम सं १ से ४ । ले कल × । पूर्त्ति । वे सं १९२ । छ मन्त्रार ।

४४७३ पदसमूह—द्वेषामह । पम सं ४४ । पा २×२३ द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद मन्त्र । २ कल × । ले कल सं १९३ । पूर्त्ति । वे सं १७२१ । छ मन्त्रार ।

विशेष—प्रति कुठकाकर है । विरविन राव रत्नविभो के वर दिने हुके है । प्रथम पम पर लिखा है श्री देवदालासी सं १९३ का बीषाद सुरी १२ । मुकाम मठई बीषाद ।

४४७४ पदसमूह—द्वेषादराज । पम सं २ । पा ११×७ द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद । २ कल × । ले नाप × । पूर्त्ति । वे सं ४२२ । छ मन्त्रार ।

४४७५ पदसमूह—मुषाजन । पम सं २९ से २९ । पा ११ × द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद मन्त्र । २ कल × । ले कल × । पूर्त्ति । वे सं ७९७ । छ मन्त्रार ।

४४७६ पदसमूह—मागधन्व । पम सं २३ । पा ११×७ द व । भाषा—हिन्दी । विषय—वद मन्त्र । २ कल × । ले नाप × । पूर्त्ति । वे सं ४११ । छ मन्त्रार ।

४४७७ प्रति सं २ । पम सं २ । ले कल × । वे सं ४१२ । छ मन्त्रार ।

विशेष—बीषे परो का संवह है ।

४४७८ पद—माधुकेचद । पम सं १ । पा ३×४ द व । भाषा—हिन्दी । २ कल × । वे कल × । पूर्त्ति । वे सं १२४२ । छ मन्त्रार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पत्र सखी मिल मोहियो जीया,

काहा पावेगो तु धाम हो जीवा ।

समभो स्यु त राज ॥

४२७६ पदसमग्रह—मगलचन्द्र । पत्र स० १० । मा० १०३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३४ । क भण्डार ।

४२८० पदसमग्रह—माणिकचन्द्र । पत्र स० ५४ । मा० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल स० १६५५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४३० । क भण्डार ।

४२८१ प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३ पदसमग्रह—सेवक । पत्र स० १ । मा० ८३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद हैं ।

४२८४ पदसमग्रह—हीराचन्द्र । पत्र स० १० । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिषां ( वे० स० ४३५, ४३६ ) और हैं ।

४२८५ प्रति स० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६ पद व स्तोत्रसमग्रह । पत्र स० ८८ । मा० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—समग्रह । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनामा का समग्रह है ।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	हिन्दी	८
सुगुरुशतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुरुपञ्चीसी	"	"	-
गुरुमो की स्तुति	भूधरदास	"	-

नाम	कर्ता	मापा	पत्र
स्त्रीधामस्तोत्र	पुराणाल	द्विती	१५
वज्रनाथि वज्रवर्ति की मालिका	"	"	-
परार्थद्वय	नाथिनकण्ठ	"	४
तेजस्वरंभस्वीटी	"	"	११
बुद्धावतर्तिस्त्रीधामस्तोत्र	"	"	
श्रीशैल संस्क	श्रीमठराज	"	१२
वज्रशोचस्वीटी	बालराज	"	१७

४२८७ नारायणकवित्त—आजू ( समपुत्रुम्बर के शिष्य ) । पत्र नं १ । पा १ × २ इति ।  
 भाषा—हिन्दी । विषय—शैल । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ अष्टार ।

४२८८ पार्वतीनाथ की मिराणी—विमर्हर्ष । पत्र सं ३ । पा १ × ४ इति । भाषा—हिन्दी ।  
 विषय—स्तवन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२४७ । अ अष्टार ।

विशेष—११ पत्र से—

प्रारम्भ—  
 कुछ श्रुति बालक सुन्दर बालक बरतिव पाल मिलवा है ।  
 शाली कवि नाति शशीरम शीरम दिपति बाल मिलवा है ॥

समाप्त—  
 शिवा शिवावावात शिवा रे बाला के लेक विचरवा है ।  
 बजर विचरणी पल बजाणी कुछ विमर्हर्ष नाथवा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर शीरम नाम माला शीरम की लक्ष्मण ही है ।

४२८९. प्रति स २ । पत्र नं १ । ले काल सं १२२ । के सं ११११ । अ अष्टार ।

४२९० नार्वतीनाथशोचई—व आलो । पत्र नं १७ । पा १२ × २२ इति । भाषा—हिन्दी ।  
 विषय—स्तवन । र काल सं १७३४ वर्तिका सुती । ले काल सं १७२३ अष्ट सुती २ । पूर्ण । के सं १११ ।  
 अ अष्टार ।

विशेष—कव्य प्रकृत—

संस्कृत बराली शीरम नाथिक कुछ बल सुम शीर ।  
 शीरम बर दिनी सुभितल बर श्रुति बर विरि पाथ ॥१११॥  
 बालर बाल शैल सुम बल बजर बराली उताम नाम ।  
 बर मालक पुवा विमर्हर्ष बर नाथि बर बरु बर ॥१२॥

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ।

पठित लाखो लाख सभाव, मेवो धर्म लाखो सुभधान ॥२६८॥

भाचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई सपूर्णा ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पाडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी ।

४२६१ पार्श्वनाथ जीरोद्धन्दसत्तरी । पत्र सं० २ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६५ । अ मण्डार ।

४२६२ पार्श्वनाथस्तवन । पत्र सं० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सं० २ । मा० ८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ मण्डार ।

४२६४ वन्दनाजखड़ी—बिहारीदास । पत्र सं० ८ । मा० ८×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च मण्डार ।

४२६५ प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । व्य मण्डार ।

४२६६ वन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । मा० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज मण्डार ।

४२६७ प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । छ मण्डार ।

४२६८ चारखड़ी एष पद । पत्र सं० २२ । मा० ५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । म मण्डार ।

४२६९ बाहुवली सञ्जाय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । मा० ६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सञ्जाय और है ।

४३०० भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । मा० १२×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तिया हैं ।



पत्र भजन गीत आदि ]

४२१२ विनतीसमूह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । मा० ७३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ मण्डार ।

विशेष—माघू बहू का भगडा भी है ।

इसी मण्डार मे २ प्रतिमा ( वे० सं० ११३३, १०४३ ) श्रीर हैं ।

४३१३ प्रति स० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । ख मण्डार ।

४३१४ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । ड मण्डार ।

४३१५ प्रति स० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० ११३२ । ट मण्डार ।

४३१६ वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । क मण्डार ।

४३१७ शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । मा० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिम—

पूज्य श्री श्री दीलतराय जी बहुशुण भगवानी ।

रिपलाल जी करि जोडि चीनवे फर सिर चरराणी ॥

सहर माधोपुर सबत् पचावन कातीग सुदी जाणी ।

श्री सीतल जिन गुण गाया मति उलास भ्राणी ॥ सीतल० ॥१२॥

॥ इति सीतलनाथ स्तवन सपूर्ण ॥

४३१८ श्रेयासस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ मण्डार ।

४३१९ सतियोकी मङ्गाय—ऋषि खजमल जी । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । गुजराती । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारां गुण कस्या थे सुरा सांभलो ।

उत्तम पराणी खजमल जी कहइ ॥३४॥

चिन्तामणि पार्वनाथ स्तवन भी बिया है ।

४३२० मङ्गाय ( चौदह बोल )—ऋषि रायचन्द । पत्र सं० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ मण्डार ।



४३२१ सर्वायसिधिसम्पन्नम्—। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी। विषय-  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १४०। अथ कथार।

विशेष—पुत्र पक्ष स्तुति की है।

४३२२ सारस्वतीशक्तम्—। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी। विषय-  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १११। अथ कथार।

४३२३ सायुष्यम्—मायिकम्। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी।  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १२४। अथ कथार।

विशेष—स्वीटम्बर मन्त्रान की सायुष्यम् है। पुत्र पक्ष स्तुति है।

४३२४ सायुष्यम्—पुत्रपक्षम्। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-पुण्यी हिन्दी।  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १। अथ कथार।

४३२५ सारथीसीमाया—वारयथाक विदग्धा। वन नं ४०। वा ११२ × ४ इत्थं।  
 हिन्दी विषय-स्तुति। १ वाय नं ११२ वारिक मुनी २। मे काल नं ११२ वीच मुनी २। पूर्ण। मे  
 ४ २। अथ कथार।

४३२६ प्रति स० २। वन नं २ २। मे काल नं १२४ वीचान् मुनी २। मे नं ४२१।  
 कथार।

४३२७ प्रति स० २। वन नं २०१। मे काल ×। मे नं ४११। अथ कथार।

४३२८ सीताशक्तम्—। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी। विषय-  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं ११६०। अथ कथार।

विशेष—श्रीहनुम इत्थं काल हाल की है।

४३२९ साकृद्दत्तोसम्पन्नम्—। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी। विषय-  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १११। अथ कथार।

४३३ लक्ष्मणसम्पन्नम्—। वन नं १। वा १ × ४३ इत्थं। वाया-हिन्दी। विषय-  
 १ वाय ×। मे काल ×। पूर्ण। मे नं १११। अथ कथार।



## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१ अकुरोपणविधि—इन्द्रनदि । पत्र स० १५ । भा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७० । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यत्र है ।

४३३२ अकुरोपणविधि—प० आशाधर । पत्र स० ३ । भा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वीं क्षताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।

४३३३ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नहीं है । संस्कृत मे कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३१६ । ज मण्डार ।

४३३५ अकुरोपणविधि । पत्र स० २ से २७ । भा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३३६ अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल । पत्र स० २६ । भा० १२×७ इच्च । भाषा—

प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स० १ । च मण्डार ।

४३३७ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र स० २६ । भा० १२×५ इच्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वे० स० १२५६ । ट मण्डार ।

४३३८ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र स० २१४ । भा० १४×८ इच्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८७० । ले० काल स० १८७२ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । च मण्डार ।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (गवालियर) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र स० ४८ । भा० १३×८ इच्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १६३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । अ मण्डार ।

४३४० प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल × । वे० स० ४१ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६) मौर है ।

४३२१ प्रति मं ३। वन मं ०३। मे वान मं ११३। के मं ३। अ मकार।

विशेष—एकी मकार मे एव मं १ ( के मं २२ ) कीर है।

४३२२ प्रति मं ४। वन मं ३१। मे वान >। के मं ३। अ मकार।

विशेष—एकी मकार मे एी इति मं ( के मं ३२३१ ) कीर है।

४३२३ प्रति मं ७। वन मं ४२। मे वान >। के मं १११। अ मकार।

विशेष—मकार मूठी इ मं १११० की म् एव एवुवाव मकार मे मकार।

४३२४ अक्षरमिभिवृत्ता—मकारमकार। वन मं ३। वा ११०। इव। मकार—एकी।

विमान-मूठा। ए वान मं ११। वाव मूठी १३। के वान >। मूठा। के मं ४। अ मकार।

विशेष—मकार एविक-

माव मकार मकार मी की इति एकी इति।

कीर मी मकार की म् एव एकी म् एव एकी ॥

केव म् एव म् एव म् एव म् एव म् एव म् ॥

मकार म् एव म् एव म् एव म् एव म् ॥

एव म् एव म् एव म् एव म्—

विमान इव म् एव म् एव म् एव म् एव म् ॥

माव म् एव म् एव म् एव म् एव म् ॥

४३२५ अक्षरमिभिवृत्ता—ए वन मं ३। वा ११०। इव। मकार—एकी। विमान-मूठा।

ए वान >। मे वान >। मूठा। के मं ४। अ मकार।

४३२६ अक्षरमिभिवृत्ता—ए वन मं ३। वा ११०। इव। मकार—एकी। विमान-मूठा। ए

वान >। मे वान >। मूठा। के मं ३। अ मकार।

विशेष—मकार म् एव म् ॥

४३२७ अक्षरमिभिवृत्ता—मकारमकार। वन मं ३। वा ११०। इव। मकार—एकी। विमान

मूठा। ए वान >। मे वान मं १०२। मकार मूठी ३। मूठा। के मं ४। अ मकार।

विशेष—मी इव एव म् एव म् एव म् एव म् ॥

४३२८ अक्षरमिभिवृत्ता—ए वन मं ४। वा ११०। इव। मकार—एकी। विमान-मूठा

ए वान >। मे वान >। मूठा। के मं २१३। अ मकार।

विशेष—म्वि मीर है। एकी मकार मे एव म् एव ( के मं ११०२ ) कीर है।

४३४६ अर्द्धाई ( साद्धर्ष्य ) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६१ । भा० ११×५<sup>३</sup> इच्च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० का १ × । अपूर्णा । वे० स० ४५० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० १०४४ ) और है ।

४३५०. प्रति स० २ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० स० ७८७ । क  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७८८ ) और है ।

४३५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १८६२ माघ बुदी ३ । वे० स० ८४० । क  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्णा प्रतियां ( वे० स० ५, ६१ ) और हैं ।

४३५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८८४ भाद्रवा सुदी १ । वे० स० १३१ । क  
मण्डार ।

४३५३ प्रति स० ५ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ४२ । क मण्डार ।

४३५४. प्रति स० ६ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वे० स० १२६ । क मण्डार ।

विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५ अर्द्धाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ११३ । भा० १०<sup>३</sup>×७<sup>३</sup> इच्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्णा । वे० स० २ । च मण्डार ।

४३५६ अर्द्धाईद्वीपपूजा । पत्र स० १२३ । भा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३ । पूर्णा । वे० स० ५०५ । अ मण्डार ।

विशेष—ध्रुवावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महृषा बाले ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ५३४ ) और है ।

४३५७ प्रति स० २ । पत्र स० १२१ । ले० काल स० १८८० । वे० स० २१४ । क मण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोधनेर में प्रतिलिपि की थी ।

४३५८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वे० स० १२३ । क  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति [ वे० स० १२२ ] और है ।

४३५९ अर्द्धाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र स० १६३ । भा० १२३×५ इच्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—पूजा । २० काल स० चैत सुदी ६ । ले० काल स० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्णा । वे० स० ८ । क मण्डार ।

विशेष—ममरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की ।

४३६ प्रति मं ३। वष मं १८। मे वल मं ११७। के मं २१। अथ श्राद्ध।

विशेष—इसी श्राद्ध के २ प्रतिष्ठा [ के मं १४३३ ] पीर है।

४३६१ प्रति म ३। वष मं १४। मे वल ×। के मं ११। अथ श्राद्ध।

४३६२ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—शतलिखाम। वष मं ११। पा ८ × ७ इव। शता-संस्तुत।

विषय—पूजा। र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं ४। अथ श्राद्ध।

विशेष—इसीप्रातः विधि महिष है। अथ पुण्य कर्मेश्वरी मन्त्रवाच के केशवों के मन्दिर में चढ़ाई की।

४३६३ प्रति म ३। वष मं १४। मे वल ×। के मं १४१। अथ श्राद्ध।

विशेष—पूजा विधि एवं अन्नमन्त्र विधी वच मे है।

इसी श्राद्ध के एव प्रति मं १२ की [ के मं १११ ] पीर है।

४३६४ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—। वष मं ११। पा १२ × २ इव। शता-संस्तुत। विषय-

पूजा। र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं २। अथ श्राद्ध।

विशेष—श्राद्धवाच के अन्नमन्त्र उक्त पूजा है।

४३६५ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—भी मूषण। वष मं १८। पा १३ × ७ इव। शता-संस्तुत।

विषय—पूजा। र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं १४। अथ श्राद्ध।

४३६६ प्रति म २। वष मं १। मे वल मं १२०। के मं ४२१। अथ श्राद्ध।

विशेष—नवराई अष्टम के वं अन्नमन्त्र के प्रतिष्ठा की की।

४३६७ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—। वष मं १। पा १२ × २ इव। शता-संस्तुत विधी।

विषय—पूजा। र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं ३। अथ श्राद्ध।

४३६८ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—सुरेश्वरीपूजा। वष मं १। पा १३ × २ इव। शता-संस्तुत।

विषय—पूजा। र वल ×। मे वल ×। के मं १४२। अथ श्राद्ध।

४३६९ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—भी मूषण। वष मं १। पा ७ × ४ इव। शता-संस्तुत। विषय-

पूजा। र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं ११२३। अथ श्राद्ध।

४३७० अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—। वष मं १। पा १३ × २ इव। शता-संस्तुत। विषय—पूजा।

र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं ११। अथ श्राद्ध।

४३७१ अन्नमन्त्रचतुर्दशीपूजा—सेवगा। वष मं १। पा १३ × २ इव। शता-संस्तुत। विषय—पूजा।

र वल ×। मे वल ×। पूर्ण। के मं १३। अथ श्राद्ध।

## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य ]

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से कटा हुआ है ।

४३७२ अनन्तनाथपूजा । पत्र न० ३ । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४ । अ मण्डार ।

४३७३ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार म २ प्रतिष्ठा ( वे० स० ५२०, ६६५ ) शीर है ।

४३७४ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ११७ । छ मण्डार ।

४३७५ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २३० । ज मण्डार ।

४३७६ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५२ । अ मण्डार ।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७ अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र स० २ । मा० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४१ । छ मण्डार ।

४३७८ अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराज । पत्र स० ३ । मा० ८×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६६ । अ मण्डार ।

४३७९ अनन्तव्रतपूजाविधि । पत्र स० १८ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८५८ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १ । ग मण्डार ।

४३८० अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य । पत्र स० ६ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० १३६३ । अ मण्डार ।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र स० १८ । मा० १२×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १६३० । ले० काल स० १८४५ भासोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४६७ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीमन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का—अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथी च चौथि लिखित पिरागदास मोहा का जाति वाकलीयान प्रतापसिंहाराज्ये सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक भ्राजाकारी पंडित खुसालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापित ॥१॥



पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४३६६ अष्टाध्याय । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-सल्लेखना

विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गायार्थे हैं- ग्रन्थका नाम रिद्धाई है । जिसका संस्कृत रूपान्तर परिष्ठाध्याय है । भादि अन्त की गायार्थे निम्न प्रकार हैं—

परामत सुरासुरमउ लिरयणव रकिरणकतविछुरिय ।

बीरजिणुपायकुयल एमिऊण भणेमि रिद्धाई ॥१॥

ससारम्मि भमतो जीवो बहुभेय भिण्ण जीणिंसु ।

पुरकेण कहवि पावइ सुहमणु मत्त एण सवेहो ॥२॥

मन्त—

पुणु विज्जवेज्जहणूणां वारउ एव वीस सामिय्य ।

सुगीव सुमतेरा रइयु भणियु मुणिए ठीरे वरि वेहो ॥२०१॥

सूई भूमिले फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।

कहिजइ भूमिए समबरे हातय-वच्छा ॥२०२॥

अट्टाट्टारुह छिणो जे लद्धीह लच्छरेहाउ ।

पढमोहिरे अकं गविजए याहि एण तच्छ ॥२०३॥

इति परिष्ठाध्यायशास्त्र समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखित ॥श्री॥ ॐ ॥

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २४१ ) भी है ।

४३६७ अष्टाहिकाजयमाल । पत्र सं० ४ । मा० ६३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टा-

ह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है ।

४३६८ अष्टाहिकाजयमाल । पत्र सं० ४ । मा० १३×४ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-अष्टा-

ह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३१ ) भी है ।

४३६९ अष्टाहिकापूजा । पत्र सं० ४ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टाह्लिका

पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६० ) भी है ।

४४०० अष्टाहिकापूजा । पत्र सं० ३१ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

अष्टाह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।





## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४४०३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६३१ । वै० स० ३२ । क मण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा । पत्र स० ४४ । मा० ११×५ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका

पर्व की पूजा । २० काल स० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वै० स० १० । क मण्डार ।

४४०५ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ३ । मा० ११×४ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एव पूजा । २० कालः× । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ४२३ । व्य मण्डार ।

४४०६ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन । पत्र स० २२ । मा० ११×५ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अष्टाह्निका व्रत एव पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १८६ । क मण्डार ।

४४०७ आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र स० ४ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २२२ । छ मण्डार ।

४४०८ आठकोष्ठिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ४ । मा० १२×६ इच्छ । भाषा-संस्कृत । पय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ११६ । छ मण्डार ।

४४०९ आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र स० ८ । मा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५०० । अ मण्डार ।

४४१० प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वै० स० ६२ । छ मण्डार ।

४४११ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६०५ आसोज बुदी २ । वै० स० १८० । म मण्डार ।

४४१२ आदित्यव्रतपूजा । पत्र स० ३५ से ४७ । मा० १३×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रत पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६१ । अपूर्ण । वै० स० २०६८ । ट मण्डार ।

४४१३ आदित्यवारपूजा । पत्र स० १४ । मा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ५२० । च मण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा । पत्र स० ६ । मा० ११×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । वै० स० ११७ । छ मण्डार ।

४४१५ आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ४ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५४८ । अ मण्डार ।

४४१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० ५१६ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० स० ५१७ ) और है ।

४४१०. प्रति मं ३। पत्र सं ६। नै काल ×। के सं १३२। अ मन्वार।

विशेष—घाण्ड्य में हीन श्रीशैली के नाम तथा मनु वर्जित पत्र भी है।

४४१८. आदिमाषपूजा—। पत्र सं ४। या १२३ × २३३ दश। मत्ता—हिन्दी। विषय—पूजा  
८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। के सं ११७२। अ मन्वार।

४४१९. आदिमाषपूजा—। पत्र सं १। या १२ × २२ दश। मत्ता—हिन्दी। विषय—पूजा  
८ काल ×। नै काल ×। के सं १२२३। अ मन्वार।

विशेष—नैविषाण पूजाएक भी है।

४४२०. श्रीशैलपूजा—। पत्र सं २। या १२ × २२ दश। मत्ता—हिन्दी। विषय—पूजा  
मत्ता श्रीशैल की पूजा। ८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। के सं १२३६। अ मन्वार।

विशेष—महाशैल पूजाएक भी है जो संसृत में है।

४४२१. आराधनाविधान—। पत्र सं १०। या १ × २३ दश। मत्ता—संसृत। विषय—  
विषय विधान। ८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। के सं ४१२। अ मन्वार।

विशेष—विष्णु श्रीशैली श्रीशैलपूरत आदि विधान विषय है।

४४२२. इन्द्रपूजा—। पत्र सं १। या १२ × २३ दश। मत्ता—संसृत।  
विषय—पूजा। ८ काल ×। नै काल सं १२३६ दशाष्टक पुरी ११। पूर्ण। के सं ४१२। अ मन्वार।

विशेष—विष्णुशैलीशैली म विष्णुपूजा विष्णुशैली दशाष्टक है।

४४२३. प्रति सं २। पत्र सं २२। नै काल सं १२२ दि श्रीशैल पुरी ३। के सं ४२०।  
अ मन्वार।

विशेष—पूजा एवं विष्णु के हैं। अन्य भी प्रतिमिति मन्वुत में महाराज्या अष्टावक्र के बालकाल में  
हुई थी।

४४२४. प्रति सं ३। पत्र सं २२। नै काल ×। के सं ५। अ मन्वार।

४४२५. प्रति सं ४। पत्र सं १९। नै काल ×। के सं १३। अ मन्वार।

विशेष—अ मन्वार में २ अपूर्ण प्रथिमें ( के सं १२ ४३ ) भी है।

४४२६. इन्द्रपूजा—। पत्र सं २०। या ११ × २३ दश। मत्ता—संसृत। विषय—  
शैली एवं अष्टको आदि के विधान में श्री शैली वाली पूजा। ८ काल ×। नै काल सं १२३६ अष्टक पुरी ३।  
पूर्ण। के सं १२। अ मन्वार।

विशेष—अ मन्वार श्रीशैली वाली श्री शैलीशैली के मन्वुत में प्रतिमिति भी। मन्वुत की पुस्तों में  
ही है।

४४२७ उपवासप्रहरणविधि । पत्र सं० १ । मा० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ मण्डार ।

४४२८ ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणानन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ वैशाख वृद्धी ५ । अपूर्णा । वे० सं० ६९८ । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरुवासरं श्री मूलसद्ये नद्याम्नाये वलात्कारगणो सरस्वतीगण्ड्ये गुणानन्दि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावत । शतभाषिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यस्या ॥ग्रन्थाग्रन्थ ३८०॥

इसी मण्डार मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५७२ ) भी है ।

४४२९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—मृगह्लिका जयमाल एव निर्वाणकाण्ड भी है । ग्रन्थ के दोनों भी सुन्दर बेल बूटे हैं । श्री भादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों भी स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ मण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णक्षरो में है प्रति सुन्दर एव दर्शनीय है ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३८ ) भी है ।

४४३२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १५ । ङ मण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । ञ मण्डार ।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २१० । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४३३ ) भी है जो कि मूलसद्य के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५ ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९२ । छ मण्डार ।

४४३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ मण्डार ।

४४३७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५५ ।

विशेष—अपम वन पर एकमीनरुह विद्याल विद्या हुआ है।

४४३८. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं १ । या ११३×२३ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा ।

१ वन × । नि कल १०१२ वन बुटी १२ । पूर्ण । नि सं ४८ । अ न्यवार ।

विशेष—महाराजा मालवी ने घामेर मे प्रतिनिधि भेजे थी ।

४४३९. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं ३ । या १३×२३ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा ।

१ कल × । नि कल सं १५ कार्तिक बुटी १ । पूर्ण । नि सं ४१ । अ न्यवार ।

विशेष—प्रति संन एवं वायव्य स्थित है ।

४४४०. अग्निर्मंडकपूजा—दोसत आसेरी । वन सं १ । या १३×१३ दण । वाया-हिन्दी ।

विद्यम-पूजा । १ वन × । नि कल सं १११० । पूर्ण । नि सं ११ । अ न्यवार ।

४४४१. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं ७ । या ११×२३ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा एवं विधि । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं १२ । अ न्यवार ।

विशेष—संजीवारण का कल मालापुरी १२ जो विद्य वाया है ।

४४४२. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं १ । या १३×४ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा ।

१ वन × । नि वन × । पूर्ण । नि सं १४ । अ न्यवार ।

विशेष—अपमान अयन क मे है ।

४४४३. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं ११ । या १३×३ दण । वाया-संस्कृत हिन्दी ।

विद्यम-पूजा एवं विधि । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं १० । अ न्यवार ।

विशेष—पूजा संस्कृत मे है तथा विधि हिन्दी मे है ।

४४४४. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं १ । या ११×२३ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा ।

१ कल × । नि कल सं ११ वायव्य बुटी १ । पूर्ण । नि सं ३१ । अ न्यवार ।

विशेष—इसी न्यवार मे एक प्रति ( नि सं १ ) जोर है ।

४४४५. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं १ । या १२×२ दण । वाया-संस्कृत । विद्यम-पूजा । १ वन × । नि कल × । पूर्ण । नि सं १४ । अ न्यवार ।

४४४६. अग्निर्मंडकपूजा—अग्नीसेव । वन सं १ । या १ ×२३ दण । वाया-संस्कृत ।

विद्यम-पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ११० । अ न्यवार ।

४४४७. अग्निर्मंडकपूजा—। वन सं १ । या १ ×२३ दण । वाया-संस्कृत ।

विद्यम-पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ४११ । अ न्यवार ।

४४४८ कर्मदहनपूजा—म० शुभचन्द्र । पत्र स० ३० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्णा प्रति ( वै० स० ३० ) और है ।

४४४९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७२ आसोज । वै० स० २१३ । ज भण्डार ।

४४५० प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६३५ मगसिर बुदी १० । वै० स० २२५ । ज भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० स० २६७ ) और है ।

४४५१ कर्मदहनपूजा” । पत्र स० ११ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के नष्ट करने की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८३६ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ५२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति ( वै० स० ५१३ ) और है जिसका ले० काल स० १८२४ भाद्रवा सुदी १३ है ।

४४५२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वै० स० १० । घ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७०८ श्रावण सुदी २ । वै० स० १०१ । ङ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वै० स० १००, १०१ ) और हैं ।

४४५४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वै० स० ६३ । च भण्डार ।

४४५५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वै० स० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार में और इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

४४५६ कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र स० २२ । आ० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७०६ । अ भण्डार ।

४४५७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वै० स० ११ । घ भण्डार ।

४४५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ फागुण बुदी ३ । वै० स० ५३२ । च भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वै० स० ५३१, ५३३ ) और हैं ।



## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४४६६. कलशाभियेक—आशाधर । पत्र स० ६ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अभियेक विधि । २० काल × । ले० काल स० १८३८ भाद्रवा बुदी १० । पूर्ण । वै० स० १०६ । ड मण्डार ।

विशेष—प० धम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रातल्लिपि की थी ।

४४६७ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० ३४ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ५८१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशान्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीयूनमधे नद्याम्माये वलात्कारणये सरस्वतीगन्धे श्रीकुदकुंदाचार्या-  
न्वये भ० पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिण्णचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तन्त्रिय्य  
श्रीमडनाचार्यधर्मचन्द्रदेवा तन्त्रिय्य मडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-  
शिष्यगि वाई नानी इद शास्त्र लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त ।

४४६८ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा ॥ । पत्र स० ७ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ४१६ । व्य मण्डार ।

४४६९ कलिकुण्डपूजा । पत्र स० ३ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ११८३ । अ मण्डार ।

४४७०. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० १०८ । ड मण्डार ।

४४७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वै० स० २५६ । ज मण्डार । और भी पूजायें हैं ।

४४७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० २२४ । म मण्डार ।

४४७३ कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५०३ । अ मण्डार ।

विशेष—शुचिकरगिरि, मानुषीत्तरगिरि तथा पुष्कराढ की पूजायें और हैं ।

४४७४ क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र स० २ से २८ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७४ भाद्रवा बुदी ६ । अपूर्ण । वै० स० १३३ । (क) म मण्डार ।

४४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल स० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० स० १२४ । छ  
मण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पाड्या चौधरी घाटसू वाले के लिए प० मनसुखजी ने गोष्ठी के मन्दिर मे प्रतिलिपि  
की थी ।



४४७६ प्रति सं ३। पत्र सं १२। कै काल सं १२१६ वेधात्क बुधी १२। कै सं ११। क  
अध्याय।

४४७७. क्षेत्रपाकपूजा—। पत्र सं १। का ११३×२ इव। अया-ईरुव। विपक-ईव  
अध्यायानुसार ईरव की पूजा। १ काल ×। कै काल सं १२ काकुल बुधी ७। पूर्ण। कै सं ७६। क  
अध्याय।

विशेष—ईवतरी की अयावाकरी दोन्ही अक्षयवत्त मे वं अयावात्त काकुल कै प्रतिमिति करवई की।  
४४७८. प्रति सं २। पत्र सं ४। कै काल सं १२१ ईव बुधी १। कै सं ४५२। क  
अध्याय।

विशेष—इठी अध्याय में २ प्रतिमं (कै सं ४२२ १२२), धीर है।

४४७९. प्रति सं ३। पत्र सं १३। कै काल ×। कै सं १२४। क अध्याय।

विशेष—२ प्रतिमं धीर है।

४४८०. अक्षयवत्तोद्यापनपूजा—सुमि अक्षयवत्तोद्यापन। पत्र सं ३। का १२×२ इव। अया-  
ईरुव। विपक-पूजा। १ काल ×। कै काल ×। पूर्ण। कै सं २११। क अध्याय।

४४८१. प्रति सं २। पत्र सं १। कै काल ×। कै सं ११। क अध्याय।

४४८२. प्रति सं ३। पत्र सं ४। कै काल सं १२२। कै सं ३२। क अध्याय।

४४८३. अक्षयवत्तोद्यापन—। पत्र सं १७ सं २१। का १२×२ इव। अया-ईरुव।  
विपक-पूजा। १ काल ×। कै काल ×। पूर्ण। कै सं २५। क अध्याय।

४४८४. अक्षयवत्तोद्यापनपूजा—म क्षेत्रपाकपूजा (नागौर पट्ट)। पत्र सं १। का १२×२  
इव। अया-ईरुव। विपक-पूजा। १ काल ×। कै काल सं १२४। पूर्ण। कै सं ३१। क अध्याय।

विशेष—अक्षयवत्तोद्यापन—

बुधसमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ।

सुमन्तुवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ॥११॥

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ।

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ॥२॥

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ।

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ॥३॥

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ।

अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे अक्षयवत्तोद्यापनमे ॥४॥

जीयादिद पूजन च विश्वभूषणवद्युव ।

तस्यानुसारतो ज्ञेय न च बुद्धिकृत त्वद् ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारक्षक्षेमेन्द्रकीर्तिविरचित गजपथमडलपूजनविधान समाप्तम् ॥

४४८५ गणधरचरणारविन्दपूजा । पत्र स० ३ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२१ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६ गणधरजयमाला । पत्र स० १ । आ० ८×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१०० । अ मण्डार ।

४४८७ गणधरधलयपूजा । पत्र स० ७ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १४२ । क मण्डार ।

४४८८ प्रति स० २ । पत्र स० २ से ७ । ले० काल × । वै० स० १३४ । क मण्डार ।

४४८९ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वै० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिधा ( वै० स० ११९, १२२ ) भी हैं ।

४४९० गणधरधलयपूजा । पत्र स० २२ । आ० ११×४ इ च । भाषा-विषय-पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ४२१ । ब मण्डार ।

४४९१ गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल स० १७५६ । ले० काल स० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वै० स० ९१२ । अ मण्डार ।

४४९२ प्रति स० २ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वै० स० ११९ । छ मण्डार ।

विशेष—एक प्रति भी है ।

४४९३ गिरिनारक्षेत्रपूजा । पत्र स० ४ । आ० ८×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १९६० । पूर्ण । वै० स० १४० । क मण्डार ।

४४९४ चतुर्दशीभ्रतपूजा ' ' । पत्र स० १३ । आ० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १५३ । क मण्डार ।

४४९५ चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनदि । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २९८ । ख मण्डार ।

४४२६ अतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ३१। मा ११×२ इव। भावा-संस्कृत। विपन-  
पूजा। र कल ×। वि कल ×। पूर्वा। वे सं ११। अ मन्वार।

विशेष—केवल प्रतिष्ठा वन नहीं है।

४४२७ प्रति स २। पत्र सं ४६। ले कल सं १६ २ बाबाह कुटी १। वे सं १३१। अ  
मन्वार।

४४२८ अतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ४६। मा ११×२ इव। भावा-संस्कृत। विपन-  
पूजा। र कल ×। वि कल ×। पूर्वा। वे सं १। अ मन्वार।

विशेष—इतनी वन मुद्राएँ ले पढ़ाई थी।

४४२९ प्रति स २। पत्र सं ४६। ले कल सं १६ १। वे सं १३१। अ मन्वार।

४४३० अतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ४४। मा १२×२ इव। भावा-संस्कृत। विपन-  
पूजा। र कल ×। ले कल ×। पूर्वा। वे सं ३२७। अ मन्वार।

विशेष—वही २ वनमन्त्रा किन्ती वे ली है।

४४३१ प्रति स २। पत्र सं ४७। ले कल सं १६ १। वे सं १३१। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार के एक घण्टे प्रति (वे सं १३३) पीर है।

४४३२ प्रति स ३। पत्र सं २। ले कल ×। वे सं ७६। अ मन्वार।

४४३३ अतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—सेवाराम साह। पत्र सं ४६। मा १२×७ इव। भावा-  
किन्ती। विपन-पूजा। र कल ३ १ २४ संघरि कुटी ६। ले कल सं १ २४ कालीम कुटी १२। पूर्वा। वे  
सं ७१३। अ मन्वार।

विशेष—आह्वान के प्रतिनिधि ली थी। यदि वे अपने पिता बखतराव के बनावे हुए मिथदासदेव  
पीर बुद्धिबिनास का फलक किना है।

इसी मन्वार के एक प्रति (वे सं ७१४) पीर है।

४४३४ प्रति स २। पत्र सं ६। ले कल ७ १६ २ बाबाह कुटी १। वे सं ७१४। अ  
मन्वार।

४४३५ प्रति स ३। पत्र सं ३१। ले कल सं १६४ अतुल कुटी ११। वे सं ४६। अ  
मन्वार।

४४३६ प्रति सं ४। पत्र सं ४६। ले कल सं १ १। वे सं २६। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार के २ प्रति (वे सं २१ २२) पीर है।

## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा "। पत्र स० २०। मा० १२×५ $\frac{1}{2}$  इ च। मापा-हिन्दी। विषय-पूजा।  
२० काल ×। ले० काल ×। मपूर्णा। वे० म० १२०। छ मण्डार।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थद्वारपूजा—वृन्दावन। पत्र स० १६। मा० ११×५ $\frac{1}{2}$  इ च। मापा-हिन्दी।  
विषय-पूजा। २० काल स० १८१६ कार्तिक सुदी ३। ले० काल स० १६१५ मापाठ सुदी ५। पूर्णा। वे० म० ७१६।  
अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिमा ( वे० स० ७२०, ६२७ ) भीर हैं।

४५०९ प्रति स० २। पत्र स० ४६। ले० काल ×। वे० स० १४५। क मण्डार।

४५१० प्रति स० ३। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० स० ४७। ख मण्डार।

४५११ प्रति स० ४। पत्र स० ४६। ले० काल स० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वे० स० २६। ग  
मण्डार।

४५१२ प्रति स० ५। पत्र स० ५५। ले० काल ×। मपूर्णा। वे० स० २५। घ मण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४५१३ प्रति स० ६। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६२७ सावन सुदी ३। वे० स० १६०। ङ  
मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिमा ( वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४ ) भीर है।

४५१४ प्रति स० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० स० ५४४। च मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिमा ( वे० स० ५८२, ५४३, ५४५ ) भीर हैं।

४५१५ प्रति स० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २०२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिमा ( वे० स० २०४ मे ३ प्रतिमा, २०५ ) भीर हैं।

४५१६ प्रति स० ९। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० स० २६१। ज  
मण्डार।

४५१७ प्रति स० १०। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १८६। झ मण्डार।

विशेष—सर्वमुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० १४५ ) भीर है।

४५१८ प्रति स० ११। पत्र स० ११५। ले० काल स० १६४६ सावन सुदी २। वे० स० ४४५। ञ  
मण्डार।

४५१९ प्रति स० १२। पत्र स० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० स० १७०६। ट मण्डार।

विशेष—द्वोटेलाल भांवसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४४३ ऋतुनिर्वाहिकीयह्वरपूजा—रामचन्द्र । वन नं १ । या ११×२१ दक्ष । माता ह्रीं  
 वर । विषय—पूजा । र वन नं १ २४ । नै वन ५ । पूर्ण । नै नं २११ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में २ प्रतिमां ( नै नं २१२ २ २ ) धीर है ।

४४६१ प्रति मा २ । वन नं २ । नै वन नं १ ३१ धामोज मुठी १ । नै नं २४ । म  
 मन्थार ।

विषय—मरारुण वावर्णिकाल के प्रतिनिधि की थी ।

इसी मन्थार के एक प्रति ( नै नं २२ ) धीर है ।

४४६३ प्रति मा ३ । वन नं २१ । नै वन नं ११२६ । नै नं १७ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में २ प्रतिमां ( नै नं १९ २४ ) धीर है ।

४४६३ प्रति मां ४ । वन नं २७ । नै वन ५ । नै नं १२७ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में २ प्रतिमां ( नै नं १३ १३२, ७ ७ ) धीर है ।

४४६४ प्रति मा ५ । वन नं ३६ । नै वन नं ११२६ । नै नं २४२ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां ( नै नं २४६ २४७ २४८ ) धीर है ।

४४६५ प्रति मां ६ । वन नं २४ । नै वन नं १ ११ । नै नं २१२ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में २ प्रतिमां ( नै नं २१७ २१ २२ / १ ) धीर है ।

४४६६ प्रति मां ७ । वन नं १६ । नै वन ५ । नै नं २ ७ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति ( नै नं २ ७ ) धीर है ।

४४६७ प्रति मां ८ । वन नं १ १ । नै वन नं १२६१ धामोज मुठी ४ । नै नं १ । म  
 मन्थार ।

विषय—खेटदाय टांभवा के प्रतिनिधि तथाई एवं मन्थार टांभवा के विहीराम वाह्य के मन्थार के धार  
 की । इसी मन्थार में २ प्रतिमां ( नै नं २ १ १ ) धीर है ।

४४६८ प्रति मा ९ । वन नं ७३ । नै वन नं १ २१ धामोज मुठी १२ । नै नं १४ । म  
 मन्थार ।

विषय—मन्थार वावर्णिक के तथाई मन्थार के प्रतिनिधि की थी ।

इसी मन्थार के २ प्रतिमां ( नै नं २१२, २११ ) धीर है ।

४४६९ ऋतुनिर्वाहिकीयह्वरपूजा—मेरीचम् पाटनी । वन नं १ । या ११२×२२ दक्ष । माता  
 ह्रीं । विषय—पूजा । र वन नं १ मन्थार मुठी १ । नै वन नं १२१ धामोज मुठी १२ । नै नं  
 १४४ । अ मन्थार ।

विशेष—मन्त में कवि का सक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान प्रमरचद

जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहाँ से प्रमरावती गये ।

४५३० चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरगलाल । पत्र स० ५१ । मा० ११×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२१ । अ मण्डार ।

४५३१ प्रति स० ७ । पत्र स० ६६ । ले० काल × । वे० स० १८३ । क मण्डार ।

विशेष—पूजा के मन्त में कवि का परिचय भी है ।

४५३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० २०३ । छ मण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वस्तुतावरलाल । पत्र स० ५४ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८५८ मगसिर बुदी ६ । ले० काल स० १६०१ वार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५५० । च मण्डार ।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४ प्रति स० ७ । पत्र स० ५ मे ६६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २०५ । छ मण्डार ।

४५३५ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द्र । पत्र स० ६७ । मा० ११३×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५५५ । च मण्डार ।

४५३६ प्रति स० २ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १६२८ वैशाख सुदी ५ । वे० स० ५५६ । च मण्डार ।

४५३७ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा । पत्र स० ७७ । मा० ११×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६२६ । अ मण्डार ।

४५३८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १५४ । छ मण्डार ।

४५३९ चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० १० । मा० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८ । अ मण्डार ।

४५४० चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द्र । पत्र स० ८ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१६ । अ मण्डार ।

विशेष—‘वतुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी में है ।

४५४१ चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । मा० ८३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१ । क मण्डार ।

४२४२. चन्दनपष्ठीशिवपूजा—। पत्र सं २१। मा १२×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

तीर्थह्वर चन्द्रमन की पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२२। अक्षर।

विशेष—मिना पूजा में घोर है— पञ्चमी इतोघातक नमस्कृत्याविधान।

४२४३. चन्दनपष्ठीशिवपूजा—। पत्र सं ३। मा १२×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

चन्द्रमन तीर्थह्वर पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २१२२। अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में एक प्रति (के सं २१२३) घोर है।

४२४४ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल ×। अर्धपूर्ण। के सं २२१। अक्षर।

४२४५ चन्दनपष्ठीशिवपूजा—। पत्र सं २। मा ११×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

चन्द्रमन तीर्थह्वर पूजा। र काल ×। ले काल ×। अर्धपूर्ण। के सं २२७। अक्षर।

विशेष—इस पत्र नहीं है।

४२४६ चन्द्रमनशिवपूजा—उमचन्द्र। पत्र सं ७। मा १२×२२ इंच। माता—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। ले काल सं १२७२ मासोज बुटी ४। पूर्ण। के सं ४२। अक्षर।

विशेष—उपानुक्त बावनीवाल बहुधा वाले में प्रतिनिधि की थी।

४२४७ चन्द्रमनशिवपूजा—वेवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं २। मा ११×२२ इंच। माता संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। ले काल सं १२२। पूर्ण। के सं २७६। अक्षर।

४२४८ प्रति सं २। पत्र सं २। ले काल सं १२३। के सं ४३। अक्षर।

विशेष—मातेरे सं १२७९ में उमचन्द्र की किसी हुई प्रति में प्रतिनिधि की गई थी।

४२४९ चन्द्रमनशिवपूजा—। पत्र सं २। मा ७×२२ इंच। माता—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। ले काल सं १९२७ वैशाल बुटी १३। पूर्ण। के सं ६२। अक्षर।

४२५० कारिन्द्रुप्रतिविधान—बी मूषण। पत्र सं १७। मा १२×२२ इंच। माता—संस्कृत।

विषय—मुनि बीजा के समय होने वाले विधान एवं पूजा। र काल ×। ले काल सं १। पत्र बुटी १। पूर्ण।

के सं ४२२। अक्षर।

विशेष—इसका दुसरा नाम बाघुती पीठीकाणठ पूजा विधान की है।

४२५१ प्रति सं १। पत्र सं २। ले काल ×। के सं १२२। अक्षर।

विशेष—लेखक अज्ञान नहीं है।

४५५० चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिव्रत । पत्र स० ८४ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १६३७ वैशाख सुदी १५ ।  
पूर्णा । वे० स० १२३ । ख भण्डार ।

४५५३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र स० ६६ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्णा ।  
वे० स० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउप तिया शुक्रवासरे । घडमोलास्थाने भु डलदेशे श्रीधर्मनाथ  
चैत्यालये श्रीमूलसधे सरम्बतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्रा तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्रा  
सदान्नाये ब्रह्म श्री ठाकरमी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन  
बारभे चौत्रीमु स्वहस्तेन लिखित ।

४५५४ चिन्तामणिपूजा ( वृद्धत् )—विद्याभूषण सूरि । पत्र स० ११ । मा० ६३×४३ इ च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४५५५ चिन्तामणिपारश्वनाथपूजा ( वृद्धत् )—शुभचन्द्र । पत्र स० १० । मा० ११३×५ इ च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५७४ । अ भण्डार ।

४५५६ प्रति स- ७ । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १६६१ पीप बुदी ११ । वे० सं० ४१७ । ख  
भण्डार ।

४५५७ चिन्तामणिपारश्वनाथपूजा । पत्र स० ३ । मा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ११८४ । अ भण्डार ।

४५५८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें गौर हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलि कुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एव पर्यावतीपूजा ।

४५५९ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

४५६० चिन्तामणिपारश्वनाथपूजा । पत्र स० ११ । मा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५८३ । ख भण्डार ।



४२६१ विष्णुमण्डिपार्ष्णमात्रपूजा—। पत्र सं २। या ११ $\times$ १५ इत् । माता-दक्षिण ।

विषय-पूजा-१ र काल  $\times$  १। नै काल  $\times$  १। पूर्ण। वै सं १२१४। अ मन्थार ।

विशेष—दक्षिणदिशि एवं स्तोत्र भी विद्या है ।

इसी मन्थार में एक प्रति ( वै सं १४ ) भी है ।

४२६२ श्रीपद्मपूजा—। पत्र सं ११। या १  $\times$  ७ इत् । माता-मंजुषा । विषय-पूजा-१

काल  $\times$  १। नै काल  $\times$  १। पूर्ण। वै सं २३१। अ मन्थार ।

विशेष—दक्षिणदिशि से लेकर अर्धतन्त्र तक पुजार्थ है ।

४२६३ श्रीसठशक्तिपूजा—स्वरूपपद्म। पत्र सं ३१। या ११  $\times$  २ इत् । माता-शिवी ।

विषय-१४ प्रकार की शक्ति वारण करने वाली मुनिमौली पूजा-१ काल सं १११ सायन मुनी ७। नै काल सं ११२१। पूर्ण। वै सं ११४। अ मन्थार ।

विशेष—इसका दुबारा नाम दुहदुहर्षावलि पूजा भी है ।

इसी मन्थार में ४ प्रति ( वै सं ७११ ७१७ ७१ ७१७ ) भी है ।

४२६४ प्रति सं २। पत्र सं १। नै काल सं १११। वै सं १७। अ मन्थार ।

४२६५ प्रति सं ३। पत्र सं १२। नै काल सं ११२२। वै सं २१। अ मन्थार ।

४२६६ प्रति सं ४। पत्र सं ११। नै काल सं ११२३। वै सं ३१। अ मन्थार ।

४२६७ प्रति सं ५। पत्र सं १२। नै काल  $\times$  १। वै सं ११३। अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( वै सं ११४ ) भी है ।

४२६८ प्रति सं ६। पत्र सं १। नै काल  $\times$  १। वै सं ७१४। अ मन्थार ।

४२६९ प्रति सं ७। पत्र सं १२। नै काल सं ११२४। वै सं २१५। अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रति ( वै सं ११२ ११५/१ ) भी है ।

४२७० प्रति सं ८। पत्र सं १२। नै काल  $\times$  १। वै सं २१६। अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रति ( वै सं २१२/२ २१२ ) भी है ।

४२७१ प्रति सं ९। पत्र सं १२। नै काल  $\times$  १। वै सं २१७। अ मन्थार ।

४२७२ प्रति सं १०। पत्र सं १२। नै काल  $\times$  १। वै सं ११३। अ मन्थार ।

४२७३. क्षातिनिवारणविधि—। पत्र सं ३। या ११  $\times$  ४ इत् । माता-शिवी । विषय-

विषय-१ र काल  $\times$  १। नै काल  $\times$  १। पूर्ण। वै सं १२७। अ मन्थार ।

## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान माहित्य ]

४५७४ जम्बूद्वीपपूजा—पाडे जिनदास । पत्र स० १६ । मा० १०३×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२२ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १८३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति मूकप्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है । प० चोखचन्द ने माहचन्द्र से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५ प्रति स० २ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १८ । वे० स० १८ । च भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भाषासा फिनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६ जम्बूस्वामीपूजा । पत्र स० १० । मा० ८×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रन्तिम वेवली जम्बूस्वामी की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७ जयमाल—रायचन्द्र । पत्र स० १ । मा० ८३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १८५५ फागुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८ जलहरतेलाविधान । पत्र स० ४ । मा० ११३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेल (घृत) की विधि है । इसका दूसरा नाम फरतेला घन भी है ।

४५७९ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

४५८० जलयात्रापूजाविधान । पत्र स० २ । मा० ११×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६३ । ज भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१ जलयात्राविधान—महा प० आशाधर । पत्र स० ८ । मा० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-जमाभिषेक के लिए जल लाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६६ । अ भण्डार ।

४५८२ जलयात्रा ( तीर्थोदकादानविधान ) । पत्र स० २ । मा० ११×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के यत्र भी दिये हैं ।

४५८३ जिनगुणसप्तपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ६ । मा० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२ । छ भण्डार ।

४४५४ प्रति स० २। वन सं १। ले काल सं ११३। के सं १७१। अ अकार।

विशेष—वीपति बोधी के प्रतिविधि भी भी।

४४५५. त्रिनगुणसप्तपतिपूजा—। वन सं ११। मा १२×२२ इव। माता-संस्कृत। विपन

पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ११७०। अ अकार।

विशेष—२वां वन नहीं है।

४४५६ प्रति स २। वन सं ४। ले काल सं ११२१। के सं १११। अ अकार।

४४५७ त्रिनगुणसप्तपतिपूजा—। वन सं २। मा ७×१२ इव। माता-संस्कृत अक्षर।

विपन-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ११२। अ अकार।

४४५८ त्रिनगुणसप्तपतिपूजा—। वन सं १४। मा १२×२२ इव। माता-संस्कृत। विपन-

पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २१। अ अकार।

४४५९. त्रिनगुणसप्तपतिपूजा—। वन सं २। मा १ ×२ इव। माता संस्कृत। विपन-

पूजा र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ४५२। अ अकार।

विशेष—पूजा के वन २ क्या भी है।

४४६ त्रिनगुणसप्तपति (प्रतिष्ठासार)—सहा पं आराधन। वन सं १२। मा १ ×४

इव। माता-संस्कृत। विपन दुर्ति कौटी प्रतिष्ठादि विधानों की विधि। र काल सं १२५२ आर्योप बुटी । ले काल सं १४२२ आर्य बुटी (वन सं ११६) पूर्ण। के सं २। अ अकार।

विशेष—अक्षरि विपन अकार है—

संवात् १४२२ वाके ११६ वन माप परि कुलवादे— (अपूर्ण)

४४६१ प्रति स २। वन सं ७७। ले काल सं ११११। के सं ४२६। अ अकार।

विशेष—अक्षरि- संवात् ११११ वर्षे—।

४४६२ प्रति सं ३। वन सं १२। ले काल सं १५५२ आर्योप बुटी १३। के सं १७। अ

अकार

विशेष—बहुत से अक्षरि के अक्षरकाल में प्रतिविधि हुई।

विशेष प्रमाण—

वीपुलकिपु अक्षरिणी वन्धे ववात्पण्डे प्रविष्टे ।

त्रिगुणो भीमवलय केरे बुधविद्याया विपने विधीने ।

श्रीकुदकुदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा ।  
 दुर्बादिबागुन्मयनैकसज्ज विद्यामुनदीश्वरसूरिमुख्य ॥  
 तदन्वये योऽमरकीर्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभयायु ।  
 तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगमाया ॥  
 पुर्यां धुभाया पट्टपदाशुवत्या सुवर्णिकाणाप्रत नीचकार ॥

४५६३ प्रति स० ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६५६ भाद्रवा सुदी १२ । वे० स० २२३ ।  
 ऋ भण्डार ।

विशेष—बगाल मे भक्तवरा नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल मे आचार्य कुदकुन्द के बला-  
 त्कारण सरस्वतीगच्छ मे भट्टारक पद्मनादि के शिष्य न० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की भाम्नाय मे खडेल-  
 वाल बशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साहू श्री पट्टिराज बलू, फरना, कपूरा, नाथू भादि मे से कपूरा ने षोडशकारण व्रतीधा-  
 वन में प० श्री जयवत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति स० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० स० ४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् क्षडिल्लवशोत्य केल्हणोन्यासवित्तर ।  
 लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रथम पुस्तकं ॥२०॥

४५६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६६२ भाद्रवा बुदी २ । वे० स० ४२५ । अ  
 भण्डार ।

विशेष—सत्रत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भोमे मद्येह राजपुरनगरवास्तव्य भाम्यासरनागरजाती  
 पचोली त्यादगाभाट्टमुख नरसिंहेन निखित ।

ऋ भण्डार मे एक मपूर्णा प्रति ( वे० सं० २०७ ) अ भण्डार मे २ मपूर्णा प्रतिया ( वे० स० १२०,  
 १०५ ) तथा ऋ भण्डार मे एक मपूर्णा प्रति ( वे० स० २०७ ) भीर है ।

४५६६ जिनयक्षविधान । पत्र स० १ । मा० १०×४३ इ अ । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७ जिनस्नपन ( अभिषेक पाठ ) । पत्र स० १४ । मा० ६३×४ इ अ । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८ जिनसहिता । पत्र स० ४६ । मा० १३×८३ इ अ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-  
 ष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । छ भण्डार ।

४५३. विनसंहिता—मन्त्रवाहु। पत्र सं ११। मा ११×३३ इच। भाषा—बसुह। विषय—  
पूजा प्रतिष्ठादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२६। क मन्थार।

४६ विनसंहिता—म एकसहि। पत्र सं ८५। मा ११×२ इच। भाषा—बसुह। विषय—  
पूजा प्रतिष्ठादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल सं १२३० पंच मुठी ११। पूर्ण। के सं १२७। क मन्थार।

विशेष—३७ ३८ १ २ तथा ३३ पत्र बाली हैं।

४६ १ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल सं १ २३। के सं १२८। क मन्थार।

४६ २. प्रति सं ३। पत्र सं १११। ले काल ×। के सं ३२। क मन्थार।

४६०३ विनसंहिता—। पत्र सं १ २। मा १२×६ इच। भाषा—बसुह। विषय—पूजा प्रति-  
ष्ठादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल सं १ ३६ भाषा मुठी २। पूर्ण। के सं १२९।  
क मन्थार।

विशेष—काल का दूसरा नाम पूजाकार भी है। यह एक संघ काल है जिसका विषय वीरसेव विषयेन  
पुत्रप्राप्त तथा कुलव्यादि धातारों के कर्मों से संबंध विद्या तथा है। ३२ पूर्णों के प्रतिरिक्त १ पत्रों में काल के नाम  
निरा ४३ पत्र दे रखे हैं।

४६ ४ विनसंहिता नाम पूजा—धर्मसूत्र। पत्र सं १२६। मा १ × ५ इच। भाषा—बसुह।  
विषय—पूजा। र काल ×। ले काल सं १२ ९ भाषा मुठी २। पूर्ण। के सं ४३। क मन्थार।

विशेष—विद्यमन्त्रालय से पूजाकारों के फलार्थ हीरालालजी ऐश्वर्य तथा पत्नीवर बालों के विद्या  
काथार के प्रतिबिम्ब करवाई थी।

प्रतिष्ठान प्रवर्तित— का पुस्तक लिखाई विद्या काथारि के कीटकिराण्ये श्रीमानसिंहजी वत् संवर नटेशिंहजी मुलगा ऐश-  
बालसु वीरजी विमिक्त श्रीगुरुनाथ जी संकलनी संकली जलन करली। श्री जयमहीरजी का कथार के काल लिनी  
रदोगा पत्रपुत्रजी बाबी बरक का कीट पत्रली व १२) लालनी नटोपलालजी भाइ क्वाली उद्यम मु हुनी।

४६ ५ प्रति सं २। पत्र सं ४७। ले काल ×। के सं १२५। क मन्थार।

४६ ६ विनसंहिता नाम पूजा—स्वरूपचन्द्रविद्याका। पत्र सं १२६। मा ११×२ इच। भाषा—  
हिन्दी। विषय—पूजा। र काल सं १२१६ भाषा मुठी २। ले काल ×। पूर्ण। के सं ४३। क मन्थार।

४६ ७. विनसंहिता नाम पूजा—चैतन्यकुरादिना। पत्र सं १२६। मा १२×२ इच। भाषा—  
हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ×। ले काल सं १२३६ भाषा मुठी २। पूर्ण। के सं ४३। क मन्थार।

४६०८ जिनसहस्रनामपूजा । पत्र सं० १८ । मा० १३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ मण्डार ।

४६०९ प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । अ मण्डार ।

४६१० विनाभिषेकनिर्याय । पत्र सं० १० । मा० १२×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—भूमिपक

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें अक्षर की हिन्दी भाषा है ।

४६११ जैनप्रतिष्ठापाठ । पत्र सं० २ से ३५ । मा० ११३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

४६१२ जैनाववाहपद्धति । पत्र सं० ३४ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह

विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क मण्डार ।

विशेष—प्राचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सम्यक् किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । अ मण्डार ।

४६१४ ज्ञानपत्रविरातिकाप्रबोधपत्र—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । मा० १०३×५ इ च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६ । ले० काल सं० १८६३ भाषाठ बुदी ५ । पूर्ण ।

वे० सं० १०२ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में कन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांढ्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा । पत्र सं० ७ । मा० ११×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७२३ ) भी है ।

४६१६ ज्येष्ठजिनवरपूजा । पत्र सं० १२ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । क मण्डार ।

४६१७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६३ । अ मण्डार ।

४६१८ ज्येष्ठजिनवरपूजा । पत्र सं० १ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० भाषाठ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वान् खुशाल ने गोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । खरबो सुरेन्द्र-कीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. खमोकारपैवीसीसूत्रा—अक्षय्याम । पत्र तं ३ । वा १२×२३ इव । वाता-संगुह ।  
 विधान—खमोकार मन्त्र पूजा । १ कम्ब × । १ काल × । पूर्ण । वै तं ४६६ । क मन्त्र ।

विलेप—महात्म्या अर्घ्यद्वय के बालनपाल में एक रचना की गई थी ।

इसी मन्त्र ने एक प्रति ( वै तं ३७ ) दीर है ।

४६१७ प्रति तं २ । पत्र तं ३ । वै काल तं १७६२ प्र घाटीय कुटी १ । वै तं १२४ । क  
 मन्त्र ।

४६१८ खमोकारपैवीसीसूत्रविधान—आ श्री कनककीर्ति । पत्र क २ । वा १२×२ इव ।  
 वाता-संगुह । विधान—पूजा एवं विधान । १ कम्ब × । वै कम्ब तं १२२ । पूर्ण । वै तं २१९ । क  
 मन्त्र ।

विलेप—इ मन्त्री कनकवीरव्य के प्रतिविधि की थी ।

४६१९ प्रति स २ । पत्र तं २ । वै कम्ब × । पूर्ण । वै तं १७४ । क मन्त्र ।

४६२० वरुणार्चसूत्रदशाम्बापूजा—दयावन्तु । पत्र तं १ । वा ११×४ इव । वाता-संगुह ।  
 विधान—पूजा । १ काल × । वै कम्ब × । पूर्ण । वै तं २९ । क मन्त्र ।

विलेप—इसी मन्त्र में एक प्रति वै तं २९१ । दीर है ।

४६२१ वरुणार्चसूत्रदशाम्बापूजा— । पत्र तं २ । वा ११ × २ । वाता-संगुह । विधान—  
 पूजा । १ काल × । वै कम्ब × । पूर्ण । वै तं २९२ । क मन्त्र ।

विलेप—कैवल्य १ में मन्त्र की पूजा है ।

४६२२. तीनश्रीसीसूत्रा— । पत्र तं ३ । वा १२×२ इव । वाता-संगुह । विधान—  
 अथिन्तु तथा वर्तमान काल के शीतलेशी तीर्थक्षेत्रों की पूजा । १ काल × । वै काल × । पूर्ण । वै तं २४  
 क मन्त्र ।

४६२३ तीनश्रीसीसूत्रसमुच्चयपूजा— । पत्र तं २ । वा ११×२ इव । वाता-संगुह ।  
 विधान—पूजा । १ काल × । वै कम्ब × । पूर्ण । वै तं १ । त मन्त्र ।

४६२४ तीनश्रीसीसूत्रा—नेमीचन्द्र वाटनी । पत्र तं ६७ । वा ११×२ इव । वाता  
 द्विती । विधान—पूजा । १ काल तं १ २४ कार्तिक कुटी १४ । वै कम्ब तं १२२ वाताय कुटी ७ । पूर्ण । वै  
 तं २७२ । क मन्त्र ।

४६२५ तीनश्रीसीसूत्रा— । पत्र तं ३७ । वा ११×२ इव वाता-द्विती । विधान—पूजा  
 १ काल तं १५ २ । वै काल तं १ २ । पूर्ण । वै तं २७३ । क मन्त्र ।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र स० २० । भा० ११६×४६ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५ । छ भण्डार ।

४६३० तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ४१० । भा० १२×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल स० १८२८ । ले० काल स० १९७३ । पूर्ण । वे० स० २७७ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७।।।-) लगे थे ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० स० ५७६, ५७७ ) भी हैं ।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ३५० । ले० काल × । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

४६३२ तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र स० ८५१ । भा० १३×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एव त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३ प्रति स० २ । पत्र स० १०८८ । ले० काल × । वे० स० २७० । क भण्डार ।

४६३४ प्रति स० ३ । पत्र स० ९८७ । ले० काल स० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० २२६ । छ

भण्डार ।

विशेष—दो बेटों में है ।

४६३५ तीसचौबीसीनाम" । पत्र स० ६ । भा० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० ५७८ । च भण्डार ।

४६३६ तीसचौबीसीपूजा—घुन्दावन । पत्र स० ११६ । भा० १०३×७ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८० । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७ प्रति स० २ । पत्र स० १२२ । ले० काल स० १९०१ भाषा-सुदी २ । वे० स० ५७ । म

भण्डार ।

४६३८ तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र स० ६ । भा० ८×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल स० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—मठारद्वीप मन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ५७९ ) भी है ।

४६३९ तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० १५४ । भा० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १९२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७३ । ख भण्डार ।



४६४ तरद्वीपतूजा—म० विद्यमूषण । वन म १२ । वा ११×२ इत्थ । वाता-वाता । विषय-वैत वायव्यलुनार १३ द्वीपों की तूजा । र वाज × । मे वाज म १ २३० वायव्य मुदी २ । के म ११० । अ मथार ।

विशेष—विनीतामयी पाठ्या के मथार व द्वाए मे लिखवाई की ।

४६४१ तैरद्वीपतूजा— । वन म ३४ । वा ११×१५ इत्थ । वाता-मंलुत्थ । विषय-वैत वायव्यलुनार १३ द्वीपों की तूजा । र वाज × । मे वाज म १ २१ । पूर्ण । के म ४२ । अ मथार ।

विशेष—इसी मथार के एक पूर्ण प्रति (के म २ ) धोर है ।

४६४२. तैरद्वीपतूजा— । वन म २ । वा ११×२ इत्थ । वाता-मंलुत्थ । विषय-तूजा । र वाज × । मे वाज म १२२४ । पूर्ण । के म २३२ । अ मथार ।

४६४३ तैरद्वीपतूजा—आश्रमोत्थ । वन म १३२ । वा १२×० इत्थ । वाता-द्विपी । विषय-तूजा । र वाज म १ २० वायव्य मुदी २२ । मे वाज म १ २२२ वायव्य मुदी ३ । पूर्ण । के म १ १ । अ मथार ।

विशेष—श्रीविष्णुनाम के प्रतिनिधि की थी ।

४६४४ तरद्वीपतूजा— । वन म १०२ । वा ११×० इत्थ । वाता-द्विपी । विषय-तूजा । र वाज × । मे वाज × । के म ३३ । अ मथार ।

४६४५ तैरद्वीपतूजा— । वन म १२४ । वा ११×० इत्थ । वाता-द्विपी । विषय-तूजा । र वाज × । मे वाज म १२४६ वायव्य मुदी ४ । पूर्ण । के म १२१ । अ मथार ।

४६४६ तरद्वीपतूजाविभाम— । वन म २ । वा ११×२ इत्थ । वाता-मंलुत्थ । विषय-तूजा । र वाज × । मे वाज × । पूर्ण । के म १ १२ । अ मथार ।

४६४७ त्रिधावधौषीमीतूजा—त्रिभुवमथार । वन म १३ । वा ११×२ इत्थ । वाता-मंलुत्थ । विषय-मीना वन के ३ के वने में तूजा की तूजा । र वाज × । मे वाज × । पूर्ण । के म ३२२ । अ मथार ।

विशेष—विष्णुनाम के वेदा के प्रति प्रति की थी ।

४६४८ त्रिधावधौषीमीतूजा— । वन म २ । वा १ १×२ इत्थ । वाता-मंलुत्थ । विषय-तूजा । र वाज × । मे वाज × । पूर्ण । के म ३ । अ मथार ।

४६४९ प्रति मं ३ । वन म १० । मे वाज म १ १०४ वायव्य मुदी १ । के म ३२२ । अ मथार ।

विशेष—वचना के वाचार्थ पूर्ण वन के वने वन विनों के वाज के प्रति प्रति की थी ।

४६५० प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६६१ भादवा सुदी ३ । वे० स० २२२ । छ  
भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती मजिका की पुस्तक है ।

४६५१ प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० स० ४११ । व्य  
भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० १७५ ) भी है ।

४६५२ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा " । पत्र स० १६ । भा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्तमान के त्रैसठ मालाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४ त्रिलोकक्षेत्रपूजा" । पत्र स० ५१ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५ त्रिलोकस्थजिनालयपूजा । पत्र स० ६ । भा० ११×७<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६ त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र स० ३६ । भा० १३<sup>३</sup>×७ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० स० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७ त्रिलोकसारपूजा । पत्र स० २६० । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल स० १६३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८ त्रेपनक्रियापूजा । पत्र स० ६ । भा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० स० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९ त्रेपनक्रियाव्रतपूजा" । पत्र स० ५ । भा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल स० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६० त्रैलोक्यसारपूजा—सुमत्तिसागर । पत्र स० १७२ । भा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८२६ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१ त्रैलोक्यसामहाय्या—व न १४३। वा १ × २३ द न। माला—हरद्वय। विषम-पुत्रा। र नाल ×। के काल ११११। पुर्वा। के ७१। अ मन्वार।

४६६२. ब्रह्मसंहयजपमात्र—व रश्मू। वा १ × २३ द न। माला—मयत्र ४। विषम-वर्ग के द्वा-वैरी की पूजा। र नाल ×। के काल ×। पूर्वा। के १६। अ मन्वार।

विशेष—ब्रह्मव में पर्याप्ततर विना हुआ है।

४६६३ प्रति स २। व न १। के नाल ११७१२। के ११। अ मन्वार।

विशेष—ब्रह्मव के सामान्य टीका की हुई है। इसी मन्वार में एक प्रति (के १२) भी है।

४६६४ प्रति स ३। व न ११। के नाल ×। के २१७। अ मन्वार।

विशेष—ब्रह्मव में पर्याप्तवारी अथ विशेष हुआ है। इसी मन्वार में एक प्रति (के २१६) भी है।

४६६५ प्रति स ४। व न ७। के नाल ११। के ४४३। अ मन्वार।

विशेष—श्रीश्री कुचलीपत्र के लोक में प्रतिष्ठित की थी।

इसी मन्वार में २ प्रतिष्ठा (के १२, ३/१) भी है।

४६६६. प्रति स ५। व न ११। के नाल ×। के २१४। अ मन्वार।

विशेष—ब्रह्मव में अनेक विशेष हुए हैं। इसी मन्वार में एक अष्टम प्रति (के २१२) भी है।

४६६७ प्रति स ६। व न ११। के नाल ×। के १२६। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में एक प्रति (के १३) भी है।

४६६८. प्रति स ७। व न ११। के नाल ११७१२ अष्टम पुत्री १२। के १२६। अ मन्वार।

४६६९. प्रति स ८। व न ११। के नाल ११२०। के ७३। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में २ प्रतिष्ठा (के ११, २२) भी है।

४६७० प्रति स ९। व न ४। के नाल ११७१२। के १७। अ मन्वार।

विशेष—अति ब्रह्मव टीका बहिष्त है। इसी मन्वार में २ प्रतिष्ठा (के १६, २३) भी है।

४६७१ प्रति स १०। व न ११। के नाल ×। के १७७६। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में ३ प्रतिष्ठा (के ११, १७, १७२४) भी है।

४६७२. ब्रह्मसंहयजपमात्र—प माघ शर्मा। व न १। वा १२ × २३ द न। माला—माला।

विषम-पुत्रा। र नाल ×। के नाल ११११ अष्टम पुत्री ११। अष्टम पुत्री ११। के १२७। अ मन्वार।

विशेष—ब्रह्मव के टीका की हुई है। इसी मन्वार में एक प्रति (के ४४१) भी है।

## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य ]

४६७३ प्रति स० २ । पत्र सं० २ । ले० काल स० १७३४ पोष सुदी १२ । वे० स० ३०२ । क

भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के दिव्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३०१ ) भी है ।

४६७४ प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १६१२ । वे० स० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोवनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५ प्रति स० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १८६२ भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६ प्रति स० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७ प्रति स० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ४८१ ) भी है ।

४६७८ प्रति स० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० स० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां ( वे० स० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४ ) भी हैं ।

४६७९ दशलक्षणजयमाल - । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २६३ । ठ भण्डार ।

४६८० प्रति स० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । ड भण्डार ।

४६८१ प्रति स० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० स० ७२६ । भ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० स० २६७, २६८ ) भी हैं ।

४६८३ प्रति स० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० स० १५३ । च भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौधमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० स० १४२, १४४ ) भी हैं ।

४६८४ दशलक्षणजयमाल । पत्र सं० ५ । आ० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११५ । अ भण्डार ।

४६८८. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—। पत्र नं ६। पा १२४२ इव। भाषा—हिन्दी। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल न १७३६ मन्त्रोक्त सुदी ७। पूर्वा। मे न ४। अक्षरम्बर।

विलेख—बावीर के प्रतिनिधि हुई थी।

४६८९. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—। पत्र नं ७। पा ११४३ इव। भाषा—हिन्दी। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल ×। पूर्वा। मे सं ७४२। अक्षरम्बर।

४६९०. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—आमन्त्रेव। पत्र नं ६। पा ११४३ इव। भाषा—बोहट। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल ×। पूर्वा। मे सं १७२। अक्षरम्बर।

४६९१. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—आमन्त्रेव। पत्र नं १३। पा १२४३ इव। भाषा—मल्लट। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल ×। पूर्वा। मे सं २६६। अक्षरम्बर।

४६९२. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—। पत्र नं २। पा ११४३ इव। भाषा—मल्लट। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल ×। पूर्वा। मे सं १६७। अक्षरम्बर।

विलेख—इसी अक्षर के एक प्रति (मे सं १२४) कीर है।

४६९३. प्रति सं २। पत्र नं १। मे कल न १७४७ मन्त्रोक्त सुदी ४। मे न ११। अक्षरम्बर।

विलेख—झांगलैर में विद्यमान दो वीर विवर के वाचनार्थ प्रतिनिधि की थी।

इसी अक्षर में एक प्रति (मे सं २६५) कीर है।

४६९४. प्रति सं ३। पत्र नं ६। मे कल ×। मे सं १७३२। अक्षरम्बर।

विलेख—इसी अक्षर में एक प्रति (मे सं १७६१) कीर है।

४६९५. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—। पत्र नं १७। पा ११४३ इव। भाषा—मल्लट। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल सं १६६। पूर्वा। मे सं १३२। अक्षरम्बर।

विलेख—प्रति संस्कृत टीका लक्षित है।

४६९६. दशरूपसूत्रमन्त्रम्—आमन्त्रेव। पत्र नं १। पा १४३ इव। भाषा—हिन्दी। विष्णु-पूजा। र कल ×। मे कल ×। पूर्वा। मे सं ७२२। अक्षरम्बर।

विलेख—पत्र नं ७ तक पत्रमन्त्रोक्त की हुई है।

४६९७. प्रति सं २। पत्र नं ४। मे कल सं १६३७ मन्त्रोक्त सुदी २। मे सं १। अक्षरम्बर।

४६९८. प्रति सं ३। पत्र नं २। मे कल ×। मे सं १। अक्षरम्बर।

४६६६ दशलक्षणपूजा । पत्र म० ३५ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
२० काल × । ले० काल स० १९५४ । पूर्ण । वे० स० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० म० ५८६ ) और है ।

४६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १९३७ । वे० म० ३१७ । च भण्डार ।

४६६८ दशलक्षणपूजा । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना दानतराय वृत्त पूजा की है मृष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६६९ दशलक्षणमण्डलपूजा । पत्र म० ६३ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । २० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३०३ । क भण्डार ।

४७०० प्रति स० २ । पत्र म० ५२ । ले० काल × । वे० स० ३०१ । ङ भण्डार ।

४७०१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १९३७ भाद्रपद सुदी १० । वे० म० ३०० । ङ  
भण्डार ।

४७०२ दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिभागर । पत्र स० २२ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६६ भाद्रपद सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७९६ । अ भण्डार ।

४७०३ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८२९ । वे० स० ४९८ । अ भण्डार ।

४७०४ प्रति स० ३ । पत्र म० १३ । ले० काल स० १८७९ भाद्रपद सुदी ५ । वे० स० १४९ । च  
भण्डार ।

विशेष—सदामुख वाक्लीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५ दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र म० १९ - २५ । आ० १०३×५ इ च ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । ङ भण्डार ।

४७०६ दशलक्षणव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र म० १४ । आ० १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२६ । ङ भण्डार ।

४७०७ प्रति स० २ । पत्र स० १९ । ले० काल × । वे० स० ७५ । ङ भण्डार ।

४७०८ दशलक्षणव्रतोद्यापन । पत्र स० ४३ । आ० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ७० । ङ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४००३. ब्राह्मणपूजा—पत्र सं १ । मा १२२×४ हव । माता-हिन्दी । विध-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा इती कृत में धीर है ।

४००४. वैष्णवपूजा—इन्द्रनमि घोषीन्द्र । पत्र सं २ । मा १३×२ हव । माता-संस्कृत । विध-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १९ । अ मन्थार ।

४००५. वैष्णवपूजा— । पत्र सं ११ । मा २२×४२ हव । माता-संस्कृत । विध-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२३ । अ मन्थार ।

४००६. प्रति सं २ । पत्र सं ४ से १२ । ले काल × । अपूर्ण । के सं ४६ । अ मन्थार ।

४००७. प्रति सं ३ । पत्र सं २ । ले काल × । के सं ३३ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं ३६ ) धीर है ।

४००८. प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । ले काल × । के सं १९१ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा ( के सं १९२ १९३ ) धीर है ।

४००९. प्रति सं ५ । पत्र सं ६ । ले काल सं १३ पीठ कुटी व । के सं १९९ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा ( के सं १९६, १९७ ) धीर है ।

४०१०. प्रति सं ६ । पत्र सं ६ । ले काल सं १६३ काल कुटी १२ । के सं २१४ । अ मन्थार ।

विशेष—हीरमन्थार मन्थार में प्रतिष्ठा की थी ।

४०११. वैष्णवपूजा— । पत्र सं १ । मा १३×२२ हव । माता-संस्कृत । विध-पूजा । र काल × । ले काल सं १९ । पूर्ण । के सं ११६ । अ मन्थार ।

४०१२. वैष्णवपूजा—मन्थार मन्थार । पत्र सं १७ । मा १२×४ हव । माता-हिन्दी मन्थार । विध-पूजा । र काल × । ले काल सं १५३ काल कुटी व । पूर्ण । के सं ११६ । अ मन्थार ।

४०१३. वैष्णवपूजा— । पत्र सं १२ । मा १३×२ हव । माता-संस्कृत । विध-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी कृत में एक प्रति धीर है ।

४०१४. ब्राह्मणपूजा—पत्र सं ७ । मा ११×४ हव । माता-संस्कृत । विध-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ३५४ । अ मन्थार ।

४७०१ द्वादशप्रतीचापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । पा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल स० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७०२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । अ भण्डार ।

४७०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

४७०४ द्वादशप्रतीचापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । पा० ७३×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । सं० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७०५ द्वादशप्रतीचापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । पा० १०३×६ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

४७०६ द्वादशप्रतीचापन । पत्र सं० ५ । पा० ११३/५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । सं० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

विशेष—भार्पनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०७ द्वादशानपूजा—खालूराम । पत्र सं० १६ । पा० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । सं० काल सं० १६३० माघ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मानान चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०८ द्वादशानपूजा । पत्र सं० ८ । पा० ११३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी नेटन मे २ प्रतिभा मीर हैं ।

४७०९ द्वादशानपूजा । पत्र सं० ६ । पा० १२×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ३२७ ) मीर है ।

४७१० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७११ धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । पा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । सं० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फागुण सुदी १० । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मालाल जीवनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।



४०३३ धर्मचक्रपूजा—साधु रक्षामङ्ग । पत्र नं १ । पा ११×२५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजा । र काल × । ले काल नं १ । पौन सुवी ३ । पूर्ण । वै नं ३२ । अ मन्थार ।

विशेष—ये कुमारकन्द के भावराज पञ्चाशी के मन्दिर के प्रतिमिति की थी ।

४०३४ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । पा ११×२५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं ३२ । अ मन्थार ।

४०३५ भवकारोपसृष्टि— । पत्र नं ११ । पा ११×२५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजाविधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं ३२२ । अ मन्थार ।

४०३६ भवकारोपसृष्टि— । पत्र नं ४ । पा ११×२ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजा विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं ३२३ । अ मन्थार ।

४०३७ भवकारोपसृष्टि—व भाषावर । पत्र नं २७ । पा १ × २५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-मन्दिर के ध्वजा लक्ष्मी का विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । अ मन्थार ।

४०३८ भवकारोपसृष्टि— । पत्र नं १३ । पा १ × २५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-मन्दिर के ध्वजा लक्ष्मी का विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं ३२४ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार के २ प्रतिष्ठा ( वै नं ४३४ धर्मचक्र ) पीर है ।

४०३९ प्रति सं ३ । पत्र नं १ । ले काल नं १११९ । वै नं ३१ । अ मन्थार ।

४०४० भवकारोपसृष्टि— । पत्र नं १ । पा ११×२५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-विधान । र काल × । ले काल नं ११२७ । पूर्ण । वै नं २७३ । अ मन्थार ।

४०४१ प्रति सं ३ । पत्र नं २-४ । ले काल × । पूर्ण । वै नं १२२ । अ मन्थार ।

४०४२ कम्प्रीधरकर्मसाङ्ग— । पत्र नं १ । पा १ × २ इ च । भाषा-मन्थार । विष्णु-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं १७७९ । अ मन्थार ।

४०४३ कम्प्रीधरकर्मसाङ्ग— । पत्र नं ३ । पा ११×२ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं १७७ । अ मन्थार ।

४०४४ कम्प्रीधरकर्मपूजा—रत्नसिद्धि । पत्र नं १ । पा ११×२५ इ च । भाषा-मंजुत । विष्णु-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै नं १८१ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रति मन्थार है ।

## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८६१ भाषाढ बुदी ३ । वै० सं० १६१ । च

भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रले हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा । पत्र सं० ४ । भा० ८५६ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी भण्डार में एक मपूर्णा प्रति ( वै० सं० ७६७ ) भी है ।

४७४७ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । भा० १२×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८ नन्दीश्वरपक्तिपूजा । पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १७५६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५५७ ) भी है ।

४७४९ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ३६३ । क भण्डार ।

४७५० नन्दीश्वरपक्तिपूजा । पत्र सं० ३ । भा० १०×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वै० सं० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ६ । भा० ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४०० । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया ( वै० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४ ) भी हैं ।

४७५२ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ४ । भा० ८३×६ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ४ । भा० ६×७ इ च । भाषा—मपत्र श । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि भी थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द विधे दिये हैं ।

४७५५ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ३१ । भा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११६ । ज भण्डार ।

४७५६ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ३० । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वै० सं० ३४६ । क भण्डार ।

४०२० नन्दीश्वरमहिमापा—पलाकाङ्क। पत्र सं २३। मा ११३×७ इंच। शाला-हिन्दी।  
विषय-पूजा। र काल सं १९९१। ले काल सं १९५६। पूर्ण। वै सं ३२४। अ मन्थार।

४०२८ नन्दीश्वरविधान—शिवेश्वरदास। पत्र सं १११। मा ११०×५ इंच। शाला-हिन्दी।  
विषय-पूजा। र काल सं १९६१। ले काल सं १९२२। पूर्ण। वै सं ३२। अ मन्थार।

विशेष—निर्धार्य एव कालस्य मे वैशाल १२। इ अर्धं हुं वै।

४०२९ नन्दीश्वरप्रोद्योषापनपूजा—जम्बिपत्र। पत्र सं ३। मा १२३×२३ इंच। शाला-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १९२। अ मन्थार।

४०३ नन्दीश्वरप्रोद्योषापनपूजा—अनन्तकीर्ति। पत्र सं १३। मा ७३×४ इंच। शाला-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १७२०। मासक बुरी ३। अर्ध। वै सं २१०। अ मन्थार।

विशेष—बुधर। पत्र नहीं है। उक्तपत्र सं प्रतिनिधि नहीं थी।

४०३१ नन्दीश्वरप्रोद्योषापनपूजा—। पत्र सं २। मा ११२×२ इंच। शाला-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ११०। अ मन्थार।

४०३२ नन्दीश्वरप्रोद्योषापनपूजा—। पत्र सं ३। मा ७×६ इंच। शाला-हिन्दी।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १९। मासक बुरी ३। पूर्ण। वै सं ३२१। अ मन्थार।

विशेष—स्योमीयत शंभुदास ने प्रतिनिधि नहीं थी।

४०३३ नन्दीश्वरपूजाविधान—देवचन्द्र। पत्र सं ४२। मा ७३×६ इंच। शाला-हिन्दी।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १९। उक्तपत्र बुरी १। पूर्ण। वै सं १७७। अ मन्थार।

विशेष—कोटवाल पारसीवाल ने बयपुर वाले उक्तपत्र बहुरिक्रय से प्रतिनिधि कराई थी।

४०३४ नन्दूद्योषप्रोद्योषापनपूजा—। पत्र सं १। मा ७×४ इंच। शाला-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १९७०। पूर्ण। वै सं २६९। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एव प्रति ( वै सं ३३ ) भी है।

४०३५ नन्दमहपूजाविधान—मन्थार। पत्र सं १। मा १३×२३ इंच। शाला-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ३२। अ मन्थार।

४०३६ प्रतिष्ठा ३। पत्र सं ६। ले काल ×। वै सं ३३। अ मन्थार।

विशेष—अथवा पत्र पर मन्थारवा वि है तथा पत्र पर ही शक्ति के लिए कित तीर्थभूत की पूजा करती जाति, यह लिखा है।

## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य ]

४७६७ नवग्रहपूजा । पत्र स० ७ । मा० ११३×६३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिष्ठा ( वे० स० ४७५, ४६०, ५७३, १०७१, २११२ ) शीर हैं ।

४७६८ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वे० स० १२७ । छ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ८ प्रतिष्ठा ( वे० स० १२७ ) शीर हैं ।

४७६९ प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वे० स० । २०३ ज

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिष्ठा ( वे० स० १८५, १६३, २८० ) शीर हैं ।

४७७० प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१ नवग्रहपूजा । पत्र स० २६ । मा० ६×६३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ७१३ ) शीर हैं ।

४७७२ प्रति स० ० । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १० । मा० १०३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-निरय

करने योग्य पूजा पाठ हैं । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—बैरा पृष्ठ नहीं है ।

४७७४ नित्यक्रिया । पत्र स० ६८ । मा० ८३×६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-नित्य करने

योग्य पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ५४, ६७, तथा ६८ से भागों के पत्र नहीं हैं ।

४७७५ नित्यनियमपूजा । पत्र स० २६ । मा० ६×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिष्ठा ( वे० स० ३७०, ३७१ ) शीर हैं ।

४७७६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३६७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा ( वे० स० ३६० से ३६३ ) शीर हैं ।

४७७७ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ५२६ । अ भण्डार ।

४७८८. त्रिविधमपूजा—। पत्र सं १३। पा १ × ७ द. व। गाय-दंडकृत द्विती। विद्य-  
पूजा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ७१२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में १ प्रतिमां ( मे सं ७० १११४ ) भीर है।

४७८९. प्रति सं २। पत्र सं ११। मे काल सं ११४ कालिक सुदी १२। मे सं ११५। क  
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( मे सं ११६ ) भीर है।

४७९०. प्रति सं ३। पत्र सं ७। मे काल सं ११३। मे सं २२१। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रतिमां ( मे सं १२१/२ २२१/२ ) भीर है।

४७९१. त्रिविधमपूजा—पं० महासुख कर्मसमीक्षा। पत्र सं ४२। पा २ × १२ द. व। गाय-  
द्विती गव। विद्य-पूजा। र काल सं ११२१ माघ सुदी २। मे काल सं ११२३। पूर्ण। मे सं ४२। अ  
मन्थार।

४७९२. प्रति सं २। पत्र सं १३। मे काल सं ११२ माघ सुदी १। मे सं १७०। क  
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( मे सं १७१ ) भीर है।

४७९३. प्रति सं ३। पत्र सं ११। मे काल सं ११२१ माघ सुदी २। मे सं १७१। क  
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( मे सं १७० ) भीर है।

४७९४. प्रति सं ४। पत्र सं १३। मे काल सं ११३३ ज्येष्ठ सुदी ७। मे सं ११४। अ  
मन्थार।

विशेष—पत्र अठे हुये एवं भीर्या है।

४७९५. प्रति सं ५। पत्र सं ४४। मे काल ×। मे सं १३। अ मन्थार।

विशेष—इसका पुजा मण्डल सुन्दर एवं प्रसंगी में रखने योग्य है।

४७९६. प्रति सं ६। पत्र सं ४२। मे काल सं ११३३। मे सं १५६६। अ मन्थार।

४७९७. त्रिविधमपूजाभाषा—। पत्र सं १६। पा १ × ७ द. व। गाय-द्विती। विद्य-  
पूजा। र काल ×। मे काल सं ११३३ माघ सुदी ११। पूर्ण। मे सं ७०७। अ मन्थार।

विशेष—ईश्वरमाल बांधनाय मे प्रतिमिति की थी।

४७९८. प्रति सं २। पत्र सं १। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ४७। अ मन्थार।

विशेष—बनपुर मे कुम्हार की बहैली (पंजीब लहैली) सं ११३६ में स्थापित हुई थी। जननी स्थापना  
के समय का मन्थार हुआ मन्थार है।

४७८६. प्रति स० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १६६६ भाद्रवा बुदी १३ । वे० स० ४८ । ग  
भण्डार ।

४७८७. प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६६७ । वे० स० २६२ । म् भण्डार ।

४७८९. प्रति स० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ । वे० स० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— ५० मोतीलालजी सेठी ने यति यगोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई ।

४७८२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसमग्र । पत्र स० ५८ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत,

हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । छ भण्डार ।

४७८३. नित्यपूजासमग्र । पत्र स० ८ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत, अथवा । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७७ । ट भण्डार ।

४७८४. नित्यपूजासमग्र । पत्र स० ५ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । च भण्डार ।

४७८५. प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० स० ११७ । ज  
भण्डार ।

४७८६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० १६६५, २०६३ )  
शोर हैं ।

४७८७. नित्यपूजासमग्र । पत्र सं० २-३० । मा० ७३×२ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० स० १८३, १८४ ) शोर हैं ।

४७८८. नित्यपूजासमग्र । पत्र सं० ३६ । मा० १०३×७ इ च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६५७ । अपूर्ण । वे० स० ७११ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नहीं हैं कुछ पत्र भंग गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे०  
सं० १३२२ ) शोर हैं ।

४७८९. प्रति स० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० स० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति स० ४ । पत्र स० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा—। पत्र ८ १३। पा १२×२३ दश। भाषा—हिन्दी। विषय—सुत्र। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ३७८। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रतिष्ठा ( नै सं ३७२, ३७३, ३७४, ३७६ ) पीर है।

४८०३. प्रति सं ३। पत्र ८ २। नै काल ×। नै सं ३९९। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा ( नै सं ३९४, ३९५ ) पीर है।

४८०४. प्रति सं ३। पत्र ८ १०। नै काल ×। नै सं ९३। छ मन्थार।

४८०५. प्रति सं ४। पत्र ८ २ से १८। नै काल ×। अर्धूर्ण। नै सं १९२८। छ मन्थार।

विशेष—अतिम पुष्पिका विम्ब प्रकर है—

इति भीमशिवमन्थार प्रकाशक—। अर्धूर्णविम्बमन्थारके अतीककाके पुष्पमन्थारकी मूल अतीककाके मन्थार।

४८०६. निर्वाणमन्थारपूजा—। पत्र ८ २। पा १९×२ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—सुत्र। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ४९८। छ मन्थार।

४८०७. निर्वाणमन्थारपूजा—। पत्र ८ २। पा १० दश। भाषा—संस्कृत, प्राकृत। विषय—पूजा। र काल ×। नै काल ८ १२२। मन्थार सुवी ४। पूर्ण। नै सं ११११। छ मन्थार।

विशेष—इसकी प्रतिष्ठिति कोलमन्थार वंतापी के स्थानमल पाठपाठ से बरती की।

४८०८. निर्वाणमन्थारपूजा—। पत्र ८ २९। पा १३×७ दश। भाषा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल ८ १२१६। अतिम सुवी १९। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ४२। र मन्थार।

४८०९. प्रति सं ३। पत्र ८ २३। नै काल ८ १२२०। नै सं ३७९। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा ( नै सं ३७७, ३७८ ) पीर है।

४८१०. प्रति सं ३। पत्र ८ १८। नै काल ८ १२३२। नै सुवी ३। नै सं ९४। छ मन्थार।

विशेष—अष्टादशमल मन्थार की प्रतिष्ठिति की की। अष्टादश मन्थार के मुख्य निवाण विषयम सुविधा के मन्थार में बरती। इसी मन्थार के २ प्रतिष्ठा ( नै सं ९३, ९४ ) पीर है।

४८११. प्रति सं ४। पत्र ८ २६। नै काल ८ १२४९। नै सं ९११। छ मन्थार।

विशेष—सुन्दरमल मन्थार की मन्थार के प्रतिष्ठिति की की।

४८१२. प्रति सं ५। पत्र ८ ३२। नै काल ×। नै सं ३२२। छ मन्थार। ३

४८१३ निर्वाणक्षेत्रपूजा । पत्र स० ११ । मा० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल स० १८७१ । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वे० स० १३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिष्ठा ( वे० स० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६६ ) भीर हैं ।

४८१४ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८७१ भाद्रवा बुदी ७ । वे० स० २६६ । ज

भण्डार । [ गुटका साहज ]

४८१५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८८४ मगसिर बुदी २ । वे० स० १८७ । म

भण्डार ।

४८१६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अर्पूर्णा । वे० स० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है ।

४८१७ निर्वाणपूजा । पत्र स० १ । मा० १२×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१८ । अ भण्डार ।

४८१८ निर्वाणपूजापाठ—मनरगलाल । पत्र स० ३३ । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । २० काल स० १८४२ भाद्रवा बुदी २ । ले० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० स० ८२ । म  
भण्डार ।

४८१९ नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । मा० ६×३ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६५ । अ भण्डार ।

४८२० नेमिनाथपूजा । पत्र स० १ । मा० ७×५ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

४८२१ नेमिनाथपूजाष्टक—शभूराम । पत्र स० १ । मा० ११ $\frac{३}{२}$ ×५ $\frac{३}{२}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४२ । अ भण्डार ।

४८२२ नेमिनाथपूजाष्टक । पत्र स० १ । मा० ६ $\frac{३}{२}$ ×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२४ । अ भण्डार ।

४८२३ पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १६ । मा० ११ $\frac{३}{२}$ ×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७६ । क भण्डार ।

४८२४ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८७६ । वे० स० १०३७ । अ भण्डार ।

४८२५ पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स० १२६ । मा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५६ । अ भण्डार ।



४८२६ पञ्चकन्यायकन्या—वाङ्मयि । पत्र सं ३१ । या १९×५ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल सं ११२३ । ले काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्थार ।

४८२७ पञ्चकन्यायकन्या—गुणधीति । पत्र सं २२ । या १९×२ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल × । ले काल ११११ । पूर्ण । के सं १५ । अ मन्थार ।

४८२८ पञ्चकन्यायकन्या—बाहीमहि । पत्र सं १ । या ११×२ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २५१ । अ मन्थार ।

४८२९ पञ्चकन्यायकन्या—मुक्ताधीति । पत्र सं ७-२१ । या ११×२ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२ । अ मन्थार ।

४८३० पञ्चकन्यायकन्या—सुधासागर । पत्र सं १६ । या ११×४ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ५१ । अ मन्थार ।

४८३१ पञ्चकन्यायकन्या— । पत्र सं ११ । या १२×४ इत् । मत्ता-वत्त । विषय-  
पूजा । र काल × । ले काल सं ११ । मत्ता-वत्त । पूर्ण । के सं ७ । अ मन्थार ।

४८३२ प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले काल सं १५१ । के सं ३१ । अ मन्थार ।

४८३३ प्रति सं ३ । पत्र सं ७ । ले काल × । के सं ३५४ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं ३५३ ) धीर है ।

४८३४ प्रति सं ४ । पत्र सं २२ । ले काल सं ११३१ मत्ता-वत्त । पूर्ण । के सं १२  
अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिय ( के सं १३७, १ ) धीर है ।

४८३५ प्रति सं ५ । पत्र सं १५ । ले काल सं १५११ । के सं ११३ । अ मन्थार ।

४८३६ प्रति सं ६ । पत्र सं १२ । ले काल सं १११ । के सं २३१ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं १२२ ) धीर है ।

४८३७ पञ्चकन्यायकन्या—श्रीदेवाय निवेद्य । पत्र सं ११ । या ११×२ इत् । मत्ता-वत्त ।  
विषय-पूजा । र काल सं १११ । मत्ता-वत्त । पूर्ण । के सं ७२ । अ मन्थार ।

विशेष—श्रीदेवाय मत्ता-वत्त के पत्रों वाली है । इसी मन्थार में २ प्रतिय ( के सं १७१, १७२ )  
धीर है ।

४८३८ पञ्चकन्यायकन्या—रूपवत् । पत्र सं १५ । या ११×२ । मत्ता-वत्त । विषय-  
पूजा । र काल × । ले काल सं ११२ । पूर्ण । के सं २३७ । अ मन्थार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र स० २२ । भा० १०३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिमा ( वै० स० १०८०, ११२० ) और हैं ।

४८४० प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६५४ चंद्र सुदी १ । वै० सं० ५० । ग मण्डार ।

४८४१ प्रति स० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १६५४ माह सुदी ११ । वै० स० ६७ । घ मण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापढीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० स० ६७ ) और है ।

४८४२ प्रति स० ४ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १६६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वै० स० ६१२ । च मण्डार ।

४८४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति स० ६ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० स० २६८ । ज मण्डार ।

४८४५. प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० स० १२० । क मण्डार ।

४८४६ प्रति स० ८ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १६२८ । वै० सं० ५३६ । न मण्डार ।

४८४७ पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६२२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३८८ । ङ मण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर है ।

४८४८ प्रति स० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वै० स० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—सधोजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र स० ३१ । भा० ११३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वै० स० ६१५ । च मण्डार ।

४८५० पञ्चकल्याणकपूजा... । पत्र स० २५ । भा० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६६ । छ मण्डार ।

४८५१ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६३६ । वै० स० १०० । झ मण्डार ।

४८५२ प्रति स० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० स० ३८६ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० स० ३८७ ) और हैं ।

४८२३ प्रति स ४ । नम सं ११ । नै काल × । नै सं १११ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( नै सं ११४ ) पीर है ।

४८२४ ब्रह्मकुमारपूजा— । नम सं ७ । नै का ८१७७ दण । माता शिवी । विषम-पूजा ।

नम × । नै काल × । पूर्ण । नै सं ७२ । अ मन्थार ।

४८२५ ब्रह्मकुमारपूजा—गङ्गादास । नम सं १४ । नै का १ × २३ दण । माता-बंसुत ।

विषम-पूजा । नम × । नै काल × । पूर्ण । नै सं २१४ । अ मन्थार ।

४८२६ प्रति सं २ । नम सं १ । नै काल सं १२२१ । नै सं २२१ । अ मन्थार ।

४८२७ ब्रह्मकुमारपूजा—म० सुमनस्य । नम सं २२ । नै का ११ × २२ दण । माता-बंसुत ।

विषम-पूजा । नम × । नै काल सं १२२२ संवत्तरि नुपी २ । पूर्ण । नै सं ४२ । अ मन्थार ।

विशेष—मातार्थ मेलनस्य के विषय बाड़े हुए के परमात्म प्रतिनिधि हुई थी ।

४८२८ ब्रह्मपरमेश्वरीवधापन— । नम सं ११ । नै का १२ × २२ दण । माता-बंसुत । विषम-पूजा ।

नम सं १२२ । नै काल × । पूर्ण । नै सं ४१ । अ मन्थार ।

४८२९ ब्रह्मपरमेश्वरीसमुच्चयपूजा— । नम सं ४ । नै का २ × २३ दण । माता शिवी । विषम-

पूजा । नम × । नै काल × । पूर्ण । नै सं १२२१ । अ मन्थार ।

४८३० ब्रह्मपरमेश्वरीपूजा—म सुमनस्य । नम सं २४ । नै का ११ × २२ दण । माता बंसुत । विषम-

पूजा । नम × । नै काल × । पूर्ण । नै सं ४७७ । अ मन्थार ।

४८३१ प्रति सं २ । नम सं ११ । नै काल × । नै सं १२१ । अ मन्थार ।

४८३२ प्रति सं ३ । नम सं २२ । नै काल × । नै सं १४ । अ मन्थार ।

४८३३ ब्रह्मपरमेश्वरीपूजा—मयोनिम् । नम सं १२ । नै का १२ × २३ दण । माता-बंसुत । विषम-

पूजा । नम × । नै काल सं १७२२ संवत्तरि नुपी २ । पूर्ण । नै सं २१५ । अ मन्थार ।

विशेष—काल की प्रतिनिधि ब्रह्मवहात्म्यस्य नै कर्मविहारा नै सं मयोनिदास के परमात्म हुई थी ।

४८३४ प्रति सं २ । नम सं २१ । नै काल सं १२२ । नै सं ४११ । अ मन्थार ।

विशेष—बुरा बाव में बालवीदास नै प्रतिनिधि थी थी ।

४८३५ प्रति सं ३ । नम सं २४ । नै काल सं १७१ संवत्तरि नुपी २ । नै सं १२१ । अ

मन्थार । ४८३६ प्रति सं ४ । नम सं ४१ । नै काल सं १२१ । नै सं १२७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( नै सं १२२ ) पीर है ।

४८६७ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० स० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा । पत्र स० १५ । मा० १२X५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८६२ मापाठ बुदी ८ । वे० सं० ३६२ । द भण्डार ।

४८७० प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—देकचन्द्र । पत्र स० १५ । मा० १०X५ १/२ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र स० ३५ । मा० १०३X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १८६२ संगसिर बुदी ६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० १०८६ ) भी है ।

४८७३ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल स० १६८७ । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ३६० ) भी है ।

४८७५ प्रति स० ४ । पत्र स० ४५ । ले० काल X । वे० स० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६ प्रति स० ५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० ५१ । ज भण्डार ।

विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६१३ । वे० स० १८७६ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा । पत्र स० ३६ । मा० १३X५ १/२ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६१ । ड भण्डार ।

४८७९ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल X । वे० स० ६१७ । व भण्डार ।

४८८० प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल X । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१ प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० ३१६ । व्य भण्डार ।

४८८२ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६८१ । वे० स० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—धानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३ पञ्चमासपतिपूजा—। पत्र सं ६। मा १५० हव। माता-हिन्दी। विवाह-दुगा।  
काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२९। छ मन्थार।

४८८४ पञ्चमङ्गलपूजा—। पत्र सं १२। मा ५४ हव। माता-हिन्दी। विवाह-दुगा।  
काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२४। छ मन्थार।

४८८५ पञ्चमासचतुर्विंशतीप्रतोषापनपूजा—म सुदेन्द्रकीर्ति। पत्र सं ५। मा ११५ हव।  
माता-बंगल। विवाह-दुगा। र काल सं १८२५ मन्थार। कुरी ६। के काल ×। पूर्ण। के सं ४५। छ  
मन्थार।

४८८६ प्रति सं २। पत्र सं ५। के काल ×। के सं १२७। छ मन्थार।

४८८७ प्रति सं ३। पत्र सं ५। के काल सं १५५३ मन्थार। कुरी ७। के सं १६। छ  
मन्थार।

विशेष—बहुला घण्टुनाथ के तर्वाई बन्दुर में प्रतिष्ठित की थी। इसी मन्थार के एक प्रति ( सं १६ ) की है।

४८८८ प्रति सं ४। पत्र सं ३। के काल ×। के सं ११७। छ मन्थार।

४८८९ प्रति सं ५। पत्र सं ५। के काल सं १५९९ मन्थार। कुरी २। के सं १०। छ  
मन्थार।

विशेष—बन्दुर मन्थार के श्री विवाहमन्थार के एक ही मन्थार के प्रतिष्ठित की थी।

४८९० पञ्चमीप्रवपूजा—देवैन्द्रकीर्ति। पत्र सं ३। मा १२५ हव। माता-बंगल। विवाह-  
दुगा। र काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२। छ मन्थार।

४८९१ पञ्चमीप्रवोषापन—कीर्ति। पत्र सं ७। मा ११५ हव। माता-बंगल। विवाह-  
दुगा। र काल ×। के काल सं १५ मन्थार। कुरी ५। पूर्ण। के सं १२५। छ मन्थार।

विशेष—बन्दुरमन्थार के प्रतिष्ठित की थी।

४८९२ प्रति सं २। पत्र सं ५। के काल सं १६१२ मन्थार। कुरी २। के सं २। छ  
मन्थार।

४८९३ प्रति सं ३। पत्र सं ७। मा १२५ हव। माता-बंगल। विवाह-दुगा।  
काल ×। के काल सं १६१२ मन्थार। कुरी ७। पूर्ण। के सं ११७। छ मन्थार।

४८९४ पञ्चमीप्रवोषापनपूजा—। पत्र सं १। मा ५५ हव। माता-बंगल। विवाह-  
दुगा। र काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२६। छ मन्थार।

विशेष—बाजी मन्थार के प्रतिष्ठित की थी।

४८६५ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६०५ घासोज बुदी १२ । वे० स० ६४ । म्

भण्डार ।

४८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३८८ । भण्डार ।

४८६७ पञ्चमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३३ । मा० १२×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

४८६८ प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ६१६ । च भण्डार ।

४८६९ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—मजमेर वालों के चौबारे जयपुर मे लिखा गया । कीमत ४ ।।।

४६००. पञ्चमेरूपूजा—द्यानतराय । पत्र स० ६ । मा० १२×५३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४६०१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

४६०२. पञ्चमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र स० ८ । मा० ८३×४ इ च । भाषा—हिदी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त मे सस्युत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ५६८ ) और है ।

४६०३ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४६०४ पञ्चमेरूपूजा—डालूराम । पत्र स० ४४ । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४१५ । क भण्डार ।

४६०५ पञ्चमेरूपूजा—सुवानन्द । पत्र स० २२ । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

४६०६. पञ्चमेरूपूजा । पत्र स० २ । मा० ११×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६६ । अ भण्डार ।

४६०७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ४७६ ) और है ।

४६०८ पञ्चमेरूपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र स० ६ । मा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । च भण्डार ।

४६०९ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । च भण्डार ।

४२१०. पद्मावतीपूजा—। पत्र सं २। पा १३×२ इव। माला—संतुष्ट। विषय—पूजा।  
 र काल ×। ले काल सं १५११। पूर्ण। के सं ११५। अ मन्वार।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है।

४२११. प्रति सं २। पत्र सं १९। ले काल ×। के सं १२७। अ मन्वार।

विशेष—पद्मलतीस्तोत्र पद्मावतीकथन पद्मावतीरक्षण एवं पद्मावतीसुखमान भी है। मन्त्र में २ मन्त्र भी दिये हुये हैं। मन्त्रकथन लिखने की विधि भी दी हुई है। इनी मन्वार के एक अंश (के सं २५) भी है।

४२१२. प्रति सं ३। पत्र सं १। ले काल ×। पूर्ण। के सं १। अ मन्वार।

४२१३. प्रति सं ४। पत्र सं ७। ले काल ×। के सं १४। अ मन्वार।

४२१४. प्रति सं ५। पत्र सं २। ले काल ×। के सं १। अ मन्वार।

४२१५. पद्मावतीमङ्गलपूजा—। पत्र सं ३। पा ११×२ इव। माला—संतुष्ट। विषय—पूजा।  
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ११७१। अ मन्वार।

विशेष—शक्तिमन्त्र पूजा भी है।

४२१६. पद्मावतीरामिका—। पत्र सं १७। पा १२×२ इव। माला—संतुष्ट। विषय—पूजा।  
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २३९। अ मन्वार।

विशेष—प्रति वर्षकथन संहिता है।

४२१७. पद्मावतीछन्दनामक पूजा—। पत्र सं १४। पा १×७ इव। माला—संतुष्ट।  
 विषय—पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ४१। अ मन्वार।

४२१८. पद्मविधानपूजा—कविचरित्रि। पत्र सं ७। पा ११×२ इव। माला—संतुष्ट।  
 विषय—पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २११। अ मन्वार।

विशेष—बुधावस्था के प्रतिनिधि की भी।

४२१९. पद्मविधानपूजा—रत्नमन्त्रि। पत्र सं १४। पा ११×२ इव। माला—संतुष्ट। विषय—  
 पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १३२। अ मन्वार।

विशेष—मन्त्रिपूजा के प्रतिनिधि की भी।

४२२०. प्रति सं २। पत्र सं २। ले काल ×। के सं २१५। अ मन्वार।

४२२१. प्रति सं ३। पत्र सं ९। ले काल सं १९ देवाय सुदी २। के सं १३९। अ  
 मन्वार।

विशेष—माली मन्त्र ( हूरी मन्त्र ) में वाक्य भी मालाशक्ति के उपरान्त के प्रतिनिधि हुई भी।

४६२२ पत्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र स० ६ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५३ । क भण्डार ।

४६२३. पत्यविधानपूजा । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७५ । अ भण्डार ।

४६२४ प्रति स० २ । पत्र स० २ मे ५ । ले० काल स० १८२१ । अपूर्ण । वे० स० १०५५ । अ  
भण्डार ।

विशेष—१० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५ पत्यव्रतोत्थापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ५८२, ६०७ ) भी हैं ।

४६२६ पत्योपमोपव्रामविधि । पत्र स० ४ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा एव उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८४ । अ भण्डार ।

४६२७ पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र स० २ । मा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६० । अ भण्डार ।

४६२८ पार्श्वनाथपूजा । पत्र स० ४ । मा० ७×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३२ । अ भण्डार ।

४६२९ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । इ भण्डार ।

४६३० पुण्याहवाचन । पत्र स० ५ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—दान्ति  
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां ( वे० स० ५५६, १३६१, १८०३ ) भी हैं ।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२२२ । इ भण्डार ।

४६३२. प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० स० २७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—प० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशान से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३ प्रति स० ४ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० स० २००६ । अ  
भण्डार ।



४६३४ पुरंदरप्रतोषोपासन—। वन सं २। पा ११×२२ इंच। माला—संतुष्ट। विनय-पूजा।  
 र माला ×। ले माला सं १६११ मावल मुदी १। पूर्ण। के सं ७२। अ मथार।

४६३५ पुष्पाक्षिप्रवपूजा—म एतनचम्ब। वन सं ३। पा १३×७२ इंच। माला—संतुष्ट।  
 विनय-पूजा। र माला सं १६५१। ले माला ×। पूर्ण। के सं २२३। अ मथार।

विशेष—इ एतना बावबागुर के बावकों की प्रेरणा से अठारक एतनचम्ब के सं १६८१ में बनी थी।  
 ४६३६ प्रति स० २। वन सं १२। ले माला सं १६२४ मालोज मुदी १। के सं ११७। अ  
 मथार।

विशेष—इसी मथार में एक प्रति इसी मूल में भी है।

४६३७ प्रति स ३। वन सं ७। ले माला ×। के सं ३५७। अ मथार।

४६३८ पुष्पाक्षिप्रवपूजा—म गुमचम्ब। वन सं १। पा १ × २ इंच। माला—संतुष्ट।  
 विनय-पूजा। र माला ×। ले माला ×। पूर्ण। के सं ३२३। अ मथार।

४६३९ पुष्पाक्षिप्रवपूजा—। वन सं ५। पा १ × ४ इंच। माला—संतुष्ट।  
 माला ×। ले माला सं १६३६ मावल मुदी २। पूर्ण। के सं २२३। अ मथार।

४६४० पुष्पाक्षिप्रवोषोपासन—म गगवांस। वन सं १। पा १ × २ इंच। माला—संतुष्ट।  
 विनय-पूजा। र माला ×। ले माला सं १६६। पूर्ण। के सं ४५। अ मथार।

विशेष—संतुष्ट अठारक वर्तमान के विषय में। इसी मथार में एक प्रति (के सं ३३३) भी है।  
 ४६४१ प्रति स २। वन सं १। ले माला सं १५२ मालोज मुदी १। के सं ७५। अ  
 मथार।

४६४२ पूजाकिया—। वन सं १। पा ११२×२ इंच। माला—संतुष्ट। विनय-पूजा करने की  
 विधि का विधान। र माला ×। ले माला ×। पूर्ण। के सं १२३। अ मथार।

४६४३ पूजापाठसमूह—। वन सं २। पा ४। पा ११×६ इंच। माला—संतुष्ट। विनय-  
 पूजा। र माला ×। ले माला ×। पूर्ण। के सं १२२। अ मथार।

विशेष—इसी मथार में एक पूर्ण प्रति (के सं १७५) भी है।

४६४४ पूजापाठसमूह—। वन सं ३। पा ७×२२ इंच। माला—संतुष्ट। विनय-पूजा।  
 र माला ×। ले माला ×। पूर्ण। के सं १३१२। अ मथार।

विशेष—पूजा पाठ के अन्य समूह एक में है। अधिकांश कर्मों के संबंधी नुमाय विनयी हैं, फिर भी विनाय  
 विशेष रूप में उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें वर्ण दिया जाएगा है।

४६४५. प्रति स० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

- |                          |         |                 |
|--------------------------|---------|-----------------|
| १. पुष्पदन्त जिनपूजा     | —       | सम्कृत          |
| २ चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा | ”       | ”               |
| ३ चन्द्रप्रभपूजा         | ”       | ”               |
| ४ शान्तिनाथपूजा          | ”       | ”               |
| ५ मुनिसुप्रतनाथपूजा      | ”       | ”               |
| ६ दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि | प्राकृत | ले० काल स० १६३७ |
| ७ ऋषभदेवस्तोत्र          | ”       | ”               |

४६४६ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल स० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिर्या ( वे० स० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७ ) और हैं ।

४६४७ प्रति स० ४ । पत्र स० १२० । ले० काल स० १८२७ चैत्र सुदी ५ । वे० स० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८ प्रति स० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल X । वे० स० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानप्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्दपोडशकारणपूजा	—	”
जेष्ठजिनवररुद्रापनपूजा	—	”
त्रिकालचीवीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनपष्ठिप्रवपूजा	विजयकीर्त्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	५० जिनदास	”
भक्षयनिधिपूजा	—	”
कर्मचूरप्रतोद्यापनपूजा	—	”

४१४६. प्रति सं ६। नम सं १ के ११६। नम नम  $\times$ । मूर्त्ति। के सं ४२७। क नमः।

विशेष—मुख्य पूजान विधि प्रकार है—

विशेष	—	संख्या
शिवशङ्करपूजा	पुनःपुनः	"
शिवदुर्गास्तोत्रपूजा	नमः	"
शिवशङ्करविष्णुपूजा	—	"
शारदास्तोत्रपूजा	—	"
शर्वपूजा	—	"
शिवपूजा	प्रकार	"

इसी प्रकार में २ प्रतिष्ठा (के सं ४०९ ४०९) भी है।

४१४७. प्रति सं ७। नम सं २७ के २७। नम नम  $\times$ । मूर्त्ति। के सं २२६। क नमः।

विशेष—शारदा पूजा एवं शक्ति का संबंध है।

४१४८. प्रति सं ८। नम सं १४। नम नम  $\times$ । के सं १४। क नमः।

विशेष—इसी प्रकार में एक प्रति (के सं ११६) भी है।

४१४९. प्रति सं ९। नम सं १२३। नम नम १ ४ मूर्त्ति। के सं ४१६। क नमः।

विशेष—शिव शक्तिपूजा का संबंध है।

४१५०. पूजापाठसंस्कृत—। नम सं २९। नम १२४ २५। शारदा—शक्तिपूजा। शिवपूजा  
का १२ नम  $\times$ । नम  $\times$ । मूर्त्ति। के सं ७२५। क नमः।

विशेष—शारदा, शारदापूजा का संबंध है। शारदा पूजा पाठों की इसी प्रकार में ३ प्रतिष्ठा  
(के सं २, ३६४ १) भी है।

४१५१. प्रति सं १०। नम सं ११। नम सं ११२३ मूर्त्ति। के सं ४२५। क नमः।

विशेष—इसी प्रकार के ३ प्रतिष्ठा (के सं ४०९ ४०९, ४०९ ४०९ ४०९, ४०९ ४०९ ४०९ ४०९, ४०९ ४०९) भी है।

४१५२. प्रति सं ११। नम सं ४२ के ४२। नम नम  $\times$ । मूर्त्ति। के सं ११२४। क नमः।

४६५६. पूजापाठसंग्रह " । पत्र सं० ४० । मा० १२×८ २ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

भादिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्पेदनाथपूजा	—	"
विरामानन्दतीर्थद्वारों की पूजा	—	१० काल सं० १६४३
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[ परसंग्रह ]		हिन्दी

४६५७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार से ५ प्रतियां ( वे० मा० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२ ) प्रौर हैं ।

४६५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

श्रीवीरदण्डक	—	श्रीनतराम
बिनती गुरमा की	—	भूपरदास
बीस तीर्थद्वार जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	श्रीनतराम

मण्डार ।

४६५९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० पाण्डुग मुदी २ । वे० सं० २२० । ज

४६६० प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ से २२२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । म मण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६६१ पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचन्द । पत्र सं० । मा० ११×५ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की वदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि पातक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
धमस्कारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगधीदशमीपूजा	"	"

४१६२. पूजाप्रकार—ब्रह्मास्वामी । पत्र सं १ । पा १ × ४२ इ च । माता—बंशुत । विष्णु-विद्या । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १२२ । अथ यथा ।

विशेष—पुष्प माला के लताए दिने हुके हैं । मन्त्रिय पुष्पिका विष्णु प्रकार है—

इति श्रीवसुदेवभाषीविरचिते प्रकरणे ॥

४१६३. पूजामहालयविधि— । पत्र सं १ । पा ११२ × ४२ इ च । माता—बंशुत । विष्णु-पुष्पाविधि । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं २२४ । अथ यथा ।

४१६४. पूजाव्यविधि— । पत्र सं १ । पा २ × ४ इ च । माता—बंशुत । विष्णु-पुष्पाविधि । १ काल × । मे काल सं १२३ । पूर्ण । मे सं १४७ । अथ यथा ।

४१६५. पूजापाठ— । पत्र सं १४ । पा १ २ × ४ इ च । माता—हिन्दी काल । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल सं १ १६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । मे सं १ २ । अथ यथा ।

विशेष—ब्राह्मणवर्ग के प्रतिविधि भी भी । मन्त्रिय पत्र काल का निष्ठा हुआ है ।

४१६६. पूजाविधि— । पत्र सं १ । पा १ × ४२ इ च । माता—माहव । विष्णु-विद्या । १ काल × । मे काल × । अपूर्ण । मे सं १००६ । अथ यथा ।

४१६७. पूजाविधि— । पत्र सं ४ । पा १ × ४२ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-विद्या । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं ११० । अथ यथा ।

४१६८. पूजापाठ—आस्तास्य । पत्र सं १ । पा १ १ × २ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं ११११ । अथ यथा ।

४१६९. पूजापाठ—आहूत । पत्र सं १ । पा १ १ × २ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं ११ २ । अथ यथा ।

४१७०. पूजापाठ—आसयवगु । पत्र सं १ । पा १ २ × २ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १११ । अथ यथा ।

४१७१. पूजापाठ— । पत्र सं १ । पा १ २ × २ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं ११११ । अथ यथा ।

४१७२. पूजापाठ— । पत्र सं ११ । पा १ ४ × २ इ च । माता—हिन्दी । विष्णु-पुष्पा । १ काल × । मे काल × । अपूर्ण । मे सं १४७७ । अथ यथा ।

४६७३ पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । श्रा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ मण्डार ।

४६७४ पूजासंग्रह । पत्र सं० ३३१ । श्रा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० ये ४७८ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायो का मग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१ काजीव्रतोद्यापनमडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७८
२ श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३ रोहिणीव्रतपूजा	मडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४ दशलक्षायव्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५ लब्धिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६ ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६९
७ रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८ अनन्व्रतोद्यापनपूजा	श्रा० गुणचन्द्र	"	३०	४६७
९ रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१० श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११ शत्रुञ्जयगिरिपूजा	श्रा० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२ गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३ त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४ पार्व्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५ त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी मण्डार में २ प्रतिमां ( वे० सं० ११२६, २२१६ ) श्रीर *श्री विष्णु मण्डार* ।

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १६१५ । वे० सं० ४७९ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता
त्रिपञ्चाशतव्रतोद्यापन	—

नाम	कला	भाषा
बहुरंगमैत्रीपुजा	—	बहुरंग
बहुरंगमालापुजा	—	"
बीमठ विद्यारथादेवा कांठी की पुजा	मलितबीमठ	"
बालाचरित्रपुजा	—	"
सुन्दरबर्षीपुजा	सुन्दर	"
बालचरित्रपुजा	"	"
बाह्यपारलौकिकपुजा	मदनकीर्ति	"
मन्दीरविद्यापुजा	हृदय	"
मेखलापुजा	सुन्दर	"

४२७६ प्रति स ३। वन म १। के कल ४। १२५५। के ल ४०३। क मकार।

विशेष—मिथ्य प्रचार बहू है—

नाम	कला	भाषा
सुन्दरमलिकापुजा	×	बंशुठ
मन्दीरविद्यापुजा	×	"
सिद्धपुजा	प्रमाण	"
प्रतिमापुजापुर्वीकपुजा	×	"

विशेष—राजपुत्र [ अर्थात् के कला ] के प्रतिष्ठापि की की।

सुन्दरपुजा	×	बंशुठ
सुन्दरपुजापुजा	×	"

एही प्रकार के २ प्रतिष्ठा ( के ल ४०३ ४०४ ) की है किन्तु सामान्य पुजा है।

४२७७ प्रति स ४। वन म २। के कल ५। के ल १११। क मकार।

विशेष—मिथ्य पुजाओं का बंशुठ है— सिद्धपुजा, कलिकुम्भपुजा, पालक लावन एवं बालाचरित्रपुजा सम्बन्ध। प्रति प्रमाण तथा मन्त्र विधि लक्षित है।

४२७८ प्रति स २। वन म १२। के कल ५। के ल ४२५। क मकार।

विशेष—इही प्रकार के २ प्रतिष्ठा ( के ल ४२५ ४२६ ) की है।

४६७६ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकार पूजा का समग्र है ।

४६८० प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ मे ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१ प्रति स० ८ । पत्र स० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ९ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १८०० मापाठ सुदी १ । वे० स० ६६ । ब

भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का समग्र है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोवन्दि	संस्कृत	१-१९
नदीश्वरपूजा	—	"	१९-२४
सकलौकरणविधि	—	"	२४-२५
न्युस्त्रयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५-२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६-३३
भक्तामरभ्तावपूजा	केशवसेन	"	३३-३९

भाषार्थ विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चश्रीव्रतपूजा केशवसेन " ३९-४५

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा ( वे० स० ४६९, ४७० ) और हैं जिनमें नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३ प्रति स० १० । पत्र स० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४ पूजासमग्र । पत्र स० ३४ । भा० १० $\frac{१}{२}$  X ५ इक्ष । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२१५ । थ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अष्टत्रिमूर्तित्यानयपूजा, सिद्धपूजा, शुभत्रिलीपूजा, वीसतीर्थस्नानपूजा, क्षेत्रपालपूजा, पोढ्य पारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा ( ज्ञानभूषण ) एवं शान्तिपाठ प्रादि हैं ।

४६८५ पूजासमग्र । पत्र स० २ में ४५ । भा० ७ $\frac{३}{४}$  X ५ $\frac{३}{४}$  इक्ष । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० २२८ ) और है ।

४६८६ पूजासमग्र । पत्र स० ४६७ । भा० १२ X ५ इक्ष । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय—समग्र । २० भात X । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० ५४० । ब भण्डार ।



विशेष—विश्व वाङ्मय—

नाम	कर्ता	भाषा	र. भाग	सं. भाग	पत्र
१. मत्स्यपुराण	—	संस्कृत			
२. विष्णुपुराण	विष्णुपुराण	"	१	२६	शुद्धी ११
३. श्रीमद्गीर्वाणपुराण	—	"		×	शुद्धी
४. विश्वविश्वामयपुराण	—	संस्कृत हिन्दी			
५. महाभारतपुराण	—	संस्कृत			
६. पञ्चविश्वामयपुराण	विश्वामय	"	१	२६	शुद्धी
७. पञ्चविश्वामयपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
८. श्रीमद्भारतपुराण	शुद्धीश्रीति	संस्कृत			
९. शुद्धीश्रीतिपुराण	शुद्धीश्रीति	संस्कृत [ संस्कृत विषय लिखित ]			
१०. रत्नपुराण	—	"			
११. शक्तिश्रीतिपुराण	शक्तिश्रीति	"	१	२६	शुद्धी ११
१२. पञ्चविश्वामयपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
१३. महाभारतपुराण	—	हिन्दी			
१४. श्रीमद्भारतपुराण	शुद्धीश्रीति	संस्कृत			
१५. पञ्चविश्वामयपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
१६. शुद्धीश्रीतिपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
१७. श्रीमद्भारतपुराण	—	"			
१८. पञ्चविश्वामयपुराण	—	"			
१९. महाभारतपुराण	—	"			
२०. श्रीमद्भारतपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
२१. पञ्चविश्वामयपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
२२. श्रीमद्भारतपुराण	शुद्धीश्रीति	"			
२३. पञ्चविश्वामयपुराण	—	"			
२४. श्रीमद्भारतपुराण	शुद्धीश्रीति	"			

२५. बर्मपूरप्रोक्षण	रत्नमी	माहिन्य	
२६. लोनाकारण प्रोक्षण	बर्मा	"	
२७. द्विपत्रकप्रोक्षण	—	"	मे० बान १० १८३१
२८. गणपतिपूजा	—	"	
२९. बर्मदत्तपूजा	—	"	मे० बान १० १८२८
३०. बर्मदत्तपूजा	—	"	
३१. दत्तक्षत्रपूजा	—	"	
३२. लोदकवास्तव्यप्रमाण	रत्न	बर्मा	माहिन्य
३३. दत्तवास्तव्यप्रमाण	माहिन्य	माहिन्य	
३४. विवाहवीथीमाहिन्य	—	बर्मा	मे० बान १८५०
३५. लक्ष्मीविधानपूजा	बर्मा	"	
३६. बर्मापूजाविधि	बर्मा	"	
३७. गणेशपूजाविधि	बर्मा	"	
३८. लोदकवास्तव्य	—	"	
३९. लोदकवास्तव्य	—	"	
४०. लोदकवास्तव्य	—	"	
४१. लोदकवास्तव्य	—	"	
४२. लोदकवास्तव्य	—	"	
४३. लोदकवास्तव्य	गुणितवास्तव्य	"	मे० बान १८३०
४४. लोदकवास्तव्य	शुभवास्तव्य	"	
४५. लोदकवास्तव्य	बर्मा	"	मे० बान १८२७
४६. पञ्चमीउद्यान	—	संस्कृत हिन्दी	
४७. निपक्षपातप्रिया	—	"	
४८. लक्ष्मीप्रतीक्षा	—	"	
४९. लक्ष्मीप्रतीक्षा	—	"	
५०. पञ्चमीप्रतीक्षा	—	"	मे० बान १८२७

११. वनप्रवृत्तुवा	—	संस्कृत द्वितीय	
१२. पत्तवप्रवृत्तुवा	—	"	ते काल १५१०
१३. वनप्रवृत्तुवा	१२५	वाराह	

इत्या टीका तद्विष्ट है।

४१८० पूजासमय— १११। वा ११२×१२२ इ. वा. भाषा—संस्कृत द्वितीय। विषय—  
पुत्रा। १ काल × १। ते काल × १। पूर्ण। ते सं ११। इ. अथवा।

विषय—निम्न पुत्रापी वा इवम् है—

वनप्रवृत्तुवा	×	द्वितीय	१ काल १५१०
वनेपिप्रवृत्तुवा	×	"	
निर्वासिप्रवृत्तुवा	×	"	१ काल सं १५१०
पञ्चरसेपीपुत्रा	×	"	१ काल सं १५१०
विद्यालयेपुत्रा	×	"	
वस्तुपुत्रा	×	संस्कृत	
गोपीयनपुत्रा	×	"	
सुविद्याल	द्वितीय	"	

४१८१. प्रति सं २। वन सं ५। ते काल × १। ते सं १५२। इ. अथवा।

४१८२. प्रति सं ३। वन सं २। ते काल × १। ते सं १२। इ. अथवा।

विषय—निम्न संवत् है—

पञ्चरसेपीपुत्रा	वस्तुपुत्रा	द्वितीय	वन १-१
वस्तुपुत्रा	×	संस्कृत	" ५ १२
पञ्चरसेपीपुत्रा	द्वितीय	द्वितीय	" १३-११
पञ्चरसेपीपुत्रा	वस्तुपुत्रा	संस्कृत	" १४-११
वस्तुपुत्रा	द्वितीय	द्वितीय	" १-११
गोपीयनपुत्रा	"	"	" १२-११

४१८३. प्रति सं ४। ते काल × १। पूर्ण। ते सं १९। इ. अथवा।

## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

४६६१ पूजा एव कथा समग्र—सुरालचन्द्र । पत्र सं० ५० । मा० ८×४ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—हिंदी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ५६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का समग्र है ।

अन्दनपष्ठीपूजा, दत्तलक्षणपूजा, पोषणकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अमन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणकथा, मेरुपति तप की कथा, सुगन्धदत्तमौव्रतकथा ।

४६६२. पूजासमग्र—हीराचन्द्र । पत्र सं० ५१ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४८२ । क मण्डार ।

४६६३. पूजासमग्र । पत्र सं० ६ । मा० ८ $\frac{३}{४}$ ×७ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२७ । अ मण्डार ।

विशेष—पञ्चमेरु पूजा एव रत्नत्रय पूजा का समग्र है ।

इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा ( वै० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७ ) भी हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४६६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ६० । ग मण्डार ।

४६६५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वै० सं० ४७६ । क मण्डार ।

४६६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० ७३ । घ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का समग्र है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एव दान्तिपाठ, पञ्चमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एव दत्तलक्षण पूजा धानतराय कृत । अमन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एव दाल्त्रपूजा ।

४६६७ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४८६ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतिष्ठा ( वै० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३ ) भी हैं जो सभी अपूर्ण हैं ।

४६६८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वै० सं० ६३७ । च मण्डार ।

४६६९ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २२२ । छ मण्डार ।

५००० प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३८ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । ज मण्डार ।

विशेष—पञ्चकल्याणकपूजा, पञ्चपरमेष्ठीपूजा एव नित्य पूजायें हैं ।

५००१ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६३५ । ट मण्डार ।

५२. पूजासमय—रामचन्द्र । पत्र नं १ । पा ११३×१२३ इव । भावा—द्विती । विषय—पूजा ।  
 र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे तं ५६३ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रतिष्ठा के अन्तर्गत एक ही पुजार्थ है ।

५३ पूजासार— । पत्र नं ५६ । पा १ × ३ इव । भावा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं  
 विधि विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे तं ५६४ । अ मन्थार ।

५४ प्रति सं २ । पत्र नं ५७ । ले काल × । वे तं २२६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( वे तं २३ ) भी है ।

५५ प्रतिमासात्मचतुर्दशीश्राद्धोपायनपूजा—अक्षय्यराम । पत्र नं १४ । पा १ × २३ इव ।  
 भावा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल नं १६ । भावना मुदी १४ । पूर्ण । वे तं ३५७ । अ  
 मन्थार ।

विशेष—दीवान ताराकन्द के अक्षय्य के प्रतिनिधि की थी ।

५६ प्रति सं २ । पत्र नं १४ । ले काल तं १ । भावना मुदी १ । वे तं ५५४ । अ  
 मन्थार ।

५७ प्रति सं ३ । पत्र नं १ । ले काल नं १ । भावना मुदी ३ । वे तं ५५५ । अ  
 मन्थार ।

५८ प्रतिमासात्मचतुर्दशीश्राद्धोपायनपूजा—रामचन्द्र । पत्र नं १२ । पा १२ × २ इव ।  
 भावा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल नं १ । भावना मुदी १४ । पूर्ण । वे तं १९१ । अ  
 मन्थार ।

विशेष—श्री अर्धचंद्र महाराज के दीवान ताराकन्द अलक के रचना कराई थी ।

५९ प्रतिमासात्मचतुर्दशीश्राद्धोपायनपूजा— । पत्र नं ११ । पा १ × ७ इव । भावा—  
 संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल नं १ । पूर्ण । वे तं २ । अ मन्थार ।

६० प्रति सं ३ । पत्र नं १७ । ले काल तं १५७६ भावना मुदी ३ । वे तं २२३ । अ  
 मन्थार ।

विशेष—अक्षय्य अक्षय्यवत् पूजा का के अक्षय्य के प्रतिनिधि की थी । दीवान अक्षय्य ७ संघी के  
 प्रतिनिधि कराई थी ।

६१ प्रतिष्ठापूर्व—श्री श्री रावकीर्ति । पत्र नं २१ । पा १२ × २ इव । भावा—संस्कृत ।  
 विषय—प्रतिष्ठा ( विधान ) । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे तं ३ । अ मन्थार ।

५०१२ प्रतिष्ठादीपक—पठिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सं० १५ । मा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र शुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५०० । छ भण्डार ।  
विशेष—महाराज राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३ प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन) । पत्र सं० १३६ । मा० ११३×८५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६८६ कार्तिक शुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठामार भी है ।

५०१४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८७ । क भण्डार ।  
विशेष—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।  
विशेष—यानावर्ग व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अतः में एव प्रतिरिक्त पत्र पर मद्रस्त्यापनार्थ

मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें मद्र लिये हुये हैं ।

५०१६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । ज भण्डार ।  
विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुन्दमुदाचार्य पट्टोदयभूषणरदिवामणि श्रीवसुविद्वाषायैण जयमेनापरनामकेन विरचित । प्रतिष्ठा-  
सार पूर्णभगवत ।

५०१७ प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११६ । मा० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज शुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रपदा शुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२ । ज भण्डार ।

५०१८ प्रतिष्ठापाठ " । पत्र सं० १ । मा० ३३ गज सत्रा १० इ च चौटा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ शुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४० । व्य भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इ च चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रयासि निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धि ॥ श्रीं नमो वीतरागाय ॥ सवसु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ शुदी १३ तैरसि सोमवासरे अश्विनि

नक्षत्रे श्रीहृष्टकापथे श्रीसर्वशर्चेत्पालये श्रीमूलसधे श्रीकुन्दमुदाचार्यान्वये बलात्कारण्ये 'सरस्वतीगच्छे महाराज धीरत्नकीर्ति देवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा ॥ तत्पट्टे महाराज श्री जिनचन्द्रदेवा ॥'

२०१६. प्रति स० १। पत्र सं १२। ले माल सं १७११ मंत्र मुद्रा ४। मूर्तों। वै सं २४।  
क मन्थार।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ वक्त्र के प्रतिष्ठा में कर्म करने वाली बाली का विचरण किया हुआ है।

२०२. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा तुलसीदास। पत्र सं २६। या ११२×२२ इंच। भाषा—हिन्दी।  
विषय—विद्या। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ४७६। क मन्थार।

विशेष—भूतवर्ता आचार्य अनुमिषु है। इनका वृत्त नाल कर्मों में भी किया हुआ है। अक्षर में कुमुद  
नामके देव बहुबाचन के समीप उपनिषि पर लालाहू नामक राजा का बनाया हुआ विद्यालय भी बना है। उसी प्रतिष्ठा  
होने के विना कर्म तथा कर्म ऐसा सिद्धा है।

इसी मन्थार में एक प्रति ( वै ७ ४६ ) भी है।

२ २१ प्रतिष्ठाविधि—। पत्र सं १०६ के ११६। या ११×४६ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—विधि विद्या। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं २३। क मन्थार।

२ २२. प्रतिष्ठासार—प शिवजीकाण्ड। पत्र सं ११६। या १२×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
विधि विद्या। १ काल ×। ले माल सं ११२१ मंत्र मुद्रा २। पूर्ण। वै सं ४६१। क मन्थार।

२ २३ प्रतिष्ठासार—। पत्र सं २। या १२२×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि  
विद्या। १ काल ×। ले माल सं १११७ मंत्र मुद्रा १। वै सं १६। क मन्थार।

विशेष—य अठोहात्म में प्रतिनिधि की की। यों के नीचे के माल वाली के भी हुये हैं।

२ २४ प्रतिष्ठासारमण्ड—या अनुमिषु। पत्र सं २१। या ११×६ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—विधि विद्या। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १२१। क मन्थार।

२ २५. प्रति सं २। पत्र सं १४। ले काल सं ११६। वै सं ४६१। क मन्थार।

२ २६ प्रति सं ३। पत्र सं २७। ले काल सं ११७७। वै सं ४६२। क मन्थार।

२ २७. प्रति सं ४। पत्र सं ३६। ले काल सं १०२६ मंत्र मुद्रा ११। मूर्तों। वै सं १७।  
क मन्थार।

विशेष—टीकर परिच्छेद से है।

२ २८. प्रतिष्ठासारोद्धार—। पत्र सं ७६। या १२×४६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
विधि विद्या। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं २१४। क मन्थार।

२ २९. प्रतिष्ठासूक्तिसमूह—। पत्र सं २१। या ११× इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
विद्या। १ काल ×। ले माल सं ११२१। पूर्ण। वै सं ४६१। क मन्थार।

## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य ]

५०३० प्राणप्रतिष्ठा । पत्र सं० ३ । मा० ६३×६३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । ज भण्डार ।

५०३१ बाल्यकालवर्णन । पत्र सं० ४ से २३ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमें प्राते के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है ।

५०३२ वीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा । पत्र सं० ५८ । मा० १२३×८ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान वीस तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल सं० १६३४ मासोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी भेट्टन में एक प्रति भीर है ।

५०३३ वीसतीर्थङ्करपूजा । पत्र सं० ५३ । मा० १३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १६४५ पीप सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । ज भण्डार ।

५०३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५०३५ भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण । पत्र सं० १० । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । ङ भण्डार ।

५०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण । पत्र सं० १३ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । च भण्डार ।

विशेष—१०, ११, १२वां पत्र नहीं है ।

५०३७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरबंसलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ आश्विन सुदी ५ । वे० सं० १२० । ज भण्डार ।

५०३९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६११ मासोज सुदी १२ । वे० सं० ५० । झ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है ।

५०४० भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । मा० १०३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल सं० १६६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । ङ भण्डार ।



विशेष— विधि विधि रत्न श्रीतीर्थ्य बंजलपट्टि  
विद्यवचनविभागे उत्तमी मन्वारी ।  
कलवरवरपुर्ये कलवाचन वीजे  
विधिपतिगिठ कल्प्या वैद्यधामतथेव ॥

३४१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । के कल × १ । वै सं० २१ । छ मन्वारी ।

३४२. मत्स्यमरुतोत्सूबा— । पत्र सं० ५ । पा ११ × २ इव । मत्स्य-संस्कृत । विष्णु-पूजा ।

२ कल × १ । के कल × १ । पूर्ण । वै सं० २१७ । छ मन्वारी ।

३४३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । के कल × १ । वै सं० २२१ । छ मन्वारी ।

३४४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । के कल × १ । वै सं० २२४ । छ मन्वारी ।

३४५. मातृपद्मपूर्वासंमर्ह— धावतराव । पत्र सं० १६ से १९ । पा १२ × ७ इव । मत्स्य-  
हिन्दी । विष्णु-पूजा । २ कल × १ । के कल × १ । पूर्ण । वै सं० २२२ । छ मन्वारी ।

३४६. मातृपद्मपूर्वासंमर्ह— । पत्र सं० २४ से २६ । पा १२ × ७ इव । मत्स्य-हिन्दी ।  
विष्णु-पूजा । २ कल × १ । के कल × १ । पूर्ण । वै सं० २२९ । छ मन्वारी ।

३४७. मातृविष्णुपूर्वा— । पत्र सं० १ । पा ११ × २ इव । मत्स्य-संस्कृत । विष्णु-पूजा ।  
२ कल × १ । के कल × १ । पूर्ण । वै सं० २ । छ मन्वारी ।

३४८. धावमातृवीलीकृतोद्यापन— । पत्र सं० ३ । पा १२ × ६ इव । मत्स्य-संस्कृत ।  
विष्णु-पूजा । २ कल × १ । के कल × १ । पूर्ण । वै सं० २२९ । छ मन्वारी ।

३४९. मंत्रको के विष्णु— । पत्र सं० १४ । पा ११ × २ इव । मत्स्य-हिन्दी । विष्णु-पूजा ।  
कल्पनी कल्पनी का विष्णु । के कल × १ । वै सं० १९ । छ मन्वारी ।

विशेष— पत्र सं० ३२ है । निम्नलिखित मन्वारी के पत्र हैं—

१. पुस्तकबंध ( सं० २ )	७. अविष्णुवचन ( सं० २९ )
२. वेत्तहिन्दा ( सं० २१ )	८. कलविष्णुवचन ( सं० )
३. कलविष्णुवचन ( सं० २९ )	९. लीलाकृतकल ( सं० २२६ )
४. विष्णुवचन ( सं० १६ )	१०. श्रीवीलीकृतोद्यापन ( सं० ३१ )
५. विष्णुवचन ( सं० १६ )	११. कलविष्णु ( सं० २४ )
६. विष्णुवचन ( सं० २९ )	१२. कलविष्णुवचन ( सं० )

## पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]

१३ नारहमास की चौदस ( कोष्ठ १६६ )	३२. मकुरारोपण ( कोष्ठ )
१४ पाचमाह की चौदस ( " २५ )	३३. गणधरवलय ( " ४८ )
१५. अरातका मडल ( " १६६ )	३४. नवग्रह ( " ६ )
१६ मेघमालाप्रत ( " १५० )	३५. सुगन्धदशमी ( " ६० )
१७. रोहिणीप्रत ( कोष्ठ ६१ )	३६ सारसुतयत्रमडल ( " २८ )
१८ लन्घिविधान ( " ८१ )	३७. शास्त्रजी का मडल ( " १२ )
१९ रत्नत्रय ( " २६ )	३८. भक्षयनिधिमडल ( " १५० )
२० पञ्चकल्याणक ( " १२० )	३९ भठार्ई का मडल ( " ५२ )
२१ पञ्चपरमेष्ठी ( " १६३ )	४०. मकुरारोपण ( " — )
२२ रविवारप्रत ( " ८१ )	४१. कलिकुहपार्ष्वनाथ ( " ८ )
२३ मुक्तावली ( " ८१ )	४२ विमानशुद्धिशाक्तिक ( " १०८ )
२४. कर्मदहन ( " १४८ )	४३ बासठकुमार ( " ५२ )
२५ काजीबारस ( " ६४ )	४४ धर्मचक्र ( " १५७ )
२६ कर्मचूर ( " ६४ )	४५. लघुशान्तिक ( " — )
२७ ज्येष्ठजिनवर ( " ४६ )	४६ विमानशुद्धिशाक्तिक ( " ८१ )
२८ नारहमाह की पञ्चमी ( " ६५ )	४७. छिनवै क्षेत्रपाल व
२९. चारमाह की पञ्चमी ( " २५ )	चीबीस तीर्थङ्कर ( " २४ )
३० फलफादल [पञ्चमेरु] ( " २५ )	४८ धृतज्ञान ( " १५८ )
३१ पाँचवासी का मडल ( " २५ )	४९. दशलक्षण ( " १०० )

५०५० प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल X । वे० स० १३८ क । स्व मण्डार ।

५०५१. मडपविधि " । पत्र स० ४ । प्रा० ६X४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान ।

२० काल X । ले० काल स० १८७८ । पूर्णा । वे० स० १२४० । अ मण्डार ।

५०५२ मडपविधि " । पत्र स० १ । प्रा० ११३X५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० स० १८८ । अ मण्डार ।

५०५३ मध्यलोकपूजा । पत्र स० ५६ । प्रा० ११३X५३ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । २० नाम X । ले० काल X । पूर्णा । वे० स० १२५ । अ मण्डार ।

२०२४ महावीरनिर्वाणपुत्रा— । पत्र सं १। मा ११४२१ ई०। भाग-हस्त। विप-  
 युवा। र माप X। ले माप सं १०११। पूर्ण। के सं २१। अ मकार।

विशेष—निर्वाणपुत्र माया प्राकृत में बंद है।

२ २२ महावीरनिर्वाणपुत्रपुत्रा— । पत्र सं १। मा ११४२१ ई०। भाग-हस्त।  
 विप-युवा। र माप X। ले माप X। पूर्ण। के सं २२। अ मकार।

विशेष—इसी मध्यार में एक प्रति (के न १२१६) बंद है।

२०२६ महावीरपुत्रा—सुम्नाशय। पत्र सं २। मा १०४२२ ई०। भाग-हिन्दी। विप-युवा।  
 र माप X। ले माप X। पूर्ण। के सं २२२। अ मकार।

२ २० मांगीपुत्रीमिरीमेंदकपुत्रा—विपयुवक। पत्र सं ११। मा १२४२२ ई०। भाग-  
 हस्त। विप-युवा। र माप सं १०२१। ले माप सं १२४० ई०। पूर्ण। के सं १४२। अ  
 मकार।

विशेष—आठवें के १० पत्तों में विपयुवक हस्त चक्रमात्र लीप है।

अंशम अक्षरित विपयुवक है—

श्रीपुत्रके विपयुवकके श्रीपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्र ।  
 सुपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्र ॥१॥  
 मातृपुत्री विपयुवकके विपयुवकके श्रीपुत्री मातृपुत्री  
 मातृपुत्रीपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्र ।  
 हस्तपुत्री सुपुत्रीपुत्रपुत्रपुत्रपुत्री श्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री  
 हस्तपुत्री सुपुत्रीपुत्रपुत्रपुत्रपुत्री श्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री  
 श्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री ।  
 श्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री ॥१॥  
 हस्तपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री ।  
 विपयुवकके विपयुवकके श्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्रीपुत्री ॥१॥  
 अक्षरित विपयुवकके विपयुवकके  
 सुपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्रपुत्र ॥१॥

२०२५ प्रति सं १। पत्र सं १। ले माप सं १०११। के सं १२०२। अ मकार।

विशेष—आठवें पुत्री की कमपात्र के माप संकेतों की है। पत्तों का कुछ हिस्सा पूर्ण में पाए गया है।

## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान माहित्य ]

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन । पत्र स० २ । मा० १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२८ । पूर्ण । वै० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५०६० मुक्तावलीव्रतपूजा । पत्र स० २ । मा० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २७४ । च भण्डार ।

५०६१ मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० १६ । मा० ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वै० स० २७६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान । पत्र स० २४ । मा० ८३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वै० स० २४८ । ख भण्डार ।

५०६३ मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुवसागर । पत्र स० ३ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५६५ । ञ भण्डार ।

५०६४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ५६६ । छ भण्डार ।

५०६५ मेघमालाविधि । पत्र स० ६ । मा० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८६६ । झ भण्डार ।

५०६६ मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० ३ । मा० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्रत पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वै० स० ५८० । झ भण्डार ।

५०६७ रत्नत्रयउद्यापनपूजा । पत्र स० २६ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वै० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अपूर्णा प्रति और है ।

५०६८ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वै० स० ६६ । झ भण्डार ।

५०६९ रत्नत्रयजयमाला । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २६७ । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्घ्य दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० स० २७१ ) और है ।

५०७० प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६१२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वै० स० १५८ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० स० १५६ ) और है ।

१०७१. प्रति सं० ३। पत्र सं १। के कल ×। के सं १४०। अ मन्थार।

१०७२. प्रति सं० ४। पत्र सं २। के कल सं १ १२ पात्रवा सुटी ११। के सं १६०। अ मन्थार।

१०७३. प्रति सं० ५। पत्र सं ३। के कल ×। के सं २। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २१) भीर है।

१०७४. राजप्रवक्ष्यमात्र—। पत्र सं १। वा १ ×० हव। पात्रा—अमृत। विषय—पूजा।  
२ कल ×। के कल सं १४३। के सं १२६। अ मन्थार।

विशेष—अमृत में पर्यायवाची कल लिखे हुये हैं। पत्र २ के अमृतमलकवा मुलमानर इत तथा अमृत माल पूजा की हुई है।

१०७५. प्रति सं० ६। पत्र सं २। के कल सं १ १६ पात्रवा सुटी ११। के सं १२६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें इसी मूल में भीर है।

१०७६. राजप्रवक्ष्यमात्र—। पत्र सं १। वा १ २ ×४२ हव। पात्रा—अमृत। विषय—पूजा।  
२ कल ×। के कल सं १ २० पात्रवा सुटी ११। सुटी १। के सं २२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ७४१) भीर है।

१०७७. प्रति सं १। पत्र सं १। के कल ×। के सं ७४४। अ मन्थार।

१०७८. प्रति सं २। पत्र सं १। के कल ×। के सं २३। अ मन्थार।

१०७९. राजप्रवक्ष्यमात्रमात्र—अमृत। पत्र सं २। वा १२ ×०२ हव। पात्रा—हिण्टी।  
विषय—पूजा। २ कल सं १६२२ अमृत सुटी १। के कल ×। सुटी १। के सं १६३। अ मन्थार।

१०८०. प्रति सं ३। पत्र सं ७। के कल सं १६३०। के सं १३१। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें (के सं १२६, १३ १२० १२ १२२) भीर है।

१०८१. प्रति सं ३। पत्र सं २। के कल ×। के सं ४२। अ मन्थार।

१०८२. प्रति सं ४। पत्र सं ४। के कल सं १६२ अमृत सुटी १। के सं १४४। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें (के सं १४४ १४५) भीर है।

१०८३. प्रति सं ५। पत्र सं ७। के कल ×। के सं १६०। अ मन्थार।

५०८४ रत्नत्रयजयमाला . . . । पत्र सं० ३ । मा० १३३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । क मण्डार ।

५०८५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च मण्डार ।

५०८६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६०७ द्वि० मासोज बुदी १ । वे० सं० १८५ ।

क मण्डार ।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—प० आशाधर । पत्र सं० ४ । मा० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११० । अ मण्डार ।

५०८८ रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १२ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च मण्डार ।

५०८९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ज मण्डार ।

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मानन्दि । पत्र सं० १३ । मा० १०३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । च मण्डार ।

५०९१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३०५ । च मण्डार ।

५०९२ रत्नत्रयपूजा । पत्र सं० १५ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४७८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतियां ( वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६ ) और हैं ।

५०९३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० ३०१ । ख मण्डार ।

५०९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ मण्डार ।

५०९५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । सं वे० ६४७ । ङ मण्डार ।

विशेष—छोटलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०९६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पोप सुदी ३ । वे० सं० ३०१ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४ ) और हैं ।

५०९७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ४८२, ५२६ ) और हैं ।

५०९८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७५ । ट मण्डार ।

५०९९ रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ से ५ । मा० १०३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क मण्डार ।

४१ प्रति स २। पत्र सं ६। के काल ×। के सं ११। अक्षरम्भार।

४१ १ राजप्रथमपूजा—अक्षरम्भारस। पत्र सं १७। मा १२ × १३ १/२ इंच। भाषा—हिन्दी (पुरली)

विषय—पूजा। १ काल ×। के काल सं १५६ पीप कुटी ५। पूर्ण। के सं ५३६। अक्षरम्भार।

४१ २ प्रति सं २। पत्र सं १२। मा १३ १/२ × १३ १/२ इंच। के काल ×। पूर्ण। के सं १७२।

अक्षरम्भार।

विषय—ब्राह्मण प्रकृत तथा धर्मग्रंथ तीनों ही भाषा के ग्रन्थ हैं।

कवित्तम—

किङ्कि टिकिपिती कुट्टीते  
 रिबड् वाड कुट्टराड कलीते।  
 इय तेज् पवार काटिण्ड  
 कळेने काटिण्ड जयतिण्ड ॥

४१ ३. राजप्रथमपूजा—। पत्र सं २। मा १२ × १३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ७४२। अक्षरम्भार।

४१ ४ प्रति सं ७। पत्र सं ५३। के काल ×। के सं १३२। अक्षरम्भार।

४१ ५ अक्षरम्भार ३। पत्र सं ३३। के काल सं १३३५ पीप कुटी २। के सं १५२। अक्षरम्भार।

विषय—इसी अक्षरम्भार में एक प्रति (के सं १५५) भीर है।

४१ ६. प्रति सं ४। पत्र सं २। के काल ×। के सं १३। अक्षरम्भार।

विषय—इसी अक्षरम्भार में एक प्रति (के सं १६) भीर है।

४१ ७ प्रति सं ४। पत्र सं ३२। के काल सं १३७। के सं २१। अक्षरम्भार।

४१ ८. प्रति सं ६। पत्र सं ३३। के काल ×। के सं ११। अक्षरम्भार।

४१ ९. राजप्रथमपूजाविधान—। पत्र सं ३२। मा १ × १ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। १ काल ×। के काल ×। के सं १७। अक्षरम्भार।

४१ १० राजप्रथमपूजा—व राजकीर्ति। पत्र सं १। मा १ × १ १/२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा एवं विधि विधान। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२१। अक्षरम्भार।

४१ ११ राजप्रथमपूजा—। पत्र सं १२। मा १ २ × १ १/२ इंच। भाषा—ब्रह्मण्ड। विषय—पूजा एवं विधि विधान। १ काल ×। के काल सं १ ५६ काल कुटी ३। के सं १३६। अक्षरम्भार।

५१० रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० ३६ । मा० १३२७३ इ व । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । म भण्डार ।

५११४ रत्नत्रयप्रतोद्यापन । पत्र सं० ६ । मा० ७X५ इ व । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल X । ले० काल X । प्रपूर्ण । वे० सं० ६५० । इ भण्डार ।

विषय—दशो भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६५३ ) शीर है ।

५११५ रत्नावलीव्रतविधान—प्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । मा० १०X४३ इ व । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—विधि विधान एष पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ  
ण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्री गुरुभक्त्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रमुस गुरगण सेवित पाद ।

तत्त्व सिधु सागर तल्लित योजन एक निनाद ॥

सारद गुरु चरणे नमो नमु निरञ्जन हस ।

रत्नावलि तप विधि वहुँ तिम वाधि सुष वषा ॥२॥

ठुपर्द—

जबूदीप भरत उदार, पदू बदी धरणीधर सार ।

तेह मध्य एक मार्ग सुखंड, पञ्चम्लेशधर्माति प्रसद ॥

चंद्रपुरी नमरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम कीसिधाम ।

उन्वेस्तर जिनबर प्रासाद, अन्तर ढोल पटहनात नाद ॥

धन्तिम—

मनुक्रमि सुतनि देईराज, दिशा लेई करि प्रातम वाज ।

शुक्ति काम सुप हूज प्रमाण, ए भद्र पूरमल्लह वाण ॥१८॥

रूहा—

रत्नावलि विधि भादरु, भावि सू नरनारि ।

तिम मन पद्धित फल लहुँ, प्रासु भव विस्तारि ॥१९॥

मनह मनारण सपजि हीर्द, नारी वेद विद्येद ।

पाप पदू सवि कुभाकि, रत्नावलि वहुँ भेद ।

जे कसिसुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।

हर्य सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उजास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरूपण श्री पात सर्वांतर सम्बन्ध समाप्त ॥



अं १६४२ वर्षे वीज सुदी २ शोभे च इच्छास्य पूजनसङ्गती तत्पुत्रं च वरु नाम निश्चितं ॥

५११६ रविशुभोद्यायनपूजा—शुभैशुकीति । वन अं १ । या १९×२३ दण । माता—संस्तुत ।

विषय—पूजा । र काल × । मे काल × । वे तं २ । अ मन्वार ।

५११७. प्रति सं २ । वन अं १ । मे काल त १८ । वे तं १२ । अ मन्वार ।

५११८ देवानदीपूजा—विश्वमूपय । वन अं १ । या १९२×९ दण । माता—संस्तुत । विषय—

पूजा । र काल तं १७१६ । मे काल अं १२४ । पूर्ण । वे अं ३ । अ मन्वार ।

विशेष—ग्रन्थिच—  
अरण्येभिरभिलष्यचरन्ति अगुण्यमानि विना वृष्युपयो ।  
अवराचरान्ते परिपूर्णतन्तुः कन्या वनला इवचतु विष्टिः ॥

इति श्री देवानदी पूजा समाप्ता ।

इत्यत्र दूधरा नाम धमूक भोदि पूजा भी है ।

५११९ ईश्वर—संगाराय । वन अं ४ । या १३×२ दण । माता—संस्तुत । विषय—पूजा । र

काल × । मे काल × । वे अं ४३६ । अ मन्वार ।

५१२० ऐश्वर्यीश्वर्यद्वन्द्वविधान—केशवसेन । वन तं १४ । या २५×२२ दण । माता—संस्तुत ।

विषय—पूजा विधान । र काल × । मे काल तं १७७५ । पूर्ण । वे त ७३ । अ मन्वार ।

विशेष—वचमाला द्विती में है । इती मन्वार मे २ प्रतिष्ठां वे अं ७३३, १९४ पीर है ।

५१२१ प्रति सं २ । वन अं ११ । मे काल अं १७१२ वीज सुदी १३ । वे अं १३४ । अ

मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार मे २ प्रतिष्ठां ( वे अं २९ १६२ ) पीर है ।

५१२२ प्रति सं ३ । वन अं १ । मे काल अं १२७३ । वे अं ११ । अ मन्वार ।

५१२३ शक्तिश्रीशुभोद्यायन— । वन अं २ । या ११×६ दण । माता—संस्तुत । विषय—पूजा ।

र काल × । मे काल × । पूर्ण । वे अं ३२ । अ मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार मे एक प्रति ( वे तं ७४ ) पीर है ।

५१२४ प्रति सं १ । वन तं १ । मे काल तं १२९९ । वे अं १६२ । अ मन्वार ।

५१२५. प्रति सं ३ । वन अं २ । मे काल × । वे तं १६६ । अ मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार मे एक प्रति ( वे तं १६२ ) पीर है ।

५१२६ प्रति सं ४ । वन अं ७ । मे काल × । वे अं १५४ । अ मन्वार ।

५१२७ लघुअभिषेकविधान । पत्र स० ३ । भा० १२१×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

भगवान् के अभिषेक की पूजा व विधान । २० काल × । ले० काल स० १६६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १७७ । ज मण्डार ।

५१२८ लघुकल्याण । पत्र स० ८ । भा० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६३७ । क मण्डार ।

५१२९ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० १६२९ । ट मण्डार ।

५१३० लघुअनन्तव्रतपूजा । पत्र स० ३ । भा० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८३९ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वै० स० १८५७ । ट मण्डार ।

५१३१ लघुशाक्तिकपूजाविधान । पत्र स० १५ । भा० १०३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६०६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वै० स० ७३ । अ मण्डार ।

५१३२ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वै० स० ८८३ । अ मण्डार ।

५१३३ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७१ । वै० स० ६६० । क मण्डार ।

विशेष—राजूलाल भौसा ने जयपुर में प्रतिर्लिपि की थी ।

५१३४ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ । वै० स० ११६ । छ मण्डार ।

५१३५ प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वै० स० १४२ । ज मण्डार ।

५१३६ लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र स० ६ । भा० १०३×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

विधि विधान । २० काल × । ले० काल स० १६०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वै० स० १५८ । ज मण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७ लघुस्नपनटीका—प० भावशर्मा । पत्र स० २२ । भा० १२×१५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-अभिषेक विधि । २० काल स० १५६० । ले० काल स० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० २३२ । अ मण्डार ।

५१३८ लघुस्नपन । पत्र स० ५ । भा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७३ । ग मण्डार ।

५१३९ लघुविधानपूजा—हर्षकीर्ति । पत्र स० २ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २२०६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० स० १६४६ ) मौजूद है ।

२१४० प्रति स २। पत्र तं ३। ले कल ×। वे सं १२४। अ मन्वार।

२१४१ प्रति स० ३। पत्र त ३। ले कल। वे सं ७७। अ मन्वार।

२१४२ अग्निविधानपूजा—। पत्र त ६। वा ११×२ द. व। मत्वा—हंसक। विषय पूजा।  
८ कल ×। ले कल ×। मूर्त्ति। वे सं ४७२। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार मे १ प्रतिष्ठा ( वे सं ४२४ २ २ ) पीर है।

२१४३ प्रति स० ३। पत्र तं १२। ले कल ×। वे त ११५। अ मन्वार।

२१४४ प्रति स ३। पत्र तं १। वे काव ×। वे तं ७। अ मन्वार।

२१४५. प्रति सं ४। पत्र तं १। ले कल तं १२२। वे तं १२३। अ मन्वार।

२१४६ प्रति स० ३। पत्र त ३। ले कल ×। वे तं ११८। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार मे २ प्रतिष्ठा ( वे त ११२, ११ ) पीर है।

२१४७ प्रति स ३। पत्र तं ७। ले कल ×। वे सं ११७। अ मन्वार।

२१४८ प्रति सं ७। पत्र तं २१। ले काव सं १२। मत्वा मुरी १। मूर्त्ति। वे सं ३१७। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार मे एक प्रति ( वे तं ११७ ) पीर है।

२१४९. प्रति सं ८। पत्र तं १४। ले कल सं १२१२। वे तं ११४। अ मन्वार।

२१५० प्रति सं ३। पत्र त ७। ले कल त १७ मत्वा मुरी १। वे त ३१। अ मन्वार।

विशेष—मंडल का विषय भी किया हुआ है।

२१५१ अग्निविधानपूजा—। पत्र तं ६। वा ११×२ द. व। मत्वा—हंसक।

विषय—पूजा। ८ कल ×। ले कल त मत्वा मुरी ३। मूर्त्ति। वे सं ७४। अ मन्वार।

विशेष—मन्वाला कालीयाव मे प्रतिष्ठित करके पीरियों के मन्वार में मडाई।

२१५२. प्रति सं २। पत्र तं १। ले कल ×। वे सं १७२। अ मन्वार।

२१५३ अग्निविधानपूजा—ज्ञानमन्। पत्र तं २१। वा ११× द. व। मत्वा—हिन्दी। विषय—  
पूजा। ८ कल त १२२१। वे कल सं १२२१। मूर्त्ति। वे सं ७४४। अ मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार मे २ प्रतिष्ठा ( वे सं ७४३ ७४४/१ ) पीर है।

२१५४ अग्निविधानपूजा—। पत्र त १३। वा ११×२१ द. व। मत्वा हिन्दी। विषय—पूजा।

८ कल ×। ले कल ×। मूर्त्ति। वे सं १७। अ मन्वार।

५१५० लब्धिविधानउद्यापनपूजा " । पत्र स० ८ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वे० स० ६६२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक मपूर्णा प्रति ( वे० स० ६६१ ) शीर है ।

५१५६ प्रति स० २ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० २२७ । ज मण्डार ।

५१५७ वास्तुपूजा । पत्र स० ५ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—गृह प्रवेश  
पूजा एव विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२४ । अ मण्डार ।

५१५८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १६३१ वैशाख सुदी ८ । वे० स० ११६ । छ  
मण्डार ।

विशेष—उद्यवनाल पाठ्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९ प्रात स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६१६ वैशाख सुदी ८ । वे० स० २० । ज  
मण्डार ।

५१६० विद्यमानश्रीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० २ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० स० ६७२ । अ मण्डार ।

५१६१ विद्यमानश्रीसतीर्थङ्करपूजा—जौहरीनाल विलाला । पत्र स० ४२ । मा० १२×७३ इ च ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३६ । अ  
मण्डार ।

५१६२ प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ६७५ । छ मण्डार ।

५१६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० ६७८ । ज  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ६७६ ) शीर है ।

५१६४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति शीर है ।

५१६५ विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
विधि विधान एव पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । अ मण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी मे भीग गये हैं ।

५१६६ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२१६० विमानसुविष्टिपूजा—। पत्र सं १२। मा १९ × ७ इंच। माता-संतुष्ट। विभव-  
पुत्र। र काल ×। ले काल सं १२९। पूर्ण। वे सं ७४६। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वे सं १६९) भी है।

२१६१ प्रति सं २। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १६५। अ नम्बर।

विशेष—शालिवाह भी विवा है।

२१६२ विवाहपद्धति—सोमसेम। पत्र सं २३। मा १२ × ७ इंच। माता-संतुष्ट। विभव भी  
विभव विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६२। अ नम्बर।

२१६३ विवाहविधि—। पत्र सं ५। मा २ × ३ इंच। माता-संतुष्ट। विभव-भीष विभव  
विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११३६। अ नम्बर।

२१६४ प्रति सं २। पत्र सं ४। ले काल ×। वे सं १७४। अ नम्बर।

२१६५ प्रति सं ३। पत्र सं ३। ले काल ×। वे सं १४४। अ नम्बर।

२१६६ प्रति सं ४। पत्र सं ६। ले काल सं १७२। लोह मुद्रा १९। वे सं १२९। अ नम्बर।

२१६७ प्रति सं ५। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १४६। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वे सं २४६) भी है।

२१६८ विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूबाबू। पत्र सं ५। मा ११ × ७ इंच। माता-विष्णु।  
विभव-पुत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७४२। अ नम्बर।

२१६९ विहार नम्बर—। पत्र सं ७। मा ५ × १३ इंच। माता-संतुष्ट। विभव विमान।  
र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७७३। अ नम्बर।

२१७० अतन्त्रिक—माहय। पत्र सं ३४। मा १३ × ६ इंच। माता-संतुष्ट। विभव-विधि  
विमान। र काल सं १६३९। ले काल सं १६४६। पूर्ण। वे सं १३। अ नम्बर।

विशेष—यसके पूर्ण में एक बाले विष्णु के दस रूप की रचना की थी। यन्त्र में प्रतिमिति हुई।

२१७१ अतन्त्रिक—। पत्र सं १। मा १३ × ६ इंच। माता-विष्णु। विभव-कटी के नाम।  
र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १३७। अ नम्बर।

विशेष—इसके प्रतिमिति ९ वही पर अन्त, माता तथा अन्त प्रति के विभव हैं। कुल ६ विभव हैं।

२१७२ अतन्त्रिकसमूह—। पत्र सं १६५। मा १२ × २ इंच। माता-संतुष्ट। विभव-  
पुत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १२। अ नम्बर।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
वारहमी चौतीसब्रतपूजा	श्रीसूयण	संस्कृत	ने० काल म० १८०० पीप बुदी ४
विशेष—देवगिरि में पार्वरनाथ चैत्यालय में लिखी गई।			
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	ते० काल १८०० पीप बुदी ६
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " पीप बुदी ६
वीसतीर्थद्वारपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानसूयण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
पोह्यकारणा	—	"	
दशतक्षरपूजाजयमाल	रङ्ग	अपभ्रंश	
लघुस्वयम्भुस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	ने० काल स० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमण्डलपूजाविधान	शुणनन्दि	"	
सत्वार्यसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसप्तपत्तिपूजा	केशवमेन	"	
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	२० काल १६६५
नवकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	"	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

२१८ अठविंशत्यम्—। पत्र तं ४। मा ११४×४२ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-विधि विधान। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के तं १७१। द्रव्यम्।

विशेष—इती मन्थार में ३ प्रतिष्ठा (के तं ४२४ ११२, २ ३७) मीर है।

२१८१ प्रति स २। पत्र तं १। से काल ×। के त १५। द्रव्यम्।

२१८२ प्रति स ३। पत्र तं १६। से काल ×। के तं १७१। द्रव्यम्।

२१८३ प्रति स ४। पत्र तं १। से काल ×। के तं १७। द्रव्यम्।

विशेष—श्रीशक्ति तीर्थस्वामी के पंचमन्थारण की विधियां भी यी हुई हैं।

२१८४ अठविंशत्यम्—श्रीशक्तितीर्थस्वामी। पत्र तं १२। मा ११४×४२ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-विधान। र काल व १७१७ पात्रोय सुती १। से काल तं १ १२२ मन्थार सुती ६। पूर्ण। के तं १११। द्रव्यम्।

२१८५ अठविंशत्यम्—। पत्र तं ४। मा १२×४ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-वत् विधि। र काल ×। से काल ×। अर्घ्य। के तं १७२। द्रव्यम्।

विशेष—इती मन्थार में एक प्रति (के तं १२४६) मीर है।

२१८६ प्रति स २। पत्र तं ६ के १२। से काल ×। अर्घ्य। के तं १ २१। द्रव्यम्।

२१८७ अठविंशत्यम्—। पत्र तं ११। मा १२×४ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-वत् विधि। र काल ×। से काल ×। अर्घ्य। के त १ ११। द्रव्यम्।

२१८८ अठविंशत्यम्—श्री शिवकाण्डि। पत्र तं ६। मा ११×४२ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-वत् विधान। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के तं १७१४। द्रव्यम्।

२१८९ अठविंशत्यम्—। पत्र त ४११। मा ११×४२ द्रव्य। माता-द्विती। विष्णु-वत् विधान। र काल ×। से काल तं १ ६७। अर्घ्य। के तं ४२२। द्रव्यम्।

विशेष—विष्णु पाठों की संख्या है—

नाम	कक्षा	मात्रा
पञ्चमन्थारविधान	सुमन्थार	द्विती
अष्टमन्थारविधान	—	"
श्रीशक्तितीर्थस्वामी	—	"
श्रीशक्तितीर्थस्वामी	—	"

पञ्चमेरुजयमाला	भूपरदास	हिन्दी
ऋषिमठलपूजा	गुरानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
भ्रान्तप्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण प्रतोद्यापन	बेधावसेन	"
मेघमालाप्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिप्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा [ बृहद् ]	—	"
पञ्चमीप्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयप्रतोद्यापन [ बृहद् ]	केशवसेन	"
रत्नत्रयप्रतोद्यापन	—	"
भ्रान्तप्रतोद्यापन	गुराचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासातचतुर्दशीप्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीप्रतोद्यापन	—	"
अष्टाङ्गिकाप्रतोद्यापन	—	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यप्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिप्रतोद्यापन	—	"
एगोकारपैत्तिसीपूजा	—	"
रत्नावलिप्रतोद्यापन	—	"
जिर्नगुरासपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानप्रतोद्यापन	—	"



वैश्वदेविकोपासन	—	वैश्वदेव
वायविकोपासन	—	"
पैद्विहीनोपासन	—	"
दर्शकुरवटीपासन	—	"
ब्रह्मण्योपासन	श्री श्रुत	"
विश्वामित्रोपासन	वायव्य	"
हाथपाददर्शकोपासन	—	"
मन्त्रविशालोपासन	—	"

२१३ प्रति सं० २। ११ व २१६। वे काल ×। वे सं १८४। अन्वयः।

विष्णु पुत्रादीं वा संख्यं ह्ये—

नाम	कर्त्ता	शाखा
वैश्वदेविकोपासन	—	वैश्वदेव
पैद्विहीनोपासन	—	द्विहीन
ब्रह्मण्योपासन	वैश्वदेव	वैश्वदेव
वधवसुवटीपासन	ब्रह्मण्य	"
रत्नवसुवटीपासन	—	"
अन्वयवटीपासन	ब्रह्मण्य	"
पुष्पाङ्गवटीपासन	—	"
ब्रह्मण्यवटीपासन	—	"
ब्रह्मण्यवटीपासन	व दुर्योधन	"
ब्रह्मण्यवटीपासन	—	"
दर्शकुरवटीपासन	—	"
वैश्वदेविकोपासन	—	"

२१३१ ब्रह्मण्यवटीपासन—। व सं १। या २८४ व व। ब्रह्मण्य-वैश्वदेव। विष्णु-विशाल।

२ काल ×। वे काल ×। दुर्योधन सं १८४। अन्वयः।

५१६२ वृहद्गुरावलीशातिमङ्गलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल स० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क मण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ मण्डार ।

५१६४. प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६५० । च मण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५६ । ङ मण्डार ।

५१६६ पणवतिचैत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । अ मण्डार ।

विशेष—मन्त्रिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।  
गच्छे नदोतटास्थे यगदितिह मुम्बे सु छकर्मामुनोन्द्र ॥  
ख्यातोसोमिश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।  
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७ प्रति स० ६ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख मण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल । पत्र स० १८ । आ० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा सुदी १३ । वे० स० ३२६ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्णायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी मण्डार में ५ प्रतिया ( वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४ ) और हैं ।

५१६९ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० भासोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति ( वे० स० ७२१ ) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १६८ । ख मण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६०२ मगतिसर सुदी १० । वे० स० ३६० । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० स० ३५६ ) और है ।

२०७३ प्रति सं० ६। वष सं १२। ले नाल ×। के सं १०। अ मन्थार।

मन्थार। २२ ४ प्रति सं ७। वष सं ११। ले नाल सं १०२ मन्थार। २२। के सं १०। अ मन्थार।

२२ ५ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं २१। मा ११×२२ सं १। माता-मन्थार।  
विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल ×। पूर्ण। के सं ०५७। अ मन्थार।

विषय—संस्कृत टीका सहित है। इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ०६) भी है।

२२०६ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं ११। मा ११×२२ सं १। माता-मन्थार। विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल ×। पूर्ण। के सं १११। अ मन्थार।

२२ ७ प्रति सं २। वष सं १२। ले नाल ×। के सं १११। अ मन्थार।

विषय—संस्कृत में लिखल रिवा हुआ है। इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १११) भी है।

२२ ८ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं १२। मा ११×२२ सं १। माता-संस्कृत। विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल सं १०२२ माता-पुत्री २। पूर्ण। के सं १४१। अ मन्थार।

विषय—गीतों के मन्थार में संस्थापन के वाचनार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

२२ ९ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं १०। मा ११×२२ सं १। माता-संस्कृत संस्कृत।

विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल ×। पूर्ण। के सं १४२। अ मन्थार।

२२१ प्रति सं २। वष सं १। ले नाल ×। के सं ७७। अ मन्थार।

२२११ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं २२। मा ११×२२ सं १। माता-हिन्दी मन्थार।

विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल सं १११२ माता-पुत्री २। पूर्ण। के सं १११। अ मन्थार।

२२१२ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं २१। मा ११×२२ सं १। माता-मन्थार।

मन्थार। विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल ×। पूर्ण। के सं १११। अ मन्थार।

२२१३ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं ११। मा ११×२२ सं १। माता-संस्कृत।

विषय-पूजा। र नाल सं १११४ माता-पुत्री ७। ले नाल सं १०२२ माता-पुत्री १। पूर्ण। के सं २१२। अ मन्थार।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २ ) भी है।

२२१४ प्रति सं ३। वष सं २१। ले नाल ×। के सं ३। अ मन्थार।

२२१५ वाहराकारसुत्रमन्थार—। वष सं २१। मा ११×२२ सं १। माता-संस्कृत। विषय-पूजा। र नाल ×। ले नाल ×। पूर्ण। के सं ११। अ मन्थार।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ११५) भी है।

५०१६ प्रति स० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ७५१ । छ मण्डार ।

५२१७ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३ मे २२ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ४२४ । च मण्डार ।

विशेष—प्राचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमावाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५०१८ प्रति स० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १८६३ सावण सुदी ११ । वे० स० ४२५ । च मण्डार ।

विशेष—हत्ती मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ४२६ ) भी है ।

५०१९ प्रति स० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० स० ७२ । छ मण्डार ।

५२२० षोडशकारणपूजा ( धृष्टदू ) । पत्र सं० २६ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१८ । क मण्डार ।

५२२१ प्रति स० ० । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ४२६ । छ मण्डार ।

५२२२ षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्त्ति । पत्र सं० ३७ । भा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल स० १७६६ मासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५०७ । छ मण्डार ।

५२२३ षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २१ । भा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१४ । छ मण्डार ।

५२२४ शत्रुञ्जयगिरिपूजा—महारक विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६७ । छ मण्डार ।

५२२५ शरदुत्सवशीपिका ( महल विधान पूजा )—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ । भा० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६४ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्रीवीर धारसा नत्सा वीरनदिमहागुरु ।

सिंहनदिरहं वक्ष्ये शरदुत्सवशीपिका ॥१॥

ध्यात्रं भारते क्षेत्रे जन्तुर्द्वीपमनोहरे ।

रुग्णदेशेस्ति विख्याता मिथिलानाम्ना पुरी ॥२॥

मन्त्रिपाठ— एव महप्रभाष च दृष्ट्वा लग्नास्तपा जना ।

कतुं प्रभावनां च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२॥

तदाप्रमृत्पारम्येद प्रमिद्ध जगतीक्षणे ।

दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहोत च वेद्युवादिर्कुर्यावकी ॥२॥



५२३२ शान्तिपाठ ( बृहद् )

। पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १६५ । ज मण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३ शान्तिचक्रपूजा

। पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १३६ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १७६ ) भी है ।

५०३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२२ ) भी है ।

५०३५ शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०५ । छ मण्डार ।

५०३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ६८२ । च मण्डार ।

५२३७ शांतिमहलपूजा । पत्र सं० ३८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०६ । छ मण्डार ।

५२३८ शांतिपाठ

। पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त

में पढ़ा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२२७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां ( वै० सं० १२३८, १३१८, १३२४ ) भी हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची

। पत्र सं० ३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६६४ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ में उद्धृत है ।

५२४० शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७४७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से सप्रहीत है ।

५०४१ शास्त्रगुरुजयमाल

। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वै० सं० ३४२ । च मण्डार ।

५२४२ शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८८ । क मण्डार ।

२२४३ श्वस्तपत्रपत्राल प्रारम्भ करने की विधि-----। पत्र सं १। या १ २×४२ इंच। अना-  
संस्कृत। विषय-विषय। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १५४। छ मन्थार।

२२४४ शासनदेवता-विवाह-----। पत्र सं २१ से २२। या ११×२३ इंच। अना-संस्कृत।  
विषय-पूजा विधि विवरण। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ७७७। छ मन्थार।

२२ २ रिक्करविद्यामन्त्रपूजा-----। पत्र सं ७३। या ११×२ इंच। अना-संस्कृत। विषय-  
पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२। छ मन्थार।

२२४५ शीतलामन्त्रपूजा-वर्मामूषण। पत्र सं ३। या १ २×२ इंच। अना-संस्कृत। विषय-  
पूजा। र काल ×। ले काल सं १२२१। पूर्ण। के सं २२३। छ मन्थार।

२२४७. प्रति सं० २। पत्र सं १। ले काल सं १२३१ प्र मन्त्रपुत्री १४। के सं १२२।  
छ मन्थार।

२२४८ शुक्रपञ्चमीश्रावणपूजा-----। पत्र सं ७। या १२×२३ इंच। अना-संस्कृत। विषय-  
पूजा। र काल सं १। ले काल ×। पूर्ण। के सं ३४। छ मन्थार।

विषय-रचना सं विष्णु मन्थार ३- अन्ते रंज मन्थ वसु मन्थ।

२२४९ शुक्रपञ्चमीश्रावणोपासनापत्रपूजा-----। पत्र सं ३। या ११×२ इंच। अना-संस्कृत।  
विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ३२७। छ मन्थार।

२२५ सुतश्रावणपूजा-----। पत्र सं २। या ११×२ इंच। अना-संस्कृत। विषय-पूजा।  
र काल ×। ले काल सं १ ११ यावत् पुत्री १२। पूर्ण। के सं ७२३। छ मन्थार।

२२२१ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल ×। के सं १५७। छ मन्थार।

२२२२ प्रति सं ३। पत्र सं १३। ले काल ×। के सं ११७। छ मन्थार।

२२२३ सुतश्रावणपूजा-----। पत्र सं १। या ११× २ इंच। अना-संस्कृत। विषय-  
पूजा। काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १९९। छ मन्थार।

२२२४ सुतश्रावणोपासनापत्रपूजा-----। पत्र सं ११। या ११×२३ इंच। अना-संस्कृत।  
विषय पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ७२४। छ मन्थार।

२२२५ सुतश्रावणोपासन-----। पत्र सं १। या १ २×२ इंच। अना-संस्कृत। विषय-  
पूजा। र काल ×। ले काल सं १२२२। पूर्ण। के सं १। छ मन्थार।

२२२६ सुतपूजा-----। पत्र सं ४। या १ २×९ इंच। अना-संस्कृत। विषय-पूजा। र  
काल ×। ले काल सं ७६६ पुत्री ३। पूर्ण। के सं १ ७७। छ मन्थार।

५२५७ श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर । पत्र स० २ से १३ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । क मण्डार ।

५२५८ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३८६ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ३५० ) भी है ।

५२५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८४ । ज मण्डार ।

५२६० श्रुतस्कंधपूजा ( ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा )—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । मा० १२×५ इ च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १८४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२२ । अ मण्डार ।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था ।

५२६१ श्रुतस्कंधपूजा । पत्र स० ५ । मा० ८३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । अ मण्डार ।

५२६२ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २६२ । ख मण्डार ।

५२६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८८ । ज मण्डार ।

५२६४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ४६० । व्य मण्डार ।

५२६५ श्रुतस्कंधपूजाकथा । पत्र स० २८ । मा० १२३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा तथा कथा । २० काल × । ले० काल वीर स० २४३४ । पूर्ण । वे० स० ७२८ । क मण्डार ।

विशेष—चावली ( भागदा ) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर स० २४५७ को पशालालजी  
गाधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया । जौहरीलाल फिरोजपुर जि० मुढगावां ।

वनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है ।

५२६६ सकलीकरणाविधि । पत्र स० ३ । मा० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिया ( वे० स० ८०, ४७१, ६६१ ) भी हैं ।

५२६७ प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० ७२३ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७२४ ) भी है ।

५२६८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३६८ । व्य मण्डार ।

विशेष—माचार्य हर्षकीर्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।



१२६६. सकञ्चीकरणम्—। पत्र नं २१। पा ११×२ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि

विधान। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै स १७१। अ नम्बर।

१२७० प्रति सप्त ३। पत्र नं ३। नै काल ×। नै नं ७२७। अ नम्बर।

१२७१ प्रति स ३। पत्र नं ३। नै काल ×। नै नं १२२। अ नम्बर।

विशेष—इसो नम्बर में एक प्रति (नै नं ११६) धीर है।

१२७२ प्रति स ४। पत्र नं ७। नै काल ×। नै नं १२४। अ नम्बर।

१२७३ प्रति स ५। पत्र नं ३। नै काल ×। नै नं ४२४। अ नम्बर।

विशेष—इतिहास पर संस्कृत टिप्पण किया हुआ है। इसो नम्बर में एक प्रति (नै स ४४३) धीर है।

१२७४ सप्तारविधि—। पत्र नं १। पा १ × ४२ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि

विधान। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै नं १२१६। अ नम्बर।

विशेष—इसो नम्बर में एक प्रति (नै नं १२११) धीर है।

१२७५ सप्तपत्नी—। पत्र नं २ नै १६। पा ७१ × २ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै नं ११६६। अ नम्बर।

१२७६ सप्तपरमेश्वाकपूजा—। पत्र नं ३। पा १ × २ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै नं १६६। अ नम्बर।

१२७७ प्रति स ३। पत्र नं १२। नै काल ×। नै नं ७६१। अ नम्बर।

१२७८ सप्तपिपूजा—विद्यदास। पत्र नं ७। पा २ × ४ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै स २१२। अ नम्बर।

१२७९ सप्तपिपूजा—कश्मीरसेवा। पत्र नं ६। पा ११ × २ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै नं १२७। अ नम्बर।

१२८० प्रति स ३। पत्र नं १। नै काल नं १२। भाषिक मुद्रा २। नै नं ४१। अ नम्बर।

१२८१ प्रति स ३। पत्र नं ७। नै काल ×। नै नं ११६। अ नम्बर।

विशेष—कुलक मुद्रणकीति द्वारा उचित वादयपुर के महाश्रीर की संस्कृत पूजा की है।

१२८२ सप्तपिपूजा—विश्वमूषक। पत्र नं १६। पा १ × २ इत्यं। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। नै काल नं ११७। पूर्ण। नै नं ३१। अ नम्बर।

५२८३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० स० १२७ । छ  
मण्डार ।

५२८४ समर्षिपूजा । पत्र स० १३ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०६१ । अ मण्डार ।

५२८५ समवशरणपूजा—कलितकीर्त्ति । पत्र स० ४७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७७ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० ४५१ । अ मण्डार ।

विशेष—बुध्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६ समवशरणपूजा ( वृहद् )—रूपचन्द्र । पत्र स० ६४ । आ० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय पूजा । २० काल स० १५६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ४५५ । अ मण्डार ।

विशेष—रत्नकाल निम्न प्रकार है— अतीतिहगनन्दमद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षेव मासे ॥

५२८७ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वै० स० २०६ । ख  
मण्डार ।

विशेष—प० पद्मालालजी जीवनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८ प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १६४० । वै० स० १३३ । छ मण्डार ।

५२८९ समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र स० २८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ वैशाख सुदी १ । वै० स० ३८४ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

व्धाजस्तुत्यार्चा गुणवीतराग ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमान ।

श्रीसोमकीर्त्तिविकासमान रत्नेपरत्नाकरचार्ककीर्त्ति ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणो के पठनार्थ छाजूराम पाटनी को पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० स० ४०५ ) और है ।

५२९० समवशरणपूजा । पत्र स० ७ । आ० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० स० ७७४ । छ मण्डार ।

५२९१ सम्भेदशिक्षरपूजा—गङ्गादास । पत्र स० १० । आ० ११३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वै० स० २०११ । अ मण्डार ।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० स० ५०६ ) और है ।

५२९२ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६२१ मगसिर बुदी ११ । वै० स० २१० । ख  
मण्डार ।

१२६६ सक्कीकरस्य—। पत्र न ११। पा ११×३ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-विधि

विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त १७१। अ नम्बर।

१२७ प्रति स २। पत्र नं ३। ले काल ×। के त ७२७। अ नम्बर।

१२७१ प्रति स ३। पत्र नं ३। ले काल ×। के त १२२। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (के त १११) भी है।

१२७२ प्रति स ४। पत्र नं ७। ले काल ×। के त ११४। अ नम्बर।

१२७३ प्रति स १। पत्र नं ३। ले काल ×। के त ४२४। अ नम्बर।

विशेष—हानिवा नर संस्तुत टिप्पण विना हुआ है। इसी नम्बर में एक प्रति (के त ४२१) भी है।

१२७४ सधारविधि—। पत्र नं १। पा १ × ४२ द. प। मत्वा-संस्तुत संस्तुत। विष्णु

विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त १२१६। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (के त १२११) भी है।

१२७५ सप्तपदो—। पत्र नं २ के १६। पा ७२×२ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-विधान।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त १११६। अ नम्बर।

१२७६ सप्तपदस्थानपूजा—। पत्र नं ३। पा १ २×३ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-

पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त ११६। अ नम्बर।

१२७७ प्रति स ३। पत्र नं १२। ले काल ×। के त ७६१। अ नम्बर।

१ ७८ सप्तपिपूजा—विद्यदास। पत्र नं ७। पा ४×२ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-पूजा।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त १२२। अ नम्बर।

१२७९ सप्तपिपूजा—ब्रह्मीसम। पत्र नं ६। पा ११×३ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-पूजा।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के त ११७। अ नम्बर।

१२८० प्रति स ३। पत्र नं ४। ले काल १ २ नदीक मुदी १। के त ४ १। अ नम्बर।

१२८१ प्रति स ३। पत्र नं ७। ले काल ×। के त १११। अ नम्बर।

विशेष—आरक मुस्लिमों के द्वारा पवित्र नदीजल के माध्यम से संस्तुत पूजा की है।

१२८२ सप्तपिपूजा—विद्यमूक्य। पत्र नं १६। पा १ २×२ द. प। मत्वा-संस्तुत। विष्णु-

पूजा। र काल ×। ले काल नं १११। पूर्ण। के त ३ १। अ नम्बर।

५३०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० २६१ । अ मण्डार ।

५३०७ सर्वतोभद्रपूजा । पत्र स० ५ । आ० ६X३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३६३ । अ मण्डार ।

५३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र स० १ । आ० ६X६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३३४ । अ मण्डार ।

५३०९. मरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र स० ६ । आ० ८X४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
२० काल X । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिष्ठा ( वे० स० ६८६, १३११, ११०८, १०१० ) भी हैं ।

५३१० सरस्वतीपूजा । पत्र स० ३ । आ० ११X५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८०३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० स० ८०२ ) भी है ।

५३११ सरस्वतीपूजा—रुघी पन्नालाल । पत्र स० १७ । आ० १२X८ इ च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-पूजा । २० काल स० १६२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२१ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे इसी वेदन मे १ प्रति भी है ।

५३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बरुशी । पत्र स० ८ मे १७ । आ० ११X५ इ च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ७७१ । अ  
मण्डार ।

५३१३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० ८०४ । अ मण्डार ।

५३१४ सरस्वतीपूजा—प० सुधजनजी । पत्र स० ५ । आ० ६X४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ मण्डार ।

५३१५ सरस्वतीपूजा । पत्र स० २१ । आ० ११X५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा ।  
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ मण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६ सहस्रकूटमिनालयपूजा । पत्र स० १११ । आ० ११३X४ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० २१३ । अ मण्डार ।

विशेष—प० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२३३ प्रति सं ३। पत्र सं ७। ले काल सं १८३३ मीसाह सुदी ३। के सं ४१९। अ  
 नम्बर।

३२३४ सम्मोदशितारपूजा—प कवाहरकाह। पत्र सं १९। वा १९×३८। नवा-हिन्दी।  
 विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ७४८। अ नम्बर।

३२३५ प्रति सं २। पत्र सं १९। र काल सं १३१। ले काल सं १३१२। के सं ११९।  
 अ नम्बर।

३२३६ प्रति सं ३। पत्र सं १५। ले काल सं १३२२ मीसाह सुदी १। के सं १४। अ  
 नम्बर।

३२३७ सम्मोदशितारपूजा—रागचन्द्र। पत्र सं ५। वा ११२×३८। नवा-हिन्दी। विषय-  
 पूजा। र काल ×। ले काल सं १३३३ मीसाह सुदी ३। पूर्ण। के सं ३९३। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर के एक प्रति (के सं ११२३) भीर है।

३२३८ प्रति सं २। पत्र सं ७। ले काल सं १३३ मीसाह सुदी १४। के सं ७०१। अ  
 नम्बर।

३२३९ प्रति सं ३। पत्र सं १९। ले काल ×। के सं ७३३। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर के एक प्रति (के सं ७३४) भीर है।

३३ प्रति सं ४। पत्र सं ७। ले काल ×। के सं २९९। अ नम्बर।

३३१ सम्मोदशितारपूजा—सागचन्द्र। पत्र सं १। वा १९×४८। नवा-हिन्दी।  
 विषय-पूजा। र काल सं १३३३। के काल सं १३३। पूर्ण। के सं ७९७। अ नम्बर।

विषय—पूजा के पत्र पर एक भी लिखे हुये हैं।

३३२ प्रति सं २। पत्र सं १। ले काल ×। के सं १४७। अ नम्बर।

विषय—विद्यमान की स्तुति की है।

३३३ सम्मोदशितारपूजा—म सुरेश्वरीति। पत्र सं ११। वा ११×३८। नवा-हिन्दी।  
 विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १३१९। पूर्ण। के सं ३३१। अ नम्बर।

विषय—१ के पत्र के पाने नमोदशितारपूजा की हुई है।

३३४ सम्मोदशितारपूजा—। पत्र सं ३। वा ११×४८। नवा-हिन्दी। विषय-पूजा।  
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२११। अ नम्बर।

३३५ प्रति सं २। पत्र सं २। वा १×३८। नवा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×।  
 ले काल ×। पूर्ण। के सं ७३१। अ नम्बर।

विषय—इसी नम्बर के एक प्रति (के सं ७३२) भीर है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान माहिम्न १

[ ४१ ]

५३०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० वाच / । वे० स० २३१ । अ मण्डार ।

५३०७ सर्वतोभद्रपूजा । पत्र स० ५ । पा० १५३ ३ व । मापा-मण्डार । विषय-पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८३ । अ मण्डार ।

५३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मानन्दि । पत्र स० १ । पा० ६/६ ६ व । मापा-पूजा । वि० स० १३८३ ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३८ । अ मण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—धानभूषण । पत्र स० ६ । पा० ८/६ ६ व । मापा-पूजा । वि० स० १३३८ ।  
२० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा ( वे० स० ६८६, १३११, ११०८, १०१० ) थीं ।  
५३१० सरस्वतीपूजा । पत्र स० ३ । पा० ११/४ ३ व । मापा-पूजा । वि० स० १३३८ ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०३ । अ मण्डार ।  
विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० स० ८०२ ) धार है ।

५३११ सरस्वतीपूजा—रुधी पञ्चालाल । पत्र स० १७ । पा० १२/८ ३ व । मापा-१६९ ।  
विषय-पूजा । २० काल स० १६२१ । ले० वाच × । पूर्ण । वे० स० २०१ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति धार है ।

५३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द वरुशी । पत्र स० ८ स १७ । पा० ११/४ ३ व । मापा-  
हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० वाच स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ३३१ । अ  
मण्डार ।

५३१३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० वाच × । वे० स० ८०५ । अ मण्डार ।

५३१४ सरस्वतीपूजा—प० सुधजनजी । पत्र स० ५ । पा० ६×४३ ३ व । मापा-हिंदा । विषय-  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ मण्डार ।

५३१५ सरस्वतीपूजा । पत्र स० २१ । पा० ११×५ ३ व । मापा हिंदा । विषय-पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ मण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६ सहस्रकूटजिनालयपूजा । पत्र स० १११ । पा० ११३×४३ ३ व । मापा-सर्वज्ञ ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० २२३ । अ मण्डार ।

विशेष—प० पञ्चालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१० सहस्रगुणितपूजा—म० अर्चनीति । पत्र सं १९ । या १२३×९ दण । माला—संतुष्ट ।

विषय—पूजा । र मल × । नि मल सं १०६६ माला १ गुणी १ । पुर्ण । नि सं ३३९ । अ मकार ।

विशेष—इसी मकार में एक प्रति ( नि सं ३३९ ) भीर है ।

५३१८ प्रति सं २ । पत्र सं २ । नि मल सं १६२२ । नि सं २४६ । अ मकार ।

५३१६ प्रति सं ३ । पत्र सं १९२ । नि मल सं १६६ । नि सं ४६ । अ मकार ।

५३२० प्रति सं ४ । पत्र सं १६ । नि मल × । नि सं १३ । अ मकार ।

५३२१ प्रति सं ५ । पत्र सं १४ । नि मल × । नि सं १९ । अ मकार ।

विशेष—मालार्च हर्षनीति में विद्यामाला में प्रतिनिधि कराई थी ।

५३२० सहस्रगुणितपूजा—पत्र सं १३ । या १ ×२ दण । माला—संतुष्ट । विषय—पूजा ।

र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं ११७ । अ मकार ।

५३२३ प्रति सं २ । पत्र सं ४४ । नि मल × । पुर्ण । नि सं ३४ । अ मकार ।

५३२४ सहस्रनामपूजा—अर्चनीति । पत्र सं १६ । या १ ३/४ × २ ३/४ दण । माला—संतुष्ट ।

विषय पूजा । र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं ३३ । अ मकार ।

५३२५ प्रति सं २ । पत्र सं ३६ के १९ । नि मल सं १४४४ ज्येष्ठ गुणी ३ । पुर्ण । नि सं

३४३ । अ मकार ।

विशेष—इसी मकार में २ पुर्ण प्रति ( नि सं ३४४ ३४६ ) भीर है ।

५३२६ सहस्रनामपूजा—पत्र सं १३९ के १३ । या १२×३२ दण । माला—संतुष्ट ।

विषय—पूजा । र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं ३४३ । अ मकार ।

विशेष—इसी मकार में एक प्रति ( नि सं ३४७ ) भीर है ।

५३२७ सहस्रनामपूजा—अर्चनीति । पत्र सं २२ । या १३ ३/४ × ४ ३/४ दण । माला—हिन्दी । विषय—

पूजा । र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं १२१ । अ मकार ।

५३२८ सहस्रनामपूजा—पत्र सं १ । या ११×४ दण । माला—हिन्दी । विषय—पूजा ।

र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं ७०७ । अ मकार ।

५३२९ सारस्वतवक्त्रपूजा—पत्र सं ४ । या १ ३/४ × ३ ३/४ दण । माला—संतुष्ट । विषय—

पूजा । र मल × । नि मल × । पुर्ण । नि सं ३७७ । अ मकार ।

५३३ प्रति सं ३ । पत्र सं १ । नि मल × । नि सं १९९ । अ मकार ।

५३३१ सिद्धक्षेत्रपूजा—गान्तराय । पत्र स० २ । प्रा० ६३×५<sup>२</sup> इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२ सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद्) —स्वरूपचन्द्र । पत्र स० ५३ । प्रा० ११३×४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६१६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल स० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे मुगनचद गगवान ने चौघरियों के मन्दिर में चढाया ।

५३३३ सिद्धक्षेत्रपूजा । पत्र स० ६३ । प्रा० १३×८<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वे० स० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५ सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा । पत्र स० १२६ । प्रा० ११३×४<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिषासनेत्र पूजा भी है ।

५३३६ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्ति । पत्र स० १४३ । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२२ । वे० स० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ४१ । प्रा० १२×८ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वे० स० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० ७५१ ) भी है ।

५३३८ प्रति स० ८ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ८४५ । क भण्डार ।

५३३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८४ । ले० काल × । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—स० १६६६ फागुण सुदी २ की पुष्पचन्द्र भ्रजमेरा ने सशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० स० २१२ ) भी है ।

५३४० सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र स० ३० में ६० । प्रा० १२×६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

५३४१ सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ६ । प्रा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६२ । क भण्डार ।



२३४२. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)-----। वन सं ३४। वा १२×२२ दण। मत्ता-संस्तुत।

विषय-पूजा। र वल ×। ले वल ×। कुर्त्त। के सं ६७०। क मन्वार।

२३४३ सिद्धचक्रपूजा-----। वन सं ३। वा ११×२२ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वल ×। ले वल ×। कुर्त्त। के सं २२६। क मन्वार।

२३४४ प्रति सं २। वन सं ३। ले वल ×। के सं ४२। क मन्वार।

२३४५ प्रति सं ३। वन सं १०। ले वल सं १६। प्राण्य कुर्त्त। के सं ११।

क मन्वार।

२३४६ सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)-----संतकाल। वन सं १। वा ११×२२ दण। मत्ता-द्विष्टी।

विषय-पूजा। र वल ×। ले वल सं १२। कुर्त्त। के सं ७४६। क मन्वार।

विशेष—ईश्वरकाल कावचाङ्ग में प्रतिष्ठिति भी थी।

२३४७ सिद्धचक्रपूजा-----। वन सं ११३। वा १२×२२ दण। मत्ता-द्विष्टी। विषय-

पूजा। र वल ×। ले वल ×। कुर्त्त। के सं ७४६। क मन्वार।

२३४८. सिद्धपूजा—उत्तमूषल। वन सं २। वा १२×२१ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वल ×। ले वल सं १७९। कुर्त्त। के सं २९। क मन्वार।

विशेष—घोरज्ज्वेन के घालनकाल में संक्राम्युर में प्रतिष्ठिति हुई थी।

२३४९ प्रति सं २। वन सं ३। वा १२×२ दण। मत्ता संस्तुत। विषय-पूजा। र वल ×।

ले वल ×। कुर्त्त। के सं ७६९। क मन्वार।

२३५० सिद्धपूजा—महा र्थ आराधन। वन सं २। वा ११×२ दण। मत्ता-साह्य।

विषय-पूजा। र वल ×। ले वल सं १२२। कुर्त्त। के सं ७६४। क मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में एक प्रति (के सं ७६६) घोर है।

२३५१ प्रति सं २। वन सं ३। ले वल सं १२२ मन्वारि कुर्त्त। के सं २३३। क

मन्वार।

विशेष—पूजा के शरणा में स्वराला नहीं है किन्तु प्राण्य में ही वल चकले का मन्व है।

२३५२. सिद्धपूजा-----। वन सं ४। वा १३×२२ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वल ×। ले वल ×। कुर्त्त। के सं १९९। क मन्वार।

विशेष—इसी मन्वार में एक प्रति (के सं १९२४) घोर है।

५३५३ सिद्धपूजा । पत्र स० ४४ । मा० ६×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वै० स० ७१७ । च भण्डार ।

५३५४ सीमधरस्वामीपूजा । पत्र स० ७ । मा० ८×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८५८ । ङ भण्डार ।

५३५५ सुखसपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ७ । मा० ८×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६ सुखसपत्तिव्रतपूजा—अखयरास । पत्र स० ६ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल स० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७ सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन । पत्र स० १३ । मा० ८×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां ( वै० स० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६ )

भीर हैं ।

५३५८ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२८ । वै० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वै० स० ८६६ । ङ भण्डार ।

५३६० प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ मासोज बुदी ७ । वै० स० २०३४ । ट

भण्डार ।

५३६१ सुपाश्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ५ । मा० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२ सूतकनिर्णय । पत्र स० २१ । मा० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५ । ङ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वै० स० २०६ । ङ भण्डार ।

५३६४ सूतकवर्णन । पत्र स० १ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० ३० २४० । अ भण्डार ।

५३६५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल स० १८४५ । वै० स० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० स० २०३२ ) भीर है ।

५३६६ सोनागिरपूजा—आशा । पत्र स० ८ । मा० ५×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० स० ३५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—यं बनावर लोनादिदि बाती के प्रतिविधि की थी ।

४३६७ सातागिरपूजा—। पत्र सं ७ । या २२×४३ इंच । गला—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२ कल × १ मि कल × १ पूर्ण । के सं ७७३ । छ मन्थार ।

४३६८ सातद्वारदशपूजा—घामतण्ड । पत्र सं २ । या २२ इंच । गला—हिन्दी । विषय—

पूजा । २ कल × १ मि कल × १ पूर्ण । के सं १३२६ । छ मन्थार ।

४३६९ प्रति स २ । पत्र सं २ । के कल सं १३३७ । के सं २२ । छ मन्थार ।

४३७० प्रति स ३ । पत्र सं २ । के कल × १ । के सं ६३ । छ मन्थार ।

४३७१ प्रति स ४ । पत्र सं ३ । के कल × १ । के सं १९ । छ मन्थार ।

विषय—इसके प्रतिरिक्त पञ्चदश गला तथा लोमहराणा संस्तुत पूजास बीर है ।

इसी मन्थार के एक प्रति ( के सं १९४ ) बीर है ।

४३७२ सातद्वारदशपूजा—। पत्र सं १४ । या २२ इंच । गला—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२ कल × १ मि कल × १ पूर्ण । के सं ७२२ । छ मन्थार ।

४३७३ सातद्वारदशमहद्वारविद्याम—देकचन्द्र । पत्र सं ४७ । या १३×७ इंच । गला—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २ कल × १ मि कल × १ पूर्ण । के सं ७३ । छ मन्थार ।

४३७४ प्रति स २ । पत्र सं १६ । के कल × १ । के सं ७२४ । छ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति ( के सं ७२२ ) बीर है ।

४३७५ प्रति सं ३ । पत्र सं ४२ । के कल × १ । के सं १९ । छ मन्थार ।

४३७६ प्रति स ४ । पत्र सं ४२ । के कल × १ । के सं २९४ । छ मन्थार ।

४३७७ लोमहराणाघामपूजा—आद्यवण्ड । पत्र सं १२ । या १३×४३ इंच । गला—संस्तुत ।

विषय पूजा । २ कल सं १९ । के कल × १ पूर्ण । के सं २९ । छ मन्थार ।

४३७८ प्रति स २ । पत्र सं १२ । के कल सं १९३ पत्र कुटी ६ । के सं ४२७ । छ मन्थार ।

४३७९ स्तवमन्थार—। पत्र सं १ । या १३×४ इंच । गला—हिन्दी । विषय—विद्याम ।

२ कल × १ मि कल × १ पूर्ण । के सं ४२९ । छ मन्थार ।

४३८० स्तवमन्थार ( बृहद् )—। पत्र सं २२ । या १३×२ इंच । गला—संस्तुत । विषय—

पूजा । २ कल × १ मि कल × १ के सं २७ । छ मन्थार ।

विशेष—अन्वय २ कुटो के पिपौलवार पूजा है जो कि संस्तुत है ।

# गुटका-संग्रह

( शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटों की, जयपुर )

५३८१ गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । मा० ६×९ इ च । भाषा-हिन्दी सम्कृत । विषय-संग्रह ।

ने० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ९ । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१ भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२ रत्नश्रयपूजा	×	"	"
३ पद्ममेख्पूजा	×	"	"
४ अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५ षोडशकारणपूजा	सुमतिमागर	संस्कृत	"
६ दशलक्षणतद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिमुद्रतछन्द	म० प्रभाषन्द	संस्कृत हिन्दी	"

मुनिमुद्रत छन्द लिख्यते—

पुष्पापुष्पनिरूपकं गुराणिधि शुद्धव्रत मुद्रत

स्वादादामृततपिताखिलजनं दु खामिनधाराधर ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकर प्रध्वस्तकर्मारिण

धदे तद्गुराणिसिद्धये हरिनुत सोमात्मज सौख्यद ॥१॥

जलधिसमगन्नौर प्राप्तजन्माविधतीर

प्रबलमदनवीर पचधामुक्तवीर

हतविषयविकार सततत्वप्रचार

स जयति गुराधार सुव्रतो विघ्नहार ॥२॥

शुद्ध

१२०-१२४

पारसी—

निसुवमजमहिउवतां कतां सुवमिसुतिसरअमवः ।

अवर्षवर्षाहतां सुवतयेवो अयति कुतवतां ॥१॥

वी अखयीमिउवतपुडुमहाएवेएलेनअमिकर ।

अठिवालिउवतवरेणं केवलवीवे अठितुमर्ष ॥२॥

तं सुविसुवतवार्षं तावा कनवमि एव अखीह ।

अमवतु एवअमवतां वितवर्मवरः तालतंनुअ ॥३॥

पश्चिम—

अवम अमवतु ननुं वनमोहन ममव सुवेव नते अति खीह ।

एवमेव नवति वर सुवत सुमिष सुव तिह्यं विवी नुरंवर ॥१॥

अमवुखीनुननमी बाला, तव राही खीना सुविबाला ।

अमिअमेठी अमिअबाला एवज मोन केनें कुएबाला ॥२॥

अमारे ते अति तु विवअतु अमव अमारि केनें सुमलअत ।

एलाहि केनें अमव अमिअ एव अमव नवा सुव सुअअ ॥३॥

इतिरामां सुवति सुवि अंअ अमवत एवर्ष इवी अमवअम ।

अमवअमि खीनें सुअवाठी अमवी अर्ष राही सुअवाठी ॥४॥

दुस्रसप्त—

अति अमवे वरं अर्षवार् न ईअमव अमवअमवार् ।

तवा अमवता एवअमवतारिअमवतवाराअवता न सुता सुवता ॥१॥

पुरं अमवितवाअमविवअवा इहं अमव अमिअ अते कता वा ।

अमव अर्षवारे अमि अमवअर्ष अमवतवारे अमवितवमार् ॥२॥

सुवतनें इह अमव अमवितव अमव अमवतवारे अमवितवमार् ।

वरं अमवतुं अमवतुइतं अमवितव अमव अमवतुं ॥३॥

अमवितवतारिअमवितव अमवतवारे अमवितवमार् ।

अमव अर्षवार् अमवितव अमव अमवतवारे अमवितवमार् ॥४॥

पश्चिम—

अमवितवत अमवतवार् अमवितव अमव अमवतवार् ।

अमव अमव अमव अमव अमव अमव अमव ॥१॥

अमव अमव अमव अमव, अमव अमव अमव अमव ।

अमव अमव अमव अमव, अमव अमव अमव अमव ॥२॥

मोतीरेणुद्ध—

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख धारणद भरी ।  
जस कीटी सतावीस छे श्रमरी, कर्णे गीत नृत्य बलीदें भमरी ॥३॥  
गज कानें सोहें सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहू भरी ।  
भाखण्डलप्रकुशवेमैधरी, उद्धमगत गया जिन नयरी ॥  
राजगर्णें मलया इन्द्रसहू, वाजें वाजित्र सुरग बहु ।  
धक्कें कह्यु, जिनवर लावें सहो, इद्राणी तब धर मभे गई ॥  
जिन बालक दीठो निज नयगों, इद्राणी बोलें वर धयगों ।  
माया भेसि सुतहि एव कीयो, जिनवर युगतें जइ उद्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के भाषे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छंदों के प्रतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, व्रभाग छन्दों का और प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

फलस—

बीस धनुष जस देह जह जित मछप लाइन ।  
श्रीस सहस्र वर सर्व श्रायु सज्जन मन रखन ॥  
हरवदी गुणबोमल, भक्त वारिद्र विहडन ।  
मनवाँछितधातार, नयरवालोडनु मडन ॥  
श्री मूलसष सघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टामरण ।  
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहें, मुनिसुप्रतभगनकरण ॥

इति मुनिसुप्रत छन्द सम्पूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

सवत् १८१८ वर्षे शके १८८४ प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसन्ने सरस्वतीगच्छे बलात्कार-  
गुणे श्रीकुदकुशाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे म० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीविद्यातन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री  
मङ्गलभूषण तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मीचन्द्र म० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे म० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे म० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे  
म० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे म० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे म० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे म० श्रीजेनचन्द्र तत्पट्टे म० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य  
ब्रह्मनेमूसागर पठनाथ । पुष्पार्थ पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीभादिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्ता	भाषा	दिनेष
१. नाट्यशास्त्रीय	महीचन्द्र कटारक	मराठ हिन्दी	१९१-२५
१. कर्मव्यवस्था	×	संस्कृत	
११. कर्मव्यवस्था	वदिवन्त	"	
१२. मनोव्यवस्था	कृष्णलाल	हिन्दी	
१३. मृतक पुत्रा]	वैविवन्त	संस्कृत	४. पत्रक की श्रेणी ३
१४. मृतक	×	हिन्दी	वर्षिक पूर्ण की वर्ष
१५. अन्तरिक पत्रव्यवस्था	×	संस्कृत	
१६. निरवस्था	×	"	

विशेष—पत्रक १६ पर किन्तु लेख लिखा हुआ है—

कटारक की १ की विचारणाओं में १ २१ वीं वर्ष तक १९६६ अवर्तमानों की विचारणाओं द्वारा प्रसारित विषयों के लिए पत्रव्यवस्था के विषय में बताया गया है।

३३-२ गुटका स २। पत्रक १३। भा. २२×३। भा. भाषा—हिन्दी। विषय—वर्षिक। र. क्र. १३। ले. क्र. १३३। पुर्ण। भाषा—वास्तव्य।

विशेष—इस गुटके में कटारक द्वारा लिखित कथन आया है। यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है। अन्तिम पुस्तिका विषय प्रकार है—

इति की विचारणाओं में आने लगे हैं। विषय कटारक द्वारा। सं. १ ३३।

३३-३ गुटका स ३। पत्रक ३३। भा. ४×४। भा. भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—X। ले. क्र. ३३। पुर्ण। भाषा—वास्तव्य।

विशेष—कटारक की श्रेणी में लिखा था।

१. कर्मव्यवस्था	×	हिन्दी	१-३
२. कर्मव्यवस्था	व्यवस्था	"	२-११
३. कर्मव्यवस्था	×	संस्कृत	११-४३
४. कर्मव्यवस्था	×	हिन्दी	४३-४४
५. कर्मव्यवस्था	×	संस्कृत	४४-४५
६. पुत्रा	वदिवन्त	"	४५-४६

७ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	”	५५-५६
८ पूजा व जयमाल	×	”	५६-७५

५३८४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । भा० ३×२ इच्च । भाषा-संस्कृत हिंदी । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, पट्लेश्यावर्णन, जैनसत्यामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५ गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । भा० ८×६ इच्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भर्तृहरिशतक ( नीतिशतक ) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । भा० ८×६ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एक शक्तिपाठ का संग्रह है ।

५३८७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । भा० ६×७ इच्च । ले० काल १८५८ मासोज बुदी ५ शनिवार । पूर्ण ।

१ नाटकसमयसार	वनारसीदास	हिन्दी	१-६७
२ पद-होजी म्हारो कथ	चतुर दिलजानी हो	”	६७
३ सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	”	६८-११६

५३८८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । भा० ६×६ इच्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा-सामान्य ।

विशेष—प० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । भा० ६×६ इच्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९० गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । भा० ६×५ इच्च । ले० काल सं० १६५४ श्रावण बुदी १३ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ पद-जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२ वारहभावना	दौलतराम	”	
३ झालोचनापाठ	जीहरीलाल	”	
४ दशलक्षणपूजा	सूधरदास	”	





हा—

एक बर्म को वेदना, मु अं

नरनारी बरि उपरै, बरग्य गुणमग्यान मजोदैं ॥१॥

क्तिमराठ— कवित्त—

सकलकीर्ति मुनि भाप मुनत मिटैं सतान चौरागी मरि जाई फिर भजर भमर पद पादये ॥

जूनी पोधी भई मदार दोंसे नही फेर उत्तारी बध छद रचिति बेनी बनाई क गाईये ॥

बप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार भजसठि जेहि कर्मचूर बरत बहो है बगगाई ध्याइये ॥

सवत् १७४६ सोमवार ७ परबोतु बर्मचूर मत्त वैठगो भमर पद चुरी सोर तीघातम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है । तोपि भी चिह्नित है ।

२ ऋषिमण्डलमंत्र

×

संस्कृत

मे० वान १७३६

४. चितामणि पार्श्वनाथस्तोत्र

×

१७-१६

५. भजना की रास

धर्मभूषण

”

अपूर्णा २०

हिन्दी

२१-३४

प्रारम्भ—

पहेली रे महेत पाय नमें ।

हरैं भव दुप भजन त्व भगवत बर्म वायातना वा पत्नी ।

पाप ना प्रभव मसि ती मत्त ती रास भरी इति भजना

तैं ती समय साधि न गई स्वर लोक ती सती न सरोमणि वदीये ॥१॥

बस विधाधर उपनो माय, नामे तीन वनधि सपजे ।

भाव करता ही भवदुख जाय, सती न सरोमणि वदये ॥२॥

ब्राह्मी नै मु दरी वदये, राजा हौ रसभ सरौ घर द्वैय ।

बाल परौ तप बन गई काम ना भोगन बछीय जे हतौ ॥ सती म ३ ॥

मेघ मेनापति नै घरनारि भजना सो मदालसा ।

त्यारे न कोनै सीयाल लगार तो ॥ सती न ४ ॥

पचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुबारी लागी रे पावै ।

जादव जग जानी करि, इारिका दहन सुनि तप जाय ।

हरी सती भजना वदीय जिनै राग छोडी मन में घरघी वैराग तो ॥ सती न ५ ॥

धर्मिनगर—

नल विद्याधर बालि मल नामे मन्दिनि पावडी ।  
 नल करंठा हो मथ बुद्ध नामयो धाली न लोमलि बंसीवे ॥ १४ ॥  
 इन नामे नर्मसुपल दास एलमान दु गो रवि रात ।  
 नर्म र्भमिनि मंयल नवा नही ठा रात ऊपरै रत थिलत ॥  
 काल मथम कैठी इन अणे कठ विना एन किम हीई ।  
 बुदि विना काल नविडोई, बुद विना नारन नीय वाली ती ।  
 हीयक विना मंथर धववार, वैभक्तिक नाल विना सब द्वार तो ॥२६॥  
 रत विना स्वत न ऊपरै तिल त्रिम नति नर्म वैव बुव पत्ताथ ।  
 क्षिना विन क्षील नरे कुल इमिठि निर्मल मल राखो तथा ।  
 वैद्यम नमक धर्मि बुद्ध नाम दुनठि विनास निर्मल नालयु ।  
 ठे लनयो लखी लखादि, धईठ विना दुर्बांल लयाक धववार ।  
 बुद्धि लयावा नालयु स्वौरकल एह कमी लव मंयल कठी॥  
 इति श्री धर्मनारायण कठी बु वठी सुप्रसव कृष्णकाल्य धंपुरत ॥

एतत्त श्री सुलतने लल्लेदीनक्ये मज्जलनायेते श्रीकुंबपुत्राचार्यन्वये कट्टारक नीयपरीति लसु व  
 श्रीकेल्लेनमीति लसुं व श्रीबेल्हमीति लसु न श्रीवेियगमीति लसुपरेशे दुल्लामीतिना इत्यत्रि लल्लामी वीति  
 पुस्यति लिख्यति श्रीलल नबरे मुचलौ श्रीनहारीदेवीलालये मनुक पायके लर्ब नवैवेत्तल हात बुधिति लनया ए  
 श्रीकुलनमल पाया लिखित नमल लपरेशे मल्लीतमयले बुधे कुल्लन्वे माल्लोव धरी ३ वीतवार लनत् १ १ बालिनह्ने  
 ११७६ दुसमल्लु ।

- |                          |   |  |
|--------------------------|---|--|
| १ लल्लेदीनि              | × | वंत्तल वै नाल १ १ मल्लौव धरी ३         |
| ७ क्षिनादीककुल           | × | क्षिणी                                 |
|                          | × | ॥ लल ११वे वर श्रीवीधने दीर्घकुलै के १४ |
| ६ श्रीवीध दीर्घकुल परिचय | × | क्षिणी ३१-२                            |
- विवेक—नल ४ वे वर श्री एक विष है वं १ १ वे वं बुद्धललन मे वीरल म इतिलिपि की वी ।  
 १ नविमलललललललीकना व धवमल्ल क्षिणी ४१-५१  
 लललललल लं ११११ लल १ पर ऐकालि म काल वं १ २१ वीरल ( वीरल ) मे बुद्धललन  
 मे इतिलिपि की वी । नल २ वर दीर्घकुल के ३ विष है ।

११	हनुमतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	८३-१०६
१२	वीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३	निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४	सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५	अग्निपेकपाठ	×	"	११२
१६	रविम्रतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७	चिन्तामणिलग्न	×	संस्कृत	ले० काल १८२१ १२२
१८	प्रद्युम्नकुमाररासो	जह्यारायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
१९	श्रुतपूजा	×	संस्कृत	२० काल १६२८ ले० काल १८११
२०	विपापहारस्तोत्र	घनछय	"	१५२
२१	सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५३-१५६
२२	पूजासग्रह	×	"	१५७-१६६
२३	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	१६७-१७२
२४	पाशाकेवली	×	संस्कृत	१८३
२५	पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द्र	हिन्दी	१८४-२१७
			"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रा के दोनो ओर मुन्दर वेलें हैं ।

५२६२ गुटका स० १२ । पत्र स० १०६ । भा० १०३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठा का सग्रह है ।

१. यज्ञ को सामग्री का व्यौरा

×

हिन्दी

१

विशेष—( अथ जागो की मौजे सिमरिया मे

प्र० देवाराम ने ताकी सामा भाई सख्या १७६७ माह बुदी

पूणिमा पुरानी पोथी मे से उतारी । पोथी जीरण हांगई तव उतरी । सब चीजो का निरख भी दिया हुआ है ।

२ यज्ञमहिमा

×

हिन्दी

२

विशेष—मौजे सिमरिया मे माह बुदी १५ स० १७६७ मे यज्ञ किया उसका परिचय है । सिमरिया में

चौहान वंश के राजा श्रीराव थे । मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे । यज्ञाचार्य भोरेना के प० टेकचन्द थे । यह यज्ञ

सात दिन तक चला था ।

୧ ବର୍ଣ୍ଣାଶ୍ରମ	×	ମାୟା	୧ ୧୧
ବିଷୟ—ପଞ୍ଚା ମାତର ଲକ୍ଷ୍ୟ କେ ମେ ମିତ୍ରା ବଦା ହି । ତୀନ ଉଦ୍ଧାର ହି ।			
୪ ଶାନ୍ତିଧର ବା ନରାୟଣ	×	ଦିଲ୍ଲୀ ୧୯୧୭ ବର୍ଣ୍ଣିକ ମୁଦ୍ରି	୧୯ ୧୯

ଶାନ୍ତିଧର ବା ନରାୟଣ—ସର୍ବଜ୍ଞାନ—

ଦୁର ବଦାନ୍ତି କ୍ଷମ ଧ୍ୟାୟ ବିନ ବଳେ ନରମ ସ୍ଵାତ ।  
 ଯଦି କାମି ଶେଠ ଶେଠୀ କୁମି କାମି ଶେଠି ଶେଠୀ ॥୧॥  
 ଶାନ୍ତିଧର ଦୁର୍ଗ ବାୟି ବଦ ଲାଭ ଶତ୍ରୁ (୧) ବାୟି ।  
 ବାୟିକେ ବିଦିଗ ଶେଠା, କେବ ବା ଯାନ୍ତୁ ଶେଠା ॥୨॥  
 ଶାନ୍ତି ଦୁର୍ଗ ଶେଠି କିଲ୍ୟାଣେ କ୍ଷମ କୌଣ ବଳେ ବାୟି ।  
 ଶବ ଶାନ୍ତିଧର ବାୟି କହି ଉଦେ ଯତ୍ୟାୟି ॥୩॥  
 କୁମି ଶେଠି ବାୟି କାବଚ ନହି କାନ୍ତୁ ହାବେ କାବଚ ।  
 ହେଉ ବାନ୍ଧା ନରାୟ, କୌଣ ଦେଖ ଯଦି ଯଦୁଆ ॥୪॥

ଶାନ୍ତିଧର—

ଶିବି ଶାନ୍ତି କୁମ ବାବର ବଳ କୌଣି କୌଣ ବାବର ।  
 ବଦ କୌଣିକ କୁମ ବାବର କୁମ ବାବେ ଶାନ୍ତି ॥୫॥

ଶେଠା—

ନରାୟଣେ କିଲ୍ୟାଣେ ବା ବାବହି ଶି ନରାୟା ।  
 ନରାୟଣେ ବଳ କାବଚେ ମିଦି ଯଦୁବହି କାବଚେ ॥୬॥  
 କୌଣିକ ନରାୟଣେ ବଳେ ବାବିକ ମୁଦ୍ରି ଶାନ୍ତିଧର ।  
 କାବଚେ କୁମ ବାବଚେ କରତ ମିଦି କିଲ୍ୟାଣେ ॥ ୭॥  
 ଶାନ୍ତି ବା ଶାନ୍ତିଧର ବା କୌଣିକେ କାବଚ ॥

୨ ଦ୍ଵିତୀୟ ନରାୟଣ

କୋଷାଳ

ଦିଲ୍ଲୀ

୧୪ ୧୫

ଶାନ୍ତିଧର—

କାବଚେ କୁମିକି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କୁମି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କିଲ୍ୟାଣେ କିଲ୍ୟାଣେ  
 କିଲ୍ୟାଣେ କୁମିକି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କୁମି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କିଲ୍ୟାଣେ ॥୧॥  
 କୁମିକି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କୁମି କିଲ୍ୟାଣେ କାବଚେ କିଲ୍ୟାଣେ ।  
 କୁମିକି କୁମିକି କାବଚେ କୁମିକିକା, କାବଚେକେ କାବଚେ କିଲ୍ୟାଣେ ॥୨॥  
 କୌଣି କୁମି କାବଚେ କାବଚେ କୁମିକିକା କାବଚେ କାବଚେ କାବଚେ ।  
 କୁମିକି କାବଚେ କାବଚେ କାବଚେ କାବଚେ କାବଚେ କାବଚେ ॥୩॥

मुभ भ्रासन दिढ जंग ध्यान, वद्धमान भयो केवल ज्ञान ।  
समोसरण रचना अति वनी, परम घरम महिमा अति तरणी ॥४॥  
अन्तिमभाग—  
चल्यो नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।  
समोसरणय पूरण भयो, सुनत पढित पातिग गलि गयी ॥६५॥

दोहरा—

सौरह सँ अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।  
गुलालब्रह्म मनि गीत गति, जसोनदि पद सिख ॥६६॥  
नूरदेस हथि कलपुर, राजा वक्रम साहि ।  
गुलालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दोजे काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत सपूर्णा ॥

६ नेमिजी को मगल

जगतभूषण के शिष्य  
विश्वभूषण

हिन्दी

१६-१७

रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

आदेभाग—

प्रथम जपो परमेष्ठि तौ गुर हीयो धरो ।  
मस्वतो करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरी ॥  
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी ।  
रची इन्द्र नै भ्राइ सुरनि मनि बहुकनी ॥  
बहु कर्नाम मदिर चैत्य लीयो, देखि सुरनर हरपीयो ।  
समुद्र विजे वर भूप राजा, सकल सोभा निरखीयो ॥  
प्रिया जा सिख देवि जानौ, रूप भमरो जडमा ।  
राति सुदरि सैन सूती, देखि भूपन पोडमा ॥१॥

अन्तिम भाग—

एवन् सोलह सँ भठानूवा जारणीयो ।  
सावन मास प्रसिद्ध भष्टमो मानियो ॥  
गाऊ सिक्दरावाद पार्श्वजिन देहरे ।  
अ वग क्रीया मुजान धर्म्म सौ नेहरे ॥  
धर्म्म सौ नेहु अति ही देहो सबको दान जू ।  
स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥



८ वीरजिखदगीत	भगीतीदास	हिन्दी	१६-२०
९ सम्पन्नानी धमाल	"	"	२०-२१
१० स्पूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३ "	×	संस्कृत	२३
१४ पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५ "	पद्मनन्दि	"	२४
१६ हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	"	२४
१७ सीताचरित्र	×	हिन्दी २० काल १६१६ ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	२५-७५
		हिन्दी मपूर्णा	७७-१०६

५३६३ गुटका स० १३ । पत्र स० ३७ । भा० ७३ × १० इञ्च । ले० काल स० १८६२ भासोज बुदी

७ । पूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का संग्रह है—

१ कल्पामन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	पूर्णा
२ लक्ष्मीस्तोत्र ( पार्श्वनाथस्तोत्र )	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४ मत्तामरस्तोत्र	भा० मानतु ग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६ सिद्धपूजा	×	"	"
७ दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८ पोटदाकारणपूजा	×	"	"
९ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१० धातिपाठ	×	संस्कृत	"
११ सहस्रनामस्तोत्र	१० भाशाधर	"	"
१२ पञ्चमेष्टपूजा	सूधरयति	हिन्दी	"



१३	घट्टमिहकपुत्रा	×	घट्ट	
१४	घट्टिपेकविधि	×	"	
१५	निर्वाणिकमाया	अपवटीराज	हिन्दी	"
१६	पाञ्चमङ्गल	अपवत्य	"	
१७	अपवत्युवा	×	अपवत्य	

विशेष—एह दुस्तक मुक्ताल १ वन के पुन मनमुक्त के बरने के लिए लिखी गई थी ।

३३३४ गुदका न १४ । पत्र सं १३ । पृ ४५ ४६ । ज्ञान-अंशुत । कुली । रत्ना-भारत ।

विशेष—आर्यावृत्त ( हिन्दी ) तथा ४ अक्षरको के नाम हैं ।

३३३५ गुदका न १५ । पत्र सं ४३ । पृ ३४ ३५ । ज्ञान-हिन्दी । के नाम १९ । ई

विशेष—पाठ मयुक्त हैं—

१	अहम्बोधी वैमित्रीनु	आम म्हेटी बाही संन जाला	×	हिन्दी	१
२	हो मुनिवर नव विधि है	अपवती		"	१-२
३	प्राजांता हो अमु अपवती	×		"	१
४	अमु बांजीनी कृत वनदी	अपवती		"	६
५	पत्न वत्न म्हे नवरत्न वैधी	×		"	६
६	आम बोम्बी म्हाटी पत्न रिपन विवरी	×		"	१
	पुन ही रत्ना विवारी	×		"	११
७	अहम्बोधी वैमित्रीनु	आम म्हे टी	×	"	११
८	कुदि टाटीनी	आम म्हे टी	×	"	११
९	अपवती	अपवती		"	११ १
१०	अहम्बोधी वैमित्रीनु	आम म्हेटी बांजीनी	अपवती		११ ११
११	आम बोम्बी म्हाटी	आम रिपन विवरी	×	"	११
१२	अहम्बोधी	अपवती	×	"	११ १४
१३	म्हे अपवती	हो अमु अपवती	×	"	१४
१४	आम रिपन	अपवती	×	"	१४

## गुटका-संग्रह ]

१६ म्हे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	"	२६
१७ दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८ कवित्त	×	"	२८-२९
१९ वारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१ वारहभावना	दलजी	"	३८-३९

५३६६ गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । प्रा० ५३×५ इच्छ । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ ।

पूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१ बृहद्कल्पस्य	×	हिन्दी	३-१२
२ मुक्तावलिप्रत की तिथिया	×	"	१२
३ श्राद्ध देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४ राजा प्रजाको वशमें व रतेका मन्त्र	×	"	१७-१८
५ मुनीश्वरों की जयमन्त्र	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६ दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५-२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०-३१
८ गृहप्रवेशविचार	×	"	३०
९ भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३-३५
१० दीपावतारमन्त्र	×	"	३६
११ काले विन्धुके डङ्क उतारने का मन्त्र	×	हिन्दी	३८

नोज—यहा मे फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२ स्वाध्याय	×	संस्कृत	१-३
१३. तत्त्वार्थसूत्र	रमास्वाति	"	१ ३
१४ प्रतिक्रमणपाठ	×	"	१९-३७
१५ भक्तिगठ (सात)	×	"	३७-७२



५	सदृष्टि	×		संस्कृत	
६	मन्त्र	×		"	६-११
७	उपवास के दशभेद	×		"	१८
८	फुटकर ज्योतिष पद्य	×		"	१५
९	अढाई का व्यौरा	×		"	१५
१०	फुटकर पाठ	×		"	१८
११	पाठसंग्रह	×		"	१८-२०
				मखुत प्राकृत	२१-२४
१२	प्रश्नोत्तररत्नमाला		अमोघवर्ष		
१३	सज्जनचित्तवल्गुम		मल्लिपेराचार्य	संस्कृत	२४-२५
१४	गुरुरस्थानव्याख्या	×		"	२६-२८
				"	२६-३१
१५	छातीसुख की भ्रौपधि का नुसखा	×		प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत	
१६	जयमाल ( मालारोहण )	×		हिन्दी	३२
१७	उपवासविधान	×		अपभ्रंश	३२-३५
१८	पाठसंग्रह	×		हिन्दी	३५-३६
१९	अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वान्त्रिशिका		हेमचन्द्राचार्य	प्राकृत	३६-३७
२०	गर्भ कल्याणक क्रिया मे भक्तिया	×		संस्कृत	मन्त्र आदि भी हैं ३८-४०
२१	जिनसहस्रनामस्तोत्र		जिनसेनाचार्य	हिन्दी	४१
२२	भक्तामरस्तोत्र		मानतु गाचार्य	संस्कृत	४२-४६
२३	यतिभावनगष्टक		भा० कुदकुद	"	४६-५२
२४	भावनाद्वान्त्रिशिका		भा० अमितगति	"	५२
२५	भाराधनासार		देवसेन	"	५३-५४
२६	सबोधपंचासिका	×		प्राकृत	५५-५८
२७	तत्त्वार्थसूत्र		उमास्वामि	अपभ्रंश	५९-६०
२८	प्रतिक्रमण	×		संस्कृत	६१-६७
२९	भक्तिस्तोत्र (भाचार्यभक्ति तक)	×		प्राकृत संस्कृत	६७-८८
				संस्कृत	८९-१०७

१	स्वर्गसूक्तोप	पा	समस्तमत्र	संस्कृत	१ ५ ११
११	नवमीस्तोत्र		पद्यप्रबन्ध	"	११५
१२	दशमस्तोत्र		संस्कृतचन्द्र	"	११६
१३	सुव्रतस्तोत्र	×	"	"	११६-११७
१४	वर्तनस्तोत्र	×	प्रकृत	"	११७
१५	बलभार कुटिलनी	×	संस्कृत	"	११७-११८
१६	परमेश्वरस्तोत्र		सुव्यास	"	११८-११९
१७	नाममाला		संग्रह	"	११९ १२०
१	शिवराजस्तोत्र		पद्यमणि	"	१२५
१६	कामरूपकस्तोत्र		"	"	१३६
४	विश्वामित्रस्तोत्र		वेदमणि	"	१३६-१४१
४१	नवमस्तोत्र	पा	सुव्यास	"	१४१
४२	सईकुलिविद्या	×	"	"	१४१-१४३
४३	स्वस्त्यवतविद्या	×	"	"	१४४-१४६
४४	उपवसुधा	×	"	"	१४६ १४७
४५	विनायक	×	"	"	१४७-१४८
४६	कविदुग्धधुवा	×	"	"	१६-१७१
४७	वीरभक्तारण्यधुवा	×	"	"	१७२-१७३
४८	वज्रधुवा	×	"	"	१७३-१७४
४९	निद्रापुत्रि	×	"	"	१७४-१७५
५	सिद्धधुवा	×	"	"	१७५-१७६
५१	सुव्यासविद्या		वीर	"	१७६-१७७
५२	भारतसुव्यास		सुव्यास	"	१७७-१७८
५३	वाग्निर्विद्या	×	"	"	१७७-१७८
५४	सुव्यासविद्या	×	"	"	१७८-१७९
५५	वीरभक्तारण्यधुवा	×	"	"	१७९

५६	श्रीपधियो के नुसखे	×		
५७	संग्रहसूक्ति	×	हिन्दी	२११
५८	दीक्षापटल	×	संस्कृत	२१२
५९	पार्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१३
६०	दीक्षा पटल	×	"	२१४
६१	सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२१८
६२	क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३
६३	शुभापितसंग्रह	×	"	२२३-१२४
६४	तत्वसार		"	२२५-२२८
६५	योगसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६६	द्रव्यसंग्रह	योगचन्द्र	संस्कृत	२३१-२३५
६७	श्रावकप्रतिक्रमण	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६८	भावनापद्धति	×	संस्कृत	२३७-२४५
६९	रत्नत्रयपूजा	पद्मानन्दि	"	२४६-२४७
७०	कल्याणमाला	"	"	२४८-२५६
७१	एकीभावस्तोत्र	प० आशाधर	"	२५६-२६०
७२	समयसारवृत्ति	वादिराज	"	२६०-२६३
७३	परमात्मप्रकाश	प्रमृत्तचन्द्र सूरि	"	२६४-२६५
७४	कल्याणमन्दिरस्ताव	योगीन्द्रदेव	धपन्न श	२६६-३०३
७५	परमैष्ठियो के गुण व प्रतिशय	शुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-२०६
७६	स्तोत्र	×	प्राकृत	३०७
७७	प्रमाणप्रमेयवलिवा	पद्मानन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७८	देवागमन्तोत्र	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३११
७९	धवलङ्कगष्टक	भा० समन्तभद्र	"	३१२-३१७
८०	शुभापित	भट्टावल्लभ	"	३१८-३२६
८१	जिनगुणस्तवन	×	"	३३०-३३१
		×	"	३३१-३३२

२	विद्यालय	×	"	१११ ११४
३	संज्ञकालपत्रिका	×	बनारस	११४-११७
४	सोम	बनारस	प्रकाश	१११ १११
५	सर्वीयुद्धावर्धन	×	संस्कृत	११६-११८
६	कर्मविपक्षिणी	माधव	"	११२-११६
७	पञ्चमसम्भारसोम	बनारस	"	११४
	मुद्रण	×	"	११४
८	संस्कृतपरिचय (संस्कृत)	×	"	११६ ११७
९	संस्कृत के मुद्रण	×	"	११६
१०	संस्कृत	×	"	११७-११८
११	संस्कृत मुद्रण संस्कृत एव बनारस	×	संस्कृत हिन्दी	संस्कृत के मुद्रण ११७-११८
१२	संस्कृत	×	"	११७-११८

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित एक कुटुम्ब में भी हैं ।

- १ बनारस नगर २ कुम्भारवासी बनारस (बहुत दिनवासी) ३ बनारस नगर (संस्कृतवासी नगरी)  
 ४ मुद्रणविधि (संस्कृतक कर्म के) ५ मुद्रणविधि ६ सौभाग्यवासी

१३६८ मुद्रणका सं० १८। वन ११। या ७५२। वन। वन-हिन्दी। ले वन ११। ४  
 वनका मुद्रण ११। मुद्रण। वन-बनारस।

१	विद्ययाव विद्यालय	×	हिन्दी	११
२	संस्कृत	विद्यालय	ले वन १७७४	मुद्रण मुद्रण ११-१४
३	संस्कृतक वन वन वन	बनारस	" "	१ ४ वनका मुद्रण मुद्रण ११ १४ ११

दीक्षा—

यद्यपि संस्कृत विद्या—

संस्कृत केवल संस्कृत, संस्कृत केवल संस्कृत ।

यद्यपि वन वन वन वन वन वन वन वन ॥१॥

संस्कृत केवल संस्कृत वन विद्या मुद्रण मुद्रण ।

यो वन वन वन वन वन वन वन वन ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।  
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥  
 हित सौ राज सुता, बिलसि तन न निहारि ।  
 ज्या हाथा रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥  
 तरसे हू परसै नहीं, नौढा रहत उदास ।  
 जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाद्वरि मिलै विनु नेह ।  
 औसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करैह ॥६८॥  
 मुदरो लै छलस्यो कह्यै, औ हौं फिर ना पैद ।  
 काम सरै दुख वीसरै, वैरी हुवो वैद ॥६९॥  
 मानवतो निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।  
 नदी किनारै रूखडो, जब तव होइ विनास ॥१००॥  
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरी भान कौ भोग ।  
 नासै देसी रूखडो, ना परदेसी लोग ॥१०१॥  
 गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।  
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबध प्रभाव । श्री मित्ती सावरण वशि १२  
 बुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्द्रजी को पोषी लिखत माणिकचन्द्र बज बाबं जीहने  
 जिसा माफिक बंख्या ।

५३६६. गुटका स० १६ । पत्र स० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १६३० आषाढ सुदी १५ ।  
 पूर्ण ।

विशेष—रसालकुबर की चौपई—नखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका स० २० । पत्र स० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल स० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।  
 पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्य महोदधि है ।



३४ १ गुरुका सं २१ । पत्र सं १११ । भा १५२ द्वा । पूर्ण । कला-शास्त्र ।

१	सावप्रविवपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१-२४
२	विद्वज्जतिपाठि संवह	×	प्राकृत	११-१०
३	समन्तपद्मस्तुति	समन्तपद्म	संस्कृत	७१
४	सावप्रविवपाठ	×	प्राकृत	७१-७१
५	विद्विप्रियकटीक	द्वैतनाथि	संस्कृत	७२-७१
६	पात्मनस्य का स्तोत्र	×	"	१०-१
७	बभ्रुविद्यविमिनस्य	बुधधर	"	११ १५१
	पद्मस्तोत्र	×	"	१४०-१००
८	विजयस्तोत्र	×	"	१७ १
९	सुनीश्वरो श्री कथनस्य	×	"	११ १२२
११	सप्तमीकण्डोपनिषत्	×	"	२२१ १
१२	विजयीश्रीसप्तमस्तोत्र	विजयीश्रीशक्ति	हिन्दी पद्य	पद्य सं ४८
				१ १

धारिण्य—

विजय सुनीश्वर शक्ति मन्त्र पद्य मनी वधुं यवई विचार ।

अभिद सुस्तुत के तप ॥१॥

अश्वमेध दामा व ल कटीक, मान बुनि काइ वरि सुतीर ।

श्रीशर ईश्वरि वीच ॥२॥

सुधितोत्र मन्त्रस्य मणि मन्त्रु मन्त्रुनैत्र मोलन वलाम् ।

वज्रनाथि काईम ॥३॥

सा वरि अर्वाणे विद्वि वाली मय अश्वमेध बुधमह बोधी ।

बुधिनई म्ना अमनाइ ॥४॥

विजयवज्रना दामा वरि मन्त्रु र्वधामुनरि अहूनित्र मुधमह ।

दर्य अश्विन वरमवर वलाम् ॥५॥

विजय वज्रना दामा वरि मन्त्रु र्वधामुनरि अहूनित्र वलाम् ।

अश्विन अशर वर वलाम् ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि मुरगोइ, प्रथमश्रीवि भर्हिमिद्र मुभरगोइ ।

शभव जिन भवतार ॥७॥

अन्तिमभाग—

आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा तन्हे जाणु, पार्श्वनाथ भव दसइ वखाणुं ।

महावीर भव तेथीसइ ॥४६॥

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरोजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ॥४७॥

जिन चुवीस भवातर सारो, भगता सुरता पुण्य भपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३ मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८-३१०
१४ नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११-१३
१५ पद-जीवारे जिणवर नाम भजे	×	हिन्दी	३१४-१५
१६ पद-जीमा प्रभु न सुमरयो रे	×	"	३१६

५४०० शुटका सं० २२ । पद्य सं० १५४ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले०

काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ नेमि गुण गाऊ वादित पाऊ	महोचन्द्र सूत्र *	हिन्दी	१
	वाय नगर मे सं० १८८२ मे प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।		
२ पार्श्वनाथजी की निशारणी	हर्ष	हिन्दी	१-६
३ रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४ सुख कारण सुमरो	×	"	७
५ कर जोर रे जीवा जिनजी	प० फत्तेहचन्द	"	८
६ चरण शरण भव आइयो	"	"	९
७ रूत फिरयो अनादिहो रे जीवा	"	"	९

वाच्य भाग बहाम	पठेहकथ	द्विती	र नाम स १ ४ १
६ अर्थन पुत्रो बी	"	"	१
१ उपलेख चर भारती जी	"	"	११
११ वाटीजी चिन्तनी वाटी	"	"	१२
१२ वासन बरल वा	"	"	१३
१३ पुत्र वास नमलो	"	"	१४
१४ धन स्तु वेवि चिन्तना	"	"	१५
१५ राज अथवा बरल वित बरिये	"	"	१६
१६ कर्म बरमाटी	"	"	१७
१७ प्रभुको बाईं तरफे धामा	"	"	१८
१८ वाट अठारो विननी	"	"	१९
१९ बांकी बाधरो कृति अवि प्योटी	"	"	२०
२० पुत्र वास नमलो	"	"	२१
२१ विन बरणा विननलो	"	"	२२
२२ म्हाटो मज नामोकी	"	"	२३
२३ बज्जत बीच बरे	विनीकथ	"	२४
२४ मो बगरा प्याप	मुचयेव	"	२५
२५ धाड म्हाटो बाहुली	विनीकथ	"	२६
२६ लवचविननलोरो बाहुलाव	"	"	२७
२७ लविनो के मन्व	बज्जताप	"	२८
२८ विदुवन पुत्र स्वामी	मुचरत्न	"	२९
२९ लविनम मोधं वेदी	विननरीति	"	३०
३० बाटि २ ही बांकीजी	जीवराप	"	३१
३१ बी अथवेनुर अणु नाम	नरनाम	"	३२
३२ बरन म्हा अणुह धाटि मुटि	अनीराम	"	३३
३३ बीं पुत्र वेरे उर बनी	मुचरत्न	"	३४
३४ कटो विन मुचराई विनन	विनीकथीति	"	३५

३५	श्रीजिनराय की प्रतिमा बंदी जाय	त्रिलोककीर्ति	हिन्दी	३१
३६	होजी थाकी सावली सूरत	प० फनेहचन्द	"	३२
३७.	कवही मिलसी हो मुनिवर	×	"	३३
३८.	नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	"	३३
३९	श्री जिन तुमसे वीनऊ	भजयराज	"	३५
४०	समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"	३५
४१	शभुजारी वासी प्यारो	नयविमल	"	३६
४२	मन्दिर आखाला	×	"	३६
४३	ध्यान धरघाजी मुनिवर	जिनदास	"	३७
४४	ज्वारे सोसें राजि	निर्मल	"	३८
४५	केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"	३९
४६	समन्त थारी सहलडीजी	पुरुपोतम	"	४०
४७	भवगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	"	४१
४८.	बघावा	"	"	४२
४९	श्रीमदरजी सुणज्यो मोरी वीनती	गुणचन्द्र	"	४३
५०	करकसारी वीनती	भगोसाह	"	४४-४५
५१	उपदेशबावनी	×	हिन्दी	
५२	जैनवद्री देशकी पथी	मजलसराय	"	४५-६१
५३	८५ प्रकार के मूसों के भेद	×	"	६२-६६
५४	रागमाला	×	"	६७-६९
५५.	प्रात भयो सुमरदेव	जगतारामगोदीका	"	३६ रागनियों के नाम हैं ७०
५६.	चलि २ हो मवि दर्शन काजै	"	"	राग भैरु ७०
५७	देवी जिनराज देव सेव	"	"	७१
५८.	महावीर जिन मुक्ति पधारै	"	"	७२
५९	हमरैवो प्रभु सुरति	"	"	७२
		"	"	७३

सूमा नगर में स० १८२६ में रचना हुई थी ।

१	वीरिच नदी को ध्यान करो	वसंतराम गोरीछा	श्लोकी	७३
११	माल प्रथम ही बपो	"	"	७४
१२	बाने बी मैथिकुमार	"	"	७४
१३	बहु के बर्दान को भी धारो	"	"	७५
१४	कुछी धन रोष मिटाने	"	"	७५
१५	कून बंदरी मैनि चढ़ाई	"	"	७५
१६	बिदा तु बालक क्यों लखेंदे	"	"	७६
१७	ठली मेरे बालक को पिबारी	"	"	७६
१	रखीनी जिनराम बरन	"	"	७६
१८	जिनकी से कैरी ब्रह्म नरी	"	"	७६
७०	बुनि ही बरख तेरे पांव परो	"	"	७७
७१	कैरी ब्रह्म दलि होखी	"	"	७७
७२	बेकोरी नैन कैंटी रिडि पाई	"	"	७८
७३	धर्मि बभाई रखा नाथि के	"	"	७८
७४	बीतपथ नाम बुनरि	बुनि विजयतीति	"	७८
७५	बा बैतम लम बुद्धि बई	बनारसीबल	"	७८
७६	दस नबरी के फिय बिम रज्जवा	बनारसीबल	"	७८
७	मै बाने तुम विपुबन राज	हरीचिह्न	"	७
७	ब्रह्मवधवित लंघन हुला	ब विजयतीति	"	७
७८	बरो तेरो बुक बैनु	ब्रह्मरोबर	"	७
	देखीरी धारीभरस्वामी कीना ध्यान लखना है	मुपान्धबरे		७९
१	जे जी बी बी जिनराम	मालचण्ड	"	१
२	बहु बी छिड़ाटी कुरा	हरीचिह्न	"	१
३	बनकि २ बुन पांचव दि वा वा	रामचमर	"	१
७४	बिचन लान बुन कारक लामो	बनल	"	१
१	हरि बिम देखी बैनकी	करीहण्ड		७९

८६	देखि प्रभु दरस कौण	६७
८७	प्रभु नेमका भजन करि	६७
८८	आजि उदै घर सपदा	६८
८९.	भज धी ऋषम जिनद	६८
९०	मेरे ता योही चाव है	६८
९१.	मुनिसुवत जिनरान को	६९
९२	मारे प्रभु सु प्रीति लगी	६९
९३	कौतल गगादिक जल	६९
९४	तुम भावम गुण जानि	६९
९५	सब स्वारथ के मीत है	१००
९६.	तुम जिन भटके रे मन	"
९७	कहा रे मसाली जीवहू	"
९८	जिन नाम सुमर मन बावर	१०१
९९	सहस राम रस पीजिय	"
१००	सुनि मेरी मनसा मासण	"
१०१	वा साधु ससार में	"
१०२	जिनमुद्रा जिन सारसी	"
१०३.	इएविधि देव भदेव की मुटा मखि फारे	१०२
१०४	विद्यमान जिनसारसी प्रतिभा जिनरुद्रा रामरु	"
१०५	काया वाही काऊरे सीवत मून भार मुनिरुद्रा	"
१०६	ऐसे क्यों प्रभु पाइये	१०३
१०७	ऐसे या प्रभु पाइये	"
१०८	ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि वदित प्राण	"
१०९	मेटी विषा हमारी	"
११०	प्रभुजी ओ तुम तारक नाम मगाथा	"
१११	रे मन विपमां सुखियो	१०४

११२	मुमत्त ही मे ल्यारै	वाचतराम	हिंदी	११
११३	घब ली बैलकर्न को सरलो	×	"	११
११४	बैठे बबबत्त दुपाठ	बालतराम	"	११
११५	इहें बुंवर दूरत बार्न की	×	"	१२
११६	घाठि संवारै बीबिबे बरसल	×	"	१२
११७	कैम कुनाए परी रे नबा लेटी	×	"	१२
११८	राम धरत ली नहें सुबाम	बालतराम	"	१३
११९	बड़े मत्तबी मुमि हो राम	"	"	१३
१२०	मूरति कैसि रावै	बबतराम	"	१३
१२१	बैखो लखि बीब हें कैम कुनार	बिबबकीति	"	१३
१२२	बिबबकीबू मीति करी री	"	"	१४
१२३	भोर ही धायै पनु बार्न मो	इरकबाम	"	१४
१२४	बिबेमुरबेब धामे बरसल तुम लेब	बबतराम	"	१४
१२५	क्यो बने ल्यो ल्यारि मोकु	कुनालदुपल	"	१४
१२६	हवाटी बारि भी मेमिमुमार	×	"	१४
१२७	धाले रज्जु रावे कली नई	×	"	१५
१२८	परी बबो प्रकुमै बर्ष करी	बबतराम	"	१५
१२९	बीबा बेरे कर्न हें सुबाम	×	"	१५
१३०	साली लाम्बी मीति नू बामे	×	"	१५
१३१	हैं ली मीटी मुमि हू व लई	×	"	१५
१३२	माली में ली बिब बिबि भाई	×	"	१६
१३३	बालीबे लो बाली लेरे बगकी बहली	बिबबकीति	"	१६
१३४	बकल लने मीरे बकल बने	×	"	१६
१३५	मुम्यै बहरि करी बहाराज	बिबबकीति	"	१६
१३६	कैलब कैल बिब कट बाहि	"	"	१७
१३७	बिब बिब बल बिब बरब बिहल	"	"	१७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	मानुकीति	हिन्दी	६७
१३९ तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	६७
१४० अघिर नरभव जागिरे	विजयकीति	"	६८
१४१ हम हैं श्रीमहावीर	"	"	६८
१४२ भलैभल आसकली मुझ आज	"	"	६८
१४३ कहा लो दास तेरी पूज करे	"	"	६८
१४४ आज ऋषभ घरि जाने	"	"	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊ	"	"	६९
१४६ जागो जागोजी जागो	"	"	६९
१४७ प्रात सँभै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	६९
१४८ ऐसे जिनवर मे मेरे मन बिललायो	अनन्तकीति	"	१००
१४९ आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५० सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अख्यराम	"	"
१५१. वीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो	विजयकीति	"	१०१
१५२ कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	धानतराय	"	"
१५३ म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	वनारसीदास	"	"
१५४ हूँ सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५ प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	"	१०२
१५६. जीवढा तू जागिने प्यारा समकित महलमे	हरीसिंह	"	"
१५७ घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीति	"	"
१५८ कौन दिख्वासू आयो रे वनचर	×	"	"
१५९ सुमति जिनद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६० जिन बादल चढ़ि आयो ही जगमे	"	"	"
१६१ प्रभु हम खरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२ दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	"	"
१६३ सुगुरु मेरे बरसत ज्ञान भरि	हरखचन्द	"	"



१६४	क्या लोभत घटि जाटी री मन	आनन्ददास	द्वितीय	१४
१६५	समचित जलन भाई अकाम	"	"	"
१६६	रे मेरे बटकाण कलापन छाम्यो	"	"	१५
१६७	आल सरोवर लोइ हो अविजल	"	"	"
१६८	हा परमदुद बरतत आलभटी	"	"	"
१६९	उप १। । जिन वर्णन को नेम	देवदेव	"	"
१७०	मेरे मन कुइ है प्रभु मे बनसो	हर्षचरित	"	१६
१७१	अनिहाटी लुहा के बर्ये	पानि लोहमय	"	"
१७२	मी तो तेरी आन्य कहिवा जाती	सुखदोस	"	"
१७३	देखोटी आन्य मेनीसुर मुनि	×	"	"
१७४	नहाटी नहुं नखु नहुत न धारी	आनन्ददास	"	१७
१७५	रे मन बरि लहा सरोवर	बनालोचल	"	"
१७६	मेरी २ करता बनव बन्ये री	कचकच	"	"
१७७	देइ बुझानी री मे जाती	विजयचरित	"	"
१७८	माथा नंजो मुनित बननी	बनारसीदल	"	१
१७९	तनित दिवा आन्य	विजयचरित	"	"
१८०	तन बन जोवन बल अचत मे	×	"	"
१८१	देवदा बन मे काही नीर	सुखदोस	"	१८
१८२	बनन मेहु न तोहि संभार	बनारसीदल	"	"
१८३	अनि दहोरे घरे	बनन्ददास	"	"
१८४	अनि दहो जीव बरसाव मे	×	"	"
१८५	इम नाने आनन्ददास ना	आनन्ददास	"	१९
१८६	दिल्लेव आन्य बेसि जिनद	विजयचरित	"	"
१८७	विज नयोरे बंकी बीन ता	सुखदोस	"	"
१८८	इम बीडे आनी बीन मे	बनारसीदल	"	"
१८९	दुखिया नव जीवो	×	"	१९९

१९०	जगत में सो देवन का देव	बनारसीदास	हिन्दी		१११
१९१	मन लागो धी नवकारसु	गुणवन्द	"		"
१९२	चेतन भव खोजिये	"	"	राम सारङ्ग	११२
१९३	श्राये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"		"
१९४	करो नाभि कवरजी कौ भारती	सालचन्द	"		"
१९५	रो भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	चन्ददास	"		११३
१९६	तैं नरभव पाय कहा किमो	रूपचन्द	"		"
१९७	अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"		"
१९८	बलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"		"
१९९	सब स्वारथ के विरोग लोय	विजयकीर्ति	"		११४
२००	मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"		"

स० १८२१ में विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की बचना की थी ।

२०१	उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी		११४
२०२	नाभि के नद चरण रज बदीं	बिसनदास	"		"
२०३	लाग्यो श्रातमराम सों नेह	धानतराम	"		"
२०४	धनि मेरी आजकी घरी	×	"		११५
२०५	मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द	"		"
२०६	धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मादपाल	"		"
२०७	आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	"		"
२०८	देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"		११६
२०९	कलिजुग में ऐमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"		"
२१०	धीनेमि चले राजुल तजिके	×	"		"
२११	नेमि कवर वर बीद बिराजें	×	"		११७
२१२	तेइ बडभागो तेइ बडभागो	सुंदरभूषण	"		"
२१३	अरे मन के के बर समभायो	×	"		"
२१४	कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"		"

२११.	वैमिर्बिर्ब बर्नन की	ममनकीर्ति	हिन्दी	११
२१२.	बन ब्राह्मो दान बन्दी है बनने बीम्यबल	×	"	"
२१३.	दे मन बान्मो किय ठीर	×	"	"
२१४.	निष्पत हीनद्वार को हीम	×	"	"
२१५.	बमन नर बीबन कोटी	बननन	"	"
२१६.	नन गई ननन हुमाटी	बनतरान	"	११६
२१७.	घरे ठो को नैने २ नह सननने	नैन विजय	"	"
२१८.	मानुटी नैनबाणी	नगतनन	"	"
२१९.	हम घाने है विननन ठोरे बनन की	घानननन	"	"
२२०.	नन घननकी ट घननको	बननन	"	"
२२१.	नैन नर्म नही बीना नैनन देही नारी	बहुविननन	"	१२
२२२.	नन नैनों का नही नुनन	"	"	"
२२३.	बीना ननन ननो विनन नरनन ननो	नननन	"	"
२२४.	नन नरि कनन है नननन	बननन	"	"
२२५.	नन नरि नन नैठ नन	नैनकीर्ति	"	"
२२६.	दे मन बान्मो विठ ठीर	बनननन	"	१२६
२२७.	नुनि नन नैननी के नैन	घाननन	"	"
२२८.	ननन नानि है री नानि नननो नन	बनननन	"	"
२२९.	ननन नानु ननो रीदेरी नाना	×	"	"
२३०.	नानन नन नुनन ननन	ननकीर्ति	"	"
२३१.	नन नुन ननो विनननन	नुननन	"	१२९
२३२.	नैन ननन नरन है	बनननन	"	"
२३३.	नरि री न नन नन नरि नै	घानननन	"	"
२३४.	नानि नन ननन है नैनन	नननन	"	"
२३५.	नैन ननन है ननननी	ननननन	"	१३१
२३६.	नरी नरी री ननन नै	घानननन	"	"

२४१	मैं बदा तेरा हो स्वामी	धाननराय	हिन्दी	१२३
२४२	जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	"	"
२४३	तुम ज्ञान विभो फूली बसत	धानतराय	"	१२४
२४४	नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	"	"
२४५	लागि लौ नाभिनदन स्यो	भूधरदास	"	"
२४६	हम प्रातम को पहिचाना है	धानतराय	"	"
२४७	कौन समानान कीन्होरे जीव	जगतराम	"	"
२४८	निपट ही बठिन हेरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९	हो जो प्रभु दीनदयाल मैं बदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५०	जिनवाणी दरयाव मन मेरा	गुणचन्द्र	"	"
२५१	मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
५२	इन्द्रिय ऊपर असवार चेतन	"	"	"
२५३	भारसी देखत मोहि भारसी लागे	ममयसुन्दर	"	१२६
२५४	काके गढ फोज खढी है	×	"	"
२५५	दरवाजे बेडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६	चेति रे हित चेति चेति	धानतराय	"	"
२५७	षितामणि स्वामी सोचा साहव मेरा	वनारसीदास	"	"
२५८	सुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी क्षाय	भूधरदास	"	१२७
२५९	चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६०	जिन गुण गावो रो	×	"	"
२६१	वीतराग तेरी माहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२	प्रभु सुमरन की या विरिया	"	"	१२८
२६३	किये भाराधना तेरी	नवल	"	"
२६४	घढी घन आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५	मैय्या अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	"
२६६	तजिके गये पीव हमको तकसोर क्या विचारी, नवल	"	"	१२९
			"	"

२६	मीमा ही किरि बाकीके मोहि नैबन्दीनु काम है, भीराम	"		१२६
२६	नैम ब्याजनु कामा नैम तेहरा बंधामा विनोदीतलम	"		११
२६३	अम्य तुम अम्य तुम पणित बाबन	×	"	१३१
२७	केलन मानी मुक्तिके	नबन	"	"
२८	तपारी श्री महावीर मीनु बीन अरनिके लबाईरानु	"		"
२७२	मेरो मन बल मीमा महावीर (बाबनपुरक) हर्षनीति	"		"
२७३	राको हीरा बलहु महु	ध मराम	"	"
२७४	बड़े लीतामी मुनि राबकल	"	३	१३१
७३.	गहि छाया ही विनराब लाम	हर्षनीति	"	"
२७५	देवकुड पहिचान बंदे	×	"	"
७.	नैमि जिनंद विरलेखा	भीबराम	"	१३१
७	नम परदेनी को बरिचयो	हर्षनीति	हिन्दी	१३१
२७६	बलन माल न सखी विर्य	बालराम	"	"
२	बाबरी मुला मेरे मन बची है बारी	नबन	"	
२७	बाबा रे बुझाने बीरी	बुनबाल	"	"
२	साहिबी : बीबनमा म्हापी	विनहारी	"	१३४
२८	पच महाकलबादा	विमरतिहु	"	"
२४	ठी : बनिहापी हा विनराम	×	"	
२३	केका दुमिका विच के बारी पजब लमामा, बुनबाल	"		१३५
२६	अरन मीमा बड़े बरिदा	नबन	"	"
२	बना विनर विन लपी लमी	बालराम	"	"
२	अननबनन नम बालक जारी-नरि	×	"	"
२६	बागिन बरिच मनु नैबनी प्यारी अरिमां रामाराम	"		१३६
२६	हामा इच माल कलमी वा बलमा	हृदराम	"	"
२९	लमा हा नाके लाह ही	×	"	"
२६२	गु बरु गुना गु बरु गुनी जजानी रे बारी	ब ललीराम	"	"

२६३	होजी हा मुघानम एह निज पद भूलि गला	✕	हिंदी		१३६
२६४	मुनि वनन कीनि की जपडो	मोतीराम	"		१३७
रचना काल स० १८५३ लेखन काल सवत् १८५६ नागौर मे प० रामचन्द्र ने लिपि की ।					
२६५	छोक विचार	✕	हिंदी	ले० कान १८५७	१३७
२६६	मावरिया अरज मुनी मुक्त दौन की ह्रीं	प० रामचन्द्र	हिन्दी		१३८
२६७	चांदखेडी मे प्रभुजी राजिमा	"	"		"
२६८	ज्यो जानत प्रभु जोग धरनी है	चन्द्रभान	"		"
२६९	आदिनाथ की विनती	मुनि वनक कीर्ति	"	२० कान १८५६	१३९-४०
३००	पादर्वनाथ की आरतो	"	"		१४०
३०१	नगरो की बसावत का मवतवार विवरण	"	"		१४१

मवत् ११११ नागौर मठाणो आसा होज रं दिन ।

" ६०६ दिली बसाई अतगवान तु वर वसाय मुदी १२ भौम ।

" १६१२ अरजर पातगाह आगरो बसायो ।

" ७३१ राजा भोज उजणो बसाई ।

" १८०७ अहमदाबाद अहमद पातगाह बसाई ।

" १११५ राजा जोधे जोधपुर बसायो जेठ मुदी ११ ।

" १५४५ बीकानेर राव बीके बसाई ।

" १५०० उदयपुर राणी उदयसिंह बसाई ।

" १४४५ राव हमीर न रावत फनांधी बसाई ।

" १०७७ राजा भोज रं बेटे वीर नारायण सेवारणो बसायो ।

" १५६६ रावल बीडे महुवो बसायो ।

" १२१२ भाटी जैसे जैसलमेर बसायो सां ( वन ) बुदी १२ रवी ।

" ११०० पवार नाहरराव महोवर बसायो ।

" १६११ राव मालदे माल वोट करायो ।

" १५१८ राव जोधावल मेहती बसायो ।

" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावे ।

- संख्या १३ आभोर लोवडा? बर्साई ।
- ॥ १३१४ घोरेकमण्डू वाग्नाण घोरेबावरा बर्साणे ।
- ॥ १३१५ राजवाडू घोरावटीस लोरी लोवडे वास घाटे ।
- ॥ ६ २ बणाटस दुवाण वाग्नाण बर्साई देवस्य मुठी ३ ।
- ॥ १ ३ ( १३ ३ ) ? राव बडेबाण बवार घडवेर बर्साई ।
- ॥ ११४ निवराव घेई ४ देवी वाग्नाण ३ ।
- ॥ १४२३ देवरी बिदेरी? बर्साई ।
- ॥ १५१६ वाग्नाण घडवेर गुणगण लोपी ।
- ॥ १२६६ राजकी लीगरी मण्ड बर्साणे ।
- ॥ ११ १ बरोवी वाग्नाणवरी ।
- ॥ १६९६ वाग्नाण घडवेर बडवावाड लोपी ।
- ॥ १२६६ राव मालडे लोवडेर मापी बाण ३ रती राव १५१ बाण घाण ।
- ॥ १६६६ राव विमन नड विगाणर बर्साणे ।
- ॥ १६१६ बालगुरी बर्साणे ।
- ॥ १२२३ (रागुरी देवरी वाग्नाण ।
- ॥ ६ २ लोपीर विमन लोपी बर्साई ।
- १२२३ विमन बभोरवर गुरी विमन बर्साई ।
- ॥ १६ ६ बालविडू घडवेर लोपीर लोपी के मुठी १३ ।
- ॥ १६३६ वाग्नाण घडवेर रावा उरीविडू लोपी हाणगा री विगाण लोपी ।
- ॥ १६३४ बालगाडू घडवेर बालीगिवा लोपी ?

३ २ बोरकर मन के लोवली लोव		जिल्हा	१४३-४६
३ ३ वैन मठ वा लखन	×	बंदावत	बुडू
३ ४ घडूर माठीर लो वरी	×	जिल्हा वर	१२३

म १४२ घण्ट बरी १४

बर्साईसिं प्रत्युपनि हिन मुकवान कनावा भी निमिं ।

मुमुनी बहीचन्धीसि वो विवई बरवीर हुवन मुमुनी लखई ॥१॥

किरपा फुरिण मोहन जीवणय, अरपरपुर मारोठ यानकयं ।  
 मरवोपम लायक यान छजै, गुरु देख सु भागम भक्ति यजै ॥२॥  
 तोर्यङ्कर ईस भक्ति घरं, जिन पूज पुरदर जेम करै ।  
 चतुसघ सुभार घुरधरय, जिन चैति दैत्यालय कारकय ॥३॥  
 व्रत द्वादस पालम सुद खरा, सतरै पुनि नेम घरे सुयरा ।  
 बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र मुदेव पुजै सुखदा ॥४॥  
 धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सप्तश्रेयास दानपति जु तिसा ।  
 निज बस जु व्योम दिवाकरय, गुण मौख्य कलानिधि बोधमय ॥५॥  
 सु इत्यादिक बोयम योगि बहु, लिखियो जु कहा लग बोय सह ।  
 द्युडा गोठि जु श्रावग पत्र लसै, बुद्धि वृद्धि समृद्धि ग्रानन्द बसै । ६॥  
 तिह योगि लिखै ध्रम बुद्धि सदा, लहियो सुख सपति भोग मुदा ।  
 .. .. . ॥७॥

इह धानक ग्रानन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै ।  
 अरपरच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परमन तितै ॥८॥  
 सह वात जु लाय धमकर, ध्रम देव गुरु पति भक्ति भर ।  
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥  
 यशवत विनैवत दानु गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।  
 इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति सुमे नहि औरन को ॥१०॥  
 लिखियो लघु को विघमान यह, सुख पत्र जु बाहुडता लिखि हू ।  
 वसूँ वारणवसूँ पुनि चन्द्र<sup>२</sup> किय, वदि मास भसाठ चतुर्विंशय ॥११॥  
 इह ओटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।  
 ... .. ॥१२॥

तुम भेजि हू येक सकर नै, समचार कहा मुख ते सुइने ।  
 इनके समाचार इतै मुख ते, करज्यो परवान सवै सुखतै ॥१३॥

॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती बुं ॥



१४०३. गुटका स २३। पग बं १४२। पा ५×११ इका। पूर्ण। बधा-नावाक्य।

विशेष—विश्व रचनाओं में से विश्व पाठों का संग्रह है।

१४४ गुटका स० २४। पग बं १। पा ७×१ इका। अर्था-संस्कृत द्वितीय। विषय-पुत्रा।

पूर्ण। बधा-नावाक्य।

१	अनुविमर्षि दीर्घादिक	वाक्यवृत्ति	संस्कृत	१-१२
२	विमर्षिनाम अथवा	एतद्विषय	द्वितीय	११-१२
३	वपरा इव भी अथवा	वाक्यवृत्ति	"	७०-७१
४	मादिनादिक	×	"	७२-७३
५	वीरुत्तार अथवा	×	"	७३-७४
६	मादीधर पाठो	×	"	१

१४०४. गुटका स २३। पग बं १२७। पा १×२ इका। अर्था-संस्कृत द्वितीय। विषय-पुत्रा

१ २२ भागों में पुत्री १३।

१	वचनसंज्ञा	×	संस्कृत	१ २
२	अनुप्राससंज्ञा	×	"	१६-१७
३	अथवा	×	"	१८-२४
४	वचनसंज्ञा	×	"	२४-२७
५	विमर्षिनाम (अनु)	×	"	२७-३२
६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	द्वितीय	३३-३४
	संज्ञा	×	संस्कृत	३-३६
	संज्ञा	×	"	३७-४१
७	वचनसंज्ञा	×	"	४४-४५
८	वचनसंज्ञा	×	"	४६-४७
९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	४७-४८
१०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	४९-५०
११	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५०-५१
१२	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५१-५२
१३	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५२-५३
१४	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५३-५४
१५	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५४-५५
१६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५५-५६
१७	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५६-५७
१८	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५७-५८
१९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५८-५९
२०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	५९-६०
२१	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६०-६१
२२	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६१-६२
२३	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६२-६३
२४	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६३-६४
२५	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६४-६५
२६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६५-६६
२७	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६६-६७
२८	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६७-६८
२९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६८-६९
३०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	६९-७०
३१	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७०-७१
३२	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७१-७२
३३	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७२-७३
३४	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७३-७४
३५	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७४-७५
३६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७५-७६
३७	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७६-७७
३८	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७७-७८
३९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७८-७९
४०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	७९-८०
४१	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८०-८१
४२	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८१-८२
४३	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८२-८३
४४	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८३-८४
४५	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८४-८५
४६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८५-८६
४७	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८६-८७
४८	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८७-८८
४९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८८-८९
५०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	८९-९०
५१	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९०-९१
५२	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९१-९२
५३	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९२-९३
५४	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९३-९४
५५	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९४-९५
५६	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९५-९६
५७	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९६-९७
५८	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९७-९८
५९	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९८-९९
६०	वचनसंज्ञा	अथवा वाक्यवृत्ति	"	९९-१००

## गुटका-संग्रह ]

१५	बोसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६	शास्त्रजयमाला	×	प्राकृत	१५५-५१

५१०६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० १४३ । मा० ५५४ इच्छ । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ ।

पूर्ण । दशा-जोर्ण ।

१	विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२	सूयालस्तोत्र	भूपाल	"	५-६
३	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवतन्दि	"	६-१३
४	सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५	भक्तिगाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६	स्वयमुस्तोत्र	समन्तभद्राच	"	७१-८७
७	वन्तान की जयमाला	×	"	८८-८९
८	तत्त्वार्थमूत्र	उमास्वामि	"	८९-१०७
९	श्रावणप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१०	शुद्धावलि	×	"	१२४-३३
११	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्रार्थ	"	१३४-१३६
१२	एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३६-१४३

संवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने अर्घ्यह श्री घनोघेन्द्रये श्रीचन्द्रप्रभवैत्यालये श्रीमूलसधे सरस्वतीगण्डे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे म० श्रीमस्त्रिमूर्णपट्टे म० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे म० श्रीभ्रमयचन्द्रपट्टे म० श्रीभ्रमयनन्दिपट्टे म० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीकुमुदचन्द्रास्तपट्टे म० श्रीभ्रमयचन्द्रं ब्रह्मा श्री भ्रमयसागर सहायेनेद क्रियाकलापपुस्तक लिखित श्रीमदधनीवेन्द्रगच्छ हुंयद्भजातीय लघुशाखाया समुत्पन्नस्य परित्तरिदासस्य भार्या वाई कीकी तयो सत्रवा सुता भताइनाम्ने प्रदत्त पठनार्थं च ।

५४०७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । मा० ६५५ इच्छ । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । दशा-सामाय ।

विशेष—१० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१	शास्त्र पूजा	×	संस्कृत	१-२
२	स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३	नवम वट	×	संस्कृत	५-२
४	वामनामी	×	"	२-११
५	टील चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१५
६	वर्धनवाट	×	संस्कृत	१३-१४
७	सिंहनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
	पञ्चमिषुवा	सूत्ररत्न	हिन्दी	१५-१६
८	पट्टाङ्गिषुवा	×	संस्कृत	१६-१७
९	बौद्धपारसुवा	×	"	१७-१८
१०	वज्रसूत्र	×	"	१८-१९
११	पञ्चरत्नसूत्र	×	"	२०-२१
१२	भक्तसूत्र	×	हिन्दी	२१-२२
१३	विनायकनाम	साधारण	संस्कृत	२२-२३
१४	वज्रसूत्र	वस्तु शास्त्र	संस्कृत	२४-२५
१५	वसुदेव	कथनसूत्र	"	२६-२७
१६	पद्मसूत्र	×	"	२८-२९
१७	कथनसूत्र	×	"	३०-३१
१८	वसुदेव	वस्तुशास्त्र	"	३२-३३
१९	वसुदेव	×	हिन्दी	३४-३५
२०	शुद्धिस्तोत्र	×	संस्कृत	३६-३७
२१	वसुदेव ( १-२ वसुदेव )	वस्तुशास्त्र	"	३८-३९
२२	वज्रसूत्र	सूत्ररत्न	हिन्दी	४०-४१
२३	वज्रसूत्र	वस्तुशास्त्र	"	४२-४३
२४	वसुदेव	×	"	४४-४५
२५	वसुदेव	×	"	४६-४७
२६	वसुदेव	×	"	४८-४९
२७	वसुदेव	×	"	५०-५१
२८	वसुदेव	×	"	५२-५३

२९	श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३०	क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८-३२
३१	चिंतामणीपार्ष्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२	कलिकुण्डपार्ष्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३	पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४	सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३-४६
३५	ज्योतिष चर्चा,	×	"	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । भा० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । भा० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर मुदी

१० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत वा सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । भा० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । भा० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६

फागुण मुदी ३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ ( भाषा ) है । तनमुख मोनी ने अलवर में साह

दुलोचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पद्यों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । भा० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८

पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

३	अथल पाठ	×	संस्कृत	४-६
४	नामालयी	×	"	६-११
५	टीन बीबीडी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६	सर्वपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७	वीरवामनस्तोत्र	×	"	१४-१५
	पञ्चमस्कन्ध	बुधयोग	हिन्दी	१५-२
८	पट्टाङ्गिकस्कन्ध	×	संस्कृत	२१-२३
९	बीरवामनस्तोत्र	×	"	२५-२७
११	सतलक्षस्तोत्र	×	"	२७-२८
१२	पञ्चमस्कन्ध	×	"	२८-३१
१३	सतलक्षस्तोत्र	×	हिन्दी	३१-३३
१४	विनायकस्तोत्र	मातामर	संस्कृत	३४-४६
१५	सतलक्षस्तोत्र	बालगुणार्थ	संस्कृत	४७-५३
१६	सतलक्षस्तोत्र	वधवाक्येन	"	५२-५३
१७	पद्मस्तोत्र	×	"	५६-६१
१८	पद्मस्तोत्र	×	"	६१-७१
१९	सतलक्षस्तोत्र	उपलक्षण	"	७१-७७
२०	सतलक्षस्तोत्र	×	हिन्दी	७८-८१
२१	शुद्धिस्तोत्र	×	संस्कृत	८२-८७
२२	सतलक्षस्तोत्र ( १-२ अंश )	उपलक्षण	"	८८-९१
२३	सतलक्षस्तोत्र	ईश्वर	हिन्दी	९१-९६
२४	सतलक्षस्तोत्र	सतलक्षस्तोत्र	"	९७-१०१
२५	सतलक्षस्तोत्र	सतलक्षस्तोत्र	"	१०२-१०३
२६	सतलक्षस्तोत्र	×	"	१०४-१०६
२७	सतलक्षस्तोत्र	×	"	१०७-१०८
२८	सतलक्षस्तोत्र	×	"	१०९-११०

२६	श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३०	क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८-३२
३१	चित्तामरणीपार्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२	कलिकुम्हपार्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३	पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४	सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३-४६
३५	ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७-१५७

५४०८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । भा० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । भा० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत वा सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । भा० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । भा० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ काष्ठण बुदी ३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ ( भाषा ) है । तनसुख सोनी ने थलवर में साह दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । भा० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१ ज्योतिषसार

द्वयापन

द्विषो

१-१

२ बाल सं १७१२ वर्तिका सुटी १ ।

पारिभाष्य बोद्धा—

लवण जपत नुर अमुर मर, परच्छत मत्तुपति पाम् ।  
 लो मत्तुपति बुद्धि बोद्धिसे जल अस्सो विपत्तमम् ॥  
 अरु वरतो वरनेन नवत नुपत पाविषा स्माम ।  
 वरते ध्यान मिल वरने नो मुर न (२) बुद्धि अस्सो वाव ॥  
 हरि दावा दावा हरि, बुधन एवता म्म ।  
 वनत धारवी मी मयो दूयो इतिविन्म जल ॥  
 लोभति लोभे मत्त पर, एकहि बुधन विपौर ।  
 मनो लघ वन मोक्ष इति वरिनी वाव धौर ॥  
 वरते इति वर विप नै वरने दमिषा स्वाव ।  
 मन्स्वार मर बोद्धि मी वापत विरवापाम ॥  
 ताहिमद्दुदुद कद्दु मे वाम्म एवतापाम ।  
 गुवापाम तिहि वंश मे ता नुन विषोपाम ॥१॥  
 लनु जलन नो जल बहु मुनो पंडितन पाम ।  
 ताके लई वनोद नै दीदा नरे ववाव ॥२॥  
 लो वरदु मे मुनो लयो बु वरने विवार्ति ।  
 दावा लुद्धिधि ह्य लो, वद्दो जल विस्तार ॥३॥  
 लवणु लतापु वं वरने धौर मत्तुवै वरि ।  
 वानिध मुरी वयवी बुध, वरवी जल वद्दुवमि ॥४॥  
 वर ज्यो लव नो मार एव निषो बु वरने विवार्ति ।  
 वल वयो वा जल नो लाने ज्योतिष सार ॥५॥  
 ज्योतिष ताव बु जल नो वलन वद्दु लु लैवि ।  
 लयो नर लला लवन सुटी सुटी वल वेति ॥६॥

शुद्ध वरस फल लिखते—

सवत् महै होन करि, जनम वर (प) ली मित ।  
 रहै मेप मो गत वरस, भावरदा मे वित्त ॥६०॥  
 भये वरस गत श्रद्ध भय, निख घर वाहू ईस ।  
 प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इवतीस ॥६१॥  
 शरतीस पहलै धूरवा, श्रक को दिन श्रपनै मन जानि ।  
 दूजै घर फल तीसरो, चौथे श्र श्रखिर ज ठान ॥६२॥  
 भये वरस गत श्रक की, गुन धरवावो चित्त ।  
 गुणाकार के श्रक मे, भाग सात हरि मित ॥६३॥  
 भाग हरै ते सात की, लवध श्रक सो जानि ।  
 जो मिले य पल मे वहरि, फल ते घटी वखानि ॥६४॥  
 घटिका मे ते दिवस मे, मिलि जै है जो श्रक ।  
 तामे भाग जु सप्त को, हरि ये मित न सं ॥६५॥  
 भाग रहै जो भेप सो, वचै श्रक पहिचानि ।  
 तिन मे फल घटीका दसा, जन्म मिलावो श्रानि ॥६६॥  
 जन्मकाल के श्रत रवि, जितने वीते जानि ।  
 उत्तरे वाते श्रस रवि, वरस लिख्यो पहिचानि ॥६७॥  
 शरस लख्यो जा श्रत मे, सोइ देत चित्त धारि ।  
 वादिन इतनी घटी जु, पल वीते लगुन बीचारि ॥६८॥  
 लगन लिखे ते गारह जो, जा घर बैठो जाह ।  
 ता घर के फल सुफल को, दोजे मित बनाइ ॥६९॥  
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१ पाशाकवली

२ शुभमुहूर्त

×

×

हिन्दी

”

३१-३६

३६-४१



४४१४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १५। भा० १२×२३। रकम। भाषा ×। विषय-उच्च। ले. पत्र

६। १५५३। मजबूत बुटी ३। पूर्ण। विद्युत्। रकम-साधारण।

विशेष—कमर में प्रतिस्तिपि की गई थी।

१। वैदिकशास्त्री के रक्त जल	×	हिन्दी पत्र	१२
२। निर्वाण कल्प मन्त्र	मजबूतीपत्र	२। मजबूत १७४।	२७
३। शक्ति पत्र	×	मजबूत	
४। पारमेश्वर पूजा	×	हिन्दी	६-१
५। शक्ति पत्र	×	"	११
६। राजपुत्रजीवी	मजबूत विद्युत्पत्र	"	१२-१

४४१६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १२। भा० ११×१६। रकम। भाषा-हिन्दी। विषय-उच्च। ले.

मजबूत १७८२। मजबूत बुटी ४। पूर्ण। विद्युत्। रकम-जीरो।

विशेष—कुम्हटा बौरा है। लिपि विद्वत् एवं विमलकुल धनुष है।

१। डीना मजबूती की मजबूत	×	हिन्दी मजबूत पत्र सं० ४१५।	१२४
२। मजबूतीपत्र की मजबूत	×	"	२४-१
		ले. मजबूत १७२ मजबूत बुटी	
३। मजबूत मीना	×	हिन्दी	१०-११
४। मजबूत मजबूत	×	"	११-१४
५। मजबूत मजबूत की मजबूत	×	"	१२-१४
		११५ मजबूत। मजबूत मजबूत की मजबूत मजबूत।	
६। मजबूत मजबूत	×	हिन्दी	४१-४४
		ले. १७८२ मजबूत बुटी ११।	
७। मजबूत मजबूत	×	"	१११ मजबूत ४४ २१
कुलीना	×	"	११-११
८। मजबूत मजबूत	×	"	११-११
९। कुलीना	×	"	पत्र सं० २४ ११-१

११ वारहखडी	×	हिन्दी	६०-६२
१२ विरहमञ्जरी	×	"	६२-६८
१३ हरि घोला चित्रावली	×	" पद्य स० २६	६८-७०
१४ जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"	७०-७४
१५ रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५-७७
१६ हरिरस	×	हिन्दी	७८-८५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था । लेखक रामजी मीणा था ।

५४१७ गुटका स० ३७ । पत्र स० २४० । प्रा० ७३×५३ इञ्च ।

१ नमस्कार मत्र सटीक	×	हिन्दी	३
२ मानवावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं ४-२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	"	३२
४ आयुर्वेद के नुसखे	×	"	३५
५ स्तुति	कनककीर्ति	"	३७
६ नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१

लिपि स० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

कुशला सौगाणी ने स० १७७० मे सा० फतेहचन्द गोदीका के भोत्ये से लिखी ।

७ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक ६१
८ नेमोद्वररास	ब्रह्मराममल्ल	हिन्दी	२० म० १६१५ १७२
९ जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि स० १७१० १७६
१० पद	×	"	"
११ प्रादित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	२०४
१२ दानपीलतपभावना	×	"	२०५-२३६
१३ चतुर्विंशति छप्पय	गुणकीर्ति	"	२० स० १७७७ असाढ़ वदी १४

आदि भाग—

आदि अत जिन देव, मेव मुर नर तुम्ह करता ।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि भय हरता ॥

तरपुति तगद पठार जाल मन्वर्षित्त नुरद ।  
 तारर मानी वार बैमि बुक शालिह भरद ॥  
 बुक निराल्म म्णम्प कर, पित नरनीतो मत भरद ।  
 कुनकीरि ह्म उभारद मुन वठार व बैला उरद ॥१॥  
 बाभिराम कुननन्व नर मन्वेवि जालज ।  
 काद वमुन क्त पञ्च वृपन वात्स्य बु वञ्जलज ॥  
 हेम नर्न कहि वानु, घानु लवन बु नीरली ।  
 वुरन वनटी एह म्प्य मयोम्मा वली ॥  
 परवहि रानु मु बीपि कर घस्टारव चीवज उवा ।  
 कुनकीरि ह्म उभारद, मुनविठ लोक वन्कु उवा ॥१॥

अन्तिम भाग—

भीमूतर्षव विन्दाउरवञ्च तरपुतिव वञ्चलज ।  
 तिहि नहि विन नरनीम देह सिजा मत वागव ॥  
 परम ज्वर प्रतापु, जलन कुननन्व म्णुनली ।  
 वरिषिबिह्म पतिवञ्चिह, रानु विनीपति मली ॥  
 उतरहृषदव उरोलरद, वरि मञ्चउ नरवति करला ।  
 कुनकीरि ह्म उभारद, मु वनन र्षव विनवर इरला ॥

॥ इति श्री कर्मुनिसरदीर्षकर श्रीम्य सम्पूर्त ॥

१३ लीजराज

कुनकीरि

हिली

रचना सं १७१९

२४

५५१८ गुटका सं ३—रचनेका—२२६।—वा १ × ७। वञ्च—बीरु ।

विलेन—१४ छल लक घापुनेव के वन्वे मुल के हैं ।

१ अचलली वरु

×

हिली

कई रोपो वा एक मुलका हैं ।

२ नाड़ी पीला

×

वस्तुत

करीब २ रोपो को विनिष्ठा वा विस्तृत करीब हैं ।

३ शील सुदर्शन रासो	×	हिन्दी	३७-४२
४ पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न अक्षरों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जा प्रदर्शनों के योग्य हैं ।			
( १ ) रामावतार ( २ ) कृष्णावतार ( ३ ) परशुरामावतार ( ४ ) मच्छावतार ( ५ ) कच्छावतार			
( ६ ) वराहावतार ( ७ ) नृसिंहावतार ( ८ ) कल्किावतार ( ९ ) बुद्धावतार ( १० ) हयग्रीवावतार तथा			
( ११ ) पार्श्वनाथ चैत्यमय ( पार्श्वनाथ की प्रति सहित )			
५ मकुनावली	×	संस्कृत	५६
६ पाशाकेवली ( दाप परीक्षा )	×	हिन्दी	६६
जन्म कुण्डली विचार			
७ पृष्ठ ६८ पर नगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का पत्र है ।			
८ भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	७३
९ वैद्यमनोत्सव ( भाषा )	नयन सुख	हिन्दी	७४-८१
१० राम विनाद ( भाषुर्वेद )	×	"	८२-८८
११ सामुद्रिक शास्त्र ( भाषा )	×	"	८९-११२
लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली			
१२ शोधवाभ	काशीनाथ	संस्कृत	
१३ पूजा संग्रह	×	"	१९४
१४ योगीरासो	जिनदास	हिन्दी	१९७
१५ तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	संस्कृत	२०७
१६ कल्याणमंदिर (भाषा)	बनारसोदास	हिन्दी	२१०
१७ रविवारव्रत कथा	×	"	२२१
१८ व्रतों का व्योरा	×	"	"

अन्त म ६४ योगिनी आदि के यत्र हैं ।

५७१६ गुटका सं० ३८—पत्र सं० २४ । मा० ६×६ इञ्च । पूर्ण । दशो-सामान्य ।

विशेष—सामान्य पाठा का संग्रह है ।

४४२ गुटका सं ४०—पत्र सं १४। भा ॥४६ दंड। भाषा—हिन्दी। ले सं १८८  
पुस्तक। असाध्य पुस्तक।

विशेष—मुद्रणों का संख्या तथा छ ५ से बरक स्वर्क एवं कृषी भाषि का वरिष्क विवा हुवा है।

४४२१ गुटका सं ४१—पत्र संख्या—२३७। भा०—४४२१। दंड। लेखन काल—संवत् १९४२  
वर्ष पुत्री ७। पुस्तक। दंड काल।

१. अमरनाथवाट	बनारसीवाट	हिन्दी	पत्र सं १९६४ भाग १, १९६-२१
२. भास्करनाथ	वसुध कर्ता	हिन्दी	संस्कृत भाषा मुद्रण २२ १११
३. अमरनाथ	अमरनाथवाट	संस्कृत	विधि संवत् १९६

असाध्यपुस्तकें के कर्मी तथा के पत्रार्थ हामीनी भाषि से प्रति विधि भी। छ १११से ११२।

४. अमरनाथवाट	×	"	विधि सं १९६ ११२-११६
५. अमरनाथवाट	×	संस्कृत	११६-११७
६. अमरनाथवाट	अमरनाथ	"	११७-११८
७. अमरनाथ	×	"	११६
८. अमरनाथवाट	×	"	११६-१

विधि सं १६७ असाध्य पुत्री १

९. अमरनाथ	बनारसीवाट	हिन्दी	११
१०. अमरनाथ	×	संस्कृत	१११
११. अमरनाथ	अमरनाथ	हिन्दी	१११-११
१२. अमरनाथवाट भाषा	बनारसीवाट	"	११-१
१३. अमरनाथवाट भाषा	अमरनाथ	"	११०-११
असाध्य पुत्री १ ११।			
१४. अमरनाथ भाषा	अमरनाथ	हिन्दी	१११ ११
१५. अमरनाथ अमरनाथ भाषा	अमरनाथ	"	१११-११

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३-३७
१७. श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७-३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८-४५
१९. सामायिक बडा	×	"	१३८-४५
२०. लघु सामायिक	×	"	१४५-५२
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५२-५३
२२. वाईस परिपह	भूषरदास	"	१५३-५४
२३. जिनदर्शन	"	"	१५४-५७
२४. सवोधपचासिका	धानतराय	"	१५७ ५८
२५. बीसतीर्थकर की जकटी	×	"	१५८-६०
२६. नेमिनाथ भगल	लाल	हिन्दी	१६०-६१
			१६१ १६७
२७. दान बावनी	धानतराय	"	२० स० १७४४ सावरण सु० ६
२८. चेतनकर्म चरित्र	श्रेय्या भगवतीदास	"	१६७-७१
		"	१७१-१८३
२९. जिनसहस्रनाम	भासाधर	संस्कृत	२० १७३६ जेठ वदी ७
३०. भक्तामरस्तोत्र	भगनतु ग	"	१८६-८९
३१. बन्ध्याणमन्दिरस्तोत्र	मुमुक्षुचन्द्र	संस्कृत	१८९-९२
३२. विपाकहारस्तोत्र	धनझाय	"	१९२-९४
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९४-९६
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९६-९८
३५. नृपालनौबीसी	नृपाल नवि	"	१९८-२००
३६. देवपूजा	×	"	२००-२०२
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०२-२०५
३८. सिद्ध, सा	×	"	२०५-२०६
		"	२०६-२०७

१६. धोलककारखुवा	×	"	२ ७-२७
१७. बलसकखुवा	×	"	२ -२ ६
१८. एतकखुवा	×	"	२ ६-२४
१९. कश्चिखुवाखुवा	×	"	२१४-२२४
२०. चिठामसि पार्ष्णिनाखुवा	×	"	२१४-२१
२१. शठिनाखुवा	×	"	१२६
२२. पार्ष्णिनाखुवा	×	"	पुर्ल २२६-२३
२३. बीबीस टीर्नकर खडग	देवदण्ड	"	२२ -१७
२४. लखदण्डमित पार्ष्णिनाखुवा	×	"	२१७-४
२५. कश्चिखुवाखुवाखुवा	×	"	२४०-४१
			लेखन काय १५१३ भाग गुटी २
२६. पदपत्रखुवा	×	"	२४१-४१
२७. लघुविनतखुवा	×	"	२४१-४१
			लेखन काय १५७० बीबाख गुटी २
२८. कश्चिखुवाखुवा	×	"	२४१-४१
२९. विनतखुवा	×	"	२४२-४४
३०. बहुराजना पुस्त	×	हिन्दी बख	२४७
३१. बीसठ कला ली	×	"	"

२४२ गुटका स ४३। पत्र लं १२६। भा ७४४ दख। पुर्ल।

विशेष—इसमें बहुराजना ० का चर्चा छयावल है।

२४२३ गुटका स ४३—पत्र लं २। भा ६२४३२ दख। कला-हीनत। के बल १७७०  
 भाषिक गुटका १३। पुर्ल एवं गुट।

विशेष—य वेरवालाखुवा ताह बी बपन के पत्रार्थ खुदाक बी बपन के इतिहास की बी। इति  
 बन्दुत टीका सहित है। सामाजिक बख भाषे का संख है।

२४२४ गुटका लं ४४। पत्र लं ४३। भा १४२ दख। कला-हिन्दी। पुर्ल। दवा बीर्ल।  
 विशेष—बर्षापी का संख है।

५४२५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १४० । आ० ६३×५ इञ्च । पूर्ण ।

१	देवशास्त्रगुरु पूजा	×	सस्कृत	१-७
२	कमलाष्टक	×	"	६-१०
३	गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४	सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५	कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१९
६	षोडशकारणपूजा	×	"	१९-२२
७	दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८	नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९	पंचमेरुपूजा		"	३६-४५
१०	अनन्तचतुर्दशीपू ।।	भट्टारक महीचन्द्र	"	४५-५७
११	ऋषिमण्डलपूजा	" मेरुचन्द्र	"	५७-६५
१२	जिनसहस्रनाम	गीतमस्वामी	"	६६-७४
१३	महामिषेक पाठ	आशाधर	"	७४-९६
१४	रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	९७-१२१
१५	ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	"	१२२-२५
१६	क्षेत्रपाल की आरती	×	हिन्दी	१२६-२७
१७	गणधरवल्लयमन्त्र	×	"	१२८
१८	आदित्यनारकथा		सस्कृत	
१९	गीत	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२९-३१
२०	लघु सामायिक	विद्याभूषण	"	३१-३३
२१	पद्मवतीछन्द	×	सस्कृत	३४
		म० महीचन्द्र	"	३४-१४०

५४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६ । आ० ७३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण एव

अशुद्ध ।

विशेष—वसंतराज कृत शकुन शास्त्र है ।



५४२०. गुटका सं ५० । पत्र सं १४ । भा २४ दश पूर्ण । क्या-मासाय ।

१	सूर्य के कल नाम	×	नष्ट	१
२	कन्यी मोय स्तोत्र	×	"	१ २
३	विष्णुविधि	×	"	२-३
४	मार्कण्डेयपुराण	×	"	४ २६
५	कन्यीकृतनाम	×	"	६०-१११
६	शुद्धिपुत्रा	×	"	१११-१२
७	दीर्घीपुत्र	×	"	१११-६६
८	मंत्र-संहिता	×	नष्ट	१६६-२११
९	पुन्यानामसिद्धी स्तोत्र	×	"	२११-३६
१०	हरपीठी कथन	×	"	२११-७१
११	वायुपुत्र कथन एवं कष्टक	×	"	२७१-७६
१२	बभ्रुपुत्रोपनिषद्	×	"	२७६-२८१
१३	वीर पुत्रा	×	"	२ १-८७
१४	श्रीमिनी कथन	×	"	२८७-३१
१५	मालोक्यहृदी स्तोत्र	संकराचार्य	"	३११-४४

५४२० गुटका सं ५० । पत्र सं — २२२ । भा — १।।२।। दश पूर्ण । क्या-बालक ।

१	विष्णुसूक्त	सं	संकराचार्य	नष्ट	१-१२१
२	प्रवृत्ति	बड़ा	बाधोपर	"	१४१-४२

बोधा—  
 २० वन लक्षणार्थे । पत्र प्रवृत्ति ।  
 श्रीमत्तं लक्षणार्थे विष्णुसूक्तं कथयन् ।  
 कथया प्रकृतं बभ्रुपुत्रं प्रवृत्तिं तां पुत्रोत्पत्तिं ॥ १ ॥  
 स्वस्तिनीं ब्रह्मीं बभ्रुपुत्र-स्वस्तिनीं ।  
 बभ्रुपुत्रोपनिषत्तां वापि बभ्रुवा कथयन्कथी ॥ २ ॥  
 बभ्रुपुत्रोपनिषत्तां बभ्रुपुत्रोपनिषत्तां ।  
 बभ्रुपुत्रोपनिषत्तां बभ्रुपुत्रोपनिषत्तां ॥ ३ ॥

- मूलसधे वनात्कारणो सारस्वते सति ।  
 गच्छे विश्वपदष्ठाने वधे वृ दारकादिति ॥ ४ ॥  
 नदिसधोभवत्तग नदितामरनायक ।  
 कु दकु दार्यसज्ञोऽज्ञी घृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥  
 तत्पट्टकमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।  
 हमीर-भूपसेध्वोय धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥  
 तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्र यविशारद ।  
 रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥  
 शकम्ब्यामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।  
 प्रभाचद्रो जगद्व धो परवादिभयकर ॥ ८ ॥  
 कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तपुद्रक ।  
 पयनदी जिताक्षोभूतत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥  
 तच्छिष्योऽजनिमव्यौषपूजिताह्निविशुद्धधी ।  
 श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ॥  
 प्रामाणिक प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।  
 लक्षणै लक्षणार्थज्ञो भूपालवृ दसेवित ॥ ११ ॥  
 भर्हृत्प्रणीततत्त्वार्थजाद पति निशापति ।  
 हृतपचेपुरन्तारिजिनचद्रो विचक्षण ॥ १२ ॥  
 जम्बूद्व माफिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।  
 तत्रास्ति भारत क्षेत्र सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥  
 मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।  
 धनधान्यसमाकीर्णामैर्देवाहितिसमे ॥ १४ ॥  
 नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर ।  
 मनोगतमहाभोग दाता दानुसमन्वित ॥ १५ ॥  
 तोडास्थोभूत्महादुर्गो दुर्गमुष्य भ्रिमापर ।  
 तच्छाखानगर योपि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६ ॥

स्वप्नरात्रीयधूमने वाटिकुराटिनिर्महम् ।  
 धीमद्वत्तुदत्तामहृत्त्वायादेवुतिर् ॥ १७ ॥  
 मर्द्धुर्वीचालये रजे बभदरार्थराथे- ।  
 विधिचयट-सोही वल्लिरत्रमनुबिदो ॥ १८ ॥  
 यत्रत्याविपतिस्तप्य प्रजानां लघुद्वुक्तः ।  
 बालपार्थो विद्याथेय हैमत्तयज्जगत् ॥ १९ ॥  
 यिप्यस्य बालकी जतो बुप्टविद्युत्प्रकाशः ।  
 रंथावमंभविष्णुटी विदाःशतवविष्ठासे ॥ २० ॥  
 दीर्घार्थकुलोनेतो एमनी/स्तविद्योचय ।  
 एमविदो विष्णुवीनाम् मूलकैत्रो महाजटी ॥ २१ ॥  
 बलीद्रुतिवदसेतय बौधर्कयज्जगत् ।  
 वाचदत्तार मेही हृदिभन्तोऽनुलासीः ॥ २२ ॥  
 बालवाचारैर्बन्ना वत्तुगादेविलकटः ।  
 धीमद्वुतिरुत्तास्य कृतीप्रियवर्षिणी ॥ २३ ॥  
 बुधसदीरुत्ताबुध्मत्तुर्मुनिजगत् ॥  
 यतोऽकल्लन्वाटी विद्यार्थविशिष्यवत् ॥ २४ ॥  
 धीवत्तुवाटलवत्रो बुदास्त्ववाटिः ॥  
 देवता बापु वत्तावाटी' एजवत्तवतिष्ठतः ॥ २५ ॥  
 एव्य मर्द्धुदत्तामी धीमदीरवटिषिणी ।  
 त्रियवद्या हित्ताज्जगत्की सोऽस्त्ववाटिणी ॥ २६ ॥  
 एवी मदेत्त बंजती पुषी नल्लव्यधुटी ।  
 बभन्त्युत्तवत्तानी एमलसवत्तुप्रिय ॥ २७ ॥  
 निवद्वोऽवत्तवत्तवत्तु' वत्तावाटी ।  
 मर्द्धुतीर्बहुदायनत्तवत्तुविद्योचिनी ॥ २८ ॥  
 एमत्तुत्तवत्तुवत्तवत्तुवत्तु वुवी ।  
 वदुत्त एमवत्ताटी वत्तवत्तुवत्तुवत्तु ॥ २९ ॥

तय्यादरोभवद्दीरो नायको खचन्द्रमा ।  
 नोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥  
 सत्कामिनी महद्द्वीलधारिणी शिवकारिणी ।  
 चन्द्रस्य वसतो ज्योत्स्ना पापध्वान्ताग्रहारिणी ॥ ३१ ॥  
 कुनद्वयविशुद्धासीत् सधमक्तिमुद्रणा ।  
 धर्मनिन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भृत् भाक्तिका ॥ ३२ ॥  
 पुत्रावाम्नान्तयो स्वीयरूपनिर्जितमन्मयी ।  
 लक्षणाक्षुणसदगात्री योपि मानसवल्लभौ ॥ ३३ ॥  
 महर्द्देवसुसिद्धान्तगुरुमत्तिसमुद्यतो ।  
 विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकी ॥ ३४ ॥  
 सुधारद्विष्टीरसमानकीति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।  
 प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमात् सण्डेलवालान्वयवजमानु ॥ ३५ ॥  
 भूपेन्द्रकार्यविकरो वषाड्यो पूढ्यो पूर्येन्दुसकासमुखोवसिष्ठ ।  
 श्रेष्ठी चिवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥ ३६ ॥  
 ह्यनद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैनवरावागमुख्यैर्पंकजै च ।  
 हृद्यक्षरं वाह्यैर्मक्षयं वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोय ॥ ३७ ॥  
 सत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधायिनी ।  
 मती मत्तक्षिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥ ३८ ॥  
 चतुर्विधस्य सधस्य भवत्युल्लासि मनोरथी ।  
 नेनश्री सुधावात्कष्योकोशाभोजसन्मुखी ॥ ३९ ॥  
 हर्षमदे सहर्पात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।  
 दानमालीन्सवानन्दवद्विताशेषचेतस ॥ ४० ॥  
 श्रीरामसिंहेन वृषेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसधमत्तः ।  
 प्रद्योतितान्नेपपुराणलोको नाथु विवेकी चिरमेवजीयात् ॥ ४१ ॥  
 माहारशास्त्रीपधजीवरक्षा दानैपु सर्वाथकरेषु साधु ।  
 कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुसुताधुर्जयतात्वरिव्या ॥ ४२ ॥

सर्वेषु यत्नैषु परं प्रथमं धीमान्प्रदानं ह्युत्तमं यत्नम् ।  
 स्वर्गाय चर्चकविदुषोऽपि सनस्तुष्टान्मार्गविधानं चर्चम् ॥४३॥  
 यत्नेषु चारं बुधिविज्ञानं यथा विज्ञोक्त्या विदुषु चर्चोऽयम् ।  
 क्वीरिति कृत्वा परमवचनं ज्ञानीति चैतन्नास्तुता प्रथितम् ॥४४॥  
 ज्ञेयत्वा बुधाचारं प्रथित्वा चारुतमम् ।  
 बहुधासौ चरन्नापि यत्नं यत्नं ज्ञानं ह्येवम् ॥४५॥  
 यत्न्यायं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ।  
 विदुषाम् विदुषुस्तु बुधिविज्ञानं यत्नं यत्नं ॥४६॥  
 यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ।  
 प्रथित्वा चारं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ॥४७॥  
 यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ।  
 यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ॥४८॥  
 यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ।  
 यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ॥४९॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

१	अर्थविद्यापिनीषत्	×	संस्कृत	१४२
४	वचनार्थापिनीषत्	×		१४५
५	वचनार्थापिनीषत्	×		
६	वचनार्थापिनीषत्	×		
७	वचनार्थापिनीषत्	×	द्वितीय	१४९ १५
८	वचनार्थापिनीषत्	×	संस्कृत	१५०-१५
९	वचनार्थापिनीषत्	×	"	१ १-१५
१०	वचनार्थापिनीषत्	×		१५५
११	वचनार्थापिनीषत्	×		१५ १५५
१२	वचनार्थापिनीषत्	×	"	१५

२४२३ गुहक सं ४३—पत्र सं -२ । का २५४ पत्र । लेखक नाम सं -१ १५ पूर्ण ।

१ सयोगवत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१-२५
२ फुटकर रचनाएँ	×	”	२६-५८

५४३० गुटका स० ५० । पत्र स० ७४ । आ० ८×५ इञ्च । ने० काल १८६४ मगस सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गगाराम वैद्य ने सिरोंज में ब्रह्मजी सतसागर के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

१ राजुल पञ्चीसी	विनीदीलाल लालचंद	हिन्दी	१-५
२ जेतनचरित्र	भैयाभगवतीदाम	”	६-२६
३ नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	”	२७-३१

नेमीश्वर राजुल को भगडो लिखते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोड़ो करी तुम योग लियो सो कहा मन ठालो ।  
 सेज विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को सग न जानू ॥  
 सूख तनु सुख छोड़ि प्रतक्ष काहा दुख देखत ही अनजानू ।  
 राजुल पूछत नेमि कु वर कू योग विचार बाहा मन भानू ॥ १ ॥

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हों भव भोग तन जोर घटें हैं ।  
 पाप बडे खटकर्म धके परमारथ को सब पेट फटे हैं ॥  
 इ द्रिय को सुख किंचित्काल ही भागिरि दुख ही दुख रटे हैं ।  
 नेमि कु वर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म कटे ह ॥ २ ॥

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतघार । लोक गोसाईं ।  
 धूप भक्षण घनाघन धार तुवाट सहो ५ काई के तीई ॥  
 भूख पियास अनेक परिमह पावन हो कष्ट सिद्धन आई ।  
 राजुल नार कहे सुविचार बु नेमि कु वर सुनु मन लाई ॥ ६७ ॥

नेमीश्वरोवाच

काहे को बहूत करो तुम स्थापनप येक सुनो उपदेश हमारी ।  
 भोगहि भोग किये भव हूवत काज न येक सरे बु तुम्हारी ॥

घातर जग्य बड़ी अपमान के नाम बिना मनु कुर मे बायो ।  
 मैनी बड़े मुन पातुल नु ठव मोह ठमि मे नाम ठपारो ॥ १ ॥

अष्टिम भाग—पातुलोबाच—

भायक कर्म बिबा मुन कैपन बाच कि लवठ कैव मुनाद ।  
 भोप ठमि बग मुन करि जित कैम ललो जव बनठ पाद ॥  
 बैर धनेक कटी हठठा जिन तासु की धव बाठ मुनाई ।  
 मोच करी मत मज्ज बरी कटी पातुल नार बई ठव भाई ॥ ३१ ॥

कवच—

घादि रचव्हा विरैक डवल मुज्जी समझायो ।  
 मैमिनाथ हठ बिल नरहु पातुल नु समझायो ॥  
 एजमति शचीप के मुच नाम ठंमच बीयो ।  
 बह्य मलबालर नई बाव मैमि पातुल बीयो ॥ ३२ ॥

॥ इति मैनीस्वर पातुल विचरन अंतर्ण ॥

४ अष्टमिद्वयलठ नवा	बिनकरीति	द्विटी	१२-१३
५ पार्वनाथस्तोत्र	बचनबचन	अष्टम	१२
६ घातिनाथस्तोत्र	मुनिमुसुमन	"	
७ शर्वनाथस्तोत्र	×	"	१३
विद्यामलिनशर्वनाथस्तोत्र	×	"	१७
८ विश्वस्तुनाथ भाषा	बचनवीरलठ	द्विटी	१४
९ बावनस्तोत्र	बावनरज	"	१८
१० दुर्धिमती	बुधरदाठ	"	४
११ बालनकीली	बनारवीराल	"	४१-४२
१२ श्रमाली अजहाननवर घरी	×	"	४१
१४ को बटीव नु हाहव वाटोमी	मुनाबविधन	"	"
१५ मन लीरो मुन वैनु	दीवर	"	४४
१६ मन हुवी मुनर वैव	बुधरदाठ	"	४९

## गुटका-समग्र १

क्र.सं.	ग्रन्थनाम	भाषा	हिन्दी	पृ.सं.
१७	ऋषभजिनन्दबुद्धान्तरिका	भानुकीर्ति		५५
१८	शरु श्राधना तेरी	नवल	"	"
१९	भूल भ्रमागि केई भर्म	×	"	५६
२०	श्रीषानदर्शन	×	"	५७
२१	भक्तामर भाषा	×	"	५८-५९
२२	सावरिया तेरे वार दार वारि जाऊं	जगतराम	"	५९
२३	तेर दरवार स्वामी डार हा नडे ह	×	"	५३
२४	जिनजी थाकी मूरत मनटा मोखो	ब्रह्मबपूग	"	"
२५	पार्वनाथ नीत्र	धानतराम	"	५५
२६	त्रिभुवन गुग स्वामी	जिनदाम	"	२० स० १७५२, ५५
२७	ग्रहो जगपुग गर	भूधरदास	"	५६
२८	चितामणि स्वामी नागा साहय मरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९	बन्ध्याणमिदरस्नात्र	बुमुद्र	"	५७-६०
३०	गनिधुग ती बिनती	ब्रह्मदत्त	"	६१-६३
३१	गीतप्रत क भेद	×	"	६३-६४
३२	पदमपर	गगाराम वैद्य	"	६५-६८

५५५१. गुटका सं० ५१। पृ.सं. १०९। प्रा० ८५६ द.व। विषय-संग्रह। नं० बान १७६६ पागण मुदी ४ नगरनाम। पूर्ण। दया-सामाज।

विषय-संग्रह जयपुर म विवि की गई थी।

१	भारतनागरसदर	वासुदेवराय	सम्पूत	१-६०
२	भक्तामरस्नात्र विष्णु देवीका सतित्र	×	"	स० १८०० ६१-१०६

५५५२. गुटका सं० ५१। पृ.सं. ११२। प्रा० ८५६ द.व। नं० बान १७६३ माघ मुदी २। पूर्ण। दया-सामाज।

विषय-विष्णुदेविका का विष्णुदेविका भाग १।

५५५३. गुटका सं० ५२। पृ.सं. ११४-११५-११६। प्रा० ८५७ द.व।



विशेष—टीन अनु सु कुरवों का विभाग है ।

१	वकिदन्मण्डल	×	प्रवृत्त
२	वक्कनाम	×	"
३	कन्दी नु गुरु	×	"
४	बंकरुवामर्षिगणस्तवण (वृहत्)	दुविमवपैव	गुणो हिन्दी
५	अभितद्याभितवण	×	"
६	"	×	"
७	अन्वुरेतोष	×	"
८	अर्वादिभित्तारकुरतोष	विनवणवृदि	"
९	दुवणवटोष एवं कुरामरण	"	"
१०	अच्छान्तोष	प्रवार्थमणु व	अंशुन
११	अन्वुराक्षमणिवरतोष	दुदुवकण	"
१२	अभितवण	वैवकुरि	"
१३	अभितवण	×	प्रवृत्त
विधि संवत् १७२. माओम गुनी ४ को वीवाच्य इर्ष के प्रतिविधि भी भी ।			
१४	अभितवण	वीवाच्यवैवकुरि	प्रवृत्त
१५	अभितवण	×	"
१६	अभितवण	वैवकण	गुणो हिन्दी
१७	अभितवण	×	"
१८	अभितवण	अभितवण	अभितवण
१९	अभितवण	×	"
२०	"	×	"
२१	अभितवण	अभितवण	"
२२	अभितवण	अभितवण	हिन्दी
२३	अभितवण	अभितवण	अभितवण
२४	अभितवण	अभितवण	अभितवण

२५	पार्वनायस्तवन	समयमुन्दरगणि	राजस्थानी
२६	"	"	"
२७	गौडीपार्वनायस्तवन	"	"
२८	"	जोधराज	"
२९	चितामणिपार्वनायस्तवन	लालचद	"
३०.	तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१	"	समयमुन्दर	"
३२	धोसविरहमानजकडी	"	"
३३	नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	"
३४	गौतमस्वामीरास	×	"
३५	बुद्धिरास	पालिमद्र द्वारा सकलित	"
३६	शीलरास	विजयदेवसूरि	"
जोधराज ने खोंवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा ।			
३७	साधुचदना	भ्रानद सूरि	"
३८	दानवपक्षीलसवाद	समयमुन्दर	राजस्थानी
३९.	भ्रायादभ्रूतिचौडालिया	कलकसोम	हिन्दी
२० काल १६३८ । लिपि काल २० १७५० कार्तिक बुदी ५ ।			
४०.	भाद्रकुमार धमाल	"	"
रचना सवत् १६४४ । धमरसर में रचना हुई थी ।			
४१.	मेघकुमार चौडालिया	"	हिन्दी
४२	क्षमाद्धतीसी	समयमुन्दर	"
लिपि सवत् १७५० कार्तिक सुधी १३ । धवरशावाद ।			
४३	कर्मचतीसी	राजसमुद	हिन्दी
४४	नारहभाबना	जयसोमगणि	"
४५.	पद्मावतीरानीभाराधना	समयमुन्दर	"
४६	शत्रुञ्जयरास	"	"

४७	शैविप्रिस्वयम	श्रीधराम मुनि	हिन्दी	
४८	मन्त्रीरत्नव्यासस्वयम	"	"	
४९	पञ्चमहाभारतमुक्ति	×	ब्राह्मण	
५०	पंचमीस्तुति	×	बल्लभ	-
५१	संपीठकथासम्बन्धितस्तुति	×	हिन्दी	
५२	जिनस्तुति	×	"	विनिर्दिष्ट १७२
५३	कवचमन्त्रविमालास्य	विनयदासमुनि	"	
५४	कवचकारपञ्चम	कवचोत्तराणि	"	
५५	"	बुद्धभक्तमुनि	"	
५६	श्रीगणेशसप्तशतिकास्य	ब्रह्मकुम्भार	"	
५७	"	×	"	
५८	विनयस्तुतिगीता	कुम्भारवाणि	"	
५९	विनयस्तुति श्री श्री	कवचोत्तर जगन्नाथ	"	२ संवत् १४८१
६०	विनयस्तुतिस्वयम	×	"	
६१	शैविराजुभवास्वयमाभा	बालकमुनि	"	२ ४ ११ ९
६२	शैविराजुभवा	कुम्भारवाणि	"	
६३	"	विनयस्तुति	"	
६४	"	×	"	
६५	शुभिनस्य शीत	×	"	
६६	शैविराजुभवा त-भाष	ब्रह्मकुम्भार	"	
६७	सप्तम	"	"	
६८	पञ्चमहाभारत	"	"	
६९	विष्णुनाथसप्तम	"	"	
७०	ब्रह्मसूत्रविनयस्तुति	"	"	
७१	श्रीगणेशसप्तम	"	"	

## गुटका-संग्रह ]

	×	हिन्दी
७२ चेलना री सज्जाय	×	
७३ जीवकाया ,,	भुवनकोति	”
७४ ,, ,,	राजसमुद्र	”
७५ मातमशिक्षा ,,	”	”
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	”
७७ ,, ,,	सालम	”
७८ ,, ,,	प्रसन्नचन्द्र	”
७९ स्वार्थदीप्ती	मुनिश्रोसार	”
८० शत्रु जयभास	राजसमुद्र	”
८१ सोलह सतियों के नाम	”	”
८२ बलदेव महामुनि सज्जाय	समयसुन्दर	”
८३ श्रेणिकराजासज्जाय	”	हिन्दी
८४ बाहुबलि ,,	”	”
८५ शालिमद्र महामुनि ,,	×	”
८६. वभणवाही स्तवन	कमलकलश	”
८७ शत्रुक्षयस्तवन	राजसमुद्र	”
८८ राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	”
८९ गौतमपृच्छा	”	”
९० नेमिराजमति का चौमागिया	×	”
९१ स्थूलिभद्र सज्जाय	×	”
९२ कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	”
९३ पुण्यछत्तीसी	”	”
९४ गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
९५ पञ्चमतिस्तवन	समयसुन्दर	”
९६ नन्दथरणमहामुनिसज्जाय	×	”
९७ शोसबत्तीसी	×	”

६५. नीकरकायी स्तम्भ

अनन्यधर्म

द्वितीय

रचना सं १६५१ । अक्षरमाला में एकी गई । विधि सं १७२१ ।

३४३४ गुटका सं० ३३ । पत्र अ १२६ । पृ ५२४६ दश । अक्षरमाला (१७५६) (पूर्व)

पद्या-तामस्य ।

१. राजाकायकुल की नीरई	अक्षरमाला	द्वितीय
२. निर्वाहिकायक वाचा	नीचा अनन्यधर्म	"
बद—		
३. अक्षरों को गुन टारक नाम बरणी	अक्षर-अ	"
४. अक्षर वाचि के द्वार नीर	द्विचिद्वि	"
५. गुन वैशामें अक्षर छोड़ी अक्षर बरी	अक्षरमाला	"
६. अक्षर अक्षर अक्षि अक्षर वैश में	"	"
७. अक्षरों लक्ष अक्षरोंमि अक्षर अक्षर अक्षर	"	"
८. अक्षर अक्षरों नीर	"	"
९. अक्षरों नीरों की अक्षरोंनी	"	"
१०. अक्षरों अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर	अक्षरमाला	"
११. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१२. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१३. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१४. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१५. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१६. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१७. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१८. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
१९. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"
२०. अक्षर अक्षरों नीर अक्षर अक्षर	"	"

राजमती वीनवै-नेमजी भ्रजी	विश्वसूपरण	हिन्दी
कुम क्यो चढ़ा गिरनारि (विनती)		
१९ नेमेश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	" २० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"
२१ निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२ चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३ पाच परवीत्रत की कथा	वेणुदास	" लेखन सवत् १७७५
२४ पद	वनारसीदास	"
२५ मुनिश्वरों की जयमाला	×	"
२६ भारती	धम्मतराय	"
२७ नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द्र	"
२८ विनति-(बदहू श्री जिन्नराय मनवच का० करोजी )	कनककीर्ति	"
२९ जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३० प्राणो रो गीत ( प्राणोठा रैनू काई सोवै रैन चित्त )	×	"
३१ जकडी ( रिपभ जिनेश्वर बंदस्यो )	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२. जीव सबोधन गीत ( होजीव नव भास रह्यो गर्भ वासा )	×	"
३३ लुहरि ( नेमि नगीना नाथ था परि चारी म्हारालाल )	×	"
३४ मोरहो ( म्हारो रे मन मोरहा वृतो उठि गिरनारि जाइ रे )	×	"
३५ बटोइ ( नू तोजिन भजि विलम न लाय बटोई मारग भूली रे )	×	हिन्दी
३६ पचम गति की वेलि	हर्षकीर्ति	" २० सं० १६८३

३७	करम द्विप्रीनला	×	द्विप्री
३८	पर—( आन लठेवर बाहि बुनै रे हंठा )	गुरेपरवीति	"
३९	पर ( श्रीवीठों श्रीवैकर करो मदि बरव )	वैमिचर	"
४०	करमां की कति म्पाटे हो	बहुपगु	"
४१	माछी ( करी बरिब कुंवरजी की माछी )	मल्लपर	"
४२	माछी	बल्लपर	"
४३	पर—( बोवडा पुजी की पारठ मिनेत्र रे )	"	"
४४	नीठ ( सोठी के बरवाली हो वैपजी का नाम ल्यो )	पदि मापुपम	"
४५	कुइरि—( सो बडार पमदि की लोछी बाव बन्वो टी लो )	वैमिचर	"
४६	कुइरि—( वैमि कुंवर म्पुत्र बरवी उडुच करे इ विचार )	"	"
४७	बोयोपडो	पदि विमपत्र	"
४८	बधिबुव की कमा	वैम	" ४४ पर । वै वं १७१
४९	उडुचपचीची	बल्लपर विप्रीबल	" "
५०	पहुअिहा कत कमा	"	द्विप्री
५१	पुमिस्वरी की बममल	बहुपिगबल	"
५२	बल्लपुमिस्वरीबमला	बनारहीबल	"
५३	टीवैरु बरवी	वृषवीति	"
५४	बकट मे जो वैम की वैव	बनारहीबल	"
५५	हुन वैठे पत्तै पीठ के	"	"
५६	बहा म्पुत्री बीनकी कुव बाल बरवी	"	"

५७ रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट दोहे	"	"
५९ गुणवेलि ( चन्दन वाला गीत )	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियाँ की जकड़ी	धनराज	"
६२. सुखघडो	"	"
६३ कक्का वीनती ( वारहलक्ष्मी )	"	"
६४ भठारह नाते कीकथा	लोहट	"
६५ भठारह नाता का व्यौरा	×	"
६६ भादित्यवार कथा	×	"
६७ धर्मरासो	×	" १५४ पद्य
६८ पद-देखो भाई भ्राजि रिपभ घरि भ्रावे	×	"
६९ क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओं की स्तुति	—	"
७१ सुभाषित पद्य	×	संस्कृत
७२ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी
७३ पद-उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के नद टोकर		"
७४ जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कव जइ या मन की	×	"
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"
७७ नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"
७९ दोहासग्रह	नानिगनास	"
८० धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो जग जेती	धनश्याम	"
८२ देखो भाइ भ्राज रिपभ घर भाधे	×	"



२३	बदलकरमल की प्याज केरी	×	दिली
२४	बिजनी बांकीनी बूछ पनवी मोहियो	×	"
२५	बापी मुहति पंथ बट बापी बापी	"	"
२६	समकि बर बीवन बोरी	बपकन	"
२७	बेवनी के नाई हूठ नाएपी बहाएज	हर्षनीति	"
२८	बैखटी बरुं बैधि बुयाट	"	"
२९	प्रयु ठीटी बूछ बन बरी	बपकन	"
३०	बिठामणी ल्वानी लांध बहूच मेरा	"	"
३१	बुखबरी बन बातेनी	हर्षनीति	"
३२	बेठब तु दिहुं नाल धकेवा	"	"
३३	बच संपल	बपकन	"
३४	बहुनी नांवा बरखल बू बुख बारां	बप बपुरकन	"
३५	बहु संपल	बपकन	"
३६	समीच बिखर बनी रे बीनडा	×	"
३७	हुन बाये हू बिजदान तुम्हरी कनन को	बालरकन	"
३८	बालरकनी	बालरकीरक	"
३९	तू अज बूधि न रे प्रसूरी लकनी	×	"
४०	बुधिये बरज बनु बुधिये बरज	×	"
४१	बैरा मन की बजा कनु बहिये	बपकतिह	"
४२	बूछ ठीटी बुखर बोयो	×	"
४३	प्यारी ही नाल प्रनु का बरख की बलिहारी	×	"
४४	प्रनुनी ल्यारीयं बनु बायु बायिली ल्यारीयं	×	"
४५	ल्यी बारी ल्यी ल्यारीनी बयानिधि	बुखकन	"
४६	नीहि बरता की बिह प्याटा	हडनबराय	"
४७	बुनरन ही में ल्यारी बनुनी बुन		
	बुनरन ही में ल्यारी	बालरकन	"

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन

शुद्धावन

हिन्दी

२० सं० १७६८

१०९ प्रभुजी में तुम चरणगणना गहो

बालचन्द

”

५४३५ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८५६ ३३ । अपूर्ण । दगा-सामाय ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६५ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशक्तिव पूजा विधान है । ६५ में ८१ तक ग्रन्थ प्रतिष्ठा सवन्धी पूजाएँ एव विधान हैं । पत्र ८० पर भयघ्न षा में चौबीस तीर्थङ्कर म्मुनि है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥७७॥

जह पठावहि तिहुवरण इद ॥ रे मन० ॥

यहु सनार अनार मुणो धिगु कळ जिय धम्मु दयाल ।

परनाय तच्चु मुणहि परमेष्ठिहि सुमरीह अप्पु गुणाल ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ अजीउ दुधिहु पुणु आमअ वन्धु मुणहि चरभेय ।

तवर निजळ मोखु धियाणहि पुण्णपाप सुविरोगेय ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त ससारो मुक्त सिद्ध मुवियाणे ।

वसु गुण बुत्त कलङ्क विवजिद भासिये केवलणाणे ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे ससारि भमहि जिय सबुल लख जोणि चउरासी ।

थावर विमलदिय सयलदिय ते पुगल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पच अजीव पढयमु तहि पुग्गलु, धम्मु अघम्मु आगास ।

कालु अशाउ पच कायासी, ऐच्छह दव्व पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसाउ दुविहु दव्वभावह, पुणु पच पयार जिगुत्त ।

मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

आरि पयार वधु पमडिय हिदि तह अणुभाव पयूस ।

जोगा पमडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेस ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणे ।

सुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिम सुह होय नियाणे ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

संबन्ध कटिहि नीच अब सुखर भाष्यन बार गिरीहूँ ।

सकइ विन सपु मानु बिबासकु सुह सोई कीहूँ ॥ १ मग ॥ ६ ॥

मिअर बाछ बिणामु बाणु, बिय बिसुनकल सभले ।

बाछ बिह ठर समबिह तअपु, पंच महामय पले ॥ १ मग ॥ १ ॥

सबबिहि बम्मबिपुनकु परमरउ परमप्यकुमि बाओ ।

लिअठ मुमुमि एअनु ठडिगुरि, ईअियनु ईअर बाओ ॥ १ मग ॥ ११ ॥

आछि अतरल गहु नया करला पकिनु नगह बिचारह ।

बिलनर सभगु लकु पबालगु, ओ द्विब बुध विर बाएह ॥ १ मग ॥ १२ ॥

२४३६ गुटका सं २५ । पत्र सं २४ । मा ६×१६ दण्ड । बाया-हिन्दी संस्कृत । ६ मग

१ ११ म ।

विधेय—पूजा पाठ एव स्तोत्र धारि का संघह है ।

२४३७ गुटका सं २६ । पत्र सं १५ । मा २६×४२ दण्ड । पूर्ण एवं बीरल । धारिवाक पत्र पत्रह है । निधि विहृह है ।

विधेय—इतमे निम्न पठों का संघह है ।

१ कर्मलोचन वर्णन	×	प्राज्ञा	६-२
२ मा ह धम एवं बीरह पुत्रों का विवरण	×	द्विती	६-११
३ द्वैतसूत्रों के ४४ बाह	×	"	१९-११
४ महान नाम	×	"	११
५ सभोदरति कथन	×	"	१४

३३ मग श्री वार्ष्णिनाथ कले बुद्धकीर्तिया एवमप विष्णुनाथकीर्त स्थापित ॥ १ ॥

संघत् ११६ वर्गे नरवराहकिष्णेश विनयार्थे का ब्रह्मविष्णुवार्थे लैलपटवत स्थापित ॥ २ ॥

श्री श्रीवसुदेवकीर्तकले श्रीरघुनाथवार्धपुनैल फर्बिठेव विपरीतवर्गे विष्णुनाथ स्थापित ॥ ३ ॥

सर्वतीर्थपुराण कले विनयविष्णुवार्थे ॥ ४ ॥

श्रीवार्धनाथवर्णित किष्णेश वरकरिपूर्णवाङ्मामिष्णुवार्थे श्री महान्तर कले स्थापित ॥ ५ ॥

संघत् २२६ वर्गे श्री पुष्पनाथकिष्णेश ब्राह्मणकीर्तिया वरधनीविया एवमकुकरकलेणु आबिहसंघः स्थापितः ।

संघत् १ ३ वर्गे लैलसूत्रत् श्रीकलधाम् धामनाथ संकीर्तियीता । ७ ॥

गुह्यना-र-प्रह ।

चतु सघोतरति कथ्यते । श्रीभद्रब्राह्मिण्येण श्रीमूलसघमडितेन ग्रहद्विनिगुतिगुसाचार्यविद्याध्याचार्यैरिति नामयय चारकेण श्रीगुसाचार्येण नन्दिमघ, विहमघ, मेनसघ, देवसघ इति चत्वार सघा स्थापिता । तैम्यो यथाक्रम बलात्कारगणादयो गणा मरम्बतसादर्यो गच्छाक्ष जातानि तेषा प्राप्त्रज्यादिदु कर्मसु षोडि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनययेनम्य शिष्येण मन्वातभगयुक्तेन तुमारयेनन दारुमघ स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्पन्नतप्रवृत्त्यदयेन रामनेनेन नि पिच्छव स्थापित ॥ १० ॥

सवत् १००० वर्षे प्रतीते वीरचन्द्रगुणे सनाशात् भिल्लमघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनायेषामुतरति पञ्चमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गुह्यनाना निष्याण विनासो भविष्यत्येव जिनमत विषन्काल स्थाप्यतीतिलेयमिति दर्शनसारे उक्त ॥

६ गुह्यन्याय चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७ जिनान्तर	वीरचन्द्र	हिन्दी	२१-२३
८ सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४-२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२-३७
१० यति ग्राह्य का १६ दीप	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८-५३
१२ चतुर्वीस ठाणा चर्चा	×	"	५४-८६
१३ अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०-१५०

१४३८ गुह्यका म० १७-पय म० ४-१२१ । भा० ६५६ उच्च । मपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववदना	×	संस्कृत	५-१२
२ सिद्धभक्ति	×	"	१२-१४
३ नदीश्वरदिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४ चौतीस प्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१६
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१६-२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१-२२
७ ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९ धनागार भक्ति	×	"	२४-२६

१	बोध भक्ति	×	"	२१-२
११	विषयिण्यम्ब	×	प्राप्त	२ १
१२.	बुद्धस्वर्यसु स्तोत्र	समन्तभद्राय व	संस्कृत	१०-४१
१३	कुटाली ( लघु भाष्यार्थ भक्ति )	×	"	४१-४४
१४	अनुविमिति तीर्थकर स्तुति	×	"	४४-४६
१५.	स्तोत्र सङ्ग्रह	×	"	४६ २
१६.	भक्त्या कटीची	×	"	४६ २१
१७	पारायनाचार	वैचरुण	प्राप्त	४६-९
१८	संकीर्णवास्तिक्य	×	"	४६-१५
१९.	अभ्युत्थ	वैचरुण	"	४६-७१
२	सन्तानारस्तोत्र	नाम्नु भाष्यार्थ	संस्कृत	७१ ७२
२१	कान्तरी भक्त्या	×	"	७२-८१
२२.	परमार्थ स्तोत्र	×	"	८१ ८४
२३	अष्टमन्त्रमिति सक्ति	हृदयकण्ठ	प्राप्त	१ १
२४	बुद्धबीजमन्त्र	विद्यमन्त्र	"	१०-१४
२५.	समाधिपत्र	×	प्राप्त व	१४-२१
२६.	निर्भरपत्रमी विधान	विक्रितमन्त्र	"	२१ १ २
२७	बुद्धबोधहा	×	"	१ २ ११
२८	हृदयमन्त्रोक्ता	×	"	११०-१११
२९.	"	संस्कृत	"	११२ ११४
३	बोधि चर्चा	परायणा भाष्य व	"	११४ ११६

२४३६ गुटका स २८। पत्र नं १३-२१। पृ १०९। पृ १०१।

विशेष—कुटका प्राचीन है।

१ विषयविधिचक्रवर्त्ता नरसिंह अग्रज व पृ ११ १

अन्तिम भाग—

कतिपय विषय अत्रही उल्लिखित नर नम्यर विष्णु र्वचन उल्लिखित।

२४ अन्त्ये अत्रही अन्तर्गत ही अन्तु अन्तिम र्वचनो।

भवहवि जोएरति करेसइ, सो मरद्वयकउ लहेसइ ।  
 सारउ सुउ महियलि भु जेसइ, रइ समाए कुले उत्तरमेसइ ॥  
 पुणु सोहम्म सग्गी जाएसइ, सहु कीलेसइ रिणु सुकुमालिहि ।  
 मणुवसुधु भु जिवि जाएसइ, सिवपुरि वामु सोवि पावेसइ ।  
 इय जिणरति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासरिण गणहरि भासिउ ।  
 जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, त बुहारण मठु समहु रिणरत्तउ ।  
 एहु मत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।  
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ भहिउ पुण्ण फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि एरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तित्वक्क ।  
 जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुवोहि लाहु परमेसर ॥ २७ ॥  
 इय सिरि बड्ढमाणकदापूराणे सिघादिभवभाववण्णणे जिणाराइविहाणफलसपत्ती ॥  
 सिरि एरसेण विरइए सुभन्वासम्पण्णारिणमित्ते पढम परिच्छेह सम्मत्तो ।

॥ इति जिणारात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२ रोहिणिविधान

मुरिणपुराभद्र

अपत्र श

२१ २५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयञ्जुलु ।  
 सिवमग्गसहायहो केशलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु  
 परमेद्धि पच पणविवि महत्, भवजलहि पोय विहडिय कयत ।  
 सारम सारस ससि जोह्ल जेम, रिणम्मल बरिणज्ज केणकेम ।  
 जिहि गोयमए विरिण बरस्स, सेरिणय रायस्स जसोहरस्स ।  
 तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि धारिय पावण्णध ।  
 इय जव्वदीव हो मरइ खेत्ति, कुरु जगल ए सिवि गए जरोत्ति ।  
 हयिण्णारु पुरजण पवररिद्धु जणु वसइ जित्यु सह सय समिद्धु ।  
 तहि वीयसोउ गयसोउ मूउ, निज्जु पहरइ रइ हियय मूउ ।  
 तहाँ रादणु कुलणन्दण असोउ, जमिल्लवि गउ मइ पूरि सोउ ।



धत्ता—

तिरि गुणभद्रमुगीमरेण विहिय बहा बुधी भरेण ।  
 तिरि मनयवित्ति पयल जुयलणाविवि, नावयनमो यह मगुद्धविवि ।  
 एदड तिरि गिणसल, गदड तहभूमि वाजुणि विग्गं ।  
 एदड लक्खणु सयल, दितु सया कप्पतर वजइ भिग्गं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधान समाप्त ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	प्रपन्न श	२६-२६
४ दयालक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	”	३०-३३
५ चदनपट्टीप्रतनका	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिन प्रणम्य चद्राम कर्मोच्चान्तभ्राम्कर ।  
 विधान चदनपच्छयन्न भवानां कथमिहां ॥ १ ॥  
 द्वीपे जम्बूद्वीप केम्बिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।  
 काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ज्जितो बहुधाबुधे ॥ २ ॥  
 आचार्यछत्रमेनेन नरदेवोपदेशत ।  
 कृत्वा चदनपट्टीय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥  
 यो भव्य कुस्ते विधानममल स्वर्गपवर्गप्रदा ।  
 योऽय कार्यते करोति भविन व्याख्याय सवोधन ॥  
 भूत्यासी नरदेवयोर्ध्वरसुख सच्छत्रमेनाप्रदा ।  
 यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैन श्रिया ॥ ७८ ॥

॥ इति चदनपट्टी समाप्त ॥

६ मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८
-----------------	---	---------	-------

आरम्भ—

आदि देव प्रणम्यांक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद ।  
 मध सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधि ॥ १ ॥



७. मुनबखरपदी कथा

रामगीति के टिप्प

पत्रक ४

१ - ४१

विषय कीर्ति

आदि याग

पण्डित्यिदु सम्मद विरोधरदो वा पुम्बुदुरि भावम भविष्या ।  
 त्रिभुक्तिर्यदु भविष्यु इत्यमया बह्वहृदि मुनबखरपदी हितप्रतिपा ॥  
 बसमिहि सुपंथ विह्वलनुकरीवणु तद्वद नप्य कल्पय्य करीवणु ।  
 बखरदु मखरदेहि पधरिहव कानी मुदुद मु बरद भविरो प ॥  
 मुदुदो मखरनु पुव मुव कुलु राउ रनाउ रपायल मखरु ।  
 बालत मु बरि पति कपय्यो मकलुमवि नयमि ६पुय्यो ॥  
 विधि विधि मुयदि विपावु क्ली म्मलोय नाएत मोहती ।  
 बालरकण मखरमि मुयहि तणु विह्वलव सावित्र परबद घणु विदु ॥  
 कणु बखरिह विधि ए लखरद तदु व कलु कय कणु ए लखर ।  
 बालरत पेकि एणुयहि रोयाहवद म्म मसगहि ।  
 रत्नं बालरिहवियेव बामहि, पुत बलतहि बरिख्यामहि ॥  
 रामरिति कुयिणउ करीवियु विदु विषय कीर्ति महिपति रवेवियु ।  
 कखर पुणु तव बरुयु करीवियु धर म्मयुयमिह लीयनमुनहेवद ॥

पद्या

बी करद करणरद लुयिहि बलकालिय विरविह्य बरैद ।  
 ली विह्वलरदु बरिह्यु कणु मोलनु कय रणर ॥ १ ॥

इति मुनबखरपदीकथा समाप्त्या

पुनरांकित कथा

X

पत्रक ४

४१ ४१

आरम्भ

बख बर प्रखु विरोधर इत्यमनीतर बुतिरितीवरकखरल ।  
 धकतव बलाबखुर बखरपदीकर बुति विरोधर बमकरल ॥ १ ॥

अन्तिम पद्या

बलबलपिपारित रकलकिति बुक्ति छिलत बुहिय विखर ।  
 बलबिधीति बुद मर्यादंतीतुव पुणु बरि विधि विखर ॥ ११ ॥

पुनरांकित कथा समाप्त्या

६ मनसबिधान कथा

×

घरभ म

१६-५१

५४४० मुटका न० ५६—११ संख्या—१८३ । पा०—३११ । १६ । ब० गायत्रीगीर्ण ।

१. नित्ययचना सामाया

×

संस्कृत प्राकृत

१-१२

२. नैमित्तिकप्रयोग

×

संस्कृत

१५

३. श्रुतभक्ति

×

"

१५

४. शारिकभक्ति

×

"

१६

५. श्राधार्थभक्ति

×

"

२१

६. निर्वाणभक्ति

×

"

२३

७. योगभक्ति

×

"

"

८. नदीश्वरभक्ति

×

"

"

९. स्वयम्भूस्तोत्र

प्राचार्य समन्तामद्र

"

२६

१०. पुर्वायनि

×

"

२३

११. स्नाप्यायवाठ

×

"

२५

१२. तत्त्वार्थमूत्र

उमास्यामि

प्राकृत संस्कृत

५७

१३. मुद्रभाताष्टक

यतिनेमिचद

संस्कृत

६७

१४. मुद्रभातिवस्तुति

शुक्लमूषण

"

पृथ १० ८

१५. स्वप्नायनि

मुनि देवनादि

"

२५

१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र

"

"

२१

१७. नूपानस्तवन

नूपान भवि

"

२५

१८. एकीभावस्तोत्र

यादिराज

"

२५

१९. बिषानहार स्तोत्र

धनञ्जय

"

२६

२०. पार्वनाथस्तवन

देवचन्द्र मूरि

"

४०

२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र

सुमुद्वद्र मूरि

"

४४

२२. भावना बत्तीसी

×

संस्कृत

२३. फरसाष्टक

पद्मनदी

"

२४. वीतराग गाथा

×

"

प्राकृत

२१ मंत्रमाला

×

उत्तर

२६ भाषा भाषीनी

म पद्यनिधि

॥

६२-६३

आरम्भ

बुद्धस्यैवमहिमास्तवमस्तमीहं निरूपितैकमतमस्तवमस्तवमं ।

भारतवर्षेणुववास्तवमस्तवमिह स्वर्गनिधिं भवतु मान वृतां विधान ॥ १ ॥

भीष्मस्यमस्तवमस्तवमिह विधानमिह स्वर्ग निधिं विधान ॥ २ ॥

एवं विधानं महत्स्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

अन्तिम

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

इति श्री कृष्णार्क पद्यनिधिः विरचितं यदुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥

२७ मन्त्रमाला

भाषा भाषीनी

उत्तर

२ बीष्मस्यमस्तवमिह

म पद्यनिधि

॥

६६

आरम्भ

स्वर्गनिधिं भवतु मान वृतां विधान ॥ १ ॥

भीष्मस्यमस्तवमिह विधानमिह स्वर्ग निधिं विधान ॥ २ ॥

एवं विधानं महत्स्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

भीष्मस्यैवमुत्तरीके लीलास्तवे निम भविष्यति मे विधानम् ॥ ३ ॥

स्वस्त्रोच्छलञ्चशिरिण्जितमेधन द, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विपादं ।

नि सीमसजमसुधारसतत्तद्भाग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ७ ॥

सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णाचन्द्र भागल्यकाररणमनस्युणा वितन्द्र ।

इष्टप्रदाणविधिपोपितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचित किलवीतरागस्तोत्र,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृणोत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ॥

२९ आराधनासार	देवसेन	मपत्र श	२० स० १०८६
३० हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयम्भू	” स्वयम्भू रामयण का एक अंश	११६
३१. कालावलीपद्धती	×	”	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धतिका	×	”	१३१
३३ ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	”	१३६
३५ सूक्तिमुक्तावलि	शाचार्य सोमदेव	”	१४६
३६ धावकाचार	महापण्डित आशाधर	” ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१ गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । भा० ८५६ इक्ष । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पञ्चमेरु की पूजा	×	”	२७-३१
३ लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२-३३
४ आरती	×	”	३४-३५
५ निर्वर्णिकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । भा० ८५६ इक्ष । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद सग्रह है ।

२४४३ गुडका सं० ६२ । पत्र सं १२४ । भा ४२६ दण्ड । भाषा-हिन्दी । के काल सं १५२४ प्रयुक्त ।

विषय—प्रति श्रीसंजीवनी प्रकाशना में है । मनुवालाजी की वधा है ।

२४४४ गुडका सं० ६३ । पत्र सं १२५ । भा ६४३ दण्ड । भाषा-उत्तरवर्ती । काल-वर्तमान

१ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×	उत्तरवर्ती	१-११
२ विनयप्रकाशना	भाषांतर	"	१९-२२
३ वैद्यप्रकाशना	"	"	२९-३६
४ विनयप्रकाशना	"	"	३७-१२३

२४४५ गुडका सं ६४ । पत्र सं ४ । भा ७४७ दण्ड । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विषय—विभिन्न कथियों के पद्यों का संग्रह है ।

२४४६ गुडका सं० ६५—पत्र संख्या- ९-४११ । भा ५४११ । के काल-१९९१ । प्रयुक्त ।

वधा-जीर्ण ।

१ लक्ष्मणनाथ	४ भाषांतर	उत्तरवर्ती	प्रयुक्त । ९-५७
२. पद्मनाभप्रकाशना	पर्याय	भाषांतर	" ५७-६३
३ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	"	उत्तरवर्ती	" ६३-६७
४ श्रीसंजीवनीप्रकाशना ( कर्मव्युत्पत्ति प्रकाशना )	शोधप्रकाश		६ - १९
५. शास्त्रप्रकाशना	×	"	१
६ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×		१७-१११
७. श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×		१११-११६
श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×	भाषांतर	११६
८. श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×	उत्तरवर्ती	११६-१२५
९ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	भाषांतर	"	१२५-१६६
११ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×	"	१६७-१७१
१२. श्रीसंजीवनीप्रकाशना ( कर्मव्युत्पत्ति )	×	भाषांतर	१७१-४१
१३ पद्मनाभप्रकाशना	×	"	१४२
१४ श्रीसंजीवनीप्रकाशना	×	"	१४२-१४७

१५	मुनीश्वरो की जयमाल	×			
१६	रामोकार पायडी जयमाल	×	अपत्र श		१४७
१७	चौवीम जिनद जयमाल	×	"		१४९
१८	दशलक्षण जयमाल		"		१५०-१५२
१९	भक्तामरस्तोत्र	रङ्घू	"		१५३-१५५
२०	कन्यारामदिरस्तोत्र	मानवुङ्गाचार्य	नम्बृत		१५५-१५७
२१	एकीभावस्तोत्र	कुमुदच द्र	"		१५७-१५८
२२	भक्तलकाष्टक	वादिराज	"		१५८-१६०
२३	भूपालचतुर्विंशति	स्वामी भक्तनक	"		१६०
२४	स्वयम्भूस्तोत्र ( इष्टोपदेश	भूपाल	"		१६१-६२
२५	लक्ष्मीमहास्तोत्र	पूज्यपाद	"		१६२-६४
२६	लघुनह्ननाम	पद्मनदि	"		१६८
२७	सामायिकपाठ	×	"		१६५
२८	सिद्धिप्रियम्तोत्र	×	प्राकृत सस्कृत	ने० सं० १६७५, १६५-७०	
२९	भावनाद्वात्रिंशिका	देवनदि	सस्कृत		१७१
३०	विपापहारस्तोत्र	×	"		१७१-७२
३१	तत्त्वार्थसूत्र	धनञ्जय	"		१७२-७४
३२	परमात्मप्रकाश	उमाम्बामि	"		१७४-७८
		योगीन्द्र	अपत्र श		१७९-८८
३३	सुप्पयदीहा	×	ने० सं० १६६१ वैशाख वृदी ५ ।		
३४	परमानदस्तोत्र	×	×		१८८-९०
३५	यतिभावनाष्टक	×	सस्कृत		१९१
३६	कदशाष्टक	×	"		"
३७	तत्त्वसार	पद्मनदि	"		१९२
३८	दुर्लभायुप्रेक्षा	देवनेन	"		१९४
३९	वैराग्यगीत ( उदरगीत )	×	प्राकृत		"
४०	मुनिमुन्रतनायस्तुति	छीहन	"		१९५
		×	हिन्दी		१९५
			अपत्र श		अपूर्व १९५

४१	बिह्वलपुत्रा	×	संस्कृत	१९९-२०
४२	विनयामनवर्ति	×	प्राकृत	समूर्ण १९९-२
४३	अर्मपुत्रेणा जैनी का ( विपतकिता )	×	हिन्दी	२ ९-३०

विशेष—लिपि १ वत् १९९९ । या सूचकस्यै पृष्ठके को प्रतिक्रिया करायी तथा श्री गणेशविहारी के पाठमाला के बड़कोटा नामके छापीली के प्रतिक्रिया की ।

४४	वैश्विनिर्भर व्याख्यान	पैतरी	हिन्दी	२१०-४२
४५	बलवत्प्रवचनसंभवस्य ( कीर्ति )	×	"	२४२
४६	अर्मपुत्रेणा का मध्यम	×	"	२४३
४७	बलवत्प्रवचनसंभवस्य	सुपतितावर	हिन्दी	२४३-६४
४८	पंचकीर्तनोपायनपुत्रा	केवलमेव	"	२६४-७४
४९	रोहिणीवत् पुत्रा	×	"	२७२
५०	वेदविकीर्तन	वैकुण्ठीति	संस्कृत	२७२-७९
५१	विनयपुत्रेणा	×	हिन्दी	समूर्ण २ ९-६४
५२	वैश्विनिर्भर	कीर्ति	हिन्दी	समूर्ण १ ७
५३	मैत्रीपुर कथित ( मैत्रीपुर उपनवीर्ति )	वदि उपपुरी	"	१ ७-९
५४	विजयपुर की कथित	×	"	१ ९-९१
५५	बलवत्प्रवचन संभव	×	प्राकृत	१११ १४
५६	विनयपुत्रेणा	×	प्राकृत	११४
५७	बलवत्प्रवचन	उपपुरी	हिन्दी	११४-१७
५८	बलवत्प्रवचन	पयाधर	"	११ २१
५९	बलवत्प्रवचन	पयाधर	"	१२२ २
६०	बलवत्प्रवचन	पयाधर	"	१२२-२१
६१	"	बलवत्प्रवचन	"	१ ९ १९९, २११ ४१
६२	वैश्विनिर्भर	उपपुरी	"	१४१-१४३
६३	बलवत्प्रवचन	बलवत्प्रवचन	"	१ ९ १९९ १४३-२२

६४ सुदर्शनरासो

ब्रह्म रायमल्ल

हिन्दी र स. १६२६ ३५६-६६

सवत् १६६१ मे महाराजाधिराज साधोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने आत्म

पठनार्थ लिखवाया ।

६५ जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७-६८
६६ सोलहकारणरास	भ० सकलकीर्ति	"	३६८-६९
६७ प्रद्युम्नकुमाररास	प्रहारायमल्ल	"	३६९-८३

रचना सवत् १६२८ । गढ हरसौर मे रचना की गई थी ।

६८ सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३-९५
६० वीसविरहमासपूजा	×	"	३९५-९७
७० पकल्यारणकपूजा	×	"	अपूर्णा ३९८-४११

५४४७ शुटका स० ६६ । पत्र स० ३७ । आ० ७×५ इच्छ । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

१ भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-२६
२ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६-२७

५४४८ शुटका स० ६७ । पत्र स० ७० । आ० ८३×६ इच्छ । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८-२१

हिन्दी अर्थ सहित । अपूर्णा

३ जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा
४ चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	"	र स १७०८ । अपूर्णा
५ श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्णा
६ स्तुति	"	"	अपूर्णा

५४४९ शुटका स० ६८ । पत्र स० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्णा । ले० काल स० १७८० चैत्र वदी १३ ।

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एव बाद मे आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५४५० शुटका स० ६९ । पत्र स० ११८ । आ० ९×६ इच्छ । हिन्दी । पूर्णा ।

विशेष—बनारसीदास त समयमार नाटक है ।



२४२१ गुटका सं० ५ । पत्र नं १४ । का ५५×५५ इंच । बाग बगुन द्विती । विद्या-विद्यालय

घुर्ण एवं प्रमुद्र । क्या-बीता ।

टिप्पण—एक टुकड़े में उमाशक्ति इन कार्यालय की ( द्विती ) टीका की हुई है । टीका मुद्रा एवं शिखर

है तथा पाठ्य बनचमयी हुए है ।

२४२२ गुटका सं ७१ । पत्र नं ३२-२२२ । का ५५ इंच । घुर्ण । क्या-नामक ।

१ स्वटीका	×	द्विती	१२-४१
२ मूर्तिबन्ध	×	बंगुन	४२
३ पत्रवीथिका	बगुन	"	४३-४७
४ देवभिक्षुका	×	"	४८-५१
५ बगुनबगुनका	×	"	५४ ५२
६ पत्रबगुनका	×	"	५३-७१
७ मीनद्वाराएणुका	×	"	७१-७२
८ चर्मबगुनका	×	"	७२-७५
९ बलिदुष्टकका	×	"	७६-७८
१० मीनबगुनका	×	"	७८-८१
११ मूर्तिबन्धि	×	"	९-८२
१२ बगुनीक्रीडा	×	"	९
१३ कार्यालय टीका चम्पक टिका	बगुनबन्धि	"	९-८७
१४ छात्रिका	×	"	८८
१५ पत्रविशेष नामा	पत्रविशेष	द्विती	८९-२२२

२४२३ गुटका सं ७२ । पत्र नं १४ । का ६३×५३ इंच । घुर्ण । क्या-नामक ।

१. नाटक बनचकार	बगुनीक्रीडा	द्विती	१-१११
		क्या बगुन ११११ मिथि नं १७७६ ।	
२. बगुनीक्रीडा	"	द्विती	घुर्ण
३. मीनद्वाराक्रीडा	×	" घुर्ण पत्र नं	११-७

५४५४ गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । भा० ७×६ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

१ राष्ट्र भासावरी रूपचन्द्र अपभ्रंश १

प्रारम्भ—

विसउरामेण कुरुजंगले तहि यर वाउ जीउ राजे ।

धरणकरणायर पूरियउ करायप्पहु धरण जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है ।

२ पद्धढी ( कौमुदीमध्यात् ) सहणपाल अपभ्रंश २-७

प्रारम्भ—

हाहउ धम्ममुउ हिडिउ ससारि असारइ ।

कोइपए सुणउ, गुणदिउठु सख बिणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ ।

परिहरि विणेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धढी छन्द लिखित ॥

३ कल्याणकविधि मुनि विनयचन्द्र अपभ्रंश ७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पराविधि तिजइ पयासरण केवलसिद्धिहि कारणधुणामिहउ ।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एककु जि कल्लाणउ विहिरिण्वियडि भहवइ गणणउ ।

भहवासय लहखवणविहि, विणयचदि मुणि कहिउ समत्यह ॥

सिद्धि सुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द्र कृत कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४ बूनढी (विणय वदिवि पच ग्रु) यति विनयचन्द्र अपभ्रंश १३-१७



५ रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६ पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७ घातिपाठ	×	"	६७-६९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५९ गुटका सं० ७८ । पत्र सख्या १९० । आ० ६×४ इ च । अपूर्ण । दद्या-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटको का सम्मिश्रण है ।

१ ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२ चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	×	"	२८-३१
३ चिंतामणिस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५ पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६ कर्मदहन पूजा	म० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७ चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१० चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	म० शुभचन्द्र	"	६१-८९
११ गणधरवल्लय पूजा	×	"	८९-११४
१२ अष्टाङ्गिका कथा	यश कीर्ति	"	१०४-११२
१३ अनन्तप्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४ सुगन्धदामी कथा	"	"	११८-१२७
१५ पौडपकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८ आकाशपञ्चमी कथा	"	"	१४७-१५३
१९. रोहिणीप्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४-१५७

१ लक्ष्मीस्तोत्र	वज्रमरिच	संस्कृत	
४ श्रीपालवी श्री स्तुति	×	हिन्दी	
५ तानुवचना	मनाश्रीवाच	"	
६ श्रीसतीर्षभुक्तों की कवची	हर्षनीति	"	
७ बाणभक्तना	×	"	
८. दर्शनशुद्ध	×	हिन्दी	एक दर्शनों का वर्णन है।
९. पद-वचन केवल की ध्यान	हृष्टीसिद्ध	"	"
१ मछामरस्तोत्रनावा	×	"	"

४४४७ गुटका स ७६। पत्र संख्या—१५ । भा०—३।।४४।। लेखन सं १७ ३। बीर्सा।

१ लक्ष्मीस्तोत्र	कवचमामि	संस्कृत	
२. निराल्पना व वाचन व पुना	×	"	
३. श्रीस्वरपुना	×	"	
			पंडित मधुपद ने हिन्दुस्तान में प्रतिष्ठित की।
४ श्रीसतीर्षभरती की कवची	×	हिन्दी	प्रतिष्ठित पुना में की गई।
५. विद्विम्बस्तोत्र	देवनीधि	संस्कृत	
६. एनीनाथस्तोत्र	वर्धिराज	"	
७. त्रिभुवनत्रिभुवन कवि श्रीवच	×	हिन्दी	
चित्तान्तराली की कवचाल	मधुराज	"	श्रीवर्धर में मधुराजने प्रतिष्ठित की की।
८. श्रीवचनस्तोत्र	×	संस्कृत	
१ मछामरस्तोत्र	वाचार्थमाला व	"	

४४४८ गुटका स० ७७। पत्र सं १९२। भा ६।४४ ६ व। भावा-संस्कृत। ले ३ वल १५६

माद्रु मुनी ११।

१ देवद्विष्टपुना	×	संस्कृत	१ ११
२. श्रीस्वरपुना	×	"	११-४४
३. श्रीवचनस्तोत्र	×	"	४४-१
४ वचनस्तोत्र	×	"	१०-११

गुटका-सूत्र ]

५ रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६ पार्ष्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७ धातिपाठ	×	"	६७-६९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५६ गुटका सं ७८ । पत्र सख्या १६० । आ० ६×४ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटका का सम्मिश्रण है ।

१ ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८-३१
३ चितामणिएस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५ पार्ष्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६ कर्मदहन पूजा	म० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७ चितामणिए पार्ष्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८ पार्ष्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१० चितामणिए पार्ष्वनाथ पूजा	म० शुभचन्द्र	"	६१-६९
११. गणधरवल्लय पूजा	×	"	६९-७९
१२ अष्टाङ्गिका कथा	यथा कीर्ति	"	७९-११४
१३ अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	१०४-११२
१४ सुगन्धदशमी कथा	"	"	११२-११८
१५ षोडशकारण कथा	"	"	११८-१२७
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१२७-१३६
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१३६-१४१
१८ आकाशपञ्चमी कथा	"	"	१४१-१४७
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	१४७-१५३
		"	१५४-१५७

२	ज्वालामणिगीस्टोम	×	संस्कृत	१२५-१२६	
२१	शैवपालास्टोम	×	"	१२७-१२८	
२२	कांठक हीम विधि	×	"	१७४-७६	
२३	बीबीसी विवटी	म	एलफाद्र	हिन्दी	१५६-५८

२४६ गुटका स ७२ । पत्र सं ३३ । मा ७×४२ इ च । धूर्त ।

१	एनोतिबानम	बसुवक	संस्कृत	१-२५
२	एनीकनीक रामायण	×	"	२६
३	एनीकनीक मलयत	×	"	"
४	कणोच्छ्रान्तकगाम	×	"	१०-११
५	नववहूस्टोम	केवलाद्र	"	१२-१३

२४६१ गुटका स ८ । पत्र सं १-४८ । मा ६×४२ इ च । ज्वा-संस्कृत तथा हिन्दी ।

धूर्त ।

विवेक—पञ्चमवत भारत परिच्छेद, वैशम्पैय एवं ज्वालामणि का संग्रह है ।

२४६२ गुटका स ८१ । पत्र सं २-२६ । मा ३२×४ इ च । ज्वा-संस्कृत । धूर्त । ज्वा—

ताम्रज ।

विवेक—लिख पुत्रा एवं पायो का संग्रह है ।

२४६३ गुटका स ८३ । पत्र सं ३ । मा ३×४ इ च । ज्वा-संस्कृत । पत्र सं १५५१ ।

विवेक—नवावटी लीन एवं विमलहृत्काम्य ( नं पाषाणर ) का संग्रह है ।

२४६४ गुटका स ८४ । पत्र सं १-२१ । मा ७×४२ इ च ।

१.	स्वस्त्यकारिणि	×	संस्कृत	१-२
२.	विद्यपुत्रा	×	"	२१-२२
३	वीर्यवापणपुत्रा	×	"	२४ २२
४	वसुधामपुत्रा	×	"	२६ २७
५.	वसुधामपुत्रा	×	"	२८-३०
६.	वसुधामपुत्र	×	"	३०-३८

७. विनामजिह्वा	X	संस्कृत	३६-४१
८ तत्पार्थिव	दनाम्बानि	"	४२-४१

४४६४. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २२ । मा० ६४४ इव । भाषा—संस्कृत । मूर्त्ति । दया—मानान्य ।  
विशेष—पत्र ३-४ नहीं है । जिन्मेतात्पार्थिव इति किं बहुवचनं मीमांस्य है ।

४४६६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ५ से २५ । मा० ६४५ इव । भाषा—हिन्दी ।  
विशेष—१८ से २३ मर्वा का सङ्ग्रह है किन्तु किन पत्र के हैं यह अज्ञात है ।

४४६७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३ । मा० ६४४ इव । भाषा—संस्कृत । मूर्त्ति । दया—मानान्य ।

१ जैतरामान्तोत्र	X	संस्कृत	१-३
२ विनयिन्तोत्र	X	"	४-५
३ पार्वतीपत्तोत्र	X	"	६
४ ब्रह्मेश्वरतोत्र	X	"	७
५ पद्मावलीतोत्र	X	"	७-१४
६ ज्ञानानाम्निनीतोत्र	X	"	१५-१८
७ ऋषि नडनतोत्र	तीर्थन	"	१८-२४
८ सरस्वतीस्तुति	भागावत	"	२४-२६
९ शिवनाटक	X	"	२७-३०
१०. क्षेत्रमान्तोत्र	X	"	३०-३३

४४६८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० २१ । मा० ७४४ इव । मूर्त्ति । दया—मानान्य ।  
विशेष—भागावत विरचित पात्र अज्ञात है ।

४४६९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० ११४ । मा० ६४५ इव । भाषा—संस्कृत हिन्दी । मूर्त्ति ।  
विशेष—प्राज्ञ में पूजाओं का सङ्ग्रह है तथा अन्त में अक्षरान्तिक इति मय नवकारराज है ।

४४७० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ५० से १०० । मा० ६४५ इव । भाषा—संस्कृत । मूर्त्ति ।  
विशेष—मन्त्रि पाठ तथा त्रुद्विद्यति तीर्थद्वार स्तुति ( भागावत सम्प्रदाय ) है ।

४४७१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ७ से २० । मा० ६४६ इव । विषय—तोत्र । मूर्त्ति । दया—  
मानान्य ।



१ संशोधन संशोधनानामा	आगतपत्र	द्विती	७-८
२ मन्त्रालयमा	हेमराज	"	१-२४
३ कल्याण संशोधनानामा	बनारसीराज	"	१३ २३

३४७ गुडका सं ६२। पत्र सं १३०-२ ३। या × ३५। ज्ञाना-संस्कृत द्विती। मे

पत्र सं ३३। पपूर्णा। वसा पामाज्य।

१ अधिव्यक्तालय	राजपूज	द्विती	१३०-४३
२ मिनरअरस्टीज	×	संस्कृत	१२३ ५७
३ पत्रसंग्रहालय	×	"	१५५
४ सदन (संस्कृत संत का)	×	द्विती	१ २-४३
५ अल्पवर्षिक	×	"	१३३-२ ३

३४७३ गुडका सं ६३। पत्र सं २३-१ । या ३×३ ३५। पपूर्णा।

विशेष—भारत के २४ पत्र नहीं हैं।

१ पत्रसंग्रहालय	×	द्विती	१२
२ मन्त्रालयमा	याजु बाबा	संस्कृत	१४
३ मन्त्रीसंग्रहालय	पद्मराज	"	१९
४ अष्टम वृत्त का संग्रहालय	अष्टम	द्विती	१६
५ क्या कौन विवरण है	×	"	१०
६ कौन कौन के कौन है अथ संस्कृत	×	"	१
७ कौन कौन की कौन	×	"	७३
८ कौन कौन का कौन कौन का कौन	उत्तराखण्ड	संस्कृत	७३-१४
९ कौन कौन का कौन कौन का कौन	×	द्विती	पपूर्णा १६
१० कौन कौन का कौन कौन का कौन	कौन कौन का कौन	"	१७
११ कौन कौन का कौन कौन का कौन	×	"	१८
१२ कौन कौन का कौन कौन का कौन	कौन	"	१८
१३ कौन कौन का कौन कौन का कौन	×	"	१
१४ कौन कौन का कौन कौन का कौन	कौन कौन का कौन	"	१ ९

१५ खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी ( राग काफ़ी )	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६ देखो करमा सू फुन्द रही भजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसू मोहे मिलाबोरी (रागहोरी) धानतराय		"	"
१८ दुरमति दूरि खड़ी रही री	देवीदास	"	१०५
१९. भ्रज सुनो म्हारी भन्तरजामी	सेमचन्द	"	१०६
२० जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	X	"	अपूर्णा १०८

५४७४ गुटका स० ६४ । पत्र स० ३-४७ । भा० ५X५ इ च । ले० काल स० १८२१ । अपूर्णा ।

विषय—पत्र सख्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकातरा  
आदि के मत्र हैं । स० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा मे प्रतिलिपि की थी ।

५४७५ गुटका स० ६५ । पत्र स० १८७ । भा० ४X३ इ छ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१ आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	१-११८
२ चर्चासिमाधान	भूषरदास	हिन्दी	११९-१३७
३ सूर्यस्तोत्र	X	सस्कृत	१३८
४ सामायिकपाठ	X	"	१३८-१४४
५ मुनीश्वरो की जयमाल	X	"	१४५-१४६
६ शातिनाथस्तोत्र	X	"	१४७-१४८
७ जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८ भैरवाष्टक	X	"	१५१-१५६
९ भकल्लकाष्टक	भकलक	"	१५६-१५९
१० पूजापाठ	X	"	१६०-१६७

५४७६ गुटका स ६६ । पत्र स० १९० । भा० ३X३ इ छ । ले० काल स० १८५७ फागुण सुदी ८ ।  
पूर्णा । दशा—सामान्य ।

१ विपापहार स्तोत्र	धनञ्जय	सस्कृत	१-५
२ ज्वानामालिनीस्तोत्र	X	"	



२. भक्तामरस्तोत्र	मानलुङ्गाचार्य	"	
३. एकौभावस्तोत्र	बादिराज	"	
४. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	
५. पौर्णवर्णस्तोत्र	×	"	
६. वर्धमानस्तोत्र	×	"	
७. स्तोत्र संग्रह	×	"	५६-७५

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र स० १३-११५ । आ० २३×२३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

दशा सामान्य ।

विशेष-नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजामो का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६९ । पत्र स० ४-१०५ । आ० ४×३ इच्छ ।

१. कक्कावतीसी	×	हिन्दी	४-१३
२. त्रिकालचौवीसी	×	"	१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"	१७-२०
४. तीसचौवीसी	×	"	२१-२३
५. पहलियां	मारु	"	२४-६३
६. तीनचौवीसीरास	×	"	६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	६७-७३
८. श्रीपाल वीनती	×	"	७४-७८
९. भजन	×	"	७९-८०
१०. नवकार बढी वीनती	ब्रह्मदेव	"	स० १८४५ ८१-८२
११. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"	८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द्र	"	अपूर्णा १०१-१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र स० २-८० । आ० १०×६ इच्छ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचंद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४-५

४ एपीकवस्तीय	बाहिरपत्र	बंसत	१-५
५. विनयुनाविचल ( वैमयुवा )	×	द्वितीय	७-११
६. अष्टाश	घनतपत्र	"	१६-१७
७. मत्तवस्तीय	बाह्यु पात्रार्थ	वस्तुत	१६-१८
८. वस्त्रार्थयुव	उत्तरवादि	"	१२-१३
९. शीबकवाष्कयुवा	×	"	१२ २४
१० वस्त्रवस्तीयुवा	×	"	१२ १९
११. एलाययुवा	×	"	११ १६
१२. वस्त्रवस्तीयुवा	×	द्वितीय	१७
१३. मदीयवस्तीयुवा	×	वस्तुत	१७-१८
१४. घातयुवा	×	"	४
१५. वस्त्रवस्तीयुवा	×	द्वितीय	४१
१६. तीर्थभूतवस्त्रव	×	"	४१
१७. वस्त्र-वर्ण के संघ युवती आदि का वर्णन	×	"	४१-४२
१८. शीबक	मुद्रवस्त्र	"	४१-४६
१९. एपीकवस्तीयवस्त्र	"	"	१७-१९
२०. हाथवस्त्रवस्त्र	×	"	११-१३
२१. वस्त्रवस्त्र	×	"	११ १४
२२. बाहुवस्त्र	मनालीयवस्त्र	"	१४-१६
२३. वस्त्रवस्त्र	वस्त्रवस्त्र	द्वितीय	१२-१६
२४. शीबक	विनयवस्त्र	"	१६-१७
२५. वस्त्र	×	"	७-८

२४८१ गुणक सं० १ । पत्र सं १-१६ । या २१× १६ व । मत्त-वस्तुत । विन-वर्ण ।  
 वस्तुत । वस्त्र-वस्त्रव । शीबक वस्त्र का नाम है ।

२४८२. गुणक सं १ । पत्र सं १-२३ । या २४× १६ व । मत्त-द्वितीय । वस्तुत । वस्त्र-  
 वस्त्रव । विन-वस्त्रव के वस्त्र का संघ है ।

गुटका समूह -

क्र.सं.	प्रश्न	उत्तर	दिनांक	पृ.सं.
१	दून क्यों गया जी म्हाणे	X		०
२	जिन दूबि पर लाऊ मी बारी	गान		०
३	आखिया लगी तीडे	X		०
४	हणनि मुख पायो जिनवर ड्रेनि	X		२
५	लाज मोई लगी देखन की	बुझन		२
६	जिनकी का ध्यान में मन लगि रह्यो	X		३
७	प्रभु निन्हा दीवानी विद्यावा जेने निन्हा सडया	X		३
८	नहीं ऐसी जनन बारम्बार	नवनराम		४
९	आनन्द भङ्गल भाव हमारे	X		४
१०	जिनराम नजो मोही लोखो	नवनराम		४
११	सुन पय लगे ज्यो होय नला	"		४
१२	छाहरे मनकी ही कुटिलता	"		४
१३	सदन में ड्रया है धर्म को-दल	"		५
१४	दुख काहु नहीं बीजे रे भाई	X		६
१५	मारुनाम्पो	नवनराम		६
१६	जिन बरुण चित नगाय मन	"		६
१७	हे ना का निनिदे श्री नैन-वार	"		७
१८	म्हाणे नामो प्रभु नू नेह	"		७
१९	यां ही संन नेह लख्यो है	"		७
२०	या पर बारी हो जिनराम	"		८
२१	मो मन या ही बरु लख्यो	"		८
२२	बनि बही ये नई देखे प्रभु नैना	"		८
२३	बीर छे पीर मोरी कासो कहिये	"		८
२४	जिनराम ध्याकी नवि जाव ने	"		१०
२५	सनी जाय जादी पवि को मनसावो	"		१०
२६	प्रभुकी म्हाणे जिनकी भववाये हो गव	"		११
				११

४	दुर्गाभ्यस्तोत्र	बाबुराम	संस्कृत	११
५.	विष्णुनामिवाण ( विष्णुना )	×	हिन्दी	७-१६
६.	सूरदासा	दासदास	"	११-१
७	नन्दबालोच	बाबु पाथर्ष	संस्कृत	११-१३
८.	दासार्थसूत्र	ब्रह्मनाथि	"	१३-११
९	दोमहृदादेतुना	×	"	२१ २४
१०	ब्रह्मसूत्रसूत्र	×	"	१३ ११
११	जलसूत्र	×	"	११-११
१२.	पञ्चतन्त्रोपुना	×	हिन्दी	१७
१३	संतीकण्ठीपुना	×	संस्कृत	१७-१६
१४	दाससूत्र	×	"	४
१५.	संस्कृतोपुना	×	हिन्दी	४१
१६.	तीर्थसूत्रोपुना	×	"	४१
१७	नन्द-नन्द के अंश दुर्गा भक्ति का दर्शन	×	"	४१ ३
१८.	सिद्धसूत्र	दुर्गादास	"	११-१६
१९.	दुर्गाभ्यस्तोत्रनामा	"	"	१०-११
२०	ब्रह्मसूत्रोपुना	×	"	११-११
२१	संस्कृतसूत्र	×	"	११ १४
२२.	दाससूत्र	दत्तादीन	"	१४-१६
२३.	संस्कृतसूत्र	ब्रह्मनाथ	हिन्दी	१३-१६
२४	संस्कृतोपुना	विष्णुदास	"	१६-७
२५.	संस्कृत	×	"	७-७

२५५१ गुटका स १ १। पत्र सं १-२१। भा ३ X५२ ६५। नामा-संस्कृत। विष्णु-नन्द।  
 पदार्थ। नामा-संस्कृत। संस्कृत नामा का पत्र है।

२५५२. गुटका स १ १। पत्र सं १-२१। भा ३ X५४ ६५। नामा-हिन्दी। पदार्थ। नामा-  
 नामा। विष्णु नन्दो के पदों का संस्कृत है।

१	सूल क्यों गया जी म्हाँ	×	हिन्दी	२
२	जिन छवि पर जाऊ मैं वारी	राम	"	२
३	शक्तिमा लगी तैडे	×	"	२
४	दृगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५	लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६	जिनजी का ध्यान मे मन लागि रह्यो	×	"	३
७	प्रभु मिल्या दीवानी विद्योवा कैसे क्रिया सझ्या	×	"	४
८	नही ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९	भानन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०	जिनराज भजो सोही जीत्यो	नवलराम	"	५
११	सुभ पथ लगे ज्यो होय भला	"	"	५
१२	छाडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३	सवन में द्रमा है धर्म कोमूल	"	"	६
१४	दुम काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५	मारण लाग्यो	नवलराम	"	६
१६	जिन खरणां चित लगाय मन	"	"	७
१७	हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार	"	"	७
१८	म्हारो लाग्यो प्रभु स्रु नेह	"	"	८
१९	या ही सग नेह लग्यो है	"	"	८
२०	यां पर वारी हो जिनराय	"	"	८
२१	मो मन यां हो सग लाग्यो	"	"	८
२२	घनि घटो ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	८
२३	बीर री पीर गोरो बातो कहिये	"	"	१०
२४	जिनराय ध्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५	समो जाय जादो पति को समझावो	"	"	१०
२६	प्रभुनी म्हारो बिनती भवधारो हो राज	"	"	११



	नवसप्तम	श्लोकी	१२
२७ ईं विष बंधिने हो कतुरा बर			१२
२ प्रभु कुन नाथो अधिक बरन	३३		१२
२८. सो मन म्हारो विनवी सु लाथी	३३	३३	१२
३ प्रभु कुक एकदोर सेठी नाक करो के	३३	३३	१२
३१ बरतन करत बरन सब बरते	३३		१२
३२. ऐ बरन सोरिजा ऐ	३३	३३	१४
३३ म ठ कुप बोलने फिट भीनी	३३	३३	१२
३४ देव दीन सो बरनास लागि बरतु बरतु बानी	३३	३३	३३
३५. नाथो हूँ भी विद विभवय करी	३३	३३	३३
३६ प्रभुवी म्हारो बरन सुधी फिलदास	३३	३३	१६
३७ वे बिबा फिट नाई	३३	३३	१६-१७
३. ये पुना फल बरत सुधी	३३	३३	१
३८. विष मुगरन की बार	३३	३३	३३
४. सामाधिक लुटि बंजन करि के	३३	३३	१८
४१ विभवयवी की बरन सब बीन बरन	संभवत	३३	३३
४२ कैठी कथी न झली विवा	३३	३३	२
४३ एक बरन सुती बरनय भीठी	बालदास	३३	३३
४४ सो ते बरना कर बरन रिखन बीन ठेठा	बुधदास	३३	३
४५. बरना देव में देव क्योवी बरन	×	३३	३३
४६ कैठा फल कतुरा बरनयो	×	३३	१८
४७. बीबा सुन भीठी लालीनी	बालदास	३३	३३
४८ कथी १ पत्र २ दिग २	शैलदास	३३	३३
४९. सब फट कतुरा	×	३३	१९
५. नाक बरनी बीन सुजानी डोरे	×	३३	३३
५१ बुनि बीबा ऐ बिरनास ऐ डोयो	×	३३	३३
५२. सब बंधिना ऐ नाई	बुधदास	३३	३३

## गुटका-संग्रह ]

५३. माई सांही सुघर बखानि रे	नवनराम	हिन्दी	२३
५४. हो,मन जिनजी न क्या नही रटे	"	"	"
५५. की परि इतनी मगहरो करो	"	"	मपूर्णा

५४-५३ गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । प्रा० ६५५ इक्ष । मपूर्णा । दया-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदा का संग्रह है ।

५४-५४ गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । प्रा० ६५५ इक्ष । मे० कान सं० १७२८ कातिक

शुद्धी १५ । मपूर्णा । दया-जीर्ण ।

१. रत्नप्रयोज्ञा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीप्रवरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३. स्नानविधि	×	गम्वृत	४८-६०
४. शेषपानपूजा	×	"	६०-६४
५. शेषपानाष्टक	×	"	६४-६५
६. पन्डेतान की जयमाला	×	"	६५-६६
७. पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाला	×	"	७०-७३
९. पूजा प्रमाण	×	संस्कृत	७४
१०. नितामलिका की जयमाला	ग्रह्यगणपत्र	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डलचक्र	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विष्णुमान शीत शीर्षकुर पूजा	नरेन्द्रनाथ	गम्वृत	८२
१३. दधारातीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नाचलो प्रती की त्रिविधो के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. कास मग्न की	"	"	८८-८९
१६. शिवमहामना	षाणाधर	गम्वृत	८९-१०२
१७. शिवमनादिप्रमाण	×	"	१०२-१२१
१८. दया की त्रिविधो का श्लोका	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४-५५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । प्रा० ६५६ इक्ष ।

१. बर्धमानपुरसेन बाण्ड बाला	बनारस	हिन्दी	पगुर्त	१४-१३
२. बबिल बंधु	×	"	"	१३-११
[ निम्न बबिलों के नामक नायिका लक्ष्मी बबिल हैं । ]				
३. उदरेण बबिली	×	हिन्दी	पगुर्त	११-१३
४. बबिल	मुजफ्फर	"	"	१६-१७

१४६६ गुटका सं० १०६ । पृष्ठ नं १४ । पृ. ६५६ इ.स. । भाषा-सम्पूर्ण । पगुर्त । बीर्त ।

विषय—उदरेणामि ह्यु लक्ष्मीयुव ।

१४६७ गुटका सं० १७ । पृष्ठ नं १०-१४ । पृ. १७२ इ.स. । भाषा-हिन्दी । नं. बाल सं० ७४४

बैसाख मुसी । । पगुर्त । बडी-बालक्य ।

१. हृष्यकेशिणिसि हिन्दी पद्य टीका लक्ष्मी पूर्वांतराज हिन्दी १०-१४

केसव काव्य सं० ७४४ बैसाख मुसी १४ । १ काव्य सं० १९१७ । पगुर्त ।

अभिज्ञ पाठ—

रसज्ञां जलदीनचलली छुली रस विप्यावचन न ता लम है ।

नरनति बनमिली छलि महुबदि बहि का मुर्तितकर नई ॥ १ ॥

टीका—छुलि एवातर्द कर्मणा । नावर धीम्लुतमी छद रनता बीकतां के रत ते हहि टीका बटीक नह्यी । वर ते बचन माझी बूडर केमंत नामक लाव मरिन्दी । बनमिली कास्वतीभी लहुबरी । बनमिली छलि कर्मणा नही मुजमद घास्त्रुं बननी ॥ बनली कर्मबल नही तेहना बुक बनो मुली छिमही न नही ॥ १ ॥

वय लखल छुल छलान व नीलि बहिवा लनरबीक छुल ।

बरीलया मिवा लरिलिनी बरिवा मीरिब रलि छला छुल ॥ ११ ॥

टीका—बनमिलि नर वय लखल छुल कहेवां बरि लनर्ब छुल लनर्ब वर वर बरिनु वी नहि बनव । नाहरी बरिद पगुधार मिवा ल्याला सिखा क्क माहि ह्युवा नह्या छिल नास्त्रुं वरुवत नास्त्रुं वी वी ह्युवा बरिन्दी ॥ ११ ॥

बगु दिव बन लर वरि बनवर विरवरसमि रवि रिय बरलीक ।

विमल बनमिली बैमि क्कवत वीवी लनर्ब न बनमिलि क्त ॥ १२ ॥

टीका—बनल कर्मव दान रहु छल कुल ३ पृष्ठ १ बरिबननवा १ लनर्ब १९१७ वर बनल कुल रवि बरि वरि वर वीक वर ॥ बरि वी बनवार बनले दिव रत नरु बरि धीकल बनमिलि वरार विव वी बननी वर नाहरी बनमिली ह्युलनर वी बनमिली क्त वरी नाहना वीवी ए बैमि ह्युवा बनली बनले बरिबनर रत रिय बनर करत वी लनबी रूप कल नाह ।

वेद बीज जल पयसा सुचवि जउ मटीम घर ।  
 पत्र दूहा गुण पुहपवात भोगी तिगामी यर ॥  
 पनरो दीप प्रदीप अधिक गारी या टचर ।  
 मनसुजेगति मव पन पांमिइ मंवर ॥  
 विस्तार कोम बुधि जुगो विमन धरणी तिसन वरणाएर पन ।  
 ममृत वेनि पीयल प्रतइ रोपी कनिपाएर सजुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूत्र वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिगो मयियएर तिये ययणे गरि जठमाडीस हउ पणिइ ॥

दूहा ते पत्र दूहा गुण ते पून सुगण बाग भागी भमर श्रीशृण्णजी वेतिइ मानहइ करो विस्तारी जगत्र नइ जिगे दीप प्रदीप ।  
 व दीवा पी अधिक प्रत्यंत विस्तरी जिके मन मुपी एह नउ पी जाणइ तीको हमा पन पांमइ । मवर महिता स्वर्ग  
 ना सुरा पासे । विस्तार करी जगत्र नइ विपइ विमल करीना निर्मल श्रीनिसनजी जेनि मा धमो नइ कठण हार धय  
 तिगो विरा ममृत रूपए । वेति पृथ्वी नइ तिगइ अधिकन पृथ्वी नई वविराज श्री वन्पाएर तम वेटा पृथ्वीराजइ कया ।

इति पृथ्वीराज शत रूपएर कथमएणे वेति सपूर्ण । मुणिए जग विमल वाचनगार्थ । सय १७४८ वर्ष केनाए

मासे कीपण पक्षे तिथि १४ भद्रपामरे लिपत उणिमरा नम्रे ॥ श्री ॥ रन्तु ॥ इति मगल ॥

२. कीवमजरी	×	हिन्दी	५५
३. बिरहमजरी	नददाम	"	५५-६१
४. बापनी	हेमराज	"	५६ पर हें ६१-६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"	६७
६. पृच्छायति	×	"	६६-८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदाम	"	८८-११४

७४८८ शुटका स० १०७ क । पत्र स० २३५ । मा० ५५४ इअ । विषय-पूजा एव स्तोत्र ।

१. देवपूजाएक	×	संस्कृत	१-४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४-६
३. श्रुताएक	×	"	६-७
४. गुरुस्तवन	दातिदास	"	८
५. गुर्वाएक	वाविराज	"	९



७. सरस्वती त्रयपान	बहुविन्दवज्र	द्विती	१०-११
७. पुत्रत्रयपान	"	"	११-१२
ननुष्वागतविधि	×	संस्कृत	११-२१
८. निरुद्धकृपा	×	"	१४-१
९. वनियुक्तवन्दनसंज्ञापत्रिका	सोपविन्दव	"	२१-२२
११. लोहयकारणपत्रिका	×	"	२२-२६
१२. अन्तर्ज्ञापत्रिका	×	"	२६-४२
१३. मन्दीरसंज्ञापत्रिका	×	"	४१-४२
१४. विनयसूत्रपत्रिका	सामान्य	"	४६-२६
१५. अक्षुण्णविधिपत्रिका	×	"	२६-६९
१६. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	६९-६४
१७. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	सामान्य	संस्कृत	६४-६९
२. ज्ञानपत्रिका	×	"	६७-७१
१६. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	७१-७१
१. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	७१-७६
२१. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	७६-७६
२. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	संस्कृत अक्षुण्ण	१-६१
२३. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	संस्कृत	६१-६६
२४. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	६६-७६
२२. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	६६-७६
२६. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	६२-६
२७. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	×	"	६६-६२
२. अक्षुण्णवर्धनपत्रिका	विनयसूत्रपत्रिका	द्विती	६६-६६

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रे पुत्र विन्दनं प्रकृतम् ।

सहस्रनामनाम स्तोत्रे चोक्तं धारणी च । १ ॥

हो क्षपक वयण अरवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।  
हो सुभट कहू तुम्ह भेड, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥  
हवि जिनवरदेव प्राराहि, तू सिध समरि मन माहि ।  
मुण्णि जीव दया घुरि धम्म, हवि छाडि अनुए कम्म ॥ ३ ॥  
मिथ्यात कु सग टालो, गणगुरु वचनि पालो ।  
हवि ज्ञान धरे मन धीर, ल्यो सजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥  
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।  
तू क्रोध मान माया छाडि, अप्राण सू सिलि माडि ॥ ५ ॥  
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।  
तु मन्न समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥  
हवि मवे परिसह जिपि, अभतर ध्याने दीपि ।  
वेराग्य धरै मन माहि, मन मावड गाडु साहि ॥ ७ ॥  
मुण्णि देह भोग सार, भवलधो वयण मा हार ।  
हवि भोजन पाणि छाडि, मन लेई भुगति माडि ॥ ८ ॥  
हवि छुणक्षण पुटि प्रायु, मनासि छाडो काय ।  
इ द्रीय वस करि धीर, कुटव मोह मेल्हे वीर ॥ ९ ॥  
हवि मन गन गाठु वाधे, तू मरण समाधि साधि ।  
जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग भुगतिय भरोय ॥ १० ॥

×

×

×

×

शान्तिम भाग

हवि दृडि जाणि विचार, घणु कहिइ किहि सु अपार ।  
लिमा अणसण दीव्या जाण, सयास छाडो प्राण ॥ १३ ॥  
सन्यास तरणा फल जोइ, स्वर्ग सुखि फलि सुनु होइ ।  
वनि श्रावक कोल तू पामोइ, लही निवारण भुगती गामीइ ॥ १४ ॥  
जे भणि सुणिन नरनारी, ते जाइ भववि पारि ।  
धो विमलेन्द्रकीति कह्यो विचार, प्राराधना प्रतिबोधसार ॥ १५ ॥

इति श्री प्राराधना प्रतिबोध समाप्त

	द्वैतश्रीति	बंभुत	१७-२५
१. अक्षयपुत्रा	अक्षयशिवल	द्विती	१८-२६
२१. अक्षयपुत्रा	पुत्रपुत्र	बंभुत	१९६ २११
२२. अक्षयपुत्रा	अक्षयपुत्र	"	अपूर्व २११-२२

२३५२ गुडका सं० १०५ । वन नं १२ । भा ३५२ दक्ष । भाग-द्विती । पूर्ण । अक्षय-श्रीति ।

१. अक्षयपुत्रा	अक्षयशिवल	द्विती	१-११
२. अक्षयपुत्रा	×	बंभुत	२२-२७
३. अक्षय	×	अक्षय	अपूर्व २
४. अक्षय	अक्षय	द्विती	१६

नं. भाग १७१२ अक्षयश्रीति ६

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति, अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ॥ १६ ॥

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ॥ १७ ॥

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ॥ १८ ॥

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ॥ १९ ॥

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति ।

२. अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति	अक्षयश्रीति	द्विती	१
३. अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति	"	"	अपूर्व २१
४. अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति	"	"	२१
५. अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति	×	"	२१
६. अक्षयश्रीति अक्षयश्रीति	"	"	१७-१९

१०. पनमगति वेति	हर्षकीति	हिंदी	म० १६८३ श्रावण मसूर्ग
११ पंच सधावा	×	"	"
१२ मेघगुमारगीत	पूना	हिंदी	८०-८५
१३ भक्तामरस्तोत्र	हिरराज	"	८६
१४ पद-प्रथ मोहे गृह्य उपाय	रूपचंद	"	९७
१५. पंचनरभेष्टीस्तवन	×	प्रायः	९७-९६
१६ दातिपाठ	×	नक्षत्र	१०-१७
१७ स्तवन	धागाधर	"	५२
१८ बारह भावना	मयिप्रस्तु	हिंदी	
१९. पंचमाल	रूपचंद	"	
२० जयटी	"	"	
२१ "	"	"	
२२ "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

मुनि मुनि जियरा रे नू त्रिभुवन वा राउ रे ।

नू तजि परपरयारे चेतसि महज मुभाव रे ॥

चेतसि सहज मुभाव रे जियरा परस्यो मिनि क्या राउ रहे ।

कप्या पर जाप्या पर मप्याणा वउगद दुम्य मप्याए सह ॥

मवसो गुण बीजे यर्म हं छीछजे गुणहु न एरु उपाय रे ।

दंसए एणए चरणमय रे जिउ नू त्रिभुवन वा राउ रे ॥ १ ॥

परमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ़ विभाव रे ।

मिप्या मद नडिया रे मोह्या मोहि मप्याए रे ॥

मोह्या मोह मप्याए रे जिय रे मिप्यामद नित्त माधि रप्या ।

पठ पठिहार पाठग मदिरावत ज्ञानावरणी भादि कप्या ॥

हडि चित्त गुलाल भदयारीण मप्याएदोप्रे चताई रे ।

रे जीवडे मरमनि वसि पडिया प्रणया मूढ़ विभाव रे ॥ २ ॥



तु मति लोपहि न लोपा रे वीरिन मी कइया वात रे ।  
 मरनन बुद्धयम करे तिनका करे विवात रे ॥  
 तिनका कएहि विवात रे बिबरे तु मुडा महि विमनु डरे ।  
 अन्तरु मरए अउ बुद्धयमक तिनकी तु गिठ वैह करे ॥  
 पागे म्पाठा पागे शिवा महि लमन्थाऊ वात रे ।  
 रे लोउ तु मति लोपहि न लोपा वीरिन के कइयावात रे ॥  
 ठे बनवाहि जाने रे एहे मरएअनवनाह रे ।  
 केवल विगत मवादे, प्रबटी लोपि मुनाह रे ॥  
 प्रबटी लोपि मुनाह रे लोपके विष्वा रैमि विहुरती ।  
 एवारेवेर मरएल मिकु विमिवा ठे बन हुवा बनती ॥  
 मुहुड सुधर्म पंच बरनेधी तिनके लानी वात रे ।  
 नही धरिनहु विन विनुचन केने एहे अंतक स्वपनाह रे ॥ ४ ॥

२४	कस्यामगुमहिलोपवाता	बनारसीवाल	हिन्दी	के	कल १७११	बाबीर	पुटी ६
२५	निर्वाणवाच्य वाता	×					प्राहृत
२६	बुवा लवह	×					हिन्दी

२४३ गुटका स १ ३ । पत्र १ १२२ । या ६५४ दश । के कल २ ३२ तापल पुटी ९ ।

मूर्ण । बचा—दीर्घदीर्घ ।

विरोध-विनि विरुध एव अपुत्र है ।

१	सद्विचारेण की कथा	×		हिन्दी		११४
२	कस्यामगुमहिलोपवाता	बनारसीवाल		"		१२-१४
३	केविकान का बाएकाला	×		"	मूर्ण	१२-१६
४	जगदी	केविकान		"		१७
५	लवेवा (मुन हीन पटीरको बानिह भादि बाह)	×		"		१
६	कविल (की विवरण के अन्त की उपाय मोड़े माने)			"		१२
७	निर्वाणवाच्यवाता	बनारसीवाल		"		१०-११

८	स्तुति (भागम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९	वारहमासा	×	"	३७-३९
१०.	पद व भजन	×	"	४०-४७
११	पार्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८-४९
१२	भाम नीवू का भगडा	×	"	५०-५१
१३	पद-काइ समुद विजयसुत सार	×	"	५२-५७
१४	गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	५८-५९
१५	दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
१६	विनती ( त्रिभुवन गुरु स्वामीजी )	भूधरदास	हिन्दी	६४-६६
१७	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८	पद-मेरा मन बस कीना जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९.	मेरा मन बस कीनी महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२०	पद-(नीना सफल भयो प्रभु दरमण पाय)	रामदास	"	७२
२१	चलो जिनन्द बदत्या	×	"	७२-७३
२२	पद-प्रभुजी तुम में चरण शरण गहो	×	"	७४
२३	भामेर के राजामो के नाम	×	"	७५
२४	" "	×	"	७६
२५.	विनती-बोल रे भूलो रे माई	नेमिचन्द्र	"	७८-७९
२६	पद-चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७	मेरा मन बस कीनी जिनराज	×	"	८०
२८	विनती-बहू श्री भरहत्तदेव	हरिसिंह	"	८१-८२
२९	पद-सेवक हू महाराज तुम्हारी	दुलीचन्द्र	"	८२-८४
३०.	मन धरी बे होत उद्यावा	×	"	८४-८६
३१	धरम का डोल बनाये सूणी	×	"	८७
३२	भव मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनमाराम	"	८८
३३	लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमे मन । पूरगुदेव		"	८८
३४	भासरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३३. बु बाझे क्यों टारोही	×	द्वितीय	५३
३४. तुम्हारे बर्ष कैसा ही	बीचपत्र	"	३
३७. तुमि १ २ बीच पत्र	पत्रकापत्र	"	३-३३
३८. अरुण २ बँटारु अगुर्नरि दुन वहा	×	"	३३-३३
३९. भीमबकुमार हूमनो क्यों न डठारो पार	×	"	३३
४. मारपी	×	"	३५-३७
४१. पर—बिनती कटाका प्रहु मारो बी	विषयबुलाव	"	३५
४२. बी बी प्रहु दुन ही उठारोमे पार	"	"	३३
४३. प्रभुनी भीसा सै ठक नन मरु	×	"	३३
४४. बँहु भीमिचपत्र	कनकनीति	"	३-३३
४५. बाबा बरम्या पार २	×	"	३३
४६. पकन कबी हो प्रभुनी	बुधलापत्र	"	३३
४७. पर	द्वेषिहु	"	३५-३३
४८. अरुणा कला बाही २	हूमरुण	"	३३
४९. मरुणारुणोप	मरुणुगुणार्थ	संस्कृत	३७-३७
५. भीवीक रीमकर सुगि	"	द्वितीय	३३-३३
५१. मरुणुमारुणार्थ	"	"	३३-३४
५२. अरुणारुण की कला	"	"	३३-३३
५३. मरुणुगु की विपरी	"	"	३३-३३
५४. पर—अरुण बर्षे बु भीठारुण	"	"	३३-३७
५५. लुण्ड पत्र	"	"	३३ ३३

५५५३ गुटका स ३३ । पत्र ३ ३४३ । आ ३५५ ३ ५ । मरुणु—द्वितीय अरुण ।

१. मरुणुगु	×	संस्कृत	३-३३
२. मरुणुगुण	अरुणमरुण	"	३३-३३
३. मरुणुगुणोप	आ मरुणु ग	"	३३-३३
४. मरुणुगुण	कनकन	"	३-३३

५ कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६ पूजासंग्रह	×	”	७५-१००
७ विनतीसंग्रह	देवाग्रह	”	१०२-१४३

५४६० गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । भा० ६३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । पूर्णा । दशा-मामाय

१ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-६
२ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”	११
३ चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की प० लिख्मीचन्द रेनवाल हाला की छै । मिति चैत मुदी ६ सवत् १६५४ का मे मिली मार्फन राज श्री राठोडजी कां सू पचासू ।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३ गुटका सं० ११० । पत्र सं० १५ । भा० ६×६ ड च । भाषा-संस्कृत । अपूर्णा ।

विशेष—पूजाप्रो का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । भा० ६३×५ इ च । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहाँ डोकरी हे राम राम । वीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहा जाय छै । वीरा ई मारग परयो भाई अर परयो गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना वीरा थे बटाऊ नाहीं । बटाऊ तो ससार मांही दोग और ही छै ॥ एक तो चाद अर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना वीरा थे तो राजा नाही । राजा तो ससार मे दोग और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो ससार में दाय और ही छै । एक नेत्र और और एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना वीरा थे तो हलवा नाही ॥ हलवा तो ससार में दोग और ही छै । कोई पराये घर वसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पणि नट जाय सो हलवा ॥ ५ ॥ डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना वीरा माता तो दोग और ही छै । एक तो उदर माही सू काढ़े सो माता । दूसरी घाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे तें हारया हे हरया । ना वीरा थे क्या ने हारयो । हारयो तो ससार मे तीन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारयो । दूसरो वेटी जाई सो हारयो तीसरो जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारयो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे वापडा हे वापडा । ना वीरा थे वापडा नाही । वापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ को जायो वापडो । दूसरो छघाली को जायो वापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो । चौथा धामण वाप्या की वेटी विषवा हो जाय सो वापडो ॥ ८ ॥ डोकरी आपा मिला हे

मिना । बीस मिलना माला तो सहाय में आरि भीर ही ही । बीसो बाग बिरवा होबी सो बां मिलती । बर से तो  
 केने पारेख सु धामो होली तो बां मिलती । बुझो तांभल बावका नी वैह बरल ही बी सखर सु । दीबरो बल्लेन  
 नी बगल वीराबा जली सो बां मिलती । बीबा स्त्री बुद्ध मिलती । बोकरी बाल्या है बाल्या । बरिदा नई न बरयो  
 बनली धावा । बुझा धाई पारका बीमार लावा ॥ १ ॥

॥ इमै बोकरी रज्जा भोज नी बली समुल्ल ॥

२४२३. गुरुका सं ११४ । पत्र सं १-७२ । मा १२×२२ रज्जा ।

विशेष—सोप एक बुझा बंध है ।

२४२४. गुरुका सं ११२ । पत्र सं १६ । मा १२×२२ रज्जा । जलान—द्विपरी । अनुल्ल । पत्रा—बाल्या

विशेष—बुझा संभल, जिनमखल ( पाषाण ) एवं स्वयंकुसोप का बंध है ।

२४२५. गुरुका सं ११६ । पत्र सं १६६ । मा १२×२२ रज्जा । जलान—बंशरज्जा । अनुल्ल । पत्रा—बीरनी ।

विशेष—गुरुके के निम्न काठ जलनेकीनी है ।

४. कुपनकीति वीत

बुधराज

द्विपरी

१२-१४

पांनि बडाव गुरुकु धईनी आ म्नु मिलतव जि बहलीप ।

बोधि पनल मिठ कोटिदि धारिदि गुड कुव गुड कुव केहि सुपरि ज्योप ॥

करि रली बण्ड धली गुड कुव कपनि नीरव तक ठर ।

कनु केहि बरजनु दमहि मनबुझ होइ मिठ नभमिनि बरे ॥

कूर कपन धनर केठरि धरलि मयन बाध ए ।

बीकुनकीति बरल म्नुपेई लकी नीज बडाव ही ॥ १ ॥

तेछु मिठि बरलि अजिपालइ दिनकर दिनकर मिठ ठनि ठोइए ए ।

धरमिठि जपितव बने गुलानी बली ही बली म्नु बम मीइए ए ।

मीइमिठि बली कवा बनि धुनु कवा धावन भावए ।

बर इम पव पञ्चरितकमवा ठरकल नभलए ॥

बलीठ रजिइ बहू मीइिई बमन नठि मिठ कुलीनी ।

बीकुनकीति बरल नपनि गु बरिनु ठनु तेछु बिके ॥ २ ॥

दुन कुलई धडाइकर नारलए पीइए मोइ महाअठ धरिणी ए ।

रजिपठि विनु रीति इ म्नुइइइ गुडु कीनइए कीनकुली ठिहि रलीनी ए ॥

रालियो जिमि क सँड करिहि वनउ करि इम बोलइ ।  
 गुए सियाल मेरह जिउअ जगमु पवण भइ किम डोलए ।  
 जो पच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तणु ।  
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणामइ धरइ भठाइस मूलगुणा ॥ ३ ॥  
 दस लाक्षणा धर्म निजु धारि कु सजमु सजमु भसणु वनिए ।  
 सधु मियु जो सम किरि देखई गुरनिरगधु महा मुनीए ॥  
 निरगधु गुरु मद अट्ट परिहरि सवय जिय प्रतिपालए ।  
 मिय्यात तम निर्द्धरा दिन म जैणधर्म उजालए ॥  
 तेरअग्रतह अखल चिधह कियउ सक्यो जम ।  
 श्री भुवनकीर्ति चरण पणमउ धरइ दशलक्षिण धर्मु ॥ ४ ॥  
 सुर तरु सध कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।  
 महो धरि धरि ए पच सवद वाजहि उछरगि हिए ॥  
 गावहि ए कामणि मधुर सरे भति मधुर सरि गावति कामणि ।  
 जिणह मन्दिर भवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसमभाल चढावहि ॥  
 बूचराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।  
 श्री भुवनकीर्ति भासीरवादिह सधु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

५ नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६-१०६
७ पार्वनायस्तवन	समयराज	”	१०७

सुन्दर सोहरण गुण निलउ, जग जीधरा जिण चन्दोजी ।  
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनदो जी ॥ १ ॥  
 जेतलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।  
 पास जिणोसुर जग धरणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥  
 मणि मारिण मोती जड्यउ कचरणरूप रसालो जी ।  
 सिखर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

विरमम तिलक सौहमलज विग मुक्त कर्मस विमलोमी ।  
 नामों कुचकन बीपता मिक मिय आक समलोमी ॥ ४ ॥ के ॥  
 नकि बनौहुर बटिनज उरि बरि मव निर हारोमी ।  
 बहिर बचहि कला करता कर्म मव वारोमी ॥ ५ ॥ के ॥  
 मरचत बलि तनु बीपनी मोहन मुपति सापोमी ।  
 मुन सोरग संवर मिनद बिजुवर नाम धारोमी ॥ ६ ॥ के ॥  
 इन परि पसे जिलेवद घेटवद मुने विद्यावारोमी ।  
 जिलवज मूरि पसाइ लह सवपराज मुक्तावारोमी ॥ ७ ॥ के ॥  
 ॥ इति श्री पार्ष्णिकवस्तुधन वमलोऽर्थ ॥

२४६८. गुरुका सं ११७। पत्र सं ३३ । मा ९ × २ इज । अण-संस्कृत हिन्दी । पृष्ठ १।

ध्या सावक्य ।

विषय— विविध पत्रों का संग्रह है । वर्षादि पुनश्च एवं बलिहारी विषयो से संबंधित पत्रों ।

२४६९. गुरुका सं ११८। पत्र सं १२१ । मा ९ × २ इज ।

१. विद्या वसुक्त	मवलराज	हिन्दी	
२. श्री विमवर पद बलि के बी	बकतराज	"	३-७
३. दारुण वारमपित लाई	दासविद्यम	"	६-१
४. कैठल हो तेरे वरम विमल	विमवज	"	११-१२
५. वीरवर्धना	सकलवज	संस्कृत	१२ १३
६. कर्मण्डक	वचनवि	"	२१
७. पद—शाकि विचरि बनि मेने मेखरा	रामकाइ	हिन्दी	३७
पद—ब्रह्मवनी तुमरि वैव	मपराम		३६
८. पद—मुक्तावनीची प्रभु	मुक्तावज		७२
९. निर्वाणहृदि संवद	विश्वबुक्क	"	९-१

अथ १७२६ में मुक्तार मे वं कैठलीहि मे लिखा ।

११ पञ्चमवर्षीणि  
 हर्षीति  
 हिन्दी  
 ११२-१  
 पन्ना सं १९ ३ प्रति विपि सं १५९

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ वृद्धी  
८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विवेक—पुराने घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।  
इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१ गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।  
पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रविप्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पीपसु० २

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति वित ध्याऊ ।

सदगुण चरण कमल नमि रविप्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥

व रारसी पुरी सोभती मत्तिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविचोप्रत सार ।

साभालि कहु बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥

नेह थी धन करण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र बाल्या परदेश अजोघ्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविचो व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ता फल ने लही शिव रमनी बरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषण ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासध गति दूपण ॥ २१ ॥

इति रविप्रत कथा सपूर्णा । हन्दोर मध्ये लिपि कृत ।

ले० काल सं० १७६३ पीप सुद्धी ८ प० दयाराम ने लिपी की थी ।

धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।



१ विद्यापहार स्तोत्रमाला	पञ्चमौलि	हिन्दी	४२-४४
४ वल्लभ मण्डल	×	बंगाल	११
बनारस में गुरुत में अतिमिति की थी। सं १७१५। पूरा है।			
२ विपश्चिन्ताकाण्ड	श्रीपाल	बंगाल	११-१२
१ पर—वेई वेई वेई कुम्भति धमरी	गुगुरका	हिन्दी	१७
७ पर—प्राज्ञ लगे गुवरी त्रिनदेव	श्रीपाल	"	१७
पञ्चोत्तमटी	ब्रह्मगुरु	"	१४-१६
६ वदित	ब्रह्मगुरु	"	१२२

विद्यापार की भाषा के समस्त गुरुत में विधि विद्या बना।

११०२ गुरुका सं १२१। पत्र सं ३३। भा १२×४६ दण्ड। जाला-हिन्दी।

विशेष-विभिन्न कविता के पत्रों का संग्रह है।

१११ गुरुका सं १२२। पत्र सं १३। भा १२×४६ दण्ड। जाला-हिन्दी बंगाल।

विशेष-टीका कोटीटी नाम बर्धनस्तोत्र ( बंगाल ) कल्याणविरासीय जाला ( बनारसीवाल ) ब्रह्मगुरु  
स्तोत्र ( गान्धु नाथार्थ ) लक्ष्मीस्तोत्र ( बंगाल ) विपश्चिन्ताकाण्ड पंचमयम देवगुरु, छिद्रगुरु, श्रीगुरुमण्डल गुरु,  
पञ्चोत्तम ( मयल ) बर्धनस्तोत्र गुरुत की भाषाकरी भारत गरीब, वीनएतक ( ब्रह्मगुरु ) सामाजिक टीका  
( हिन्दी ) अतिम पाठो का संग्रह है।

११४ गुरुका सं १२३। पत्र सं २६। भा १४×६ दण्ड जाला-बंगाल हिन्दी। बसा-बर्धनवर्ष।

१ ब्रह्मगुरुस्तोत्र अतिम मय अष्टि	×	बंगाल	२-६
२. पञ्चविधि	×	"	१ ११
३ वीनपञ्चोत्तम	गणनाएक	हिन्दी	१२-१६

११५ गुरुका सं १२४। पत्र सं १६। भा ७×६ दण्ड।

विशेष-ब्रह्मगुरु एक स्तोत्रो का संग्रह है।

११६ गुरुका सं १२५। पत्र सं १६। भा १२×४ दण्ड। गुरुत। सामाजिक गुरु। बसा-बर्धनवर्ष।

१ बर्धन अतिम पत्र	×	हिन्दी	
२. श्रीगुरुमण्डल पत्र			

३ चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४ द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५ देशों ( भारत ) के नाम	×	हिन्दी

१ अगवदेश । २ वगवदेश । ३ कलिगदेश । ४ तिलगदेश । ५ राट्टदेश । ६ लाट्टदेश ।  
 ७ कर्णाटदेश । ८ भेदपाटदेश । ९ वैराटदेश । १० गौरदेश । ११ चौरदेश । १२ द्राविरुदेश । १३ महाराष्ट्र-  
 देश । १४ सौराष्ट्रदेश । १५ कासमीरदेश । १६ कीरदेश । १७ महाकीरदेश । १८ मगधदेश । १९ सूरसेनुदेश ।  
 २० कावेरदेश । २१ कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३ उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २५ कुरुदेश ।  
 २६ क्लारणदेश । २७ कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २९ सकदेश । ३० भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२

३३ कारुतदेश । ३४ कापुतदेश । ३५ कच्छदेश । ३६ मत्कच्छदेश । ३७ भोटदेश । ३८ महाभोटदेश ।  
 ३९ कीटकदेश । ४० केकिदेश । ४१ कोल्लगिरिदेश । ४२ कामरुगदेश । ४३ कुण्कुणदेश । ४४ कु तलदेश ।  
 ४५ कलकूटदेश । ४६ कफकटदेश । ४७ केरलदेश । ४८ खशदेश । ४९ खर्परदेश । ५० खेटदेश । ५१ विष्णु-  
 देश । ५२ वेदिदेश । ५३ जालधरदेश । ५४ टकरण टक्क । ५५ मोडियाणदेश । ५६ नहालदेश । ५७ तुङ्गदेश ।  
 ५८ लायकदेश । ५९ कौसलदेश । ६० दशाणदेश । ६१ दण्डकदेश । ६२ देशसभदेश । ६३ नेपालदेश । ६४ नर्तक-  
 देश । ६५ पञ्चालदेश । ६६ पल्लवदेश । ६७ पू ढदेश । ६८ पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यग्रदेश । ७० अंबुददेश । ७१ वसु-  
 देश । ७२ गभीरदेश । ७३ महिषकदेश । ७४ महोदयदेश । ७५ मुरण्डदेश । ७६ मुरलदेश । ७७ मरुस्थलदेश ।  
 ७८ मुद्गरदेश । ७९ मगनदेश । ८० मल्लवर्तदेश । ८१ पवनदेश । ८२ आरामदेश । ८३ राढ़कदेश । ८४  
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५ ब्रह्मावर्तदेश । ८६ ब्रह्मणदेश । ८७ वाहकदेश । विदेहदेश । ८९ वनवासदेश । ९० वनायुक्त-  
 देश । ९१ वाल्हाकदेश । ९२ वल्लवदेश । ९३ भ्रवन्तिदेश । ९४ वन्दिदेश । ९५ सिंहलदेश । ९६ सुह्रदेश ।  
 ९७ सूपरदेश । ९८ सुह्रदेश । ९९ अस्मकदेश । १०० हूणदेश । १०१ हूर्मकदेश । १०२ हूर्मजदेश ।  
 १०३ हसदेश । १०४ हूहकदेश । १०५ हिरकदेश । १०६ वीरदेश । १०७ महावीरदेश । १०८ भट्टीयदेश ।  
 १०९ गोप्यदेश । ११० गाढाकदेश । १११ गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३ शवालक्षदेश ।  
 ११४ कोसवदेश । ११५ शाकभरिदेश । ११६ कनउजदेश । ११७ आदनदेश । ११८ उचीविसदेश । ११९ नीला-  
 वरदेश । १२० गगापारदेश । १२१ सजाणदेश । १२२ कनकगिरिदेश । १२३ नवसारिदेश । १२४ भाभिरिदेश ।

६ क्रियावादियों के ३६३ भेद	×	हिन्दी
----------------------------	---	--------

श्लोकोट— यह नाम गुटके में खाली छोड़ा हुआ है ।

७ स्फुट कविता एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत
८ शालग्राममुद्रिका	×	संस्कृत
९ सुखमालि	×	११ के काल १७२६ भागए मुद्रिका ?
१ स्फुट पद्य एवं मंत्र-मालि	×	हिन्दी

३३७. गुटका सं १२३। पद्य सं ४५। भा १ × ४५ दण्ड। माला हिन्दी संस्कृत। विषय-वर्षा विशेष—वर्षाओं का संग्रह है।

३३७०. गुटका सं १२७। पद्य सं ३३। भा ७×२ दण्ड।

विषय—गृष्ठा पाठ संग्रह है।

३३८. गुटका सं १३७ क। पद्य सं २२। भा ७ $\frac{१}{२}$ ×५ दण्ड।

१ श्रीमद्गीता	×	संस्कृत	१-११
२. मधुवाक्यकी	×	"	१७-१८

विषय—वैष्णवधर्म। के काल सं १ ७

३ ज्योतिष्कृतमाला	शोधित	संस्कृत	४०-२१
४ मारुती	×	हिन्दी	११-२३

इसो की रीतकर वर्षा होने का मंत्र

३३९. गुटका सं १२८। पद्य सं ३-३। भा ७ $\frac{१}{२}$ ×५ दण्ड। भाषा-संस्कृत।

विषय—शासत्र पाठों का संग्रह है।

३३९१. गुटका सं १२६। पद्य सं -२४। भा ७×२ दण्ड। भाषा-संस्कृत।

विषय—शेषपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (७) एवं वज्रयज्ञपाठ हैं।

३३९३. गुटका सं १३१। पद्य सं ५। भा ९×४ दण्ड। के काल १७२२ भागए मुद्रिका ?।

१ कनुरबरीरक्षुगृष्ठा	×	संस्कृत	१-१४
२ श्रीशैलरत्नक	शोधितपद्य	हिन्दी	१२-१७
३ श्रीकमलम	×	संस्कृत	१५

३३९३. गुटका सं १३१। पद्य सं १४। भा ७×२ दण्ड। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विषय—शासत्र पाठों का संग्रह।

३३९८. गुटका सं १३२। पद्य सं १४-४१। भा ९×४ दण्ड। भाषा-हिन्दी।

१ पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	"		२३-२३
३ दोहायतक	रूपचन्द	"		२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	"		३४-८१

५५१५ गुटका सं० १३३ । पत्र सं० १२१ । प्रा० ५३×४ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—छहडाला ( धानतराय ), पचमङ्गल ( रूपचन्द ), पूजायें एव, तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५५१६ गुटका सं० १३४ । पत्र सं० ४१ । प्रा० ५३×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शातिनाथस्तोत्र, स्वन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११ ।

५५१७ गुटका सं० १३५ । पत्र सं० १३-१३४ । प्रा० ३३×४ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण  
विशेष—पचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५१८ गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ४-१०८ । प्रा० ८३×२ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, षट्क आदि हैं ।

५५१९ गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । प्रा० ६×४३ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

१ मोरपिच्छधारी ( इन्द्रगुण ) के कवित्त धर्मदास, वपोत, विचित्र देव हिन्दी ३ कवित्त हैं ।

२ वाजिदजी के अष्टिङ्ग वाजिद "

वाजिद के कवित्तों के ६ ग्रंथ हैं । जिनमें ६० पद्य हैं । इनमें से विरह के भ्रम के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं ।

वाजीद विपति वेहद कही कहां तुम सो । सर बमान की प्रीत करी पीव मुक सी ।

पहले अपनी मोर तीर को तान ही, परि हां पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

बिन मालम वेहाल रक्षी क्यो जीव रे । जरद हरद सी भई बिना तोहि पीवरे ।

रघिर मांस के सास हे क चाम है । परि हां जब जीव लागी पीव मोर क्यो देखना ॥२५॥

कहिये सुनिये राम मोर न बित रे । हरि ठाकुर को भ्यान स धरिये नित रे ।

जीव बिलम्ब्यां पीव दुहाई राम की । परि हां सुख सपति वाजिद कही क्यो काम की । २६॥

५५२० गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ६ । प्रा० ७×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-क्या । पूर्ण

एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा ।

२२२१ गुडका सं० १४०। पत्र ७ व। पा १३×४३ द व। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। ले

काल सं १९१५ भाषा सं १५। पूर्ण एवं सुदृढ रखा—सावधान।

विशेष—श्रीलामिदि पुजा है।

२२२२ गुडका सं १४१। पत्र सं १७। पा ३×३ द व। भाषा—हिन्दी। विषय—स्त्रीय।

विशेष—अभिप्रेत महत्त्वपूर्ण स्त्रीय है।

२२२३ गुडका सं० १४२। पत्र सं १। पा २×४ द व। भाषा—हिन्दी। ले काल सं १९१५

पत्र सं १४।

विशेष—पुस्तक में दिग्ग २ वरत उल्लेखनीय है।

१. अक्षराला	घातकाल	हिन्दी	१ १
२. अक्षराला	विषय	"	१ १२

२२२४ गुडका सं० १४३। पत्र सं १७४। पा २ ×४ द व। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले काल

१९१७। पूर्ण।

विशेष—सावधान पाठों का संघ है।

२२२५ गुडका सं० १४४। पत्र सं ११। पा ×२ द व। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—सावधान पाठों का संघ है।

२२२६ गुडका सं १४५। पत्र सं ११। पा १×२ द व। भाषा—संस्कृत। विषय—स्त्रीय।

ले काल १९०४ स्त्रीय पुस्तिका १४।

भाषा के पद्य—

सुदृढत्वमहमेवं सुदृढ घातकालिणम्।

अभिप्रेतार्थबोधनं वक्तुं पत्रसिद्धम् ॥१॥

धर्मिक सावधानतासे लोके कालचरं वरि।

कालकाल विदुस्त्वन्मै वक्तुं विदितं ॥२॥

२२२७ गुडका सं १४६। पत्र सं २२। पा ७×२ द व। भाषा—हिन्दी। पूर्ण। रखा—सावधान

विशेष—परिचालन पुस्तिका (केचकाल) मध्य एवं नैविद्या की भाषा (केचकाल) का संघ है।

पुस्तिका की विशेष वरि है। परिचालन पत्र काली है।

५५२८ गुटका स० १४७। पत्र स० ३-२७। मा० ६५५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।  
दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष-शोधबोध है।

५५२९. गुटका स० १४८। पत्र स० ५५। मा० ७५५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र सग्रह है।

५५३० गुटका स० १४९। पत्र स० ८६। मा० ६५६ इ च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४६

कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१ विहारोत्तसर्द	बिहारोत्तल	हिन्दी	१-३५
२ वृन्द सतसर्द	वृन्दकवि	"	३६-८०
७०८ पय है। ले० काल स० १८४६ चैत सुदी १०।			
३ कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका स० १५०। पत्र स० १३५। मा० ६३५ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल  
स० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष-लिपि विवृत है। कवका वत्सी, राग चोतरण का दूहा, पून भीतरणी का दूहा, मां-पाठ है।  
प्रधिन्याय पत्रे खानी है।

५५३२. गुटका स० १५१ पत्र स० १८। मा० ६५४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष-पदों तथा विनयियों का सग्रह है तथा जैन पद्योमी ( नवलराम ) बारह भावना ( दोलतराम )  
निर्वाणकाण्ड है।

५५३३ गुटका स० १५। पत्र स० १०७। मा० १२५ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण  
शीर्ष।

विशेष-विभिन्न प्रथो में से छोटे २ पाठों का सग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४ गुटका स० १५३। पत्र स० ६०। मा० ८५३ इ च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-सग्रह  
संपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष-मत्तामर स्तात्र तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाए एव पञ्चमगल पाठ है।

५५३५ गुटका स० १५४। पत्र स० ८६। मा० ६५८ इ च। ले० काल १८७६।

१ भागवत	×	संस्कृत	१-८
२ मय प्र.दि मयह	×	"	६-१२

१ अनुसूचीकी सीटा	×	"	२१-२४
४ आसपठ महिला	×	दिल्ली	२२ २१
			टीकों के नाम एवं विवरणिय लीजें ।
३. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	बंगलूर	२२-२३
२२३६ गुडका सं० १२२ । पत्र सं ६५ । ६×९ इंच । भाषा-बंगलूर । पूर्ण ।			
१. शोकेन्द्र पुना	×	बंगलूर	१-२
२ भार्गवनाथ कथनाम	×	"	४-११
३ विष्णुना	×	"	१ २
४ पार्वतीनाथकृत	×	"	१ १
३. श्रीकृष्णचरितपुना	भाषार्थ के साथ	"	१-१४
६ श्रीकृष्णचरित कथनाम	×	बंगलूर	१६-२
७ कृष्णचरित कथनाम	×	"	२१ ११
८. कृष्णचरितपुना कथनाम	×	बंगलूर	१४-५
६. श्रीमोक्षार वीथीकी	×	"	५१-५२

२२३७. गुडका सं १२६ । पत्र सं १७ । भा ३×२ इंच । के कथ १७७३ ग्रेड सुटी २ । भाषा-दिल्ली । पत्र सं ७३ ।

विषय—पारव बंधानलि कर्तव्य है ।

२२३८. गुडका सं० १२७ । पत्र सं १२ । भा ६×२ इंच । के कथ १७२९ ।

विषय—ब्रह्मचरितोच प्रकर भाषणी, ( कालचरित ) पूर्ण संकलन के पाठ है । न कर्णारण के कथनाम भीषास्य में सं १ १२ में प्रति विधि की ।

२२३९ गुडका सं १२७ (क) पत्र सं १४ । भा ६×४ इंच । भाषा-दिल्ली । विभिन्न कथियों के कथों का संग्रह है ।

२२४० गुडका सं १२८ । पत्र सं ६ । भा ६×६ इंच । भाषा-दिल्ली । के कथ १ ।

विषय—ब्रह्मचरित कथियों पर पाठ है ।

२२४१ गुडका सं १२९ । पत्र सं १२ । भा ७×४ । के कथ-३१ कथा-वीथी । विभिन्न कथियों के कथों का संग्रह है ।

गुटका-समूह ]

५५४० गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । प्रा० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।  
विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । प्रा० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७  
पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

५५४४ गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । प्रा० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजासो.  
का संग्रह है ।

५५४५ गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । प्रा० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विशेष-भक्त्युत्तम स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६ गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । प्रा० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९३४ पूर्ण ।  
विशेष-पद्मपुराण में से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पद्यों में सर्वत्र में भगवत् गीता  
माला दी हुई है ।

५५४७ गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । प्रा० ६३×५३ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-आयुर्वेद के मुखे हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । प्रा० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ आयुर्वेदिक मुखे	×	हिन्दी	१-४०
२ कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	"	४१-६८

५५४९ गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । प्रा० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५० गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । प्रा० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१ गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । प्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८०

आवण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ धर्मरासो	×	हिन्दी	१-१८
------------	---	--------	------

अथ धर्म रासो लिख्यते—

पहली वदो जिएवर राइ, तिहि वद्या दुख दालिद्र जाइ ।

रोग कपेस न सचरे, पाप करम सेव जाइ पुलाई ॥

निश्चै मुक्ति पद सचरे, ताको जिन धर्म होई सहाई ॥ १ ॥



धर्म बुद्धेनो जैनो सद् वरस्य ये द्वी परवान ।  
 धारय जन मुक्तिये दे वल्य मन्त्रदीप पित संजलो ॥  
 वडा वित गुण होई निवान धर्म बुद्धेनो जैन को ॥ २ ॥  
 हुडा वरी धारय मई कुनो धारय माली हुड ॥  
 कुमति नैस व धरये महा कुमति वंशी धरिवाड ॥  
 त्रिलपर्म रलो वर्येड तिहि पदत वन होइ उद्वड ॥  
 धर्म बुद्धेनो जैन को ॥ ४ ॥

पवित्र—

इमी बीमल जैने लही धारय वाड त्रिलेपुर नही ।  
 वर पावा धारय नै दे मद्दार्थ मुनवृण धारि ॥  
 धर्म वरी दे पालही ते मनुजन पृथि निरवर्तित ।  
 धर्म बुद्धेनो जैन को ॥ १२२ ॥

कुड देव पुनधायन वल्लि त्र पद् धनममन धारि ।  
 धार वीच मद्दा धारि दे धार व सी धरये पकोष ॥  
 ते विवरी धारय वने ऐवी विवि धरने वकरीष ।  
 धर्म बुद्धेनो जैन को ॥ १२३ ॥

६७ वी धर्मरानी लभाता ॥१॥ ६ १७२ ५७७ हुवी २ धारिवाड मन्थे ।  
 ४४२ गुटका सं १ । वर ल २ । धा २×२ २ व । धारा संवृत । विव नुमा ।  
 विवैर—विडुमा है ।  
 ७४४ गुटका सं १ । ल व २ । धा २×७ २ व । धारा—दिली । विव-नुमा ।  
 विवैर—धर्मधरि वर नुमा है ।  
 ७४४ गुटका सं १७ । वर व १२ २ । धा २×२ २ व । धारा वल्लुत विवी । ध  
 धार ल १ २ । धारल मुठी १ ।  
 विवैर—नुमा वर एव विवतिनी वा मवड है ।  
 ४४४ गुटका सं ७२ । वर व १ २ । धा २×४ २ व । धारुर्ल । धारा जैर्ल ।  
 विवैर—धर्मधरि के मुनये धार लभारि धारपी है । धीरे उल्लेखनीय धरना नही है ।

५५५६ गुटका स० १७१। पत्र स० ४-६३। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार रस। ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

५५५७ गुटका स० १८५। पत्र स० २४। मा० ६×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

५५५८ गुटका स० १७६। पत्र स० ८। मा० ५×३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल स० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

५५५९ गुटका स० १७७। पत्र स० २१। मा० ५'×३ इ च। भाषा-हिन्दी। मूर्ख।

विशेष—पद एव विनती संग्रह है।

५५६० गुटका स० १७८। पत्र स० १७। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ में वादशाह जहागीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मगसिर बुदी १२। तारातन्वोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके प्रादेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

५५६१ गुटका स० १७९। पत्र स० १४। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। मूर्ख।

विशेष—हिंदी पद संग्रह है।

५५६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), भाद्रदिव्यवरकथा के पाठ का मुख्यतः संग्रह है।

५५६३ गुटका स० १८१। पत्र स० २१-४९।

१ चंद्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
			पद्य स० ११९। ले० काल स० १७१६
२ सुगुप्तसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३ कक्कावत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	"	२० काल स० १७६५ ३०-३४
४ मन्यपाठ	×	"	३४-४९

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५६४ गुटका स० १८२। पत्र स० १६। मा० ६×६ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। मूर्ख।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं।

३३६३. गुटका स १८२। पत्र सं १। भा १ X १ ह ब। भाषा-वस्तुतः हिन्दी। बर्णन।  
 बदा-मैरा धीर्ल।

विशेष—प्रथम ३ पत्रों पर प्रकाश है। तथा पत्र १-२ तक प्रकृतपाल है। हिन्दी पत्र में है।

३३६६ गुटका स १८४। पत्र सं २४। भा १२ X २ ह ब। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—कृष्ण विशेष बरतरी के प्रथम पत्र से २३ पत्र तक है।

३३६७ गुटका स १८२। पत्र सं ७-८। भा १ X २ ह ब। भाषा-हिन्दी। ले पत्र ६

१ २३ बीबाब मुदी व।

विशेष—बीकानेर में प्रतिनिधि की गई थी।

१. समकालांतरक	बनारसीवाल	हिन्दी	७-७६
२. धनापीडाब बीकानेरिया	विमल विमलपीछ	"	७३ पत्र है ७१-७८
३. प्रथमम बीत	X	हिन्दी	७८-८३
इन प्रथम में प्रथम प्रथम बीत है। प्रथम में पुत्रिका दीत है।			
४. लुट पर	X	हिन्दी	८४-८८

३३६८ गुटका स १८६। पत्र सं ३२। भा ६ X २ ह ब। भाषा-हिन्दी। विवर पर कब्जा।

विशेष—१४२ पत्रों का संग्रह है प्रकाश प्रकाशराल के पर है।

३३६९. गुटका स १८७। पत्र सं ७७। पूर्ण।

विशेष—हुटके के मुख्य पत्र विमल प्रकार है।

१. बीकानेर बीत	X	हिन्दी	१-२
२. बज्रवादी संघ के पाठकों के नाम	X	"	३-४
३. देही पाठकों की बदावली	X	"	५-१६
४. देही के बदावली के बदावली के नाम	X	"	१७-१८
५. बीकानेर बदावली	X	"	१९-२०
६. ३६ बदावली के नाम	X	"	२१
७. बीकानेर बदावली बदावली	X	"	२२-२३

३३७० गुटका स १८८। पत्र सं ११-७३। भा ३ X २ ह ब। भाषा-हिन्दी प्रकाश।

विशेष—हुटके में प्रकाश प्रकाश बदावली बदावली है।

१ पार्वनाथस्तवन एव ग्रन्थ स्तवन

यतिसागर के शिष्य जारन हिन्दी

२० स० १८००

प्रागे पत्र जुड़े हुए हैं एव विकृत लिपि में लिखे हुये हैं ।

५५७१ गुटका सं० १८६ । पत्र स० ६-७८ । मा० ५३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

इतिहास ।

विशेष—प्रथम वादगाह एव धीरवत्त प्रादि की वार्ताएँ हैं । बीच बीच के एव प्रादि अन्त भाग नहीं हैं ।

५५७२ गुटका सं० १६० । पत्र स० १७ । मा० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—रूपचन्द्र वृत्त पञ्चमगल पाठ है ।

५५७३ गुटका सं० १६१ । पत्र स० २८ । मा० ८३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—गुदरदास वृत्त सर्वेये एत्र अय पद्य है । अपूर्ण है ।

५५७४ गुटका सं० १६२ । पत्र स० ४५ । मा० ८३×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । से० काल

१८०० ।

१ कवित्त	×	हिन्दी	१-४
२ भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५-६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है ।	
३ शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७-९
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	९-१२
५ अजितशातिस्तवन	नन्दिपेया	"	१३-२२
६ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	२३-३०
७ कल्याणमदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१-३६ हिन्दी गद्य टीकासहित है ।	
८ शांतिपाठ	×	प्राकृत ४०-४५	"

५५७५ गुटका सं० १६३ । पत्र स० १७-३२ । मा० ८३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । से० काल १८६७ ।

विशेष—सत्कार्यसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र है ।

५५७६ गुटका सं० १६४ । पत्र स० १३ । मा० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र ।

अपूर्णा । दशा-नामान्य । फोकसार है ।

५५७७ गुटका सं० १६५ । पत्र स० ७ । मा० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—मट्टारक महोषध्वृत त्रिलोकस्तोत्र है । ४९ पद्य हैं ।



१२. समुय विजय सुत सावरे रग भीने ही × " "   
 ले० काल १७७२ मोतीहटका देहरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।
१३. पञ्चकन्याएकभूजा भट्टक × सस्कृत ले० काल स० १७५२ ज्येष्ठकृ० १० ।
१४. पट्टरस कथा × सस्कृत ले० काल स० १७५२ ।

५५८३ गुटका स० २०१ । पत्र स० ३६ । भा० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—भादित्यवारकथा ( भाऊ ) सुशालच द कृत शनिश्चरदेव कथा एव तालनन्द कृत राजुन पदचीसी के पाठ प्रौर हैं ।

५५८४. गुटका स० २०२ । पत्र स० २८ । भा० ६×५ इ च । भाषा-सस्कृत । ले० काल स०

१७५० । विशेष पूजा पाठ सग्रह के प्रतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, प्रह्लाचन्द कृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५ गुटका स० २०३ । पत्र स० २०-२६, १८५ से २०३ । भा० ६×५ इ च । भाषा सस्कृत

हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यत निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम	भासाधर	सम्बृत	२०-२६
२ ऋषिमण्डलस्तवन	×	"	३०-३६
३ जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	"	१६२-१६६
४ गुरुप्रों की जयमाल	"	हिन्दी	१६६-१६७
५ एमीकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	"	१६७-२२०

५५८६. गुटका स० २०४ । पत्र स० १४० । भा० ६×४ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स०

१७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यत समयसार नाटक ( बनारसीदास ) पार्श्वनाथरत्नवन ( ब्रह्मनाथ ) का सग्रह है ।

५५८७ गुटका स० २०५ । नित्य नियम पूजा सग्रह । पत्र स० ६७ । भा० ८५×५५ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८ गुटका स० २०६ । पत्र स० ४७ । भा० ८५×७७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र स० २ नहीं है ।

१ सुदर शृंगार	महाकविराम	हिन्दी	पद्य स० ८३१
---------------	-----------	--------	-------------

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे रामेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२ व्यावर्तनीधी

नम्बराय

११

बीजलेर विवर्ती मङ्गला फरीरा मे प्रतिलिपि की । माजीयम बालाले सं १८३१ मे प्रतिलिपि कर्तरी की ।  
अस्तितम भाग—

बीडा—इच्छा स्थान बरतु घट पनमहि सुठ प्रवाण ।

कृत स्तन कमल कङ्क रत न रंघ दयल ॥ ३६ ॥

कृत मन्मथ—

स्वी लना प्रिक नारकलेर इहा देघ महेक बु पार न बायो ।

हो युग व्याध विरधि बकायत निधम बु होधि मय्य बतयो ॥

देव धाम्य महि मन्मथ बघीवदि मन्मथला युग धानि क्यमी ।

हो कवि या कवि मङ्गल्य कटी बु कथान बु स्तान बरी कुनवायी ॥३७॥

इति श्री नम्बराय इत स्याम बलीधी कपूर्व ॥ विद्यार्त मङ्गला फरीरा बली बीजलेर का । विद्यार्त  
बलीयाम कला संवत् १ ३९ पिटी बलवा पुटी १४ ।

११५२ गुटका सं० २०७ । पत्र सं २ । मा ७×२२ व । भाषा—हिन्दी बरत । मे कल  
सं १६५१ ।

विषय—बामन्य युवा बळ, पत्र एवं कवनों का संघर्ष है ।

११६१ गुटका सं २०८ । पत्र सं १७ । मा १२ १३ व । भाषा—हिन्दी ।

विषय—बालन्य भीतिघाट तथा बालुयान इय बालनधार है ।

११६१ गुटका सं० १ ६ । पत्र सं १६-१४ । मा १४ व । भाषा—हिन्दी ।

विषय—दुरासक परनालक मधि कविनी के पत्नी का संघर्ष है । विषय—कृत्य कवि है ।

११६२ गुटका सं २१ । पत्र सं २ । मा १२×२२ व । भाषा—हिन्दी ।

विषय—बनुरिक कुलनाल कर्ता है ।

११६३ गुटका सं २११ । पत्र सं ४६-४७ । मा १४ व । भाषा—हिन्दी । मे कल सं १७१ ।

विषय—इन्द्रात्मक इत बीजलक्य का संघर्ष है ।

११६४ गुटका सं २१२ । पत्र सं ५-१३ । मा १४ व ।

विषय—स्वीन युवा एवं पत्र संघर्ष है ।

## गुटका-संग्रह

५५६५ गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। भा० ६×५ इ च। भाषा—हिन्दी। लि० काल १८५७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं हैं। सम्बोधपत्रासिका ( घानतराय ) वृजलाल की वारह भावना, वैराग्य पद्मोत्ती ( भगवतीदास ) भानोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र ( समथमुन्दर ) राजुल पद्मोत्ती ( विनोदीलाल ) आदित्य-वार कथा ( भाऊ ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६ गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। भा० ६×६ इ च।

विशेष—मुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७ गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। भा० ६×६ इ च। भाषा—हिन्दी।

१ कलियुग की विनती	देवाग्रह	हिन्दी	५-७
२ सीताजी की विनती	×	”	७-८
३ हंस की ढाल तथा विनती ढात	×	”	९-१२
४ जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	”	१२
५ होली कथा	छोतरठोलिया	”	२० सं० १६६० ३-१८
६ विनतिया, ज्ञानपद्मी, वारह भावना			
राजुल पद्मोत्ती आदि	×	”	१९-४०
७ पाच परवी कथा	ब्रह्मवेणु ( भ जयकीर्ति के शिष्य )	”	७६ पद्य हैं ४१-४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	”	४५-६७
९ वधावा एव विनती	×	”	६७-६९
१० नव भगल	विनोदीलाल	”	६९-७७
११ कक्का बतीसी	×	”	७७-८१
१२ बडा कक्का	गुलावराय	”	८०-८१
१३ विनतिया	×	”	८१-१३२

५५६८ गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। भा० ११×९ इ च। भाषा—हिन्दी सस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ जिनवरव्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१-२
			भट्टारक पट्टावली की गई है।
२ माराधाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३-१५



३ मुख्यमणि नील	चमलकीरि	द्विपौ	१२
४ नीलीय महाप्रस्तवत	कुसुकीरि	"	९
५ महाश्लोकमीड	न शुभकत्र	"	२१
६ निष्ठा कुम्भ	श्यामिनिबाध	"	१२
७ शेषपालपुत्रा	महिप्र	संस्कृत	१७-१
मिनसम्प्रदान	भासाभर	"	१ १-१११
८ महाराज विचक्रीरि मन्त्र	X	"	१२

३२६३ गुटका सं २१० । पत्र सं १७१ । मा २x१२ इ च । मत्वा संस्कृत ।

विक्षेप—पूजा पाठों का संघट्ट है ।

३६० गुटका सं २१८ । पत्र सं १६६ । मा २x२३ इ च । मत्वा—संस्कृत ।

विक्षेप—१४ पूजाओं का संघट्ट है ।

३६०१ गुटका सं २१६ । पत्र सं १४ । मा ३x इ च । मत्वा—द्विपौ ।

विक्षेप—सर्वपदेन कृत विमोक्षार्थकथा है । से मत्वा १७२३ स्पेस बुटी ७ बुधवार ।

३६ गुटका सं २२ । पत्र सं । मा ७३x२ इ च । मत्वा—मन्त्र सं संस्कृत ।

१ निष्ठाविरुपकमीड	महेशिंह	पत्र सं	१-७
२ नामपाला	कलकत्र	संस्कृत	७ -६

विक्षेप—कुठके के मन्त्रमन्त्र पत्र नीलीय तथा फटे हुए है एवं गुटका चयुर्त्त है ।

३६ ३ गुटका सं २२१ । पत्र सं २१-१६ । मा ४x६ इ च । मत्वा—द्विपौ ।

विक्षेप—बोधाराय नीलीय की सम्मन्त्र नीपुटी ( चयुर्त्त ) प्रीक्षकप्रवित एवं मन्त्र नी विपौ मन्त्र टीका चयुर्त्त है ।

३६ गुटका सं २२२ । पत्र सं ११६ । मा ३x६ इ च । मत्वा—संस्कृत ।

विक्षेप—ब्राम्हाण पाठों का संघट्ट है ।

३६ २ गुटका सं २२३ । पत्र सं २२ । मा ७x४ इ च । मत्वा—द्विपौ ।

विक्षेप—कन बुधवार एवं मन्त्रे मन्त्र विपे हुए है ।

३६०६ गुटका सं २२४ । पत्र सं १४ । मा ७x२ इ च । मत्वा ६६६७ मन्त्र । मन्त्र-नीलीय एवं चयुर्त्त ।

विक्षेप—कुठकी ( चयुर्त्त ) प्रीक्षाक स्वयंभुवीय लक्ष्मीयुत एवं ब्राम्हाणिक पाठ मन्त्रि है ।

५६०८ शुटका स० २०५ । पत्र स० ११-१७७ । प्रा० १०×८ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी ।

१. निहारी सतमई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल स० १८३४ । पत्र स० ११ ने २३१ । वि० काल स० १८५२ माघ वृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरपोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि हे सोमा सत्ज मुक्त न तऊ सुदेव ।

पोये डीर जुठीर के लरमे होत विनेय ॥७१॥

इस पर ७१५ सन्धा है । वे सातसी से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरपोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहा के प्राये निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

गानप्राप्ती सरजु जह मिली मयसो भाय ।

अन्तरान मे देत सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिचे दूहा भूपन बहुत अनवर के अनुमार ।

पहुँ घोरि फहुँ श्रीर तू निकलेंगे लङ्कार ॥२॥

सेधी जुगल पत्तोर के प्राननाथ जी नांव ।

सप्तसती तिनसो पढी बसि मिंगार बट ठांय ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार यट तुलसी विपिन सुदेम ।

सेवत सत महत्त जहि देवत हरत बलेस ॥४॥

पूरीरित श्रीनन्द के मुनि नटिल्य महान ।

हम हैं तामे गीत मे मोहन मां जगमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि श्रीर जाचिये काहि ।

सम्पत्ति सुदामा को दर्ई इद्र लही नहीं जाहि ॥६॥

गहि अक मुमनु तात तैं विधि की बस लखाय ।

राधा नाम कहैं सुनें मानन कान बढाय ॥७॥

सबव् अठारहसी धिते ता परि तीसठ चारि ।

ज'माठे पूरो कियो जूप्प चरन मन धारि ॥८॥

इति हृदयव्यवहार इत्यादि विद्यायां रचितं सप्तपदी टीका हरिश्चन्द्रात्मिका सम्पूर्णा । संवत् १८२२ मास शुक्ल

७ रविवारो बुधवारो ।

२ कविचन्द्रम—प्रथमकार हरिश्चन्द्रात्मिका । पत्र सं १११-१७७ । अथा-द्वितीया पत्र

विशेष— १२७ तक पत्र हैं । आने के पत्र नहीं हैं ।

शास्त्र—

सोहन चरण पयोध मे है सुनघो को मस्त ।

तस्मिं सुमरि हरि मस्त धर करत विष्णु को मस्त ॥१॥

कवि—

माधव को नन्द बुधवार बाको मुञ्जवध

लीला हो ते सोहन के मानध को भीर है ।

दुनी ठीको रचिने को बाहुत किरिधि मिठि

बसि को बजाये मयो मय भीम मोरै है ।

केल है बल मातमान वी अहास कैरि,

बासि वी अहास के को बाटिधि मे मोरै है ।

राविका के मानध के अंग न विबोके विधि

दूक दूक तोरै बुधि दूक दूक मोरै है ॥

माध वीन लखण बोहा—

एव मानव लखन भी बुधै ते है वीन ।

अजया भी ज्यो अकटा भीर बहिरता रोम ॥१॥

अभिमान बाध—

बोहा—

साका लखणु ही पुनी अंबव वैरीत बाध ।

अकाणु सो अठ बुधि मे ललि रचि दिन मस्त ॥२८८॥

इति श्री हरिश्चन्द्रात्मिका विरचितं कविचन्द्रमो अथ सम्पूर्णं । अ १ २२ मास शुक्ल १४ रविवार ।

२३ ३ गुरुका सं २२३ । पत्र सं १ । अ २२×१६ अंश । अथा-द्वितीया । अ २२

शेठ बुधा १२ । पूर्ण ।

१ लखनौबाहली

अधरहीबाध

द्वितीया

१

२ अमरहाबाहली

अमरहीबाध

१-१

२३१ गुरुका सं २२७ । पत्र सं २६ । अ २×२३ । अथा-द्वितीया । अमरहाबाहली । अ २२

मास सं १ १७ अमरहाहली २ ।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित हंगरसी की सो देखि लिखी—द्वि० भसाढ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोषा ।

५६११ गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ से ६२ । मा० ६×७ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । ले० काल १६४४ । द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

५६१२ गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १८ । मा० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

१ पञ्चपाल पेंतीसो	×	हिन्दी	१-६
२ भकपनाचार्यपूजा	×	"	७-१२
३ विष्णुकुमारपूजा	×	"	१३-१८

५६१३ गुटका सं० २३० । पत्र सं० ४२ । मा० ७×६ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

५६१४ गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । मा० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव हैं ।

५६१५ गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१५७ । मा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पञ्चीसी, वारह भावना, शत मष्टोत्तरी, जैनशतक, (सूधरदास) दान वावनी (दानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मछतीसी, ज्ञानपञ्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिपह वर्णन का संग्रह है ।

५६१६ गुटका सं० २३३ । पत्र संख्या ४२ । मा० १०×४३ भाषा—हिन्दी सस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६१७ गुटका सं० २३४ । पत्र सं० २०३ । मा० १०×७३ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत । पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है ।

५६१८ गुटका सं० २३५ । पत्र सं० १६८ । मा० १०×६३ इ० । भाषा—हिन्दी ।

१. तत्त्वार्थसूत्र ( हिन्दी टीका सहित ) हिन्दी सस्कृत ३-६०

६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है ।

२ चौबीसठाणाचर्चा × हिन्दी ६१-१६८

५६१९ गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १४० । मा० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

२६२० गुरुका सं० २६२। पत्र सं० २२। मा० २×२६६। भाषा—हिन्दी। मे० काल १०४५।

१	मुद्रितिका	पत्ररस एव अन्य अभिपद्य	हिन्दी	लिखित विवरण १-११
२	पत्र	कुम्हारराज	"	११-१४
				मे० काल १००२। पत्रण सुटी २
३	विश्वकर्मा	अभ्युपेय	हिन्दी	१४ ११

२६२१ गुरुका सं० २६३। पत्र सं० १९५। मा० १९२×१६। भाषा—हिन्दी।

१	मासुर्वेदिक मुद्रिका	×	हिन्दी	१ १४
२	कमलौच	×	"	१४-२४
३	विश्वकर्मा	×	"	२४ ११

२६२२, गुरुका सं० २६४। पत्र सं० ४५। मा० १२२× ६। भाषा—संस्कृत। विवरण—संस्कृत।  
 विवरण—संस्कृत। प्रथम स्तोत्र टीका अति उत्तम भाव में अन्य अर्थ लक्षित किया हुआ है।

२६२३, गुरुका सं० २६५। पत्र सं० २-१००। मा० ४५×१६। भाषा—हिन्दी। मे० काल १ १०  
 वर्षका सुटी पत्रावली।

विवरण—विश्वकर्मा द्वारा प्रकृत। अति उत्तम भाव में अन्य का रूप है।

२६२४ गुरुका सं० २६६। पत्र सं० १-२ ४ २२३, ६ २ के ७२४। मा० ४५×१६।

भाषा—हिन्दी पत्र।

विवरण—अति उत्तम भाव में है।

२६२५, गुरुका सं० २६७। पत्र सं० २४। मा० १×४५। भाषा—संस्कृत।

विवरण—पुष्पा वाक्य संग्रह है।

२६२६ गुरुका सं० २६८। पत्र सं० २२। मा० १×४५। भाषा—संस्कृत।

१	श्रीशिव शक्ति पत्र	उत्तम	संस्कृत	मे० काल १०११ ४
२	व्याख्यानसुटी	अति उत्तम	"	२-०
३	वसुदेवाजीशक्तिपत्र	×	"	"
४	इन्द्रियावलीसुटी	×	"	१
५	आर्यभट्ट पत्र	×	"	१-११

## गुटका समग्र ]

६. बृहस्पति विचार	×	”	स० काल १७६२	१२-१४
७. अन्यस्तोत्र	×	”		१५-२२

५६२७ गुटका स० २४४ । पत्र स० २-४६ । मा० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र समग्र है ।

५६२८. गुटका स० २४६ । पत्र स० ११३ । मा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका स० २४७ । पत्र स० ६-७७ । मा० ७×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ समग्र है ।

५६३० गुटका स० २४८ । पत्र स० १२ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—तीर्थदूरो के पञ्चकन्याण्य आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका स० २४९ । पत्र स० ८ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—पद समग्र है ।

५६३२ गुटका स० २५० । पत्र स० १५ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र है ।

५६३३ गुटका स० २५१ । पत्र स० २० । मा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नधारण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४ गुटका स० २५२ । पत्र स० ३ । मा० ८३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । स० काल १९३३ ।

विशेष—धकलद्वाष्टक स्तोत्र है ।

५६३५ गुटका स० २५३ । पत्र स० ८ । मा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । स० काल स० १९३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६ गुटका स० २५४ । पत्र स० १० । मा० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—विम्ब निर्वाण विधि है ।

५६३७ गुटका स० २५५ । पत्र स० १६ । मा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत इष्ट धत्तीसी पंचमंगल एव पूजा आदि हैं ।

५६३८ गुटका स० २५६ । पत्र स० ६ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । मयूरी ।

विशेष—वधोचन्द्र कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

२६२३ गुरुका सं० २३७। पत्र सं ८। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी। रचा-मैसूरिया।  
विशेष—मन्तराम इत नमिल बंधू है।

२६२४ गुरुका सं २३८। पत्र सं ९। पा ८०४२६। भासा-मंसूर। मसूर।  
विशेष—आपिमन्तरामस्तोत्र है।

२६२५ गुरुका सं० २३९। पत्र सं १०। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी। ले काल १।।  
विशेष—हिन्दी पत्र एवं भाषा इत लघु है।

२६२६ गुरुका सं० २४०। पत्र सं ११। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी।  
विशेष—मन्तराम इत बीड़ा लघु एवं सर्वत्र पठ्य है।

२६२७ गुरुका सं० २४१। पत्र सं १२। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी। ले काल १।।  
विशेष—मन्तराम इत लघु है।

२६२८ गुरुका सं० २४२। पत्र सं १३। पा ८०४२६। भासा-मंसूर हिन्दी। मसूर।  
विशेष—मन्तराम के पत्र है।

२६२९ गुरुका सं० २४३। पत्र सं १४। पा ८०४२६। भासा-मंसूर।  
विशेष—यकावर्षी विरचित मन्तरामपुस्तकस्तोत्र है।

२६३० गुरुका सं २४४। पत्र सं १५। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी।  
विशेष—मन्तराम की भाषा है।

२६३१ गुरुका सं २४५। पत्र सं १६। पा ८०४२६। भासा-मंसूर।  
विशेष—मन्तराम के ले मंसूरस्तोत्र है।

२६३२ गुरुका सं० २४६। पत्र सं १७। पा ८०४२६। भासा-मंसूर। ले काल १।।  
गुरी २।

विशेष—पत्र १-७ तक मन्तरामपुस्तक मन्तराम है।

२६३३ गुरुका सं २४७। पत्र सं १८। पा ८०४२६। भासा-हिन्दी।  
विशेष—मन्तराम इत एरीमन्तराम स्तोत्र भाषा है।

२६३४ गुरुका सं० २४८। पत्र सं १९। पा ८०४२६। भासा-मंसूर। ले काल १।।  
गुरी २।

विशेष—मन्तराम मन्तराम के मन्तराम की भाषा। मन्तराम पुस्तक, मन्तराम स्तोत्र एवं मन्तराम  
(भाषा) है।

५६५१. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० २७ । मा० ७३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६५२ गुटका सं० २७० । पत्र सं० ८ । मा० ६३×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं०

१६३२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३ गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । मा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, श्रद्धामूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं ।

५६५४ गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । मा० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—मनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । मा० ७×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र सवत् १८८६ में भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६ गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । मा० १०×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । पूर्ण

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से भागे खाली पढा है ।

५६५७. गुटका सं० २७५ । पत्र सं० ६३ । मा० ५३×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसो नाम, जिनपञ्चीसी ( नवल ), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सवोषपञ्चासिका ( धानतराय ) ।

५६५८ गुटका सं० २७६ । पत्र सं० १० । मा० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बहा कवका ( हिन्दी ) आदि पाठ हैं ।

५६५९ गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २-२३ । मा० ५३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द्र के पदों का संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० २७८ । पत्र सं० १-८० । मा० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—वीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेवः कृत परमस्वप्रकाश है ।

५६६१ गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६-३४ । मा० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।



२६६३. गुटक सं० २८०। पत्र सं २-४१। मा ३२×४४ इ। भाषा-हिन्दी पत्र। पुरत।

विषय—कालों का वर्णन है।

२६६३ गुटक सं० २८१। पत्र सं १२। मा ३२×४४ इ। भाषा-×। पुरत।

विषय—बाबूजी, पुनर्जाय, बचनबख्त खोबड़फारण पञ्चमेकुवा एवमकुवा, टालार्जुन पत्नी पत्नी का पत्र है।

२६६४ गुटक सं० २८२। पत्र सं १३-४४। मा ३२×४४ इ।

विषय—मिल कुल पत्रों का संग्रह है—बैंगनकीड़ी पत्र ( पुनरजाय ) बख्तबख्तनामा, पत्रकीटिनामा विद्याद्वारादया ( बचनकीटि ) निर्वाहकाय पत्रिकाय पञ्चमिनदीनामक बचनना ( बचनकीटिना ) बख्तनामा का पुनरजाय, विद्यती ( पुनरजाय ) मिलकुवा।

२६६४. गुटक सं० २८३। पत्र सं १३। मा ३२×४४ इ। भाषा-हिन्दी पत्र। विषय-नामक।

पुरत।

विषय—१३ के पत्रों के पत्र काशी है। पनाकीटिनाम इत बचनकार है।

२६६६. गुटक सं २८४। पत्र सं २ ३३। मा ३२×४४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। पुरत।

विषय—पत्रावली ( पत्रावली ) सुठवीथ ( काशिका ) में ही रचना है।

२६६७. गुटक सं २८५। पत्र सं ३-४६। मा ३२×४४ इ। भाषा-संस्कृत प्राकृत। पुरत।

विषय—मिलकुवा, लक्ष्मणनाम, श्रीवीरकथापत्रों के रचना है।

२६६८. गुटक सं २८६। पत्र सं ३३। मा ३२×४४ इ। पुरत।

विषय—कर्मकाण्ड बख्त पत्र हिन्दी टीका लक्षित।

२६६९. गुटक सं २८७। पत्र सं ३२। मा ३२×४४ इ। भाषा-बिहारी। पुरत।

विषय—टालार्जुन, मिलकुवा है।

२६७०. गुटक सं० २८८। पत्र सं ३-४२। मा ३२×४४ इ। विषय-कथा। पुरत।

विषय—कथा का पत्र विद्या हुआ है।

२६७१ गुटक सं २८९। पत्र सं ३। मा ३२×४४ इ। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पुरत।

विषय—कथाकाण्ड इत स्नेहकीया में से कथा कीटी बचन विद्या है।

संकेत— एक कथा बचनका की सुटि कई हूँगा।

वि३ का नाम काशी काशिके ऊपर लिखी हुआ है।

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम मुनि ले ।

नन्द जसोदा मादि दे व्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥

व्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीवनि प्रान ।

ताने तीमप न बीतरूँ मीहे नन्दराय की भ्रान ॥

अन्तिम—

यह लीला व्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।

जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥

जो गाव सीप सुर गमन तुम वचन सहेत ।

रसिक राय पूरन कोया मन वांछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—ग्रामे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है ।

५६७२. गुटका स० २६० । पत्र स० ५२ । भा० ६×५ ६० । प्रपूर्णा ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का सग्रह है ।

१ सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	८-१३
२ दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३-१७
३ रत्नत्रयप्रतकथा	"	"	१७-१९
४. पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	"	"	१९-२३
५ मक्षयदशमीकथा	"	"	२३-२६
६ अनन्तचतुर्विंशतिप्रतकथा	"	"	२७
७ वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्णा ३१-५२

विशेष—साखेरी ग्राम में दीवान श्री वृधसिंहजी के राज्य में मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७२. गुटका स० २६१ । पत्र स० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-सग्रह ।

विशेष—पूजा एक स्तोत्र सग्रह है । संस्कृत में समयसार कल्पद्रुमपूजा भी है ।

५६७४. गुटका स० २६२ । पत्र स० ८८ ।

१ ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१९-३६
२ फुटकर बोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है ३६-३७

१ चपनी

बीरपन

बाहु

१३-१४

के नाम हैं १७६३ अंत दुःखपात्र के लक्षण में प्रतिनिधि की ओ।

१६५२ गुरुका सं० २६३। अंत कर्ता काटे डीकरनपनी। वन सं ७६। का २×९ दण्ड। के नाम न १७३३। धूर्त। वया-जीर्ण।

विशेष—साधुर्विद मुनि एवं संघों का मध्य है।

१६५३ गुरुका सं० २६४। वन सं ७७। का ६×४ दण्ड। के नाम १७३४ वीर दुती १। धूर्त। बाणभय गुरु। वया-जीर्ण।

विशेष—वीर कर्त्तव्य के प्रतिनिधि की ओ। युवा एवं वीर अंत है।

१६५४ गुरुका सं २६५। वन सं ७८-७९। का ४×४ दण्ड। भावा-संतुष्ट द्विती। के नाम वन सं १६३२ बाणन दुती २।

विशेष—बुद्ध्यावाहन एवं मत्तमपरीक्ष का नाम है।

१६५५ गुरुका सं० २६६। वन सं ७९-८०। का ३×३ दण्ड। भावा-संतुष्ट। विषय-लोच। धूर्त। वया-बाणभय।

विशेष—मत्तमपरीक्ष एवं लक्षार्थ गुरु है।

१६५६ गुरुका सं २६७। वन सं ८०। का ६×४ दण्ड। भावा-द्विती। धूर्त।

विशेष—साधुर्विद के मुनि हैं।

१६५७ गुरुका सं २६८। वन सं ८१। का ६×४ दण्ड। भावा-द्विती। धूर्त।

विशेष—शास्त्र के ११ वन जाती हैं। ११ के घाले फिर वन १ २ के शास्त्र है। वन १ लक्ष गुरु के वरित है।

१ बाण भया—वन १ -२१ तक। धूर्त वरित का है। १२ तक है। वर्त्तन मुन्दर है। वरित में वन विषयक वयाका वया है। १७ वन है।

२ बाण भया—बीरपन १३-१४ तक।

१६५८ गुरुका सं २६९। वन सं ८२। का ७×४ दण्ड। भावा-द्विती। विषय-गुह्य।

विशेष—वीरघार है।

१६५९ गुरुका सं ३। वन सं १२। का ६×४ दण्ड। भावा-द्विती। विषय-मन्दपात्र।

विशेष—मन्दपात्र, साधुर्विद के मुनि। वन ७ के घाले जाती है।

५६८३ गुटका सं० ३०१ । पत्र न० १८ । मा० ४६×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह ।

ने० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी भागीतु गी की— हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ गुदा ५ को यात्रा की थी ।

५६८४ गुटका सं० ३०२ । पत्र न० ४२ । मा० ४४×३३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५ गुटका सं० ३०३ । पत्र न० १०५ । मा० ४३×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० मन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मग्रन्थो म० १८१७ की जगताराम के पीय माणकचन्द्र के पुत्र की प्रायुर्वेद के तुमने दिये हुये हैं ।

५६८६ गुटका सं० ३०३ क । पत्र न० १५ । मा० ८५×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामयन्त्र है । पत्र ३ में तुलसीदास रचित कवित्तन्त्र रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दो का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक सख्या ठीक हैं । इनमें आगे ३५९ मन्त्रों से प्रारम्भ कर ३८२ तक सख्या चली है । इनके आगे २ पद्य गाली हैं ।

५६८७ गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । मा० ७३×४५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ में ९ तक पत्र नहीं हैं । मजहराज, रामदास, बनारसीदास, जगताराम एवं विजयकाँति के पद्यों का संग्रह है ।

५६८८ गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । मा० ७५×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९ गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । मा० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा पाठ ।

पूर्ण । विशेष—धार्मिकपाठ है ।

५६९० गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । मा० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१ गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । मा० ५५×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तारम्भद्विमन्त्र सहित है ।

१ पद्यकोष

चोखर्बन

सद्वृत्त

१०-११

के काल सं १७६३ संवत् इन्द्रियसम्राज के बचाल में प्रतिनिधि की थी।

२६७२ गुटका सं० २३३। संवत् कर्ता पाये टीकरपतनी। पत्र सं ७६। मा ३५१ दस। के  
काल सं १७६३। पदार्थ। कथा-शीर्ष।

विवेक—मासुर्वेदि ६ गुणके एवं मंत्रों का सङ्ग्रह है।

२६७३ गुटका सं० २३४। पत्र सं ७७। मा ३५२ दस। के काल १७६३ वीर सुदी ६। पूर्ण।  
प्राप्त्य सुद। कथा शीर्ष।

विवेक—यं चोखर्बन के प्रतिनिधि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

२६७४ गुटका सं० २३५। पत्र सं ७८-७९। मा ३५३ दस। कथा संस्कृत शिल्पी। के पत्र  
सं १९९२ प्राप्त सुदी ३।

विवेक—गुणसूत्रात्मक एवं अक्षरानुसूची का नाम है।

२६७५ गुटका सं २३६। पत्र सं ८०-८१। मा ३५४ दस। कथा-संस्कृत। विषय-सौम्य।  
पदार्थ। कथा-प्राप्त्य।

विवेक—अक्षरानुसूची एवं लक्षण सूत्र है।

२६७६ गुटका सं २३७। पत्र सं ८२। मा ३५५ दस। कथा-शिल्पी। पदार्थ।

विवेक—मासुर्वेदि के गुणके है।

२६७७ गुटका सं २३८। पत्र सं ८३। मा ३५६ दस। कथा-शिल्पी। पूर्ण।

विवेक—प्राप्त्य के ३१ पत्र वाली है। ३१ के पाने फिर पत्र १ १ के प्राप्त है। पत्र १ एक पत्र  
के कविता है।

१ बाह्य कथा—पत्र १-२१ तक। अत्र कवि का है। १९ पत्र है। शीर्ष सुन्दर है। कविता है  
पत्र संस्कृत कथा का है। १७ पत्र है।

२ बाह्य कथा—श्रीविष्णु का-पत्र २२-३१ तक।

२६७८ गुटका सं २३९। पत्र सं ८४। मा ३५७ दस। कथा-शिल्पी। विषय-सुन्दर।

विवेक—श्रीविष्णु का है।

२६७९ गुटका सं २४०। पत्र सं ८५। मा ३५८ दस। कथा-शिल्पी। विषय-सुन्दर।

विवेक—सुन्दर मासुर्वेदि के गुणके। पत्र ७ के पाने वाली है।

१ पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२ प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६६६ गुटका स० ८ । पत्र स० ३१७ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६२ मासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८६४ ।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषत उल्लेखनीय है ।

५७०० गुटका स० ६ । पत्र स० १८ । प्रा० ४×४ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । वे० स० ८६५ ।

विशेष—जगतगाम, गुमानोराम, हरीसिंह जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

## ख भगडार [ शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर जयपुर ]

५७०१ गुटका स० १ । पत्र स० २१२ । प्रा० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२ नाममाला	धनञ्जय	"	"	६-३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६-६५
५ मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६६
६ द्वादशप्रतीघापन	×	"		६६-८६
७ त्रिकालचतुर्विंशतीपूजा	×	"	ले० काल स० १७८३	८६-१०२
८ नवकारर्विंशती	×	"		
९ आदित्यवारकथा	×	"		
१० प्रोपधोपवास श्रुतीघापन	×	"		१०३-२१२
११ नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२ पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३ पञ्चमेरुपूजा	×	"		

## क भयङ्गार [ शास्त्रभयङ्गार यावा दुलीचन्द जयपुर ]

२६६२ गुटका स १। पत्र सं २७१। या २२×७५ इञ्च। के सं ५२७। पूर्ण।

१	बागडूपस	भीरवतिह पठीह	हिन्दी	१-५
२	घडोलप सनाह विधि	×	"	के सं १७११ ।।

वीरपत्रके के रूप में सं ग्रन्थमुद्र के बङ्गाली में प्रतिनिधि की थी।

३	वीरपत्रक	भूवरत्न	हिन्दी	१५
४	समयान नाटक	बनारसीराज	"	११७

बनारस्य बङ्गाली के पालक काल में सं १७५५ में लाहौर में प्रतिनिधि हुई थी।

५	बनारसी विमल	×	"	१२६
---	-------------	---	---	-----

विषय—बनारस्य बङ्गाली के कालकाल सं १७११ में विमलकाल के प्रतिनिधि हुई थी।

२६६३ गुटका सं २। पत्र सं २२२। या ५×२३ इञ्च। मूर्त्त। के सं ५२८।

विषय—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है।

२६६४ गुटका सं ३। पत्र सं २४। या १२×२३ इ। भाषा—हिन्दी। पूर्ण। के सं ५३।

१	छात्रिकाव	×	हिन्दी	१
२	महर्षिपैक कामनी	×	"	१-५
३	प्रविष्टा में काल काले १६ संकी के विधि	×	"	१-२५

२६६५ गुटका सं ४। पत्र सं २३। या २३×२३ इ। पूर्ण। के सं ५६।

विषय—पूजाओं का संग्रह है।

२६६६ गुटका सं ५। पत्र सं २४। या १४×४ इ। भाषा—बसन्त हिन्दी। मूर्त्त। के सं ५७।

११।

विषय—मुद्रित पत्रों का संग्रह है।

२६६७ गुटका सं ६। पत्र सं ३१४। या १४×४ इ। भाषा—बसन्त। पूर्ण। कीर्त्त। के सं ५८।

१२।

विषय—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

२६६८ गुटका सं ७। पत्र सं ४१९। या १३×२ इ। के सं ६१। १. बनारस मुद्रि

पूर्ण। के सं ६१।

५७०५ गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । मा० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), पत्याणामन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न ऋषियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१ चौरासीवील	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२ मादिपुराणविनती	गङ्गादास	”		१७-८३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा ( नरसिंहपुरा ) जाति वाले वरिष्ठ पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

३ पद—जिरा जपि जिरा जपि जिवडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी		४८-४१
४ अष्टकपूजा	विश्वभूपण	”	पूर्ण	५१
५ समकितविरणवोधर्म	ब्र० जिनदास	”	”	५८

५७०७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । मा० ५ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । मन्त्र में कुछ प्रायुर्वेदिक नुसले भी दिये हैं ।

५७०८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । मा० ५×२ $\frac{३}{४}$  इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासों का व्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । मा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—प्रायुर्वेद के नुसले, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१० गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । मा० ६×३ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११ गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-१२ । मा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।



१७०२ गुटका स २। पत्र ७ १९६। पृ ६×६५ इ। ले काल ×। पत्र-बीरई बीरई।

१ विनोदचरित	×	संस्कृत	हिन्दी	११
२ कालचरित	×	हिन्दी		११-१४
३ विचारवाचा	×	ब्राह्मण		१२-१६
४ बीरईचरितपरिचय	×	हिन्दी		१६-१९
५ चरितचरितपरिचय	×	"		१९-२०
६ भाष्य विनोद	×	ब्राह्मण		२२-११९
७ भाष्यचरित ( भाष्यविनोद )	×	"		१११-११९
८ विनोदभाष्य भाष्यपरिचय	×	संस्कृत		१२४ १२४
९. तत्परिचय	अपभ्रंश	"		१२४-१२५

१७०३ गुटका स ३। पत्र ७ १९६। पृ ६×६५ इ। ले काल ×। पूर्ण।

विशेष—विनोदचरित तथा भाष्यचरित हैं। इनके अतिरिक्त विनोदचरित संस्कृत हैं।

१ अष्टाशतिका	संस्कृत	हिन्दी		११
२ भाष्यचरित	विनोदचरित	"	२ भाष्य १९६६	११-२०
३ अष्टाशतिका	अष्टाशतिका	"		४१-४२
४ अष्टाशतिका	विनोदचरित	"	२ भाष्य १६	४२-४४
५ अष्टाशतिका	"	"		४४-४६
६ अष्टाशतिका	"	"		४६-४७
७ अष्टाशतिका	विनोदचरित	"		११०-१११
८ अष्टाशतिका	"	"		११
९ अष्टाशतिका	"	"		१२०-१२१
१० अष्टाशतिका	"	"		१२२-१२३

१७०४ गुटका स ४। पत्र ७ १९६। पृ ६×६५ इ। भाष्य-हिन्दी। ले काल २६ ४। पूर्ण।

विशेष—विनोदचरित व भाष्यचरित का संस्कृत हैं। तत्परिचय हिन्दी हैं।

५७२१ शुटका स० २१ । पत्र सं० ५-६२ । घा० ५३×५३ ६० । ले० तान × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयाार गाथा, सामायित्पाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थगूण एव भक्तापरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२ शुटका स० २२ । पत्र न० २१६ । घा० ६×६ ६० । ले० काल सं० १=६७ चंद्र मुदी १५ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रो एव स्तोत्रो वा सप्त है ।

५७२३ शुटका स० २३ । पत्र न० ६७-२०६ । घा० ६×५ ६० । ले० तान × । अपूर्ण ।

१ पद- ( यह पानी मुलतान गये )	×	हिंदी	पूर्ण	६७
२ ( पद-पौन साामेरीमै न जानी तजि के चमे गिरारि )	×	"	"	"
३ पद-( प्रभू तेरे दरसन की कामिहागे )	×	"	"	"
४ आदिचकारनथा	×	"	"	६६-१२५
५ पद-(पानो मिय पूजन श्री वीर जिनद )	×	"	"	१७५-१७६
६ जोगीरासो	जिनदाग	"	"	१६०-१६२
७ पञ्चोद्भय त्रेनि	उरगुरसी	"	"	१६२-१६५
८ जैनविद्वादेग की पविना	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

## ग भण्डार [ शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ]

५७२४ शुटका स० १ । घा० ८×५ ६० । ले० काल × । पूर्ण । घे० स० १०० ।

विशेष—निम्न पाठ का समूह है ।

१ पद- सांवरिया पारसनाय माहे तो चागर रासो	गुगालचन्द्र	हिन्दी
२ ,, मुझे है चाय दरसन का दिला दोगे तो क्या हागा	×	"
३ दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४ तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५ पल्याणमन्दिरआपा	बनारसीदास	"
६ भक्तापरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

२०१२ गुप्तक सं० १२। पत्र सं २२३। मा ६×४ इ। भाषा—संस्कृत—हिन्दी। ले पत्र सं १२ ३ बीसाल कुटी १४। पूर्ण।

विषय—बुद्धा व स्तोत्रों का संग्रह है।

२०१३ गुप्तक सं० १३। पत्र सं १२३। मा ३×२३ इ। ले पत्र ×। पूर्ण।

विषय—सामान्य स्तोत्र एवं बुद्धा पाठों का संग्रह है।

२०१४ गुप्तक सं १४। पत्र सं ४९। मा ३२×२३ इ। भाषा—हिन्दी। ले पत्र ×। पूर्ण।

१ विनोदचरित	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१५
२ छविशा की चरणा	×	"	"	१६-२६
३ वेदव धर्माला दुष्कचरित	×	"	"	२७-४२

२०१५ गुप्तक सं १५। पत्र सं ७६। मा ६×२३ इ। ले पत्र ×। पूर्ण।

विषय—बुद्धा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

२०१६ गुप्तक सं १६। पत्र सं १२। मा ६×२३ इ। ले पत्र सं १७२९ बीसाल कुटी ३। पूर्ण।

१ समसाराणाटक	बनारसीपाल	हिन्दी		१०-१६
२ पार्श्वनाथजीमी विद्यालक्षी	×	"		११०-११४
३ धामिनाथसुखक	दुर्गाधर	"		११२ ११६
४ बुद्धदेवकीविनायी	×	"		११७ १२

२०१७ गुप्तक सं १७। पत्र सं ११२। मा ६×२३ इ। ले पत्र ×। पूर्ण।

विषय—स्तोत्र एवं बुद्धाओं का संग्रह है।

२०१८ गुप्तक सं १८। पत्र सं १२४। मा ३३×२३ इ। भाषा—संस्कृत। ले पत्र ×। पूर्ण।

विषय—मिल्य बीभत्सिय बुद्धा पाठों का संग्रह है।

२०१९ गुप्तक सं १९। पत्र सं ११३। मा २×३ इ। ले पत्र ×। पूर्ण।

विषय—मिल्य पाठ व भव धारि का संग्रह है तथा धम्मपिट के मुक्के की दिशि बुद्धे हैं।

२०२० गुप्तक सं २०। पत्र सं १३२। मा ७×६ इ। ले पत्र सं १ २२। पूर्ण।

विषय—मिल्यभारतक पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मभवेव) त्रिभक्तुति (चरनाथ, हिन्दी) का (सुं वन्द एवं वनकीर्ति) कथेचराली की कथति तथा धार्मिक काल धारि पाठों का संग्रह है।

५७२१ शुटका सं २१ । पद्य सं० ५-६२ । मा० ५५×५५ ६० । ले० तान × । प्रपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयनार माथा, सामाधिरायाठ धृति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२ शुटका सं २२ । पद्य सं० २१६ । मा० ६×६ ६० । ले० तान सं० १८६७ चंद्र सुदी १५ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रा एव स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३ शुटका सं २३ । पद्य सं० ६७-२०६ । मा० ६×५ ६० । ले० तान × । प्रपूर्ण ।

१ पद— ( वह पानी मुनताम गये )	×	हिंदी	पूर्ण	६७
२ ( पद—कौन स्वतामेरीमे न जानी तजि के चम गिन्तारि )	×	"	"	"
३ पद—( प्रभू तेरे दरसन की बनिहारी )	×	"	"	"
४ साहित्यशारतथा	×	"	"	६६-१२५
५ पद—(चलो निय पूजन श्री वीर जिनद )	×	"	"	१७८-१७९
६ जोमीरातो	जिनदाग	"	"	१६०-१६२
७ पञ्चेन्द्रिय बलि	ठरगुरसी	"	"	१६२-१६५
८ जैनविद्दीदेश की पत्रिका	मजनसाराग	"	"	१६५-१६७

## ग भगडार [ शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ]

५७२४ शुटका सं १ । मा० ८×५ ६० । ले० तान × । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठा का संग्रह है ।

१ पद— सांवरिया पारसनाय माहे तो चाकर रातो	गुवालचंद्र	हिन्दी
२ ,, मुझे है चाव दरसन वा दिवा दोगे तो क्या होगा	×	"
३ दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४ तीन चौबीसीमाम	×	हिन्दी
५ कल्याणमन्दिरभाषा	चनारसीदास	"
६ भक्तामरस्तोत्र	मानकुन्नाचार्य	संस्कृत
७ लदमीस्तोत्र	प्रद्युम्नभवेय	"

७	दैन्यपुत्रा	×	द्वितीय संत
८.	सद्गुणिय विम वीरपालय अयमाल	×	द्वितीय
९	दिव्य पुत्रा	×	संत
११	तीलकपुत्रा	×	"
१२.	वदवमपुत्रा	×	"
१३	काण्डिकार	×	"
१४	पार्श्वगतपुत्रा	×	"
१५.	पंचमेरपुत्रा	गुरुवत्	द्वितीय
१६	गण्डीरवपुत्रा	×	संत
१७	लक्ष्मणपुत्र	अनन्तवर्ति	पुत्र
१८.	एकपुत्रा	×	"
१९.	सद्गुणिय वीरपालय अयमाल	×	द्वितीय
२	निर्मलिकापुत्र माता	मैत्रा अक्षयतीवरा	"
२१	कुम्भो की विजयी	×	"
२२.	विजयवती	अक्षयवत्	"
२३	एकवर्षपुत्र	अक्षयवत्	पुत्र संत
२४	पञ्चमपुत्रा	अक्षय	द्वितीय
२५.	पद- विम देखा विम रह्यो न काम	विद्यमति	"
२६.	" लीजी ही अक्षय धो प्यार	अक्षयवत्	"
२	" मनु यह मरन कुली येरी	अक्षय	"
२८.	" अयो मुच परन वैद्य ही	"	"
२९.	" मनु येरी कुनो विजयी	"	"
३	" परपो संतार की बाप विजयी बार नही बाप	"	"
३१.	" नता बीवार मनु तीर नया अक्षय समुद्र होय	"	"
३२.	कुम्भ	गुरुवत्	"
३३	वैशाल के दूध मय	×	"
३४	पद- बीन मय परखी ९ बार	×	"

१७२५ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्णा । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ कल्याणमन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	अपूर्णा	८३-६३
२ देवसिद्धपूजा	×	"		६३-११५
३ सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश		११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश श सस्कृत		१२३-१२६
५ रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत		१२८-१६७
६ नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत		१६८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत		१८१-१८६
८ पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी		१८७-२१२
९ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	अपूर्णा	२१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"		२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मन्त्र एव हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत हिन्दी		२६९-४०३

१७२६ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८७६

श्रावण सुदी १५ । पूर्णा । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"	
३ पोडशकारणपूजा	"	"	
४ दशलक्षणपूजा	"	"	
५ रत्नत्रयपूजा	"	"	
६ पंचमेकपूजा	"	"	
७ सिद्धक्षेत्रपूजा	"	"	
८ दर्शनपाठ	×	"	
९ पद-भरज हमारी मुन	×	"	

१	अष्टमस्तोत्रोत्पत्ति	×	"
११	अष्टमस्तोत्रोत्पत्ति	×	अष्टमस्तोत्र

नवमस्तोत्रोत्पत्ति

१०-१० गुजरात सं ४ । पृष्ठ सं २३ । पृष्ठ सं २४ । पृष्ठ सं २५ । पृष्ठ सं २६ । पृष्ठ सं २७ । पृष्ठ सं २८ । पृष्ठ सं २९ । पृष्ठ सं ३० । पृष्ठ सं ३१ ।

विशेष—जैन कविओं के लिखी गयी का संस्कृत है । इनमें श्रीधरराय दाधरराय जीधरराय नवमस्तोत्रोत्पत्ति के नाम उल्लेखनीय हैं ।

## घ भयडार [ दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर ]

१०-१० गुजरात सं १ । पृष्ठ सं १ । पृष्ठ सं २ । पृष्ठ सं ३ । पृष्ठ सं ४ । पृष्ठ सं ५ । पृष्ठ सं ६ । पृष्ठ सं ७ । पृष्ठ सं ८ । पृष्ठ सं ९ । पृष्ठ सं १० ।

विशेष—विष्णु वरुण का संस्कृत है—

१	अष्टमस्तोत्र	मल्लु वाचार्थ	संस्कृत	१-१
२	अष्टमस्तोत्र	×	"	१
३	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	हिन्दी	३-११
४	अष्टमस्तोत्र	"	"	११
५	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
६	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
७	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
८	अष्टमस्तोत्र	×	"	११-११
९	अष्टमस्तोत्र	×	"	११-११
१०	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
११	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
१२	अष्टमस्तोत्र	अष्टमस्तोत्र	"	११-११
१३	अष्टमस्तोत्र ( १५ )	×	"	११-११

विशेष—श्री अष्टमस्तोत्र के अष्टमस्तोत्र की भी ।

५७२६ गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । मा० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	मध्यम द	१-१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२ धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०-१७०
३ ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१-१६२
४ पचलविधिविचार	×	"	१६३-१६४
५ अठाव्रीस मूलशुण्णराज्ञ	श० जिनदास	हिन्दी	१६४-१६६
६ दानकथा	"	"	१६७-२१५
७ वारह अनुश्रवण	×	"	२१५-२१७
८ हसतिलकरास	श० अजित	हिन्दी	२१७-२१७
९ चिद्रूपभास	×	"	२२०-२१७
१० भादिनाथकल्याणकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८-२३३

५७३० गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । मा० ५३×४ इ० । ले० काल सं० १६२१ पूर्ण । वे० सं० १४२

१ जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-३५
२ भादित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६-६०
भाषाकार—सुरेन्द्रकीर्ति २० काल १७४१			
३ पञ्चपरमेष्ठिशुण्णस्तवन	×	"	६१-६८

५७३१ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । मा० ७३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४३

१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५-२५
२ भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६-३२
३ जिनस्तवन	दौततराम	"	३२-३३
४ छहडाला	"	"	३४-५६
५ भक्तामरस्तोत्र	भाततु गान्धार्य	संस्कृत	६०-६७
६ रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८-७०





२७१२. गुडका सं २। पत्र सं ३६। मा ३३×७६। जाला-हिन्दी। के काल ×। पूर्ण।  
के सं १४४।

विशेष—पुत्रासो का संघ है।

२७१३. गुडका सं ३। पत्र सं ६-१६। मा ३३×२६। जाला हिन्दी। के काल ×। अपूर्ण।  
के सं १४७।

विशेष—पुत्रासो का संघ है।

२७१४. गुडका सं ७। पत्र सं २-३३। मा ३३×४२। जाला-हिन्दी संस्कृत। विषय-पुत्रा।  
के काल ×। अपूर्ण। के सं १४८।

२७१५. गुडका सं ८। पत्र सं १७-४८। मा ३३×२६। जाला-हिन्दी। के काल ×।  
अपूर्ण। के सं १४९।

विशेष—बघाणीविद्यालय तथा कुछ वर्षों का संघ है।

२७१६. गुडका सं ६। पत्र सं ३२। मा ३३×४२। के काल सं १५ (अपूर्ण)।  
पूर्ण। के सं १५२।

विशेष—हिन्दी वर्षों का संघ है।

२७१७. गुडका सं १। पत्र सं ४। मा ३३×४२। जाला हिन्दी। विषय-पुत्रा पाठ संघ।  
के काल ×। पूर्ण। के सं १५३।

२७१८. गुडका सं ११। पत्र सं २३। मा ७×२६। जाला हिन्दी। विषय-पुत्रा पाठ संघ।  
के काल ×। अपूर्ण। के सं १५४।

२७१९. गुडका सं १२। पत्र सं ३४-५६। मा ७×२६। जाला-हिन्दी। विषय-पुत्रा  
पाठ संघ। के काल ×। अपूर्ण। के सं १५५।

विशेष—स्कूट पाठों का संघ है।

२७२०. गुडका सं १३। पत्र सं ४८। मा ७×२६। जाला-हिन्दी। विषय-पुत्रा पाठ संघ।  
के काल ×। अपूर्ण। के सं १५६।

## ॥ भगवदार [ शास्त्रभगवदार दि० जैन मन्दिर संघीजी ]

२७२१. गुडका सं १। पत्र सं १७। मा २३×२६। जाला-हिन्दी संस्कृत। के काल ×।  
अपूर्ण।

विशेष—पुत्रा व शोचो का संघ है।

५७४२ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । मा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—वि० राममुखर्जी हू गरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मठा नगर में प्रतिलिपि की थी । पूजाओं का संग्रह है ।

५७४३ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । मा० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४५ गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । मा० ८×६ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७४६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । मा० ६×४ $\frac{३}{४}$  इ० । ले० काल सं० १६६ माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—मठारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रों के प्रतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है —

१ आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२ संबोधपञ्चासिका	×	"
३ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—मदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं ।

५७४८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । मा० ४ $\frac{३}{४}$ ×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७४९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । मा० ७ $\frac{३}{४}$ ×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विपज-पूजा एव स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

२७२ गुडका सं० १ । पत्र सं १ । पा ७२×२६ । ले कल×। मूर्त।

विशेष—मालवकन एव सुवरास के पत्तों का संख है।

२७२१ गुडका सं ११ । पत्र सं २ । पा ६२×४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×।

मूर्त।

विशेष—सुवरास प्रादि कवियों की सुधियों का संख है।

२७२२. गुडका सं १२ । पत्र सं ३ । पा ६×४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×। मूर्त

विशेष—पञ्चमज्ञान कवक कृत कथाका एव कित्तियों का संख है।

२७२३ गुडका सं १३ । पत्र सं ४ । पा ४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×। मूर्त।

१ कर्मविभक्त

मानवरास

हिन्दी

२ सैनसतक

सुवरास

"

२७२४ गुडका सं० १४ । पत्र सं १३ के १३४ । पा ६×४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×।

मूर्त।

विशेष—कर्म संख है।

२७२५ गुडका सं १५ । पत्र सं ४ । पा ७ ×४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×। मूर्त

विशेष—हिन्दी कवों का संख है।

२७२६ गुडका सं १६ । पत्र सं ११४ । पा ६×४६ । भाषा—हिन्दी संस्करण । ले कल×।

मूर्त।

विशेष—सुवरास एवं स्तोत्रों का संख है।

२७२७ गुडका सं १७ । पत्र सं ६ पा ६×४६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×। मूर्त।

विशेष—मङ्गल विद्याए प्रादि कवियों के पत्तों का संख है।

२७२८. गुडका सं १८ । पत्र सं ३३ । पा ६×४६ । भाषा—संस्कृत । ले कल×। मूर्त।

मूर्त।

विशेष—उत्तरार्द्धक एवं सुवरास हैं।

२७२९ गुडका सं १९ । पत्र सं १७१ । पा ६×७६ । भाषा—हिन्दी । ले कल×। मूर्त

१ किन्तुवरास

कनारसीरास

हिन्दी

मूर्त

२ कन्वरासी कीर्त

ब रामक

"

मूर्त

३ कनारसीकाना

×

"

मूर्त

४ कनारसीकाना

×

"

"

## गुटका-संग्रह ]

५७६० गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—गुमानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१ वसंतराजशकुनावली × संस्कृत हिन्दी २० काल सं० १८२५  
सावन सुदी ५ ।

२ नाममाला धनक्षय संस्कृत ×

५७६१ गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×५३ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी

६ । अपूर्ण ।

१. डोलामारुणी की वार्ता × हिन्दी

२. शानिश्वरकथा × ”

३ चन्द्रकुवर की वार्ता × ”

५७६२ गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३ गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४ गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५३ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीए

१ यशोधरकथा छुपालचन्द्र काला हिन्दी २० काल १७७५

२ पद व स्तुति × ” ”

विशेष—छुपालचन्द्रजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५ गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । आ० ६×४३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१ पद्मावतीसहस्रनाम × संस्कृत

२ द्रव्यसंग्रह × प्राकृत

५७६७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ पूजासंग्रह ×

संस्कृत

२ अणुसाराण	अणुसाराण	द्विती
३ अणुसाराण	"	"
४ अणुसाराण	"	"
५ अणुसाराण	"	"

३०८८ गुरुका सं० २८ । पृष्ठ सं २३६ । का ३०४६, ६ । मे काण X । पूर्ण ।

दिले—००६ के विषय का उल्लेखनीय है ।

१ अणुसाराण	अणुसाराण	अणु
२ अणुसाराण	अणुसाराण	"
३ अणुसाराण	अणुसाराण	"
४ अणुसाराण	अणुसाराण	"
५ अणुसाराण	अणुसाराण	द्विती

३०९६ गुरुका सं० ३६ । पृष्ठ सं २३२ । का ३०४६, ६ । मे काण ० (अणुसाराण अणु)

६ । पूर्ण ।

१ अणुसाराण	X	द्विती
२ अणुसाराण	अणुसाराण	"
३ अणुसाराण	अणुसाराण	"
४ अणुसाराण	X	" २ का सं ३ ३३ मे का सं ६ ३३

अणुसाराण अणुसाराण के अणुसाराण की की ।

५ अणुसाराण	X	द्विती
६ अणुसाराण	अणुसाराण	"

३०९९ गुरुका सं ३९ । पृष्ठ सं १ । का ३०४६, ६ । मे काण X । पूर्ण ।

१ अणुसाराण	X	अणु
२ अणुसाराण	अणुसाराण	द्विती
३ अणुसाराण	अणुसाराण	"
४ अणुसाराण	"	"

५ नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

१५

५७७१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६०-११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७७२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५३×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ वक्कावत्तीसी	×	हिन्दी
२ पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३ विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४ शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ पाशाकेवली (अवनद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३ स्यामवत्तीसी	×	"
४ पाशाकेवली	×	"

५७७४ गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५ गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९४० ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बचूलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ जैनशतक	सूधरदास	हिन्दी
२ सबोधपचासिका	द्यानतराय	"
३ पद-संग्रह	"	"



२७५८ गुडका स ३० । पत्र नं २६ । पा ३२×३२ इ । जाला-हिन्दी संस्कृत । ले कल × । पूर्ण ।

विशेष—युक्तियों तथा श्लोकों का संग्रह है ।

२७५९ गुडका स ३१ । पत्र स ११६ । पा ८२×९६ इ । जाला-हिन्दी । ले कल ६ १८११ । पूर्ण ।

विशेष—तन्त्र पीठा से यामी के जाला में प्रतिमिति की थी ।

१ कुशलपत्रपीठी	बहादुरजाल	हिन्दी	
२ अंशुसिद्धि	हर्षकवि	"	८ का स १७ न. कल १८११
३ मोक्षविशेषकमुद्र	जगदीशजाल	"	
४ मन्त्रपत्रपीठ	जालपत्र	"	
५ युक्तसंग्रह	×	"	
६ मन्त्रामृतोप ( मंत्र संहिता )	×	संस्कृत	ले का स १८११
७ अक्षरपत्रिका कला	×	हिन्दी	ले का स १८११

२७६० गुडका स ४ । पत्र स २ । पा ३२×४४ इ । ले कल × । पूर्ण ।

१ मन्त्रसिद्धिसंग्रह
 × | हिन्दी |  |

२ आनुवंशिकसंग्रह
 × | " |  |

२७६१ गुडका स ४१ । पत्र स २ । पा ७२×८२ इ । जाला-हिन्दी संस्कृत । ले कल × । पूर्ण ।

विशेष—श्रीशिव शंकरजी का चित्र है ।

२७६२ गुडका स ४२ । पत्र स १२ । पा ८२×९६ इ । जाला-संस्कृत हिन्दी । विष्णु-युवा पत्र । ले कल × । पूर्ण ।

विशेष—मनीषाजाल इव जालावितानमिष्ट है ।

२७६३ गुडका स ४३ । पत्र स १ । पा ९०×९६ इ । जाला-हिन्दी । विष्णु-कला व ११ । ले कल × । पूर्ण ।

विशेष—द्विभार एवं अक्षरपत्रिका कलाओं तथा श्लोकों का संग्रह है ।

२७६४ गुडका स ४४ । पत्र स ९ । पा ९०×९६ इ । ले कल स १९२९ आनुवंशिक संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—श्लोकसंग्रह है ।

५७८५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । मा० ८५५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ नित्यपूजा	×	हिन्दी सस्कृत
२ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"
३ जिनसहस्रनाम	भाषाधर	सस्कृत

५७८६ गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । मा० ४५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो तथा स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । मा० ६५४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा

७ । पूर्ण ।

१ भर्तृहरिसातक	भर्तृहरि	सस्कृत
२ वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३ सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य	ले० काल सं० १७३१ "

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । मा० ६५४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ वारहखंडी	सूरत	हिन्दी
२ कवकावत्तीसी	×	"
३ वारहखंडी	रामचन्द्र	"
४ पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९ गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । मा० ८५५६ इ० । भाषा हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७९० गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । मा० १०३५७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१ सातिनायस्तोत्र	मुनिभद्र	सस्कृत
२ स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"



१ एनीयावलीकवापा	बुधरवाद्य	हिन्दी
४ सदीयपञ्चाङ्गिकावापा	बामठराम	"
५ निर्वालिफलयगामा	×	मार्घ
६ नीलपद्यक	बुधरवाद्य	हिन्दी
७ सिद्धपुत्रा	पायलवार	संस्कृत
कडुगामाङ्गिक वापा	महामन्त्र	"
८ बाल्यटीपुत्रा	दुधिरपद्यक	"

२०६१ गुह्यका सं ३१ । पत्र सं १४ । मा १३×४२ ह । ले काल सं ११७ नील कुटी ।  
पूर्य ।

विशेष—विमलनाल वाचसा मे इतिनिधि की की ।

१ विद्याहायलीकवापा	×	हिन्दी
२ रथवाचलार्थक	×	"
३ वाचसाकी के मन्दिरे की रथवाचा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथवाचा सं ११२ फलपुत्र कुटी न संकलवार की हुई की ।

२०६२ गुह्यका सं ३२ । पत्र सं ११९ मा १×२२ ह । वापा—संस्कृत हिन्दी । ले काल सं १२९ । पूर्य ।

विशेष—युवा स्तोत्र न पर सद्य है ।

२०६३ गुह्यका सं ३३ । पत्र सं ७० । मा १×७ ह । वापा—संस्कृत हिन्दी । ले काल × ।  
पूर्य ।

विशेष—युवा पठ सद्य है ।

२०६४ गुह्यका सं ३४ । पत्र सं ३ । मा १×२२ ह । वापा—हिन्दी । ले काल सं १७४  
मन्दीर कुटी । पूर्य । नील कीर्ति ।

विशेष—विमलनाल राजी ( ब्रह्मरामपत्र ) एवं अन्य बामन्त्र पठ है ।

२०६५ गुह्यका सं ३५ । पत्र सं ७-१२७ । मा १×२२ ह । ले काल × । पूर्य ।

विशेष—कुटी मे बुद्धा ब्रह्मराम मन्त्रक ( बगारपीराम ) तथा वर्धनीवा वापा ( बर्धनीराम )  
पठ है ।

५७६६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४<sup>३</sup> इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कवर बल्लराम के पठनार्थ प० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१ नीतिशास्त्र	चारुण्य	संस्कृत
२ नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३ कवित्त	×	"

५७६७ गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६८ गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६<sup>३</sup>×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६९ गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाभो का संग्रह है ।

५८०० गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ६×६<sup>३</sup> इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१ गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४<sup>३</sup> इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है । पुट्टो के दोनों ओर गणेशजी एव हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६<sup>३</sup>×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

५८०४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३<sup>३</sup>×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदो का संग्रह है ।

५८०६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४<sup>३</sup> इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

## घ भण्डार [ दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर ]

३८०० गुडका सं० १। पत्र घ १६९। भा १५×४२ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से पत्र सं० १७३२ पीप। पूर्ण। से सं० ७४७।

विषय—शासन में मसुर्बंद के मुसबे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

३८०१ गुडका सं० १। तपस्वियों ९ फौजदरवाली। पत्र सं० १४८। भा ४४×११। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से पत्र ×। पूर्ण। से सं० ७४८।

विषय—शासनकी के पुत्र सेवामयजी पाटली के पठनार्थ लिखा गया था—

१. किलिमियन के शीशे	×	हिन्दी	से पत्र सं० १५२७
२. पुस्तक व मिला पाठ संग्रह	×	संस्कृत	से पत्र सं० १५२९
३. कुम्हरी	×	हिन्दी	१. विषयों है।
४. शासनपत्र	मयीहरवा	"	"
५. शैलपत्र	×	संस्कृत	"
६. पत्रावली के १६ सन्ध	×	हिन्दी	"
७. पत्रिकापत्र की तथा	×	"	"
८. पत्रकार संन पत्र	×	"	"
९. पत्र संकलित वा खीरा	×	"	"
१०. तपुसापत्रिका	×	"	"
११. पत्रावली	×		से पत्र सं० १५९९
१२. जैन पत्रिका की पत्र	×	"	"

३८०२ गुडका सं० २। पत्र सं० ३७। भा १५×४२ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पुजा पत्रिका। से पत्र ×। पूर्ण। से सं० ७४९।

३८०३ गुडका सं० ३। पत्र सं० ९६। भा ४४×११ इ। भाषा—हिन्दी। विषय—पत्र पत्रिका। से पत्र ×। पूर्ण। से सं० ७५०।

३८०४ गुडका सं० ४। पत्र सं० १२५। भा १२×४२ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से पत्र ×। पूर्ण। से सं० ७५१।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ समग्र है

५८१७ गुटका स० ६ । पत्र स० १५१ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ मे आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३ गुटका स० ७ । भा० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५३ ।

५८१४ गुटका स० ८ । पत्र स० १३७ । भा० ७३×५३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५४ ।

५८१५ गुटका स० ९ । पत्र स० ७२ । भा० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५५ ।

५८१६ गुटका स० १० । पत्र स ३५७ । भा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५६ ।

५८१७ गुटका स० ११ । पत्र स० १२८ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५७ ।

५८१८ गुटका स० १२ । पत्र स० १४९-७१२ । भा० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठों का समग्र है—

१. दर्शनपञ्चीसी	×	हिन्दी
२ पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३ मोक्षपैठी	बनारसीदास	"
४ पञ्चमेरुजयमाल	×	"
५. साधुवदना	बनारसीदास	"
६ जखठी	भूषरदास	"
७ गुरामञ्जरी	×	"
८ लघुमगल	रूपचन्द्र	"
९ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

१	सहस्रिधरचैयाम्बर बरनमाल	भेमा बरनवतीरास	११	८ वं १७१२
११	बाईव परिचर	बुधरास	११	
१२	निर्वाहिलसत्र शर्या	भेमा बरनवतीरास	११	८ वं १७११
१३	बाण्ड भावना	"	११	
१४	एनीमालस्योप	बुधरास	११	
१५	नंदन	विमोदीमाल	११	८ वं १७१२
१६	बज्जर्मनम	कृष्णर	११	
१७	ब्रह्मादेस्योप शर्या	बरनमाल		
—१८	स्वर्नमुक्त बर्येण	×	११	
१९	कुर्वेवस्वस्व बर्येण	×	११	
२	समस्यारस्योप शर्या	बनारतीरास		९ वं १७११
११	बज्जर्मनमुखा	×	११	
१२	एनीमालस्योप	बाविराज	बनार	
१३	स्वर्नकुलीन	सर्वतम्याधर्म	११	
१४	विभवहृत्तलाप	धाकावर	११	
१५	दिवस्यस्योप	सर्वतम्याधर्म		
१६	बहुविधालिनीर्णकुर मुक्ति	धन	दिल्ली	
१७	बौध्मीतठाला	द्विचक्राधर्म	धाका	
२	स्वर्नहृति भावा	×	दिल्ली	

१७१६. सुदृका छ १३। पव वं २३। या १२०२२ द । माला-दिल्ली बनार । के माल ×  
 मुर्त। के वं ७२२।

विशेष—पुवा पत्र के प्रसिद्धि लघु बर्येण उजनीति की है ।

१७२. सुदृका छ १४। पव वं ×। या १०२२ द । माला-दिल्ली । के माल ×। मुर्त  
 के वं ७६।

विशेष—पञ्चादिकाल माला कीका प्रसिद्धि है ।

१७२१ सुदृका छ १५। पव वं १-१७४। या १२०२२ द । माला-दिल्ली बनार । विभव-  
 पुवा पत्र। के माल ×। मुर्त। के वं ७११।

५८२० शुद्धका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । छा० ६ $\frac{१}{२}$  × ४ इ० । भाषा-हिन्दी मधुन । विषय-पूजा पाठ । नि० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७६२ ।

५८२३ शुद्धका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । छा० ८ $\frac{१}{२}$  / ७ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी । नि० काल सं० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह शुद्धका बमना निवासी प० दीनलालजी के स्वयं के पढ़ने के लिए पाश्चात्य प्रणाली में लिखवाया था ।

क्र. सं.	नाटकनाम	व्यक्ति	हिन्दी	अपूर्णा सं०
१	नाटकनामसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-८१
२	बनारसीखिलास	"	"	८२-१०३
६	सौर्षभूर्गों के ६२ स्वान	×	"	१६६-२००
४	पदेनवालां की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	/	"	२०१-२३०

५८२४ शुद्धका सं० १८ । पत्र सं० १-२११ । छा० ६ $\frac{१}{२}$  × ६ इ० । भाषा-हिन्दी मधुन । विषय-पूजा पाठ । नि० काल > । अपूर्णा । वे० सं० ७६४ ।

५८२५ शुद्धका सं० १९ । पत्र सं० ६७ । छा० ८ $\frac{१}{२}$  × ६ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी मधुन । विषय-स्तोत्र नि० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—गामाय स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६ शुद्धका सं० २० । पत्र सं० १६४ । छा० ८ × ११ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी मधुन । विषय-पूजा स्तोत्र । नि० काल > । अपूर्णा । वे० सं० ७६६ ।

५८२७ शुद्धका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । छा० ६ × ३ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा- / । विषय-पूजा पाठ । नि० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—शुद्धका पानी में सीगा हुआ है ।

५८२८ शुद्धका सं० २२ । पत्र सं० ६६ । छा० ७ × १३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । नि० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

## छ भयडार [ दि० जैन मन्दिर गांधी का जयपुर ]

अन्व०. गुरुसंघ सं १। पत्र सं १७। भा २५२.६। पत्रा दि० १०/११/२१। तै काल X।  
पृष्ठ। सं १३२।

विदेव-भूमा एव स्तोत्र संघर्ष है। बीच के धर्मशास्त्र पत्र पत्रे एवं पत्रे हुए हैं। कुछ पत्रों का संघ  
निम्न प्रकार है।

१. मेरीपारपत्र	भुविपत्रपरीति	हिन्दी	१२-१३
२. मेरीपार की रीति	अनुसूची	"	१४-२२
३. पत्रिकासंघ	"	"	२३-२४
४. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	X	"	२५-२६
५. विवेकसंग्रह	विषयसंग्रह	"	२७-२८
६. पत्रपुस्तिका	पुस्तिका	"	२९-३०
७. पत्रपुस्तिका	पत्रपुस्तिका	"	३१-३२
८. पत्रपुस्तिका	पत्रपुस्तिका	"	३३-३४
			तै काल सं १९९९ पत्र पुस्तिका ३५
९. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	हिन्दी	३६-३७
१०. मेरीपार का विवेकसंग्रह	भुविपत्रपरीति	हिन्दी	३८-३९

अन्व०. गुरुसंघ सं २। पत्र सं २१। भा २५३.६। पत्रा-हिन्दी। विषय-संघर्ष। तै  
काल X। पृष्ठ। सं १३२।

१. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	हिन्दी	४०-४१
२. पत्रपुस्तिका	X	"	४२-४३

अन्व०. गुरुसंघ सं ३। पत्र सं २४-२५। भा २५४.६। पत्रा-हिन्दी। तै काल X। पृष्ठ।  
सं १३३।

१. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	हिन्दी	४४-४५
२. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	"	४६
३. श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री	"	४७-४८

४ चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न

×

हिन्दी

५२-५४

इन्के अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२ गुटका सं० ४। पत्र सं० ७४। भा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।

अपूर्णा। वे० सं० २३४।

विशेष-प्रायुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३ गुटका सं० ५। पत्र सं० ३०-७५। भा० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७६१ माह सुदी ५। अपूर्णा। वे० सं० २३४।

१. आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	अपूर्णा	३०-३२
२ सप्तव्यसनकवित्त	×	"		
३ पार्श्वनाथस्तुति	बनारसीदास	"		
४ अठारहनाते का चौबाला	लोहट	"		

५८३४ गुटका सं० ६। पत्र सं० २-४२। भा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०

काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २३४।

विशेष-शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५ गुटका सं० ७। पत्र सं० १२-६५। भा० १०३×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २३५।

१ चाणक्यनीति	चाणक्य	संस्कृत	अपूर्णा	१३
२ साली	फबीर	हिन्दी		१३-१६
३ ऋद्धिमन्त्र	×	संस्कृत		१६-२१
४ प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं व्रतों का चित्र सहित वर्णन		हिन्दी		६५

५८३६ गुटका सं० ८। पत्र सं० २-१६। भा० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २६७।

१ बलभद्रगीत	×	हिन्दी	अपूर्णा	२-६
२. जोगीरासा	पाडे जिनदास	"		७-११
३ कक्कानत्तीसी	×	"		११-१४
४ "	मनराम	"		१४-१८
५ पद- साधो छोडो कुमति अकेली	विनोदीलाल	"		१८
६ " रे जीव जगत सुननो जान	छीहल	"		२०



७.	७ मलय पुत्र बरुही में बरुणी	कनकनीति	"	१०-११
८.	बुहरी- हो मुन बीच बरुण ह्यारी का	बभ्रवन्ध	"	११-११
९.	परमाद्य बुहरी	X	"	११-११
१०.	बभ्र- बधि बीचबधि के बभ्रवानी	बभ्रवन्ध	"	११
११.	७ बीच द्विज वैद्य से प्यारी	बुध्वर	"	११
१२.	७ बीच वैदे बिल्वर काज मयी	X	"	११
१३.	७ बीच का तु बलछे इल बीच	X	"	११
१४.	७ बरुणत बुध बरुणी बानी बभ्र मली	बभ्रवन्ध	"	११-११
१५.	७ बिर वैद्य बभ्रिद्र काज्या	X	"	११
१६.	परमात्मवस्तोम	बुध्वरवन्ध	मस्तु	११-११
१७.	बभ्र- बभ्र बभ्रिद्र मीमि पोषर बी	बभ्रवन्ध	द्विषी	११
मस्तिक पुत्रल कीरो				
१८.	७ बिर ठे मरुण बोही बीमी	मरुण	"	११
१९.	७ बभ्रिद्रा पाव बभ्रिद्र बई	"	"	
२०.	७ बनी कभी है बभ्रिद्र हीनी मेनीमुर			
	द्विज वैसीमी	बभ्रवन्ध		
२१.	७ बनी मनी बी बी बभ्रिद्र	"	"	११
२२.	७ बाबुटी बिरवनी बुन है बाबुटी	"	"	११-११
२३.	७ द्विज वैसी मला को बभ्रिद्र	बुनि बुनवन्ध	"	११-११
२४.	बभ्र-	"	"	११-११
२५.	"	"	"	११-११
२६.	७ हलदी बहोमी ठेन बहोमी काज			
	बुनमि का	"	"	११-११
२७.	७ बी बधि बभ्रिद्र काको बीच बीमी बोहीमा		"	११-११
२८.	काज बभ्र		"	११-११

५८३८. गुटका स० १० । पत्र स० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय-सग्रह । ले० काल × । वे० स०

२६६ ।

१ जिनपच्चीसी	नवल	हिंदी	१-२
२ सवोधपचासिका	द्यानतराय	”	२-४

५८३९. गुटका स० ११ । पत्र स० १०-६० । आ० ५३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

वे० स० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है ।

५८४० गुटका स० ११ । पत्र स० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० काल × । वे० स० ३०१ ।

५८४१. गुटका स० १२ । पत्र स० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०२ ।

५८४२ गुटका स० १३ । पत्र स० ६-१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० स० × । अपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

५८४३ गुटका स० १४ । पत्र स० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

५८४४ गुटका स० १५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल

स० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३०५ ।

विशेष—इललाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है ।

छोटी २ कहानिया हैं ।

५८४५ गुटका स० १६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०६

विशेष—रामचन्द्र ( कवि बालक ) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६ गुटका स० १७ । पत्र स० ३-२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० स० ४०७ ।

१ देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२ धूलभद्रजी का रासो	हिन्दी	१०-२१
३ नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	”	२१-६६

२७७७ गुरुका सं १८। पत्र सं १६। पा २२×१६। ले बल ×। पूर्ण। रे सं १०८  
विशेष—पत्र सं १ में ३८ तक सामान्य गार्डों का बण्ड है।

१. सुन्दर गुरुवार	बन्धियकसुन्दर	दिल्ली	१७४ पत्र है ११-८
२. विद्यापीठजर्नल टीका सहित	×	"	पूर्ण ११-२२ ७४ पत्रों की ही टीका है।
३. बख्त विमल	×	"	१६-११
४. गुरुधर्मदर्शनसंग्रह	बन्धि भोपीताल	"	१४ ११०

विशेष—पत्र सं १ में ३८ तक सामान्य गार्डों का बण्ड है।

इस भी बख्तवाहू बुकबन्दनकरवासी राजपुत्रा बख्तवाहू धारण करते बन्धि भोपीताल विरचिते बख्त  
विमल विमल बर्तनों नाम तृतीय विमलः।

पत्र सं-२६ नामक बन्धिया बण्ड।

इस भी बख्तवाहू बुकबन्दनकरवासी राजपुत्रा बख्तवाहू विद् धारण करते भोपीताल बन्धि विरचिते  
बख्तविमलसंग्रहबर्तनों नामक तृतीय विमलः।

२७७८ गुरुका सं १६। पत्र सं २४। पा २५×१६। जगता-दिल्ली। ले बल ×। पूर्ण।  
रे सं ३६।

विशेष—बुधवारण इत बन्धियुक्त बन्धि है पत्र पीछे है किन्तु बन्धिय है।

२७७९ गुरुका सं २। पत्र सं ११। पा १५×१६। जगता-दिल्ली। ले बल ×। पूर्ण।  
रे सं ३१।

१. बन्धियकसुन्दर	बन्धियुक्त	दिल्ली	११
२. बन्धियकसुन्दर बुधवार की बुक	×	"	१६
३. बन्धियकसुन्दर	×	"	११

२७८० गुरुका सं २ (ब)। पत्र सं ११। पा १५×१६। जगता-दिल्ली। ले बल ×।  
पूर्ण। रे सं ३१।

२७८१ गुरुका सं २१। पत्र सं १। पा २२×१६। ले बल सं १११० बख्त बुध  
१। पूर्ण। रे सं ३१।

विशेष—बख्तवाहू के बख्तव बन्धियुक्त विरचिते बख्त बुध है।

## गुटका-समूह

५८५२ गुटका स० २२ । पत्र स० १६ । भा० ११×३ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३१४ ।

१	वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमासा	X	हिन्दी	६
२	सीताजी का वारहमासा	X	"	६-१२
३	मुनिराज का वारहमासा	X	"	१३-१६

५८५३ गुटका स० २३ । पत्र स० २६ । भा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा ।  
ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३१५ ।

विशेष—गुटके मे अष्टाह्निकाप्रतकथा दी हुई है ।

५८५४ गुटका स० २४ । पत्र स० १५ । भा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल  
स० १६८३ पीप बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३१६ ।

विशेष—गुटके मे ऋषिमठलपूजा, अनन्तप्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठो का समग्र है ।

५८५५ गुटका स० २५ । पत्र स० ३५ । भा० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल  
X । पूर्ण । वे० स० ३१७ ।

विशेष—अनन्तप्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है ।

५८५६ गुटका स० २६ । पत्र स० ५६ । भा० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल  
स० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

५८५७ गुटका स० २७ । पत्र स० ५३ । भा० ६×५ इ० । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वे०  
स० ३१९ ।

विशेष—गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

१	धर्मचाह	X	हिन्दी	२
२	वदनाजसुधी	निहारीदास	"	३-४
३	सम्मदेशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका स० २८ । पत्र स० १६ । भा० ८×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३२० ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है ।

५८५९ गुटका स० २९ । पत्र स० १७६ । भा० ९×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३२१ ।

विशेष—विहारीदास कृत सतसई है । दोहा स० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों मे ही अर्थ है टीका-  
काल स० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । भादि मन्तभाग निम्न है —

प्रारम्भः—

अथ विहाटी बतनई दीवा बरित बंध निरूप्ये —

मेरी बर बाबा हरी राधा नामरी होर ।

बालन को बरि बरे, ब्याम हरित कुति होर ॥

टीका—अथ अथनाथरन हे वहां की राधा बू की स्तुति प्रथम बतलौ बरि बरतु है । वहां एका बरि बरे बंधे जा एन को बरि बरे ब्याम हरित कुति होर का बर तें की बृजनाथ सुभा की प्रतीति हई—

बरित—

बारीब्रमा अथनोवत ही तिहु लोक की सुन्दरता बहि बरि ।

हृष्य बई बरबी बई बरिनि की मानु ब्रह्म मुच बंधन बरत ॥

बालन की बरनई बरनई हरित कुति ब्याम की होत विहाती ।

की बृजनाथ मु बरि बरतु की सुभा हरी बर बाबा हकारी ॥ १ ॥

अन्तिम बरत—

बानुर विनु, बकीर पुन लहरी हृष्य बरि बरत ।

बैरकु ही लव बरिनु की बरनु, बनुपुटी बरत ॥ २४ ॥

राधा बालन बरि हृष्य बर बरयो हरा के बर ।

बानि बरिनि बिरदा हरी दीवी बरिनि बरार ॥ २३ ॥

एक बिबा बरि की सुनि बही बही बरि बरत ।

दीदा दीदा बरि बरी बरित कुति बरबत ॥ २६ ॥

बरने हू बरे बर दिव में हू ली बिबाक ।

बरी बरबत बरि की बर बरि बनुबार ॥ २७ ॥

बे बीने बुरर बरिनु बरत बर बर बनुबार ।

बिरहि बरिनि बरे बरिनि की बरि बरे बनुबार ॥ २ ॥

बरिनि हू बरने दिवें बिबो बर बर बरबत ।

बुरि की बरबत बरने दिव में बरे हृष्य ॥ २६ ॥

बरे बरन की बीदा मु बरि बिराटीबत ।

बर बरिनि बरि बरि बरि बरि बरिबत ॥ ३ ॥

बरी बरिनि बरिनि बरि बरि बरि ॥ ३६ ॥

बरी बरिनि बरि बरि बरि बरि बरि ॥ ३७ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।  
करै सातसौ कवित में सीखै सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥  
मै अत ही दीज्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ ।  
भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि वनाइ ॥ ३३ ॥  
सग्रह सतसै भागरे असी वरस रविवार ।  
कातिक वदि चोधि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥  
इति श्री विहारोसतसई के दोहा टोका सहित संपूर्ण ।

सतसै ग्रथ लिख्यो श्री राधा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कौं । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी  
भोजे अजनगीई के प्रगने पछोर के । मिति माह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७६० मुकाम प्रवेश जयपुर ।

५८६०. गुटका स० ३० । पत्र स० १६८ । भा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० ३५२ ।

१ तत्वार्थसूत्रभाषा कनककीर्ति हिन्दी ग० अपूर्ण  
२ शालिभद्रचोपई जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर ,, प० २० फाल १६७८ ,,  
ले० काल स० १७४३ भाद्रवा सुदी ४ । अजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

स्फुट पाठ × ,,

५८६१ गुटका स० ३१ । पत्र स० ६० । भा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । ले०  
काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२३ ।

विशेष—पूजाप्रो का सग्रह है ।

५८६२ गुटका स० ३२ । पत्र स० १७४ । भा० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० स० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन) के हैं ।

५८६३ गुटका स० ३३ । पत्र स० ७५ । भा० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० स० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४ गुटका स० ३४ । पत्र स० ८६ । भा० ६×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल स० १८६१  
भावण सुदी ११ । वे० स० ३२६ ।

विशेष—जीवीस तीर्थंकर पूजा ( रामचन्द्र ) एव स्तोत्र सग्रह है । हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि  
की थी ।



१८६६. गुप्तका सं ३२। पत्र सं १७। मा ६५७ द। जाला-द्विती। के फल X। पूर्ण।  
 के सं ३१७।

विशेष—वावापरि सीमापरि पूजा है।

१८६७. गुप्तका सं ३३। पत्र सं ७। मा ५०२२ द। जाला-द्वितीय। विश्व पूजा पत्र सं  
 ज्योतिषपत्र। के फल X। पूर्ण। के सं ३२५।

१. ब्रह्मगीतकाष्ठ पूजा X संस्कृत

२. वाग्देवकीर्ति छापन वाग्देव "

३. वाग्देवकीर्ति X संस्कृत ज्योतिष

१८६७. गुप्तका सं ३७। पत्र सं १। मा ७५६ द। जाला-द्वितीय। के फल X। पूर्ण।  
 के सं ३२६।

१८६८. गुप्तका सं ३८। पत्र सं २५। मा ६५४ द। जाला-द्वितीय। के फल X। पूर्ण।  
 के सं ३३।

विशेष—पुस्तकों का संग्रह है। एनी में प्रकाशित पुस्तकों की गणनी हुई है।

१८६९. गुप्तका सं ३९। पत्र सं ४४। मा ६५४ द। जाला-द्वितीय। के फल X। पूर्ण।  
 के सं ३३१।

विशेष—देवविष्णुना वाग्देव की हुई है।

१८७०. गुप्तका सं ४०। पत्र सं ५। मा ४५५ द। जाला-द्वितीय। विश्व वाग्देव। के  
 फल X। पूर्ण। के सं ३३२।

विशेष—वाग्देव के बुद्धके दिने हुए हैं परासी के कुलों का वर्तन को है।

१८७१. गुप्तका सं ४१। पत्र सं ७१। मा ७५२२ द। जाला-द्वितीय। के फल X।  
 पूर्ण। के सं ३३६।

विशेष—पूजा पत्र संग्रह है।

१८७२. गुप्तका सं ४२। पत्र सं ६। मा ७५२२ द। जाला-द्वितीय। के फल X।  
 पूर्ण। के सं ३३४।

विशेष—विश्व क्षेत्र के बीच क्षेत्रों की पूजा एवं पहाड़ी क्षेत्र पूजा का संग्रह है। दोनों ही पूर्ण हैं।

बीहरी जाला के प्रतिनिधि की को।

५८७३ गुटका सं० ४३। पत्र सं० २८। भा० ८३×७७ ६०। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३५।

५८७४ गुटका सं० ४४। पत्र सं० ५८। भा० ६×५५ ६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३६।

विषय—हिन्दी पद एवं पूजा समूह है।

५८७५ गुटका सं० ४५। पत्र सं० १०८। भा० ८३×३३ ६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३७।

विषय—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयम्स्तोत्र, दशानशरण, सोलहवारण मादि का समूह है।

५८७६ गुटका सं० ४६। पत्र सं० ५५। भा० ८×५५ ६०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय पूजा पाठ सं० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३८।

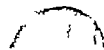
विषय—तत्त्वार्थसूत्र, ह्याविधि, सिद्धपूजा, पार्वपूजा, सोलहवारण दशानशरण पूजाए हैं।

५८७७ गुटका सं० ४७। पत्र सं० ६६। भा० ७×५५ ६०। भाषा हिन्दी। विषय—कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३९।

१. जेष्ठजिनवरकथा	गुणालपत्र	हिन्दी	१-६
			२० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ९
२ भादित्यप्रतकथा	"	हिन्दी	६१-१९
३ सप्तपरमस्थान	"	"	१९-२६
४ मुमुक्षुसमीप्रतकथा	"	"	२६-३०
५ दशानशरणप्रतकथा	"	"	३०-३४
६ पुण्याञ्जलिप्रतकथा	"	"	३४-४०
७ रक्षाविधानकथा	"	संस्कृत	४१-४५
८ उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६-६६

५८७८ गुटका सं० ४८। पत्र सं० १२८। भा० ६×५५ ६०। भाषा—हिन्दी। विषय—अभ्यास। २० काल सं० १६९३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४०।

विषय—नतारसीदास वृत्त समयसार नाटक है।





२८५६ गुरुका सं ४२। पत्र सं ४२। मा २७२६। माता-हिन्दी संसूत। ले पत्र X। पूर्ण। के सं ३४१।

विशेष—गुरुके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	वीरकण्ठ	सूक्तपत्र	हिन्दी	१-११
२	शुद्धिपत्रसंस्तीक	वीरपत्रावी	संस्कृत	१४-२
३	अनन्तवतीवी	सन्तराज	"	ले पत्र (संभव ३४-४१)

२८५७ गुरुका सं २०। पत्र सं २२४। मा २७२६। माता-संस्कृत हिन्दी। विष्णु-पुत्रा पाठ ले पत्र X। पूर्ण। के सं ३४२।

२८५८ गुरुका सं २१। पत्र सं १९३। मा ७२×४२। माता-हिन्दी संसूत। ले पत्र सं (संभव २)। पूर्ण। के सं ३४३।

विशेष—गुरुके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं।

१	सप्तशतिकासंस्तीक	×	प्रकृत	१-२
२	वीरविचार	मा	वैदिकपत्र	"
३	सप्तशतिकासंस्कृत	×	"	२-१४
४	वीरविचारसंस्तीक	×	हिन्दी	१२-१४
५	संस्कृत वीर विचार	×	"	१६-२३

विशेष—

माता की कर्माटी पुस्तिका परे पत्र बाह।

गुरु की कर्माटी वीर वीर वीर पत्र मे ॥

विष्णु की कर्माटी मानसो सप्त होय।

हीरा की कर्माटी है वीरवीर के पत्र मे ॥

सुल को कर्माटी धारत अनन्त बाधि।

सोले की कर्माटी सप्तशत के सप्त मे ॥

सुई विष्णुव वीर वीर वीर वीर वीर।

सप्त की कर्माटी है सुल के वीर मे ॥

२	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	”	११७-१४१
			२० काल स० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल स० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ ।	
३	गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४	पार्श्वनाथस्तोत्र	×	, ले० काल १८८१	१४६-१४७
५	कृष्णपञ्चोसी	विनोदीलाल	” ” ” १८८२	१४७-१४४
६	तेरापन्य वीसपन्य भेद—	×	”	१५५-१६३

५८८ गुटका स० ५२ । पत्र स० ३५ । भा० ७३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८६

कार्तिक सुदी १३ । वे० स० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८९ गुटका स० ५३ । पत्र स० ८० । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९० गुटका स० ५४ । पत्र स० ४४ । भा० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० स० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

५९१ गुटका स० ५५ । पत्र स० २० । भा० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४७ ।

५९२ गुटका स० ५६ । पत्र स० ६८ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४८ ।

५९३ गुटका स० ५७ । पत्र स० १७ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय प्रतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

५९४ गुटका स० ५८ । पत्र स० १०४ । भा० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५९५ गुटका स० ५९ । पत्र स० १२६ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—रत्नविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

१८२३ गुरुका सं० ६०। पत्र सं ११३। मा ४×३६। माया-संग्रह हिन्दी। के कल X।  
पुर्त। के सं ३२२।

विशेष—यूज स्टोन एवं बमारकी विज्ञान के मुद्रण पर एवं पाठ है।

१८२१ गुरुका सं० ६१। पत्र सं २२३। मा ४×३६। माया-संग्रह हिन्दी। के कल X।  
पुर्त। के सं ३२३।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१८२२ गुरुका सं० ६२। पत्र सं २२४। मा ४×३६। माया-संग्रह हिन्दी। के कल X।  
पुर्त। के सं ३२४।

विशेष—सायल्य स्त्रीय एवं पूजा पाठों का संग्रह है—

१८२३ गुरुका सं० ६२। पत्र सं २२३। मा ६२×३६। माया-हिन्दी के कल X। पुर्त।  
के सं ३२२।

विशेष—विन्य पाठों का संग्रह है।

१. हनुमत्पठ	बहारमन्त्र	हिन्दी	१४-२७
		के कल सं १९	अष्टम पुर्त।
२. बालिकाउपनिषद्	X	हिन्दी	२७-२९
३. बालिकाउपनिषद् की बरत	X	"	१ (१-१४)
		के कल १ २९	मह पुर्त।

विशेष—कोरमटी अन्तर्गत पन्नाई मिश्री हनुमत्पिठान्ते।

४. संकटा	X	"	पत्र सं ४४ १४४ १२१
५. बालमुनि की बरत	X	"	१२१-१२४
६. कर्णविद्यादी	विमर्श	"	१२२-१२६
७. गुरुप्रसन्नानिषा टी बरत	X	"	पुर्त। १७०-१७१

१८२४ गुरुका सं ६४। पत्र सं २७। मा ६२×३६। माया-हिन्दी संग्रह। पुर्त। के कल  
X। के सं ३२६।

विशेष—नगमन्त्र विनोदीबाल हठ एवं बर सुदि एवं पूजा संग्रह है।

수업 목적: 본 수업의 목적은 학생들에게 수학적 사고능력을 함양하고, 문제 해결 능력을 키우는 데 있다.

수업 내용:

1. 수의 체계 (자연수, 정수, 유리수, 실수)

2. 연산의 법칙 (덧셈, 곱셈의 교환법칙, 결합법칙)

3. 분수의 연산

4. 소수의 연산 (소수점 이동)

5. 실수의 연산

6. 실수의 크기 비교

7. 실수의 덧셈, 뺄셈, 곱셈, 나눗셈

8. 실수의 제곱근

9. 실수의 제곱근의 성질

10. 실수의 절댓값

11. 실수의 절댓값의 성질

12. 실수의 덧셈, 곱셈의 교환법칙, 결합법칙

13. 실수의 덧셈, 곱셈의 분배법칙

14. 실수의 덧셈, 곱셈의 항등원, 역원

15. 실수의 덧셈, 곱셈의 닫힘성

16. 실수의 덧셈, 곱셈의 항등원, 역원

17. 실수의 절댓값

18. 실수의 절댓값의 성질

19. 실수의 절댓값의 성질

20. 실수의 절댓값의 성질

21. 실수의 절댓값의 성질

22. 실수의 절댓값의 성질

23. 실수의 절댓값의 성질

४३. ० गुटका सं० ७२। पत्र सं १२७। धा ४×३ इ। भावा-बसुठ हिन्दी। ले वल X।  
 पूर्ण। के सं ३९४।

विषय—गुमा पाठ व स्वीम धारि का संवह है।

४३. १ गुटका सं० ७३। पत्र सं १२८। धा ४×३ इ। भावा-संस्कृत हिन्दी। ले वल X।  
 पूर्ण। के सं ३९५।

१ गुमा पाठ संवह	X	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२ धामुन रिक्त गुमके	X	हिन्दी	४२-२६

४३. ४ गुटका सं० ७४। पत्र सं १२९। धा ३<sub>४</sub>×२<sub>३</sub> इ। भावा-हिन्दी। ले वल X। पूर्ण  
 के सं ३९६।

विषय—प्राग्भ में गुमा पाठ तथा गुमके रिक्त हुये हैं तथा प्रत्ये के १० पत्रों में संवह १ ३३ के पाठ  
 के पाठानों का परिचय दिया हुआ है।

४३. ५ गुटका सं ७५। पत्र सं १३०। धा ३<sub>४</sub>×२<sub>३</sub> इ। भावा हिन्दी संस्कृत। ले वल X।  
 पूर्ण। के सं ३९७।

विषय—बाबालय पाठों का संवह है।

४३. ६ गुटका सं० ७६। पत्र सं १-१३०। धा० ७×३<sub>४</sub> इ। भावा हिन्दी संस्कृत। ले  
 वल X। पूर्ण। के सं ३९८।

विषय—प्राग्भ में कुछ मग हैं तथा फिर धामु रिक्त गुमके रिक्त हुये हैं।

४३. ७ गुटका सं ७७। पत्र सं १३१। धा ३<sub>४</sub>×२<sub>३</sub> इ। भावा-हिन्दी। ले वल X। पूर्ण  
 के सं ३९९।

१ कर्मविशामति	कर्मविशामति	हिन्दी	१२६ पत्र है १ ११
२ वल्लभ-विषयवर्ती की भाषणा	कुचरत्न	"	१६-२१
३ कथेद्विद्विद्विगुमा	X	"	पूर्ण १२-१७

४३. ८ गुटका सं० ७८। पत्र सं १३२। धा ६×३<sub>४</sub> इ। भावा-संस्कृत। ले वल X। पूर्ण  
 के सं ४००।

विषय—बाबालया तथा लक्ष्मिधार कथि में ले पाठ है।

५६०६ गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८१ । पूर्ण । वे० सं० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१० गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४-१३६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२ मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३ गर्भपट्टारचक्र	देवनादि	"		८४-६०
४ स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		६०-१०५

एकीभाव, भक्तामर एव भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं ।

५ वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६ पादर्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७ परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०८
८ सामायिक पाठ	भ्रमितिगति	"		११०-११३
९. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१० आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११ समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७३०-भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एव नायिका वर्णन है ।

५६१२ गुटका सं० ८२ । पत्र सं० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का ( १७०१ से १७५६ तक ) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ ।

१ कुम्हाराल	×	हिन्दी	पत्र सं ७२ ई	१-११
			महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।	
२. काशीलासदस्य कथा	×	"		१६-१९
३ कुम्हारमिमांसा	×	"		२१-२

२३.१४ गुरुका सं० ८४। पत्र सं १२२ २४१। मा १ × २३ द। जाला-कंसुल। से पत्र ×।

पत्र सं १७६।

विशेष—बीचक्यार एवं बीचपञ्चम कर्णों का संज्ञक है।

२३.१५. गुरुका सं० ८५। पत्र सं ३ २। मा ४ × २३ द। जाला-हिन्दी। से पत्र ×। पत्र सं

पत्र सं ३७७।

विशेष—दो छुटकों का एक छुटका कर दिया है। गिनत वाक सुन्दरता प्रतीकचयों है।

१ किल्लामहितमयाव	अनुप्रासी	हिन्दी	११ पत्र ई	१०-११
२ शैवि	कीर्तन	"		११-१२
३ टंकुलापीठ	बुधा	"		१२ १
४ किल्लामपीठ	बुधिविद्वान्निधि	"		१०-१
५. विषकाण्ड	ब्रह्मरामयज्ञ	"		१०-११
६. मेरीस्वरपीठका	सिद्धान्ति	"		११ ११
७ पंवीपीठ	कीर्तन	"		४१-४१
८ मेरीस्वर के १ मत्र	ब्रह्मवर्षाधि	"		४१-४७
९. पीठ	कवि पत्र	"		४७-४८
१ शीशंवरसदस्य	अनुप्रासी			४९ २
११ घाकिलास्वरसदस्य	कवि पत्र	"		४९ २
१२. स्तोत्र	म विनयान्न शिव	"		५ -२१
१३ गुरुकर कीर्तन	म याचसेव			२९-४०
			से पत्र सं १६ ७ कानुल पुष्टी २।	
१४ वैष्णवपीठ	पुनी	"		१२-१३
१५. कानुल के १९ मत्र	ब्रह्मरामयज्ञ			१६-२९

१६ चलिभद्र गीत	प्रमयचन्द्र	”	३०-३६
१७ भविष्यदत्त गथा	प्रहारायमल्ल	”	४०-८५
१८ निर्दोषसप्तमीप्रत गथा	”	”	से० काल १६४३ मासोज १३ ।
१९ हनुमंतरास	”	”	प्रपूर्णा

५६१६ गुटका स० ८६ । पत्र स० १८८ । मा० ६५६ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र । से० काल मं० १८४२ भाद्रपद शुद्ध १ । पूर्णा । वे० स० ३७८ ।

५६१७ गुटका स० ८७ । पत्र स० ३०० । पा० ५३५४ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । से० काल × । पूर्णा । वे० स० ३७६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो के प्रतिरिक्त मन्त्रवाद, बनारसोदय तथा विनादीलान प्रादि गविया रूत हिन्दी पाठ है ।

५६१८ गुटका स० ८८ । पत्र स० ५८ । मा० ६५५ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । से० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० ३८० ।

विशेष—भातराम रूत हिन्दी पदा का सग्रह है ।

५६१९ गुटका स० ८९ । पत्र स० २-२६६ । मा० ८५५ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । से० काल × । प्रपूर्णा । वे० स० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ पद्मनमस्तारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२ वारह प्रनुप्रेक्षा	×	प्राकृत ४७ गायार्थे है ।	२१-२५
३ भावनाचतुर्विगति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४ अथ स्फुट पाठ एव पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२० गुटका स० ९० । पत्र स० ३-६१ । मा० ८५५३ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । से० काल × । पूर्णा । वे० स० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदो का सग्रह है ।

५६२१ गुटका स० ९१ । पत्र स० १४-४६ । मा० ८३५३ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । से० काल × । पूर्णा । वे० स० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है ।



३३३० गुटका सं ३२। पत्र सं २१। या १०२६। भाषा-हिन्दी। विषय-पुत्रा। के नाम ×। पृष्ठों। के सं १४।

विशेष—सम्येतिरि पुत्रा है।

३३३१ गुटका सं ३३। पत्र सं १२३। या १०२६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। के नाम ×। पृष्ठों। के सं ३३२।

विशेष—सुख्या विन्म पत्रों का संग्रह है।

१. वेदान्तवर्षित	पैसा भवनटीकास	हिन्दी	११
२. विषयसंग्रहनाम	भाषावर्ष	संस्कृत	११-१२
३. लघुपत्रार्थसूच	×	"	१३-१४
४. श्रीराशि बांठि श्री बयनाम	×	हिन्दी	१६-४
५. शोकाह्वारसूचना	ब्रह्मज्ञानसंग्रह	हिन्दी	४१-४४
६. टलावयकना	"	"	४५-४६
७. धार्मिकवार्ताना	ब्रह्मसूत्र	"	४६-४६
दोहासूचक	कनकस	"	४७-४६
८. वैपरीतिना	ब्रह्मसूत्र	"	४७-४८
९. महाहिना कना	ब्रह्मज्ञानसंग्रह	"	१ १४
११. कानवरा	×	"	१ २-१२३

३३३४ गुटका सं ३४। पत्र सं ७-७८। या १०१२६। भाषा-हिन्दी। के नाम ×। पृष्ठों। के सं ३६।

विशेष—वैपरीति के पत्रों का संग्रह है।

३३३५ गुटका सं ३५। पत्र सं १-२६। या १०२३६। भाषा-हिन्दी के नाम ×। पृष्ठों। के सं ३७०।

१. अतिशयनामना	ब्रह्मसूत्र	हिन्दी	पृष्ठों	१-७
			के नाम सं १७६	वर्षिक सुटी १२
२. ब्रह्मसूत्रना	"	"		७१-८६

३३३६ गुटका सं ३६। पत्र सं १। या १०२६। भाषा-संस्कृत। विषय-वैपरीति। के नाम सं १६६। पृष्ठों। के सं ३७१।

१	नक्तानरस्तोत्र श्रद्धिमयत्रयत्रसहित	मानु गाचार्य	संस्कृत	१-४३
२	पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३	पद्मावतीसदृशनाम	×	"	५२-६३
४	पद्मावतीस्तोत्र बीजमय एव साधन विधि	×	"	६३-८६
५	पद्मावतीपटल	×	"	८६-८७
६.	पद्मावतीदण्डक	×	"	८७-८८

५६२७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० ३८६ ।

१	स्फुटवार्ता	×	हिन्दी	अपूर्णा	६-२२
२.	हरिचन्द्रसतक	×	"	"	२३-६६
३	श्रीगुरुचरित	×	"	"	६७-६३
४	मल्हारचरित	×	"	अपूर्णा	६३-११३

५६२८ गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । भा० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एव तत्त्वार्थमूत्र आदि सामान्य पाठों का समग्र है ।

५६२९ गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । भा० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०  
काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३६१ ।

५६३० गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । भा० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।  
वे० सं० ३६२ ।

१	आदित्यवारकथा	×	हिन्दी		१४-३४
२	पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"		३५
३	सकट चौपई क्या	×	"		३८-४३
४	कक्का बत्तीसी	×	"		४५-४७
५	निरंजन घतक	×	"		५१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पढ़ने में नहीं आती ।



४ नवरत्न कवित्त	वनारसीदास	”	६७-६६
५. ज्ञानपञ्चीसी	”	”	६८-१००
६ पद	×	” प्रपूर्णा	१००-१०१

५६३३. गुटका स० १०३ । पत्र स० १०-५५ । मा० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

प्रपूर्णा । वे० स० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरक्षित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका स० १०४ । पत्र स० ७ । मा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० स० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

## ज भण्डार [ दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर ]

५६३५ गुटका स० १ । पत्र स० १४० । मा० ७१×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	१-१६
२ कवित्तसंग्रह	×	”	२०-४४
३ दानिश्चर की कथा	×	” गद्य	४५-६७
४ कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	”	६८-६४
५ द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	”	६५-६६

ले० काल १८५६ पौष बुदी ५ ।

विशेष—रणायम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६ गुटका स० ० । पत्र स० १०६ । मा० ५×४ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७ गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । मा० ६×५ इ० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
------------------	---	--------	-----

( जिएवर ध्याइयडावे, मनि बित्या फलु पाया )

२ गीत—( जिएवर ह्यो स्वामी घरण मनाय, सरसति स्वामिणि बोनऊ हो )

१ पुनागुमिजपका	×	घाटा घ	७-२६
२ लक्ष्म्यनगाठ	×	हिरी	१४-२१
३ कापार	द्विमेक	काग	४६ १
४ घारापनला	"	"	४१-१
५ हापपागुमेगा	लाभीमेक	"	१ ०-१११
६ वारवनाबलोव	वपमिद	काग	१११-१११
७ कपनकड	घा मेमिवा	काग	१४ ११

२६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं १६६ । घा ६×६ ५ । काग-हिरी । मे कल १ । पत्र

घारा मुदी १६ ।

विषय—विष्णु पत्रों का संकल है ।

१ वारवुपुप	बुनका	हिरी	१-१ २
२ कपनकडपरीव वरुन	×	" १५२	१ ४
३ कपनक बीगा	व कपन	" १५२ घारा ही ३	"

२६३९. गुटका सं० २ । पत्र सं १४ । घा ७×४ ६ । काग-काग ।

विषय—बुका गाठ संकल है ।

२६४. गुटका सं० ६ । पत्र सं २१३ । घा ६×२ ६ । काग-काग । मे कल × ।

विषय—कापन पत्रों का संकल है ।

२ ४१. गुटका सं ७ । पत्र सं २२ । घा ६×७ ६ । काग हिरी । मे कल × । पत्र

विषय—१) द्विमेकपुप हिरीमेगा (काग) का हिरी काग में पत्र रिका हुआ है । काग वक काग व  
दीनी में है । द्विमेक मे काग की पत्रिका नहीं निकल है । कपन में प्रतिक्रिया की गई थी । काग काग है —

घन से ही केवा में पत्र हैं । कपन वक कपन काग वक से ही वकी ।

बोहा—मुदी कल के कल मे पत्र नहीं कल न काग ।

घो वर कपन कल में वकी कपन काग वक ।

काग—काग की काग में ही कपन वकी कपन काग । कपन में ही काग काग वकी वकी काग  
पत्रिका से ही काग वकी । न काग वक काग वकी । काग वकी में वकी वकी । कपन काग के कपन वक काग  
ही कपन वक काग वकी न काग वक काग वकी काग वकी ।

५६४२ गुटका सं० ८ । पत्र सं० १६६-४३० । मा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

मूर्त्तियाँ ।

विशेष—शुलाभीदास वृत्त पाटवपुराण भाषा है ।

५६४३ गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । मा० ७½×६½ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४४ गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । मा० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।

ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्ण ।

१ मुन्दरविलाम मुन्दरदास हिन्दी १ ने ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज मङ्गलवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२ वारहखडी दत्तलाल ”

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५ गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । मा० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल १०

१६०८ चैत बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—वृ दसतसई है जिसमें ७०१ दोहे हैं । दायकत श्रीमनलाल कालव हाल का ।

५६४६ गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । मा० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल न० १६६०

भाषोज बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—पञ्चमेश तथा रत्नप्रय एवं पार्वतीनाथस्तुति है ।

५६४७ गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । मा० ८×६½ इ० । भाषा-तस्युत हिन्दी । ले० काल सं०

१७६० ज्येष्ठ सुदी १ । मूर्त्तियाँ ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमन्दिर भाषा, श्रीपालस्तुति, भठारा नाते का चौडाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ  
स्तुति [ पञ्चमदेव कृत ] पञ्चपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र श्राद्धित्ययार कथा [ भाठकृत ] नयकार रामो, जोगी  
रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति श्राद्धि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नही हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।

## शुभ भण्डार [ शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाठ्या जयपुर ]

२३४८- गुणका सं १। पत्र सं २। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। विषय-संस्कृत। लेखक-  
श्री १९२०। पूर्ण। के सं २०।

विषय—शास्त्रोपनिषत्सु सांख्यिकप्रणाल्यं ब्रह्मसूत्रं ( श्रीमत्संस्कृत ) कर्मसूत्रविधानम् ( ब्रह्मसूत्रम् ),  
पश्चिम बौद्धमतं कर्ममतं आदि पाठों का संग्रह है।

२३४९- गुणका सं २। पत्र सं २२। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। लेखक-  
श्री १९२०। के सं २१।

विषय—श्रीराम के कवितो का संग्रह है।

२३५०- गुणका सं ३। पत्र सं १। मा २५×४६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखक-  
श्री १९२०। के सं २२।

विषय—शास्त्रोपनिषत्सु का संग्रह है।

२३५१- गुणका सं ४। पत्र सं १२। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। लेखक-  
श्री १९२०। के सं २३।

विषय—मुसलमान विद्वानों का संग्रह है।

१	दिव्यबहूषणमस्तोत्र	ब्रह्मसूत्रम्	हिन्दी	१-११
२	ब्रह्मसूत्रमैतरेय	विश्वकर्म	"	११-२१
३	पत्र- शास्त्रोपनिषत्सु	ब्रह्मसूत्रम्	"	२१
४	विश्वकर्म	×	"	२१-२४

विषय—ब्रह्मसूत्र के भाष्य में स्वयम्भार्य विद्वानों की।

५	गुणका	हिन्दी	"	२४-२२
६	विश्वकर्म	ब्रह्मसूत्रम्	"	२२-२७
७	शास्त्रोपनिषत्सु	ब्रह्मसूत्रम्	"	२७-२२
८	ब्रह्मसूत्रम्	ब्रह्मसूत्रम्	"	२२-२
९	ब्रह्मसूत्रम्	"	"	२-११
१०	ब्रह्मसूत्रम्	"	"	७१-२१

११. विनती एव पदमग्रह

×

हिन्दी

९१-१०१

५६५२. गुटका स० ५। पत्र स० ६-२६। मा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपचीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भीजाई का भगडा आदि पाठों का संग्रह है।

५६५३ गुटका स० ६। पत्र स० १६। मा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।  
वे० स० ४१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन।

५६५४ गुटका स० ७। पत्र स० ७। मा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६४३  
वैशाख सुदी १। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—विषाणहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है।

५६५५ गुटका स० ८। पत्र स० १८४। मा० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी नस्कृत। त्रिपय-स्तोत्र।  
ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२ छहडाला ( अक्षरवाकनी )	"	"	३५-३६
३ धर्मपचीसी	"	"	३६-४२
४ तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४६
५ सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४६-१७५
६ जिनसहस्रनामस्तवन	जिनमेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १०

५६५६ गुटका स० ९। पत्र स० १३। मा० ६ इ०×४ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल स०  
१६१८। पूर्ण। वे० स० ४४।

विशेष—सामाय पाठों का संग्रह है।

५६५७ गुटका स० १०। पत्र स० १०५। मा० ८×७ इ०। ले० काल ×।

१ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१६
२ तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४



३ वाटपुत्रादी	×	सद्वृत्त	१४-२०
४ समाधिराज	×	दुपनी द्विती	२०-१६

विक्षेप—४ बालुराम ने अपने पदों के लिए लिखा था ।

५ हावपात्रुदेवा	×	पुरानी द्विती	१६-११
६ शीवीराम्नी	वीवीरुदेव	धनस्य स	१२-११
७ वासवभार शीवा	शामसिंह	"	१३-११
८ पदपुत्र	दुम्भुम्भार्ज	शद्वृत्त	४-१४
९ बटमेस्वा गर्जन	×	सद्वृत्त	१४-१६

५४९ गुप्तका सं ११ । पत्र सं १२ । ( तुने हुने वासवभार ) का ७२×२६ । वाया-द्विती के नाल × । पुर्ण । के सं ४ ।

विक्षेप—पुना एवं स्तोत्र सज्ज है ।

५५० गुप्तका सं १२ । पत्र सं ३ । का ६×२६ । वाया-द्विती । के नाल × । पुर्ण । के सं १ ।

विक्षेप—विल्य पुना पाठ सज्ज है ।

५५१ गुप्तका सं १३ । पत्र सं ४ । का ६×२६ । वाया-द्विती । के नाल × । पुर्ण । के सं ११ ।

१ वासवभा	सद्वृत्त	द्विती	१-२१
----------	----------	--------	------

विक्षेप—६० पत्र से २६२ नाल तक वासवभा के नाम नाल भी गया है ।

१ पुत्रकर वरिण	धनस्य	"	२२-४
----------------	-------	---	------

विक्षेप—वासव मलिनमिदि गया है ।

५५२ गुप्तका सं १४ । पत्र सं ५ । का ७×२६ । वाया-सद्वृत्त द्विती । के नाल सं १३२१ । पुर्ण । के सं १२ ।

१ शीरसी वापि मिक	×	द्विती	१-१६
२ मैदिवाप कनु	पुष्पल	"	१०-२२

विक्षेप—मलिन पाठ —

समुद्र विषय तत्र सुप्त निवृत्त रीत करह कनु सुर नर कनु ।

पुष्पल सुविबर कनुद नीरंभ पुत्रस्य मैदि विरुत्त ॥ १४ ॥

गुप्त १४ पत्र है ।

॥ इति श्री मैदिवाप कनु वचनात् ॥

३ प्रद्युम्नरास	ग्र० रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४ सुदर्शनरास	"	"	५१-८०
५ श्रीपालरास	"	"	११६
ले० बाल स० १६५३ जेठ बुदी २			
६ शीलरास	"	"	१३३
७ मेघकुमारगीत	पूनों	"	१३५
८ पद- चेतन हो परम निधान	जिनदास	"	२३६
९ " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देवउ चित्त न विचारि ।	रूपचन्द	"	२३८
१० " चेतन तारक हो चतुर सयाने वै निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने ।	"	"	"
११ " वादि घनादि गवायो जीव विधिघस बहु दुख पायो चेतन ।	"	"	"
१२ " दास	"	"	२४०
१३. " चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरो जाति । रूपचन्द	"	"	"
१४ " जीव निध्यात उदै चिर भ्रम प्रायो । वा रस्तत्रय परम घरम न भायो ॥	"	"	"
१५ " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे दरिगह	"	"	"
१६. " हा हा नूता मेरा पद मना जिनवर घरम न घये ।	"	"	"
१७ " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द	"	२४७
१८ अक्रुद्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत	२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५ २५५
२०. चन्द्रग्रह के १६ स्वप्न	×	"	ले० काल १७३५ २५७
२१. जकडी	दयालदास	"	२३२

२२ पक-वास्तु बीजे र मय कुल बीजरी न पाली ।	हृषीकीरि	"	२११
२३ रविशत मया	मनुकीरि	"	२ काल १६५७ ११६

( बाट ठगल सोमह के एक मर्छ रने कु कया विमल )

२४ पव को मनीया का मोरा मही भी बिल बीन न प्याली र ।	बिचगुबर	"	१४१
२५ शीमकलीपी	मकुमय	"	१४५
२६ टंकण्य पीत	कुपरय	"	१६१
२७ अमर पीत	मगदिच	"	१६ पर ई १११

( बाकी कुभी मदि मनी कुन अमरा र )

३६६२ गुटका सं १५ । पक स २७१ । या ४×४२ ह । के कुल सं १७२७ । कुर्सी । के सं १३ ।

१ गटक ठमपछार	मयारसीबाठ	दिल्ली	१११
		२ काल स १६६३ । के काल सं १७११	
२ वैचकुमार मोठ	पुनी	"	१११-११६
३ ठेरकुकाठिया	मयारसीबाठ	"	१५
४ विवेकमबडी	मिलबाठ	"	२९
५ कुठामरम.ला	मलराय	"	
६ कुनीरबरो की मयबाप	मिलबाठ	"	
७ मालनी	मयारसीबाठ	"	२४१
मयर ल्यारना का मयबाप	×	"	१२४
८ मयमयति को मेलि	हृषीकीरि	"	२१६

३६६३ गुटका सं १६ । पक स २१९ । या ४×६ ह । माया-दंडकुल दिल्ली । के काल × । के सं १ ।

विशेष-वामराय पाली मर-संभल है ।

३६६४ गुटका सं १७ । पक सं १४२ । या ६×२ ह । माया-दिल्ली । के काल × । कुर्सी । के सं १ × ।

१ भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२ चौबोस तीर्थङ्कर पञ्चय	×	"	१४२

५६६५ गुटका स० १७ । पत्र स० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल  
 × । पूर्ण । वे० स० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६ गुटका स० १८ । पत्र स० ९८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८७४ ।  
 पूर्ण । वे० स० १११ ।

१ लगनचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सौगानी	हिन्दी	१-४३
---------------------	------------------	--------	------

प्रारम्भ—आदि मंत्र कू सुमरिइ, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बरगाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दर्ई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा करू बरगाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आवावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पढित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचद पढित तरणे, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिप तिनै, मौकू हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगायी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नद ते, स्योजीराम बखारिण ॥ ६ ॥

ठारासै के साल परि, वरप सात चालीस ।

माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम—

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही कु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२ वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	५० ले० काल वैशाख सुदी १० १८७४
-------------	----------	--------	-------------------------------

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

१ राजनीति कवित्त

दीवीवाट

४

×

१२१ का ६।

४६६७ गुटका सं १६। पत्र सं १। भा ४×६६। माता-हिन्दी। विषय का। के का ४।

पूर्व। के सं ११२।

विषय—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है। कुटका मधुसूत लिखा गया है।

४६६८ गुटका सं २। पत्र सं २१। भा ६×२६। माता हिन्दी संस्कृत। विषय-ब्रह्म।

के का ४ सं १७३। पूर्व। के सं ११४।

विषय—माधिवाल की शीतली श्रीपालस्तुति, मुक्तिवरो की कवयल बड़ा कला, कठमार लोरे मन्दि है।

४६६९ गुटका सं ३१। पत्र सं २७६। भा ७×२६। माता-हिन्दी। विषय-संज्ञ। के का ४। पूर्व। के सं ११५। ब्रह्मरामनाथ कुट अधिष्ठातराज मैमिटास तथा सुभुवत जीव है।

४६७० गुटका सं ३२। पत्र सं २९२३। भा ६×२६। माता-हिन्दी। विषय-पूजा। के का ४। पूर्व। के सं ११६।

४६७१ गुटका सं ३३। पत्र सं १। भा ६×२६। माता-संस्कृत। विषय पूजा का। के का ४। पूर्व। के सं ११७।

विषय—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

४६७२ गुटका सं ३४। पत्र सं २१। भा ६×२६। माता हिन्दी संस्कृत विषय-पूजा का। के का ४। पूर्व। के सं ११८।

विषय—विनयसूत्रमाला ( मातावर ) पद्यलि वाठ एवं पूजाओं का संग्रह है।

४६७३ गुटका सं ३५। पत्र सं २-४। भा ६×२६। माता-प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा का। के का ४। पूर्व। के सं ११९।

४६७४ गुटका सं ३६। पत्र सं ३२। भा ६×२६। माता-हिन्दी। विषय-पूजा का। के का ४। पूर्व। के सं १२०।

४६७५ गुटका सं ३७। पत्र सं ११। भा ६×२६। माता हिन्दी। के का ४। पूर्व। के सं १२१।

विषय—बनारसीदिलाल के कुछ वाठ, कवयल की बकरी का संग्रह एवं पूजाओं है।

४६७६ गुटका सं ३८। पत्र सं १२३। भा ६×७६। माता-हिन्दी। के का ४ सं १२२। पूर्व। के सं १२३।

विशेष—समयसार नाटक, भक्ताभरस्तोत्र भाषा-एवं सामाय कथायें हैं ।

५६७७ गुटका स० २६ । पत्र स० ११६ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी सम्युक्त । विषय-संग्रह  
ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है ।

५६७८ गुटका स० ३० । पत्र स० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५५ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एव निर्वाणमण्ड गाथा हैं ।

५६७९ गुटका स० ३१ । पत्र स० ४० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—रविप्रत कथा है ।

५६८० गुटका स० ३२ । पत्र स० ४४ । आ० ४३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० स० १७७६ ।

विशेष—चीच २ में से पत्र खाली हैं १ बुलाखीदास खत्री की बरात जो स० १६८८ मित्ता मगसिन मुदी ३  
को भागरे से महमदावाद गई, का विवरण दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त पद, गणेशछन्द, लहरियाजी की पूजा आदि हैं ।

५६८१ गुटका स० ३३ । पत्र स० ३२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० स० १६३ ।

१ राजुलपञ्चीसी

विनोदीलाल लालचन्द

हिन्दी

२ नेमिनाथ का वारहमासा

”

”

३ राजुलमगल

×

×

प्रारम्भ—

तुम नीकम भवन सुढाढे, जूव कमरी भई बरागी ।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहे दिन रात ।

अन्तिम—

भाषा दोनु ही भुक्ती मिलाना, तहा फेर न होय भावागवना ।

राजुल अटल सुयडी नीहाइ, तिहा राणी नहीं छै कोई,

सोये राजुल मगल गायत, मन बद्धित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मगल संपूर्ण ।

२३८२ गुटका सं ३४। पत्र सं १९। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी संस्कृत। के कल ५। पूर्ण। के सं २३३।

विवेक—पूजा, स्तोत्र एवं टीक्य की चतुर्बिधा कथा है।

२३८३ गुटका सं ३५। पत्र सं ४। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी संस्कृत। के कल ५। पूर्ण। के सं २३४।

विवेक—सामान्य पूजा पाठ है।

२३८४ गुटका सं ३६। पत्र सं २४। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी संस्कृत। के कल ५। २००२ फलपुत्र सुदी ३। पूर्ण। के सं २३५।

विवेक—महाप्रथम स्तोत्र एवं कल्याण मीरि संस्कृत गीत कथा है।

२३८५ गुटका सं ३७। पत्र सं २३३। मा ३५७ ह। बाबा हिन्दी संस्कृत। के कल ५। पूर्ण। के सं २३६।

विवेक—पूजा स्तोत्र तीन सत्रक तथा पर्वों का संघ है।

२३८६ गुटका सं ३८। पत्र सं २९। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी। विरय-पूजा स्तोत्र। के कल ५। पूर्ण। के सं २३७।

विवेक—साधारण पूजा पाठ संघ है।

२३८७ गुटका सं ३९। पत्र सं ३। मा ३५४ ह। के कल ५। पूर्ण। के सं २३८।

१. पालकप्रतिष्ठापण	×	मात्र	१ १४
२. बरसिद्धमखण्डस्तोत्र	घण्टासंस्कृत	"	१२ १६
३. मंत्रिबालिका-व्रतस्तोत्र	×	"	१०-२२
४. श्रीवैद्यकस्तोत्र	×	-	१९ १९

अथ स्तोत्र एवं मीरिपद्या का विवेक है।

२३८८ गुटका सं ४०। पत्र सं २३। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी। के कल ५। पूर्ण। के सं २३९।

विवेक—सामान्य पाठ है।

२३८९ गुटका सं ४१। पत्र सं ३। मा ३५४ ह। बाबा-हिन्दी। के कल ५। पूर्ण। के सं २४०।

विवेक—हिन्दी पाठ संघ है।

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। मा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एव जिनपञ्चीसी हैं।

५६६१ गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। मा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। मा० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३ गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। मा० ८×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४ गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। मा० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	भस्वराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सम्बोधनचार्सिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	७२-९२
५ चरचा	×	"	९२-१०३
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८ अनित्यपञ्चाशिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९ जकडी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१० "	यरिगह	"	१५५-५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२ पद	"	"	१६४-१६९
१३ आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। मा० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० २५४।



३३३६ गुटका स ४८ । पद सं १ । मा ३०४ इ । भाषा-हिन्दी । से बल सं १७३  
पूर्व । से सं २३३ ।

विशेष—भास्विनाएनवा ( भाऊ ) विष्णुर्मन्त्री ( मन्त्रवाप ) एव वासुदेविक पुत्रौ है ।

३३३७ गुटका स ४९ । पद सं ४-११९ । मा ३०४ इ । भाषा-संस्कृत । से बल × । पूर्व  
से सं २३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संज्ञ है ।

३३३८ गुटका स ५० । पद सं १ । मा ३०४ इ । भाषा-संस्कृत । से बल × । पूर्व  
से सं २३८ ।

विशेष—पूर्व एवं सामान्य पाठों का संज्ञ है ।

३३३९ गुटका सं ५१ । पद सं ४७० । मा ३०४ इ । भाषा-संस्कृत । से बल × । पूर्व  
से सं २३९ ।

विशेष—बहिष्ठा पाठ के पाठों का संज्ञ है ।

३ गुटका सं ५२ । पद सं ६ । मा ३०४ इ । भाषा-हिन्दी । से सं १७२२ बला  
बुधौ २ । पूर्व । से सं २४० ।

विशेष—समकथार पाठक तथा बनावटीविद्या के पाठ है ।

६ गुटका सं ५३ । पद सं २२ । मा ३०७ इ । भाषा-हिन्दी । से बल सं १७२२  
पूर्व से सं २४१ ।

१ समकथार पाठक	बनावटीविद्या	हिन्दी	१-२१
---------------	--------------	--------	------

विशेष—बिहारीदास के पुत्र नीलती के पदनाम उपास्य से लिखा था ।

१ छीटाचरित	रामचन्द्र ( बालक )	हिन्दी	१-११०
३ पद	कवि छीटीदास	॥	
४ बालसन्तरीक्य	बालदास	॥	
२. पदपत्राधिका	×	॥	

६ २ गुटका सं ५४ । पद सं ३ । मा ४०१ इ । भाषा-हिन्दी । से बल सं १२०

बैठ बुधौ ११ । पूर्व । से सं २४२ ।

१ स्तरीय	हिन्दी	१ १०
----------	--------	------

विशेष—जमा बड़ेक सनल में है है ।

२. पंचाध्यायी

”

२८-२८

विशेष—मोटपुतली वास्तव्य भीष्मलाल फरीदपुर ने पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५। पत्र सं० ७-१०६। प्रा० ११/३२ ३०। भाषा—हिंदी साहित्य। ले० बाल

×। पूर्ण। ले० सं० २७२।

१	अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिंदी	१६-२०
२	पद	विशोदीलाल	”	
३	पद	जगताराम	”	

( नेमि रंगीली छत्रीली हट्टीली चटर्कीले मुगति यधु मग निनी )

४	सरस्वती चर्ण का नुसगा	×	”	
५	पद— प्रात उठी ले गीतम नाम जिम मन वाहित सीके नाम।	मुमुदान्द	हिंदी	
५	जीव वेनडी ( सतपुर परत चुनी रे नार्द या सत्तार भगारा )	देधीरात	”	२१ पद्य १।
७	नारीरानी	×	”	३१ पद्य २।
८.	चेतायनी गीत	नामू	”	
९	जिनचतुर्विगतस्तोत्र	भ० जिग्गचद्र	मन्थृत	
१०	महावीरस्तोत्र	ग० धमरकीति	”	
११.	नेमिनख्य स्तोत्र	५० दालि	”	
१२	पद्मावतीस्तोत्र	×	”	
१३	पद्मत चरचा	×	”	
१४.	धाराधनास्तार	जिनदास	हिंदी	५८ पद्य हैं।
१५.	विनती	”	”	२० पद्य हैं।
१६.	राजुल की सज्जाय	”	”	३७ पद्य हैं।
१७	भूलना	गंगादास	”	१२ पद्य हैं।
१८.	ज्ञानपेडी	मनोहरदास	”	
१९.	श्रावकाक्रिया	×	”	

विशेष—विभिन्न शक्ति एवं बीजपत्र (गोत्र) प्राप्ति है।

६ ८४ गुटका सं २६। पत्र सं १२। भा ४३×४४ इ। भाषा—हिन्दी (संस्कृत)। के बल × गुण। के सं २७३।

विशेष—आत्मिक शक्ति का संकलन है।

६ २ गुटका सं २७। पत्र सं १-४८। भा ६३×४३ इ। भाषा—हिन्दी (संस्कृत)। के बल सं १७४३ बीज कुटी १४। श्रुति। के सं २७४।

विशेष—सत्ता-संज्ञक शक्ति, स्वयं-संज्ञक भाषा, शांति-संज्ञक, तीन बीजपत्रों के नाम एवं देवा-पुत्रा-पत्नी है।

६ ६ गुटका सं २८। पत्र सं २६। भा ६×४४ इ। भाषा—हिन्दी। के बल ×। श्रुति। के सं २६।

१ तीव्रबीजपत्र	×	हिन्दी
२ तीव्रबीजपत्र बीज	स्वयं	२ बल १७४३ बीज कुटी १ के बल सं १७४३ शक्ति कुटी २

अभिज्ञ—नाम बीजों का संकलन, शक्ति का शक्ति स्वयं।

बीजपत्र कुल शक्ति, शक्ति-संज्ञक एवं भाषा ॥२११॥

सत्ता-संज्ञक के शक्ति एवं शक्ति।

शक्ति-संज्ञक शक्ति शक्ति-संज्ञक ॥२११॥

एक बार के शक्ति, शक्ति-संज्ञक शक्ति।

शक्ति-संज्ञक शक्ति शक्ति शक्ति ॥२११॥

॥ शक्ति की तीव्र शक्ति की बीजपत्र ॥

६ ७ गुटका सं २९। पत्र सं २२। भा ६×४३ इ। भाषा—संस्कृत (संस्कृत)। के बल ×। श्रुति। के सं २९१।

विशेष—तीव्रबीजपत्रों के नाम सत्ता-संज्ञक शक्ति-संज्ञक शक्ति की भाषा शक्ति-संज्ञक शक्ति की भाषा शक्ति है।

६ ८ गुटका सं ३०। पत्र सं १४। भा ६×४४ इ। भाषा—हिन्दी। के बल सं १८४३। श्रुति। के सं २८३।

१ सत्ता-संज्ञक	बीजपत्र	हिन्दी २ बल १७४३ शक्ति कुटी २
----------------	---------	-------------------------------

## गुटका-समग्र

२ श्रावको को उत्पत्ति तथा ८४ गीत	×	हिन्दी
३ सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—सगुन छनन गुमत सुभ सब जनकू सुप्त देत ।

भापा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत ॥

६००६ गुटका स० ६१ । पत्र स० ११-५८ । प्रा० ८३×६ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले०

काल स० १९१६ । अपूर्ण । वे० स० २६६ ।

विशेष—विरहमान तीचद्धर जकठी (हिन्दी) दयानक्षरण, रत्नप्रय पूजा (सम्बृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदात)

नन्दीश्वर पूजा जयमाल (सम्बृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं ।

६०१० गुटका स० ६२ । पत्र स० १६ । प्रा० ८३×६ इ० । ले० काल× । पूर्ण । वे० स० २६७ ।

विशेष—हिन्दी पदा का संग्रह है ।

६०११ गुटका स० ६३ । पत्र स० १६ । प्रा० ६३×४ इ० । भापा-सस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह एव ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२ गुटका स० ६४ । पत्र स० ३६ । प्रा० ६×७ इ० । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० ३२५ ।

विशेष—( १ ) कवित्त पद्याकर तथा अन्य कवियों के ( २ ) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम

( ३ ) आमेर के राजाओं का वशावत्ता, ( ४ ) मनाहरपुरा की पौडिया का वर्णन, ( ५ ) सँडेला की वशावली,

( ६ ) खडेलवाली के गोत्र, ( ७ ) कारखानों के नाम, ( ८ ) आमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, ( ९ ) दिल्ली

के बादशाहों पर कवित्त आदि हैं ।

६०१३ गुटका स० ६५ । पत्र स० ४२ । प्रा० ६×४ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० स० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१४ गुटका स० ६६ । पत्र स० १३-३२ । प्रा० ७×४ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल

× । अपूर्ण । वे० स० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०११ गुटका स ६७। पत्र स २९। भा ६४४। भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। के बाल X। पूर्ण। के सं ३२५।

विषय—अविना एक मासुब के गुठकों का संग्रह है।

६१६ गुटका स ६८। पत्र स २९। भा ६२४४। भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३।

विषय—एक एक कविताओं का संग्रह है।

६१७ गुटका स ६९। पत्र स २९। भा ६४४। भाग-हिन्दी। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३२।

विषय—विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है।

६१८ गुटका स ७०। पत्र स ४। भा ६२४४। भाग-हिन्दी। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३३।

विषय—एक एक कविताओं का संग्रह है।

६०१९ गुटका स ७१। पत्र स ६५। भा ४६४२। भाग-हिन्दी। विषय-वास्तविक। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३४।

६२ गुटका स ७२। पत्र स ३३६।

विषय—एक एक कविताओं का संग्रह है।

६२१ गुटका स ७३। पत्र स ३५। भा ३४४४। भाग-हिन्दी। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३७।

विषय—अविना एक मासुब के गुठकों का संग्रह है।

६२२ गुटका स ७४। पत्र स ३६। भा ३४४४। भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। के बाल X। पूर्ण। के सं ३३।

विषय—विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है।

६२३ गुटका स ७५। पत्र स ३४। भा ३४४४। भाग-हिन्दी। के बाल स ३३८। पूर्ण। के सं ३३८।

विषय—एक एक कविताओं का संग्रह है।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एव ग्रन्थो का संग्रह है ।

६०२५ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०

काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एव विनतियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की बानावबोध टीका है । टीका हिन्दी गद्य में है ।

६०२७. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

## ज भण्डार [ शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर ]

६०२८ गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चितामणिएस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासात चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९ गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एव सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर बलय पूजा, ऋषि मञ्जल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का संग्रह है—



२. मूलका अतीवृद्ध इत्यादि	X	"
३. वेतनक्रिया	X	"
४. अन्नपान	या कुलकुल	प्राप्त
५. आरिष्याकारण	वाऽ	द्विती
६. वेतनवृद्धय	अन्नवृद्धय	"
७. अन्नवृद्धय	अन्नवृद्धय	"
८. अन्नवृद्धय	X	"
९. अन्नवृद्धय	X	"
१०. अन्नवृद्धय	अन्नवृद्धय	"

ई १९२१ में संवत् १९११ में अतिविधि हुई थी।

ई २३ गुटखा सं २। पत्र सं ७२। या १९२२। अन्त-संस्कृत। ले अन्त सं १९२। पत्र।

विशेष—अन्त-संस्कृत।

सं १९२ में अन्त-संस्कृत में अन्त-संस्कृत की अन्त-संस्कृत पत्र सं १९२।

ई २३ गुटखा सं ३। पत्र सं २२। या १९२२। अन्त-संस्कृत। अन्त-संस्कृत। ले अन्त सं १९२।

१. अन्त-संस्कृत का अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत	द्विती	"
२. अन्त-संस्कृत के अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत	"	"
३. अन्त-संस्कृत	X	"	"

ई २३ गुटखा सं ४। पत्र सं १९। या १९२२। अन्त-संस्कृत। ले अन्त X। पत्र।

विशेष—अन्त-संस्कृत पत्र, अन्त-संस्कृत ( अन्त-संस्कृत ) अन्त-संस्कृत ( अन्त-संस्कृत )।

ई २३ गुटखा सं ५। पत्र सं १९९। या १९२२। अन्त-संस्कृत अन्त-संस्कृत।

ले अन्त X। पत्र।

१. अन्त-संस्कृत-अन्त-संस्कृत अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत
२. अन्त-संस्कृत-अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत	अन्त-संस्कृत

विशेष—अन्त-संस्कृत पत्र संस्कृत की है।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की भाष्य आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, झालोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७ गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमदिर स्तोत्र एव सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८ गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१ भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२ पद— हर्षकीर्ति	×	"
( जिए जिए जप जीवडा तीन भवन में सारोजी )		
३ पंचगुण नी जयमाल	श्र० रायमल	" ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	"
५ हितोपदेश टोका	×	"
६. पद—तै नर भव पाय कृष्टा कियो	रूपचन्द्र	हिन्दी
७ जकटी	×	"
८ पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"

६०३९ गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है —

क्षेत्रपाल पूजा ( संस्कृत ) क्षेत्रपाल जयमाल ( हिन्दी ) नित्यपूजा, जयमाल ( संस्कृत हिन्दी ) मिष्टपूजा ( न० ) पोटसारारण, दशानक्षण रत्नप्रयपूजा, मनियुष्टपूजा और जयमाल ( प्राकृत ) नदीशवरपत्तिपूजा प्रनन्तचतुर्दशोपूजा, प्रदायनिधिपूजा तथा पार्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ ( संस्कृत ले० काल सं० १६८१ ) तथा कई तरह की रेगाभा के चित्र भी हैं, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४० गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुद्रा निम्न पाठ है—

१. जिनमुक्ति	मुक्तिकीर्ति	हिन्दी
२. गुरुम्पारागीत	द० श्री गुरुदेव	"



धर्मिक-व्यक्ति की सर्वत्र बड़ा एक बारी बहिष्कृत हुए कर

३. सम्पन्न बचपन	×	बचपन ब
४ परवारकीति	बचपन	हिन्दी
५ पर- छोड़ो मेरे बीच तु कल जानाये तु		
केवल यह कर परम है यदि बड़ा सुनयी । मगरम		०
६ मेघपुत्राकीति	पुत्री	०
७ मनोरथपत्नी	बचपकीति	०
बचपना सिद्धि सदा कुल पाहरी,		
८. लक्ष्मीकीति	मुक्ता	हिन्दी

लक्ष्मी है वो लक्षार बहार को पित में का जन्मी की बहोयो है  
जो पत्नी तो बहार उन बन बीजन फिर बड़ी ।

९. पर-	कीति	हिन्दी
--------	------	--------

का पित हीन कल कर छोड़ि कोई न राज बड़ा है पौत्रि ॥  
बाए बाए से कुछ ऐसी बसो बरो दिन बिलो धन बसो ॥  
धन बिकरुं कर्म सरीर, छोड़ि छोड़ि नै लक्ष कीर ।  
बारि बला बहूष नै बहूषि, कर में बरो पदु है बाहि ।  
बचपना बूढ बिदा में बाए को मन बेच बना उबाल ।  
बाना बाना मुझे बानि बोलु होऊ भजन परमप्रिय ॥१॥

१ पर-	लक्ष्मीकीति	हिन्दी
-------	-------------	--------

बहि छोडी हो बिबदाय नाम कीति कीर पिप्याल ही बदा बनी नाम ।

११ ०	बनीपुत्र	हिन्दी
------	----------	--------

मेव ही बिब दाहिब की बीजे बरमन बसो बीजे

१२ पर-	बिकरुप	हिन्दी
--------	--------	--------

१३ ०	बचपना	०
------	-------	---

१४. लक्ष्मीकीति	बनारकीति	०
-----------------	----------	---

१५. बचपना	मुक्ता	०
-----------	--------	---

१६ द्वादशानुश्रिता ×  
 १७ विनती रूपचन्द ”  
 जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करै तुम सेवा ।

१८ पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	२० काल स० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	”	” ” ” १८६३
२० परमार्थ हिडोलना	रूपचन्द	”	
२१ पयोगीत	छीहल	”	
२२ मुक्तिपीहरगीत	×	”	
२३ पद—अव मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	”	
२४ पदसग्रह	बनारसीदास	”	

६०४१ गुटका स० १४ । पत्र स० १०६-२३७ । आ० १०×७ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण ।  
 विशेष—स्तोत्र, पूजा एव उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२ गुटका स० १५ । पत्र स० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद सग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४३ गुटका स० १५ । पत्र स० ५२ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सामान्य पाठ सग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४ गुटका स० १७ । पत्र स० १६६ । आ० १३×३ इ० । ले० काल स० १६१३ ज्येष्ठ बुदो । पूर्ण ।

१. छियालीस ठाणा	अ० रायमल्ल	संस्कृत	१९
विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पञ्चकल्याणकों की तिथि आदि विवरण है ।			
२ चौबीस ठाणा चर्चा	×	”	२८
३ जीषसमास	×	प्राकृत ले० काल स० १६१३ ज्येष्ठ ५६	
विशेष—अ० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी ।			
४ सुप्पय दोहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	”	६२
६ रत्नकरण्डश्रावकाचार	समतभद्र	संस्कृत	६४

६०४५ गुटका स० १८ । पत्र स० १५० । आ० ७×२३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

मूढा रीं बेंदली बीबी बीपति संव न छाई बी ।

पल लोकर मयच कुमली धार्य वचन बड मंड मारिबी ॥

३ बलबई विहारिकास द्विती पदुर्ल १-६२  
 से काल सं १७२२ वाच सुदी २ ।

विलेख—शास्त्र के १२ पीछे गयीं हैं । कुल ७१ पीछे हैं ।

४ वैद्यवनेश्वर मयमसुख " पदुर्ल १७-११५

३ १६ गुटका सं० ४ । पत्र सं २२ । मत्ता-संस्कृत । विषय-भोति । से काल सं १११ पीछे सुदी ७ । पदुर्ल । से सं १२ ४ ।

विलेख—शास्त्र मीति का वर्णन है । बीपनबी बकाल के पठान्क अक्षुर में प्रतिनिधि की थी ।

३ २ गुटका सं० २ । पत्र सं ४ । मत्ता-द्विती । से काल सं १५११ । पदुर्ल । से सं १२ ५ ।

विलेख—विश्व रविचों के मूढार के पदुठे कवित है ।

३ ३ गुटका सं ६ । पत्र सं ५२ । मा १५४६ । मत्ता द्विती । से काल सं १५५५ । से काल सं १७२ कर्तिक सुदी १ । पदुर्ल । से सं १२ ६ ।

विलेख—मुम्बरदास इत मुम्बरदास है । येम्बरदास पोवा मत्तपुरा वल्ले ने प्रतिनिधि की थी ।

३ ४ गुटका सं ७ । पत्र सं ५२ । मा १५४६ । मत्ता-द्विती । से काल सं १५५५ वैशाख सुदी ५ । पदुर्ल । से सं १२ ७ ।

१ कर्मिता धरर ( धरवला ) द्विती पदुर्ल १-१

विलेख—कुल ११ पत्र हैं पर शास्त्र के ७ पत्र गयीं हैं । इनका कल्प कुम्भसिखा का मयता है एक कल्प

विश्व प्रकार है—

भांनो बटि वैवरी पाई बहारा काय ।  
 पाई बहारा काय कल्प कुब बीष म पाई )  
 भाव गुणल मबल क्षिणक से पत्र कुमली ॥  
 करो विरलो टीच मुठप मय केल न लाने )  
 बीष न बबन्धे बीष वल्ल विषवा की बाने )  
 धरर बीष धरि री क्य रंघीच करि कपल )  
 भांनो बटि वैवरी पाई बहारा काय ॥१ ॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल स० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर भजान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्णा । मिति वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४ कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम प्रा तोर पच महावरत धरू जपू चौबीस जिरादा ।

भरहत ध्यान लेव चहू साह लोयण वदा ॥

प्रकृति पच्यासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारेमल स्योपुर थान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी सपूर्णा ॥

५ पद—( बासुरी दीजिये ब्रज नारि )

सूरदास

”

२६

६ पद—हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज में बसि बैरिणि तू बसुरी

७ श्याम वत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है —

अन्तिम—

- कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहू रहत न रक्षक नाम ॥

८ पद—विन माली जो लगावै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कवीर भौष्टन एक ही गुण है

कवीर

”

”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

×

”

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन

×

”

अपूर्णा

४१-४५

## ट भण्डार [ आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर ]

५०२१ गुटका सं १।५५ सं १०। भाषा-हिन्दी। विषय-वचन। नै कल ×। पूर्ण। पं  
नं १२२।

१ मनोहरमन्त्री                      मनोहर विष                      हिन्दी                      १-१६

भाष्य— धन मनोहर मन्त्री धन तन बीबना लजबं ।

बाके मोहन्य संभुदयो धन धन बाधि मोर ।

धुनि मुजल तन धीबना बहूत केव ई मोर ॥

वर्णिका— महामहर्षि धति रतमती बहु मुवायु करण (?)

गिटीक मनोहर मन्त्री, रसिक मुह मन्त्राल ॥

धुनि मुजनि धनिलल टकि नन विचरि मुन बीष ।

बहा विरह निरु रीम रहु, लही हीत दुष मोक ॥

बंध बाह ई बीष के धक बीष धान्दव ।

बपी मनोहर मन्त्री नैकर पांरणी बाव ॥

मातुर ना हो बकुमुटी बरुत महोनी पीरि ।

बपी मनोहर मन्त्री, धनुर एठ छोरे ॥

एनि ध लजलतोकरुतवशिमतैभिमंडीलिङ्गलोत्पत्रिकाए बकुवाभनविहायपरिनकारदाब्रह्ममीराल

मनोहर विष विरचिना मनोहरमन्त्री बनावटा ।

दुष ७४ पय है । सं ७२ एक ही रिके हुये है । मन्त्रिका केर बरान है ।

२ कुटुंबर बोहा                      ×                      हिन्दी                      १ १६

वर्णिका— ७ पीहे है ।

१ बामुर्देकिठ दुखने                      ×                      "                      १०

६७० गुटका सं २। ५५ सं १२। भाषा-हिन्दी। नै कल सं १७१४। पूर्ण। पं  
नं १२२।

१ नाथनन्त्री                      मंत्राल                      हिन्दी वचन २६६                      २-२

२ बनेबानेनन्त्री                      "                      "                      १८-२

स्वामी देवदास ने प्रतिनिधि की थी ।

३ कवित्त

×

”

४१-४

४ भोजरासो

उदयभातु

”

४३-४

प्रारम्भ—

श्री गरोनाथ नम । दोहरा ।

कु जर कर कु जर करन कुजर मानद देव ।

सिधि समपन सत्त सूव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उछरन जगत ईस अरधग ।

मीन विचित्र विराजकर हसासन सरवग ॥ २ ॥

सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरै नहि भान ।

जहा तहा स्रवन सुन जिये तहा भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैमानजी को कियो । लिखत स्वामी खेमदास मितो फागुण ११ सवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५ कवित्त

टोडर

हिन्दी

कवित्त हैं

४९-५

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८ गुटका स० ३ । पत्र स० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १७२६ । अपूर्ण । वे०

१५०३ ।

१ मायाब्रह्म का विचार

×

हिन्दी गद्य

अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“माया काहे तै कहिये न भस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तै कहिये पिंड ब्रह्मांड का अकार है तातै अकास कहिये । सुनी ( शून्य ) काहे तै कहिये—जब है तातै सुनी कहिये । सबती काहे तै कहिये ससार को जीति रही है तातै सकती कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान न्र अ जगोस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशक्राचार्य चोरभ्यते । मितो असाठ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्ये उत पोथी सा म ठोल्या साह नेवसी का वेटा कर महाराज श्री रुघनाथस्यधजी ।

२ गोरखपदावली

गोरखनाथ

हिन्दी

अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

महाराट्टी बीरानी बीबी बीरसिंह संवत् १३३३ ॥

महाराट्टी बीरानी बीबी बीरसिंह संवत् १३३३ ॥

३ अक्टूबर विद्यापीठालय दिल्ली मयूर १-२३  
 से कलकत्ता १७२३ मयूर १२।

विशेष—शास्त्र के १२ बोधे नहीं हैं। कुल ७१ बोधे हैं।

४ बीरमबीरसिंह मयूरसुख " मयूर १७-११

६ १३. गुप्तका सं ४। पत्र सं १२। भाषा—संस्कृत। विषय—गीता। से कलकत्ता १२३२ मयूर

मयूर ७। मयूर १२ ४।

विशेष—शास्त्र का गीता का बर्णन है। बीरमबीरसिंह के पठानों मयूर में प्रतिष्ठित की थी।

६ २. गुप्तका सं ५। पत्र सं ४। भाषा—हिन्दी। से कलकत्ता १७३१। मयूर १२ २।

विशेष—विभिन्न कवियों के मयूर के कलकत्ता कवित्त है।

६ ३. गुप्तका सं ६। पत्र सं १२। भा ६४४६। भाषा—हिन्दी। से कलकत्ता १७३४।

से कलकत्ता १७३४ मयूर ६। मयूर १२ ६।

विशेष—मयूरसुख गुप्त मयूरसुख है। बीरमबीरसिंह का मयूरसुख नाम से प्रतिष्ठित की थी।

६ ४. गुप्तका सं ७। पत्र सं ४२। भा ६४७६। भाषा—हिन्दी। से कलकत्ता १७३४।

मयूरसुख मयूर ७। मयूर १२ ७।

१ कवित्त मयूर ( मयूरसुख ) दिल्ली मयूर १-१

विशेष—कुल ११ पत्र हैं पर शास्त्र के ७ पत्र नहीं हैं। इनका अर्थ मयूरसुख का मयूरसुख है एक अर्थ

मयूरसुख है—

भाषा में बीरानी भाषा मयूरसुख ।

भाषा मयूरसुख नाम मयूरसुख मयूरसुख ।

मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख ॥

करी मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख ॥

मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख ॥

मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख मयूरसुख ॥

भाषा में बीरानी भाषा मयूरसुख ॥१ ॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल स० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर भ्रजान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै मान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्णा । मित्ती वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत्त देव करण का ।

४ कर्मपच्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम प्रा तोर पच महावरत धरू जपू चौवीस जिरादा ।

अरहत ध्यान लैव चहू साह लोयण बदा ॥

प्रकृति पच्चासी जाणि कै करम पच्चीसी जान ।

सूदर भारेमल स्योपुर धान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पच्चीसी सपूर्णा ॥

५ पद—( वासुरी दीजिये भ्रज नारि )

सूरदास

”

२६

६ पद—हम तो भ्रज को वसिवो ही तज्यो

”

”

२७-२८

भ्रज में वसि वैरिणि तू वंसुरी

७ श्याम वत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है —

अन्तिम—

- कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में अवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहू रहत न रञ्जक नाम ॥

८ पद—बिन माली जो लगावै वाग

मनराम

हिन्दी

४०

९ दोहा—कवीर भौगुन एक ही गुण है

कवीर

”

”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

×

”

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन

×

”

अपूर्णा

४१-४५



३ २३ गुटका स ८। पत्र बं ८६। मा ६५८ ६। ले बल तं १७१ वासरा बुये ६।

पुष्प। के तं १२ ८।

१ इच्छुवनशी केति कुम्भीराज राठीर राजस्थानी विमान १ २  
२ बल ४ १६१०।

विशेष—इ व हिन्दी बर टोका तद्विह है। बहिषे हिन्दी पत्र है फिर बय टोका बी पर है।

२ विष्णु पंजर रखा	×	बंरहत	८१
३ बरब (बद बंका नीये लीये रे भारी)	×	हिन्दी	४७-८४
४ पर-(बैठे मय निद्रु व कुटीर)	मनुकुंज	"	४६
५ " (कुनिमुनि कुली बग बारी)	हरीबल	"	"
६ " (कुम्बर लांघरी घारै बरयो लकी)	नंदराज	"	"
७ " (बालपोपल धीवन मेरे)	परबाल	"	"
८ " (बग ठे वासरा नावठ बीटी)	×	"	"

३ २४ गुटका स ६। पत्र न २। मा ६५७ ६। बारा-हिन्दी। ले बल ×। पुर्त।

के तं १२ ६।

विशेष—केवल इच्छुवनशी केति कुम्भीराज राठीर हय है। अति हिन्दी टोका तद्विह है। टोकापर परगत है। कुटका व के घारै हुई टोका के विष है। टोका बल नहीं पिया है।

३ २५ गुटका स १। पत्र बं १००-११। मा ६५७ ६। बारा-हिन्दी। ले बल ×।

पुर्त। के तं १२११।

१ बरित राजस्थानी विमान १७१-७३

विशेष—गुम्हार एक के कुम्बर बरित है। बरिहिन्दी ना बरान है। इनमें एक बरित छीवन वा बी है।

२ श्रीरामशिरुच्छुकी को रानी शिररज राजस्थानी पत्र १७१ १७२

विशेष—इति श्री रामश्री इच्छुकी को रानी शिररज हय लुर्त ॥ बरन् १७३६ बने बरब पंन बने पूब कुल पने दिबी बयम्पे कुबराभरे श्री कुम्भपुर नामे विष्णुनिं हयु सवन कोइ बाइ गुम्गारी बरुन बरब बाइ येठ दादुरी बरबबल। निरनं ब्याल बनना नाम्ना।

३ बरित × हिन्दी १७६-११

विशेष—कुम्बरबल गुम्गार विहाये तथा केयररज के बरितों का बंडह है। ४७ बरित है।

## गुटका-संग्रह ]

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१ रसिकप्रिया                      केशवदेव                      हिन्दी                      अपूर्ण                      १-४८  
ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२ कवित्त                                      ×                                      ”                                      ४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१ स्नेहलीला                              जनमोहन                              हिन्दी                              ६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाञ्छित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊषव एव ऊषव गोपी सवाद है ।

६०५८ गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० ×

पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१ रागमाला                              श्याम मिश्र                              हिन्दी                              १-१२

२० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है

अन्तिम—सवत् सौरह सै वरण ऊपर बीतै शोय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो शुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर श्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ श्याम मिश्र कृत संपूर्ण । सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोबवार पोथी लेख

प्रगने हिंछोंण का में साह गोरधनदास भगवाल की पोथी ये लिखी लिखत मौजीराम ।

२. द्वाब्शमासा (बारहमासा)                      महाकविराशुन्दर                      हिन्दी

विशेष—कुल २४ बरिता है। अल्पेक मात्र का विरहिणी वर्द्धन किया गया है। अल्पेक बरिता में कुल मात्र है। साम्ना है तथा गुणर बरि की है।

१ मरुतिवर्द्धन केन्द्रवत्त द्विती १४-२०

के काल में १७४२ मास बुटी १४।

विशेष—बेरवक में प्रतिबिम्बि हुई थी।

४ बरिता- विरवत्, बीह्व वीचय मरि के द्विती

१०३३. गुडका सं० १४। पत्र सं ३६। या २४२३। भावा-द्विती। के काल ×। पूर्ण।

के स १३२३।

विशेष—साम्ना पत्रों का संघट्ट है।

६ ६ गुडका सं० १४। पत्र सं १३५। या ×६३। भावा-द्विती। विषय-पर एवं पूया।

के काल में १७३३ मासो बुटी १३। पूर्ण। के स १३२४।

१ पत्रवत्त द्विती १-२५

विशेष—विनवत् हटीविह, बलाप्रीवत्त एवं वामवत्त के पर है। एक पत्रवत्तों के नाम की विने हुये हैं।

१ बीबीवतीर्वकुलपूजा पत्रवत्त द्विती २०-१३५

६ ६३ गुडका सं १६। पत्र सं १०१। या ७४६३। भावा-द्विती संसुठ। के काल में १६५७। मपूर्णा। के सं १३२३।

विशेष—पुष्प विष्ण पत्रों का संघट्ट है।

१ विरवत्तली × वसुव

विशेष—पूरी म्हाएक वृद्धावती की हुई है।

२ बालवत्तली मरिबैवत्त द्विती ६७-१९

विशेष—तथा बाली है। २३ पत्रों में बरि में मरुटो की बालनी बिची है। मरिबैवत्त की बिची हुई गया बजरी है बिचका एवमाकाल में १३७४ है।

१ विदुषण की विचटी वज्जवत्त

विशेष—इसके ११ पत्र हैं बिचमें ६३ पत्राता पुत्रों का वर्द्धन है। भावा कुवपती विचि द्विती है।

६ ६३. गुडका सं० १०। पत्र सं ३९-७। या २४९३। भावा-द्विती। के काल में १७५७। मपूर्णा। के सं १३९६।

विशेष—साम्ना पत्रों का संघट्ट है।

६०६३ गुटका स० १८ । पत्र स० ७० । मा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८६४

ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० स० १५२७ ।

१ चतुर्दशीकथा टोकम हिन्दी २० काल स० १७१२  
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२ कलियुग की कथा द्वारकादास ”  
विशेष—पंचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४ कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी  
विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपडे पहिना कर विरह जाग्रत किया तथा फिर पिय मिसन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४ गुटका स० १९ । पत्र स० ५७-३०५ । मा० ६३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-सम्रह । ले० काल स० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्णा । वे० स० १५३० ।

१ भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायभल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२ श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३ धर्मरास ( श्रावकाचाररास ) × ” २८३-२९८

६०६५ गुटका स० २० । पत्र स० ७३ । मा० ६×६३ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का सम्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है —

कपडा की रीस जायै हैवर की हीस जायै ।

न्याय भी नवेरि जायै राज रीस मारिगवौ ॥

राग तो छत्तीस जायै सपिय बत्तीस जायै ।

चू प चतुराई जायै महल में मारिगवौ ॥

वात जायै सवाद जायै खूवी खसवोई जायै ।

सगपग साधि जायै अर्थ को मारिगवौ ।

कहत बगारसीदास एक जिन नांव विना ।

दूढौ सब मारिगवौ ॥

६०६६ गुटका स २१। पत्र सं ११४। मा १४४६। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—संस्कृत।

ने काल सं १२१७। प्रपूर्ति। के सं १२१२।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संस्कृत है।

६०६७ गुटका सं० २२। पत्र सं ११५। मा १४४६। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—संस्कृत।

ने काल X। प्रपूर्ति। के सं १२१३।

विशेष—स्तोत्र एवं पद्यों का संग्रह है।

६०६८ गुटका स २३। पत्र सं १२१९। मा १४४६। भाषा—हिन्दी। ने काल सं १२१४। प्रपूर्ति। के सं १२१४।

विशेष—विभिन्न पद्यों का संग्रह है—अष्टाध्याय भाष्य, अरण्यकोष भाष्य, अष्टाध्याय की बीसवीं अध्याय अष्टाध्याय एवं अरण्यकोष के अर्थ, विश्वामित्राचार्य भाष्य, अष्टाध्याय की बीसवीं अध्याय अष्टाध्यायकोष।

६०६९ गुटका सं० २४। पत्र सं २। मा १४४६। भाषा—हिन्दी। ने काल सं १२१५। प्रपूर्ति। के सं १२१५।

विशेष—अन्य अर्थ में प्रतिबिम्बित हुई की।

६०७० गुटका स २५। पत्र सं १४। मा १४४६। भाषा—हिन्दी। ने काल X। प्रपूर्ति। के सं १२१६।

विशेष—विभिन्न पद्यों का संग्रह है—विद्याहार भाष्य ( अष्टाध्याय ) अष्टाध्यायकोष भाष्य, अष्टाध्याय भाष्य ( अष्टाध्याय )

६०७१ गुटका सं० २६। पत्र सं १। मा १४४६। भाषा—हिन्दी। ने काल सं १२१७। प्रपूर्ति। के सं १२१७।

विशेष—सामान्य पद्यों का संग्रह है।

६०७२ गुटका स २७। पत्र सं १३-१२। भाषा—संस्कृत। ने काल १ १२। प्रपूर्ति। के सं १२१८।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६०७३ गुटका स २८। पत्र सं १३। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ने काल सं १२१९। प्रपूर्ति। के सं १२१९।

विशेष—सामान्य पद्यों का संग्रह है। सं १२१९ अष्टाध्याय मुद्रा के अर्थ में अष्टाध्यायकोष भाष्य की प्रकृतिक में अष्टाध्याय के प्रतिबिम्बित की की।

६०७४. गुटका स० २६ । पत्र स० १६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजापाठ ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६०७५ गुटका स० ३० । पत्र स० १५५ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० १५४१ ।

१ मविष्यदत्त चौपाई	शं० रायमल्ल	हिन्दी	१-७६
			२० स० १६३३ कार्तिक सुदी १४ ।

विशेष—फत्तेराम वज ने जयपुर मे स० १८१२ अषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

२ वीरजिण्ण की संघावली	पूनो	हिन्दी	७७-७९
-----------------------	------	--------	-------

विशेष—मेघकुमार गीत है ।

३ अठारह नाते की कथा	लोहट	"	८०-८३
---------------------	------	---	-------

४ रविवार कथा	खुगालचन्द	"	२० काल स० १७७५
--------------	-----------	---	----------------

विशेष—लिखतं फत्तेराम ईनरदास वज वासी सागानेर का ।

५ ज्ञानपञ्चमी	वनारसीदास	"	
---------------	-----------	---	--

६ चौबीसतीर्थकरों की कथा	नेमीचन्द	"	९७
-------------------------	----------	---	----

७ फुटकर संवया	×	"	११३
---------------	---	---	-----

८ पट्टनेस्या वेलि	हर्षकीर्ति	"	२० काल स० १६८३ ११६
-------------------	------------	---	--------------------

९ जिन स्तुति	जोधराज गोदीका	"	११८
--------------	---------------	---	-----

१० प्रीत्यकर चौपाई	मु० नेमीचन्द	"	११९-१३४
--------------------	--------------	---	---------

२० काल स० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६ गुटका स० ३१ । पत्र स० ४-२६५ । आ० ८१×६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० स० १५४२ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है ।

६०७७ गुटका स० ३२ । पत्र स० ११९ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल ×

पूर्ण वे० स० १५४४ ।

विशेष—नित्य एव भाद्रपद पूजा सग्रह है ।

६०७. गुटका सं० ३३। पत्र सं ३२४। या ३०४ द। भाषा—हिन्दी। के काल सं १०११  
 वैशाख सुदी ३। पपूर्णा। के सं १३४२।

विशेष—सामान्य पात्रों का संवह है।

६०८. गुटका सं ३३। पत्र सं १३५। या ३०४ द। भाषा—हिन्दी। के काल X। पूर्णा।  
 के सं १३४१।

विशेष—मुक्ता। मालक समयवार भी प्रति है।

६०९. गुटका सं० ३६। पत्र सं २४। या ३०३ द। भाषा—हिन्दी। विश्व-दर संवह। के  
 काल X। पूर्णा। के सं १३४७।

६१०. गुटका सं ३७। पत्र सं १७। या ३०४ द। भाषा—हिन्दी संवह। के काल X।  
 पूर्णा। के सं १३४३।

विशेष—विश्वव्यापक पाठ संवह है।

६११. गुटका सं० ३८। पत्र सं ३४। या ३०४ द। भाषा—हिन्दी संवह। के काल १५२  
 पूर्णा। के सं १३४५।

विशेष—मुक्ता विषय पात्रों का संवह है।

१. वरसंवह	मनोरम एवं सुवर्णा	हिन्दी
२. स्तुति	हरीश	"
३. वरसंमाला की कुलमाता	गौहर	"
४. पत्र ( वरसं वीरमोदी मैमकुमार	मिर्चिराम	"
५. धारती	सुमन्य	"

विशेष—प्रसिद्ध-धारती कला धारति काशी बुकबन्ध डाल मन्त्र में छात्रों १५०।

६. पत्र- ( के तो धारती धारत कहिका वाली )	मैला	"
७. धारसंवह	मनालीधर	" के काल ११

विशेष—अनुर के मन्त्रीधर के मन्त्र में बालाराम के प्रतिनिधि भी थी।

८. पत्र- गौहर गीत में कडि छे ही माल	हरीश	हिन्दी
९. " कडि ठेरी बुक वैष्णु धारि जू के मंडा	टीकर	"
१. अनुविद्यतिस्तुति	मिर्चिराम	"
११. विलती	मन्त्रीधर	"

६०८३ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

वे० सं० १५५० । मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है —

१	भारती सग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	( ५ आरतिया है )
२	भारती-किह विधि भारती करी प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३	भारती-इहविधि भारती करी प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४	भारती-करो भारती आत्म देवा	विहारीदास	"	३
५	पद सग्रह	द्यानतराय	"	१७
६	पद-ससार अथिरे भाई	मानसिंह	"	४०
७	पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८	पद-सग्रह	भूधरदास	"	६७
९	पद-जाग पियारी अब क्या सोवै	कवीर	"	७७
१०	पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११	सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२	भारती सिद्धो की	खुशालचन्द	"	८१
१३	गुरुमष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४	साधु की भारती	हेमराज	"	८५
१५	वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६	पार्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

१७	नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८	पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९	पद-उठ तेरो मुख देखू नामिजी के नदा	टोडर	"	१४५
२०	पद-देखो भाई आज रिपम घरि भावै	साहकीरत	"	"
२१	पद-सग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनन्द	"	१४६
२२	न्हवण मंगल	वसो	"	१४७
२३	क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४९





गुटका-सूचक १

५	नेमीद्वर राजुल की लहरि (बाह्यभाग)	शैतसिंह साह	हिन्दी	
६	ज्ञानपंचमीवृत्त स्तवन	समयगुदर	"	
७	मादीद्वरगीत	रगविषय	"	
८	बुरालगुरस्तवन	जिनरगमूरि	"	
९	"	समयगुदर	"	
१०	बीबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११	जिनस्तवन	वनमकीति	"	
१२	भोगीदान की जन्म कुण्डली	×	"	जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २१ । भा० ५३×५५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३०

संपूर्ण । वे० सं० १५५५ ।

विशेष—सत्वार्षगुप्त तथा पपावतीस्तोत्र है । मलारना में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४-७६ । भा० ७×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल/ । संपूर्ण

वे० सं० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. श्वेताम्बर मत के ८४ बोन जगरूप हिन्दी २० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८६६ भागोज मुदी ३ ।

२. प्रतविधानरासो दीलतराम पाटनी हिन्दी २० काल सं० १७६७ भागोज मुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ५-१०३ । भा० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०

१८६६ । संपूर्ण । वे० सं० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. मुदामा की वारहपट्टी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डली महाराजा श्याई जगतसिंहजी की × संस्कृत १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रबी ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सदासुख ।

६०९०. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ३० । भा० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×

पूर्ण । वे० सं० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है ।

६०६१ गुटका सं ५७। पत्र सं ११। भा ६×२२ इ । भाषा संस्कृत हिन्दी। के नाम ×। पूर्ण। के सं १२२।

विषय—सामान्य पुमा पाठ संग्रह है।

६०६२ गुटका सं ५८। पत्र सं १२। भा ६×२२ इ । भाषा—संस्कृत। विषय—साहित्य। के नाम ×। पूर्ण। के सं १२२२।

विषय—समुद्रोत्थितकन्यासर्व्व वृत्त शास्त्र पर प्रथिमा है।

६०६३ गुटका सं ५९। पत्र सं १३। भा ६×२२ इ । भाषा—हिन्दी। के नाम सं १२२३। भाषा सं १२२३। पूर्ण। के सं १२२३।

विषय—ईशान्य वृत्त विणटी सप्तक बना संस्कृत वृत्त अठारह मते का नीबलिका है।

६०६४ गुटका सं ६०। पत्र सं १४। भा ६×२२ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत। के नाम ×। पूर्ण। के सं १२२४।

विषय—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६५ गुटका सं ६१। पत्र सं १५। भा २२×२४ इ । भाषा—हिन्दी। के नाम ×। के नाम ×। पूर्ण। के सं १२२५।

विषय—विष्णु पुस्तक पाठ है।

१	नवित	कन्दमाला	हिन्दी	१२-१०
---	------	----------	--------	-------

विषय—१ नवित है।

२.	राजमन्त्रा के दोहे	वीरपी	"	१११-११५
----	--------------------	-------	---	---------

३	साधुवाला	सप्तम	"	१२ दोहे हैं ११५-१२१
---	----------	-------	---	---------------------

६०६६ गुटका सं ६२। पत्र सं १७। भा ६२×२६ इ । भाषा—हिन्दी। के नाम ×। पूर्ण। के सं १२२६।

विषय—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६७ गुटका सं ६३। पत्र सं १८। भा ६२×२६ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी। के नाम सं १७ १ महापुरी ४। पूर्ण। के सं १२२७।

विषय—गुटके के पुस्तक पाठ विष्णु प्रसार है।

१	अष्टाध्यायात्मको	विष्णुगीति	हिन्दी	१२५
---	------------------	------------	--------	-----

गुटका संसद ]

०	रोहिणी विहितता	बंसीनाम	हिन्दी	१४६-६०
			१० पात्र म० १६६५ उद्देश्य मुद्रा ० ।	
	विषय—	मासिक से पत्राचार हट, उच्च गुण गुणितवा भई		
		प्रातिहासिक नगर गुणितवा, धर्मशास्त्र विद्या विहितता ॥		
		कृतिका कीर्ति विहितता, विद्या विहितता भाषा मंगलता ।		
		सा विद्या से विद्या गुणित, सा विद्या से विद्या ॥०८॥		
		प्रकाशक मंगल से उद्देश्य, उच्च गुणित मंगल मंगलता ॥		
		सभी मंगल विहितता उच्च गुणित मंगल मंगलता ॥०७॥		
		इति रोहिणीविहितता मंगलता ॥		

१,	विद्यार्थीमंगलता	मंगलता	हिन्दी	१७०
२	राजपत्र मंगल मंगलता	मंगलता	संस्कृत	१७४-१८६
३	विद्यार्थी मंगलता	मंगलता	हिन्दी	१८३-१८६
६	विद्यार्थीमंगलता	मंगलता	"	१४१

६०६८ गुटका सं० ७४ । पत्र म० २२-३० । पा० ६१५८ ६० । भाषा-हिन्दी । मंगलता ४ गुणितवा । म० म० १४६८ ।

विषय—हिन्दी मंगलता मंगलता ॥

६०६९ गुटका सं० ७४ । पत्र म० १०४ । पा० ६१५९ ६० । भाषा-मंगलता हिन्दी । म० मंगलता सं० १८८४ । मंगलता । म० सं० १४६६ ।

विषय—गुटका से गुणितवा विहितता मंगलता ॥

१	मंगलता	मंगलता	मंगलता	मंगलता	१६०-२६
---	--------	--------	--------	--------	--------

विषय—मंगलता से मंगलता हिन्दी मंगलता मंगलता ॥

हिन्दी मंगलता मंगलता मंगलता मंगलता मंगलता मंगलता ॥

२	गुटका मंगलता	मंगलता	हिन्दी	
---	--------------	--------	--------	--

६१०० गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १४ । पा० ७१५९ ६० । भाषा-हिन्दी । म० मंगलता ४ । मंगलता । म० म० १४७० ।

विषय—मंगलता उच्चगुणितवा मंगलता मंगलता ॥

११०१ गुटका सं २७। पत्र सं ७२। भा १०४१ ह। भागा-बंस्तुत। ले काज सं १७७७  
 पुरी। सं १२७१।

विशेष—विष्णु पाठ है—

१ कृष्णतलवरी	पुष्प	हिन्दी	७१२ पंजे है।
२ अम्बाजी कवित	वीर बंस्तुत	"	
३ कवित कुपलकोट का	विष्णुपाठ	"	

११०२ गुटका सं २८। पत्र सं ७२। भा १०४२ ह। भागा-बंस्तुत हिन्दी। ले काज X।  
 पुरी। सं १२७२।

विशेष—बामनाथ पाठों का संकल है।

११०३ गुटका सं २९। पत्र सं १११। भा ७०४३ ह। भागा-हिन्दी बंस्तुत। ले काज X।  
 पुरी। सं १२७३।

विशेष—बामनाथ पाठों का संकल है।

११०४ गुटका सं ३०। पत्र सं १११। भा ७०४४ ह। भागा-बंस्तुत हिन्दी। ले काज X।  
 पुरी। सं १२७४।

विशेष—पुष्प पाठ विष्णु प्रकार है।

१ लकुण्ठवार्धपुष्प	X	बंस्तुत	
२ बाटावना कविबीरवतार	X	हिन्दी	१२ पंजे है

११०५ गुटका सं ३१। पत्र सं १११। भा ७०४५ ह। भागा-बंस्तुत हिन्दी। ले काज सं  
 ११४ भागवा पुरी ६। पुरी। सं १२७५।

विशेष—पुष्प पाठ विष्णु प्रकार है।

१ बाटावनी	X	हिन्दी	११
२ विपरी-वार्ध विनीश्वर कविसे दे कविपुत्र मुकुण्ठ तपु बजार दे	पुष्पकविष्णु	"	१०

३ पर-विष्णु बाटावना देवी विष्णु बामनाथ परबटाप  
 व्यास है

४ पर-देवी देवली शिव काज ही विष्णु ३ बार  
 वीनाराज

## शुटका-संग्रह ]

५. पद—नेमकवार रो वाटडी हो राणी राजुल जोवै खडी हो खडी	बुधालचद	हिंदी	४१
६. पद—पल नही लगदी माय में पल नहि लगदी पीया मो मन भावै नेम पिया	बखतराम	"	४३
७. पद—जिनजी को दरसण नित करा हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"	"
८. पद—तुम नेम का भजन कर जिनसे तेरा भला हो	बखतराम	"	४४
९. विनती	मजैराज	"	४८
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	मपूर्णा ४९
११. पद—भोग दुखदार्द तजमवि	जगतराम	"	५०
१२. पद	नवलराम	हिन्दी	५१
१३. ,, ( मङ्गल प्रभाती )	विनोदीलाल	"	५२
१४. रेखाचित्र	म्यादिनाथ, चन्द्रप्रभ, वद्धमान एव पार्वनाथ	"	५७-५८
१५. वसतपूजा	मजैराज	"	५९-६१

विशेष—ग्रन्थिम पद्य निम्न प्रकार हैं —

भाँवरि सहर सुहावणू रति बसत कू पाय ।

मजैराज करि जोरि की गावै हो मन वच काय ॥

६१०६ शुटका स० ६२ । पत्र स० १२० । मा० ६×५½ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १९३८ पूर्ण । वे० स० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७ शुटका स० ६३ । पत्र स० १७ । मा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १५८१ ।

विशेष—देवाग्रह कृत पद एव भूधरदास कृत गुप्तमो की स्तुति है ।

६१०८ शुटका स० ६४ । पत्र स० ४० । मा० ८½×५½ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६७ । मपूर्णा । वे० स० १५८० ।



६११८ शुद्धका सं० ७५ । पत्र सं० ६ । प्रा० ६१/५३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० पात्र / । प्रपूर्णा ।

वे० सं० १५६६ ।

विशेष—संग्रह एव प्रकाशित किया है ।

६११९ शुद्धका सं० ७५ । पत्र सं० १० । प्रा० ६५/५३ १० । भाषा-हिन्दी । ले० पात्र X । प्रपूर्णा ।

वे० सं० १५६८ ।

विशेष—ताम्रलेखनी भाषा एवं मार्गम परंपरा दर्शाता है ।

६१२० शुद्धका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । प्रा० ६०/४६ ६० । भाषा-संस्कृत । विषय-विज्ञान ।

ले० पात्र X । प्रपूर्णा । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—उत्पत्तिसिद्धता तत्त्वदर्शक है ।

६१२१ शुद्धका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । प्रा० ६४/४२ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० पात्र X । प्रपूर्णा ।

वे० सं० १६०० ।

विशेष—तत्त्वज्ञान-दृष्टि की भाषा का दर्शन है ।

६१२२ शुद्धका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । प्रा० ६४/४३ ६० । भाषा-संस्कृत । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उत्पत्तिसिद्धता तत्त्वदर्शक है ।

६१२३ शुद्धका सं० ७९ । पत्र सं० १० । प्रा० ७४/५५ ६० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० सं० १६०२ । ताम्रलेखनी भाषा पाठ है ।

६१२४ शुद्धका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । प्रा० ४४/३३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—श्यामला, प्रमोदराज, जगन्नाथ एव बुद्धका के पदों का संग्रह है ।

६१२५ शुद्धका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । प्रा० ४४/३३ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-विज्ञान-साहित्य ।

ले० पात्र X । प्रपूर्णा । वे० सं० १६०६ ।

६१२६ शुद्धका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । प्रा० ४४/३३ ६० । भाषा-संस्कृत । विषय-बुद्धका-स्तोत्र । ले०

पात्र X । प्रपूर्णा । वे० सं० १६०७ ।

६१२७ शुद्धका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । प्रा० ६४/५५ ३ ६० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० पात्र /

प्रपूर्णा । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—संस्कृतभाषा-स्तोत्र एव पदों का संग्रह है ।



६१८८ गुटका स ८२। पत्र सं १२। भा ८२×९६। भाषा-हिन्दी। के काल×। मुद्रा।

के स १९११।

विषय—वेपथुस्य इव पत्तों का संग्रह है।

६१८९ गुटका सं० ८३। पत्र सं ४। भा ६२×४३। भाषा-हिन्दी। के काल १७२१।

मुद्रा। के सं १९२६।

विषय—अष्टम एवं अकरम के नर तथा मेनीराम इव कन्यासुभिरारोचयता है।

६१९० गुटका स ८४। पत्र सं ७-१२८। भा ६२×३२। भाषा-हिन्दी। के काल १८१४

मुद्रा। के स १९२७।

विषय—गुजलों का संग्रह है।

६१९१ गुटका सं ८५। पत्र सं २५। भा ६३×३३। भाषा-संस्कृत। के काल×। मुद्रा।

के सं १९२८।

विषय—विश्व वैदिकिक पूजा पत्तों का संग्रह है।

६१९२ गुटका सं ८६। पत्र सं १९। भा ७०×४६। भाषा-हिन्दी। के काल×। मुद्रा।

के स १९२९।

विषय—अनन्यरत्न इव धार्मिक धर्मिण्यार की पुजा है।

६१९३ गुटका स ८७। पत्र सं २६। भा ६३×७६। भाषा-हिन्दी। के काल १९१८।

मुद्रा। के स १९३०।

विषय—स्वस्वयम्बु इव विद्वत्केषु की पुजाओं का संग्रह है।

६१९४ गुटका स ८८। पत्र सं ७२। भा ६३×९६। भाषा-हिन्दी। के काल सं १९१४

मुद्रा। के सं १९३१।

विषय—भारत के १९ पत्तों पर १ से २ तक पृष्ठों हैं जिसके ऊपर वीरि तथा गृहकारण के १७ वीरि हैं। विरार के अतिरिक्त तथा अतिरिक्त वीरि भी तथा प्राप्ति है।

६१९५ गुटका स ८९। पत्र सं ९। भा २०×४६। भाषा-हिन्दी। के काल×। मुद्रा।

के सं १९३२।

विषय—बीजुक एवमद्वया ( संघ संघ ) तथा अतिरिक्त साम्बो धर्मिण्य है।

६१९६ गुटका सं ९०। पत्र सं ३०। भा २०×४६। भाषा-संस्कृत। के काल×। मुद्रा।

के सं १९३३।

विशेष—सधीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था । स्तोत्रों का सग्रह है ।

६१३७ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ८-११ । भा० ६×५ इ० । भाषा गुजराती । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० सं० १६६४ ।

विशेष—वृहत्संहिता खम्मण विवाह वर्णन है ।

६१३८ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । भा० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

र्णा । वे० सं० १६६७ ।

विशेष—सत्त्वार्थसूत्र एव पद ( चारु रथ की वजत बधाई जी सब जनमन आनन्द दाई ) है । चारो

थों का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था ।

६१३९ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ७६ । भा० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

र्णा । वे० सं० १६६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६१४० गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६० । भा० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० सं० १६६९ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है ।

६१४१ गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५८ । भा० ७×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।

वे० सं० १६७० ।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैचे, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एव शनिश्चरदेव की कथा है ।

६१४२ गुटका सं० ६९ । पत्र सं० २-१२ । भा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० १६७१ ।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातिया

जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है । गुमानोराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा गया ।

६१४३ गुटका सं० १०० । पत्र सं० ५४ । भा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० १६७२ ।

विशेष—वनारसीदास कृत समयसार नाटक है । ५४ मे आगे पत्र खाली हैं ।

६१४४ गुटका सं० १०१ । पत्र सं० ८-२५ । भा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले०

काल सं० १८५२ । अपूर्णा । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एव हिन्दी पाठ हैं ।

११४४ गुटफा स० १०२ । पत्र सं ३३ । मा ७५७ ह । माता-हिन्दी संस्कृत । नै बल ।  
 पपूर्व । नै सं १९७४ ।

विशेष—बाण्डकरी (सूण) बरक बोहा (बुबर) उल्पायुन (उमरुवादि) तथा फुरकर बरिया है ।

११४६ गुटफा स १३ । पत्र सं १६ । मा ३५४ ह । माता-संस्कृत । नै बल X । पूर्व ।  
 नै सं १९७३ ।

विशेष—विपाण्डाट, निर्वासनाथ तथा मछमररुतोष एवं परोपह बर्ख है ।

११४७ गुटफा स १४ । पत्र सं ३ । मा ३५३ ह । माता-हिन्दी । नै बल X । पूर्व ।  
 नै सं १९७१ ।

विशेष—बखारमेन्दीदुख बाण्डमाला, बाईय धरिबह, डोलहफारण बावना पाकि है ।

११४८ गुटफा स० १५ । पत्र सं ११४७ । मा ३५२ ह । माता-हिन्दी । नै बल X ।  
 पपूर्व । नै सं १९७७ ।

विशेष—स्वरोष्य के पाठ है ।

११४९ गुटफा सं १६ । पत्र सं ३६ । मा ७५३ ह । माता-संस्कृत । नै बल X । पूर्व ।  
 नै सं १९७५ ।

विशेष—बाण्ड मानवा पत्रमवल तथा बखारमण पुना है ।

११५ गुटफा स १७० । पत्र सं । मा ७५३ । माता-हिन्दी । नै बल X । पूर्व । नै  
 सं १९७३ ।

विशेष—धमोरबिहारमहाम्य निर्वासनाथ (सिंग) फुरकर पत्र एवं मेमिलाल के बल बल है ।

११५१ गुटफा सं १७० । पत्र सं २५ । मा ७५३ ह । माता-हिन्दी । नै बल X ।  
 पपूर्व । नै सं १९ ।

विशेष—वेवाण्डा कृत अविदुन की भीमरी है ।

११५२ गुटफा सं १८ । पत्र सं ३९ । मा ३५६ ह । माता-हिन्दी । विश्व-ब्रह्म । नै  
 बल X । पपूर्व । नै सं १९ ।

विशेष—१ से ५ तथा ३५ से ३९ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ है —

१ हुरवी के बोहा X हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४ ४४ से ३२१ बोहे तक हैं पाके नहीं हैं ।

हुरवी रचना ही नहीं, ऐसा पत्र न होर ।

विषयानुसारी नहीं फिर बोहे किहि थीर ॥ १९१ ॥

हजी हरजी ओ तहै रसना बारवार ।

विष तजि मन त नयो त लूँ जमन नाहि तिहि बार ॥ १६८ ॥

२ पुन्य-स्त्री मराद	रामचंद	हिंदी	१२ पद्य है ।
३ फुटकर कवित्त ( शृ गार रस )	×	”	४ कवित्त है ।
४ दिल्ली राज्य का ब्योरा	×	”	

विशेष—बोहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५ माध्यासीसी के मध्य प यात्र हैं ।

६१५३ गुटका सं० ११० । पद्य सं० ६७ । प्रा० ७५४ २० । भाषा-हिंदी सम्बन्ध । विषय-सग्रह ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणराज, भातामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६१५४ गुटका सं० १११ । पद्य सं० ३८ । प्रा० ६५८ । भाषा हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणराज-नेत्रग पद सग्रह-सूत्ररत्न, जाया, मनोहर, नेत्रग, पद-महाप्रतीति ( तेना देव जिनद है तेयो नहि प्रानी ) तथा चौरासी गोश्रोतसि वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५ गुटका सं० ११२ । पद्य सं० ६१ । प्रा० ७५६ ३० । भाषा-संस्कृत । विषय-य । ले०

काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष—जैनेतर स्तोत्रो वा सग्रह है । गुटका पेनसिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६ गुटका सं० ११३ । पद्य सं० १३६ । प्रा० ६५४ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले०

काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० वा १०००० वा, ११ वा २० वा यत्र, दोहे, पासा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद सग्रह तथा राजस्थानी में शृ गार के दोहे हैं ।

६१५७ गुटका सं० ११४ । पद्य सं० १२३ । प्रा० ७५६ ६० । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रद्धा परीक्षा ।

ले० काल × । १८०४ अष्टादश शताब्दी । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाठुर हमीरसिंह पिनवाडी वालो की है खुशालचन्द ने पाठ्या में प्रतिलिपि की थी । गुटका सजिन्द है ।

६१२८. गुरुद्वय सं ११५। पत्र प ३२। पृ ६ × १६। भाषा—हिन्दी। ले काग ×।  
 पृष्ठ। के सं ११३।

विशेष—सांख्यिक मुद्रण है।

६१२९. गुरुद्वय सं ११६। पत्र सं ७७। पृ ६ × १६। भाषा—हिन्दी। ले काग ×। पृष्ठ।  
 के सं १२।

विशेष—हुटका समित्य है। ज्योतिषियों के ८४ योग विहित कवियों के पद्य तथा दीर्घाल मन्त्ररत्नी  
 के पुन मालापीतान श्री व १९१९ की कल्प पत्री तथा सांख्यिक मुद्रण है।

६१३०. गुरुद्वय सं ११७। पत्र सं ११। भाषा—हिन्दी। ले काग ×। पृष्ठ। के सं १७१।

विशेष—मिथ्य विषय पुन्या संघ है।

६१३१. गुरुद्वय सं ११८। पत्र सं ७६। पृ ६ × १६। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काग ×।  
 पृष्ठ। के सं १७२।

विशेष—पुन्या पाठ एवं स्थान संघ है।

६१३२. गुरुद्वय सं ११९। पत्र सं २४। पृ ६ × १६। भाषा—हिन्दी। ले काग व १८९१  
 पृष्ठ। के सं १७११।

विशेष—मन्त्रपत्र पीठा हिन्दी पद्य डीका तथा मणिकेयोपस्थान हिन्दी पद्य में हैं दोनों ही पृष्ठ हैं।

६१३३. गुरुद्वय सं १२०। पत्र सं ३२-१९। पृ ६ × १६। भाषा—हिन्दी। ले काग ×।  
 पृष्ठ। के सं १७१२।

विशेष—गुरुके के पुन्य पाठ मिथ्य प्रचार है—

१. मन्त्ररत्नी	विषय	हिन्दी	पृष्ठ	१९४१
२. पृष्ठप्रारम्भ	"	"	"	४४२

विशेष—पुन्या का मन्त्र रीतिमन्त्र मन्त्रप्रारम्भ मिथ्य प्रचार है—मन्त्र मन्त्र पुन्या पुन्या दीर्घ, मन्त्र,  
 दीर्घ मन्त्र इनकी मन्त्रेण ही मन्त्र मन्त्र पुन्या है।

३. मन्त्ररत्नी पुन्या	सांख्यिक	"	६ सं १९७८ २-१३
४. पृष्ठप्रारम्भ	×	"	"

६१३४. गुरुद्वय सं १२१। पत्र सं ११२१। पृ ६ × १६। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले काग  
 ×। पृष्ठ। के सं १७१३।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१	गुरुजयमाला	ग्रहा जिनदास	हिन्दी	१३
२	नन्दीश्वरपूजा	मुनि सफलकीर्ति	संस्कृत	३८
३	सरस्वतीस्तुति	भाशाधर	”	५२
४	देवशास्त्रगुरुपूजा	”	”	६८
५	गणधरवल्लय पूजा	”	”	१०७-११२
६	भारती पञ्चपरमेष्ठी	प० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्थ में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गन्ध वलात्कार गण मूल सघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शातिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

६१६५ गुटका स० १२२। पत्र स० २८-१२६। मा० ५३×५ ६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल ×। अपूर्ण। वै० स० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६ गुटका स० १२३। पत्र स० ६-४६। मा० ६×४ ६०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वै० स० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७ गुटका स० १२४। पत्र स० २५-७०। मा० ४×५ ३ ६०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वै० स० १७१६।

विशेष—विनती रूपग्रह है।

६१६८ गुटका स० १२५। पत्र स० २-४५। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० स० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९ गुटका स० १२६। पत्र स० ३६-१८२। मा० ६×४ ६०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वै० स० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७० गुटका स० १२७। पत्र स० ३६-२४६। मा० ८×४ ३ ६०। भाषा—गुजराती। लिपि—

हिन्दी। विषय—कथा। २० काल स० १७८३। ले० काल स० १६०५। अपूर्ण। वै० स० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१ गुटका सं १२८। पत्र सं ३१-६२। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी संस्कृत। के का सं १७२।

विशेष—पुस्तक पाठ संस्कृत है।

६१७२ गुटका सं १२९। पत्र सं १२। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी। के का सं १७२।

विशेष—महाभारत भाषा एवं श्रीबीवी रचना भाषा है।

६१७३ गुटका सं १३०। पत्र सं २-१६। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी पत्र। के का सं १७२।

एकहीपुस्तकप्रकाशनार्थक ३२ से १ तक पत्र है।

अभिलेख— कथा प्रेम समुद्र है पाठक समुद्र मुक्तान।

प्रकाशनार्थक नई, नव हिंदू प्रीति निवास ॥१॥

एहि थै एकहीपुस्तकप्रकाशनार्थक समस्त प्रकाश प्रकाश का सं ३३।

६१७४ गुटका सं १३१। पत्र सं १-४१। मा ४०४६। भाषा-संस्कृत। के का सं १७२।

विशेष—अवली अक्षरालय एवं का सं ३३।

६१७५ गुटका सं १३२। पत्र सं ३-१६। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी। के का सं १७२।

विशेष—सुमनस कथा ( व राजपत्र ) अंशकाल पत्र विद्यती अक्षरालय ( अक्षरालय महाभारत से अक्षरालय सं १२२२ अक्षरालय अक्षरालय ) भाषा पाठ है।

६१७६ गुटका सं १३३। पत्र सं २२। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी। के का सं १७२।

विशेष—समस्तार काठक एवं अक्षरालय अक्षरालय श्रीमती के ही अक्षरालय पाठ है।

६१७७ गुटका सं १३४। पत्र सं १९। मा ४०४६। भाषा-हिन्दी। के का सं १७२।

विशेष—सामान्य पाठ संस्कृत है।

६१७८ गुटका सं १३५। पत्र सं ४९। मा ४०४६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। के का सं १७२।

१ पद- राखो हो वृजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२ ,, महिडो विसरि गई लोह कोउ काह्नन	मल्लूकदास	”
३ पद-राजा एक पडित पोली तुहारो	सूरदास	हिन्दी
४ पद-मेरो मुखनीको अक तेरो मुख धारी ०	चद	”
५ पद-अव मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	”
६ पद-भादि गये दिन साहिब विना सतगुरु चरण सनेह विना	”	”
७ पद-जा दिन मन पछी उठि जी है	”	”

फुटकर मन्त्र, धोपधियों के नुसखे आदि हैं ।

६१७६. गुटका स० १३६ । पत्र स० ५-१६ । मा० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल १७५४ । अपूर्ण । वे० स० १७५५ ।

विशेष—वल्हाराम, देवाग्रह्य, चैनसुख आदि के पदों का सग्रह है । १० पत्र से आगे खाली हैं ।

६१८०. गुटका स० १३७ । पत्र स० ८८ । मा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १७५६ ।

विशेष—बनारसोबिलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरपचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूषर एवं किसनगुलाब के पदों का सग्रह है ।

६१८१ गुटका स० १३८ । पत्र स० १२१ । मा० ६३×५ इ० । वे० स० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१ बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी संस्कृत
२ नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३ क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	”
४ हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	”
६. शिखर विलास भाषा	घनराज	”

२० काल स० १८४८

६१८२ गुटका स० १३९ । पत्र स० ३-४६ । मा० १०३×७ इ० । भाषा-हिन्दी प० । ले० काल स० १९५५ । अपूर्ण वे० स० २०४० ।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है । भैरूलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।



११८३ तुलका सं १४०। पत्र सं ४-४३। भा १ २×७६। भाषा-संस्कृत। के पत्र सं ११६। भाषा-संस्कृत। के सं २ ४६।

विशेष—सप्तमस्य धुरि कृत समस्तार कृति है।

११८४ तुलका सं १४१। पत्र सं ३-१६। भा १ २×६२। भाषा-हिन्दी। के पत्र सं १८२३। भाषा-संस्कृत। के सं २ ४६।

विशेष—सप्तमस्य कृत वीरवधोत्सव (१ सं १६४६) तथा बगारतीविलास धरि के पत्र है।

११८५ तुलका सं १४२। पत्र सं ४-६३। भाषा-हिन्दी। के पत्र सं १८२४। भाषा-संस्कृत। के सं २ ४७।

विशेष—सप्तमस्य कृत सर्वाधिकृत हिन्दी टन्ना टीका रचित है।

११८६ तुलका सं १४३। पत्र सं ११-१७१। भा ७३×६२। भाषा-संस्कृत। के पत्र सं १९१३। भाषा-संस्कृत। के सं २ ४७।

विशेष—गूढा स्तोत्र धरि पाठों का संग्रह है।

संघ १९१३ वर्षे बनारस धुरी २ दिने श्री मुद्रासि धरतलवीरवीर वल्लभारणसे श्रीधरिगतसर्वलोकपामो बुधसन्ने व श्रीधरकरीति व बुधगरीति व धानसुवण व विभवकरीति व बुधसन्ने, भा बुधसन्ने व श्रीधरकरीति व मन्त्रकरीति कुलसन्ने।

११८७ तुलका सं १४४। पत्र सं ४६। भा ४×६६। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। के पत्र सं १९९। भाषा-संस्कृत। के सं २ ४६।

विशेष—विष्णु पाठों का संग्रह है।

क्र. सं.	कृति-नाम	भाषा	हिन्दी	के पत्र सं.
१	बुधसन्नेकथा	भारतभाषा	हिन्दी	१९७७
२	श्रीधरकरीति	×		
३	बुधगरीति	सहितकरीति		
४	धानसुवणकथा	व धानसुवण	"	
५	विभवकरीति	विभवकरीति	"	
६	बुधसन्नेकथा	श्रीधरकरीति [ व विभवकरीति के विषय ]		
७	श्रीधरकरीति	श्रीधरकरीति	"	१९७८
८	मन्त्रकरीति	मन्त्रकरीति	"	१९७९

## गुटका संग्रह ]

६ निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी
१० सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"
११ अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	"
१२ वारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"

६१८८ गुटका स० १४५। पत्र स० २१६। मा० ६×६ $\frac{१}{२}$  इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ विशुदावली ( पट्टावलि )	×	संस्कृत	७
२ सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३ दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४ दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	६०
५ मेरुपूजा	"	"	
६ चौरासो न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासो जातिमाला भी है।

७ आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८ अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९ सप्तश्रृंगपूजा	भ० देवेन्द्रकौत्ति	संस्कृत	१७६
१० ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११ ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२ पञ्चलक्ष्मणपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१६१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४ व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५ आदित्यनारकथा	प० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९ गुटका स० १४६। पत्र स० ११-८८। मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १७०१। अपूर्ण। वे० स० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एव नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१६० गुटकसं १५०। पत्र सं १-६१ वा ४०४६ द। भाषा-बसन्त। ले कल X।  
 पत्र सं २१५१।

विलेख—शोभा का संग्रह है।

६१६१ गुटकसं १५५। पत्र सं १२। वा X१ द। ले कल सं १५४१। पत्र सं २१५०।

१ पञ्चमहाशुक्ल	हरिचन्द्र	हिन्दी	१-२
			२ कल सं १५१२ लैट्ट बुटी ७

२ वैराग्यप्रयोगशासन	देवप्रदीपति	संस्कृत	
---------------------	-------------	---------	--

विलेख—श्रीमिठा में अत्रयय श्रीवालय के प्रतिमिति हुई थी।

३ पट्टासि	X	हिन्दी	१२
-----------	---	--------	----

६१६२ गुटकसं १५६। पत्र सं २१। वा १X६ द। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। ले  
 कल सं १ २२ लैट्ट बुटी १२। पत्र सं २१६१।

विलेख—विद्यार भाषा का वर्णन है। आदिमकाल के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३ गुटकसं १६१। पत्र सं १४६। वा ४X६ द। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले कल  
 १०१०। पत्र सं २१६२।

विलेख—पुना पत्र एक दिल्ली की वाक्यावली का श्लोक है।

६१६४ गुटकसं १६१। पत्र सं ६२। वा ६X६ द। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले कल X।  
 पत्र सं २१६३।

विलेख—वार्ताला शोभाय अमला अर्थां तथा अक्षयप्रयोग आदि है।

६१६५ गुटकसं १६२। पत्र सं ४। वा ७X६ द। भाषा संस्कृत हिन्दी। ले कल X  
 पत्र सं २१६४।

विलेख—शासलय पुना पत्र संग्रह है।

६१६६ गुटकसं १६३। पत्र सं २०-२३१। वा १२X६ द। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले  
 कल X। पत्र सं २१६५।

विलेख—शासलय पुना पत्र संग्रह है।

६१६७ गुटकसं १६४। पत्र सं २७-१४०। वा ४X६ द। भाषा-हिन्दी। ले कल X।  
 पत्र सं २१६६।

विलेख—शासलय पुना पत्र संग्रह है।

## गुटका-संग्रह ]

६१६८ गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। ले० काल X। अपूर्ण।

वे० सं० २१६६।

विशेष—समवधारण पूजा है।

६१६९ गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। भा० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य में है।

६२०० गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। भा० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१ गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। भा० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—प्रायुर्वेद। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—प्रायुर्वेदिक मुसल्ले हैं।

६२०२ गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। भा० ७X५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३ गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। भा० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा बड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ बारहमासा, प्राणीवा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सबैया आदि है।

६२०४ गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। भा० ६X४३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६०५ गुटका सं० १६१। पत्र सं० १२। भा ७×६ इ। भाषा-माहुर हिन्दी। के पत्र ×।  
 पत्र सं० २२ १।

विषय—पालक प्रतिबन्धण हिन्दी धर्म लक्षित है। हिन्दी घर कुनरणी का प्रभाव है।

१ से २ तक की विन्दी के पत्र हैं। इसके बीच बीच हैं १ से ६ तक की विन्दी के ११ अर्थों का पत्र है। इसके १२ पत्र हैं।

६१ ६. गुटका सं० १६२। पत्र सं० १६-४६। भा ६×७ इ। भाषा-हिन्दी। विषय-पर।  
 के पत्र सं० १६२२। पत्र सं० १२ २।

विषय—कैवप व्यवस्था नवत नवदेव नरुतक व्यवस्था नवाश्रीपत्र गुणालक, कुनरन भाग्य  
 धर्मि कवियों के विभिन्न रूप परिचिन्तियों के पत्र हैं।

६२ ७ गुटका सं० १६३। पत्र सं० ११। भा ३×६ इ। भाषा-हिन्दी। के पत्र ×।  
 पत्र सं० २२ ७।

विषय—दिलि विषय गुना पत्र है।

६२ ८ गुटका सं० १६४। पत्र सं० ७७। भा ६×६ इ। भाषा-संस्कृत। के पत्र ×।  
 पत्र सं० २२ ८।

विषय—विभिन्न स्तियों का संग्रह है।

६२ ९ गुटका सं० १६५। पत्र सं० ३२। भा ६×७ इ। भाषा-हिन्दी। विषय-पर। के  
 पत्र ×। पत्र सं० २२ ९।

विषय—नवत व्यवस्था उदयन कुनरणी वैगविनव वैद्यन नोपन वैगनुप, नवत  
 भाग्यन कुनर, साद्विद्यन विनीटीन धर्मि कवियों के विभिन्न रूप परिचिन्तियों के पत्र हैं। कुनर नोमश्रीपत्र  
 के प्रतिनिधि नरवाई की।

६३ १ गुटका सं० १६६। पत्र सं० २४। भा ६×७ इ। भाषा-हिन्दी। के पत्र ×।  
 पत्र सं० २२ ११।

१. अष्टादश नवत का श्रीवर्तिका	नोट	हिन्दी	१ ७
२. मुर्तुनानाश्रीपत्र	साद्विद्यन	"	१-११

६३ २ गुटका सं० १६७। पत्र सं० १४। भा ६×७ इ। भाषा-संस्कृत। विषय-पर।  
 के पत्र ×। पत्र सं० २२ १२।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीधा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा हालस्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं ।

६२१२ गुटका सं० १६८ । पत्र सं० १२-३६ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—वृन्द सतसई है ।

६२१३ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ४० । आ० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । ले०  
काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का सग्रह है ।

६२१४ गुटका सं० १७० । पत्र सं० ६६ । आ० ८×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सग्रह ।  
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश हैं ।

६२१५ गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ३-८१ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।  
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१६ ।

विशेष—ऋगतराम के पदों का सग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६ गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० २२१७ ।

विशेष—प्रायुर्वेदिक नुसले एव रति रहस्य है ।

## अवशिष्ट-साहित्य

६२१७ अष्टोत्तरीस्नानविधि । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि  
विधान । २० काल × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८ जन्माष्टमीपूजन । पत्र सं० ७ । आ० ११ इ० × ६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९ तुलसीविवाह । पत्र सं० ५ । आ० ६ इ० × ४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—विधिविधान ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२० परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण) । पत्र सं० २ । आ० ६ इ० × ४ इ० । भाषा—  
हिन्दी । विषय—नापने तथा तोलने की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३७ । अ भण्डार ।

६२२१ प्रसिद्धापाठविधि—। पत्र सं २ । मा २११६ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुस्तक विधि । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७७२ । अ मन्थार ।

६२२२ प्रायश्चित्तचूडिकाटीका—नमिगुरु । पत्र सं २२ । मा २२२६ । भाषा—बंगला । विषय—भाषाप्रसंग । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २२ । अ मन्थार ।

विषय—भाषा कुलीचक्र के प्रतिविधि की थी । इसी मन्थार में एक प्रति ( वे सं २२२ ) भी है ।

६२२३ प्रति सं २ । पत्र सं १३ । ले काल × । वे सं १२ । अ मन्थार ।

विषय—टीका का नाम 'प्रायश्चित्त विधिप्रवृत्ति' दिया है ।

६२२४ मन्त्रिज्ञाकर—बनमाछी मद्रु । पत्र सं १६ । मा ११३४ × २६ । भाषा—बंगला । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२११ । अ मन्थार ।

६२२५ मद्रुबाहुसहिता—मद्रुबाहु । पत्र सं १७ । मा ११३४ × २६ । भाषा—बंगला । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२१ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति ( वे सं ११६ ) भी है ।

६२२६ विधि विद्याम—। पत्र सं ७२-१३३ । मा १२ × २६ । भाषा—उड़िया । विषय—पुस्तक विद्याम । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १३३ । अ मन्थार ।

६२२७ प्रति सं २ । पत्र सं २२ । ले काल × । वे सं १३१ । अ मन्थार ।

६२२८ समसाराखण्ड—पञ्चमहाखण्ड कुलीचक्र । पत्र सं २ । मा ११३४ × २६ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुस्तक । र काल सं १६२१ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७७२ । अ मन्थार ।

६२२९ प्रति सं २ । पत्र सं १३ । ले काल सं १२२२ भाषा—कुञ्ज ११ । वे सं ७७७ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति ( वे सं ७७६ ) भी है ।

६२३० प्रति सं ३ । पत्र सं ७२ । ले काल सं १२२ भाषा—पुरी ३ । वे सं १ । अ मन्थार ।

६२३१ प्रति सं ४ । पत्र सं १३१ । ले काल × । वे सं १७ । अ मन्थार ।

६२३२ मनुवाक्यश्रीसतीर्षहृत्पूजा—। पत्र सं २ । मा ११३४ × २६ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुस्तक । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २३ । अ मन्थार ।



# ग्रन्थानुक्रमिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शिवचर वीरवल्ल वार्ता	—	(हि०)	६८१	श्रद्धाशयनमोक्षया	ललितकीर्ति	(म०)	६६५
शिवनन्दचरित्र	—	(हि० म०)	१६०	श्रद्धाशयनमाविधान	—	(म०)	५३८
शिवलङ्काचरित्र	नायूराम	(हि०)	१६०	श्रद्धाशयनिधिपूजा	—	(स०)	४५४
शिवलङ्कादेव तथा	—	(म०)	२१३			५०६, ५३६, ७६३	
शिवलङ्कानाटक	मकननलाल	(हि०)	३१६	श्रद्धाशयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
शिवनन्दकाष्टक	भट्टाकलङ्क	(स०)	५७५	श्रद्धाशयनिधिमुद्रिकाविधानप्रतकथा	—	(स०)	२१३
			६३७, ६४६, ७१२	श्रद्धाशयनिधिमण्डल [मण्डलचित्र]	—		५२५
शिवलङ्काष्टक	—	(स०)	३७६	श्रद्धाशयनिधिविधान	—	(स०)	४५४
शिवलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कामलीवाल	(हि०)	३७६	श्रद्धाशयनिधिविधानकथा	—	(म०)	२४४
शिवनन्दकाष्टक	—	(हि०)	७६०	श्रद्धाशयनिधिप्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
शिवपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६	श्रद्धाशयविधानकथा	—	(म०)	२४६
शिवलमदवाती	—	(हि०)	३२४	श्रद्धाशयवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६७६
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयजयमान	—	(प्रा०)	४५३	श्रद्धाशयजितपुराण	पंडिताचार्य श्रुण्णमणि	(म०)	१४२
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालय जयमाल भगवतीदास	(हि०)	६६४	७२०	श्रद्धाशयजितनायपुराण	विजयसिंह	(मप०)	१४२
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६	श्रद्धाशयजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४	श्रद्धाशयजितशान्तिस्तवन	नन्दिपेण	(प्रा०)	३७६
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	—	(स०)	५१५				६८१
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	—	(हि०)	७६३	श्रद्धाशयजितशांतिस्तवन	—	(प्रा० स०)	३८१
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(स०)	४५३	श्रद्धाशयजितशांतिस्तवन	—	(स०)	३७६
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३	श्रद्धाशयजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३	श्रद्धाशयजितशांतिस्तवन	—	(हि०)	६१६
श्रद्धाशयनिधिजिनचैत्यालयपूजा	पाडे जिनदास	(स०)	४५३	श्रद्धाशयजितशांतिस्तवन	—	(स०)	४२३
				श्रद्धाशयजिजीवामोक्षया	काशीराज	(स०)	२६६



ग्रन्थ नाम	संस्कृत	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	संस्कृत	मापा पृष्ठ सं०
परीर्णनञ्जली	—	( सं ) १६९	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११४
पठार्थ वा मंत्रक [विष]	—	११२	पल्लवचतुर्दशीवधा	मुनीन्द्रकीर्ति	( सं ) ११४
पठार्थ वा स्त्रीत	—	( सं ) १४३	पल्लवचतुर्दशीवधा	म शान्तनागर	( सं ) ११४
पदार्थस्य कृष्णकुल वर्णन	—	( सं ) ४७	पल्लवचतुर्दशीवधा	म मेघचन्द्र	( सं ) १०
पठार्थ माने की वधा	श्रुति काण्डचन्द्र	( सं ) ११३	पल्लवचतुर्दशीवधा	शान्तिदास	( सं ) ११५
पठार्थ माने की वधा	आइट ( सं )	१२३ ७०२	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) १२० ७११
पठार्थ माने वा शौशाना	आइट ( सं )	७२३ ७२४	पल्लवचतुर्दशीवधा	श्री भूपल	( सं ) ११५
पठार्थ माने वा शौशाना	—	( सं ) ७२४ ७२५	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पठार्थ माने वा शौशाना	—	( सं ) ७४२	पल्लवचतुर्दशीवधा	म मुद्रा मुद्राचन्द्र	( सं ) ११५
पठार्थ माने वा स्त्रीत	—	( सं ) १२३	पल्लवचतुर्दशीवधा	कवित्तरीति	( सं ) ११५
पठार्थस्य कृष्णकुलवध	म० विनदास	( सं ) ७ ७	पल्लवचतुर्दशीवधा	पति हरिकृष्ण	( सं ) ७२
पठार्थस्य कृष्णकुलवधि	—	( सं ) १२५	पल्लवचतुर्दशीवधा	पद्मचन्द्र	( सं ) ७२०
पठार्थ [काल इय] शीतवध	शुभचन्द्र	( सं ) ४२२	पल्लवचतुर्दशीवधा	सुरेन्द्रकीर्ति	( सं ) ११५
पठार्थस्य पुत्रा	शान्तिदास	( सं ) १२२	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११
पठार्थस्य पुत्रा	—	( सं ) ७३	पल्लवचतुर्दशीवधा	गुण्यप्रसाद	( सं ) ११५
पठार्थस्य पुत्रा	—	( सं ) ११६	पल्लवचतुर्दशीवधा	श्री भूपल	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधि	हरिचन्द्र चन्द्रकाण्ड ( सं )	१४३ १४२	पल्लवचतुर्दशीवधा	मधरा	( सं ) ११५
पल्लव वा वधन [विष]	—	११२	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) १२३	पल्लवचतुर्दशीवधा	म शान्तिदास ( सं )	११ ७२३
पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) १२३	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) १५	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	हरि चन्द्रकाण्ड ( सं )	११६	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	सामवेद ( सं )	६६	पल्लवचतुर्दशीवधा	म चन्द्रकिर्ति	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	रुच्यचन्द्र ( सं )	७०६	पल्लवचतुर्दशीवधा	सुतमागर	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	अथर्वण्य प्रोक्त ( सं )	६६	पल्लवचतुर्दशीवधा	शान्तिदास	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	अथर्वण्य प्रोक्त ( सं )	६६	पल्लवचतुर्दशीवधा	सुरेन्द्रकीर्ति	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	हरि मुद्रा ( सं )	६६	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	म चन्द्रकाण्ड ( सं )	४२	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११६	पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११५
पल्लवचतुर्दशीवधा	—	( सं ) ११६	पल्लवचतुर्दशीवधा	मुद्राचन्द्र ( सं )	११५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्रन्तव्रतपूजा	श्री भूपण	(स०)	५१५	ग्रनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	७७१ ७६६
ग्रन्तव्रतपूजा	—	(स०)	४५७	ग्रनेकार्यशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(स०)	२७१
			५३६, ६६३, ७२८	ग्रनेकार्यसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
ग्रन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७	ग्रनेकार्यसंग्रह [महीपकोश]	—	(स०)	२७१
ग्रन्तव्रतपूजा	साहू सेवगराम	(हि०)	४५७	ग्रन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
ग्रन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८	ग्रन्तरिक्षपार्श्वनाथाष्टक	—	(स०)	५६०
			५१६, ५८६, ७२८	ग्रन्तरिषयव्यवच्छेदकद्वारिधिशिका	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	५७३
ग्रन्तव्रतपूजाविधि	—	(स०)	४५७	ग्रन्त्यस्कृष्ट पाठ सङ्घ	—	(हि०)	६२७
ग्रन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(स०)	२१४	ग्रनराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(स०)	६६२
ग्रन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०	ग्रनजदकेवली	—	(स०)	२७६
ग्रन्तव्रतोद्यापनपूजा	श्रा० गुणचन्द्र	(स०)	४५७	ग्रभिज्ञान शाशुन्त न	कालिदास	(स०)	३१६
			५१३, ५३६, ५४०	ग्रभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(स०)	२७१
ग्रनागारभक्ति	—	(स०)	६२७	ग्रभिधानचिंतामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
ग्रनाथी श्रृष्टि स्वप्नग्रन्थ	—	(हि० गुण०)	३७६	ग्रभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(स०)	२७२
ग्रनाथानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५	ग्रभिधानसार	प० शिवजीलाल	(स०)	२७२
ग्रनाथीसाध चौढालिया	विमलविनयगणि	(हि०)	६८०	ग्रभिषेक पाठ	—	(स०)	४५८
ग्रनाथीमुनि सज्ज्माय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				५ / ७६१
ग्रनाथीमुनि सज्ज्माय	—	(हि०)	४३५	ग्रभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(स०)	४५८
ग्रनादिनिधनस्तोत्र	—	(स०)	३७६, ६०४	ग्रभिषेकविधि	—	(स०)	३६८
ग्रनिटकारिका	—	(स०)	२५७				४५८, ५७०
ग्रनिटकारिकावचूरि	—	(स०)	२५७	ग्रभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
ग्रनित्यपञ्चोसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६	ग्रमरकोश	श्रमरसिंह	(स०)	२७२
ग्रनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५	ग्रमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(स०)	२७२
ग्रनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८	ग्रमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
ग्रनुभवविलास	—	(हि०)	५११	ग्रमरूपातक	—	(स०)	१६०
ग्रनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	५८	ग्रमृतधर्मरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(स०)	४८
ग्रनेकार्येष्वनिमञ्जरी	महीरूपणकवि	(स०)	२७१	ग्रमृतसागर	स० नवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
ग्रनेकार्येष्वनिमञ्जरी	—	(स०)	२७१	ग्ररहना सज्ज्माय	नमथसुन्दर	(हि०)	६१८
ग्रनेकार्यनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६	ग्ररहन्तस्तवन	—	(स०)	३७६

प्रथम भाग	सन्धि	मापा पृष्ठ सं	प्रथम भाग	सन्धि	मापा पृष्ठ सं
परिष्कारणी	—	( सं ) २७२	परिष्कारणी	वैश्वानर	( हि ) ११
परिष्कारणी	—	( मा ) ४२२	परिष्कारणी [विशेष स्तोत्र टीका]	आच्छादनेषु	( प ) १२२
परिष्कारणी	—	( सं ) २७२	परिष्कारणी	या विद्यामन्त्रि	( सं ) १११
परिष्कारणी	त्रिभुवनप्रणयि	( मा ) १	परिष्कारणी	सङ्घर्षीति	( सं ) २११
परिष्कारणी	ब्रह्मानन्द	( सं ) २६९	परिष्कारणी	पं मेधावी	( सं ) १११
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( हि प ) १	परिष्कारणी	—	( सं ) २११
परिष्कारणी	—	( सं ) १७	परिष्कारणी	पराधीति	( सं ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) १	परिष्कारणी	शुभचन्द्र	( सं ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) २	परिष्कारणी	प्र ज्ञानसागर	( हि ) ७१
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( हि प ) १२२	परिष्कारणी	सबमल	( हि ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) २७२ १२८	परिष्कारणी	—	( सं ) २११
परिष्कारणी	—	( सं ) १	परिष्कारणी	म० शुभचन्द्र	( हि ) १११
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( हि ) १८	परिष्कारणी	—	( सं ) १११
परिष्कारणी	त्रिभुवन म सूरि	( सं ) २	परिष्कारणी	—	( मा ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) १	परिष्कारणी	—	( सं ) १११
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( हि ) १७२	परिष्कारणी	२७० २६९ १२ ७१	
परिष्कारणी	—	( सं ) २२७	परिष्कारणी	यावत्ताराव	( हि ) २१ ७१
परिष्कारणी	—	( सं ) २२७	परिष्कारणी	—	( हि ) २११
परिष्कारणी	—	( मा ) २७२	परिष्कारणी	सुरेश्वरीति	( सं ) ११
परिष्कारणी	प्रज्ञानसागर	( सं ) २१९	परिष्कारणी	—	( सं ) २११
परिष्कारणी	—	( हि प ) ११९	परिष्कारणी	विनयधीति	( हि ) १११
परिष्कारणी	वं मनुष्य	( हि ) ७७१	परिष्कारणी	—	( सं ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) ७७१	परिष्कारणी	—	( सं ) १११
परिष्कारणी	—	( सं ) २१२	परिष्कारणी	शुभचन्द्रसूरि	( सं ) १११
परिष्कारणी	नमिच्छ	( सं ) २१	परिष्कारणी	साङ्गच्छ विनाशी	( हि ) १११
परिष्कारणी	—	( हि ) २१ ७१	परिष्कारणी	प्र ज्ञानसागर	( हि ) ११
परिष्कारणी	—	( सं ) १	परिष्कारणी	—	( हि ) २११ १
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( मा ) २६	परिष्कारणी	—	( सं ) १११
परिष्कारणी	सद्गुरुभक्तसङ्घी	( हि प ) २६	परिष्कारणी	—	( हि ) १११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
घटिकावतसूत्रा	—	(घं )	४११	घाटीधर वा लखनपुर	—	(घि )	१११
घटिकावतसूत्रा	—	(घं )	१४	घाटीधरलखन	वित्तचन्द्र	(घि )	१००
घटिकावतसूत्रा	सुदासचन्द्र	(घि )	७११	घाटीधरविष्णुमति	—	(घि )	११०
घटिकावतसूत्रा	केशवसेन	(घं )	४११	घाण्डुमारपदात	रत्नचन्द्रसोम	(घि )	११०
घटिकावतसूत्रा	—	(घं )	१४	घाण्डुमारपदात	म० कदमीचन्द्र	(घा )	११
घटिकावतसूत्रा	म० छानसागर	(घि )	७७	घाण्डुमारपदात	राजुराचार्य	(घं )	१०८
घटिकावत सूत्र	सुनि हेमचन्द्र	(घि )	४११	घाण्डुमारपदात	—	(घं )	१११
घटिकावतसूत्रा	मनहरदेव	(घि )	१११	घाण्डुमारपदात	विद्यानन्दि	(घं )	१११
घटिकावतसूत्रा	रामचन्द्र	(घि )	४११ ११	घाण्डुमारपदात	समस्तमन्त्राचार्य	(घं )	११
घटिकावतसूत्रा	म शंकरिदास	(घि )	७११	घाण्डुमारपदात	कपचन्द्र दासदा	(घि )	११
घटिकावतसूत्रा	सेवकगणम	(घि )	१०४	घाण्डुमारपदात	विद्यानन्दि	(घं )	११
घटिकावतसूत्रा	—	(घि )	४११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	१११
घटिकावत सूत्र	—	(घि )	७०४ ७११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	७११
घटिकावत सूत्र	कनकचरित	(घि )	७११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	७११
घटिकावतसूत्र	—	(घि )	४११	घाण्डुमारपदात	—	(घं )	११० ७११
घटिकावतसूत्र	कवि पदक	(घि )	७१	घाण्डुमारपदात	—	(घं )	११० १११
घटिकावतसूत्र	शमभयमुन्दर	(घि )	१११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	१११
घटिकावतसूत्र	—	(घि )	११४	११० १०० ११ १११ ११०, ७ १ ७ १, ७१४			
घटिकावतसूत्र	विमलसनाचार्य	(घं )	१११ १११	७१० ७११ ७११ ७१ ७११, ७१ ७११ ७११			
घटिकावतसूत्र	गुणचन्द्र	(घा )	१४१ १४१	७१० ७११			
घटिकावतसूत्र	श्रीकवचम	(घि )	१४४	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	१११
घटिकावतसूत्र	प्रभाचन्द्र	(घं )	१४१	घाण्डुमारपदात	शुभदेव	(घं )	११०
घटिकावतसूत्र	गङ्गादास	(घि )	७ १	घाण्डुमारपदात	—	(घं )	१११
घाटीधर भारती	—	(घि )	११४	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	१११, १११
घाटीधरवीर	रत्नचन्द्र	(घि )	७०१	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	७००
घाटीधर के १ वा	गुणचन्द्र	(घि )	७११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	७००
घाटीधरसूत्र	—	(घि )	४११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	१११
घाटीधरसूत्र	शंकरमुच्य	(घि )	११	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	७००
घाटीधरसूत्र	महाश्रीनि	(घि )	१ १	घाण्डुमारपदात	—	(घि )	११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
भारती पञ्चपरमेष्ठी	प० चिमना	(हि०) ७६१	भ्राश्रव वर्णन	—	(हि०) २
भारती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	भाषाढभूति चौडालिया	कनकसोम	(हि०) ६१७
भारती सग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	भाहार के ४६ दोपन्नर्णन	भैया भगवतीदास (हि०)	५०
भारती सग्रह	द्यानतराय	(हि०) ७७७		इ	
भारती सिद्धो की	खुशालचन्द	(हि०) ७७७	इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०) २
भाराधना	—	(प्रा०) ४३२	इन्द्रजाल	—	(हि०) ३४७
भाराधना	—	(हि०) ३८०	इन्द्रव्वजपूजा	विश्वभूषण	(स०) ४६२
भाराधना कथा कोदा	—	(स०) २१६	इन्द्रव्वजमण्डलपूजा	—	(स०) ४६२
भाराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०) ६५८	इष्टद्यत्तीसी	बुधजन	(हि०) ६६१
भाराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्त्ति	(हि०) ६८५	इष्टद्यत्तीसी	—	(हि०) ७६० ७६३
भाराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०) ७८२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(न०) ३८०
भाराधना विधान	—	(स०) ४६२	इष्टोपदेशटीका	प० आशाधर	(स०) ३८०
भाराधनासार	देवसेन	(प्रा०) ४६	इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०) ७५५
	५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४		इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य) ३८०
भाराधनासार	जिनदास	(हि०) ७५७		ई	
भाराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(स०) २१६	ईश्वरवाद	—	(स०) १३१
भाराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०) ४६		उ	
भाराधनासारभाषा	—	(हि०) ५०	उच्चग्रहफल	वलदत्त	(स०) २७६
भाराधनासार वचनिका	वा० दुलीचन्द	(हि० ग०) ५०	उणादिसूत्रसग्रह	उज्वलदत्त	(ग०) २५७
भाराधनासारवृत्ति	प० आशाधर	(स०) ५०	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(स०) १४५ ४१५
भारामशोभाकथा	—	(स०) २१७	उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(स०) १४५
भालापपद्धति	देवसेन	(स०) १३०	उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य) १४५
भालोचना	—	(प्रा०) ५७२	उत्तरपुराणभाषा	सधी पन्नालाल	(हि० गद्य) १४६
भालोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०) ५६१	उत्तराध्ययन	—	(प्रा०) २
भालोचनापाठ	—	(हि०) ४२६	उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०) ३
		६८५, ७६३, ७४६	उदयसत्तावधप्रकृतिवर्णन	—	(स०) ३
भाश्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) २	उद्वगोपीसवाद	रसिकरास	(हि०) ६६४
भाश्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०) ७००	उद्ववसदेशाख्यप्रबन्ध	—	(स०) १६०
भाश्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०) २	उपदेशद्यत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०) ३२४
			उपदेशपञ्चीसी	—	(हि०) ६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.
अनुरोधलपला	सख्खमूप्य	(बं)	३	अविद्यारक	स्वरूपचम्पू	विज्ञाना	(हिं) ३२ ३३
अनुरोधलपला	धर्मशास्त्रादि	(भा)	७२८	अपनयेवापुति	विज्ञानसेन	(बं)	१५
अनुरोधलपलाभाषा	—	(भा)	३२	अपनयेवापुति	पद्मनाभ	(भा)	१५ ३ ३
अनुरोधलपलाभाषा	देवीसिद्ध आनन्दा	(हिं)	५७	अपनयाचरित	म० सख्खभीरि	(बं)	१५
अनुरोधलपलाभाषा	बा सुधीचम्पू	(हिं)	३३	अपनयपुति	—	(बं)	३३
अनुरोधलपला	दानतटाप	(हिं)	१२३ ७५०	अपिनयच [विष]	—	(बं)	३३
अनुरोधलपला	देवदिव्य	(हिं)	१५३	अपिनयचतुष्टया	आ गुणनम्पू	(बं)	५३
अनुरोधलपला	रगविज्ञान	(हिं)	१५३				३३० ३३३ ७३
अनुरोधलपला	अपि रामचम्पू	(हिं)	१५	अपिनयचतुष्टया	मुनि ज्ञानमूपल	(बं)	५३ ३३
अनुरोधलपला	संझारी नेमिचम्पू	(भा)	३३	अपिनयचतुष्टया	—	(बं)	५३ ७३
अनुरोधलपला	संझारी नेमिचम्पू	(भा)	३३	अपिनयचतुष्टया	शैलाल आधेरी	(हिं)	५३
अनुरोधलपला	भागवत	(हिं)	३३	अपिनयचतुष्टया	—	(हिं)	७३
अनुरोधलपला	—	(भा)	५३३	अपिनयचतुष्टया	सद्गुरु कालीशर	(हिं)	७३
अनुरोधलपला	—	(बं)	३७३	अपिनयचतुष्टया	—	(भा)	३३
अनुरोधलपला	—	(हिं)	३७३	अपिनयचतुष्टया	—	(नं)	३५३ ७३
अनुरोधलपला	—	(हिं)	७ ३	अपिनयचतुष्टया	—	(बं)	३३
अनुरोधलपला	पूर्वचम्पू	(बं)	३ ३	अपिनयचतुष्टया	गीतमत्स्यी	(बं)	३ ३
अनुरोधलपला	—	(भा)	५३५				५३५ ५३ ५३३, ३५५, ७३
अनुरोधलपला	बुधचम्पू	(बं)	३३	अपिनयचतुष्टया	—	(बं)	३ ३ ३३
अनुरोधलपला	—	(बं)	३३७				३
अनुरोधलपला	—	(बं)	३३७				३
अनुरोधलपला	—	(बं)	३३				३
अनुरोधलपला	आ अरमीचम्पू	(भा)	३३				३
अनुरोधलपला	—	(बं)	३३				३
अनुरोधलपला	—	(बं)	७३३				३
	श्रु						
अनुरोधलपला	अभयचम्पू	(भा)	३३५	एकमीशुनरुत	बीरवर्तन	(हिं)	७३
अनुरोधलपला	अतिहास	(नं)	३३३	एकमरकोप	बुधचम्पू	(बं)	३३
अनुरोधलपला	—	(बं)	७३३	एकमरकोप	—	(नं)	३३
				एकमरकोप	वरद्वि	(नं)	३३
				एकमरकोप	—	(बं)	३३
				एकमरकोप [व्याख्यान]	—	(बं)	३ ३
				एकमरकोप	बाहिराज	(बं)	३३
				३ ३ ५३५ ५३३ ५३ ५३			५३३ ५३३ ३३३
				३७३, ३३३, ३ ३, ३३३ ३३३			३५५ ३३३ ३३३
				३३५ ७३ ७३७ ७ ३			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४०१	कथासग्रह	—	(स० हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदाम	(हि०)	३८३	कथासग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
	४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०			कथासग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३	कथासग्रह	—	(हि०)	७३७
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५	बपडामाना का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३	कमलाष्टक	—	(स०)	६०७
एकश्लोकरामायण	—	(स०)	६४६	कव्यवन्नाचोपई	जिनचन्द्रमूरि	(हि० रा०)	२२१
एकीश्लोकभागवत	—	(स०)	६४६	करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(स०)	१६१
	<b>श्री</b>			करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
भौपधियों के नुमखे	—	(हि०)	५७५	करराकौतूहल	—	(स०)	२७६
	<b>क</b>			करलक्षणा	—	(प्रा०)	२७६
कवका	गुलावचन्द्र	(हि०)	६४३	करुणाष्टक	पद्मनन्दि	(स०)	६३३
कवकावतीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६			६३७, ६६८	
कवकावतीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२	करुणाष्टक	—	(हि०)	६४२
कवकावतीसी	मनराम	(हि०)	७२३	कर्मापिशाचिनीयन्त्र	—	(स०)	६१२
कवकावतीसी	—	(हि०)	६५१	कर्पूरचक्र	—	(स०)	२७६
	६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१			कर्पूरप्रकरणा	—	(म०)	३२५
कवका विनती [वारहखडो]	धनराज	(हि०)	६२३	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(म०)	३१६
कच्छावतार [चित्र]	—		६०३	कर्मग्रन्थसत्तरी	—	(प्रा०)	३
कछवाहा वशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०	कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५
कछवाहा वश के राजाओंकी वशावलि	—	(हि०)	७६७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्ति	(हि०)	५६२
कठियार कानहरीचोपई	मानसागर	(हि०)	२१८	कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	४६४, ५१६
कथाकोश	हरिपेणाचार्य	(स०)	२१६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(म०)	५०६, ४६४, ५४०
कथाकोश [भारधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२१६	कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	२१६	कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६
कथाकोश	—	(स०)	२१६	कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(स०)	५६०
कथाकोश	—	(हि०)	२१६	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४६५
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(स०)	२२०			५३७, ६४५	
कथासग्रह	—	(स०)	३२०	कर्मदहनपूजा	—	(स०)	४६५
						५१७, ५४०, ७६१	



ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
कर्मसूत्रपुरा	टिकचम्ब	(हि ) ४११	कनकाटोपलक्षिणि	—	( सं ) ४११
कर्मसूत्र [मन्थल विषय]	—	४२२	कविपुष्पवार्त्तनल्लुना म प्रभाषणम्	—	( सं ) ४१०
कर्मसूत्र का चरित्र	—	(हि ) ११	कविपुष्पवार्त्तनल्लुना चरित्रविषय	—	( सं ) ११
कर्मसूत्रप्रथमस्क	—	( सं ) १४०	कविपुष्पवार्त्तनल्लुना	—	(हि ) २१०
कर्म शौकर्म वर्त्तन	—	( मा ) १२१	कविपुष्पवार्त्तनल्लुना [मन्थलविषय]	—	२११
कर्मपञ्चीश्री	भारमल्ल	(हि ) ७१६	कविपुष्पवार्त्तनल्लुनास्तवक	—	( सं ) ११
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	( मा ) १	कविपुष्पुना	—	( सं ) ४१०
कर्मप्रकृतिवर्ण	—	(हि ) २, ७२		४०२, २१४ २०४ १ १ १४	
कर्मप्रकृतिवर्ण	—	(हि ) १७	कविपुष्पुना शीर अवयव	—	( मा ) ७११
कर्मप्रकृतिवर्णिका	सुमतिश्रीति	( सं ) ३	कविपुष्पुस्तवक	—	( सं ) १०४
कर्मप्रकृति का श्लोका	—	(हि ) ७१५	कविपुष्पुस्तवक	—	( मा ) ११२
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि ) ७०१	कविपुष्पुस्तोच	—	( सं ) ४०६
कर्मप्रकृतिविभाग	वनारसीदास	(हि ) २	कविपुष्पु की कथा	केटाच	(हि ) १११
		११ १०७, ७४४	कविपुष्पु की कथा	डारकादास	(हि ) ७०१
कर्मवत्सीश्री	राजसमुद्र	(हि ) ११७	कविपुष्पु की विगतरी	शुभाश्रय	(हि ) ११२
कर्मसूत्र की विगतरी	—	(हि ) ११४			१२, ७०५
कर्मविभाग	—	( सं ) २२१ २११	कविपुष्पुवतार [विषय]	—	११
कर्मविवाहटीका	सकलश्रीति	( सं ) २	कवचसूत्र	—	( सं ) ११२
कर्मविवाहप्रकाश	—	(हि ) १५	कवचविहीनतर्कबद्ध	—	( मा ) १
कर्मव्याख्यान [कर्मविभाग]	—	( सं ) १	कवचसूत्र	मन्थलासु	( मा ) १
कर्मव्याख्यान	शैवेन्द्रसूरि	( मा ) २	कवचसूत्र	मिक्कू चम्पलसूरि	( मा ) १
कर्मविश्वीचरणा	—	(हि ) ११२	कवचसूत्रबहिना	—	(हि ) १०६
कर्मों की १४५ कवचिका	—	(हि ) ७४	कवचसूत्रटीका	समसुन्दरुपोनाम्बा	( सं ) ७
कवचविभाग	मोहब	( सं ) ४११	कवचसूत्रकृति	—	( मा ) ७
कवचविभाग	—	( सं ) ४११ ११२	कवचव्यास [कवचव्यास]	—	( सं ) ११७
कवचविधि	—	( सं ) ४१५ ११२	कवचाष्टक	समसुन्दरु	( मा ) ११
कवचविधि	विद्यमूकड	(हि ) ४११	कवचाष्टक [कथा]	—	२०६
कवचवर्णनिक	प चाराचर	( सं ) ४१७	कवचाष्टकश्लो	विभवसारा	( सं ) १०४
कवचाटोपलक्षिणि	दं चाराचर	( सं ) ४११	कवचाष्टकविचर	शुर्वशीति	( सं ) ४१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(म०)	३८४	कवित्त	वनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५				कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०				कवित्त	शुन्दाजनदास	(हि०)	६८२
६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३				गयित्त	सन्तराम	(हि०)	६६२
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(म०)	३८५	कवित्त	सुगलाल	(हि०)	६५६
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(म०)	३८५	गवित्त	सुन्दरदाम	(हि०)	६४३
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(म० हि०)	६८१	कवित्त	संवग	(हि०)	७७२
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(राज० दिगम)	७७०
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(हि०)	६८१
४७६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८,							
६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५				कवित्त	शुगलमोर वा शिवलाल	(हि०)	७८२
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६	कवित्तमग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कन्याश्रमन्दिरस्तोत्रभाषा	श्रुति रामचन्द्र	(हि०)	३८५	कविविषया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कन्याश्रमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८६	कविवल्लभ	हरिचरणदाम	(हि०)	६८८
७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७६८				कदापुट	मिद्धनागार्जुन	(म०)	२६७
कन्याश्रमना	प० आशाधर	(म०)	५७५, ३८५	कातन्त्रटीका	—	(म०)	२५७
कन्याश्रविविधि	मुनि विनयचन्द्र	(म०)	६४१	कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(म०)	२५८
कन्याश्राष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(म०)	५७८	कातन्त्रमालावृत्ति	—	( )	२५८
कवलचन्द्रापरब्रतकन्या	—	(म०)	२०१, २४६	कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि चारित्र्यमिह	—	( )	२५७
कविकर्पटी	—	(म०)	३०६	कातन्त्रव्याकरण	शिवधर्मा	(म०)	२५६
कवित्त	श्रमदास	(हि०)	७६८	कादम्बरोटीका	—	(म०)	१६१
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०	कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३	कामधाम्न	—	(हि०)	७३७
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२ ७८६	कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कवित्त	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२	कारकप्रक्रिया	—	(म०)	२५६
कवित्त	झीहल	(हि०)	७७०	कारकविवेचन	—	(म०)	२५६
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३	कारकसमासप्रकरण	—	(म०)	२५६
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५	कारकानो वे नाम	—	(हि०)	७५६
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५६	कार्तिकेयानुप्रेषा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०
अर्धतरेवामुद्रेशाटीका	दुमचन्द्र	( सं ) १ ४	इन्द्रसमसिद्धिनि तृष्णीरञ्ज राठीर	( रात्र विषय )	७००
अर्धतरेवामुद्रेशाटीका	—	( म ) १ ४	इन्द्रसमसिद्धिनिटीका	—	७००
अर्धतरेवामुद्रेशाटीकाया	अथचन्द्र श्राविका ( हि )	१ ४	इन्द्रसमसिद्धिनि हिन्दुश्रीका	वक्षि	( हि ) १२१
अथचन्द्रवर्णन	—	( हि ) ७७	इन्द्रसमसिद्धिनि	वदम भाग्य	( हि ) २२१
अतीतव्यवहाराका	—	( हि ) ७३८	इन्द्रसमसिद्धिनि	—	१ १
अतीतव्यवहाराका	—	( सं ) १ ८	नेत्रज्ञान का स्वीरा	—	( हि ) २१
आदि विष्णुके इष्टु अकारेका संन	—	( सं हि ) २७१	नेत्रज्ञानसिद्धि	विनयचन्द्र	( हि ) १७१
अथचन्द्राचटीका	—	( सं ) १९१	नीरमञ्जरी	—	( हि ) १९१
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) ७०१	नीरचन्द्रिका	—	( सं ) १२१
अथचन्द्राचटीका	महाकवि मारुति	( सं ) १९१	नीरगात्र	कामन्द	( हि ) १२१
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) २७	नीरगात्र	—	( हि ) १२१ २२१
अथचन्द्राचटीका	म विष्णुमूष	( म ) ४१७	नीरगात्राचटीका	म इर्षा	( हि ) २१७
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) १९	नीरगात्राचटीका	—	( हि ) ७०१
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) ७२	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) १
अथचन्द्राचटीका	कालिदास	( म ) १९१	नीरगात्राचटीका	आ० धमजीति	( सं ) २२१
अथचन्द्राचटीका	कालिदास	( सं ) १९१	नीरगात्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( सं ) ४१
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( सं ) १ ५	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) ४४४
अथचन्द्राचटीका	—	( सं ) १	नीरगात्राचटीका	—	४१५ २१०
अथचन्द्राचटीका	—	( सं ) १ ६	नीरगात्राचटीका	—	२२१
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) ७७६	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) २११
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) ७०६	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) २०६
अथचन्द्राचटीका	—	( सं ) १ ४	नीरगात्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( सं ) २१ ४१४
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) २१	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) २१
अथचन्द्राचटीका	—	( सं ) २२६	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) २१
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) ११	नीरगात्राचटीका	किरानसिंह	( हि ) २१ ११२
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) १ ६	नीरगात्राचटीका	—	( हि ) २१
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) ७११	नीरगात्राचटीका	—	( हि ) १०१
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) ७१	नीरगात्राचटीका	—	( हि ) ४१५
अथचन्द्राचटीका	अथचन्द्राचटीका	( हि ) ४१७	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) १११
अथचन्द्राचटीका	—	( हि ) ७१५	नीरगात्राचटीका	—	( सं ) ७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(स०)	७	खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
क्षणासारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	७	खण्डेलवालो की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
क्षमाद्वत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण्डेलवालोकी उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
क्षमावत्तीसी	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	५८	खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
क्षमावणोपूजा	ब्रह्मसेन	(स०)	५६४	खण्डेला की वशावलि	—	(हि०)	७५६
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२	ख्याल गाराचन्दका	—	(हि०)	२२२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(स०)	५१५	<b>ग</b>			
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द्र	(स०)	७६३	गजपथामण्डलपूजा	भ० ज्येमेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४६८
क्षेत्रपाल की भारती	—	(हि०)	६०७	गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	(हि०)	६२३	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(स०)	१६३
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३	गढाराशांतिकविधि	—	(स०)	६१२
क्षेत्रपाल नामावली	—	(स०)	३८६	गराधरचरणारविदपूजा	—	(स०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	मण्डिभद्र	(स०)	६८६	गराधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	४६७	गराधरवल्यपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	६६०
क्षेत्रपालपूजा	—	(स०)	४६८	गराधरवल्यपूजा	आशाधर	(स०)	७६१
	५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३			गराधरवल्यपूजा	—	(स०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७१३		५१५, ६३६, ६८५, ७६१		
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	गराधरवल्य [ मडलचित्र ]	—		१२५
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(स०)	३४७	गराधरवल्यमन्त्र	—	(स०)	६०७
	५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७			गराधरवल्ययन्त्रमडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
क्षेत्रपालाष्टक	—	(स०)	६५५	गरापाठ	वादिराज जगन्नाथ	(स०)	२५६
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(स०)	२८०	गरामार	—	(स०)	५४
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(स०)	५४	गरिणतनाममाला	—	(स०)	३६८
क्षेत्रसमासप्रकरण	—	(प्रा०)	५४	गरिणतशास्त्र	—	(स०)	३६८
<b>ख</b>				गरिणतसार	हेमराज	(हि०)	३६८
खण्डप्रपास्तिकाव्य	—	(स०)	१६३	गरुडशच्छन्द	—	(हि०)	७५३
खण्डेलवालगोत्र	—	(हि०)	७५६	गरुडशब्दद्वयनाम	—	(स०)	६४६
खण्डेलवालो के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०	गर्गमनोरमा	—	(स०)	२८०
				गर्गसहिता	गर्गऋषि	(स०)	२८०



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकांड]	भाषा	प० टोडरमल	(हि०) १३	ग्यारह अंग एव चौदह पूर्व का वर्णन	—	(हि०)	६२
गोम्मटसार [कर्मकांड]	भाषा	हेमराज	(हि०) १३	ग्रहप्रवेश विचार	—	(स०)	५७
गोम्मटसार [जीवकांड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	९	ग्रहविवलक्षण	—	(स०)	५७
गोम्मटसार [जीवकांड] (तत्त्वप्रदीपिका)	(स०)	१२	ग्रहदशावर्णन	—	(स०)	२८	
गोम्मटसार [जीवकांड]	भाषा	टोडरमल	(हि०) १०	ग्रहफल	—	(हि०)	६९
गोम्मटसारटीका	धर्मचन्द्र	(स०)	९	ग्रहफल	—	(स०)	२८
गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	(स०)	१०	ग्रहों की ऊर्चाई एव प्रायुवर्णन	—	(हि०)	३१९
गोम्मटसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	१०	<b>घ</b>			
गोम्मटसारपीठिकाभाषा	टोडरमल	(हि०)	११	घटकर्परकाव्य	घटकर्पर	(स०)	१६४
गोम्मटसारवृत्ति	केशववर्णी	(स०)	१०	घग्घरनिसारणी	जिनहर्ष	(स०)	३८७, ७३४
गोम्मटसारवृत्ति	—	(स०)	१०	घण्टाकार्याकल्प	—	(स०)	३४७
गोम्मटसार सहाष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	१२	घण्टाकार्यामन्त्र	—	(स०)	३४७
गोम्मटसारस्तोत्र	—	(स०)	३८७	घण्टाकार्यामन्त्र	—	(हि०)	६५०, ७६२
गोरखपदावली	गोरखनाथ	(हि०)	७६७	घण्टाकार्यावृद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८
गोरखसवाद	—	(हि०)	७६४	<b>च</b>			
गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	(स०)	७३३	चउवीसीठाणाचर्चा	—	(हि०)	७००
गोडीपार्श्वनायस्तवन	जोधराज	(राज०)	६१७	चउसरप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
गोडीपार्श्वनायस्तवन	समयसुन्दरराणि	(राज०)	६१७ ६१९	चक्रवर्ति की बारहभावना	—	(हि०)	१०५
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(प्रा०)	१४	चक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(स०)	३४८
गौतमकुलक	—	(प्रा०)	१४	३८७, ४३२, ४२८, ६४७	—		
गौतमपृच्छा	—	(प्रा०)	६४३	चतुर्गति की पढढी	—	(अप०)	६४२
गौतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि०)	६१९	चतुर्दशगुणसंगनचर्चा	—	(हि०)	६८४
गौतमरासा	—	(हि०)	७५४	चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	६७२
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(स०)	१६३	चतुर्दशमार्गसावर्चा	—	(हि०)	६७१
गौतमस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(स०)	१६३	चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
गौतमस्वामीरास	—	(हि०)	६१७	चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
गौतमस्वामीसञ्ज्ञाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	चतुर्दशागवाह्यविवरण	—	(स०)	१४
गौतमस्वामी सञ्ज्ञाय	—	(हि०)	६१८	चतुर्दशीकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७३
गणकुटीपूजा	—	(स०)	५१७				



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	स०
दनपष्ठीघ्नतपूजा	चोखचन्द	(स०)	४७३		चन्द्रहसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४	
दनपष्ठीघ्नतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४७३		चन्द्रावलोक	—	(स०)	३०६	
न्दनपष्ठीघ्नतपूजा	विजयकीर्त्ति	(स०)	५०६		चन्द्रोन्मीलन	—	(स०)	२५६	
न्दनपष्ठीघ्नतपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४७३		चमत्कारमतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४	
न्दनपष्ठीघ्नतपूजा	—	(स०)	४७४		चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११	
न्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४					६६३, ७५६	
न्दनाचरित्र	मोहनविजय	(ग्र०)	७६१		चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७	
न्द्रकीर्त्तिछन्द	—	(हि०)	३८६		चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५	
न्द्रकु वर की वार्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३		चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५	
न्द्रकु वरकी वार्ता	—	(हि०)	७११		चरचावर्णन	—	(हि०)	१५	
न्द्रग्रुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८		चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४	
			७२३, ७३८					६६४, ७६४	
च द्रग्रुप्तके सोलह स्वप्नोका फल	—	(हि०)	६२१		चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५	
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६					६०६, ६४६, ७३३	
चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(स०)	१६४		चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(स०)	१६५		चर्चासागर	—	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४		चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(भप०)	१६५		चर्चासार	—	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	यश कीर्त्ति	(भप०)	१६५		चर्चासग्रह	—	(स० हि०)	१५	
चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द छावडा	(हि०)	१६६		चर्चासग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०	
चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका	—	(स०)	१६५		चहुगति चौपर्द	—	(हि०)	७६२	
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४७४		चाणक्यनीति	चाणक्य	(स०)	३२६	
चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४					७२३, ७६८	
चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६		चाणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७	
चन्द्रप्रभपूजा	—	(स०)	५०६		चाणक्यनीतिसारसग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(स०)	३२७	
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१		चादनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५४८	
चन्द्रवरदाई की वार्ता	—	(हि०)	६७६		चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३८८	
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३		चामुण्डोपनिषद्	—	(स०)	६०८	
चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	(हि०)	२२४, ६३६		चारभावना	—	(स०)	५५	



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.	
बनुर्वीरवदा	डादुराम	(हि.)	७४२	बनुर्विचरिणीर्षद्वयपद्य	बनुर्वीरवि	(बं.)	११४	
बनुर्वीरविचालकथा	—	(बं.)	११२	बनुर्विचरिण्युवा	—	(हि.)	४०१	
बनुर्वीरवद्वयुवा	—	(बं.)	४१६	बनुर्विचरिण्यविचाल	—	(बि.)	११४	
बनुर्विचरिण्यम	—	(बं.)	१३	बनुर्विचरिण्यविचाली	बनुर्विचरि	(बि.)	१३	
बनुर्विचरिण्य	गुण्यकीरिण्य	(हि.)	१३	बनुर्विचरिण्यविचाल	—	(बं.)	११२	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१३	बनुर्विचरिण्यविचालक	नमिचरिण्यविचाल	(मं.)	१	
बनुर्विचरिण्यद्वयममल	यदि माघनदि	(मं.)	४६६	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१३	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	रामचन्द्र	(हि.)	७२६	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(मं.)	१३० ४२१	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	त्रिदसिहसूरि	(हि.)	७०	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(मं.)	७२	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	त्रयसागर	(हि.)	११९	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	बिनाहीसागर	(बि.)	७२१	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	त्रिमलाभसूरि	(बं.)	१७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	भूवरदास	(बि.)	४१६	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	शुभचन्द्र	(बं.)	१७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१०१	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(मं.)	१२७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१२१	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(मं.)	४७	१४२	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१२२
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	न दीशरु पावनी	(हि.)	४७२	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बि.)	७२२	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	बकटाचरसाह	(हि.)	४७३	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बि.)	७२४	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	मनद्वयसाह	(हि.)	४७३	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बि.)	११६	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	रामचन्द्र	(हि.)	४७२	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	धनुसेन	(बि.)	१२३	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	बृम्हावन	(बि.)	४७३	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	बनर	(बि.)	१२३	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	सुगनचन्द्र	(बि.)	४७३	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बि.)	७२५	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	सदाराम साह	(हि.)	४७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	म सुतसागर	(बं.)	११४ ११४	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(हि.)	४७३	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	११४	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	हेमचिदमसूरि	(बि.)	४१७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	पं हरिचन्द्र	(बं.)	१२३	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	कमलविजयगण्डि	(मं.)	३२५	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	सुरासकचन्द्र	(बि.)	११६	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	चन्द्र	(बि.)	७२	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१२५	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	समन्तधर	(मं.)	१४७	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	धा सुतसेन	(बं.)	११६	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(मं.)	१ ७ १२	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	सुतसागर	(बं.)	११	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	माघनदि	(बं.)	१२५ १७६	बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	सुदासचन्द्र	(बि.)	११४	
बनुर्विचरिण्यद्वयुवा	—	(बं.)	१				१२४ १२५	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
शैत्यवदना	सकलचन्द्र	(म०)	६६८	चौबीसतीर्थद्वरराम	—	(हि०)	७०
शैत्यवदना	—	(म०)	३८६	चौबीसतीर्थद्वरवर्णन	—	(हि०)	४३८
			३६२, ६५०, ७१८	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन	देषनन्दि	(स०)	६०६
शैत्यवदना	—	(हि०)	४२६, ४३७	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन	लृणकरणकामलीबाल	(हि०)	४३३
चौभाराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौतीस प्रतिगयभक्ति	—	(स०)	६२७	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	—	(ग्रप०)	६२५
चौदश की जयमान	—	(हि०)	७४२	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौदहप्रणम्यानचर्चा	श्रम्वयराज	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६
चौदहपूजा	—	(स०)	४७६	चौबीसतीर्थद्वरा के चिह्न	—	(म०)	६२३
चौदहमार्गणा	—	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थद्वरोंके पञ्चकल्याणक की तिथिया—	(हि०)	५३८	
चौदहविद्या तथा कारखानेजातेके नाम	—	(हि०)	७५६	चौबीसतीर्थद्वरों की वदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६	चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्सूरि	(हि०)	६१६		४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०		
चौबीसजिनदजयमाल	—	(ग्रप०)	६३७	चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द्र	(हि०)	४३७	चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(स०)	१८, ७६५	चौबीसमहाराज [मङ्गलचित्र]	—		५२४
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६	चौबीसो विनती	भ० रत्नचन्द्र	दि ।	६४६
			७२०, ६६६	चौबासोस्तवन	जयसागर	दि ।	७७६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८	चौबीसोस्तुति	—	(हि०)	६३७, ७७३
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६८, ७८८	चौरासीभ्रसादना	—	(हि०)	५७
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(स०)	१८	चौरासीगीत	—	(हि०)	६८०
चौबीसतीर्थद्वरतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७	चौरासीगोदावृत्तिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौबीसतीर्थद्वरपरिचय	—	(हि०)	५६४	चौरासीजातिकी जयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३७०
			६२१, ७००, ७५१	चौरासीजातिछन्द	—	(हि०)	३७०
चौबीसतीर्थद्वरपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५	चौरासी जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौबीसतीर्थद्वरपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६	चौरासीजाति भेद	—	(हि०)	७४८
			७१२, ७२७, ७७२	चौरासीजातिवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थद्वरपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७	चौरासीन्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थद्वरभक्ति	—	(स०)	६०४	चौरासीन्यातमाला	ब्र० जिनदास	(हि०)	७६५



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६	जिनगुणसपत्तिपूजा	केशवसेन	(स०)	५३७
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६	जिनगुणसपत्तिपूजा	रत्नचन्द	(स०)	४७७, ५११
जम्बूस्वामीचौपर्ई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०	जिनगुणसपत्तिपूजा	—	(स०)	५३६
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७	जिनगुणस्तवन	—	(स०)	५७५
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	(स०)	५५७
जयतिह्वरस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(स०)	८३३
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०	जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(स०)	६४५
जयपुरके मदिरोकी वदना स्वरूपचन्द	हि०) ४३८, ५३८			जिनचरित्रकथा	—	(स०)	१६६
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३	जिनचैत्यवदना	—	(स०)	३६०
जयमाल	रायचन्द	(हि०)	४७७	जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जलगालणरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२	जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	५७८
जलययात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(स०)	४७७	जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(स०)	१६६
जलययात्रा	ब्र० जितदास	(स०)	६२३	जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जलययात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्त चौपर्ई	रत्न कवि	(हि०)	६८२
जलययात्राविधान	प० आशावर	(स०)	४७७	जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्तसूरि चौपर्ई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जलालगहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७	जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४	जिनदर्शनस्तुति	—	(स०)	४२४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३	जिनदर्शनाष्टक	—	(स०)	३६०
जातकवर्णन	—	(स०)	५७४	जिनपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	६५१
जाप्य इष्ट मनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(स०)	५५५		६६३, ७०४, ७२५, ७५५		
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७७८	जिनपञ्चीसी व मन्थ सग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८	जिनपिगलछदकोष	—	(हि०)	७०६
जिनगुणउत्थापन	—	(हि०)	६३८	जिनपुरन्दरप्रतपूजा	—	(स०)	४७८
जिनगुणपञ्चीसी	सेवगराम	(हि०)	४४७	जिनपूजापुरन्दरकथा	सुशालचन्द	(हि०)	२४४
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०	जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्त्ति	(अप०)	२४६
जिनगुणसपत्ति [मङ्गलचित्र]	—		५२४	जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(स०)	४७८
जिनगुणसपत्तिकथा	—	(स०)	२२५, २४६	जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनगुणसपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८	जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(स०)	३६०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ स	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ स
बीरसीखोब	कबरपात्र	(हि ) ७ १	कविचिरोम ग	संभरनाथ	(हि ) १११
बीरसीखोबकठपुत्र	—	(हि ) २७	कंसतपत्र	—	(हि ) ११२
बीरसीखोबपुत्रा	स्वरुपचन्द्र	(हि ) ४०१	कंसपुत्राचार्य	इमचन्द्राचार्य	(सं ) ११३
बीरसीखोब	—	(हि ) १ १	कंसपुत्र	इमकीर्ति	(सं ) ११४
बीरसीखोबपुत्र	—	(सं ) १ १		ज	
बीरसीखोबपुत्रास्तोत्र	—	(सं ) १४८ ४४४	कचकी	हरिगड	(हि ) ७२१, १११
बीरसीखोबपुत्रास्तोत्र की पुनः कविचिरोमि (सं )		२१४	कचकी	धान्यराज	(हि ) १४१ १२ ७११
	छ		कचकी	देवेन्द्रकीर्ति	(हि ) १११
कटा घाटा वा विस्तार	—	(हि ) १७	कचकी	नमिचन्द्र	(हि ) ११२
कटोप वाच्यार्थके नाम	—	(हि ) १	कचकी	रामकृष्ण	(हि ) ४१
कटोप	किशन	(हि ) १७४	कचकी	रूपचन्द्र	(हि ) १२
कटोप	धान्यराज	(हि ) १२२			१११ ७२१, ७२२
		२७१ १७४ ७४७	कचकी	—	(हि ) ७११
कटोप	श्रीकेशराम	(हि ) २७	कचकान्यायसंस्कृत	—	(हि ) ११
		७७७ ७४१	कचकान्याय	सिद्धाचार्य	(सं ) ११३
कटोप	सुभजन	(हि ) २७	कचकुली (बहादुरा लवाई कचकुली) -	(सं )	७७१
कटोपुत्रोपनिषद्	—	(हि ) २७१	कचकुलीगीर्णार	—	(हि ) ११३
कटोपुत्रोपनिषद् वा बीरसीखोब [नमिचन्द्र]	—	२२२	कचकुलीगीर्णार वाच्यनाथ	—	(हि ) ७१
कटोपुत्रोपनिषद्	—	(हि ) २१४	कचकुलीगीर्णार	—	(हि ) ४१४
कटोपुत्रोपनिषद्	म रामकृष्ण	(सं ) ७१२	कचकुलीगीर्णार	पंडित विनयास	(सं ) ४७७ २ १, ११७
कटोपुत्रोपनिषद्	—	(सं ) ११	कचकुलीगीर्णार	नमिचन्द्राचार्य	(सं ) १११
कटोपुत्रोपनिषद्	इन्द्राचार्य	(सं ) १७	कचकुलीगीर्णार	—	(सं ) ११
कटोपुत्रोपनिषद्	सुभजन	(हि ) ११५	कचकुलीगीर्णार	—	(हि ) ७११
कटोपुत्रोपनिषद्	—	(हि ) ४७१	कचकुलीगीर्णार	म विमलनाथ	(सं ) ११५
कटोपुत्रोपनिषद्	म सुरेन्द्रकीर्ति	(सं ) १२२	कचकुलीगीर्णार	प राजमहल	(सं ) १११
कटोपुत्रोपनिषद्	—	(सं ) ११	कचकुलीगीर्णार	विजयकीर्ति	(सं ) १११
कटोपुत्रोपनिषद्	रामकृष्णसुरि	(सं ) ११	कचकुलीगीर्णार	विजयकीर्ति	(सं ) १११
कटोपुत्रोपनिषद्	सुभजनराज	(हि ) १२७	कचकुलीगीर्णार	विजयकीर्ति	(हि ) १११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनेद्रस्तोत्र	—	(स०)	६०६	४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६९८, ७०६, ७१०, ७१३ ७१६, ७३२, ७५४			
जिनोपदेशोपकारम्बरस्तोत्र	—	(स०)	४१३	जैनमदोपचार मात्तण्डनामक पत्रका प्रत्युत्तर	या० दुलीचन्द्र	(हि०)	२०
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(ग०)	४२६	जैननागरप्रक्रिया	या० दुलीचन्द्र	(हि०)	५७
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३६३	जैनेद्रमहावृत्ति	श्रमभयनन्दि	(ग०)	२६०
जीवकायागञ्जाय	भुवन कीर्त्ति	(हि०)	६१६	जैनेद्रव्याकरण	देवचनन्दि	(स०)	२५६
जीवकायासञ्जाय	राजममुद्र	(हि०)	६१६	जोगीरागो	पाण्डे जिननास	(हि०)	१०५
जीवजीतसहार	जैतराम	(हि०)	२२५	६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०२, ७२३, ७४५, ७६१			
जीवधरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(ग०)	१७०	जोधराजपद्मोनी	—	(हि०)	७६०
जीवधरचरित्र	नथमल विलाला	(हि०)	१७०	ज्येष्ठजिनवर [मण्डनचिद]	—		५२५
जीवधरचरित्र	पद्मालाल चौधरी	(हि०)	१७१	ज्येष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	(स०)	५०६
जीवधरचरित्र	—	(हि०)	१७१	ज्येष्ठजिनवरवधा	—	(स०)	२२५
जीवविचार	मानदेवमूरि	(प्रा०)	६१६	ज्येष्ठजिनवरवधा	जसकीर्त्ति	(हि०)	२२५
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२	ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतमागर	(स०)	७६५
जीव वेलढी	देवीशम	(हि०)	७५७	ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५१६
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(स०)	४८१
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(स०)	७६५
जीवस्वरूपवर्णन	—	(स०)	१६	ज्येष्ठजिनवरप्रतया	सुशालचन्द्र (हि०)	(हि०)	७३१
जीवाजीवविचार	—	(ग०)	१६	ज्येष्ठजिनवरप्रतपूजा	—	(स०)	४८१
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६	ज्येष्ठपूर्णाभावधा	—	(हि०)	६८२
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(स०)	३४८	ज्योतिपचर्चा	—	(स०)	५६७
जैनपद्मोसी	नवलराम	(हि०)	६७०	ज्योतिप	—	(स०)	७१४
			६७५, ६६४	ज्योतिपपटलमाला	श्रीपति	(स०)	६७२
जैनवद्री मूढवद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	३७०	ज्योतिपशास्त्र	—	(स०)	६६५
जैनवद्री देशकी पत्रिका	मजलमराय	(हि०)	७०३, ७१८	ज्योतिपसार	कृपाराम	(हि०)	५६८
जैनमतका सबन्ध	—	(हि०)	५६२	ज्वरचिकित्सा	—	(स०)	२६८
जैनरक्षास्तोत्र	—	(स०)	६४७	ज्वरतिमिरभान्कर	चामुण्डराय	(स०)	२६८
जैनविवाहपद्धति	—	(स०)	४८१	ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं
विजयचरितोप	—	( ल )	१६	१२ १७३ १८१ १६२ ७१२, ७१६, ७१ १२६			
			४२४ ४३१ ४३३,	७४ ।			
			१४० १८७ १६३	विजयचरितनाम	विजयभाषाई	( ल )	११
विजयचरितोपभाषा	स्वच्छन्दचन्द्र	( हि )	१११				४२५, २७१ ७ ७ ७७७
विजयचरित	दुर्वाचीरि	( हि )	४३७ १२१	विजयचरितनाम	मिथुसम विद्याकर	( ल )	११
विजयुवा [ लोचनकथा ]	—	( म )	१२५	विजयचरितनाम [ लघु ]	—	( ल )	११
विजयचरित [ अतिशयार ]	पं आराधर	( ल )	४०	विजयचरितनामभाषा	वनारसीदास	( हि )	११० ७१
	१ १११ ११० ७११			विजयचरितनामपत्र	बाबूराज	( हि )	११
विजयचरितनाम	—	( ल )	४०६ १२२	विजयचरितनामटीका	अमरचौधरी	( ल )	११
विजयचरितनाम	सुभाराम	( हि )	४८०	विजयचरितनामटीका	कठसागर	( ल )	११
विजयचरितनामलीय	—	( हि )	४७६	विजयचरितनामटीका	—	( ल )	११
विजयचरितविद्यालयभाषा	—	( ल )	२४२	विजयचरितनामटीका	—	( ल )	११
विजयचरितविद्यालयभाषा	मरसन	( मरा )	१२	विजयचरितनामटीका	—	( ल )	११
विजयचरितविद्यालयभाषा	—	( मरा )	२४४ १११	विजयचरितनामटीका	चैतन्य लुहाविषा	( हि )	११
विजयचरितविद्यालयभाषा	प्र आनसागर	( हि )	२२	विजयचरितनामटीका	स्वरूपचन्द्र विद्यावा	( हि )	११
विजयचरित	प्र राधमल्ल	( हि )	७३	विजयचरित [ अन्वेषण ]	—	( ल )	४२६, २ ।
विजयचरि विजयि	दुर्वाचरि	( हि )	१ २	विजयचरितनामटीका	—	( हि )	११
विजयचरि दर्शन	वधमसिंह	( मरा )	१६	विजयचरित	कनकचौधरी	( हि )	११
विजयचरितनामपत्र	प्र गुणका	( हि )	१६	विजयचरित	शैलतराज	( हि )	७१
विजयचरितुति	—	( हि )	७६७	विजयचरितउत्सवविषया	—	( ल )	११
विजयचरितोप	—	( ल )	१६ १७७	विजयचरित	रामचन्द्रमुनि	( ल )	११
विजयचरितोपपत्र	आनाराम	( हि )	१६	विजयचरित	आनाराम गान्धीका	( हि )	११
विजयचरितटीका	मरसिंह	( ल )	१६१	विजयचरित	रूपचन्द्र	( हि )	७१
विजयचरितटीका	राधुनाथ	( ल )	१६	विजयचरित	सुमतिचौधरी	( हि )	७१
विजयचरितनामपत्र	समन्वय	( ल )	१६१	विजयचरित	—	( हि )	११
विजयचरित	—	( मरा )	११	विजयचरित	धीरचन्द्र	( हि )	११
विजयचरित	—	( हि )	७०१	विजयचरितविषय	—	( हि )	११
विजयचरितनाम	पं आराधर	( ल )	१६१	विजयचरितउत्सव	म विजयचन्द्र	( ल )	११
२४ २६१ १ २, १ ७, १११ १४६, १४७ १२६,				विजयचरितटीका	—	( हि )	११

क्र	भाषा	पृष्ठ सं०	प्रबन्धनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
	संस्कृत	(हि०) ६८३	गणराजवाच	—	(हि०)	२१
	संस्कृत	(हि०) ४३६	गणराजवाच	सुब्रह्मण्य	(हि०)	२१
	—	(सं०) ६३३	गणराजवाचिणि	—	(सं०)	२१
	संस्कृत	(सं०) ४३३	गणराजवाचमात्र	प्रभाकर	(सं०)	२१
	—	४८२, ६३६	गणराजवाचिणि	भट्टाचलकदेव	(सं०)	२२
	—	(सं०) ३४८	गणराजवाचिणि	—	(हि०)	२२
	संस्कृत	(सं०) ६८२	गणराजवाचिणि	प० रामदेव	(सं०)	२२
	—	४३३ ४३६	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	२२
	—	(सं०) ४६०	गणराजवाचिणि	श० कल्याणजी	(सं०)	२३
	—	(हि०) ३०६	गणराजवाचिणि	श्यामलदास चौधरी	(हि०)	२३
	—	(हि०) ३६४	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	
	—	(सं०) ३६४	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	
	—	(सं०) ६६०	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	
	संस्कृत	(सं०) ३३३	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	
	संस्कृत	(सं०) ३३३	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	
	त					
१	—	(सं०) ३६६	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	२८
	पद्मनाभ मधी	(हि०) ३०	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(हि०)	३०६
२	श्यामलदास	(सं०) ४८	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३०
३	—	(हि०) २०	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(हि०)	३०
४	—	(सं०) ३२८	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३०
५	—	(सं०) ३०८	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३०
६	शुभचन्द्र	(सं०) २०२	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३०
७	देवसेन	(सं०) २०, ४७४, ४७७	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३०
८	श्यामलदास	(हि०) ७४७	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(हि०)	३०
९	श्यामलदास चौधरी	(हि०) २१	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(हि०)	३१
	—	(सं०) २१	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३१
	—	(सं०) २१	गणराजवाचिणि	श्यामलदास	(सं०)	३१

१  
 २  
 ३  
 ४  
 ५  
 ६  
 ७  
 ८  
 ९  
 १०  
 ११  
 १२  
 १३  
 १४  
 १५  
 १६  
 १७  
 १८  
 १९  
 २०  
 २१  
 २२  
 २३  
 २४  
 २५  
 २६  
 २७  
 २८  
 २९  
 ३०  
 ३१  
 ३२  
 ३३  
 ३४  
 ३५  
 ३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०  
 ४१  
 ४२  
 ४३  
 ४४  
 ४५  
 ४६  
 ४७  
 ४८  
 ४९  
 ५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००



ग्रन्थनाम	संस्कृत	मापा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	संस्कृत	मापा	पृष्ठ सं.
अन्वयानुसूची	—	( सं )	४२४	आत्मसूत्र	—	( सं )	११६
४२	४३३, ४३३ ६ व ४४६	४४०	४४८	आत्मसूत्रपाठ	अनुसूत्र	( सं )	४३०
अन्नचिन्तामणि	मनाहरदास	( हि )	३०	आत्मसूत्रपाठ	—	( सं )	४३६
		४२४	४३६	आत्मार्थ	सुमधुसूत्रार्थ	( सं )	१९
आनन्दसुख	साह श्रीपद्म	( हि )	१२	आत्मार्थवटीका [पञ्च]	भुतसागर	( सं )	१२
आनन्दसुख	—	( हि )	१३	आत्मार्थवटीका	मयाविद्याम	( सं )	१
आनन्दसुखसूक्ति	—	( हि )	१३१	आत्मार्थवटीका	अप्यस्य द्वावहा	( हि )	१०५
आत्मसूत्री	मनाहरदास	( हि )	११४	आत्मार्थवटीकाटीका	सत्यं विमलशक्ति	( हि )	१००
	११४ १२ १२३, १२३	७१३	७३२	आत्मार्थवटीका	—	( हि )	११३
आत्मसूत्रीसूत्र	समसमुच्चर	( हि )	४१	आत्मार्थवटीका	—	( हि )	११३
आत्मसूत्री	मनाहरदास	( हि )	७१५		म्ह		
आत्मसूत्रविद्यया वदोपायानुसूक्ति	सुरेश्वरसूक्ति	( सं )	४५१	अक्षरी श्री मन्दिरी श्री	—	( हि )	४१५
			४६६	अक्षरी देवना मन्	—	( हि )	४०१
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्र	समसमुच्चर	( हि )	७३६	अक्षरीसूत्र	अक्षरी	( हि )	४१
आत्मसूत्रीसूत्रविद्यया	—	( सं )	११३	अक्षरी	गणाराम	( हि )	७२३
आत्मसूत्र	—	( सं )	१३				
आत्मसूत्री	मनाहरदास	( हि )	७२७				
आत्मसूत्री	मन्दिरी	( हि )	७३२				
आत्मसूत्री	—	( सं )	१२७				
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्र	शास्त्रिसूत्रसूत्र	( सं )	११६				
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्रसूत्र	वारमदाम निगासा	( हि )	११७				
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्रसूत्र	वसुदेवसूत्र	( हि )	१२७				
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्रसूत्र	मनाहरदास	( हि )	११७				
आत्मसूत्रीसूत्रसूत्रसूत्र	मातासूत्र	( हि )	१२७				
आत्मसूत्रीसूत्र	अक्षरी	( हि )	७२६				
आत्मसूत्रीसूत्र	—	( हि )	७२६				
आत्मसूत्री	रावसूत्र	( हि )	२				
आत्मसूत्री	मनाहरदास	( हि )	१३				
आत्मसूत्री	सूत्रि वसुदेव	( सं )	१३				

ट-उ-ड-ड-ण

ट-उ-ड-ड-ण	सूत्रसूत्र	( हि )	७२
ड-उ-ड-ड-ण	—	( सं )	१
ड-उ-ड-ड-ण	ड-उ-ड-ड-ण	( हि )	११२
ड-उ-ड-ड-ण	—	( सं )	११५
ड-उ-ड-ड-ण	ड-उ-ड-ड-ण	( सं )	७४
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	११७
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	११८
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	११९
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२०
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२१
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२२
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२३
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२४
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२५
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२६
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२७
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२८
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१२९
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३०
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३१
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३२
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३३
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३४
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३५
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३६
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३७
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३८
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१३९
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४०
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४१
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४२
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४३
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४४
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४५
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४६
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४७
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४८
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१४९
ड-उ-ड-ड-ण	—	( हि )	१५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रामोकारच्छद	ब्र० लालसागर	(हि०)	६८३	तत्त्वार्थबोध	—	(हि०)	२१
रामोकारपञ्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हि०)	४३६	तत्त्वार्थबोध	बुधजन	(हि०)	२१
रामोकारपायत्रीजयमाल	—	(प्र०)	६३७	तत्त्वार्थबोधिनीटीका	—	(ग०)	२१
रामोवारपेंतीसी	कनककीर्ति	(ग०)	५१७, ४८२, ६७६	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(ग०)	२१
रामोकारपेंतीसी	—	(प्र०)	३४८	तत्त्वार्थराजवार्ता	—	(हि०)	२०
रामोवारपेंतीसीपूजा	अज्ञेयराज	(ग०)	४८२, ५१७, ५३६	तत्त्वार्थवृत्ति	प० योगदेव	(ग०)	२२
रामोकारपञ्चासिकापूजा	—	(ग०)	५६०	तत्त्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(ग०)	२२
रामोकारमन्त्र	—	(हि०)	२२६	तत्त्वार्थमारदीपक	भ० मकलकीर्ति	(ग०)	२३
रामोकारस्नवन	—	(हि०)	३६४	तत्त्वार्थमारदीपक भाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३
रामोकारादि पाठ	—	(प्र०)	३६४	तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(ग०)	
रामाणपिण्ड	—	(प्र०)	६६२				
रामेन्द्राहचारिण्ड	लक्ष्मणदेव	(प्र०)	१७१	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६६, ५६७,			
रामेन्द्राहचारिण्ड	दामोदर	(प्र०)	१७१	५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६६०, ६४४, ६४६,			
				६४७ ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१,			
				६८६, ६६४, ६६६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७,			
				७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९,			
				तत्त्वार्थसूत्रटीका	श्रुतागर	(ग०)	२८
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(ग०)	३६६	तत्त्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हि०)	३२६
तत्वकौस्तुभ	पन्नालाल सघी	(हि०)	१०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जेसवाल	(हि०)	३०
तत्वज्ञानतरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(ग०)	५८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	प० राजमल्ल	(हि०)	३०
तत्वदीपिका	—	(हि०)	२०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	जयचंद छावडा	(हि०)	२६
तत्वधर्मावृत	—	(ग०)	३२८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पाडे जयवत	(हि०)	२६
तत्वबोध	—	(ग०)	१०८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(हि०)	६८६
तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(ग०)	२०२	तत्त्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद	(ग०)	४८२
तत्वसार	देवसेन	(प्र०)	२०, ५७५	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द्र	(हि०)	३०
				तत्त्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	२८
तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०
तत्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि० प्र०)	३१
तत्त्वार्थदर्पण	—	(ग०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गण्डि	(ग०)	२८
तत्त्वार्थबोध	—	(ग०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(ग०)	२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.
तद्विषय प्रथिप्या	—	( म )	२९	तीर्थमालातटवग	सुमनसमुन्दर	( एव )	११
तपस्यकण्ड कथा	सुधासुतर्षद	( हि )	२९९	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	११
तमापु की कथनाम	आर्षाद्भुमि	( हि )	४१०	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	११
तर्कवीथिका	—	( सं )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	इयंकीर्ति ( हि )	१११, ११२	११
तर्ककण्ड	—	( सं )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	१२
तर्कप्रवाह	—	( सं )	१११				१२ १११
तर्कभाषा	केरल मित्र	( सं )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	११
तर्कभाषा प्रथमिका	बाबू बन्धु	( सं )	११२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	१२
तर्कप्रथम वीथिका	गुणारतन धुरि	( सं )	११२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	११
तर्कसंग्रह	आर्षमण्ड	( सं )	११२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	१११ ११
तर्कसंग्रहटीका	—	( सं )	११३	तीर्थवर्णनसटीक	रवाम	( हि )	१११
तारतम्यक की कथा	—	( हि )	७४२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	१११
तार्किकविरोधसिद्धि	रघुनाथ	( सं )	११३	तीर्थवर्णनसटीक	सुमनस	( सं )	१११
तीर्थवर्णनी	—	( हि )	११३	तीर्थवर्णनसटीक	सुधासुत	( हि )	१११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	११३	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	१११
	१७ ११३ ७ १	७२२		तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	१११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( सं )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	७११
तीर्थवर्णनीटीका	नेमीचन्द्र	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	बनारसीदास	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( सं )	४ १	तीर्थवर्णनसटीक	सुमनस	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( सं )	४ १	तीर्थवर्णनसटीक	म विरलसूक्त	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	बनारदास	( हि )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	१११	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका [विशेष बर पूजा, विशेष पूजा]	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	नेमीचन्द्र	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	मायिकचन्द्र	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( हि )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११
तीर्थवर्णनीटीका	—	( हि )	४७२	तीर्थवर्णनसटीक	—	( सं )	४११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	कृष्ट सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	कृष्ट सं०
त्रिशास्त्रोपग्रन्थो [समस्त्रोप]	अमरसिंह	(सं०)	२७४	त्रिलोकचरित	—	(हि०)	६६०
त्रिशास्त्रोपाधिपाठा	सुम्पाचामदेव	(सं०)	२७४			७००	७००
त्रिशास्त्रपुराणोपज्ञा	—	(सं०)	६६६	त्रिशास्त्रगाथा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिशास्त्रचौबीसी	—	(हि०)	६४१	त्रिशास्त्रावकाश	—	(हि०)	२२३
त्रिशास्त्रचौबीसीरक्षा [संस्कृत]	अध्वरक्षेत्र	(सं०)	२०६, २१२	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	धर्मपञ्च	(हि०)	४११
त्रिशास्त्रचौबीसीरक्षा [संस्कृत]	गुणनरिष्ठ	(सं०)	२०६	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	अभयनरिष्ठ	(सं०)	४६४
त्रिशास्त्रचौबीसीरक्षा	—	(सं०)	४२६	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	—	(सं०)	४६४, ४१३
त्रिशास्त्रचौबीसीपूजा	प्रिभुवनचन्द्र	(सं०)	४६४	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	दोहरमल	(हि०)	३०
त्रिशास्त्रचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४६४, ४१७	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	—	(हि०)	३२१
त्रिशास्त्रचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	४०६	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	—	(हि०)	३२१
त्रिशास्त्रदेवबंदना	—	(हि०)	६२७	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	माधवचन्द्र श्रौचिण्देव	(सं०)	३२७
त्रिशास्त्रपूजा	—	(सं०)	४६४	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	—	(सं०)	३२७
त्रिशास्त्रप्रतिविधान	—	(सं०)	२४६	त्रिशास्त्रगाथाश्रीरक्ष	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिशास्त्रगतक्रिया	—	(हि०)	४१७	त्रिशास्त्रगतोप	भद्र महीचन्द्र	(हि०)	६६१
त्रिशास्त्रगतप्रयोगान	—	(सं०)	४१३	त्रिशास्त्रगतजिज्ञानश्रीरक्ष	—	(हि०)	४६४
त्रिभुवन की विधाती	गंगादान	(हि०)	७७२	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	उद्यलाल रामवाल	(हि०)	३२७
त्रिभुवन की विधाती	—	(हि०)	७७४	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	भद्र सोमसेन	(सं०)	४६
त्रिभुगीमार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	शार्ङ्गधर	(सं०)	२६६
त्रिभुगीमारटीका	विश्वेश्वरनरिष्ठ	(सं०)	३०	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	श्रीपाल	(हि०)	६७०
त्रिशास्त्रोपपूजा	—	(हि०)	४६४	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	—	(सं०)	२६६
त्रिलोकचरित	—	(हि०)	३२०	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	आशाधर	(सं०)	१६६
त्रिलोकचरितनरुत्तोप	भद्र महीचन्द्र	(सं०)	७१२	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	महर्षिसिंह	(सं०)	६६६
त्रिशास्त्रदीपक	साम्भरक्षेत्र	(सं०)	३२०	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	—	(सं०)	४६, ७६२
त्रिलोकदर्पणप्रकाश	स्यदृगमेन	(हि०)	६६६, ६६०, ३२१	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	श्रीरामलाल	(हि०)	७४०
त्रिलोकचरित	—	(सं०)	३२२	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	शैलतराम	(हि०)	४६
त्रिलोकचरित	—	(प्रा०)	३२२	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	—	(सं०)	४६४
त्रिशास्त्रचरित [चित्र]	—	(सं०)	३२३	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	[मण्डल चित्र]	—	४२४
त्रिलोकचरित	—	(सं०)	३२३	त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	—	(सं०)	४६४
				त्रिशास्त्रगतध्यानाश्रीरक्ष	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	६३६, ७६६

ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेपथ्यविनायकटीकापत्र	—	( सं )	१४	वर्मनसार	देवसेन	( प्र )	१११
नेपथ्यविनायकटीकापत्र	—	( मा )	१७१	वर्मनसारव्यास	नवमहा	( वि )	१११
नेपथ्यविनायकटीकापत्र	—	( हि )	७२	वर्मनसारव्यास	शिवजीकाव्य	( वि )	१११
नेपथ्य टीका कथा प्र	शामसागर	( हि )	२२	वर्मनसारव्यास	—	( वि )	१११
नेपथ्य मोहनकथ	रायमहा	( सं )	११	वर्मनस्तुति	—	( व )	१२७ १२७
नेपथ्यव्याटीका	महाकवि	( मा )	१११	वर्मनस्तुति	—	( वि )	१२१
नेपथ्यव्यासटीका	सुमतिसागर	( सं )	४७२	वर्मनस्तोत्र	सकलचन्द्र	( व )	१२१
नेपथ्यव्यासटीका	—	( सं )	४७१	वर्मनस्तोत्र	—	( सं )	११
	य			वर्मनस्तोत्र	पद्मनभ	( प्र )	११
नेपथ्यव्यासटीका	—	( हि )	७२२	वर्मनस्तोत्र	—	( प्र० )	११
नेपथ्यव्यासटीकापत्र	मुनि अक्षयदेव	( हि )	१११	वर्मनस्तुति	—	( वि )	१२१
नेपथ्यव्यासटीकापत्र	—	( राम )	१११	वर्तनीवीचन्द्रमाला	—	( हि )	१११
	द			वक्त्रकारके वक्त्राण	—	( व )	१२१
व्यासमुनिस्तोत्र	राजराजार्थ	( व )	११	वक्त्रकार विज्ञ	—	( सं )	१२१
व्यासकथा	—	( सं )	११	वक्त्रोक्त	—	( हि )	१२१
व्यासकथा	—	( सं )	११७	वक्त्रोक्तकौटी	शान्तपुत्र	( वि )	१२१
वर्मनकथा	भारामहा	( हि )	१२७	वक्त्रोक्त	—	( हि )	११
वर्मनकथास्तोत्र	—	( सं )	२२७	वक्त्रोक्तोपनिषद्	—	( हि )	२२७
वर्मनकथास्तोत्र	—	( हि )	७२१	वक्त्रोक्तोपनिषद्	—	( सं )	२२७
वर्मनकथा	—	( सं )	१११	वक्त्रोक्तोपनिषद्	—	( सं )	२२७
१ १ ४ १२ १११ १२७ १११ ७ १ ७११				वक्त्रोक्तोपनिषद्	मुनि शुद्धमह	( व )	१११
वर्मनकथा	शुद्धमह	( वि )	४११	वक्त्रोक्तोपनिषद्	सुप्रभाकर	( वि )	१२१
वर्मनकथा	—	( हि )	१	वक्त्रोक्तोपनिषद्	सोमसेन	( सं )	७११
			११२ १११, ७ २	वक्त्रोक्तोपनिषद्	प भास्करार्थ	( मा )	४११, ११७
वर्मनकथास्तुति	—	( हि )	४११	वक्त्रोक्तोपनिषद्	—	( मा )	४११
वर्मनकथास्तुति	—	( हि )	११	वक्त्रोक्तोपनिषद्	—	( मा सं )	४११
वर्मनकथास्तुति	—	( हि )	११	वक्त्रोक्तोपनिषद्	प पद्म	( व )	१११
वर्मनकथास्तुति	—	( सं )	११७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५	दशलक्षणीकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षणजयमाल	—	(हि०)	४८८	दशलक्षणीरास	—	(प्रप०)	६४२
दशलक्षणार्षधर्मवर्णन प०	सदासुखकासलीवाल	(हि०)	५६	दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशलक्षणार्षधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०	दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशलक्षणपूजा	अभयनन्दि	(स०)	४८८	दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(स०)	३२
दशलक्षणपूजा	—	(स०)	४८८	दशश्लोकीशान्मस्तोत्र	—	(स०)	६६०
५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०,				दशसूत्राष्टक	—	(स०)	६७०
६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६,				दशारास	ब्र० चन्द्र	(स०)	६८३
			७६३, ७८४	दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दशलक्षणपूजा	—	(प्रप० स०)	७०५	दानवथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दशलक्षणपूजा	अभ्रदेव	(स०)	४८८	दानवथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
दशलक्षणपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दशलक्षणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८	दानतपशीलमवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
			५१६, ७०५	दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(स०)	६०
दशलक्षणपूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१	दानवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दशलक्षणपूजा	—	(हि०)	४८६	दानलीला	—	(हि०)	६००
			७२०, ७८८	दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दशलक्षणपूजाजयमाल	—	(स०)	५६६	दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दशलक्षण [मडलचित्र]	—		५२५	दानशीलतपभावना	—	(स०)	६०
दशलक्षणमण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६	दानशीलतपभावना	धर्मसी	(स०)	६०
दशलक्षणविधानवथा	लोकसेन	(स०)	२४२, २४६	दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दशलक्षणविधानपूजा	—	(हि०)	४६०	दानशीलतपभावना का चौबाल्या	समयसुन्दरगणित		
दशलक्षणव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२७			(हि०)	२२८
दशलक्षणव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	दिल्ली की बादशाहतका व्योरा	—	(हि०)	७६६
दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ध्यानसागर	(हि०)	७६४	दिल्लीके बादशाहो पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दशलक्षणव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	दिल्ली नगरकी वसापत तथा बादशाहत का व्योरा	—		
दशलक्षणव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(स०)	४८६			(हि०)	७०५
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिभागर	(स०)	४८६	दिल्ली राजका व्योरा	—	(हि०)	७०६
			५४०, ६३८	दीक्षापटल	—	(स०)	५७५
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५१३	दीपमालिका निर्याय	—	(हि०)	६०



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	
दीपावतारमल	—	(स)	१७१ १७९	दीपावतारमल	—	(हि)	१११	
दुषारविनाशकला	मुनि विनयचन्द्र	(स)	२४४	दुषारविनाशकला	आत्मुखा [हिन्दू विष्णुसंहिता]	—	१११	
दुर्घटकम्	—	(सं)	१७१	दुर्घटकम्	—	(सं)	१०	
दुर्गलक्षणम्	—	(स)	११७	दुर्गलक्षणम्	—	(सं)	१०	
देवकीवध	रत्नचन्द्र	(हि)	४४	देवकीवध	[भारत] के नाम	—	(हि)	१७१
देवकीवध	बृहस्पति कासरीबाबू	(हि)	४११	देवकीवध	बालकृष्ण के नाम	—	(हि)	७१
देवदत्तसुति	पद्मनभि	(हि)	११४	देवदत्तसुति	—	(हि)	१००	
देवदुवा	इन्द्रनभि भोगीन्द्र	(सं)	४१	देवदुवा	—	(हि)	१११	
देवदुवा	—	(स)	४१२	देवदुवा	—	(हि)	१००	
			११४, ११५, ७१२, ७११					
देवदुवा	—	(हि)	१११	देवदुवा	—	(हि)	१११	
			७४					
देवदुवा	धानवराह	(हि)	१११	देवदुवा	—	(हि)	१११	
देवदुवा	—	(हि)	१११					
			१७ ७०१, ७१२, ७१५					
देवदुवाटीका	—	(सं)	४१	देवदुवाटीका	—	(सं)	४१	
देवदुवाव्यास	कवचन्द्र व्यासदा	(हि)	४१	देवदुवाव्यास	कवचन्द्र व्यासदा	(हि)	४१	
देवदुवाव्यास	—	(स)	११७	देवदुवाव्यास	—	(स)	११	
			१७२, ११३ ७१४ ७११					
देवदत्त बालराम जीर्ण सामवेदसूत्र	—	(हि)	१११	देवदत्त बालराम जीर्ण सामवेदसूत्र	—	(स)	१११	
देवदत्तवैतना	—	(सं)	१११	देवदत्तवैतना	—	(सं)	१११	
देवदत्तवैतना	आत्मुखा	(सं)	१११ ७११	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
देवदत्तवैतना	—	(स)	१७	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
देवदत्तवैतना	—	(सं)	४१	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
			४१ १४ १४४ ७१					
देवदत्तवैतना	—	(हि)	७१	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
देवदत्तवैतना	आत्मुखा	(सं)	११४	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
			११२, ४१२, १७२, १४ ७१					
देवदत्तवैतना	कवचन्द्र व्यासदा	(हि)	११२	देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	
				देवदत्तवैतना	—	(हि)	१११	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्रव्यसमग्रहवृत्ति	ब्रह्मदेव	(स०)	३४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०६
द्रव्यसमग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(स०)	३४			६५२, ७४८, ७६५	
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(स०)	३७	द्वादशागपूजा	—	(ग०)	४६१
दृष्टातशासक	—	(स०)	३२८	द्वादशागपूजा	ढालूराम	(हि०)	४६१
द्वादशभावनादीका	—	(हि०)	१०६	द्वाप्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	१७१
द्वादशभावनादृष्टांत	—	(गुज०)	१०६	द्विजयचतुषष्टी	—	(स०)	१३३
द्वादशमाला	कथि राजसुन्दर	(हि०)	७८३	द्वितीयसप्तोत्तरण	म० गुलाल	(हि०)	५६६
द्वादशमासा [वारहमासा] कवि राइसुन्दर	(हि०)	७७१	द्विपंचकव्याणवपूजा	—	(स०)	५१७	
द्वादशमासातचतुर्दशीप्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(स०)	१७१
द्वादशराशिफल	—	(स०)	६६०	द्विसंधानकाव्यटीका [पदवीमुदी]	नेमिचन्द्र	(स०)	१७२
द्वादशप्रतकथा	प० अन्नदेव	(स०)	२२८	द्विसंधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(स०)	१७२
			२४६, ४६०	द्विसंधानकाव्यटीका	—	(स०)	१७२
द्वादशप्रतन्या	चन्द्रमागर	(हि०)	२२८	द्वीपसमुद्रो के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वादशप्रतकथा	—	(ग०)	२२८	द्वीपायनढाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०
द्वादशप्रतपूजाजयमाल	—	(स०)	६७६				
द्वादशप्रतमण्डलोद्यापन	—	(स०)	५४०				
द्वादशप्रतोद्यापन	—	(स०)	४६१, ६६६	धनदत्त मेठ की कथा	—	(हि०)	२२६
द्वादशप्रतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाकथानक	—	(ग०)	२२६
द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाचीपई	—	(ग०)	७७२
द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	पद्मानन्दि	(स०)	४६१	धन्नाशलिभद्रचीपई	—	(ग०)	२२६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(स०)	१०६, ६७२	धन्नापालभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(स०)	७४४	धन्यकुमारचरित्र	प्रा० गुणभद्र	(स०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१७३
द्वादशानुप्रेक्षा	जलदण	(प्रप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	—	(स०)	१७८
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	सुशालचन्द्र	(हि०)	१७३, ७२६
द्वादशानुप्रेक्षा	काबि छत्त	(हि० पद्य)	१०६	धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट्ट	(हि०)	७६६	धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(स०)	४६१, ५६५
द्वादशानुप्रेक्षा	सुरत	(हि०)	७६४	धर्मचक्रपूजा	साधु रणमल्ल	(स०)	४६२

ध



मन्वायुक्रमविषय	श्लोक	मापा सूत्र सं०	मन्वायुक्रमविषय	श्लोक	मापा सूत्र सं०
वर्षचक्रमुखा	—	( सं ) ४२९	वर्षरस्ता	—	( वि ) १११
		२१ २३७	वर्षरस्तो	—	( वि ) ११३, ११४
वर्षचक्रप्रबंध	षडशमंत्र	( वा ) ३२६	वर्षरस्तो	—	( वं ) ११
वर्षचक्र	—	( वि ) ७२७	वर्षरिक्त	षाडशमंत्र	( वि ) १२५, १२६
वर्षचक्राणा	—	( वि ) ११	वर्षवर्षानुसंध	महाशक्ति इतिवचनम्	( वं ) १२४
वर्षचक्रपीठ	त्रिजिह्वा	( वि ) ७१२	वर्षवर्षानुसंधपीठ	वराकीर्ति	( वं ) १२४
वर्षचक्राचार वाचक	—	( वं ) ११७	वर्षवस्तुप्रबंध	—	( वं ) ११
वर्ष कुशला वीरौ का [विषय क्रिया]	( वि ) ११		वर्षवस्तुप्रबंध	श्रीपराशर गान्धीय	( वि ) ११
वर्षचक्रपीठ	षाडशमंत्र	( वि ) ७२७	वर्षवार [वीर्य] पं० शिरोमणित्रिजिह्वा	( वि ) ११, ११३	
वर्षचक्राणा	अभिहितगति	( सं ) ३३२	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	पं० ज्योतिषी	( वं ) ११
वर्षचक्राणा	विराहकीर्ति	( वि ) ७३२	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	षाडशमंत्र	३३७ ७३९	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वि ) ११
वर्षचक्राणावा	शुद्धात्म विगास्या	( वि व ) ३३९	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वि ) ७०३
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ३३८ ७३९	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	अ विषयवाच	( वि ) ३३७	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	सिंहमन्त्रि	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	अ त्रिजिह्वा	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	अभिहितगति	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	वर्षाश्राद्ध संदी	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	अ मेमिद्वय	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	विमलकीर्ति	( वं ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	सेवापयसाह	( वि ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( सं ) ९	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वा ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( सं ) २२३	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वं ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वा ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वं ) ११	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११
वर्षचक्राणावा	—	( वि ) ७३१	वर्षवर्षहृत्पतालकाचार	—	( वं ) ११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	६६३, ७०५
ध्वजारोपणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(स० प्रा०)	६६३
ध्वजारोहणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(अ०)	४६३
				नन्दाश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
				नन्दाश्वरपूजा जयमाल	—	(स०)	७५६
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दीश्वरपूजाविधान	टैकचन्द	(हि०)	४६५
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१६	नन्दीश्वरपूजाविधान	पद्मनन्द	(स०)	६३६
नगर स्थापना का मन्त्र	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपूजाविधान	—	(स०)	६६३
नगरो को बसापत ना मवतवार विवरण	मुनि कनककीर्ति	(हि०)	५६१	नन्दीश्वरपूजाविधान	—	(हि०)	५१४, ७६३
ननद भोजाई का भगडा	—	(हि०)	७५७	नन्दीश्वरपूजाविधान	—	(स०)	६३६
नन्दिताढ्यछद	—	(प्रा०)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	—	(स०)	६३६
नन्दिपेण महामुनि सज्जाय	—	(हि०)	६१६	नन्दीश्वरभक्ति	पन्नालाल	(हि०)	४६५, ४५५
नन्दीश्वररत्नचापन	—	(स०)	५३७	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६५
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिपेण	(स०)	२२६, ५१५
नन्दीश्वरजयमाल	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरविधानकथा	—	(स०)	२२६, २५५
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६	नन्दीश्वरभक्तविधान	टैकचन्द	(हि०)	५१५
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	(अ०)	५१६	नन्दीश्वरभक्तविधान	अनन्तकीर्ति	(स०)	६६३
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अ०)	४६२	नन्दीश्वरभक्तविधान	नन्दिपेण	(स०)	४६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	रत्ननन्द	(स०)	४६२	नन्दीश्वरभक्तविधान	—	(स०)	६६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	—	(स०)	४६३	नन्दीश्वरभक्तविधान	—	(स०)	६६३
			६०१, ६५२	नन्दीश्वरभक्तविधान	—	(प्रा०)	६६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	—	(प्रा०)	६५५	नन्दीश्वरभक्तविधान	—	(स०)	४६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२	नन्दूसप्तमीप्रतोद्यापन	—	(स०)	४६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३	नमस्कारमन्त्रवत्पविधिसहित	सिंहनन्द	(स०)	३५
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(स०)	५७६	नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(स० हि०)	६०
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्ति	(स०)	७६१	नमस्कारस्तोत्र	—	(स०)	४२
नन्दीश्वरपूजा	—	(स०)	४६३	नमिऊएस्तोत्र	—	(प्रा०)	६६
				नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३
				नयचक्रटीका	—	(हि०)	६६

सम्पन्नाम	लोक	भाषा	पुस्तक सं.	सम्पन्नाम	लोक	भाषा	पुस्तक सं.
नववचनभाषा	हेमचन्द्र	(हि )	११४	नववचनसुत्रविधान	मद्रास	(स )	४१४
नववचनभाषा	—	(हि )	११४	नववचनसौत्र	बेङ्गलूर	(बं )	११४
नववचनभाषा [बोहा]	भूपरदास	(हि )	११	नववचनसौत्र	—	(बं )	४१
नववचनभाषा	—	(हि )	७१	नववचनसुत्रविधान	—	(तं )	११४
नववचनभाषा	—	(हि )	११	नववचनसुत्र	—	(स )	१०
नववचनभाषा सुषी पदविद्या बर्णास	—	(हि )	११२	नववचनसुत्र	—	(स )	७१२
नववचनभाषा	सुषी	(स )	२२१	नववचनसुत्र	कश्मीर	(हि )	१०
नववचनभाषा	—	(बं )	११०	नववचनसुत्र	पञ्जाब	(हि )	१
नववचनभाषा	काञ्चिद्वाम	(स )	१०१	नववचनसुत्र	—	(हि )	१०
नववचनभाषा	सायिकसुत्र	(बं )	१०४	नववचनसुत्र	—	(हि )	१११
नववचनभाषा	—	(बं )	१०१	नववचनसुत्र	—	(हि )	१
नववचनभाषा	—	(बं )	१०१	नववचनसुत्र	द्वैतसुत्र	(हि )	७१
नववचनभाषा	—	(तं )	११०	नववचनसुत्र	विद्यापीठ	(हि )	१०१, ७१४
नववचन भाषा विषयी	शुद्ध	(हि )	१११	नववचनसुत्र	—	(तं )	१११
नववचनभाषा	शुद्ध	(हि )	११	नववचनसुत्र	बनारस	(हि )	७११
नववचनभाषा	—	(तं )	४११	नववचनसुत्र	—	(हि )	७१०
नववचनभाषा	—	(स )	१११	नववचनसुत्र	—	(तं )	११
नववचनभाषा	—	(हि )	७१	नववचनसुत्र	—	(बं )	११
नववचनभाषा	शुद्ध	(हि )	११०	नववचनसुत्र	—	(हि )	११
नववचनभाषा	—	(हि )	११२	नववचनसुत्र	धर्मसुत्र	(तं )	१०१
नववचनभाषा	—	(हि )	७११	नववचनसुत्र	सम्प्रदायसुत्र	(बं )	१०१
नववचनभाषा	—	(स )	११	नववचनसुत्र	—	(बं )	११
नववचनभाषा	शुद्ध	(हि )	११०	नववचनसुत्र	शुद्ध	(हि )	१०१
नववचनभाषा	—	(हि )	१११	नववचनसुत्र	—	(हि )	१०१
नववचनभाषा	—	(हि )	१११	नववचनसुत्र	प्रभासुत्र	(तं )	१०१
नववचनभाषा	—	(बं )	११	नववचनसुत्र	—	(हि )	१११
नववचनभाषा	—	(स )	७११	नववचनसुत्र	—	(हि )	१११
नववचनभाषा	—	(तं )	४११	नववचनसुत्र	—	(स )	१११
नववचनभाषा	—	(न हि )	११	नववचनसुत्र	किरानसुत्र	(हि )	१११

## ग्रन्थानुक्रमिका ]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागथीसज्जाय	विनयचन्द्र	(हि०)	४४१	नित्यनियमपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	४६६
नाटकसमयसार	धनारसीदास	(हि०)	६४०	नित्यनियमपूजासग्रह	—	(हि०)	७१०
	६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६			नित्यनेमित्तिकपूजापाठ सग्रह	—	(स०)	५६६
नाहीपरीक्षा	—	(स०)	२६८	नित्यपाठसग्रह	—	(म० हि०)	३६८
			६०२, ६६७	नित्यपूजा	—	(स०)	५६०
नादीमङ्गलपूजा	—	(स०)	५१८				६६४, ६६४, ६६७
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५	नित्यपूजा	—	(हि०)	४६८
	२७६, ५७४, ६८६, ६६६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६			नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४६८
नाममाला	धनारसीदास	(हि०)	२७६	नित्यपूजापाठ	—	(स० हि०)	६६३
	६०६, ७६५						७०२, ७१५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६६७ ७६६	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(प्रा० स०)	६६४
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(स०)	६६३
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(स०)	७००
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(स०)	२८५				७७५, ७७६
नारायणकवच एव म्रष्टक	—	(स०)	६०८	नित्यपूजासग्रह	—	(प्रा० म्रप०)	४६७
नारीरासो	—	(हि०)	७५७	नित्यपूजासग्रह	—	(स०)	४६७, ७६३
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७	नित्यवदनासामायिक	—	(स० प्रा०)	६३३
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०	निमित्तज्ञान [भद्रवाहु महिता] भद्रवाहु	(म०)		२८५
निघट्ट	—	(स०)	२६६	नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(पा०)	३८
निजस्मृति	जयतिलक	(स०)	३८	नियमसारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(म०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५	निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
नित्य एव भाद्रपदपूजा	—	(स०)	६४४	निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५ ४६५	निरञ्जनस्तोत्र	—	(स०)	४२४
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४६५	निर्भरपञ्चमोवधानवथा विनयचन्द्र	(म्रप०)	२४५, ६२८	
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८	निर्दोषसप्तमीकथा	—	(म्रप०)	२४५
नित्यनियमपूजा	—	(स०)	४६५	निर्दापसप्तमीकथा	पाडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
			५१६, ६७६	निर्दापसप्तमीव्रतकथा	ब्र० रायमल्ल	(स०)	६७६, ७३६
नित्यनियमपूजा	—	(स० हि०)	४३६	निर्माल्यदापवर्णन	वा० दुलीचन्द्र	(हि०)	६५
			५६७, ६८६	निर्वाणकल्याणकपूजा	—	(स०)	४६८

ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं
निर्वाणनाथशाला	—	(भा)	३२५	नीतिशालासुख	सामवेदसूरि	(ब)	११
४२६, ४३१, ४२९, ४२१, ४२२, ४२३, ४३			४१२	नीतिविनोद	—	(वि)	११
१७, १६४, ७१९, ७२३, ७०४, ७			७२	नीतिवचक	मत्तु हरि	(दं)	३२६
निर्वाणकालकटीका	—	(भा)	३३६	नीतिमाला	चाणक्य	(घं)	७१७
निर्वाणकालकटुका	—	(घ)	४६	नीतिवार्ता	इन्द्रबन्धि	(दं)	३२६
निर्वाणकालकटापा	श्रीपा धरगवतीवास	(लं)	३३६	नीतिवार्ता	चाणक्य	(घ)	१५४
४१३, ४२६, ४४१, ४३२, ४७			४६९, ९	नीतिवार्ता	—	(दं)	३३६
४१४, ४१६, ४४३, ४२			४११, ४६२, ४७२, ७	नीलकण्ठप्रबिन्द	नीलकण्ठ	(दं)	२५१
७२, ७४७				नीलसुख	—	(दं)	११
निर्वाणकालकटापा	सुबहा	(दि)	७	नेमिबोध	पासचद	(दि)	४४१
निर्वाणकालकटुका	—	(दि)	४६६, ४१	नेमिबोध	मूचरदास	(दि)	४११
निर्वाणकालकटुका	—	(दि)	४६२	नेमिप्रतिपत्त्युक्त	कैतकी	(दि)	११७
निर्वाणकटुका	—	(ल)	४६६	नेमिप्रतिपत्त्युक्त	मुनि शोधराज	(दि)	११
निर्वाणकालकटापा	ममरज्जुकास	(दि)	४६६	नेमिबोका चरित्र	आयुष्य	(दि)	१७९
निर्वाणकालकटापा	—	(दि)	१२	नेमिबोकी बहुरी	विद्यमूष्य	(दि)	७०६
निर्वाणकटापा	—	(घ)	३६६, ११३	नेमिप्रकृत्युक्त	महाकवि विष्णु	(दं)	१७९
निर्वाणकटापा	पद्माकाक चौबरी	(दि)	४२	नेमिप्रकृत्युक्त	जगन्नाथ	(लं)	३६६
निर्वाणकटापा	—	(दि)	३६६	नेमिप्रकृत्युक्त	दं शक्ति	(दं)	४११
निर्वाणकटुका	विद्यमूष्य	(दि)	१६	नेमिप्रकृत्युक्त	बाणनाथ	विबोधिनाथ	काकचन्द्र
निर्वाणकटुका	नेमिदास	(दि)	१२	नेमिप्रकृत्युक्त	—	(दि)	७११
निर्वाणकटापा	—	(लं)	९	नेमिप्रकृत्युक्त	—	(दि)	१११
निर्वाणकटुका	—	(घं)	३६६	नेमिप्रकृत्युक्त	शेखराम	(दि)	१७१
निर्वाणकटुका	—	(दं)	३६६	नेमिप्रकृत्युक्त	—	(दि)	१७१
निर्वाणकटुका	—	(लं)	३६६	नेमिप्रकृत्युक्त	१, ७-४, ७०४		
निर्वाणकटुका	श्रद्धासागर	(दि)	२२	नेमिप्रकृत्युक्त	निर्वाणकटापा	(दि)	४४
निर्वाणकटुका	शक्ति हरिप्रिय	(दि)	७६२	नेमिप्रकृत्युक्त	—	(दि)	७९
निर्वाणकटुका	श्रद्धासागर	(लं)	३३६	नेमिप्रकृत्युक्त	जगन्मूष्य	(दि)	३६०
निर्वाणकटुका	—	(दि)	२३	नेमिप्रकृत्युक्त	हेमचन्द्राचार्य	(दं)	१७१
निर्वाणकटुका	—	(दं)	१२	नेमिप्रकृत्युक्त	शुभचन्द्र	(दि)	३०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(स०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवनक्रीति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(स०)	७६३	नेमिराजुलपञ्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रक्रीति	(स०)	४६६	नेमिराजुलसज्ज्माय	—	(हि०)	४४३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शभूराम	(स०)	४६६	नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	१००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(स०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिसुरकवित्त [नेमियुर राजमतिवेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का वारहमासा	—	(हि०)	७०५				
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	७५७	नेमीश्वरका वारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	रत्नक्रीति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनक्रीति	(हि०)	७२२
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	३६६	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरको रास	भाऊकावि	(हि०)	६३८
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१४७	नेमीश्वरचीमासा	सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(स०)	१७७	नेमीश्वरका फाट	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाणपञ्चिका	—	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह सा०	(हि०)	७७६
नेमिव्याहली	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	मुनि रतनक्रीति	(हि०)	७२२
नेमिराजमती की घोडी	—	(हि०)	४४१	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१				६२१, ६३८
नेमिराजमति वारहमासा	—	(हि०)	६५७	नेमित्तिक प्रयोग	—	(स०)	६३३
नेमिराजमतिरास	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७	नेपथ्यचरित्र	हर्षक्रीति	(स०)	१७७
नेमिराजलव्याहली	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	नौशेरवा बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजुलवारहमासा	श्रानन्दसूरि	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(स०)	१३४
नेमिराजपिसज्ज्माय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(स०)	१३४

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
व्यासगीता	यदि धर्मसूयण	( ७ ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	जाटेश्वर मिश्र	( वि ) १
व्यासदीपिकाभाषा	मधी पद्माकाश	( वि ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	टेकचण्ड	( वि ) १
व्यासगीताभाषा	सद्गामुख कासरीबाबू	( वि ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	पद्माकाश	( वि ) १
व्यासभाषा	परमईस परिब्राह्मणचार्न	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	मैत्रवाच	( वि ) १
व्यासभाषा	—	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	रूपचण्ड	( वि ) १
व्यासभाषा	माधवदेव	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	शिवजीकाश	( वि ) १११
व्यासभाषा	—	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) १११
व्यासविद्यालयपत्र	म बृहामणि	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १
व्यासविद्यालयपत्र	बामदेवास	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	[व्यासविद्या]	—
व्याससूत्र	—	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) ११
दुर्गापुत्रा	—	( वि ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	ज्ञानसूयण	( सं ) ११
दुर्गापुत्रा	—	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) १, २, ३
दुर्गापुत्रा	—	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	गङ्गादास	( सं ) १
दुर्गापुत्रा	मिरुपाश	( वि ) ७७७	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	धामसेन	( सं ) ७७
दुर्गापुत्रा	बसी	( वि ) ७७७	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) ११
दुर्गापुत्रा	—	( सं ) ११५ १५	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १
पु			पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	दामचण्ड	( सं ) १
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	सुरेश्वराचार्य	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	म रामकाश	( वि ) ७७
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	इरचण्ड	( वि ) ५	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	इरिचण्ड	( वि ) ७७७	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	५० विष्णुदास	( सं ) ११
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) ११
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	चरुणमणि	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) ११
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	शुशुकीर्ति	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	[११] कनकी विधि	( सं ) ११
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	बाहीमसिंह	( सं ) १०	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १०, ७१
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	सुधासागर	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	विद्यामणि	( सं ) ५
		१११, ११०	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	सुप्रकीर्ति	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) १
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	सुरेश्वरीर्ति	( सं ) १११	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) ७७
पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( सं ) १	पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	—	( वि ) १
११५ ११	१११, १११, १११		पञ्चतन्त्रकथपुत्रा	दाहणम	( वि ) ११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पञ्चपरमेष्ठीगुरास्तवन	—	(हि०)	७०७	पचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(सं०)	५०४, ५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५०२, ५१८	पचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(सं०)	६३८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०२	पचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	५०३	पचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
			५१४, ५६६	पचमेरुद्यापन	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूगाम	(हि०)	५०३	पचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०३, ५१८	पचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३	पचमेरूपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५१६
			५१८, ५१६, ६५२, ७१२	पचमेरूपूजा	भ० महीचन्द्र	(सं०)	६०७
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५	पचमेरूपूजा	—	(सं०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(सं०)	४२२				५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१	पचमेरूपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवक्त्रभसूरि	(हि०)	४४३	पचमेरूपूजा	—	(सं०)	६३६
पञ्चपरमेष्ठीसनुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०२	पंचमेरूपूजा	डालूगाम	(हि०)	५०५
पञ्चपरावर्तन	—	(सं०)	३८	पचमेरूपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०५
पञ्चपालपैतिसी	—	(हि०)	६८६	पचमेरूपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५
पञ्चप्ररूपणा	—	(सं०)	२६६				५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६
पञ्चवधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१	पचमेरूपूजा	सुवानन	(हि०)	५०५
पञ्चवधावा	—	(राज०)	६८२	पचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चवालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४				५१६, ७४५
पञ्चमगतित्रेलि	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२१	पचमङ्गलपाठ, पचमकल्याणकमङ्गल, पचमङ्गल	—		—
			६६१, ६६८, ७५०, ७६५		रूपचन्द्र	(हि०)	३६८
पचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४०	४२८, ४०१ ५०५, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४,			
पचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५०४	६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३,			
पचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६	६७५, ६७६, ६८१, ६६१, ६६३, ७०४, ७०५, ७१०,			
पचमीरुद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७	७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८			
पचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५	पचयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५०४	पचरत्नपरीक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पचमीव्रतपूजा	—	(सं० हि०)	५१७	पचलविधविचार	—	(प्रा०)	७०७



ग्रन्थनाम	संस्क	मापा वृत्त सं०	ग्रन्थनाम	संस्क	मापा वृत्त सं०
श्यामरीतिरा	यति धर्ममूपय	( ल ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	दाटेलाळ मित्तत्र	( रि ) १
श्यामरीतिराभावा	मंषी पञ्जाळाज	( रि ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	टेकवन्द्	( रि ) २ १
श्यामरीतिराभावा	महासुम्ब कामलीबाक	( रि ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	पञ्जाळाज	( रि ) २ १
श्यामभावा	परमहंस परिम्राजवाचाप	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	मैत्रेयनाम	( रि ) २ १
श्यामभावा	—	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	रुचवन्द्	( रि ) २
श्यामभावा	मायवदेव	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	शिवाजीळाळ	( रि ) १११
श्यामभावा	—	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) १११
श्यामनिउत्तमवृत्तुवा	म बुद्धामरि	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १ १
श्यामनिउत्तमवृत्तुवा	ज्ञानकेवाम	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १ १
श्यामवृत्त	—	( लं ) ११२	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	[मध्यतविच]	—
शुनिवृत्तुवा	—	( रि ) १ ०	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १११
शुनिवृत्तुवा	—	( रि ) १ १	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	ज्ञानमूपय	( लं ) ११
शुनिवृत्तुवा	विक्रवाज	( रि ) ७०७	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) २ १ ७०६
शुनिवृत्तुवा	बसो	( रि ) ७०७	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	पञ्जाशास	( लं ) २ १
शुनिवृत्तुवा	—	( लं ) २१४ १४	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	सामयज	( लं ) ७०२
	प		वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	सुम्यराप र्य	( लं ) २११	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	शुभवन्द्	( लं ) २ १
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	इरवन्द्	( रि ) ४	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	म रावमज	( रि ) ७११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	इरिवाग्	( रि ) ७०६	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १ १
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) १११	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	ब० विष्णुसार्मा	( लं ) ११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	मकुणमरि	( लं ) २	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) ११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	गुणधीनि	( लं ) २	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	[१२] कवचो विधि	( लं ) १११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	वादीभसिद	( लं ) २७	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	वमाश्यामी	( लं ) २०६ ७११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	सुगभागर	( लं ) २	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	विद्यामनि	( लं ) ४ १
		२११, २१७	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) २ १
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	सुवरादीनि	( लं ) २	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) ११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	सुम्युधीनि	( लं ) २२१	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) ११
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( लं ) २	वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	—	( रि ) ७०२
वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	२ १ २१ २११ १११ १११		वज्ररत्नप्रवृत्तुवा	दासुराम	( रि ) ११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं
पंचतन्त्र	व्या नेमिकम्	(शा)	१८	कवीश्वर	—	(शं)	१७४
पंचतन्त्रटीका	अमितगति	(शं)	१९	पट्टीपञ्चमैत्री कुतक	—	(शि)	१९
पंचतन्त्रटीका	—	(शं)	४	कट्टीति	विष्णुमह	(शं)	१११
पंचतन्त्रवृत्ति	अभयचम्प	(श)	१९	कट्टीति	—	(शि)	१७१ ७९९
पंचतन्त्र	—	(श)	२११	कविप्रमत्तमुष	—	(शा)	१११
पंचतन्त्र	—	(श)	२७५	कल्लरहोत्रमाल	—	(शर)	१११
पंचतन्त्रटीका	—	(शं)	४१	कनकटीका	शश्वेराटी	(श)	१११
पंचतन्त्रटीका	—	(शं)	४१	कनकटीका	विद्यामन्त्रि	(शं)	१११
पंचतन्त्र	विष्णुरामो	(श)	२१२	कन्यासम्बन्धितार	—	(शं)	१११
पंचतन्त्र	कवच		२३	कव	कलौराम	(शि)	१२
पंचतन्त्रप्रबोध	—	(शं)	२३	कव	कनकचराम	(शि)	१२
पंचतन्त्रभाष्य	गणेश [विभवपुत्र]	(शं)	२३	कव	कनकचराम	(शि)	१२
पंचतन्त्रप्रकार	—	(शं)	१७१ ११९	कव	कनकचराम	(शि)	१२ ७२७ ७२४ १
पंचतन्त्रटीका	—	(शि)	७५९	कव	कनकचराम	(शि)	१२
पंचतन्त्र	त्रिभुवनचम्प	(शि)	१७१	कव	कनकचराम	(शि)	१२, ७२७, ७२९
पंचतन्त्र	कुण्डकुम्भाचार्य	(शा)	४	कव	कनकचराम	(शि)	१२१, ७२९
पंचतन्त्र	अमृतचम्पुसुरि	(श)	४१	कव	कनकचराम	(शि)	१२१
पंचतन्त्र	कुचराम	(शि)	४१	कव	कनकचराम	(शि)	१२१ ७ १ ७२४ ७७४
पंचतन्त्र	प हीरामन्त्र	(शि)	४१	कव	कनकचराम	(शि)	१२ ११२, ११४
पंचतन्त्र	पांडे हेमराज	(शि)	४१	कव	कनकचराम	(शि)	७७७ ७२९
पंचतन्त्र	—	(शि)	७१९, ७२	कव	कनकचराम	(शि)	१२ ७
पंचतन्त्र	कीर्ति	(शि)	७१५	कव	कनकचराम	(शि)	११४ ७२९
पंचतन्त्र	ठकपुरसी	(शि)	७ १	कव	कनकचराम	(शि)	११९
पंचतन्त्र	—		७२२, ७६३	कव	कनकचराम	(शि)	१२, १७
पंचतन्त्र	—	(शि)	१११	कव	कनकचराम	(शि)	११९
पंचतन्त्र	—	(शं)	१ ४	कव	कनकचराम	(शि)	१२, १७
पंचतन्त्र	कीर्ति (शि)	१	७१२	कव	कनकचराम	(शि)	११९
पंचतन्त्र	—	(शि)	११	कव	कनकचराम	(शि)	१२ १
पंचतन्त्र	—	(शि)	७४९				



ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०	
१२	नयनसुख	(दि) २ १	१२	माघ	(दि) १२०	
१२	मरुपात्र	(दि) २४०	१२	भाष्यसूत्र	(दि) १२०	
१२	मन्त्र	(दि) २४१	१२	मानुकीर्ति	(दि) १२१	
१२२, १२३ १३ ११२, ११५ १२४ १२५ १२६,					१२२, ११२	
७ १ ७८२, ७ १ ७८५			१२	मूषरदास	(दि) २	
१२	म माधु	(दि) १२२	१२६ १२७ १२८ ११५ ११६, ११७ १२५ ११५			
१२	निर्मल	(दि) १२३	१२५ ७ २, ७८३ ७८५			
१२	नेमिचन्द्र	(दि) १२८	१२२, ११३	१२	मन्त्रसारा	(दि) १ १
१२	न्यास	(दि) ७८८	१२	मन्तराम	(दि) ११	
१२	पद्मविहङ्ग	(दि) १२३	७२५ ७२६ ७१२, ७१३, ७१४	१२	मन्त्रसारा	(दि) १
१२	पद्मनिन्द	(दि) १२३	११३, ११५			
१२	परमानन्द	(दि) ७७	१२	मनोहर	(दि) ७११	
१२	पारसदास	(दि) १२५			७१५, ७१६	
१२	पुरुषोत्तम	(दि) २ १	१२	मन्त्रसूत्र	(दि) १२१	
१२	पूजा	(दि) ७ २	१२	मन्त्रदास	(दि) ७११	
१२	पूज्यदेव	(दि) ११३	१२	मन्त्रिण	(दि) १२४	
१	पद्मचन्द्र	(दि) १७६	१२	मन्त्रेणुकीर्ति	(दि) ११ ७१२	
		१८ २ १ २ २	१२	माणिक्यचन्द्र	(दि) १२२	
१२	बालराम	(दि) १२३			१२८ ७१२	
		१२६, ११ ७ २, ७ १ ७८३	१२	मुकुन्ददास	(दि) १२	
१२	बनारसीराम	(दि) २ १	१२	मेधा	(दि) ७११	
२ १ २, २, १२६ २ ७ २ १ ११३ ११३ ११७ ७८५			१२	मेधीराम	(दि) ७११	
१२	ब्रह्मदेव	(दि) ७८५	१२	माहीराम	(दि) ११३	
१२	बाह्यचन्द्र	(दि) १२२	१२	मोहन	(दि) ७१५	
१२	बुधचन्द्र	(दि) १७०	१२	राजचन्द्र	(दि) १२२	
		१७१ १२३ १२५ ७ १, ७ २, ७८६	१२	राजविह	(दि) १२८	
१२	भगवत्पद	(दि) ७८	१२	राजाराम	(दि) २६	
१२	भगवतीराम	(दि) ७ १	१२	राज	(दि) ११३	
१२	भग्येन्द्र	(दि) २ १	१२	राजद्विपान	(दि) ११	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	सकलकीर्त्ति	(हि०)	५८८
			६६८, ६६९	पद	सन्तदास	(हि०)	६५४, ७५९
पद	रामदाम	(हि०)	५८३	पद	सबलसिंह	(हि०)	६२४
			५८८, ६६७	पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७६
पद	रामभगत	(हि०)	५८२				५८८, ५८९, ७७७
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५	पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४९	पद	सवाईराम	(हि०)	५९०
			७५५, ७६३, ७६५, ७८३	पद	साईदास	(हि०)	६२०
पद	रेवराज	(हि०)	७६८	पद	साहकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२	पद	साहिबराम	(हि०)	७६८
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५	पद	सुखदेव	(हि०)	५८०
पद	लालचन्द्र	(हि०)	५८२	पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
			५८३, ५८७, ६६६, ७६३	पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	विजयकीर्त्ति	(हि०)	५८०	पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
			५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६६७	पद	सूरदास	(हि०)	७६६, ७६३
पद	बिनोदीलाल	(हि०)	५९०	पद	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२२
			७२३, ७५७, ७८३, ७९८	पद	सेवग	(हि०)	७६३, ७६८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५६१, ६२१	पद	हठमलदास	(हि०)	६२४
पद	विसनवास	(हि०)	५८७	पद	हरखचन्द्र	(हि०)	५८३
पद	विहारीदास	(हि०)	५८७				५८४, ५८५, ७६३
पद	धृन्दावन	(हि०)	६४३	पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	५८६
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३				५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०				७६३, ७६४
पद	शुभचन्द्र	(हि०)	७०२, ७२४	पद	हरिअन्द्र	(हि०)	६४९
पद	शोभाचन्द्र	(हि०)	५८३	पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०				५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६६६, ७७२, ७७६
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८३				७६३, ७६६
पद	श्रीराम	(हि०)	५९०	पद	हरीदास	(हि०)	७७०
				पद	मुनि हीराचन्द्र	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
४१	दुर्गाच	(हि)	११				
४२	—	(हि)	१४१	बघावतीविष्णुस्तुति	—	(हि)	२१
१० १०१, १ १ १४१ १४४ १२ १२१ ७ १				बघावतीपत्नीबारावना	समयमुन्दर	(हि)	११०
७ ४ ७ १, ७१४ ७११ ७२१ ७२४ ७७ ७७३				बघावतीपाठिक	—	(हि)	२१
प्यही	यद्यच्छीति	(भा)	१४२	बघावतीब्रह्मनाम	—	(हि)	१०१
प्यही	महद्यथा	(भा)	१४१		२ १, १२१, १११ ७११ ७११		
बघावती	शास्त्रार्थ	(मं)	१११	बघावतीविष्णुनामस्तुति	—	(मं)	२१
बघवतिलकार	—	(हि)	१७७	बघावतीसुवचनसंवर्णन	—	(मं)	१११
बघवतुला	म० बमकीति	(मं)	१४१	बघावतीस्तोत्र	—	(मं)	१०१
बघवतुला	द्विपदाभाष्य	(मं),	१४७	४२१ ४१ ४१२ ४११ २ १ २११ २११ १११			
बघवतुला (राजकुल)	सोमसम	(मं)	१४७	१४१ १४७ १७१ ७१२, ७१७ ७११			
बघवतुला (सालक्य)	—	(मं)	१४१	बघवतीस्तोत्र	समयमुन्दर	(हि)	११
बघवतुलाभारता	मुद्राराक्षसम्	(हि)	१४१	बघावतीस्तोत्रपरीक्षणनामनिधि	—	(मं)	७११
बघवतुलाभारता	द्वीजनराम	(हि)	१४१	४१ वचनी	—	(हि)	७११
बघवतीविष्णुस्तुति	बघवति	(मं)	११	बघवती	विद्वाती	(हि)	७१
बघवतीविष्णुस्तुति	—	(मं)	१७	बघवती	संग	(हि)	७१
बघवतीविष्णुस्तुति	अनन्तराम	(हि)	१७	बघवती	आमन्त्रणम्	(हि)	७१ ७३३
बघवतीविष्णुस्तुति	सम्राज्य	(हि)	१	बघवती	मं बपुरा	(हि)	१४१
बघवतीविष्णुस्तुति	—	(हि)	१	बघवती	संगराज्य	(हि)	१४१
बघवतीविष्णुस्तुति	बघवति	(मं)	१	बघवती	संगराज्य	(हि)	१४१
बघावतीविष्णुस्तुति	बघवती	(मं)	४ १	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावती श्री राज	—	(हि)	४ १	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीस्तुति	—	(मं)	१४१	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णुस्तुति	—	(मं)	२ १ ७११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णुस्तुति	—	(मं)	४११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णुस्तुति	महद्यथा	(मं)	१ ७	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावती विष्णु	—	(मं)	१ १ ७११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णु	—	(मं)	२ १ ७११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णु	—	(मं)	२ १ ७११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१
बघावतीविष्णु	—	(मं)	२ १ ७११	बघवती	अनन्तराम	(हि)	१४१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	वनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७४	
पदसग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(स०)	५१६
पदसग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०६
पदसग्रह	वखतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसग्रह	वनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५ ४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(स०)	११०
पदसग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(स०)	१११
पदसग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(स०)	१११
पदसग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशटीका	खानचद	(हि०)	१११
पदसग्रह	मगलचन्द	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
पदसग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
पदसग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
पदसग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान भोसवाल	(हि०)	११६
पदसग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
पदसग्रह	शुभचद	(हि०)	७७७	परमानन्दपचत्रिंशति	—	(स०)	४०४
पदसग्रह	साहिवराम	(हि०)	४४५	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	४०२, ४३७
पदसग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	४०३
पदसग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तवन	—	(स०)	८०४, ४२५
पदसग्रह	सेवक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	७२४
पदसग्रह	हरखचद	(हि०)	६६३	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(स०)	५७४
पदसग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	—	(स०)	४०४
पदसग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७	
पदसग्रह	—	(हि०)	४४४	परमानन्दस्तोत्र	वनारसीदास	(हि०)	५६२
४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०				परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०				परमार्थगीत व दोहा	रूपचद	(हि०)	७०६, ७६४
७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७९०				परमार्थसुहृती	—	(हि०)	७२४
				परमार्थस्तोत्र	—	(स०)	४०४



ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०
१२	हेमरात्र	(हि) २२		१०१ २ ६ २२७ १२२, १२३	
१२	—	(हि) ४४२	पद्मावतीनन्दनपुत्रा	—	(ई) २ १
१७	२०६ १ १ १४१, १४४ १२	१२३ ७ १	पद्मावतीरानीधारापत्रिका	समबन्धुम्बर	(वि) ११७
७ ४ ७ २, ७२४ ७२१ ७२३ ७२४ ७७			पद्मावतीकाविक	—	(ठ) २ १
पद्मरी	परकीर्ति	(पा) १४२	पद्मावतीब्रह्मनाम	—	(ड) ४०३
पद्मरी	सहस्रपत्र	(पा) १४१		२ १, २२१, १२२, ७११, ७१२	
पद्मशेखर	गोवर्धन	(बं) १११	पद्मावतीसहस्रनामपुत्रा	—	(बं) २ १
पद्मशक्तिशार	—	(हि) १७७	पद्मावतीस्त्वनाममंत्रसहित	—	(बं) ४२१
पद्मपुत्र	म धर्मकीर्ति	(बं) १४२	पद्मावतीस्तोत्र	—	(बं) ४ १
पद्मपुत्र	रत्नमेघाशोक	(बं) १४४	४२३ ४२ ४२२ ४२३ २ १ २२२, २२३ १४२		
पद्मपुत्र (राजपुत्र), म० सोमसेन		(बं) १४४	१४१ १४७ १७२ ७१२, ७२७ ७७२		
पद्मपुत्र (जतराज्य)	—	(बं) १४२	पद्मावतीस्तोत्र	समबन्धुम्बर	(वि) १०१
पद्मपुत्रकथा	सुराक्षत्रम्	(हि) १४२	पद्मावतीस्तोत्रवीर्यवर्धनात्मविधि	—	(ड) ७११
पद्मपुत्रकथा	दीक्षतराम	(हि) १४२	पद्मिनती	—	(वि) ७१२
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका	पद्मनि	(बं) ११	पद्मबद्ध	विहारी	(वि) ७१
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिकाटीका	—	(बं) १७	पद्मबद्ध	गंगा	(वि) ७१
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका	अनंतराम	(वि) १७	पद्मपद्म	वासन्धन	(वि) ७१ ७७७
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका मन्त्राङ्क	सिद्धि	(वि) १	पद्मपद्म	म कपूरचंद्र	(वि) ४१२
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका	—	(वि) १	पद्मपद्म	कैमराज	(वि) ४१२
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका	पद्मनि	(बं) १	पद्मपद्म	गंगाराम वैद्य	(वि) ११२
पद्मनिर्वर्णविद्युत्पिका	पद्मनिर्वेष	(बं) ४ १	पद्मपद्म	कैमराज	(वि) ४१२
पद्मावती की डाल	—	(हि) ४ २	पद्मपद्म	केसुम्बर	(वि) ४११
पद्मावतीकथा	—	(बं) १४२	पद्मपद्म	अनंतराम	(वि) ४१२
पद्मावतीकथा	—	(बं) २ १ ७४१	पद्मपद्म	विमलास	(वि) ७०१
पद्मावतीकथा स्वरीस्तोत्र	—	(बं) ४१२	पद्मपद्म	जाया	(वि) ४१२
पद्मावतीकथा	सद्भाषण	(बं) १ ७	पद्मपद्म	मन्मथराम	(वि) ४१२
पद्मावती कथा	—	(बं) ४ २ ७४१	पद्मपद्म	कुमाराम	(वि) ११०
पद्मावतीकथा	—	(बं) २ १ ७४१	पद्मपद्म	कैमराज	(वि) ४११
पद्मावतीपुत्रा	—	(बं) ४ २			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	
पदसग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११	
पदसग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	वनारसीदास	(हि०)	४०२	
पदसग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७८		
पदसग्रह	नगल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(स०)	५१६	
पदसग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द्र	(हि०)	१०६	
पदसग्रह	वल्लतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(स्रप०)	११०	
पदसग्रह	वनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७		
पदसग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५ ४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	श्री० अमृतचन्द्र	(स०)	११०	
पदसग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(स०)	१११	
पदसग्रह	भागचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(स०)	१११	
पदसग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशवालावबोधनीटीका	रामचन्द्र	(हि०)	१११	
पदसग्रह	मगलचन्द्र	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८	
पदसग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११	
पदसग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५	
पदसग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान	श्रीसवाल	(हि०)	११६
पदसग्रह	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६	
पदसग्रह	शुभचन्द्र	(हि०)	७७७	परमानन्दपञ्चविंशति	—	(स०)	४०४	
पदसग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मानदि	(स०)	४०२, ४३७	
पदसग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	४०३	
पदसग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तवन	—	(स०)	८०४, ४२५	
पदसग्रह	सोषक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	७२४	
पदसग्रह	हरखचन्द्र	(हि०)	६६३	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(स०)	५७४	
पदसग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	—	(स०)	४०४	
पदसग्रह	हीराचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४७			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७		
पदसग्रह	—	(हि०)	४४५	परमानन्दस्तोत्र	वनारसीदास	(हि०)	५६२	
	४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०			परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६	
	७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०			परमार्थगीत व दोहा	रूपचन्द्र	(हि०)	७०६, ७६४	
	७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०			परमार्थसुहरी	—	(हि०)	७२४	
				परमार्थस्तोत्र	—	(स०)	४०४	



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	
पार्वनाथकीपुराणमाल	लोहट	(हि०)	७७६	पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	(हि०)		
पारसनाथकीनिसाणी	—	(हि०)	६५०	पार्श्वनाथस्तवन	समयमुन्दरगणि	(राज०)		
पार्वनाथकीनिशानी	जिनहर्ष	(हि०)	५५८, ५७६	पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	५६६, ५७६	
पार्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७००	पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)		
पार्वनाथवेदर्शन	घुन्दाधन	(हि०)	६२५	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	७०२, ७०३	
पार्वनाथचरित्र	रडधू	(म०)	१७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	५६६, ७०३	
पार्वनाथचरित्र	चाट्टिराजसूरि	(स०)	१७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(स०)	५६६, ७०३	
पार्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(स०)	१७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(स०)	५६६, ७०३	
पार्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५६६, ७०३	
पार्वजिनचेर्यालयचित्र	—	—	६०३	५०६, ५२५, ५२५, ५२६, ५३२, ५६६, ५७८, ६५५	—	—		
पार्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६५२	६५७, ६५८, ६५९, ६७०, ७६३	पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	५०६, ५६६, ६९१
पार्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपञ्चावतीस्तोत्र	—	(स०)	५०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपुराण [पार्वपुराण]	भूधरदास	—		पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
	(हि०)		१७६, ७५८, ७६१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपूजा	—	(स०)	५२३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
			५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०५, ७३१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(स०)	५१३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
			५६६, ६००, ६२३, ६५५, ६५८	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथपूजामग्रसहित	—	(स०)	५७५	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	सहामुनि राममिह	(स०)	५०६	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथनदमीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	५०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथस्तोत्र	देवचन्द्रसूरि	(स०)	६३३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	ब्र० नाथ	—		पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	
	(हि०)		६७०, ६८३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	५०६, ५६६, ७३३	

ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ स	ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ स
विपक्षद्वयप्रत्यय	मासन कवि	( वि ) ३१	पुष्पात्सर्वविद्ययात्मभवा	दोषद्वय	( वि ) ११
विपक्षद्वयप्रत्यय (द्वय एतावन्ती) —			पुष्कराज पुष्पा	विद्यामुपय	( सं ) ११०
	हरिरामदास	( वि ) ३११	पुष्पकविचयुवा	—	( सं ) ११२
विपक्षप्रदीप	महृ शशमीनाथ	( सं ) ३११	पुष्पाञ्जलिचयुवा	—	( प्र ) १११
विपक्षप्रत्यय	रूपदीप	( वि ) ७ १	पुष्पाञ्जलिवचनवाच	—	( प्र ) १११
विपक्षप्रत्यय	मागाराज	( सं ) ३११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा प	इतिश्रुत	( वा ) १११
विपक्षप्रत्यय	—	( सं ) ३११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	—	( सं ) २११
पीठतुला	—	( सं ) १	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	विनयास	( सं ) १११
पीठप्रत्यय	—	( सं ) १०२	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	श्रुतकीर्ति	( सं ) १११
पुष्पकीर्ति	—	( वा ) ११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	शक्तिवकीर्ति	( सं ) १११, १११
पुष्पक्रीडा	समकमुन्दर	( वि ) १११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	सुराजयन्त्र	( वि ) १११
पुष्पकल्पचर्चा	—	( सं ) ४१			१११, ७११
पुष्पाञ्जलिकलाक्रीडा	समुद्र रामचंद्र	( सं ) १११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	[पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा]	गङ्गाप्रथम
पुष्पाञ्जलिकलाक्रीडा	दैवचंद्र	( वि ) २१४			( सं ) १ ५ १११
पुष्पाञ्जलिकलाक्रीडा	शैलवराह	( वि ) २११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	म रतवचन	( सं ) १०५
पुष्पाञ्जलिकलाक्रीडा	—	( वि ) २११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	म० द्रुमचन	( सं ) १
पुष्पाञ्जलिकलाक्रीडावृत्तिका	—	( वि ) २१४	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	—	( सं ) १ ५, १११
पुष्पाञ्जलिकावचन	— ( सं ) १ ७	१११	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	—	( सं ) १११
पुष्पारत्नदीपिका	मासदेव	( वि ) १	पुष्पाञ्जलिविधानप्रथमा	—	( सं ) ११
पुष्पारत्नतुला	—	( सं ) १११	पुष्पा	पुष्पमिह	( सं ) ११
पुष्पारत्नविधानप्रथमा	—	( सं ) १११	पुष्पा सर्व कलासंग्रह	सुराजयन्त्र	( वि ) १११
पुष्पारत्नविधानप्रथमा	—	( सं ) १	पुष्पसंग्रह	—	( वि ) १ ५
पुष्पारत्नविधानप्रथमा	—	( सं ) १ ७	पुष्पाकाली श्री गुरी	—	( वि ) १११
पुष्पारत्नविधानप्रथमा	श्रीचन्द्रमुनि	( सं ) १११	पुष्पा व चयन	—	( सं ) १११
पुष्पाञ्जलिसंग्रह	म सकलकीर्ति	( सं ) १११	पुष्पा वचन	—	( सं ) १११
पुष्पाञ्जलिसंग्रह	—	( वि ) ७ १	पुष्पाञ्जल	—	( वि ) १११
पुष्पाञ्जलिसंग्रह	गाविन्दमहृ	( सं ) ११	पुष्पाञ्जलिसंग्रह	—	( सं ) १ ५
पुष्पाञ्जलिसंग्रहप्रथमा	समृद्धचन्द्राचार्य	( सं ) १५			१११, १११, ११० १११ ७११ ७११, ७११, ७११
पुष्पाञ्जलिसंग्रहप्रथमा	भूषण मिश्र	( वि ) ११			७ ७११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०		प्रक्रियाकौमुदी	—	(स०)	२६१	
			५११, ७४३, ७४४		पृच्छावली	—	(हि०)	६५७	
पूजापाठस्तोत्र	—	(स० हि०)	७१०		प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०	
			७८४		प्रतिक्रमण	—	(स०)	६६	
पूजाप्रकरण	उमाश्वामी	(स०)	५१२					४२६, ५७१	
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(स०)	६६६		प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६६	
पूजामहात्म्यविधि	—	(स०)	५१२		प्रतिक्रमण	—	(प्रा० स०)	४२५	
पूजावणविधि	—	(सं०)	५१२					५७३	
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२		प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६६	
पूर्णाष्टक	विश्वभूषण	(सं०)	५१३		प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६६	
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२		प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६६	
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२		प्रतिमाउत्थापककृ उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०	
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२		प्रतिमासातचतुर्दशी [ प्रतिमासातचतुर्दशीभ्रतोद्यापनपूजा ]				
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७			अक्षयराम	(स०)	५१६	
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५		प्रतिमासातचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	७६१	
पूजासंग्रह	—	(स०)	६०३		प्रतिमासातचतुर्दशीभ्रतोद्यापन	—	(स०)	५१४,	
			६६४, ६६८, ७११, ७१२, ७२५					५२०, ५४०	
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०		प्रतिमासान्तचतुर्दशीभ्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	(स०)	५२०	
पूजासंग्रह	लालचन्द्र	(हि०)	७७७		प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका	—	(स०)	३७३	
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५		प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्ति	(स०)	५२०	
			६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६,		प्रतिष्ठादीपक	प० नरेन्द्रसेन	(स०)	५२१	
			७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८ ।		प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स०)	५२१	
पूजासार	—	(स०)	५२०		प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनदि	(स०)	५२१, ५२२	
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(स० हि०)	६६६		प्रतिष्ठापाठ	—	(स०)	५२२	
			७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५,					६६६, ७५६	
			७३५, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।		प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुर्गाचन्द्र	(हि०)	५२२	
पूर्वमीमांसार्थप्रकरणसंग्रह	लोगाक्षिभास्कर	(स०)	१३७		प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६	
पैसठबोल	—	(हि०)	३३१		प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३	
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२		प्रतिष्ठाविधि	—	(स०)	५२२	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
विषयार्थव्याख्यान	मालव नरसिंह	( हि ) ११	दुष्यन्तसिंहद्वाराभाषा	टोडरमल्ल	( हि ) ११
विषयार्थव्याख्यान (संस्कृत-संग्रह)	हरिरामदास	( हि ) ११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	विश्वामित्र	( सं ) १५
विषयप्रदीप	भट्ट कृष्णमीनाक्ष	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
विषयप्रदीप	रूपरूप	( हि ) ७ १	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
विषयव्याख्यान	भागवत	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	प० हरिहर	( सं ) १५
विषयव्याख्यान	—	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
वीड्युवा	—	( सं ) १	दुष्यन्तसिंहद्वारा	विश्वामित्र	( सं ) १५
वीड्युवा	—	( सं ) १०२	दुष्यन्तसिंहद्वारा	भूतकीर्ति	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( सं ) ११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	कश्मिरी	( सं ) ११२, ११३
पुष्पदीप	समयसुन्दर	( हि ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	सुराज	( हि ) ११३
पुष्पदीप	—	( सं ) ५१	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	११४, ११५
पुष्पदीप	सुमुद्र रामचंद्र	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	[दुष्यन्तसिंहद्वारा]	गङ्गा
पुष्पदीप	टीकचंद्र	( हि ) ११५	दुष्यन्तसिंहद्वारा	म रत्नचंद्र	( सं ) १५, ११६
पुष्पदीप	दीक्षितराम	( हि ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	म सुमचंद्र	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( हि ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( हि ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( सं ) १ ७ १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
पुष्पदीप	मासदेव	( हि ) ७१५	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	पद्मचंद्र	( सं ) १५
पुष्पदीप	—	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	सुराज	( हि ) ११६
पुष्पदीप	—	( सं ) १ ५	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( हि ) १
पुष्पदीप	—	( सं ) ११७	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( हि ) १११
पुष्पदीप	श्रीचन्द्रमुनि	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १११
पुष्पदीप	म सखचंद्र	( सं ) १११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १११
पुष्पदीप	—	( हि ) ७११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( हि ) १११
पुष्पदीप	गोविन्दचंद्र	( सं ) ११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १
पुष्पदीप	—	( सं ) १५	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १
पुष्पदीप	भूषणसिंह	( हि ) ११	दुष्यन्तसिंहद्वारा	—	( सं ) १

११६, १ २, ११७ ११८, ७११ ७१२, ७१५, ७१६  
७ ७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्रन्थोत्तरस्तोत्र	—	(स०)	४०६	श्रीत्यङ्कुरघोषई	नेमिचन्द्र	(हि०)	७७५
श्रन्तोत्तरोपासनाचार भ० सकलकीर्ति	—	(स०)	७१	श्रीत्यङ्कुरचरित्र	—	(हि०)	६८६
ग्रन्थोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३	श्रीपद्मापयवर्गन	—	(हि०)	७५
ग्रन्थस्त	म० दामोदर	(स०)	६०८	श्रीपद्मोपासनाप्रतीत्यावन	—	(स०)	६६६
ग्रन्थस्त	—	(स०)	१७७	<b>फ</b>			
ग्रन्थस्तकारिता	चालुक्य	(स०)	७३	फलपांडित [पञ्चमेर]	मण्डनमिश्र	—	५२५
ग्रन्थाद चरित्र	—	(हि०)	६००	फलपदीपायवनायवस्तवन	समयमुन्दरगण	(स०)	६१६
ग्रन्थद्वन्द्वयोग	—	(प्रा०)	३११	फुटकरवित्त	—	(हि०)	७४८
ग्रन्थद्वन्द्वयोग	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११				७६६, ७७३
ग्रन्थद्वन्द्वयोग	ग्रन्थ	(प्रा०)	३११	फुटकरज्योतिषपद्य	—	(स०)	५७३
ग्रन्थद्विपिगणशास्त्र	—	(स०)	३१२	फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
ग्रन्थद्विपिगणशास्त्र	चण्डिकादि	(स०)	२६२				६६६, ७८१
ग्रन्थद्विपिगणशास्त्र	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२	फुटकरपद्य	—	(हि०)	
ग्रन्थद्विपिगणशास्त्र	सौभाग्यगण	(स०)	२६२	फुटकरपद्य एव वित्त	—	(हि०)	६४३
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	५२३	फुटकरपाठ	—	(स०)	५७३
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	११४	फुटकरपर्याय	—	(स०)	१७४
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(हि०)	७६७	फुटकरसर्वेमा	—	(हि०)	७७५
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	७४	फुटकरसर्वेमा	—	(हि०)	७७५
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	४०६	फुटकरसर्वेमा	—	(हि०)	७७५
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	१३०	<b>व</b>			
ग्रन्थप्रतिष्ठा	आ० कु टकुन्द	(प्रा०)	१३०	वक्त्रचरित्र	जयकीर्ति	(हि०)	३६३
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	७४	वंशप्रणयाटीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
ग्रन्थप्रतिष्ठा	अकलङ्कचरित्र	(स०)	७४	वसन्तविलास	—	(हि०)	७२६
ग्रन्थप्रतिष्ठा	म० एकसिद्धि	(स०)	७४	वटाकनका	गुलाधराय	(हि०)	६८५
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	७४	वटाकनका	—	(हि०)	६६३, ७५२
ग्रन्थप्रतिष्ठा	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४	वटादरान	—	(स०)	३६८, ४३२
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(पुज०)	७४	वडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	मोमदत्त	(स०)	६३६
ग्रन्थप्रतिष्ठा	नदिगुरु	(स०)	७५	वदरीनाय के छद्म	—	(हि०)	६००
ग्रन्थप्रतिष्ठा	म० नेमिदत्त	(स०)	१८२	वधावा	—	(हि०)	७१०
ग्रन्थप्रतिष्ठा	जोधराज	(हि०)	१८३				



ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ स	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं
अद्वैतसिद्धांतसूचीकथ	—	११५	अथर्ववेदांग	आ कुम्भकुम्भ	(ग ) १११
अद्वैतसूत्र	—	(ग ) १२२	अथर्वनारायणीया	अमृतचन्द्र	(घ ) ११०
अद्वैतसूत्र	पं० शिवजीकाष्ठ	(घि ) १२२	अथर्वनारायणीया	—	(ग ) १११
अद्वैतसूत्रटीका	—	(ग ) १२२	अथर्वनारायणीया	—	(घि ) १११
अष्टाङ्गसूक्तिर्तनम्	—	(ग ) १२२	अथर्वनारायणीया	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्राचार्य [अथर्वसूत्र]		अ राबमङ्ग	अथर्वनारायणीया	शोबराज गारीया	(घि ) १११
	(घि ) ११२, ११६ ७१९ ७१७		अथर्वनारायणीया	शुम्भावनदास	(घि ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	महासंभाचार्य	(ग ) १५	अथर्वनारायणीया ।	पंडित हेमराज	(घि ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	सोमधीरि	(घ ) १५१	अथर्वनारायणीया	—	(घि ) १११ ७१
अथर्वसूत्रविवेक	—	(ग ) १५२	अथर्वविद्वत्श्लोक	—	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	सिद्धचरि	(घग ) १५२	अथर्वसूत्रावलि	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेकभाष्य	महाशक्ति	(घि ) १ २	अथर्वनारायणीया	गर्ग	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेकभाष्य	—	(घि ) १ २	अथर्वनारायणीया	—	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	कृष्णराज	(घि ) ७१२	अथर्वविद्या	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	—	(घि ) ७१६	अथर्वविशेष	—	(घ ) ११०
अथर्वसूत्रविवेक	श्रीब्रह्मसूत्रि	(ग ) ११७	अथर्ववेदांग	इक्ष्वाकू	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	अथर्वसूत्रि	(ग ) १११	अथर्ववेदांग	—	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	—	(घि ) १ २	अथर्वसूत्रविवेक	—	(ग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	—		अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक [अथर्वसूत्रविवेक]			अथर्वसूत्रविवेक	वैद्य नन्दराज	(घि ) ७११
अथर्वसूत्रविवेक	रत्नप्रसूति	(घ ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	—	(ग ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	आ० विद्याभक्ति	(ग ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	भागवत	(घि ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	अथर्वसूत्रि	(ग ) १७२	अथर्वसूत्रविवेक	[ अथर्वसूत्रविवेक ]	अथर्वसूत्रविवेक द ११६, १०१
अथर्वसूत्रविवेक	विद्याभक्ति	(घ ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	शुम्भावनदास	(घग ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	—	(ग ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	अथर्वसूत्र	(घ ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	शुम्भावनदास	(घि ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	आ० अथर्वसूत्र	(ग ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घ ) १११
अथर्वसूत्रविवेक	अथर्वसूत्र	(घ ) ११७	अथर्वसूत्रविवेक	—	(घि ) १११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वालाविबोध [रामाकार पाठका धर्म]	—	(प्रा० हि०)	७५
ब्रावनी	वनारसीदास	(हि०)	७५०
बावनी	हेमराज	(हि०)	६५७
बासठकुमार	[मण्डलचित्र]		५२५
बाहुवलीसज्जाय	विमलकीर्त्ति	(हि०)	४४६
बाहुवलीसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
विम्बनिर्माणविधि	—	(स०)	३५४
विम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१
विहारीसतसई	विहारीलाल	(हि०)	६७५
विहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७
विहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हि०)	६८७
विहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६
बीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६
बीजकोश [मातृका निर्घट]	—	(स०)	३४६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितिसिंह	(हि०)	७००
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५१४
			५१६, ७३०
बीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हि०)	५२३
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००
बीसतीर्थङ्करोत्री जयमाल [बीस विरह पूजा]			
	हर्षकीर्त्ति		४६५, ७२२
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५६५
बीसविरहमानजकठी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५
बीसविरहमाणपूजा	—	(स०)	६३६
बीसविरहमानपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(स० हि०)	७६३
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बुधजनसतसई	बुधजन	(हि०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बुद्धिविलास	वन्धतरामसाह	(हि०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	(हि०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी वरात	—	(हि०)	७५३
वेलि	छोहल	(हि०)	७३८
वैतालपच्चीसी	—	(स०)	२३४
वोधप्राभृत	कुङ्कुदाचार्य	(प्रा०)	११५
वोधसार	—	(हि०)	७५
ग्रह्यचर्याष्टक	—	(स०)	३३३
ग्रह्यचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
ग्रह्यविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०

भ

भक्तामरपञ्जिका	—	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुगाचार्य	(स०)	४०२
			४०७, ४२५, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३३, ५६६, ५७२, ५७३, ५६६, ५६७, ६०३, ६०४, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६८८, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६८, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८९, ७९६, ७९७
भक्तामरस्तोत्र [मन्यसहित]	—	(स०)	६१२
			६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	
ब्रह्मवा व विनयी	—	(हि )	१ २	बाबुर जो	पारबहास	(हि )	१११	
ब्रह्मवा बरकी	बुधबदन	(हि )	४४६	बाबूकडी	रामचन्द्र	(हि )	१६	
ब्रह्मवा बरकी	विहारीदास	(हि )	४४६, ७२७	बाबूकडी	सूरत	(हि )	१११	
बन्ने वृ सुत्र	—	(मा )	१११				१७ ७१२, ७१५	
बन्नीबोअस्तीय	—	(बं )	१	बाबूकडी	—	(हि )	१११	
बबरबन्धनापीरई	श्रीकाश	(हि )	४१	बाबूकडी	४४६, १ १ १६४ ७२१			
बंभल्ये	—	(लं )	१७२	बाबूकडी	रङ्गू	(हि )	११४	
बनारसीविलास	बलरमीदास	(हि )	१४	बाबूकडी	बाह्य	(हि )	१११	
१७२ १६५, ७-१ ७ व ७२१ ७१४ ७२१ ७२२ ७२७				बाबूकडी	ब-सोमगणि	(हि )	११०	
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि )	७२२, ७२६	बाबूकडी	त्रिदशमसूत्रि	(हि )	७०	
बाबूकडी	—		१ १	बाबूकडी	बलक	(हि )	११	
बबौर महाभूमि इन्द्रज्य समकसुन्दर		(हि )	११६				११२, ४३	
बबौरपीय	—	(हि )	७२१	बाबूकडी	भगवतादास	(हि )	७२०	
बबौरपीय	—	(लं )	१७४ २७२, २७४	बाबूकडी	भूबरदास	(हि )	११६	
बलिबन्धीय	अमरबन्धु	(हि )	७१६	बाबूकडी	बीमदास	(हि )	२११ १७६	
बनगामधपुत्राली	—	(हि )	७११	बाबूकडी	—	(हि )	११६	
ब नारा	अश्विदास	(हि )	१ १	१ १ १४४ १७२ १७६, ७१५				
बनार बाभूय	—	(हि )	१ १	बाबूकडी	[पञ्चमविन]	—	११६	
बार्हस्पत्यवर्णन	बा दुर्गाचन्द्र	(हि )	७२	बाबूकडी	गानिन्द	(हि )	१६१	
बार्हस्पत्यवर्णन	भूषणदास	(हि )	७२	बाबूकडी	भूषणदास	(हि )	१६१	
१ २, १७ ७२ ७ २, ७५				बाबूकडी	बसरास	(हि )	७५	
बाबूकडी	—	(हि )	७२ २६६ १४६	बाबूकडी	—	(हि )	१११	
बाबूकडी	—	(लं )	७४७	बाबूकडी	—		७४७, ७६०	
बाबूकडी	—	(मा )	७१६	बाबूकडी	बाबूकडी [पञ्चमविन]	—	१११	
बाबूकडी	अच्युत	(हि )	७११	बाबूकडी	बाबूकडी का शीरा	—	(हि )	१११
बाबूकडी	—	(हि )	७००	बाबूकडी	बाबूकडी शीरीबन्धनवा	त्रिनेत्रभूषण	(हि )	१११
बाबूकडी	बलक	(हि )	७१२	बाबूकडी	बाबूकडी शीरीबन्धनवा	श्रीभूषण	(बं )	२१२
				बनगामधपुत्राली	बं बलक	बाबूकडी	(हि )	१२१
				बनगामधपुत्राली	—		(हि )	२११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट	स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट	स०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६		भावनाचीतीसी	भ० पद्मनन्दि	(स०)	६३४	
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३		भावनाद्वात्रिंशिका	श्री० श्रमितामति	(स०)	५७३	
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(स०)	३३३, ७१५		भावनाद्वात्रिंशिकाटीका	—	(स०)	११५	
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७		भावनाद्वात्रिंशिका	—	(स०)	११५, ६३७	
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८		भावपाहुड	कुंदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५	
भवानीसहस्रनाम एव कवच	—	(स०)	७६२		भावनापञ्चीस्रोत्रतोद्यापन	—	(स०)	५२४	
भविष्यदत्तकथा <sup>१</sup>	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४		भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(स०)	५७५	
	५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५				भावनावत्तीसी	—	(स०)	६२८, ६३३	
भविष्यदत्तचरित्र	प० श्रीधर	(स०)	१८४		भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(स०)	७७, ६१५	
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पद्मज्ञान चौधरी	(हि०)	१८४		भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४	
भविष्यदत्तलिकामुन्दरीनाटक	न्यामतमिह	(हि०)	३१७		भावप्रकाश	मानमिश्र	(स०)	२६६	
भव्यकुमुदचन्द्रिका	[सागारधर्माभृतस्त्रीपञ्जटीका]				भावप्रकाश	—	(स०)	२६६	
	प० आशाधर	(स०)	६३		भावशतक	श्री नागराज	(स०)	३३४	
भागवत	—	(स०)	६७५		भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७	
भागवतद्वादशमस्कंधटीका	—	(स०)	१५१		भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८	
भागवतपुराण	—	(स०)	१५१		भावसंग्रह	वामदेव	(स०)	७८	
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६		भावसंग्रह	—	(स०)	७८, २६६	
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कंध]	—	(स०)	१५१		भाषा भूषण	जसवतसिंह	(हि०)	१०	
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५		भाषाभूषण	धीरजसिंह			
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४		भाष्यप्रदीप	कैश्यट	(स०)	२०	
भावत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००		भाष्यती	पद्मनाभ	(स०)	२८६	
भावदीपक	जोधराज गोडीका	(हि०)	७७		भुवनकोत्ति	चूचराज	(हि०)	२८६	
भावदीपक	—	(हि०)	६६०		भुवनदीपक	पद्मभस्मसूरि	(स०)	२८६	
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(स०)	१३८		भुवनदीपिका	—	(स०)	२८६	
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२		भुवनेश्वरीस्तोत्र [सिद्धमहामंत्र]				
भावनादण्णतीसी	—	(प्रप०)	६४२			पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३४	
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(स०)	७३६		भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३	
नोट—रचना के यह नाम और हैं—					भूतकालचौवीसी	बुधजन	(हि०)	३६८	
१ भविष्यदत्तचौपई	भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	भविष्यदत्तपञ्चमीरास							

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं
मत्स्यपुराण				भक्तिराज	कनककीर्ति	(हि)	१२१
मत्स्यपुराण	शुद्धिमान्महाद्विज नक्षत्र	(हि)	२३४ ७ ९	भक्तिराज	पद्मनाभ शौचरी	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	विनोदीशरण	(हि)	२३४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	इपकीर्तिसूत्रि	(सं)	४ ९	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(सं)	४ ९ ११३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(सं हि)	४ ९	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	चन्द्रसेन	(सं)	२१३, २४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण				भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	श्रीज्ञानभूषण	(सं)	२२३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	विरहकीर्ति	(सं)	२२३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	श्रीभूषण	(सं)	२४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(सं)	२२३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			२२४ ११३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	भक्तभरण	(हि)	७२३	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	शङ्कर	(सं)	४१	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	प्रबन्धदायक	(हि)	४१	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	हेमराज	(हि)	४१	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			१२१	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	नक्षत्र	(हि)	७२	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(हि)	४११	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			११३, ११४ ११५ ११६ ७ ९ ११३ ११४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			७९ ७९	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	[नक्षत्रविम]	—	२ ४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	महाभारत	(सं)	४	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(हि)	७ ९	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(सं हि)	१७१	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण	—	(सं)	२ १	भक्तिराज	—	(हि)	४२
मत्स्यपुराण			११३, १ १ ७ ९	भक्तिराज	—	(हि)	४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मरुदेवोकी सङ्काय	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्त्ति	(स०)	१५२	महावीराष्टक	भागचन्द्र	(स०)	४१३
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२	महाशान्तिऋविधान	प० धर्मदेव	(स०)	६२५
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१	महिम्नस्तवत	जयकीर्त्ति	(स०)	४२५
महर्षिस्तवन	—	(स०)	६५८	महिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३
			४१३, ४२६	महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(स०)	१८६
महर्षिस्तवन	—	(हि०)	४१२	महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(स०)	१८६
महागणपतिकवच	—	(स०)	६६२	महीपालचरित्रभाषा	नयमल्ल	(हि०)	१८६
महादण्डक	—	(हि०)	७३५	मागीतु गीगिरिमडलपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५२६
महापुराण	जिनसेनाचार्य	(स०)	१५३	माणिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	सग्रहकर्ता—		
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(स०)	१५२	ब्र० ज्ञानसागर	(स० प्रा० हि०)		६०४
महापुराण	महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३	माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७६	माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द्र	(स० हि०)	५६०
महाभियेकपाठ	—	(स०)	६०७	माधवनिदान	माधव	(स०)	३००
महाभियेकसामग्री	—	(हि०)	६६८	माधवानलकथा	आनन्द	(स०)	२३५
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(स०)	४१३	मानतु गमानवति चौपई	मोहनविजय	(स०)	२३५
महामहिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३	मानकी बढी दावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(स०)	४१३	मानदावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोका सग्रह]	—	(स०)	३५१	मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६११
महाविद्याविडम्बन	—	(स०)	१३८	मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
महावीरजीका चौढाल्या	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	मानलघुदावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महावीरछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८९	मानविनोद	मानसिंह	(स०)	३००
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(स०)	५२६	मानुपोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	४६७
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(स०)	५२६	मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	३६८	मार्कण्डेयपुराण	—	(स०)	१५३, ६०७
महावीरपूजा	वृन्दाधन	(हि०)	५२६	मार्गरा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००	मार्गरावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५	मार्गराविधान	—	(हि०)	७६०
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०)	७५७	मार्गरासमाप्त	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	श्लोक	माया सूत्र सं	ग्रन्थनाम	श्लोक	माया सूत्र सं
भूत शक्तिम वर्तमानविद्युत्वा पांडि विजयास ( ५ ) ४७			संक्षपविधि	—	( वि ) १११
भूतानुविद्युत्वाविद्युत्वा मूपात्र ( ५ ) ४२			सन्ध	—	( सं ) १०१
४११ ४१२ ४१ ४१२ ४७१ ४२४ १ १८			सन्ध व शीपविद्या गुणवा	—	( वि ) १
१११ ११० ७१७			सन्ध वहीरवि	१ महीवर ( सं ) १११ १२७	
भूतानुविद्युत्वाविद्युत्वावर्तमान आरप्रवर ( ५ ) ४ १ ४११			सन्धपासव	—	( सं ) ११
भूतानुविद्युत्वाविद्युत्वावर्तमान विद्वत्सम्भू ( ५ ) ४१२			सन्धपासव	—	( हि ) ११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान वल्ल साज शीपरी ( हि ) ४१२			सन्धपासव	—	( सं ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( हि ) ७३४				१ २ १११ ७ १८ ७११ ७१२	
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १४१			सन्धमहिता	—	( ) १
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १११			सन्धमहिता	—	( सं ) १०१
भूतानुविद्युत्वावर्तमान मन्निषेणुमूर्ति ( सं ) १४१			सन्धमहिता	—	( हि ) ११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) ११			सन्धमहिता	—	( सं ) ११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १११ १४१			सन्धमहिता	—	( वि ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( हि ) ७७२			सन्धमहिता	—	( सं ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान १ वल्लसाज ( सं ) १ २			सन्धमहिता	—	( सं ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १११			सन्धमहिता	—	( सं ) ११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान १ वल्लसाज ( हि ) ७१७			सन्धमहिता	—	( हि ) ११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान १ वल्लसाज ( सं ) १ २			सन्धमहिता	—	( हि ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १ १			सन्धमहिता	—	( सं ) १
भूतानुविद्युत्वावर्तमान मानोमह ( हि ) ७१			सन्धमहिता	—	( सं ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १ १ ४१			सन्धमहिता	—	( हि ) १११
			सन्धमहिता	—	( सं ) १११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान विद्यादीक्षाज ( हि ) ७२			सन्धमहिता	—	( हि ) ७११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान विद्यादीक्षाज ( हि ) ७२			सन्धमहिता	—	( हि ) ७
भूतानुविद्युत्वावर्तमान १ वल्लसाज ( हि ) १ २			सन्धमहिता	—	( हि ) ७११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १११			सन्धमहिता	—	( हि ) ७११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) ११ ११४			सन्धमहिता	—	( हि ) ७११
भूतानुविद्युत्वावर्तमान — ( सं ) १११			सन्धमहिता	—	( सं ) ७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूनी	(हि०)	७३८
			७४६, ७५०, ७६४
मेघकुमारचौदालिया	कनकसोम	हि०)	६१७
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४
मेघकुमारवात्स	—	(हि०)	६६४
मेघकुमारसङ्काय	समयसुन्दर	हि०)	६१८
मेघदूत	कालिदास	(स०)	१८७
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मेघमाना	—	(स०)	२६०
मेघमालाविधि	—	(स०)	५२७
मेघमालाप्रातःकथा	श्रुतमागर	(स०)	५१४
मेघमालाप्रातःकथा	—	(स०)	२२६, २४२
मेघमालाप्रातःकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२३६, २४४
मेघमालाप्रातः	[मण्डलविधय]—		५२५
मेघमालाप्रातःोद्यापनकथा	—	(स०)	५२७
मेघमालाप्रातःोद्यापनपूजा	—	(स०)	५२७
मेघमालाप्रातःोद्यापन	—	(स० हि०)	५१७
			५३६
मेदिनीकोश	—	(स०)	२७६
मेरूपूजा	सोमसेन	(स०)	७६५
मेरुपक्ति तपस्वी कथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
मोक्षपर्वडी	वनारसीदाम	(हि०)	८०
			६४३, ७४६
माक्षमार्गप्रकाशक	प० टोडरमल	(राज०)	८०
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(स०)	६६४
मोरपिच्छवारी [कृष्ण] के कवित्त फपोत	(हि०)		६७३
मोरपिच्छवारी [ब्रह्म] के कवित्त वर्मदास	(हि०)		६७३
मोरपिच्छवारी [कृष्ण] के कवित्त त्रिचित्रदेव	(हि०)		६७३
मोहम्बरराजाकी कथा	—	(हि०)	६००

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मोहनिवेकसुद्ध	वनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मीनएपादशीकथा	श्रुतमागर	(स०)	२२८
मीनएवादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मीनिप्रतकथा	गुणभद्र	(स०)	२३६
मीनिप्रतकथा	—	(स०)	२३७
मीनिप्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(स० ग०)	२४८
मीनिप्रतोद्यापन	—	(स०)	५१७

य

यन्य [भगे हुए व्यक्तिने वापस मानेका]			६०३
यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(स०)	७०१, ७६६
यन्त्रसंग्रह	—	(स०)	३५२
			६६७, ७६८
यक्षिणीमल्प	—	(स०)	३५१
यज्ञकीसामग्रीका ध्यौरा	—	(हि०)	५६५
यामहिमा	—	(हि०)	५६५
यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
यतिभाजनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५०३
यतिभावनाष्टक	—	(स०)	६३७
यतिम्राहार के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
यव्याचार	आ० वसुनन्दि	(स०)	८०
यमक	—	(स०)	४२६
(यमकाष्टक)			
यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०)	४१३, ४२६
यमपालमातगयी कथा	—	(स०)	२३७
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(स०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(स०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(स०)	१८८



सम्बन्धनाम	श्लोक	मापा सूत्र सं	सम्बन्धनाम	श्लोक	मापा सूत्र सं
मापीरलो	द्विनदास	(दि) १७६	मुनिमुक्तपुराण	प्र कुम्भदास	(स) १११
मिथ्यापुण्य	प्र द्विनदास	(दि) १७६	मुनिमुक्तपुराण	इन्द्रजीत	(दि) १११
मिथयित्त	बासी	(दि) ११४	मुनिमुक्त भितरी	द्वैदास	(दि) ११
मिथ्यात्त	बल्लराम	(दि) ७ २९	मुनीश्वरीजी बबनाल	—	(स) २२०
मिथ्य लक्ष्य	—	(दि) ७६		२७९ २७८ ११२ ७२२	
मुद्रततमीरवा	प अक्षरेव	(स) २४४	मुनीश्वरीजी बबनाल	—	(स) ११०
मुद्रततमीरवा	मुरासखन्द	(दि) २४४ ७११	मुनीश्वरीजी बबनाल	प्र द्विनदास	(दि) ११
मुद्रततमीरवापान	—	(सं) २१७		११२ ७२	
मुद्रावतिरवा	—	(सं) १११	मुनीश्वरीजी बबनाल	—	(दि) १११
मुद्रावतिरवा	भारामल	(दि) ७६४	मुद्रिकाण	श्रीविद्याचार्य द्वैदास	(दि) १
मुद्रावतिरवा	मकलजीति	(दि) १ १	मुद्रुसिपायसि	—	(दि) १६
मुद्रावति [अक्षरविषय]	—	२१२	मुद्रुसिपायसि	महादेव	(सं) ११
मुद्रावतिपुत्रा	बर्षी मुखसागर	(सं) १२७	मुद्रुसि कुकारली	परमहंसपरिभाषाचार्य—	
मुद्रावतिपुत्रा	—	(सं) २१६ १६६	मुद्रुसि कुकारली	रामुराचार्य	(दि) ७१
मुद्रावतिविशालरवा	कुतसागर	(सं) ११९	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं दि) १६
मुद्रावतिविशालरवा	सोमप्रस	(सं) ११९	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं) १६
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) ११९	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं) ७११
मुद्रावतिविशालरवा	मुरासखन्द	(दि) १४२	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं) ११
मुद्रावतिविशालरवा	—	(दि) १७१	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं) ७११
मुद्रावतिविशालरवा	—	(दि) २७१	मुद्रावाटीरवा	भा बसुबन्धि	(सं सं) ७६
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) २२७	मुद्रावाटीरवा	मकलजीति	(सं) ७६
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) २२	मुद्रावाटीरवा	द्वैदास	(दि)
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) २२७	मुद्रावाटीरवा	—	(दि)
मुद्रावतिविशालरवा	—	(दि) ७१२	मुद्रावाटीरवा	—	(दि) १११
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) १४१	मुद्रुसि कुकारली	—	(सं) ११२, २१
मुद्रावतिविशालरवा	—	(दि) ७ ७	मुद्रुसि कुकारली	सरामुद्राचार्य	—
मुद्रावतिविशालरवा	म बधाषण्ड	(सं दि) २२७	मुद्रुसि कुकारली	—	(दि) ११२
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) २६	मुद्रुसि कुकारली	—	(दि) १११
मुद्रावतिविशालरवा	—	(सं) ११७	मुद्रुसि कुकारली	—	१११ ७११



ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्योवत्कथा [प्योवत्कथित]	सुराक्ष बन्धु	(हि)	१११	बोधघट	बदकथि	(त)	११
			७११	बोधघटक	—	(ब)	१२
प्योवत्कथित	ज्ञानकीर्ति	(न)	११९	बोधघटक	—	(हि)	१२
प्योवत्कथित	काम्यत्वपदानाम	(न)	१५१	बोधघटटीका	—	(ब)	१२
प्योवत्कथित	पूर्यश्लेष	(सं)	११	बोधसतत	होमबन्धुसूत्रि	(त)	१११
प्योवत्कथित	बादिराजसूत्रि	(स)	१११	बोधसतत	—	(ब)	१११
प्योवत्कथित	वासवसेन	(सं)	१११	बोधसार	बागवन्धु	(ब)	१७१
प्योवत्कथित	मत्तसागर	(सं)	११२	बोधसार	वागीश्वरश्लेष (मप)	११६	७११
प्योवत्कथित	सकलकीर्ति	(ब)	१	बोधसारभाषा	मन्दराम	(हि)	१११
प्योवत्कथित	पुण्यद्वन्द्व	मप ) १५५	१५२	बोधसारभाषा	बुधजन	(हि)	११०
प्योवत्कथित	गारुडवास	(हि)	५	बोधसारभाषा	वक्राक्षाय चौबरी	(हि)	५
प्योवत्कथित	पद्मशास्त्र	(हि)	११	बोधसारभाषा	—	(हि०५)	११७
प्योवत्कथित	—	(हि)	११९	बोधसारभाषा	—	(ब)	११७
प्योवत्कथित	मम चन्द्र	(सं)	११२	बोधसारभाषा	—	(सं)	१
प्योवत्कथित	—	(हि)	१७५	बोधसारभाषा	—	(ब)	५१
प्योवत्कथित	—	(हि)	१७९	बोधसारभाषा	महाराम ज्ञानचन्द्र	(पा)	११
प्योवत्कथित	आ सम्पत्सङ्ग	(ब)	१११	बोधसारभाषा	योगीश्वरश्लेष	(बप)	१०१
प्योवत्कथित	विद्यानन्दि	(ब)	१११				१२, ७५५
प्योवत्कथित	—	(ब)	५११	बोधसारभाषा	—	(न)	१७१
प्योवत्कथित	मनूषि	(ब)	१११		र		
प्योवत्कथित	व्याख्या इक्ष्वाकू	(त)	१११	रत्न वनने की विधि	—	(हि)	१११
प्योवत्कथित	—	(स)	१११	रत्नवर्णनका	—	(ब)	११०
प्योवत्कथित	—	(त)	१११	रत्नवर्णनका	प्र ज्ञानधामर	(हि)	१११
प्योवत्कथित	—	(ब)	१११	रत्नवर्णनका	माधुराम	(हि)	१११
प्योवत्कथित	आ हरिमङ्गलसूत्रि	(ब)	१११	रत्नवर्णनका	—	(ब)	२५१, ७११
प्योवत्कथित	—	(त)	१११	रत्नवर्णनका	रघुनाथ	(हि)	१११
प्योवत्कथित	—	(म)	१११	रत्नवर्णनका	मखिनाथसूत्रि	(ब)	१११
प्योवत्कथित	वक्राक्ष चौबरी	(हि)	५१	रत्नवर्णनका	गुणवर्णनका	(ब)	११५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपञ्चोसी	लालचन्द धिनोदीलाल	(हि०)	६००	रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०)	५६२
६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३				रामावतार	[चित्र]	—	६०३
राजुलमङ्गल	—	(हि०)	७५३	रायपनेरणीसूत्र	—	(प्रा०)	४३
राजुलकी सञ्क्राय	जिनदास	(हि०)	७५७	राशिफल	—	(स०)	७६३
राठीढरतन महेया	दशोत्तरी	(हि०)	२३८	रासायनितयास्य	—	(हि०)	३३०
राठपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०	राहुफल	—	(हि०)	२६१
राठपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	रक्तविभागप्रकरण	—	(स०)	८४
रात्रिभोजनकथा	—	(स०)	२३८	रिट्टुरोमिचरिख	स्वयभू	(प्रप०)	६४२
रात्रिभोजनकथा	किशानसिंह	(हि०)	२३८	रुमणिकथा	मदनकीर्त्ति	(स०)	२५७
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८	रुमणिरूपणजी की रासी	तिपरदास	(हि०)	७७०
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२२८	रुमणिविधानकथा	छत्रसेन (स०)	२४४, २४६	
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३६	रुमणिविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४	रुमणितिवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
राधाजनमोत्सव	—	(हि०)	८४	रुग्निनिश्चय	—	(स०)	७३३
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४	रुक्मिणीरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	७३३
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०)	६२७	रुद्रज्ञान	—	(स०)	२६१
रामकृष्णकाव्य	द्वैवक्ष प० सूर्य	(स०)	१६४	रुपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(स०)	२७६
रामचन्द्रचरित्र	वधीचन्द्र	(हि०)	६६१	रुपमाला	—	(स०)	२६०
रामचन्द्रस्तवन	—	(स०)	४१४	रुपमेनचरित्र	—	(स०)	२३८
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४	रुस्यध्यानवर्णन	—	(स०)	११७
रामचरित्र [कवित्तबध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७	रेखाचित्र [भ्रादिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एव पार्श्वनाथ]	—		७८३
रामवत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४	रेखाचित्र	—		७६३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२	रेवानदीपूजा [भ्राह्मकोटिपूजा]	विश्वभूषण	(स०)	५३२
रामविनाद	रामविनोद	(हि०)	६४०	रैदग्रत	गगाराम	(स०)	५३२
रामविनोद	—	(हि०)	६०३	रैदग्रतकथा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	२३६
रामस्तवन	—	(स०)	४१४	रैदग्रतकथा	—	(स०)	२३६
रामस्तोत्र	—	(स०)	४१४	रैदग्रतकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	२४६
रामस्तोत्रकवच	—	(स०)	६०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एलबीपक	—	( सं )	२१	एलबीपक	—	( सं )	११
एलबीपक	रामकवि	( हि )	११५	एलबीपक	—	( हि )	११
एलपाषा	या रिवलकोटि	( सं )	१	एलबीपक	रासिकनाथ	( सं )	११
एलमंजूषा	—	( सं )	११२	एलबीपक	राज बर	( सं )	११
एलमंजूषिका	—	( सं )	११२	एलबीपक	भानुवत् मित्र	( हि )	१११
एलाविक्रमकथा	शुभनमि	( हि )	११६	एलबीपक	गापाकमठ	( सं )	१११
एलाविक्रमकथा	बोरी रामदास	( सं )	११७	एलबीपक	—	( हि )	१११
एलाविक्रमकथा अ कृष्णदास	—	( हि )	१११	एलाविक्रम	—	( हि )	११
एलाविक्रमकथा	—	( सं )	१११	एलाविक्रम	—	( हि )	११
एलाविक्रमकथा की तिथियों के नाम	—	( हि )	१११	एलाविक्रम	हरकथ कवि	( हि )	१११
एलवापनकथन	—	( हि )	७१६	एलाविक्रम	हनुजीत	( हि )	१०१
एलवापन	—	( हि )	१११	एलाविक्रम	केराल	( हि )	७०१
एलवापन	—	( हि )	१११	एलबीपक	—	( हि )	१०१
एलवापन	पं चित्तमणि	( सं )	११	एलबीपक	—	( सं )	११
एलवापन	—	( हि )	११	एलबीपक	—	( सं )	११
एलवापन	या कृष्णकृष्ण	( भा )	७४	एलबीपक	श्याममित्र	( हि )	७०१
एलवापन	कुराकथन	( हि )	७०१	एलबीपक के दो	श्रीमती	( हि )	७०
एलवापन	—	( सं )	११०	एलबीपक के दो	—	( हि )	७०१
एलवापन [चित्र]	—	—	१११	एलबीपकों के नाम	—	( हि )	११५
एलवापन	शुभसागर	( हि )	११७	एलबीपक	कृष्णकथ	( सं )	१११
एलबीपक	अनकोटि	( हि )	१११	एलबीपक के नाम	—	( हि )	७०१
एलबीपक [एलवापन]	देवेन्द्रगुण	( हि )	११७	एलबीपक	श्रीश्रीदास	( हि )	७०१
एलबीपक	—	—	७ ७	एलबीपक	बाधकथ	( सं )	१४
एलबीपक	माद्रकवि	( हि )	११७	एलबीपक	अधुपम	( हि )	१११
एलबीपक	भानुकी च	( हि )	७१	एलबीपक	श्रीश्रीदास	( हि )	१११
एलबीपक	—	( हि )	११७	एलबीपक	—	( सं )	१०४
एलबीपक	—	( सं )	७१, ७११	एलबीपक	—	( हि )	११०
एलबीपक	—	( सं )	१११	एलबीपक	—	( सं )	१११
एलबीपक	देवेन्द्रकीर्ति	( सं )	१११	एलबीपक	—	( सं )	१११
एलबीपक	संगदास	( हि )	१०६	एलबीपक	—	( हि )	१०१
एलबीपक	—	( हि )	७११	एलबीपक	—	( हि )	११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
लघुसामायिक	—	(हि०)	७१८	
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द्र	(हि०)	७१६	
लघुसारम्बत	अनुभूति स्वरूपाचार्य	(स०)	२६३	
लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(स०)	२६३	
लघुसिद्धान्तकौमुदुभ	—	(स०)	२६३	
लघुस्तोत्र	—	(स०)	४१५	
लघुमनपन	—	(स०)	५३३	
लघुमनपनटीका	भायशर्मा	(स०)	५३३	
लघुमनपनविधि	—	(स०)	६५८	
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	५१५	
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	—	(स०)	५३७, ५६४	
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(स०)	२६३	
लघ्विधिधानकथा	प० अश्रुदेव	(स०)	२३६	
लघ्विधिधानकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	
लघ्विधिधानचौपई	भीषमकवि	(हि०)	७७८	
लघ्विधिधानपूजा	अश्रुदेव	(स०)	५१७	
लघ्विधिधानपूजा	हर्षकीर्ति	(स०)	३३३	
लघ्विधिधानपूजा	—	(सं०)	५१३	
			५३४, ५४०	
लघ्विधिधानपूजा	ज्ञानचन्द्र	(हि०)	५३४	
लघ्विधिधानपूजा	—	(हि०)	५३४	
लघ्विधिधानमण्डल [चित्र]	—		५२५	
लघ्विधिधानउद्यापनपूजा	—	(स०)	५३५	
लघ्विधिधानोद्यापन	—	(स०)	५४०	
लघ्विधिधानस्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५३४	
लघ्विसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४३, ७३६	
लघ्विसारटीका	—	(स०)	४३	
लघ्विसारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	४३	
लघ्विसारक्षणसारभाषा	प० टोडरमल	(हि० गद्य)	४३	
लघ्विसारक्षणसारसदृष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	४३	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
लहरियाजी की पूजा	—	(हि०)	७५२	
लहुरी	नाथू	(हि०)	६६३	
लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०)	७२४	
लाटीसहिता	राजमल	(स०)	८४	
लावणी मागीतु गीवी	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६७	
लिंगपाहुड	आ० कुदकुद	(प्रा०)	११७	
लिंगपुराण	—	(स०)	१५३	
लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(स०)	२७७	
लिंगानुशासन	—	(स०)	२७६	
लीलावती	भाष्कराचार्य	(स०)	३६६	
लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०)	३६६	
लुहरी	नेमिचन्द्र	(हि०)	६२२	
लुहरी	सभाचन्द्र	(हि०)	७२४	
लोकप्रत्याख्यानघमिलकथा	—	(स०)	२४०	
लोकवर्णन	—	(हि०)	६२७, ७६३	

व

वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०)	३५६
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०)	३५६
वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	—	(हि०)	७२७
वज्रनाभिकवर्ति की भावना	भूधरदास	(हि०)	८५
			४४६, ६०४, ७३६
वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(स०)	४१५, ४३२
वनस्पतिसप्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०)	८५
वन्देतानकीजयमाल	—	(स०)	५७२
			६६५, ६५५
वरागचरित्र	भर्तृहरि	(सं०)	१६५
वरागचरित्र	प० वद्धमानदेव	(स०)	१६५
वद्धमानकथा	जयमित्रहल	(सप०)	१६६
वद्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मनन्दि	(स०)	१६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं.
रोहिणीचरित	देवनाम्नि	(पं.)	२४१	सत्यवादितावादा	—	(बं.)	१
रोहिणीविवाह	मुनि गुह्यमन्त्र	(पं.)	१२१	सत्यवादात्मक	बद्व मानसूरी	(बं.)	१
रोहिणीविवाहव्यास	—	(बं.)	२४	सत्यवादात्मकगुणा	—	(बं.)	१
रोहिणीविवाहव्यास	देवनाम्नि	(पं.)	२४१	सत्यवादिनीविवाह	—	(बं.)	१
रोहिणीविवाहव्यास	वमीशान	(हि.)	७८१	सत्यवादात्मक	—	(बं.)	११२, ११३
रोहिणीव्रतव्यास	श्री मानुषीति	(बं.)	२११	सत्यवादात्मकव्यास	—	(हि.)	७
रोहिणीव्रतव्यास	सक्रियकीर्ति	(बं.)	१२२	सत्यवादात्मकव्यासकीर्ति	शास्त्रिक	(बं.)	११२, ११३
रोहिणीव्रतव्यास	—	(पं.)	२४२	सत्यवादात्मक	मन्मथ	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	श्री ज्ञानसागर	(हि.)	२२	सत्यवादिनीसूक्त	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	—	(हि.)	२११	सत्यवादात्मकसूक्त	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	—	(हि.)	७१४	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	केदारसेन कृष्णसेन	(बं.)	२१२, २१३	सत्यवादात्मकव्यास	रत्नकीर्तिसूरी	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास [विषय]	—	(बं.)	२१२, ७१३	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यासविवाह	—	—	—	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	—	(हि.)	११	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास [विषय]	—	—	२२२	सत्यवादात्मकव्यास	सत्यवादात्मक	(हि.)	११३
रोहिणीव्रतव्यास	—	(बं.)	२१३	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
—	—	—	२१२, २१४	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
—	—	(हि.)	२४	सत्यवादात्मकव्यास	श्री ज्ञानसागर	(हि.)	२२
—	ले	—	—	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	—	(बं.)	११३	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	श्री ज्ञानसागर	(हि.)	२२	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	वदनाम्नि	(बं.)	११३	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	पद्मप्रसाद	(बं.)	२१४	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
२११ २१२ २१३ २१४, २१५, २१६, २१७, २१८ २१९	—	—	—	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
२२० २२१ २२२ २२३, २ ७ १ ७१४	—	—	—	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	—	(बं.)	२१४	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
—	२१४ १४ १२२, १३	—	—	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	ज्ञानसागर	(हि.)	२२२	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३
सत्यवादात्मक	श्री ज्ञानसागर	(हि.)	७२१	सत्यवादात्मकव्यास	—	(बं.)	११३

## ग्रन्थानुक्रमणिका ]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३	विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(स०)	२४०
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स०)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(स०)	२४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(स०)	५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूनाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(स०)	५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०)	७७०
विमानशुद्धिशालिक [मण्डलचित्र]	—		५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७४
विरदावली	—	(स०)	६५८	विशेषसत्तात्रिमञ्जी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
			७७२, ७९५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(स०)	४३
विरहमानतीर्थङ्करजकडी	—	(हि०)	७५९	विश्वलोचन	धरसेन	(स०)	२७७
विरहमानपूजा	—	(स )	६०५	विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमणिका	(स०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१९७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०	वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४
विवाहप्रकरण	—	(स०)	५३६			४३१, ५७४, ६३४, ७३७	
विवाहपद्धति	—	(स०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३९, ४१६
विवाहविधि	—	(स०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८
विवाहशोधन	—	(स०)	२९१	वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(अप०)	६४२
विवेकजकडी	—	(स०)	२९१	वीरछत्तीसी	—	(स०)	४१६
विवेकजकडी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०	वीरजिणदागीत	भगौतीदास	(हि०)	५६९
विवेकविलास	—	(हि०)	८६	वीरजिणदागीत	सधावलि		
विपहरनविधि	सतोपकवि	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०)	४०२	वीरद्वयात्रिणतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	१३९
			४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,	वीरनाथस्तवन	—	(स०)	४२६
			५९५, ६०५, ६३७, ६४९, ७८८	वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
विपापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
विपापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	(हि०)	४१६	वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
			६०४, ६५०, ६७०	वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
विपापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी वारहभावना	—	(हि०)	६८५
विपापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	३१४
			७१६, ७४७	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(स०)	३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८९	वृत्तरत्नाकर	—	(स०)	३१४



मन्थनाम	संस्कृत	भाषा	पृष्ठ सं.	मन्थनाम	संस्कृत	भाषा	पृष्ठ सं.	
वर्द्धमानचरित	पं केसरीसिंह (हि)		१२८ १२९	विजयुद्धरणी	—	(हि)	९१	
वध मलयडम्बिका	सिद्धसेन द्विपाकर	(सं)	४२२	विक्रमिण	हमराज	(हि)	१०२	
वर्द्धमानपुराण	सकलधीरि	(सं)	१२३	विकल्पभुक्तपञ्चम	धर्मशाम	(सं)	११९	
वर्द्धमानविद्यापत्र	सिद्धिदाक	(सं)	१२१	विजयभुक्तमदनतीरा	विजयराज	(सं)	११०	
वर्द्धमानस्तोत्र	श्या गुण्यमत्र	(सं)	४१३	विजयगतबोधक	—	(सं)	१ १०१	
			४२४ ४२५	विजयगतबोधकभाषा	संधी पद्माशंख	(हि)	९	
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(सं)	११२ १११	विजयगतबाभरटीका	—	(हि)	९	
वर्णबोध	—	(सं)	१११	विद्यमानबीरतीर्थद्वारपूजा	ज्येष्ठभूषिणि	(सं)	११५, ११६	
वसुन्धि पायवाचार	श्या वसुन्धि	(सं)	७२	विद्यमानबीरतीर्थद्वारपूजा	श्रीदहीबाबू	विज्ञान	(हि)	२१२
वसुन्धि-विषयवचनवार	पद्माशंख	(हि)	२	विद्यमानबीरतीर्थद्वारपूजा	—	(हि)	२११	
वसुधारागठ	—	(सं)	४२२	विद्यमानबीरतीर्थद्वारपूजा	मुनि दीप	(हि)	४१२	
वसुधास्तोत्र	—	(सं)	४१३, ४२३	विद्यमानपुस्तक	—	(सं)	१२२	
वसुधालाह्वार	बाभमठ	(सं)	११२	विद्यतिथ	—	(हि)	९२	
वसुधालाह्वारटीका	बादिराज	(सं)	११३	विजयी	बाबौराज	(हि)	७०१ ७०२	
वसुधालाह्वारटीका	—	(सं)	११३	विजयी	कमलकीर्ति	(हि)	१११	
वसुधकी के वसिष्ठ	बाबिर	(हि)	११३	विजयी	कुण्डविजय	(हि)	७०२	
पत्रक व जयपाल	वामदेवराय	(हि)	७००	विजयी	म द्विनवास	(हि)	४१४ ७१०	
१ बाबराम गारीका		(हि)	९८	विजयी	धनारसीदास	(हि)	११२	
							१०१ ११६, ११४	
वसुधुन्वा ।	—	(हि)	११२	विजयी	रूपशम्भू	(हि)	७११	
वसुधुन्वा	—	(सं)	२१२	विजयी	समपसुम्बर	(हि)	७१२	
वसुधुन्वाविधि	—	(सं)	२१	विजयी	—	(हि)	९१	
वसुधुन्वास्तोत्र	—	(सं)	१२४	विजयी	सुन्दरी	(हि)	२११	
विद्वज्चरित	बाभनाथार्य आभयनाम	(हि)	११६	विजयी	मान	(हि)	२०१	
विद्वज्बोधोदीची बोर्ड	आभयचन्द्रमूर्ति	(हि)	१४	विजयीगोष्ठी	चित्तपत्र	(हि)	७०	
विद्वज्बोधोपासनी तथा	—	(हि)	७१३	विजयीसंज्ञ	महादेव	(हि)	२११	
विद्यारत्नाभा	—	(सं)	७	विजयीसंज्ञ	दशरथ	(हि)	११२, ७०	
विजयनारदसंगम	श्या शंखपत्र	(हि)	४२	विजयीसंज्ञ	—	(हि)	४२	
विजयरीतिपत्र	शुभचन्द्र	(हि)	१ २				१ ४०	
	—	(सं)	१२२	विजयीसंज्ञ	—	(हि)	९	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
त्रिपामनूय	—	(प्रा०)	४३		विष्णुकुमारमुनिव्या	श्रुतसागर	(स०)	२४०	
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदाम	(स०)	१५५		विष्णुकुमारमुनिव्या	—	(स०)	२४०	
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(स०)	५३५		विष्णुकुमारमुनिबूजा	वाचूनाल	(हि०)	५३६	
विमानशुद्धिबूजा	—	(स०)	५३६		विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०)	७७०	
विमानशुद्धिमातिथ [मण्डलचित्र]	—		५२५		विष्णुमहध्वनाम	—	(स०)	६७४	
विरदावनी	—	(स०)	६५८		विशेषसत्ताप्रिमञ्जी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३	
			७३२, ७६५		विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(स०)	४३	
विरहमानतीर्थदूरजयटी	—	(हि०)	७५६		विश्वलोचन	धरसेन	(स०)	२७७	
विमानपूजा	—	(स०)	६०५		विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमणिका	—	(स०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६५७		विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१६७	
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१		वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३	
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०		वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४	
विवाहप्रकरण	—	(स०)	५३६			४३१, ५७४, ६३६, ७३७			
विवाहपद्धति	—	(स०)	५३६		वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३६, ४१६	
विवाहविधि	—	(स०)	५३६		वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८	
विवाहोपन	—	(स०)	२६१		वीरचरित्र [मनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गू	(सप०)	६४२	
विवेकजयटी	—	(स०)	२६१		वीरछत्तीसी	—	(स०)	६१६	
विवेकजयटी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०		वीरजिण्डादीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६	
विश्वजित्वाण	—	(हि०)	८६		वारजिण्डकी नधावलि				
विषहरणविधि	सतोपकवि	(हि०)	३०३		मेघसुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७	
विषाहारस्तात्र	धनञ्जय	(स०)	४०२		वीरदाश्रयणतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	१००	
			६१५, ४२०, ४२५, ६२८, ४३२, ५६५, ५७२,		वीरनापस्तयन	—	(स०)	४२६	
			५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८		वीरभक्ति	पद्मनालाल चौधरी	(हि०)	४५०	
विषाहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४१६		वीरभक्ति तथा निर्माणभक्ति	—	(हि०)	४५१	
विषाहारस्तोत्रभाषा	प्रचलकीर्ति	(हि०)	६१६		वीररत्न के चरित	—	(हि०)	७४६	
			६०४, ६५०, ६७०		वीरगणन	—	(प्रा०)	६१६	
विषाहारभाषा	पद्मनालाल	(हि०)	४१६		शृङ्गालकी चारहमायना	—	(हि०)	६८५	
विषाहारसंग्रह	—	(हि०)	४३०		शृङ्गारतार	कालिदास	(स०)	३१४	
			७१६, ७४७		शृङ्गारतार	भट्ट वेदार	(स०)	३१६	
विष्णुकुमारबूजा	—	(हि०)	६८६		शृङ्गारतार	—	(स०)	३१४	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भूतललाकारकण्टीका	समसमुद्ररगण्डि	( सं )	११४	वैद्यरत्न	—	( सं )	१४ ७१८
भूतललाकारकण्टीका	सुब्रह्मण्य	( सं )	११४	वैद्यविमोच	भट्टराज	( सं )	१२
भूतललाकारकण्टीका	सुब्रह्मण्य	( वि )	११५	वैद्यविमोच	—	( वि )	१२
			१७२, ७२२, ७२१ ७२२, ७२३	वैद्यविमोच	—	( सं )	७१८
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	११५	वैद्यविमोच	—	( सं )	७१८
भूतललाकारकण्टीका	—	( वि )	२७१	वैद्यविमोच	माध्विषयमह	( सं )	१०२
भूतललाकारकण्टीका	[ श्रीवृद्धादिभूतल ]			वैद्यविमोच	श्रीवृद्धमह	( सं )	२११
	लक्ष्मण	( वि )	२४१	वैद्यविमोच	—	( सं )	२११
भूतललाकारकण्टीका	कवि मारीका	( वि )	७२५	वैद्यविमोच [ उद्योग ]	श्रीवृद्ध	( वि )	११
भूतललाकारकण्टीका	विश्वरामराव	( वि )	११५	वैद्यविमोच	महमत	( वि )	२११
भूतललाकारकण्टीका	शास्त्र	( सं )	७१२	वैद्यविमोच	महावटीवास	( वि )	१२
भूतललाकारकण्टीका	यमुस्व	( सं )	२३१	वैद्यविमोच	मह	( सं )	११
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	४११	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	६, ७	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	५६	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	२३, ७१	वैद्यविमोच	पं रामार	( सं )	२११
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	४२१	वैद्यविमोच	श्रीवृद्धादिभूतल	( सं )	२११
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	१२	वैद्यविमोच	शुभसागर	( सं )	२११
भूतललाकारकण्टीका	समस्तभू	( सं )	२७२	वैद्यविमोच	सकलकीर्ति	( सं )	२११
			१२ १२१	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	१२१	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	—	( सं )	२४	वैद्यविमोच	शुभसागर	( वि )	२१४
भूतललाकारकण्टीका	[ लक्ष्मण ]	—	२४४	वैद्यविमोच	—	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	पमरा	( वि )	२४	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
वैद्यविमोच	—	( सं )	१४	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४
वैद्यविमोच	द्विपक्षिसूरि	( सं )	१२	वैद्यविमोच	शुभसागर	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	श्रीवृद्धादिभूतल	( सं )	१२, ७१२	वैद्यविमोच	—	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	—	( सं )	१३	वैद्यविमोच	—	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	शुभमह	( सं )	१४	वैद्यविमोच	शुभसागर	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	शुभमह	( सं )	१४	वैद्यविमोच	—	( वि )	२१४
वैद्यविमोच	शुभमह	( वि )	१४	वैद्यविमोच	—	( सं )	२१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
व्रतनिर्णय	मोहन	(म०)	५३६	पद्माहुड [प्राभृत]	श्री० कुन्दकुन्द (प्रा०)	११७, ७४८	
व्रतभूजानग्रह	—	(म०)	५३७	पद्माहुडटीका	श्रुतसागर	(म०)	११६
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८	पद्माहुडटीका	—	(स०)	११८
व्रतविधानरासो	दौलतराम रुघी	(हि०)	६३८ ७७६	पद्मनचरचा	—	(स०)	७५७
व्रतविवरण	—	(स०)	५३८	पद्मनचया	—	(स०)	६८३
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८	पद्मेश्यावर्णन	—	(म०)	७४८
व्रतनार	श्री० शिवकोटि	(म०)	५३८	पद्मेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
व्रतसाग	—	(स०)	८७	पद्मेश्यावेलि	हर्षक्रीत्ति	(हि०)	७७५
व्रतमल्या	—	(हि०)	८७	पद्मेश्यावेलि	माह लोहट	(हि०)	३६६
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(स०)	८७	पद्महननवर्णन	मङ्गल	(हि०)	८८
व्रतोद्याननग्रह	—	(म०)	५३८	पद्दर्शनवार्त्ता	—	(स०)	१३६
व्रतोपनामवर्णन	—	(स०)	८७	पद्दर्शनविचार	—	(म०)	१३६
व्रतोपनासवर्णन	—	(हि०)	८७	पद्दर्शननमुच्चय	हरिभङ्गसूरि	(स०)	१३६
व्रतो के चित्र	—		७२३	पद्दर्शननमुच्चयटीका	—	(म०)	१४०
व्रतोकी त्रिययोका व्यौरा	—	(हि०)	६५५	पद्दर्शननमुच्चयवृत्ति	गरुरतनसूरि	(स०)	१२६
व्रतो के नाम	—	(हि०)	८७	पद्भक्तिपाठ	—	(म०)	७५०
व्रताका व्यौरा	—	(हि०)	६०३	पद्भक्तिवर्णन	—	(स०)	८८
<b>प</b>				पर्यावृत्तिनेमपालपूजा	विश्वसेन (स०)	५१६, ५४१	
पद्मावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७	पष्टिगतकटिम्पण	भक्तिलाल	(म०)	३
पद्मावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पष्ट्याधिकगतकटीका	राजहसोपाध्याय	(स०)	
पद्मस्तुवर्णनवारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६	पोडशकारणउद्यापन	—	(स०)	
पद्मकर्मकथन	—	(म०)	३५२	पोडशकारणकथा	ललितक्रीत्ति	(स०)	६६१
पद्मकर्मोपदेशरत्नमाला [द्युक्त्वमोवएसमाला]				पोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
महाकवि अमरक्रीत्ति (अप०)			८८	पोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० म०)	५४२
पद्मकर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पाडे लालचन्द्र	(हि०)	८८	पोडशकारणजयमाल	रङ्गधू (अप०)	५१७, ५४२	
पद्मपचासिका	वराहमिहर	(स०)	२६२	पोडशकारणजयमाल	—	(अप०)	५४२
पद्मपञ्चासिका	—	(हि०)	६५६	पोडशकारणजयमाल	—	(हि० म०)	५४२
पद्मपञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(म०)	२६२	पोडशकारणपूजा [पोडशकारणव्रतोद्यापन]			
पद्मपाठ	—	(स०)	४१७	केशवसेन (स०)	५३६, ५४२, ६७६		
पद्मपाठ	बुधजन	(हि०)	४१६	पोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स
पोद्दकाररत्नसूत्रा [पोद्दकाररत्नसूत्रोच्चारणसूत्रा]	सुमतिमागर (सं )	११७	१४१	१४७	सुमबसुन्दर (सं )	११७	७
पोद्दकाररत्नसूत्रा	—	(सं )	१११	सुबुद्धमहात	राजसमुद्र	(हि )	१११
११७ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ ४ ९				सुबुद्धमहात	राजसमुद्र	(हि )	१११
१ ७ १४१ ११ ७११				बदिभारदेवकी नवा	सुरासुखम्	(हि )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	सुरासुखम्	(हि )	१११	बदिभारदेवकी नवा [बदिभारनवा]	—	(हि )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	ब्यासतराव	(हि )	७ १	११४ ७११ ७११ ७१४ ७१४ ७१४ ७१४			
पोद्दकाररत्नसूत्रा	—	(सं )	१	बदिभाररट्टिबिचार	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	प मडासुख	(हि ग )		बदिस्तोत्र	—	(सं )	४११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	—	(हि )	७७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	नथमसु	(हि )		बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	राजकीर्ति	(हि )		बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	पं ब्रह्मदेव	(सं )	२२	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
			२४१ २४१ ११७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	मदनकोटि	(सं )	११४	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	सुरासुखम्	(हि )	१४४	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	—	(सं )	२४७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
पोद्दकाररत्नसूत्रा	राजकीर्ति	(सं )	२४१	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
<b>ग</b>				बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	समसुन्दर	(सं )	११७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(सं )	४१२	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(हि )	१ ७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	गर्ग	(सं )	२११	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(सं )	२१२ १ ३	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	ब्यास	(हि )	२११	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(हि )	२११ १४१	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(हि )	१ १	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	—	(सं )	१७७	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११
सुबुद्धमहात	म बिसुम्बर	(सं )	१११ १४१	बदिभारदेवकी नवा	—	(सं )	१११

क्र.सं.	नाम	प्रकार	भाषा	पृष्ठ सं.	प्र.सं.	नाम	प्रकार	भाषा	पृष्ठ सं.
१	व्याख्या	प्रतिबन्धनसूत्रि	(हि.)	१६०	व्याख्या	व्याख्या	(हि.)	७७६	
२	व्याख्या	भद्र-सकलप्रति	(हि.)	१६०	व्याख्या	—	(हि.)	६००	
३	व्याख्या	सप्तशतिका	(म.)	१७१	व्याख्या	—	(म.)	७७७	
४	व्याख्या	सुमानस	(हि.)	१७१	व्याख्या	सुमानस	(म.)	३०१	
५	व्याख्या	सप्तशतिका	(हि.)	१७१	व्याख्या	सप्तशतिका	(म.)	३००	
६	व्याख्या	—	(म.)	१०६	व्याख्या	सप्तशतिका	(हि.)	३००	
७	व्याख्या	—	(म.)	११७	व्याख्या	—	(हि.)	६१६	
८	व्याख्या	सुमानस	(हि.)	३०२	व्याख्या	सुमानस	(हि.)	१६८, ३२६	
९	व्याख्या	सप्तशतिका	(हि.)	१०७	व्याख्या	सप्तशतिका	(हि.)	३	
१०	व्याख्या	सुमानस	(हि.)	३०३	व्याख्या	—	(हि.)	११६	
११	व्याख्या	सुमानस	(हि.)	३०३	व्याख्या	—	(हि.)	३-६	
१२	व्याख्या	सुमानस	(म.)	११३, ७११	व्याख्या	—	(म.)	७१०	
१३	व्याख्या	—	(म.)	१०७	व्याख्या	[ सप्तशतिका ]			
१४	व्याख्या	—	(म.)	१०७, ११६, ११७, ११८, ११९	व्याख्या	सुमानस (म-हि.)		१०६	
१५	व्याख्या	—	(हि.)	११६	व्याख्या	[ सप्तशतिका ]		(म.) १०६	
१६	व्याख्या	—	(म.)	११६, ११७, ११८, ११९, ७०७	व्याख्या	—	(म.) ११६		
१७	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
१८	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
१९	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२०	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२१	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२२	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२३	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२४	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२५	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२६	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२७	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२८	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
२९	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	
३०	व्याख्या	—	(म.)	११६	व्याख्या	सुमानस		(म.) ११६	

ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा	पृष्ठ सं
दिलालेश्वरसंस्कृत	—	( सं )	१०१	शु मारुतवित	—	( हि )	१११
दिलोम्बरीस	कवि सारम्भ	( सं )	२७७	शु पारुतिका	काशिकास	( सं )	१११
दिलोम्बरीसपारुतिका	शाकरभट्ट	( सं )	२७७	शु पारुतिका	रत्नमण्ड	( सं )	१११
दिलोम्बरीस	महाकवि भाष	( सं )	१ १	शु पारुतिका	—	( हि )	७७
दिलोम्बरीस	महिनामसूत्रि	( सं )	१ १	शु पारुतिका	—	( हि )	२१
दिलोम्बरीस	काशीनाथ	( सं )	२९१	शु पारुतिका	—	( हि )	७७
	२११ १ १ १ २, १७१			श्यामवतीषी	मन्थानु	( हि )	१७१
दीपलतावतुजा	धर्ममूषण ( सं )	२४१	७११	श्यामवतीषी	श्याम	( हि )	७७
दीपलतावतुजा	अपिलालेश्वर	( हि )	४११	श्यामवतीषी	नरहरिमण्ड	( सं )	१
दीपलतावतुजा	समयमुन्दरगण्डि	( सं )	१११	श्यामवतीषी	—	( सं )	७७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	११७	श्यामवतीषी	—	( हि )	११७
दीपलतावतुजा	मारामण्ड	( हि )	२७७	श्यामवतीषी	हृषीकेशि	( हि )	११७
दीपलतावतुजा	—	( हि )	१	श्यामवतीषी	—	( हि )	११७
दीपलतावतुजा	अक्षय	( हि )	७१	श्यामवतीषी	—	( सं )	१, १७१
दीपलतावतुजा	—	( हि )	१११	श्यामवतीषी	—	( सं )	७७
दीपलतावतुजा	अक्षय	( हि )	७७१	श्यामवतीषी	—	( सं )	७७
दीपलतावतुजा	विजयेश्वरसूत्रि	( हि )	२११, ११७	श्यामवतीषी	—	( सं )	१७१
—	—	( सं )	२४१	श्यामवतीषी	—	( सं )	१७१
—	—	( हि )	१११	श्यामवतीषी	—	( सं )	१७१
—	—	( हि )	१ १	श्यामवतीषी	—	( सं )	१७१
दीपलतावतुजा	अक्षय	( सं )	११७	श्यामवतीषी	पञ्चमहाशक्ति	( हि )	७७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	११७	श्यामवतीषी	श्रीराम	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	११७	श्यामवतीषी	अभितरगण्डि	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	११७	श्यामवतीषी	आशापर	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	११७	श्यामवतीषी	गुणमूषण	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	हेमेश्वरसूत्रि	( सं )	११	श्यामवतीषी	वृद्धवित	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	मीर	( सं )	२७४	श्यामवतीषी	पुष्पाव	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( हि )	१११	श्यामवतीषी	सकलशक्ति	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( हि )	१११ ७१	श्यामवतीषी	—	( सं )	११७
दीपलतावतुजा	—	( सं )	१११	श्यामवतीषी	—	( सं )	११७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भावकाचारदोहा	रामसिंह	(अप०)	६४२, ७४८	श्रवतजयस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रावकाचारभाषा	प० भागचन्द्र	(हि ग)	६१	श्रीस्तोत्र	—	(स०)	४१८
श्रावकाचार	—	(हि०)	६१	श्रुतज्ञानपूजा	—	(स०)	७२७, ५४६
श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	—	(हि०)	७५६	श्रुतज्ञानभक्ति	—	(स०)	६२७
श्रावका की चौदासी जातिया	—	(हि०)	३७५	श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(स०)	५२५
श्रावको की बहुर जातिया	—	(स०हि०)	३७५	श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	६२
गावशीद्वादशीउपाख्यान	—	(स०)	२४७	श्रुतज्ञानोद्योतनपूजा	—	(हि०)	५१३
श्रावशीद्वादशीकथा	प० अश्रदेव	(स०)	२४२, २४५	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१३
श्रावशीद्वादशीकथा	—	(स०)	२४८	श्रुतभक्ति	—	(स०)	६३३
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुखजी	(स०)	४१८	श्रुतभक्ति	—	(स०)	४२५
श्रीपालकथा	—	(हि०)	२४८	श्रुतभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२००	श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(स०)	५४६
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(स०)	२०१	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५४६
श्रीपालचरित्र	—	(स०)	२००	श्रुतपचमीकथा	स्वयम्भू	(अप०)	६४२
श्रीपालचरित्र	—	(अप०)	२०१	श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	(स०)	५३७
श्रीपालचरित्र	परिभङ्ग	(हि प)	२२, ७७३	श्रुतपूजा	—	(स०)	५४६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०२				५६५, ६६६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०३	श्रुतबोध	कालिदास	(स०)	३१५, ६६४
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	६१५	श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(स०)	३१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि०)	३६५	श्रुतबोध	वररुचि	(स०)	३१५
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६३८	श्रुतबोधटीका	—	(स०)	३१५
			६८४, ७१२, ७१७, ७४६	श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्ति	(स०)	३१५
श्रीपालविनती	—	(हि०)	६५१	श्रुतस्कष	ब्र० हेमचन्द्र	(प्रा०)	३७६
श्रीपालस्तवन	—	(हि०)	६२३				५७२, ७०६, ७३७
श्रीपालस्तुति	—	(स०)	४२३	श्रुतस्कषपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५४७
			७४५, ७५२, ७८४,	श्रुतस्कषपूजा	—	(स०)	५४७
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०)	६३६	श्रुतस्कषपूजा [ज्ञानपचविभक्तिपूजा]	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५४७
श्रीपालजीकीस्तुति	भगवतीदास	(हि०)	६४३				(हि०)
श्रीपालस्तुति	—	(हि०)	६०५	श्रुतस्कषपूजाकथा	—		५४७
			६४४, ६५०	श्रुतस्कषमण्डल [चित्र]	—		५२४



ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०
भुवनेश्वरविद्यावचना	१	१२२	मन्थानुक्रमिका	—	( ४ ) १२
भुवनेश्वरवचन	३	१२३	मंदि	—	( ५ ) २०
भुवनेश्वर	१	३०९ २०९	मन्थानुक्रमिका	—	( ६ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( ७ ) १२७	मन्थानुक्रमिका	—	( ७ ) २१२
भुवनेश्वर	३	१२३	मन्थानुक्रमिका	—	( ८ ) २१२
भुवनेश्वर	३	१२३	मन्थानुक्रमिका	—	( ९ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १० ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १० ) २१२
भुवनेश्वर	—	( ११ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( ११ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १२ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १२ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १३ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १३ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १४ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १४ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १५ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १५ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १६ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १६ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १७ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १७ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १८ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १८ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( १९ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( १९ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २० ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २० ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २१ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २१ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २२ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २२ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २३ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २३ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २४ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २४ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २५ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २५ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २६ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २६ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २७ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २७ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २८ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २८ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( २९ ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( २९ ) २१२
भुवनेश्वर	—	( ३० ) २१२	मन्थानुक्रमिका	—	( ३० ) २१२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	स०
उज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिपेण	(स०)	३३७,	५७३	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(स०)	१४०	
उज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(स०)	३३७		सप्तपदार्थी	—	(स०)	१४०	
उज्जनचित्तवल्लभ	—	(स०)	३३७		सप्तपदी	—	(स०)	५४८	
उज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द्र	(हि०)	३३७		सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	
उज्जनचित्तवल्लभ	द्वर्गूला	(हि०)	३३७		सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्ति	(स०)	२४६	
सज्ज्माय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	४५१		सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(स०)	५१७, ५५८	
सज्ज्माय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८		सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	
सतसई	विहारीलाल	(हि०)	५७६,	७६८	सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	
सतियो की सज्ज्माय	ऋषिछजमलजी	(हि०)	४५१		सप्तभगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८	
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	(हि०)	७३५,	७६०	सप्तविधि	—	(हि०)	३०७	
सत्तात्रिभगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५		सप्तव्यसनसनकथा	आ० सोमकीर्ति	(स०)	२५०	
सत्ताद्वार	—	(स०)	४५		सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०	
सद्भाषितावली	सकलकीर्ति	(स०)	३३८		सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०	
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८		सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२३	
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८		सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(स०)	७१५	
सन्निपातकलिका	—	(स०)	३०७		सप्तश्लोकीगीता	—	(स०)	६२	३६८ ६६२
सन्निपातनिदान	—	(स०)	३०६		सप्तसूत्रभेद	—	(स०)	७६१	
सन्निपातनिदानचिकित्सा	घाहडदास	(स०)	३०६		सभातरंग	—	(स०)	३३८	
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशासूरि	(स०)	३३८		सभाश्रु गार	—	(स०)	३३६	
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवाकर	(स०)	१४०		सभाश्रु गार	—	(स० हि०)	३३८	
सप्तपिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६		सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३२८	
सप्तपिपूजा	जिणदास	(स०)	५४८		समकितढ़ाल	आसकरण	(हि०)	६२	
सप्तपिपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	७६६		समकितविरणवोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१	
सप्तपिपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	५४८		समतभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८	
सप्तपिपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५४८		समतभद्रस्तुति	समतभद्र	(स०)	७७८	
सप्तपिपूजा	—	(स०)	५४६		समयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६	
सप्तश्रुपिमडल [चित्र]	—	(स०)	५०४					५७४, ७०३, ७६२	
सप्तनवविचारस्तवन	—	(स०)	४१८		समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	१२०	
सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	(स०)	१४०		समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५	

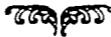
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पुस्तक सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पुस्तक सं.
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१२२	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(पर.)	१२२
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१२२ १२३	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१२३
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(हि.)	१२३	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	सूर्यभद्र	(हि.)	१२३
	१ ४ १११ १ १ १ १२४			अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१२, १२३
	१ १ १२ ७ २ ७११ ७१						७१ ७२
	७११ ७२३ ७२४			अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	शाश्वतदास	(हि.)	१२५, १२६
	७२४, ७२५ ७२६			अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१२६
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(हि.)	१२४	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	सूर्यभद्र	(सं.)	१२७
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१२५	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	प्रभाकराचार्य	(सं.)	१२८
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(सं.)	१२५ ७२४	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१२९
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सा.)	१२६	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	दिव्यदास	(सं.)	१३०
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	रामदासपेठ	(सं.)	१२४	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१३१
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(सं.)	१२६	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	७२६, ७२७
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	रत्नशेखर	(सं.)	१३७	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	गंगाराम	(सं.)	१३८ ७२
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां [सूत्र]	सूर्यभद्र	(सं.)	१३८	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	प. अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(हि.)	१३९
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१३९, ७२७	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	मार्गभद्र	(हि.)	१४०
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	विष्णुसप्त मुनि	(सं.)	४११	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	रायभद्र	(हि.)	१४१
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	दिव्यसेन	(सं.)	४१२	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१४१
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	४१३				१४२ १४३
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(हि.)	१३४	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१४४
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(पर.)	१४५	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	श्रीधर देवदास	(सं.)	१४५
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	सूर्यभद्र	(सं.)	१४६	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	मनसुखदास	(सं.)	१४६
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१४७	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	(हि.)	५ १४७, १४८
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	माधुरासदासी	(हि.)	१४८	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१४९
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	परमेश्वरदासी	(हि.)	१४९	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	केनरीसिंह	(हि.)	१५०
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	माधुरासदासी	(हि.)	१५०	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	देवादास	(हि.)	५ १५१
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(हि.)	१५१	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	शेखा	(सं.)	१५२
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सं.)	१५२	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	गुणदासदासी	(सं.)	१५३
अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	—	(सा.)	१५३	अथर्ववेदप्रश्नोत्तराणां	श्रीधरदास	(सं.)	१५४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५५५	सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा (हि०प०)	३४०, ४४७		सुभाषितपाठसग्रह	—	(स०हि०)	६६८
सुगुरुस्तोत्र	—	(स०)	४२२	सुभाषितमुक्तावली	—	(स०)	३४१
सदयवच्छसावलिगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४	सुभाषितरत्नसदोह	अमितिगति	(स०)	३४१
दयवच्छसालिगारीवार्ता	—	(हि०)	७३४	सुभाषितरत्नसदोहभाषा	पद्मालालचौधरी (हि०)		३४१
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२०८	मुभाषितसग्रह	—	(स०)	३४१, ५७५
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानदि	(स०)	२०६	सुभाषितसग्रह	—	(स०प्रा०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	२०८	सुभाषितसग्रह	—	(स०हि०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	—	(स०)	२०६	सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(स०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६	सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(स०)	३४३
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६	सुभाषितावली	—	(स०)	३४३, ७०६
			६३६, ७१२, ७४६	सुभाषितावलीभाषा	वा० दुलीचन्द	(हि०)	३४४
सुदर्शनसेठकीढाल [कथा]	—	(हि०)	२५४	सुभाषितावलीभाषा	पद्मालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुदामाकीवारहखडो	—	(हि०)	७७६	सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
सुहृष्टिरगिणीभाषा	टेकचन्द	(हि०)	६७	सुभौमचरित्र	भ० रतनचन्द	(स०)	२०६
सुहृष्टिरगिणीभाषा	—	(हि०)	६७	सुभौमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४४	सूक्तावली	—	(स०)	३४५, ६७२
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३	सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(स०)	३४४, ६३५
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८	सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(स०)	६०२
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५	सूतकनिर्णय	—	(स०)	५११
सुपार्वनाथपूजा	रामचन्द	(हि०)	५५५	सूतकवर्णन [ यशस्तिलक से ]	सोमदेव	(स०)	५७१
सुप्पय दोहा	—	(स०)	६२८	सूतकवर्णन	—	(स०)	५५५
सुप्पय दोहा	—	(स०)	६३७	सूतकविधि	—	(स०)	५७६
सुप्पय दोहा	—	(हि०)	७६५	सूत्रकृतांग	—	(प्रा०)	४७
सुप्रभातस्तवन	—	(स०)	५७४	सूर्यकवच	—	(स०)	६४०
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(स०)	६३३	सूर्यकेदशनाम	—	(स०)	६०८
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूपण	(स०)	६३३	सूर्यगमनविधि	—	(स०)	२६५
सुभाषित	—	(स०)	५७५	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्र० जयसागर	(स०)	५५७
सुभाषित	—	(हि०)	७०१				

प्रथमनाम	क्षेत्रक	मापा दूत सं०	प्रथमनाम	क्षेत्रक	मापा दूत सं०
सुर्वस्तोष	—	(ठ) १५२ १२२	सोतहृत्पिठोविनाम	राजसमुद्र	(दि) ११६
सोताभिरिण्णीठी	भागीरथ	(दि) २५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) १२१
सोताभिरिण्णीठी	—	(दि) १२२	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) १२१
सोताभिरिण्णीठी	भार्या	(ठ) २२२	सोतहृत्पिठोविनाम	महाराज	(ठ) २२१
सोताभिरिण्णीठी	—	(दि) २२१	सोतहृत्पिठोविनाम	भार्या	(ठ) २२१, २२१
		१७५ ७१	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) २२१
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १२२	सोतहृत्पिठोविनाम	सुन्दरविजयगण्डि	(ठ) २२१
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठा) २२२	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १२२
सोतहृत्पिठोविनाम	रसपाण	(ठ) १२२	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १२२
सोतहृत्पिठोविनाम	म ज्ञानसागर	(दि) ७५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १२२
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १७१	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १२२
सोतहृत्पिठोविनाम	म विमलदास	(ठ) ७२२	सोतहृत्पिठोविनाम	भार्या	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १ १	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
		१५५ १२२, १२५ ७ ५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
		७११ ७७५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) ७ २	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	धानदराज	(दि) २२२	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
		२२२, २२१	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) २२१ १७	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	महासुन्दर	(दि) २	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) ७८	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) २	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) २२१	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	[ विप ]	—	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) २२७	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	म० सदाशिवीति	(दि) २२५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
		११२, ७७१	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११
सोतहृत्पिठोविनाम	—	(दि) २२५	सोतहृत्पिठोविनाम	—	(ठ) १११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीयुक्तिखडत	—	(हि०)	६४०	स्वयम्भूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(स०)	४३४
स्त्रीलक्षण	—	(स०)	३५६	स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(स०)	७१५
स्त्रीश्रृ गारवर्णन	—	(स०)	५७६	स्वरविचार	—	(स०)	५७२
स्थापनानिर्णय	—	(स०)	६८	स्वरोदय	—	(स०)	१२८
स्थूल भद्रकाचौमासावर्णन	—	(हि०)	३७७	स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)	—	(हि०)	३४५
स्थूल भद्रगीत	—	(हि०)	६१८	स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्थूल भद्रशीलरत्तो	—	(हि०)	५६६	स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्थूल भद्रसज्ज्माय	—	(हि०)	४५२, ६१६	स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
सनपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,				७०१, ७६३
सनपनविधि [ वृहद् ]	—	(स०)	५५६	स्वर्गमुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३	स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	(स०)	४२८
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८	स्वस्त्ययनविधान	—	(स०)	५७४
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१				६५८, ६४६
स्फुटकवित्तएवपद्यसग्रह	—	(स०हि०)	६७२	स्वाध्याय	—	(स०)	५७१
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३	स्वाध्ययपाठ	—	(स०प्रा०)	५६४
स्फुटपद्यएव मन्त्रमादि	—	(हि०)	६७०	स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा०स०)	६८ ६३३
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६	स्वाध्यायपाठ	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्फुटवार्ता	—	(हि०)	७४१	स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्फुटश्लोकसग्रह	—	(स०)	३४५	स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि०प०)	१२८
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५	स्वार्थवीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५				
स्वप्नाध्याय	—	(स०)	२६५				
स्वप्नावली	देवतन्दि	(स०)	२६५, ६३३				
स्वप्नावली	—	(स०)	२६५	हसकीडालतयाविनतीडाल	—	(हि०)	६८५
स्याद्वादचूलिका	—	(हि०ग०)	१४१	हसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
स्याद्वादमजरी	मल्लिषेणसूरि	(स०)	१४१	हठयोगदीपिका	—	(स०)	१२८
स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	४२३	हरावतकुमारजयमाल	—	(प्रप०)	६३८
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,	हनुमन्चरित्र	ब्र० अजित	(स०)	२१०
			६३३ ६६५, ६८६,	हनुमन्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
			७२०, ७३१	( हनुमन्तकथा )			५६५, ५६६, ७१७,
				( हनुमन्तकथा )			७३४, ७३६,

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा वृत्त म	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा वृत्त म
( हनुवतपत्र )		७४ ७४४	हरिवंशपुराणव्याख्या	—	( दि ) ११५, ११६
( हनुवंत जीवई )		७११, ७१२	हरिवंशचरित	—	( दि ) १११
हनुमान स्तोत्र	—	( दि ) ४१२	हरिवंशनामानिबन्धन	—	( सं ) ११
हनुवतमुखा महाकवि स्वयंभू		( पर ) ११२	हनुवतविधि	—	( सं ) ७११
हनीरजीवई	—	( दि ) १७५	हातवलि	महामहापाप्माय पुद्गलधाम देव	
हनीररत्नो	महाराकवि	( दि ) ११, ७ १			( सं ) १११
हनीरनामवाचिबन्ध	—	१ १	हिवीरलया	शिवचरितमुनि	( सं ) १०६
हनीरौषधवाच	—	( सं ) १ ५	हिवीरदेव	देवीचण्ड	( सं ) ७११
हनीरके कीड़े	हरजी	( दि ) ७५	हिवीरदेव	विष्णुसर्मा	( सं ) ११२
हनीरवल्	—	( दि ) १ ७	हिवीरवैद्यनाथ	—	( दि ) १४६, ७११
हरिचण्डिका	—	( दि ) ७११	हनुवतपरिच्छेदकालवोध	महाकविभद्र	( दि ) १ ११५
हरिनाममाला	रांकराचार्य	( सं ) ११५	हेमचण्डी	विरचमूषक	( दि ) ७११
हरिनीलादिचिवाचली	—	( दि ) १ १	हेमनीलचरित	—	( सं ) १००
हरिपत्र	—	( दि ) १ १	हेमाम्बाचरण [ हेमाम्बाचरणवृत्ति ]		
हरिवंशपुराण	श्रि विमदास	( सं ) १११	हेमचन्द्राचार्य		( सं ) १००
हरिवंशपुराण	विनसेनाचार्य	( सं ) १११	होवाचक	—	( सं ) १११
हरिवंशपुराण	श्री भूपय	( सं ) ११७	होव्याज	—	( सं ) १११
हरिवंशपुराण	सकलकीर्ति	( सं ) ११७	होलीकथा	विनचन्द्रसूरि	( सं ) १११
हरिवंशपुराण	बचक	( सं ) ११७	होलीकथा	—	( सं ) १११
हरिवंशपुराण	पदा कीर्ति	( सं ) ११७	होलीकथा	शुगर कवि	( दि व ) १११
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	( सं ) ११७	होलीकथा	श्रीवठ ठालिच	( दि ) ११६
हरिवंशपुराणव्याख्या	सुराकवि	( दि-५ ) ११			१११, ११५
हरिवंशपुराणव्याख्या	श्रीवठराम	( दि व ) ११७	होलीकथावर्णन	श्रि विमदास	( सं ) १११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्पत्त्वकौमुदीकथा	—	(स०)	२५१	सरस्वतीस्तोत्रमहाना [ आन्दास्तवन ]	—	(स०)	४२०
सम्पत्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२	सरस्वतीस्तोत्रभाषा	दनारमीदास	(हि०)	५४७
सम्पत्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६	सर्वतोभद्रपूजा	—	(स०)	५५१
सम्पत्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि० ग०)	२६२	सर्वतोभद्रमंत्र	—	(सं०)	४१६
सम्पत्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३	सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(स०)	३०७
सम्पत्त्वजयमाल	—	(प्रप०)	७६४	सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(पं०)	२७८
सम्पत्त्वपञ्चवीसी	—	(हि०)	७६०	सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(स०)	४५
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	प० टोडरमल	(हि०)	७	सर्वार्थसिद्धिभाषा	नरचन्द्रब्रह्मा	(हि०)	४६
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६	सर्वार्थसिद्धिसम्भाय	—	(हि०)	४५२
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(स०)	६५८	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
सम्यग्दृष्टिकोभावनावर्णन	—	(हि०)	७८५	सर्वेयाएवपद	सुन्दरदास	(हि०)	६८१
सरस्वतीमृष्टक	—	(हि०)	४५२	सहस्रकूटजिनानयपूजा	—	(स०)	५५१
सरस्वतीकल्प	—	(स०)	३५२	सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्त्ति	(स०)	५५२
सरस्वतीचूर्णकानुसखा	—	(हि०)	७५७	सहस्रगुणितपूजा	—	(स०)	५५२
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(स०)	५५२, ७४७
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(स०)	६५८	सहस्रनामपूजा	—	(स०)	५५०
सरस्वतीपूजा [ जयमाल ] ज्ञानभूषण	—	(स०)	५१५, ५६५	सहस्रनामपूजा	चैनमुख	(हि०)	५५०
सरस्वतीपूजा	पद्मनदि	(स०)	५५१, ७१६	सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५०
सरस्वतीपूजा	—	(स०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	प० आशाधर	(स०)	५०६, ५७७
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्द्रवर्क्षी	(हि०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	—	(स०)	६८०
सरस्वतीपूजा	सघी पन्नालाल	(हि०)	५५१	—	—	(स०)	७५३, ७६३
सरस्वतीपूजा	प० बुधजन	(हि०)	५५१	सहस्रनाम [ वडा ]	—	(स०)	४३१
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२	सहस्रनाम [ लघु ]	आ० समतभद्र	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(स०)	४१६	सहस्रनाम [ लघु ]	—	(स०)	४३१
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(स०)	६५७	सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(स०)	६४७, ७६१	साक्षी	कवीर	(हि०)	७२३
सरस्वतीस्तोत्र	घृहस्पति	(स०)	४२०	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०४
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(स०)	४२०				
सरस्वतीस्तोत्र	—	(स०)	४२०, ५७५				



ग्रन्थनाम	अक्षर	भाषा	पृष्ठ सं.	ग्रन्थनाम	अक्षर	भाषा	पृष्ठ सं.
साम्बाराधपद्मिण	आशाघर	(हिं )	१३	सामुद्रिकशास्त्र	—	(हिं )	७११
साम्बन्धसत्त्वान्याय	—	(हिं )	१४	सामुद्रिकमहासागर	—	(हिं )	१११
सामुद्रिकशास्त्र	इमराठ	(हिं )	७००	सामुद्रिकविचार	—	(हिं )	११४
सामुद्रिकदर्श	—	(भा )	१४	सामुद्रिकशास्त्र	भी निधिस्मृत	(भा )	११७
सामुद्रिकशास्त्र	आनन्दसूरि	(हिं )	११७	सामुद्रिकशास्त्र	—	(हिं )	११४ १११
सामुद्रिकशास्त्र	पुस्तकालय (पुराणी हिं)		४२२	सामुद्रिकशास्त्र	—	(भा )	११७
सामुद्रिकशास्त्र	पन्नारसीदास	(हिं )	१४४	सामुद्रिकशास्त्र	—	(हिं )	११४
			११२, ७११ ७४१				१११ ११७ ७११
सामुद्रिकशास्त्र	सायिकचण्ड	(हिं )	४२२	साम्बन्धशास्त्र	—	(हिं )	४१
सामुद्रिकशास्त्र	—	(हिं )	११४	सारसुविद्य	—	(हिं )	४१
साम्प्रतिकशास्त्र	अभिज्ञान	(भा )	१४ ७१७	सारसुवीचीभाषा पारसुदासनिगमस्थ		(हिं )	४११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१४	सारणी	—	(भा )	१११
			११२ २१ २१ ४१	सारणी	—	(हिं )	११२
			११ १० ११ ११०	सारसुविद्य	वर्षादा	(हिं )	११७
			११ ११ ११ ०११	सारसुविद्य	—	(हिं )	१
साम्प्रतिकशास्त्र	अभिमति	(भा )	१४	सारसुविद्य	कुशाग्र	(भा )	११७, ११७
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१४ ११०	सारसुविद्यवर्षादा [विद्य]	—		१११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१४	सारसुविद्य वर्षादा	—	(हिं )	१११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१४	सारसुविद्य	अमूर्च्छीसिद्धि		१११
साम्प्रतिकशास्त्र	महेश्वर	(हिं )	४२१	सारसुविद्य	—	(हिं )	१११
			७१४ ७११	सारसुविद्य	अनुसूचितकृपाशास्त्र	(भा )	१११, ७००
साम्प्रतिकशास्त्र	अ. न. शास्त्र	(हिं )	११ ११७	सारसुविद्य	महीमठ	(हिं )	११
साम्प्रतिकशास्त्र	शिक्षाचण्ड	(हिं )	११	सारसुविद्य	—	(भा )	११
साम्प्रतिकशास्त्र	कुशमहाश्वर	(हिं )	११	सारसुविद्य	—	(हिं )	१११, १११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(हिं )	११	सारसुविद्य	—	(हिं )	१११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	११ ११	सारसुविद्य	—	(हिं )	१११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१११ १११	सारसुविद्य	—	(हिं )	१११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	१११ १११ १११	सारसुविद्य	मुनि रामसिंह	(भा )	१
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	७११ १११ १११	सारसुविद्य के मन्थर वी	—	(हिं )	११
साम्प्रतिकशास्त्र	—	(भा )	७११	सारसुविद्य का वर्ण	—	(हिं )	११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सासुवहूकाभगदा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१, ६४८	सिद्धवदना	—	(स०)	१२०
सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५१६	सिद्धभक्ति	—	(स०)	६२७
सिद्धकूटमठल [ चित्र )	—	—	५२४	सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७८
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	४६७ ५५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	—
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३	सिद्धस्तवन	—	(स०)	४२०
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५	सिद्धस्तुति	—	(स०)	५७१
सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा	—	(स०)	५५३	सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभमूरि	(स०)	२६७
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३	सिद्धान्त अर्थसार	प० रङ्गभू	(अप०)	४६
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	(स०)	५१० ५१४, ५५३	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(स०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी	—	(स०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ]	भानुकीर्त्ति	(स०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(स०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ]	शुभचन्द्र	(स०)	५५३	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(स०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ]	—	(स०)	५१४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशकर	(स०)	२६९
सिद्धचक्रपूजा	—	(स०)	५१४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(स०)	२६९
			५५४, ६३८, ६५८, ७३५	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगण्ड	(स०)	२६९
सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ]	सतलाल	(हि०)	५५३	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(स०)	३२३
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३	सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८
सिद्धपूजा	आशाधर	(स०)	५५४ ७१६	सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुगुदन सरस्वती	(स०)	२७०
सिद्धपूजा	पद्मनदि	(स०)	५३७	सिद्धान्तमजरी	—	(स०)	१३-
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(स०)	५५४	सिद्धान्तमञ्जुषिका	नागेशभट्ट	(स०)	—
सिद्धपूजा	—	(स०)	४१५	सिद्धान्तमुक्तावली	पन्नानन भट्टाचार्य	(स०)	—
			५५४, ५७४, ५९४, ६०५	सिद्धान्तमुक्तावली	—	(स०)	—
			६०७, ६४६, ६५१, ६७०	सिद्धान्तमुक्तावलिटीका	महादेवभट्ट	(स०)	१४०
			६७६, ६७८, ७०४, ७३१	सिद्धान्तलेख सग्रह	—	(हि०)	४६
			७४५, ७६३	सिद्धान्तसारदीपक	मकलकीर्त्ति	(स०)	४६
सिद्धपूजा	—	(स० हि०)	५६९	सिद्धान्तसारदीपक	—	(स०)	४७
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१९	सिद्धान्तसारभाषा	नथमलधिलाला	(हि०)	४७
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५१५	सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७	सिद्धान्तसार सग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(स०)	४७

ग्रन्थनाम	पृष्ठा	मा.	पु.	क्र.	ग्रन्थनाम	संख्या	भाषा	पु. सं.
सिद्धिभिराटीक	द्वयर्नाह	( )	५	५	मन्थरस्यामीपुत्रा	—	(ब)	१११
	४२१ ४२२ ४ ५ ४			४११	मन्थरस्यामीरसवन	—	(हि)	१११
	४१२ ४७२ ४७४ ४७			४६२	सागराह	मुक्तकीर्ति	(हि)	११
	४६७ १ २ १४			१११	मुमुक्षुलक्षरिह	म० सकलकीर्ति	(सं)	११
				११७ ७०१	मुमुक्षुलक्षरिह	श्रीपर	(पद्य)	११
सिद्धिभिराटीक	—	(ब)		४२१	मुमुक्षुलक्षरिहवत्यापं	माधुसूक्तभाषासी	(हि)	२०
सिद्धिभिराटीकभाषा	मदमक	(हि)		४२१	मुमुक्षुलक्षरिह	हरचंद्र गंगनाथ	(हि+प)	२००
सिद्धिभिराटीकभाषा	पद्मलालशौचरी	(हि)		४२१	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(हि)	१०
सिद्धिभिराटीक	—	(सं)		१७	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(हि)	१११
सिद्धिभिराटीक	—	(हि)		६७	मुमुक्षुलक्षरिहमीरा	म० विनयनाथ	(हि+पु)	१११
सिद्धिभिराटीक	सोमनाथभाषा	(ब)		१४	मुमुक्षुलक्षरिह	मनराज	(हि)	१११
सिद्धिभिराटीक	बनारसीभाषा	(हि)		१२४	मुमुक्षुलक्षरिह	द्वयर्नाह	(हि)	७०१
	२४ ४१२, ४१४ ७१			७२२	मुमुक्षुलक्षरिह	कवि जगन्नाथ	(ब)	१०
	७४५ ७२२ ७२२				मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२१०
सिद्धिभिराटीकभाषा	दुम्बरदास	(हि)		३४	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२०१
सिद्धिभिराटीक	पं जयदेव	(पद्य)		१२	मुमुक्षुलक्षरिह	विमलकीर्ति	(पद्य)	१२२
सिद्धिभिराटीकभाषा	शैलेश्वरमुनि	(ब)		१२१	मुमुक्षुलक्षरिह	जयपराम	(ब)	१२२
सिद्धिभिराटीकभाषा	—	(सं)		२२१	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२१४
सागरमीमांसा	—	(सं)		१२१	मुमुक्षुलक्षरिह	कश्मिरीकीर्ति	(ब)	१२२
	—	(हि)		१	मुमुक्षुलक्षरिह	सुतसागर	(ब)	१२४
सीतालाल	कविरामचन्द्र (बाह्यक)	(हि)		१६	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	१२४
				७२२ २२	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(पद्य)	११२
सीतालाल	—	(हि)		२१६	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(हि)	१२४, ७२२
सीतालाल	—	(हि)		४२२	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(हि)	१११
सीतालाल	—	(हि)		७२०	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२२२
सीतालाल	—	(हि)		१४४ १२	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२२२
सीतालाल	—	(हि)		११	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२२२
सीतालाल	—	(हि)		६४४	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(सं)	२२२
सीतालाल	—	(हि)		१	मुमुक्षुलक्षरिह	—	(हि)	२२२

# ← ग्रंथ एवं ग्रंथकार →

## प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	ऋणसवधकथा	२१८	देवसेन—	भाराधनानाम	५९
अभयदेवसूरि—	जयतिह्वरणस्तोत्र	७५८		५७२, ५७३, ६२८, ६३५,	
अल्लू—	प्राग्गतछद्मकोप	३११		७०९, ७३७, ७४४	
इन्द्रनदि—	छेदपिण्ड	५७		तत्पसार	२०, ५७५
	प्रायश्चित्तविधि	७८		६३७, ७३७, ७४४, ७४७	
कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३		दर्शनसार	१३३
कु दकुमाचार्य—	भट्टपाहुड	९९		नयचक्र	१३४
	पचास्तिक्काय	४०	देवेन्द्रसूरि—	भावसग्रह	७७
	प्रयचनसार	११२		कर्मस्तवसूत्र	५
	नियमसार	३८	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवन्ध	३९६
	बोधप्राप्त	११५	धर्मटामगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
	यतिभावनाष्टक	५७३	नन्दिपेण—	अजितघातिस्तवन	३७९
	रणसार	८४	भडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	लिंगपाहुड	११७		रत्नमाला	५१
	पट्टपाहुड	११७, ७८८	नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवप्रसंगी	
	समयसार	११९,		कर्मप्रकृति	
		५७४, ७३७, ७६२		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१
गौतमस्वामी—	गौतमबुलक	१४		गोम्मटसारजीवकाण्ड	९,
	सबोधपचासिका	११९, १२८		१६, ७२०	
जिनभद्रगणि	मर्थदियिका	१		चतुरविंशतिन्यायक	१८
ढाडसीमुनि—	ढाडसीगाथा	७०७		जीवविचार	७३२
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१		त्रिभगीसार	३१
	जीवविचार	६१६		द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५,
				६२८, ७४४	

मन्त्रस्यार का नाम

मन्त्र नाम  
मंत्र सूची की  
पत्र सं

मन्त्रस्यार का नाम

मन्त्र नाम

मंत्र सूची की  
पत्र सं

अपभ्रंश भाषा

विनोक्तार	१२
विनोक्तारकट्टि	१२२
पंचसंज्ञ	३
भक्तविरचनी	४२
लक्ष्मिहार	४९
विनोक्तारमन्त्रविरचनी	४९
शतमंत्रविरचनी	४३
पद्यमन्त्रि—	
काव्यमन्त्रविरचनी	१ १
विनोक्तारकट्टि	१२
वामनूचीपत्रमन्त्रि	११२
भक्तविरचनी	१ ३
मुनिपद्यसिद्ध—	
मन्त्रविरचनी	१ ७
माधवविरचनी—	
मुनिपद्यसिद्धि—	
मुनीन्द्रकीर्ति—	
रत्नसिद्धिसिद्धि—	
लक्ष्मीचन्द्रविरचनी—	
। । यन—	
वृ—	
विद्यासिद्धि—	
शिवार्च—	
गीताम—	
भूतमुनि—	
सर्वतमन्त्र—	
सिद्धसंतसिद्धि—	
सुन्दरसिद्धि—	
कविहास—	
म हेमचन्द्र—	

अमरकीर्ति—	पद्यविरचनीमन्त्रविरचनी	१२
अपभ्रंश—	पद्यविरचनीमन्त्रविरचनी	१२१
कनककीर्ति—	मन्त्रविरचनीमन्त्रविरचनी	१११
मुनिचन्द्रमन्त्र—	मन्त्रविरचनीमन्त्रविरचनी	१११
मुनिपद्यमन्त्र—	पद्यविरचनीमन्त्रविरचनी	१११
अक्षयसिद्धि—	अक्षयसिद्धि	१२१
अक्षय—	अक्षय	१२१
मानस—	मानस	१२१
तेजसाक्ष—	तेजसाक्ष	१२१
वैश्वानर—	वैश्वानर	१२१
धर्म—	धर्म	१२१
मन्त्र—	मन्त्र	१२१
पुण्यमन्त्र—	पुण्यमन्त्र	१२१
मन्त्रसिद्धि—	मन्त्रसिद्धि	१२१
वाराहकीर्ति—	वाराहकीर्ति	१२१
योगीन्द्रविरचनी—	योगीन्द्रविरचनी	१२१
१३५—		

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	पार्व्वनायचरित्र	१७६
	वीरचरित्र	६४२
	पोड्याकारण जयमाल	५१७, ५४०
	सबोधपचासिका	१२८
	सिद्धातार्यसार	४६
रामसिंह—	सावयवम्म दोहा ( श्राववाचार )	६७ ६८१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द्र—	रागभ्रासावरी	६४१
लक्ष्मण—	शोभिराहचरित्र	१७१
लक्ष्मीचन्द्र—	ग्राध्यातियवाया	१०३
	उपासकाचार दोहा	५०
	चूनडी	६२८, ६४१
	पत्याणकविधि	६८१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२८५, ६२८
	निर्भर चमीविधानकथा	२४७, ६२८
विजयसिंह—	अजितनायपुराण	१४२
धिमलकीर्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पद्मडी ( कौमुदीमध्यात् )	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयम्भू—	रिट्टुशोभचरित्र	१७७, ६४२
	श्रुतपचमीकथा	६४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीवर—	सुकुमालचरित्र	२०६
हरिश्चन्द्र—	अणस्तमितिसाधि	२४३, ६२८, ६४३

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
<b>संस्कृत भाषा</b>		
अरुलकदेव—	अवलकाष्टक	५७५ ६३७, ७१२
	तत्तार्यराजवात्तिक	३२
	न्यायमुमुदच द्रोदय	१३८
	प्राग्विचिंतनग्रह	७८
अक्षयराम—	शुभोदरपेंतीसी पूजा	६८२, ११७
	प्रतिभामात चतुरर्दशी	
	अतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुगन्धपत्तित्त पूजा	५५५
	मोन्धकाव्य अतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	शान्तिनायचरित्र	१६८
अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरअतोद्यापन पूजा	४६४
	पत्नविधान पूजा	५०७
	प्रमेयरत्नमाला	१
अनन्तयीर्य—	तर्कसग्रह	
अन्नभट्ट—	सारस्वतप्रक्रिया	२६६, ७८
अनुभूतिस्वरूपार्थ—	नयुमारस्वत	२६३
	भगवतीभाराधनाटिका	७६
अपराजितसूरि	कुवलयान्द	३०८
अप्ययडीक्षित—	पक्षसग्रहवृत्ति	३६
अभयचन्द्रगणि—	श्रीरोदानीपूजा	७६३
अभयचन्द्र—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनदि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५
अभयनदि—		

प्र. क्र. नाम	प्र. क्र. नाम	प्र. क्र. सूची की पत्र सं.	प्र. क्र. नाम	प्र. क्र. नाम	प्र. क्र. सूची की पत्र सं.
	बदलवाण पुषा	४८९	अमोक्षकचम्पू—	रवमाधवावत	१७४
	अनुभेवविधि	१११	असुरचम्पू—	उत्पावता	१२
अमस्सोम—	विक्रमवर्तिन	११९		पंचाशतिका	४१
५ अमरेश्व—	विराजवोवीरीचका	२२९		परमात्मज्ञाव टीका	११
	( रोटटीचम्पू )	१४१		प्रवचनहार टीका	१११
	दक्षवज्र पुषा	४८८		पुस्तार्थिकपुषा	१
	द्वयवज्रपुषा १२	१४१		समयवर्तिका	१२
	द्वयवज्र पुषा	४२		अमरहार टीका	१२१
	मुकुटवज्रपीचका	२४४		७१२, ७१४	
	सन्निविचालचका	२११	अरुणमणि—	अशितपुराण	१४२
	सन्निविचाल पुषा	११७	अर्हेश्व—	पंचकलावज्र पुषा	१
	पदवज्रपीचका	१४२	अराग—	अशितकविधि	१४४
	मुठसंविचालचका	१४२	अज्ञेयशक्ति—	आदिनामपुराण	१११
	बोवज्रवज्रपुषा	१४२	आनन्द—	आनन्दक	२१९
		१४२, १४७	आनन्द—	नावनालकमा	१११
			आषा—	शोभावि. पुषा	१११
			आशावर—	अंशुरारोपकविधि	१११, ११
अमरकीर्ति—	विजयवज्रनामटीका	१११			
	महावीरपुषा	७१२			
	समकवज्रपुषा ४११	४२९		अमदारवज्रमुठ	४८
अमरार्ज	अमरकोष	१७२		आटावनालाजुति	१४
	विद्यावज्रसूची	२७		अहोमेश्वटीका	१
अमितिगति—	अमपरीक्षा	१११		अस्मात्तनविराजवोवीरीका	१४१
	अचलवज्र टीका	११		अस्मात्तनवज्रा	१७१
	अचलवज्रविराजिका	१७१		अचलवज्रपुषा	४१७
	( आत्मिक पत्र )	१७		अचलवज्रसूची	४११
	अचलवज्रा	१		अचलवज्रपुषा	७११
	अभाषितवज्रपुषा	१४१		अचलवज्रविराज	४७७
अमोक्षचर्प—	अमोक्षचर्पनामका	१४		अचलवज्रवज्रा	
	अमोक्षवज्रनामका	१७१		( अतिहास )	१११
				४७८ १	१११

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६१,
	५४०, ५६६, ५६६, ६०५,	
	६०७, ६३६, ६४६, ६५५,	
	६८३, ६८६, ६६२, ७१२,	
	७१५, ७२०, ७४०, ७५२	
	धर्माभृतसूक्तिमग्रह	६३
	घञ्जारोपणविधि	४६२
	त्रिपष्टिस्मृति	१४६
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७६१
	भूपालचतुर्विंशतिका	
	टीका	४११
	रत्नत्रयपूजा	५२६
	श्रावकाचार	
	( सागारधर्माभृत )	६३५
	शाक्तिहोमविधान	५४५
	सरस्वतीस्तुति	६४७,
		६५८, ७६१
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६
	स्तवन	६६१
इन्द्रनदि—	अकुरारोपणविधि	४५३
	देवपूजा	४६०
	नीतसार	३२६
उज्ज्वलदत्त ( समहकर्ता )—	उणादिसूत्रमग्रह	२५७
उमास्वामि—	तत्त्वार्थसूत्र	३३, ४२५
	४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६,	
	५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१,	
	६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६	

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०,	
	६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०५,	
	७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८	
	पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	पूजाप्रकरण	५१२
	श्रावकाचार	६०
	प्राथमिकविधि	७४
भ० एकसधि—	राभोकारपैतीसीप्रत	
कनककीर्त्ति—	विधान	४८२, ५१७
	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३६६
कनककुशल—	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
कनकनदि—	कुमारसभवटीका	१६२
कनकसागर—	जिनपजरस्तोत्र	३६०,
कमलप्रभाचार्य—		४३०, ६४६
कमलविजयगणि—	चतुर्विंशति तीर्थकर	
	स्तोत्र	३८८
कालिदास—	कुमारसभव	१६२
	श्रुतुसंहार	१६१
	भेषदूत	१८७
	रघुवश	१६३
	वृत्तरत्नाकर	३१८
	श्रुतबोध	६४८
	शाकुन्तल	३१०
कालिदास—	नलोदयकाव्य	१७५
	श्रु गारतिलक	३५६
काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका	२८३
	श्रीघ्नबोध	२६२, ६०३
काशीराज—	अजीर्णमजरी	२६६
कुमुदचन्द्र—	कल्याणमदिरस्तोत्र	३८५
	४२५, ४२७, ४३०, ४३१,	



ग्रंथनाम	ग्रंथ नाम	मद्य सूची की पत्र सं	मद्यकार का नाम	मद्य नाम	मद्य सूची की पत्र सं०
	२१६, २७२, २७५ २६५		गणपति—	एलबीपत्र	२६
	११६ १११ ११७ १७		गणितेनसुरि—	बदधर्मबहुल्यनृति	११६
		७२४ ७२७	गणेश—	प्रहलादपत्र	२
कुम्भमंत्र—	सातबुल्लव	६७ २७८	गंगाधरि—	रंजीतदास	२ ३
मदुकर—	दुल्ललाकर	११४		बर्नबंशिया	२५
किराण—	बातकम्वति	२५१		पन्नाबेबली	२ १ १४७
	इदोतिवर्गिमाउला	२५२		इलनवीरवा	१८७
करावपित्र—	तर्कवाला	११२		घणुवाली	२६२
करावबर्गि—	कोम्पटकारहति	१	गुणकीर्ति—	नववस्त्राष्टकगुमा	३
	परितबइलुमा	४११	गुणकरु—	वनलपडौडाल	२११
किरावसेन—	एलवगुमा	२२६			२१६ २४
	टोहिक्वीपठगुमा	३११		धनुर्गुणतपनवा	
		२१२ ७१६		नवह	२१६
	बीडलपारलणुमा	२४२	गुणकरुदश—	धनुतबर्नरतनम	४५
		१७१	गुणबंदि—	मृत्तिर्नइणुनइविबल	४११
केम्पट—	मात्रप्रतीन	२१२			२१३ ७६२
कीइमभट्ट—	बीडानरलकुपल	१११		बंइमबनक्यबंशिया	१६८
। गणम	मुनिमुष्णपुल्ल	१११		विबलबीबीतीनवा	१२१
	विजलनक्युरल्ल	११४		तंनवविमटीन	४०६
कुम्भमंत्र—	बाकरीविवा	११	गुणकरु—	घांठमाभारतीव	११८
कुम्भमंत्र—	गणेशबोष	१०४			७११
कुम्भकरुणि—	। सल्लनइइविदिवा	१११	गुणकरुण्य—	वनलपडौडाल	१४२
कुम्भेगुकीर्ति—	नखबननइणुमा	८६		बललपुपात्र	१
कुम्भे—	सम्यकबीगुनीनवा	१२१		बलपुल्ला	१४४
कुम्भे—	बंभोषालगुमा	२ ३		विबलपविप	१६६
	गुनांरनिबनोडाल	१		कणुमादपरिप	१ ३
		२१६		मौनिइडनवा	२१६
	बन	२११		बर्डीबललीन	४१४
	कुम्भेपडिलगुमा	२४६	गुणकरुण्यकार्य—	बाबवाचार	६
		७१७			

ग्रन्थकार क नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२	चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२६०
गुणविनयगणि—	रघुवशाटीका	१६४	चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्पत्त्वकौमुदीकथा		चोखचन्द—	चन्दनपट्टीव्रतपूजा	४७३
गोपालदास—	रूपमञ्जरीनाममाला	२७६	छत्रसेन—	चन्दनपट्टीव्रतकथा	६३१
गोपालभट्ट—	रसमञ्जरीटीका	३५६	जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण—	सौन्दर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६६	जगन्नाथ—	गरामाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमण्डलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३६६
	ऋषिमण्डलस्तोत्र	३८२		सुखनिधान	२०७
	४२४, ६४६, ७३२		जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
घटकपर्पर—	घटकपर्पकाव्य	१६४	जयतिलक—	निजस्मृत	३८
चढ कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
चन्द्रकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितोर्थाकराष्टक	५६४	ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	बिमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६	भ० जिह्वाचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रगोचिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६	जिनचन्द्रसूरि—	दशलक्षगणतोद्यापन	४८६
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६,	ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७
	६४०, ६४६, ६८३, ७१२,			५०३, ५३७	
	७१७, ७२३, ७८७			जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६		ज्येष्ठजिनवरलाहान	७६१
	७१२, ७२०			नेमिनाथपुराण	१८७
चासुण्डराय—		५५		पुष्याजलीव्रतकथा	१२४
	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८		सप्तपिपूजा	५४८
	भावनासारसग्रह	५५, ७७, ६१५		हरिवंशपुराण	१५६
चास्कीर्त्ति—	गोतवीतराग	३८६		सोलहकारणपूजा	७६५
चारित्रभूषण—	महोपालचरित्र	१८६		जलययात्राविधि	६८३
चारित्रसिंह—	कात्त्रविभ्रमसुत्राव-		प० जिनदास—	होलीरेणुकाचरित्र	२११
	चूरि	२५७		श्रुतिमजिनचैत्यालय	
				पूजा	४५३

प्रथम धर का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमधर का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
विश्वमसूरि—	विश्वमेतवसुति	२१७	शयोधर—	कथप्रवचरिच	११२
विश्वदेवसूरि—	मधनपरावच	११७		प्रवचरिच	१
विन्ध्यामसूरि—	बाधुविशतिविनसुति	१ ७		व्यवसायीक	१४१
विन्ध्यामसूरि—	व्यवसायसुति	३ ७	शेखरसूरि—	पत्तनगतसुतवच	१११
विन्धुसेनाचार्य—	भाविपुत्रसु	१४२ १४३	शेषिचतशेखरच—	शयोधरविशारदसुतवच	६१
	प्रवचनसुति	१४२	शुभमणि—	वर्षवचाराचक	१११ ७१०
	विनसुतसुतवचसुतव	१६२		वैकुण्ठसुतवचसु	१२६
		४२२, ४७१ ६४७		श्रीवाचसीर्षकरसुतवच	१ ६
		७ ७ ७२७		शिखिचिचिसुतव	४२६
विन्धुसेनाचार्य—	हरिचक्रसुतवच	१२२		४२२, ४२७ ४२६, ४२६,	
विन्धुसुतवसूरि—	हृत्सीनका	१२६		४७२, ४७२, ४७७, ४७७,	
म विन्धुसुतवसूरि—	विन्धुसुतवच	१४६		१ २, १ ६, ११६,	
म० शाकसीति—	शयोधरचरिच	१६२		६१७ ६४४	
ज्ञानवाचक—	पाशाकेनरी	१७६	शेषसूरि—	शाठिसुतवच	१२६
ज्ञानसूत्र—	व्यवसायसुतवच	१	शेषसेन—	व्यवसायसुतवच	११
	व्यवसायसुतवच	४६१ ६२६	शेषसुतवच—	कथप्रवचरिचसुतवच	७१
	व्यवसायसुतवचसुतवच	१२		कथप्रवचरिचसुतवच	४७४
	व्यवसायसुतवचसुतवच	२		विन्धुसुतवचसुतवच	११ ७२६
	व्यवसायसुतवचसुतवच	११		व्यवसायसुतवचसुतवच	४६६
	व्यवसायसुतवच	२६		व्यवसायसुतवच	४ ४
	व्यवसायसुतवच	४१७		व्यवसायसुतवच	४२६
	व्यवसायसुतवच	४१२		व्यवसायसुतवचसुतवच	७११
		४२२ ४२२		व्यवसायसुतवच	११७ २१२
	व्यवसायसुतवच	१२७		व्यवसायसुतवच	३१६
शेषसुतवच—	व्यवसायसुतवच	१ १		व्यवसायसुतवच	२४१
विन्धुसुतवच—	विन्धुसुतवचसुतवच	४७४		व्यवसायसुतवच	७२६
शुभाचर—	व्यवसायसुतवचसुतवच		शेषसुतवच—	कथप्रवचरिचसुतवच	१२
		४७२	शेषसुतवच—	विन्धुसुतवचसुतवच	१७६
शेषसुतवच शरीरधर—	व्यवसायसुतवचसुतवच	१		व्यवसायसुतवच	१७२, २७४

प्रथम प्रन्वकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथम प्रन्वकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
		६८६, ६९६, ७११, ७१२, ७१३	नरहरिभट्ट—	श्रवणभूपरख	१९६
	विपापहारस्तोत्र	४१५, ४२५ ४२७, ५६५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४९	नरेन्द्रकीर्त्ति—	विद्यमानवीसनीर्थकर	पूजा ५३५ ६५५, ७६३
धर्मकलशसूरि—	सन्देशसमुच्चय	३३८	नरेन्द्रसेन—	पद्मावती पूजा	६५५
धर्मकीर्त्ति—	कौमुदीकथा	२०२		प्रमाणप्रमेयकस्तिका	१३७ ५७५
	पद्मपुराण	१४६		प्रतिष्ठादीपक	५२१
	सहस्रगुणितपूजा	५५२		रत्नत्रय पूजा	५९४
म० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१९		सिद्धान्तसारसग्रह	४७
	गौतमस्व.मीचरित्र	१६३	नागचन्द्रसूरि—	विपापहारस्तोत्रटीका	४१६
	गोमटसारटीका	१०	नागराज—	पिंगलशास्त्र	३११
	सयोगपत्रमीकथा	२५३	नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमञ्जूषिका	२७०
	सहस्रनामपूजा	७४७	न गोजाभट्ट—	परिभाषेन्दुशेखर	२६१
धर्मचन्द्रगणि—	अभिधानरत्नाकर	२७२	नादमल्ल—	वाङ्म० धरसहिताटीका	३०६
धर्मदास—	विदग्धमुखमडन	१९६	नारचन्द्र—	कथारत्नसागर	२२०
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६		ज्योतिषसारसू० टिप्पण	२८३
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५२		नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८५
	न्यायदीपिका	१३५	कविनीलकण्ठ—	नीलकण्ठताजिक	२८१
	शीतलनाथपूजा	५४६		शब्दशोभा	२८१
नदिगुरु—	प्रायश्चित्त समुच्चय		मुनिनेत्रमिह—	सप्तनयाषडबोध	२८१
	चूलिका टीका	७५, ७८०	नेमिचन्द्र—	द्विप्रधानकाव्यक्रीका	२८१
नन्दिदेण—	नन्दीश्वररत्नतोद्यापन	४९४		सुप्रभाताष्टक	६३३
प० नकुल—	अश्वलक्षणा	७८१	ब्र० नेमिदत्त—	श्रीपद्मदानकथा	२१८
	शालिहोत्र	३०६		अष्टकपूजा	५६०
प० नयविलास—	ज्ञानार्णवटीका	१०८		कथाकोश ( आराधना-	
नरपति—	नरपतिजयचर्या	२८५		कथा कोश )	२१९
नरसिंहभट्ट—	जिनशतटीका	३६१		नाग श्री कथा	२३१

ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
कल्पसुधार चरित	१७३	विष्णुपुरा	१३७
कर्पोपदेशमालकाचार	१४	स्तोत्र	१७३
दि कर्मोद्भवकथा	१३१	पद्मनाभ—	नाभनी
वाचराजकथा	१३१	पद्मनाभकास्तव—	कर्मोद्भवचरित
श्रीविष्णुचरित	१२	पद्मप्रमद्वैव—	पद्मनाभस्तोत्र
श्रीपालचरित	९		११४ ७ २ ७२२
सुदर्शनचरित	१५		कर्मोद्भव
पंचावनभद्राचार्य—			४२६ ४३२ १९६ १७२
पद्मनदि I—			१७४ ११९, १४४ १४
			१९३ १९१ ७ ३ १६
पद्मनदि II—		पद्मप्रमद्वैव—	सुदर्शनचरित
पद्मनदिब्रह्मकाथा	३५ ६	परमहंसपरिभाषणाचार्य—	सुदर्शनचरित
पद्मनदिब्रह्मकाथा	३५ ४		शैवसुदर्शन
	११३ ११७ १५	पाणिनी—	पाणिनीमालाकारण
द्वैतचरितोद्भवपुरा	४११	पात्रकेसरी—	पात्रकीर्त्तना
दालपत्रास्तव	६	पारशरवैव—	पद्मनाभकर्मसूत्र
दामरब्रह्मण	११	पुरुपात्तमद्वैव—	पद्मनाभकर्मसूत्र
पद्मनाभस्तोत्र	१९६		विष्णुपद्मवेपाणिनाम
	७४४		द्वैतचरित
दुःख	१६	पुरुषार्थ—	द्वैतचरित (स्वयंपूर्णस्तोत्र)
नरकचरितकल्पपुरा	१३३		१११, ११७
भा. का. ब्रह्मण			परमनामस्तोत्र
( भाष्यचरित ) x १ ११			नाभकाथा
पद्मचरितपुरा	४ ६		ब्रह्मविष्णु
	१७२, १११		कर्मोद्भव
कर्मोद्भव	११		स्तोत्र
कीर्त्तनस्तोत्र	४९४	पूजद्वैव—	कर्मोद्भव चरित
	४३१ १७४ ११४ ७२१	पूजचरित—	वाचराजस्तोत्र
कर्मोद्भव	१११ ७११		

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	पद्मिशातकटिप्पण	३३६
	भुवनेश्वरीस्तोत्र		भट्टशाकर—	वैद्यविनोद	३०५
	( सिद्धमहामय )	३४६	भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१	भट्टोत्पल—	लघुजातक	२६१
	धाराधनासारप्रबंध	२१६		वृहज्जातक	२६१
	आदिपुराणटिप्पण	१४३	भद्रबाहु—	पटप चामिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५		नवग्रहपूजाविधान	४६४
	क्रियाकलापटीका	५३		भद्रबाहुसहिता	२८५
	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		( निमित्तज्ञान )	४८०, ८००
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६		वरागचरित्र	१६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वेराग्यशतक	११७
	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१३८		भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
	रत्नकरण्डध्रुवकाचार- टीका	८२	भाराचद—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१६२	भानुकीर्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३६
	समाधिशतकटीका	१२७		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	स्वयंभूस्तोत्रटीका	४३४	भानुजीदीक्षित—	अमरकोपटीका	२७४
भ० प्रभाचन्द्र—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	४६७	भानुदत्तमिश्र—	रसभजरी	३५६
	मुनिसुव्रतछंद	५५७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	सिद्धचक्रपूजा	५५३	परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती—		
बहुमुनि—	सामायिकपाठ	६४	तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
बालचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२	भारधी—	किराताखुनीय	१६१
भक्षदेव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भावशर्मा—	लघुस्तनपनटीका	५३३
	परब्राह्मणप्रकाशटीका	१११	भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
	क्षमावणीपूजा	५६४	भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११
प्रहसेन—	रत्नत्रयकामहार्थ व क्षमावणी	७८१			

ग्रंथनाम	ग्रंथ मातृ	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथनाम	ग्रंथ मातृ	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
दं मंगल (समह कर्ता) —	बर्मल्लार	११	द्वय व बभ्रुदेवदेव	२००	
महिमूत्र —	क्षेत्रपालपूजा	११	माध —	विभुसम्भर	११
महानकीर्ति —	मर्मतवर्तिका	२१४	माधसंदि —	कमुनिमन्त्रितीर्थकर	
	बोधधररत्नविद्यालय	२१४		कामला १०० ४११	
महामया —	मरतमिनी	१		४१	
मात्रमिध —	भाकराज	२४१	माधिसंभर —	परीक्षामुद्र	१११
मधुसूदनसरस्वती —	विद्याभक्ति	२०	माधिसंभर —	विद्याभक्ति	१११
मनुसिद्ध —	बोधविद्यालय	११	माधिसंभर —	नवीनसंभर	१०४
मनोहरनाम —	मन्त्रबोधिका	१११	माधिसंभर —	विद्योत्तरावृत्ति	१२१
मन्त्रिनाथसूत्र —	रघुवीरवीर	१११	माधिसंभर —	कामलावृत्ति	४
	विभुसंभरवीर	१११	माधिसंभर —	कामलावृत्ति	१११
मन्त्रिसूत्र —	कामलावृत्ति	४०१	मानसु गाथाप —	कामलावृत्ति	४००
मन्त्रिसूत्र —	नारायणवृत्ति	१०१		४११ ४११ ४११ ४११	
	वीरवपदावृत्ति	१४१		४११ ४११ ४११ ४११	
	कामलावृत्ति	४०		४११ ४११ ४०० ४११	
	कामलावृत्ति	४०		४११ ४११ ४०० ४११	
महादेव —	सुहृत्वीर	२१	सुभिसंभर —	विद्योत्तरावृत्ति	४११, ४११
	विद्योत्तरावृत्ति	१	प मेधावी —	कामलावृत्ति	२११
महादेव —	ग्रंथ विद्यालय	१	ध मेरुवृद्ध —	कामलावृत्ति	११
महादेव —	ग्रंथ विद्यालय	२०१	मोहन —	कामलावृत्ति	१००
ध महादेव —	विद्योत्तरावृत्ति	१ २ १२	करा कीर्ति —	कामलावृत्ति	४११
	पद्मवृत्ति	१		कामलावृत्ति	४११
	पद्मवृत्ति	११ १		कामलावृत्ति	४११
महीधर —	पद्मवृत्ति	१११ २००	करा कीर्ति —	कामलावृत्ति	४११
	कामलावृत्ति	२	करा कीर्ति —	कामलावृत्ति	४११
महीमही —	कामलावृत्ति	२१०		कामलावृत्ति	४११
महेश्वर —	विद्योत्तरावृत्ति	२००		कामलावृत्ति	४११

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
यशोविजय—	कलिकुण्डपाश्वर्तनामपूजा	६५८	राजमल्ल—	गव्यात्मकमलमार्त्तण्ड	१०६
योगदेव—	तत्त्वार्थवृत्ति	२२		जम्भूस्वामीचरित्र	१६६
रघुनाथ—	ताम्रनिशिरोमणि	१३३		लाठीसहिता	८४
	रघुनाथविलाम	३१२	राजशेखर—	तूर्णमजरी	३१६
साधुरणमल्ल—	धर्मचक्रपूजा	४६२	राजमिह—	पार्वरमहिम्नस्तोत्र	४०६
रत्नशेखरसूरि—	छन्दोश	३०८	राजसेन—	पार्वनावरस्तोत्र	५६६, ७३७
रत्नकीर्ति—	रत्नशयविधानाव्या	२४२	राजहर्मापाध्याय—	पट्टयाधिकशतकटीका	८४
	रत्नशयविधानपूजा	५३०	मुमुक्षुरामचन्द्र—	पुण्याश्रवकव्यासोप	२३३
रत्नचन्द्र—	जिनगुणगणतिपूजा	४७७, ५१०	रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
	पञ्चमेरुपूजा	५०५	रामराजपेय—	समरसार	२६४
	पुष्पाजलिप्रतपूजा	५०८	रायमल्ल—	शैतोवयमोहनवचन	६६०
	सुभीमचरित्र		रुद्रभट्ट—	वैद्यजीवनटीका	३०४
	( भीमचरित्र ) १८५, २०६			शृङ्गारतिलक	३५६
रत्नसिद्धि—	नन्दीश्वररत्नपूजा	४६२	रोमकाचार्य—	जन्मप्रदीप	२८१
	पत्यविधानपूजा	५०६, ५०६, ५१०	लकानाथ—	श्रृंथप्रकाश	२६६
	-द्रवाहचरित्र	१८३	लक्ष्मण ( अमरमिह्रात्मज )—	लक्ष्मणोत्सव	३०३
	महीपालचरित्र	१८६	लक्ष्मीनाथ—	पिंगलप्रदीप	३११
रत्नपाल—	सालहकारणवधा	६६५	लक्ष्मीसेन—	श्रुतिपेकविधि	४४८
रत्नभूषण—	सिद्धपूजा	५५४		वमचुरप्रतोद्यापनपूजा	४६४
रत्नशेखर—	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८		चिन्तामणि पार्श्वनाथ	
	समवसरणपूजा	५३७		पूजा एव स्तोत्र	४२३
रत्नप्रभसूरि—	प्रमाणयतस्वावलोकना- लकार टीका	१३७		चिन्तामणिलक्षण	७६१
रत्नाकर—	आत्मनिदास्तवन	३८०		सप्तपिपूजा	५४८
रविपेणाचार्य—	पद्मपुराण	१४८	लघुकवि—	सरस्वतास्तवन	४१६
राजकीर्ति—	प्रतिष्ठादर्श	५२०	ललितकीर्ति—	प्रक्षयदशमीकथा	६६५
	पोद्दशकारणप्रतोद्यापन पूजा	५४३		प्रनतप्रतकथा	६४५, ६६५





ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्त्ति—	चन्दनपङ्क्तिप्रतपूजा	५०६		तेरहद्वीपपूजा	४८४
आ० विद्यानन्दि—	अष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	भातपरीक्षा	१२६		पूजाएक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मागीतु गीगिरिमण्डल	
	पचनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमांसा	१३८		शत्रुक्षयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सप्तपिपूजा	५४८
	दलोकवात्तिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
सुमुञ्जुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिन्विस्ताजनम्	२६८		परगवतिकक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरि—	चिन्तामणिपूजा (बृहद्)	४७५		परगवतिकक्षेत्रपूजा	५४१
धिनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
धिनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
धिनयचन्द्र—	द्विसिद्धान्तकाव्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	पचत्तत्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पचाव्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
धिनयरत्न—	विदग्धमुखमण्डनटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ८२५
धिमलकीर्त्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	आचारस्यार	४८
	सुखसप्ततिविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभचरित्र	१८४
धिवेकनदि—	त्रिभंगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
धिशक्ती—	भक्तामरप्रतोद्यापनपूजा	५२३	सुपाचार्य—	उससर्गार्थविवरण	५८
धिश्वभूषण—	मढाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	भाठकोठमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचन्द्रिका	३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	वृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	कलशाविधि	४६६	शकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन	
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिकथा	२४७

प्रथम नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं	प्रथम नाम का नम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं
शकटाचार्य—	दानवचकहटी	१ ८		बलवचरवतयुवा	११
	धरदाबदुदभगतीव	१६२		बन्धनपुत्रिययुवा	४०१
	बोदिनाचट्टक	७३३		बन्धनाचरिय	११४
	बनभवाट्टक	१५६		बनुविद्यतिबिनलय	१५५
	बनभामुतिस्तोत्र	१६		बन्धनचरिय	११६
	हुदिनाचमाला	११७		बादिनपुत्रियिचाम	४७३
शभूमापु—	बिबल्लटीवा	१६		बिद्यानक्षिरावर्षवा	
शभूराव—	बैदिनाचयुवाट्टक	४६६		युवा	१४२
शाक्यापन—	दाहटावन्नभ्यागरण	२६३		बोधवचरिय	१५०
शमित्रदाम—	धर्मतचतुर्वेदीयुवा	४३६		तल्लवर्षाव	१
	गन्धवत	१३७		दीवचपीवीपीयुवा	३१७
शरङ्ग वर—	वर्षावरी	३ २		ठीरुडीयुवा	४५१
	दाह्न वरल्लिया	३ ३		पंचवन्नयुवा	३ ३
वं शास्त्री—	बैदिनाचरतोत्र	३ ६ ७३७		पंचरवेटीयुवा	३ ३
शास्त्रिनाथ—	वल्लवडरी	३ ९		बन्धनरोषावन	३ ३१
शा तिबल्लटि—	वल्लमाला	३		पांडवपुत्रेण	३३
शिवमीमात्र—	धर्मवन्नवार	१७३		मुनाचबिबल्लयुवा	३
	पंचवन्नयुवा	४ ६		भेदिनचरिय	३ ३
	दण्डवन्नयुवा	१३७		धन्वन्नभित्तवन्नव	३३७
	वन्नयुवा	४५		दाह्न वरपीयुवा	
				( धन्वन्नपीयुवा )	४३३
शिवरमा—	दाह्नवन्नयुवा	१३६		मुनाचिदल्लव	३४१
शिवारिय—	वन्नयुवा	१८		विद्यवन्नयुवा	३३३
शुभचण्डाचार्य—	वन्नयुवा	१ ९		विद्यवन्नयुवा	३३३
शुभच ३—II	वन्नयुवा	१३३	शुभचण्डाचार्य—	विद्यवन्नयुवा	३३३
	वन्नयुवा	१३३	शुभचण्डाचार्य—	विद्यवन्नयुवा	३३३
	वन्नयुवा	४६३, ३१७	शुभचण्डाचार्य—	विद्यवन्नयुवा	३३३
		३४३	शुभचण्डाचार्य—	विद्यवन्नयुवा	३३३
		१ ४	शुभचण्डाचार्य—	विद्यवन्नयुवा	३३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४		व्रतकथाकोष	२४१
श्रीनिधिसमुद्र—				पट्टपाहुडटीका	११६
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१		श्रुतस्कधपूजा	५४७
	ज्योतिषयटलमाला	६७२		घोडशाकारणपूजा	५१०
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५		सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७४		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	पाण्डवपुराण	१५०		सुगन्धदशमीकथा	५१४
	भक्तामरजयापनपूजा	५२३, ५४०	सकलकीर्ति—	भट्टाणसाम्यदर्शन	२१५
	हरीवशपुराण	१५७		श्रुपभनायचरित्र	१६०
श्रुतकीर्ति—	पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४		कर्मविपाकटीका	५
श्रुतसागर—	अनन्तव्रतकथा	२१४		तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	भशोकरोहिणीकथा	२१६		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	भाकाशपत्रमीव्रतकथा	२१६		धन्यकुमारचरित्र	१७२
	चन्दनपष्ठिव्रतकथा	२२४		परमात्मराजस्तोत्र	४०३
		५१४, ५१७		पुराणसारसंग्रह	१५१
	जिनसहस्रनामटीका	३६३		प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७			६१
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८		पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७		मल्लिनाथपुराण	१५२
	पत्यविधानव्रतोपाख्यान			मूलाधारप्रदीप	७६
	कथा	२३३		यशोधरचरित्र	०८
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		वर्द्धमानपुराण	११३
	मेघमालाव्रतकथा	५१४		व्रतकथाकोश	२४२
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७		शातिनाथचरित्र	१६८
	यशोधरचरित्र	१६२		श्रीपालचरित्र	२०१
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७		सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	रविव्रतकथा	२३७		सिद्धान्तसारदीपक	४६
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०		सुदर्शनचरित्र	२०८

मंत्राक्षर का नाम	मंत्र नाम	मंत्र सूची की पत्र सं	मंत्राक्षर का नाम	मंत्र नाम	मंत्र सूची की पत्र सं
मुनिसंज्ञाकीर्ति—	मरीचिकारपुत्रा	७६१		मन्त्राक्षरमन्त्राक्षरिणि	
सकलवन्द्यु—	वीरवन्दना	११५		छन्द ११२	
	वर्धनस्तोत्र	२७४	सिद्धिजागाधु म—	मन्त्रुट	२६७
सकलभूपय—	उपवेशरत्नमाता	२	सिद्धिधनविवाकर—	विगतहृत्तमगावतोल	१६२
	बोन्मिदघाटीका	१		मन्त्र मन्त्राक्षरिणि	४१२
सप्तान्तर्गति—	किञ्चलचक्रिकाकुलि	२१६	सुखरेश—	सन्मतिवर्ष	१४
आचार्यसमवेतमन्त्र—	प्रासमीमाहा	१४७	बर्षासुखस्वगर—	शानुत्तमहोमि	२६७
	विनयलक्ष्मणकार	३६१	सुधास्वगर—	सुखलक्ष्मीपुत्रा	११७
	वेदमन्त्रोत्र	१६४		पञ्चमन्त्राक्षरपुत्रा	१
	४२६, ३७२, ७१			२११ २१७	
	कुलपुत्राक्षर	११ ११६	सुन्दरविजयमणि—	परमवतस्थानपुत्रा	३११
	रत्नकरध्वजानाधार	१४७	सुमतिकीर्ति—	श्रीगाम्पा बनीकवा	११२
	१, १६१ १२		सुमतिवन्द्यु—	कर्णकृतिटीका	१
	बृहदारण्यस्तोत्र २७१	१२४	सुमतिवन्द्यु—	अपरिचयुष्टिनिवात	४७३
	धर्मवन्दस्तुति	३७५	सुमतिविजयवधि—	एतुवटीका	१६४
	ब्रह्मनामस्तु	४२	सुमतिस्वगर—	बैशीलवगाएपुत्रा	४२२
	स्वर्णस्तोत्र ४२६, ४११			वधनकाशकपुत्रा	४४६, ३४
	२७४ २६६, ६११			शोडशकारपुत्रा	२१७ ३६७
	७२		सुरेश्वरीर्ति—	मन्त्राक्षरपुत्रा	४२१
समस्तसुन्दरगधि—	एतुवटीका	१६४		मन्त्राक्षरपुत्राका	४१
	बृहत्सालाकरबोटीका	३१४		बैशीलवगधि	३१२
	संस्तुत मन्त्रवन्द	१६७		ब्रह्मवर्षाविजयिण	
समस्तसुन्दरोपाध्यय—	मन्त्रपुत्रा	७		बोटीवापन	४४१
सहस्रकीर्ति—	बैशीलवगाटीका	१२१		(धुलकपुत्रा)	३४७
अभिसारलव—	विश्वोष्मली	१		सन्मतिवन्दपुत्रा	३११
अभिषिक्त—	मन्त्र मन्त्राक्षरपुत्रा	३२१		पञ्चमन्त्राक्षरपुत्रा	४२६
अभिषिक्त—	मन्त्राक्षरपुत्रा	३२१		पञ्चमन्त्राक्षरपुत्रा	३४
	४४६				

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६		छंदोशतक	३०६
	सुखसपत्तिव्रतोद्यापन	५५५		पञ्चमीव्रतोद्यापन	५०४
सुरेश्वराचार्य—	पञ्चिकरणवाक्तिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
सुयशकीर्ति—	पञ्चकल्याणकपूजा	५००		योगचिन्तामणि	३०१
सुलहणकवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४		लघुनाममाला	२७६
द्वैवङ्ग प० सूर्य—	रामकृष्णकाव्य	१६४		लब्धिबिधानपूजा	५३३
श्री० सोमकीर्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१	मङ्गाकविहरिचन्द्र—	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
	सत्यसनधया	२५०		धर्मशर्माभ्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	५४६	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	बडोसिद्धपूजा			योगविदुप्रकरण	११६
	( कर्मदहनपूजा )	६३६		पट्टदर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६	हरिरामदास—	पिंगलछन्दशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यामृत	३३०	हरिपेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६
	यशस्तिलकचम्पू	१८७		कथाकोश	५१४
सोमदेव—	सूतक वर्णन			कथाकोश	२१६
सोमप्रभाचार्य—	मुवतावल्लिखतकथा	२३६	हेमचन्द्राचार्य—	श्रमिधानचिन्तामणि	
	सिन्दूरप्रकरण	३६०		नाममाला	२७१
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५		शनेवार्थसंग्रह	२७१
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८		अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वारि-	
	दशलक्षणजयमाल	७६५		शिका	५७३
	पद्मपुराण	१४८		छदानुशासनवृत्ति	३०६
	मेरूपूजा	७६५		द्वाश्रयकाव्य	१७१
	विवाहपद्धति	५३६		घातुपाठ	१०
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२		नेमिनाथचरित्र	१७७
हयभीष—	प्रश्नसार	२८८		योगशास्त्र	११६
हर्ष—	नैपथ्यचरित्र	१७७		निगानुशासन	२७७
हर्षकल्याण—	पञ्चमीव्रतोद्यापन	५३६		चीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
हर्षकीर्ति—	अनेकार्थशतक	२७१		चीरद्वारिशक्ति	१३८
				शब्दानुशासन	२६४

प्रथम अक्षर का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं.	मन्त्रकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं.
	राजमुखात्मकवृत्ति	११४	आर्यवृ—	शुक्रिचरितोपैकरत्तवद	
	ह्रीन्म्याकरल	१७			४१
	ह्रीन्म्याकरलवृत्ति	२		तपामुवीरवमज	४१२
				पर	७७७
			आनन्द—	कोकसार	१२१
			आनन्दपत्र—	पर	७१
			आनन्दसूत्रि—	श्रीश्रीशिवनादादिना	
				स्वयम्	१११
				नेतिपत्रवृत्तवाद्युक्त्या	११
				शानुर्वरवा	११७
			साह्याह—	हारवापुत्रेना	१ १ १११
			आर्यमह—	युवाष्टक	१११
			आसकरवृ—	व्यपिचकाव	११
			इन्द्रवीर—	रश्मिपिया	१७२, ७४१
			इन्द्रवीर—	मुनिगुणगुणल	१२१
			कठमर्षह—	पर	४०२
			कृष्णभासु—	शोकराशो	७१७
			कृष्णराम—	पर	७७६, ७१५
			कृष्णशाल—	वाचवतापरिव	११५
				श्रीश्रीरत्नचन्द्रमाल्या	१२१
				नाममुखापरिव	१७१
			अथमहास—	बुद्धाचारवन्तार	१११, ११
				लनकृष्ण	७१
			अथमहरी—	पर	१७१
			कनकश्रीपि—	परिवानपेविमती	१११
				विमलपत्र	७७१
				तपार्णमुखादीना	१ ७११
				पर	१ १
				परार्णवापरीवादी	१११
				वाद्यमुखा	७२२

### हिन्दी भाषा

अहमद—	श्रीमवतीश्री	७२
अक्षयराज—	श्रीवृद्धगणेशानवर्षा	११
	मछमरवाला	७२२
अक्षयराम—	पर	२५२, २७२
अक्षयदास—	दमित	७४५ ७६
	मु शक्तिवा	१२
अक्षयश्रीपि—	मनोरथमाला	७१४
	विद्याभारतस्तोत्रमाला	४११
	१२, १	४ १२४
	मदनवन्तारल	१७७
अक्षयराज—	वाटमिर्षोकीरवा	१२२
	पर	२७१ १२७
		७२४ १ २ १
	विमती	७७१ १
	वैद्यपुत्रा	७ १
	ईशितकपाल	७
	पर	२ २
	पुत्रावली	१२१
	शुभाष्टक	१११
	विद्यवासीश्रीश्रीश्री	१४
	वंशानुसारवन्तवन्त	१११
	पर	१ १
	वाद्यमुखा	७२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१		रात्रिभोजनकथा	२३८
	पद	६६४, ७०२	कुशलचन्द्र—	नेमिनाथपूजा	७६३
		७२४, ७७४	कुशललाभगणि—	ढोलामारुवरणीचौपई	२२५
	विनती	६२१	कुशल विजय—	विनती	७८०
	स्तुति	६०१, ६५०	केशरगुलाव—	पद	४४५
कनकमोम—	श्राद्धकुमारधमाल	६१७	केशरीसिंह—	सम्मदेशिखगविलास	६२
	श्रापाढूमूतिचौढालिया	६१७		वर्द्धमानपुराण	१५४
	मेघकुमारचौढालिया	६१७		कलियुगकीकथा	६२२
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०	केशव—	सदयवच्छसार्चालिगा	
कपात—	मोरपिच्छधारीकृष्ण			की चौपई	२५४
	के कवित्त	६७३	केशवदास—।	वैद्यमनोत्सव	६४६
ब्र कपूरचन्द्र—	पद	४४५	केशवदास—।।	कवित्त	६४३, ७७०
		५७०, ६२४		कविप्रिया	१६१
कवीर—	दोहा	७६०, ७८१		नखसिखवर्णन	७७२
	पद	७७७, ७६३		रसिकाप्रिया	७७१, ७६६
	सखी	७२३		रामचन्द्रिका	१६४
कमलकलश—	वभरणवाडीस्तवन	६१६	केशवसेन—	पंचमीश्रतोद्यापन	६३८
कमलकीर्ति—	श्रादिजिनवरस्तुति		कौरपाल—	चौरासीबोल	७०१
	( गुजराती )	४३६	कृपाराम—	ज्योतिपसारभाषा	२८५
कर्मचन्द्र—	पद	५८७		रत्नावलीव्रतविधान	१२१
करुणायकीर्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७	कृष्णदास—	सतसईटीका	३२७
किशन—	छहढाला	६७४,	कृष्णाराय—	प्रद्युम्नरास	७२२
किशनगुलाव—	पद	५८४, ६१४, ६६६	खजमल—	सतियों की सज्भाप	४५१
किशनदास—	पद	६४६	खड्ग सेन—	त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
किशनलाल—	कृष्णवालविलास	४३७		६८६, ६६०,	
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३	खानचन्द्र—	परमात्मप्रकाशवालाव	
	पद	५६०, ७०४		चौघटीका	१११



मंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०	मंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०
मुद्रात्रयम्—	अनन्तरिका ११४		१४ १ २, ११४
	आचार्यचरित्रिका १४२		११४ ११ ७०१
	आदिपत्रिका		७२१ ७१
	( अविचारिका) ७०३	लेखसिद्ध—	केदारकर का भाष्यमाला
	आर्यसिद्धी ७०७		७११
	अनन्तरिका १४२		केदारकरराहुनवीरसिद्धि
	अनन्तरिका १४४		७०३
	१४४ १४६		केलिकर्मदण्डनी ११
	अनन्तरिका १४४	श्लोकम्—	कीर्तिविवरणम् ४१७
	अनन्तरिका १४४		१४ १ १ १
	अनन्तरिका १७३ ७२६		४११ १४१
	अनन्तरिका १४४ ७३१	गङ्गा—	पद्यसङ्घ ७१
	अनन्तरिका १४१	गंगादास—	रत्नसुन्दर
	अनन्तरिका २१३		राजसभासदन २७१
	अनन्तरिका २१४	गंगादास—	आदिपुराणविकी ७१
	१४ ७३१		अद्वैतशास्त्रिका ७११
	अनन्तरिका १११		अनन्तरिका ७१
	अनन्तरिका २४४	गणराज—	विष्णुवन्दनीकीर्ति ७३१
	अनन्तरिका ११		१४ ११४
	अनन्तरिका १४२	गणराज—	अनन्तरिकाकीर्ति ४१
	अनन्तरिका १११	गणराज—	अनन्तरिका १११
	अनन्तरिका १४४	गिरधर—	अद्वैत ७३१ ७१
	अनन्तरिका १११ ७३१	गुणकीर्ति—	अनन्तरिका ११
	अनन्तरिका १४४		कीर्तिविवरणम् ११
	अनन्तरिका १११	गुणकीर्ति—	कीर्तिविवरणम् ११
	अनन्तरिका १४४		कीर्तिविवरणम् ११
	अनन्तरिका १४४	गुणकीर्ति—	आदिपत्रिका ७३१
	अनन्तरिका १४४		१४ १ १ १ १ १ १
	अनन्तरिका १४४		१४
	अनन्तरिका १४४	गुणकीर्ति—	अनन्तरिका १४१

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७६८
गुणप्रभसूरी—	नवकारसज्जमाय	६१८
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	४४०
	शातिनाथस्तवन	७०२
गुमानीराम—	पद	६६६
गुलाबचन्द—	कक्का	६४३
गुलाबराय—	बडाकक्का	६८५
ग्रह गुलाल—	कक्कावत्तीसी	६७६
	कवित्त	६७०, ६८२
	गुलालपच्चीसी	७१४
	त्रैपनक्रिया	७४०
	द्वितीयसमोसरण	५६६
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलव्याहलो	२३२
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७
गोविन्द—	बारहमासा	६६६
घनश्याम—	पद	६२३
घासी—	मित्रविलास	३३४
चन्द—	चतुर्विंशतितोर्थकरस्तुति	६८५
		७२०
	पद	५८७, ७६३
	गुणस्थानचर्चा	८
चन्द्रकीर्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५६४
चन्द्रमान—	पद	५६१
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासंग्रह	२२८
चम्पावाई—	चम्पाशतक	४३७
चम्पाराम—	धर्मप्रदनोत्तरश्रावका	
	चार	६१
	भद्रवाहचरित्र	१८३

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
चतर—	चन्दनमलयागिरिकथा	२२३
चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	मधुमालतीकथा	२३५
चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
चिमना—	भारतीयचपरमेष्ठी	७६१
चैनविजय—	पद	५८८, ७६८
चैनसुखलुहाडिया—	मकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५२
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०
		५५२
	पद	४४६, ७६८
	श्रीपतिस्तोत्र	४१८
छत्रपतिजैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	मनमोदनपचशतीभाषा	३३४
छाजू—	पार्श्वजिनगीत	४ ८
छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५,
		६८५
छीहल—	पंचेन्द्रयवेलि	६३८
	पद्योगीत	७६५
	पद	७२३
	वैराग्यगीत (उदरगान)	६३७
छोटोलालजैसवाल—	तत्त्वार्थसारभाषा	०
छोटोलालभित्तल—	पचकल्याणकपूजा	०
जगजीधन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	०
जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२
		५८४, ६१५, ६६७,
		६६६, ७२४, ७५७,
		७८३, ७६८, ७६६



ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	वीसतीर्थकरस्तुति	७००		धर्मपत्रविशतिका	६१
	शालिभद्रचौपई	७००		निजामरिण	६५
जिनचन्द्रसूरि—	कवयन्नाचौपई	२२१		मिच्छादुक्कड	६८६
	क्षमावतीसी	५४		रैदन्नतकथा	२४६
जिनदत्तसूरि—	गुरुपारतत्रएवसप्तस्मरण	६१६		समकित्तविरणवोधर्म	७०१
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६		सुकुमान्स्वामीरास	३६६
प० जिनदास—	चेतनगीत	७६२		सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७
	धर्मतरुगीत	७६२	जिनरगसूरि—	कुशलगुरुस्तवन	७७६
	पद ५८१, ५८८, ६६८		जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास	३६२
	७६४, ७७२, ७७४		जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन	६१८
	भाराधनासार	७५७	जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
	मुनीश्वरोंकीजयमाल	५७१	जिनहर्ष—	धग्धरनिसाणी	३८७, ७३४
	५७६, ६२२, ६५८			उपदेशछत्तीसी	३२४
	६८३, ७५०, ७६१			पद	५६०
	राजुलसज्जाम	७५०		नेमिराजुलगीत	६१८
	विनती	७७५		पार्श्वनाथकीनिशानी	४४८
	विवेकजकडी	७२२, ७५०	जिनहर्षगणि—	श्रीपालरास	३६५
	सरस्वतीजयमाल	६५८	जिनेन्द्रभूपण—	वारहसीचौतीसन्नतकथा	७६५
		७७८,	जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वरविधान	४६४
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१	जीवणदास—	पद	४४५
		६०३, ६२२, ६३६	जीवणराम—	पद	५८०
		६५२, ७०३, ७१२	जीवराम—	पद	५६० ७९१
		७२३	जैतराम—	जीवजीतसहार	७७१
	मालीरासो	५७६	जैतश्री—	रागमालाके दोहे	७८०
जिनदासगोधा—	सुगुरुशतक	३४० ४४७	जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
प्र० जिनदास—	मठावीसमूलगुणरास	७०७	जोधराजगोदीका—	चौभाराधनाउद्योतकथा	२२५
	अनन्तव्रतरास—	५६०		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	चौरासीन्यातिमाला	७६५		जिनस्तुति	७७५
				धर्मसरोवर	६३

संस्कार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	संस्कार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
	भैरवविमलचरन	११८		सोमहृत्वात्तारावा	४
	अथब्रह्मसंहार	११४	सोमभूताम—	४२	४४२
	श्रीनिवासरचरित	१०३	टीकमर्षद्—	अतुर्वीरगा	४२४ ४३३
	भारतीराज	७७		ब्रह्मसंहार	११८
	शारदाशुद्धिवा	१४		श्रीरामजीजीपुति	११६
	सम्बलपत्रीपुत्रीवा	२२३		पुति	११६
		१ १	टीकासम—	४२	४ ३
	सकलसंग्रह	७२	टीकमर्षद्—	वर्षसंग्रह	४२२ २१५
	४२ ४२२, ११४ १२६				४१९
	७ २ ७६८			दीनजीसंग्रह	४०३
श्रीहरीशानविज्ञावा—	विद्यमानश्रीश्रीशिव			श्रीशिवसंग्रहाविषय	४२४
	पुत्र	२३२			२१८
	शान्तिवचनसंग्रह	२१६		शिवसंग्रहसंग्रह	२ १
ज्ञानमर्षद्—	संस्कृतविद्यासंग्रह	२३८		शिवसंग्रहेष्टीपुत्र	२ १ ३१
ज्ञानभूता—	सद्यपिबिम्बिपुत्र	४२४		शिवसंग्रहसंग्रह	२ २
	शान्तिवचनसंग्रह	२६		पुष्पापत्रवचनसंग्रह	२१८
	शिवसंग्रहसंग्रह	२१२		सम्बलपत्रीसंग्रह	२११
	श्रीशिवसंग्रह	१२		सुरसिद्धिद्वितीयवा	६०
ज्ञानमर्षद्—	सम्बलपत्रीसंग्रह	२ ४	शिवसंग्रह—	सोमहृत्वात्तारासंग्रहविषय	३२६
	सद्यपिबिम्बिपुत्र	७८		४२ २०२ ११४ १११	
	शान्तिवचनसंग्रह	७ ७		७६७ ७३६ ७३	
	शिवसंग्रह	२३	शिवसंग्रहसंग्रह—	सम्बलपत्रीसंग्रह	१ १
	सम्बलपत्रीसंग्रह	७२४		शान्तिवचनसंग्रह	७
	श्रीशिवसंग्रहविषय	६१३		शिवसंग्रहसंग्रहसंग्रह	४३
	सद्यपिबिम्बिपुत्र	१ ४		शिवसंग्रहसंग्रहसंग्रह	१
	सम्बलपत्री	१ ४		शिवसंग्रहसंग्रहसंग्रह	११
	सम्बलपत्री	७८		शिवसंग्रहसंग्रहसंग्रह	११
	सद्यपिबिम्बिपुत्र	१८६		शिवसंग्रहसंग्रहसंग्रह	१११

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धघुपायभाषा	६६	थानजीश्रजमेरा—	वीसतीर्थकरपूजा	५२३
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०	थिरूमल—	हृवणभारती	७७८
	लब्धिसारभाषा	४३	दत्तलाल—	वारहृखडी	७४५
	लब्धिसारक्षणसासार	४३	ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
	लब्धिसारसदृष्टि	४३	दयालराम—	जकडी	७४६
ठक्कुसी—	कृपणछद	६३८	वरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	नेमीश्वरकीबेलि			पद	७४६
	( नेमीश्वरकवित्त )	७२२	दत्तजी—	वारहभावना	५७१
	पचेन्द्रियबेलि	७०३	दलाराम—	पद	६२०
		७२२, ७६५	दशरथनिगोस्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
कविठाकुर—	रामोकारपञ्चवीसी	४३६	दास—	पद	७४६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४	मुनिदीप—	विद्यमानवीसतीर्थकर	
डालाराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५		पूजा	४१५
	चतुर्दशीकथा	७४२	दीपचन्द—	अभुभवप्रकाश	४८
	द्वन्द्वशायापूजा	४६१		भात्मावलोकन	१००
	पंचपरमेष्ठीग्रुणवर्णन	६६		चिद्धिलास	१०५
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३		भारती	७७७
	पञ्चमेरुपूजा	५०५		ज्ञानदर्पण	१०५
डू गरकवि—	होलिकाचौपई	२५५		परमात्मपुराण	११०
डू गात्रैद—	श्रेणिकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्री रुक्मणिक्कण्णजी		दुलीचद—	भाराधनासारवचनिका	१०
	को रासो	७७०		उपदेशरत्नमाला	११
तिलोकचद—	सामायिकपाठभाषा	६६		जैनसदाचारमार्तण्ड	
तुलसीदास—	कवित्तवधरामचरित्र	६६७		नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२		जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
तेजरास—	तीर्थमालास्तवन	६१७		द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
		६७३		निर्माल्यदोषवर्णन	६५
त्रिभुवनचद—	अनित्यपचासिका	७५५		पद	६६३
	पद	७१५			

प्रथम अक्षर का नाम	प्रथम अक्षर	प्रथम सूची की पंक्ति	प्रथम अक्षर का नाम	प्रथम अक्षर	प्रथम सूची की पंक्ति
	इन्द्रगणेश	१२२		बंशुप्रीवाराणा	४२४
	बागिपुत्रावाराणा	७२	श्रीरामायण—	द्वाराणा	१० ७१६
	मुनिवाराणा	१४४			७ ७
देवपुत्र—	मुनिवाराणा	१		विनायक	७ ७
देवपुत्र—	पुत्रवाराणा	७२		पुत्र	४२६ १२४
	नारायण	७२		बाहुवाराणा	११६, १७२
देवपुत्र—	पुत्र	११४	श्रीरामायणपानी—	व्यक्तिवाराणा	७१६
देवपुत्र—	पुत्र	१ ६	श्रीरामायण—	व्यक्तिवाराणा	१४४
पुत्रवाराणा	व्यक्तिवाराणा	१ १		व्यक्तिवाराणा	११
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	१ २			४२६ ४४४
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	११२, १४२			४१६ १७२
	व्यक्तिवाराणा	४१		व्यक्तिवाराणा	१६
	पुत्र ४२६ ७१६ ७५२			व्यक्तिवाराणा	११६
	व्यक्तिवाराणा ४२६ ११२ ७			पुत्रवाराणा	११६
	व्यक्तिवाराणा	१२६		व्यक्तिवाराणा	७१६
	व्यक्तिवाराणा	४२		व्यक्तिवाराणा	११७
	व्यक्तिवाराणा	२१	श्रीरामायणपानी—	व्यक्तिवाराणा	४१६
	व्यक्तिवाराणा	१४४	व्यक्तिवाराणा—	व्यक्तिवाराणा	७ १, ४१
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	७ ४		व्यक्तिवाराणा	१७६
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	१७६		व्यक्तिवाराणा	४१
	व्यक्तिवाराणा	७२७		व्यक्तिवाराणा	११६ ११६
	पुत्र	१४६			७७
	व्यक्तिवाराणा ११६ ११६	१२		व्यक्तिवाराणा	११६, ७७
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	४१		व्यक्तिवाराणा	१४ ११४
देवपुत्र—	व्यक्तिवाराणा	११६			७४
देवपुत्र—	पुत्र	१ ७		व्यक्तिवाराणा	७ ४
	व्यक्तिवाराणा	७ ७		व्यक्तिवाराणा	११६, ११६

प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७		सबोधप्रसरवावनी	११६
	गुरुमष्टक	७७७		समाधिमरणभाषा	१२६
	जगदी	६४३		सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	तत्त्वसारभाषा	७४७		स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	४२६
	दशबोलपञ्चीसी	४४८		भाद्रपदपूजा	५२४
	दशालदारणपूजा	५१६, ७०५	द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
	दानवावनी	६०५, ६८६	धनराज—	तीनर्मियाकीजगदी	६२३
	द्यानतविलास	३२८		पद	७६८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२		दिखरविलासभाषा	७६३
	धर्मविलास	३२८	धर्मचन्द्र—	प्रनन्तकेछप्पय	७५७
	धर्मपञ्चीमी	७१०, ७४७	धर्मदास—	भोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
	पञ्चमेरुपूजा	५०५, ७०५		पद	५८८, ७६८
	पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६६ ६१५, ४०६	धर्मपाल—	प्रजनाकोरास	५६३
	पदसंग्रह	४४५, ५८३ ५८४, ५८५, ५८६ ५८८, ५८९, ५९० ६२२, ६२४, ६४३ ६४६, ६५४, ७०४ ७४६, ७८७	धर्मभूषण—	दानशीलतपभावना	६०
	भावनास्तोत्र	६१४	धर्मसी—	भाषामुषण	६६८
	रत्नत्रयपूजा	५२६, ७०५	धीरजसिंहराठौड—	प्रनेकार्थनाममाला	७०६
	वाणीमष्टभजयमाल	७७७	नन्ददास—	प्रनेकार्थमजरी	२७१, ७६६
	पोढाकारणपूजा	५११ ५१६, ५५६, ७०५		पद	५८७, ७०४ ७७०
	संघपञ्चीसी	३७५		नाममजरी	६६७, ७०२
	सबोधपञ्चासिका	१२८ ६०५, ६४८, ६८५, ६६३ ७१३, ७१६, ७२५	नन्दराम—	मानमजरो	२७०
				विरहमजरी	६५७, ७१६
				श्यामवत्तीसी	६८३
				योगसारभाषा	११६
				कमकावत्तीसी	७३२
			वैद्यनन्दलाल—	प्रश्नावलिकवित्त	७८२
			नखरूकवि—	रसालकुर वरकीचौपई	५७७



ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	
मयमहाविद्यालया—	अष्टाङ्गिचक्रम्	१११	माधुरामदोसी—	१११	१११ ११२ ११३ ११४	
	वीरविरचरित	१७				१ ७२५
	वर्षागद्यारम्भ	१११		माधुरामदोसी	११३	
	वदयप्रथमकण्ठवाचा	१११			४२६, ४०१	
	बहीबालचरित	१५६		महाबलचरित	१ १	
	अन्तर्गतस्वीकृतम्			विद्यापदुष्क	११५	
	वाचा ११४ ७२			तत्कालिकवचनम्	१२१	
	एकवचनभाष्यकाव्य			कैलाशनीचरित	७२७	
	वाचा १			पर	१११	
	एकवचनव्यङ्ग्यकाव्य	२२५		वार्त्तनात्मकवचन	१२२	
वीरवचनकाव्य		मयमहाविद्यालयीय	११			
मयमहाविद्यालय	५५	गीत	१११			
विद्यापदकाव्य	४७	मधुरामदोसीचरित	११६			
विद्यापदिकाव्य	४२१	काव्यसार	१ १			
मयमहाविद्यालय—	५५	१ १	विद्यापदकाव्य	१११		
मयमहाविद्यालय—	वीरवचनकाव्य	१ ४ १ १	एकवचनकाव्य	११७		
	१११, ७१	१४	एकवचनकाव्य	११		
मयमहाविद्यालय—	पर	४४२, २ १	माधुरामदोसी—	मधुरामदोसीचरित	१ ७	
	मयमहाविद्यालय	४२	मानिसारम्भ—	वैद्यार्त्त	१११	
मयमहाविद्यालय—	पर	२	विद्यापद—	पर	२५१	
मयमहाविद्यालय—	काव्यवचनकी	११२	विद्यापदकाव्यकाव्य—	मयमहाविद्यालयकी		
	एकवचनकाव्य की विद्यापद			टीका	११४	
	के वाग	११२	मेरीचकम्—	मयमहाविद्यालयकी	११२	
मयमहाविद्यालय—	द्वितीयवीरवचनी	७ ४		टीकाकाव्य	४५१	
	विद्यापदी	१११, १७०		वीरवचनीचरित		
		१७२, १११ ७२२		वाचा	७७१	
	पर	४२२, १५२		पर	१ ११२	
	४२२, ११	११२, १४५		वीरवचनकाव्य	७७२	

ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१		जीवधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकोस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
नेमीचंद्रपाटनी—	चतुर्विंशतितोर्थकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	तीनचौबीसीपूजा	४८२		धर्मप्रदीपभाषा	६१
नेमीचंद्रदख्खी—	सरस्वतीपूजा	५५१		न दीश्वरभक्तिभाषा	४६४
नेमीदास—	निर्वाणमोदकनिर्णय	६५		नवतत्त्ववचनिका	३८
न्यामतसिंह—	पद	७६५		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भविष्यदत्तदत्ततिलका—			पादवपुराण	१५०
	सुन्दरीनाटक	३१७		प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	
	पद	७६५		भाषा	७०
पद्मभगत— [	कृष्णरूक्मिणीमंगल	२२१		भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५
पद्मकुमार—	श्रातमशिक्षासङ्ग्राह	६१६		भक्तिपाठ	४४६
पद्मतिलक—	पद	५८३		भविष्यदत्तचरित्र	१८४
पद्मनदि—	देवतास्तुति	३६४		भूपालचौबीसीभाषा	४१२
	पद	६४३		भरकतविलास	७८
	परमात्मराजस्तवन	४०२		योगसारभाषा	११६
पद्मराजगण्ण—	नवकारसङ्ग्राह	६१८		यशोधरचरित्र	१६२
पद्माकर—	कवित्त	७५६		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३
चौधरीपद्मालालसधी—	श्राचारसारभाषा	४६		वसुन्दित्र्यावकाचारभाषा	८५
	श्राधनासारभाषा	४६		विद्यापहारस्तोत्रभाषा	
	उत्तरपुराणभाषा	१४६		पट्टश्रावण्यकविधान	
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३		श्रावण्यप्रतिक्रमणभाषा	८६
	कल्पाणमदिरस्तोत्रभाषा	३८५		सङ्गापितावलीभाषा	३३८
	गीतमस्वामीचरित्र	१६३		समाधिभरणभाषा	१२७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६		सरस्वतीपूजा	५५१
	जिनदत्तचरित्र	१७०		सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

श्रेष्ठ नाम	श्रेष्ठ सूची की पत्र सं०	मन्वन्तर का नाम	श्रेष्ठ नाम	श्रेष्ठ सूची की पत्र सं०
पद्मसुन्दरीबाबो—	दुपयितामनीबाबा ३४४	मनुदास—	पद्मसुन्दरीबाबा ७१२	
	पद्मसुन्दरीबाबा २ १	मल्लिकार्जुन—	पद्मसुन्दरीबाबा ११६	
	विदुष्यतवीरबाबा ४९	पद्मसुन्दरी—	१४ ३०६, ३५ ३५१	
	कामधरबाबा ५		३५२, ३५३	
पद्मसुन्दरीबाबा—	बाबापद्मसुन्दरी १२१	श्रीश्री—	मूलसुन्दरी ७७७	
नरनाथ—	१४ १५४ ७७	श्रीश्रीदास—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ७५१	
परिमल—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १ १ ७७३	श्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ७११	
पद्मसुन्दरी—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ३९			
	कामधरबाबा १२९	पद्मसुन्दरी—	१४ ३५३ ३५६ ११५	
पद्मसुन्दरीश्रीश्रीश्री—	बाबासुन्दरीश्रीश्रीश्रीश्री ११७		७५१ ७५६	
	श्रीश्रीश्रीश्री ४२९		श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ७५	
पद्मसुन्दरी—	१४ १२४	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री १७१	
नरनाथ—	बाबाश्रीश्री ३३२		बाबासुन्दरीश्रीश्रीश्रीश्री ११७	
पद्मसुन्दरी—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ७७५	श्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ११६	
पद्मसुन्दरी—	श्रीश्रीश्रीश्री ४२९	नरनाथश्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ३६	
पद्मसुन्दरीश्रीश्री—	श्रीश्री १५७			
	१४ ७५३			
श्रीश्री—	१४ ७५३			
	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १११ ७१२			
	७५३ ७५ ७१४			
	७७३			
	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ७७३			
श्रीश्रीश्री—	१४ १११			
श्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १४			
श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ११४			
	१२१ ७०			
श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री—	श्रीश्रीश्रीश्री ११६			
	श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ११३			

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानवावनी	१०५, ७५०	वलदेव—	पद	७६८
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०	वाबूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूजा	५३६
	नवरत्नकवित्त	७४३,	बालचन्द्र—	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०६	विहारीदास—	भारती	७७७
	पद	५८२, ५८३		कवित्त	७७०
		५८५, ५८६, ५८६,		पद	५८७
		५६०, ६१५, ६२१		पद्यसंग्रह	७१०
		६२२, ६२३ ६६७		वदनाजकडी	४४६, ७२७
	पार्श्वनाथस्तुति	७२३	विहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
	परमज्योतिस्तोत्रभाषा	४०२			६८८, ७२७, ७६८
		५६०	बुधरान—	इच्छतीसी	६६१
	परमानन्दस्तोत्रभाषा	५६२		छहठाला	५७
	वनारसीविलास	६४०		तत्त्वार्थबोध	२१
		६८६, ७०६		दर्शनपाठ	४३६
	मोहविवेकयुद्ध	७१४, ७६४		परुचास्तिकायभाषा	४१
	मीक्षणी	८०, ७१६		पद	४४५, ४४६, ५७१
		७४६			६४८, ६५३, ६५४
	धारदाष्क	७७६			७८५, ७६८
	समयसारनाटक	१२३, ६०४		वदनाजकडी	४४६
		६३६, ६४०, ६५७		बुधजनविलास	३३०
		६०, ६८३, ६८८		बुधजनसतसई	३३२, ३३३
		६८६, ६६४ ६६८		योगमारभाषा	१३
		७०२, ७१६, ७२०		पटपाठ	
		७२१, ७३१, ७५६		सबोधपचसिवाभा	
		७७८, ७८७		सरस्वतीपूजा	
	साधुवदना	६१०, ६५२	बुधमहाचन्द्र—	स्तुति	७०४
		७१६	बुलाकीदास—	सामायिकपाठभाषा	६५
	सिन्धुप्रकरण	३४०, ७१०		णष्टवपुराण	१५०, ७१५
		७१२ ७४६		प्रद्वीतरभ्रात्रकाचार	७०
			दूचराज—	टटाणगीत	७२२, ७५०

प्रकाशक का नाम	पृष्ठ नाम	पृष्ठ सूची की पत्र सं.	प्रकाशक का नाम	पृष्ठ नाम	पृष्ठ सूची की पत्र सं.
	बुधवर्ष तिथी	१११		पत्र	१०
भगवतराम—	पत्र	७६		नेयीरबरोरक	११
भैयाभगवती दास—	प्रकाशक ४६ बी०		भागवत—	प्रादेशिकप्रकाशक	
	वर्षान्त	१		पाना	११
	पट्टिपत्रवैद्यप्रकाश			सज्जुप्रैरिक्काप्रकाश	११७
	बनमाल ११४ ७२			मैमिनाथपुराण	१४१
	बैठनवर्षपरिम	७४		ब्रह्मसूत्रटीकाभाषा	११७
	१११ १ २ १७६			पत्र ४४३ ४४१ ३७०	
	परिचयप्रदीप	१७२		भाष्यकारकाव्या	६१
	निर्वासिकाप्रकाश	११६		सन्देशिकापुस्तक	१३
	४२६, ३९९ ३९३,		भागीरथ—	गोलाबिंदुपत्रिका	६
	३७ १२ ३६९			बीचकाव्याकरण	११६
	१ ६ ३, ११४		मासुकीर्ति—	पत्र ३८१ ३ ३, ११३	
	११ १४३ १२१			द्विद्वतव्या	७२
	११३ ७ ४ ७१			वर्षपरिचय	७६६
	ब्रह्मविद्या	१११	मारामरुण—	वर्षपरिचय	१९
	बादकाव्या	७२		वर्षपरिचय	१०
	वैश्यावर्षिका	१७३		व्यासव्या	११
	पीपलकीपीपलुति	१४३		बुद्धाभिनव्या	७२४
	सप्तवर्षिका	६		द्विचोदयव्या	११७
भगौठीदास—	वीरविक्रमवर्षिका	३६६		वीरव्या	१४७
भक्तदास—	प्रा प्रातिपदपुस्तक	४६१		व्यासव्यासव्या	१३
	७ १			नरिचिदामनीरई	७०१
भगोदास—	पत्र	३ १	धीपत्रकवि—	मैमिनाथपुराण	११
भक्तान्न—	बनमालवर्षिका	११३	मुक्तकीर्ति—	ब्रह्मसूत्रपुराण	१११
भाद्र—	परिचयकारकाव्या		मुक्तसूत्र—	गोलाबिंदुपत्रिका	११
	( परिचयव्या ) ११ १४४			४२६ ४४७ १२१	
	१ १ ६ ३, ४			१६३ १९ ७१	
	७४३ ७२१ ७१२				

ग्रथकार का नाम	ग्रथ नाम	ग्रथ सूची की पत्र सं०	ग्रथकार का नाम	ग्रथ नाम	ग्रथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०		वारहभावना	११४
	गुरुभोक्तीवीनता	४४७		वज्रनाभिवक्रवर्तिकी	
	५११, ६१४, ६४२, ६६३			भाबना	८५
	चर्चासमाधान	१५, ६०६			४४८, ७३६
		६४६		विनती	६४२, ६६३
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६			६६४
	जकढी	६५०, ७१६		स्तुति	७१०
	जिनदर्शन	६०५	भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्धचुपाय	
	जैनशतक	३२७, ४२६		वचनिका	६६
		६५२, ६७०, ६८६		पद	७७६
		६६८, ७०६, ७१०	भेलीराम—	पचकल्याणवपूजा	५०१
		७१३, ७१६, ७३२	भैरवदास—	बृहदष्टाकार्णाकल्प	७२६
	दशलक्षराज्ञा	५६२	भोगीलाल—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८	सगलचन्द—	पदसग्रह	४४७
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०		पटसहननवर्णन	८८
		७७७	मकरदपद्मावतिपुरवाल—	भ्रकलकनाटक	३१६
	पचमेरूपूजा	५०५, ५६६	मकलनलाल—	जैनबद्रोदेशकीपत्रो	५८१
		७०४, ७५६	मजलसराय—	चन्द्रलेहारास	३६१
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४	मतिकुसल—	ज्ञानवावनी	७७२
		७६१	मतिशेखर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
	पुरुषार्थसिद्धचुपाय		मतिसागर—	लीलावतीभाषा	=
	भाषा	६६	मथुरादासठ्यास—	श्रकृत्रिमचैत्यालयपूजा	
	पद	४४५, ५८०, ५८६	मनरगलाल—	चतुर्विंशतितोर्थकरपूजा	८
		५६०, ६१५, ६२०		निर्वाणपूजापाठ	४६६
		६४८, ६६४, ६५४		चित्तामणिजीकीजयमाल	
		६६४, ७७६, ७७७	मनरथ—		६४४
		७८५, ७८६, ७६८	मनराम—	श्रधरगुणमाला	७४६
	वईसपरीपहवर्णन	७५,		गुणाक्षरमाला	७५०
		६०५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
		१२ ११ ७२३ ७१४			१२ ४४६, ४४७ ७१
		७१४ ७१६ ७०६		सत्यप्रियनखवाला	१२२
मनमात्म—		१२ ११३, ११४		माधुर्बदा	४२३
मनमुनत्रास—	सत्यैवदिघरबहुत्प	६२		दृष्टकवसतिगीतान	
मनहरद्वैष—	पारिनाबपुत्रा	३११	मानकवि—	मानवाचकी	११४ ११
मम्राणाचक्षिगृह्य—	वदितवतापता	३६		विजयीचौरद्वै	७४१
	पदनीदिरवधीमीवाला	१८		संकीर्णतीती	११३
	प्रद्युम्नवदितवता	१८९	मानसागर—	वठिमाराजसद्वीचौरद्वै	११
मनामाह—	मलदीवडीवावडी	१३	मानसिद्ध—	घाटी	७३३
	बाणवीतपुत्रावकी	१३८		१२	७३३
मनाहार—		१२ ४४२ ७११ ७१४		अमराठी	७३
		७८२ ७८६		मालविनोद	३
मनाह्वाम—	मलविनामणि	१, ७१४	मारु—	पहेलियां	१२३
		७१६	मिहिरचंद्र—	वद्विगतचित्तव्यम	११७
	मलररवी	७१८	मुकुन्ददास—	१२	१६
	मल ही	७२७	मेरुमन्दन—	वद्विगतचित्तव्यम	११६
	परमरदेसा	१२७ ७१९	मेरुमुद्रगणि—	दीनोदरैचवाला	१२७
मन्मथ—		१२ ४४९	मेका—	१२	७९
मन्मथराम—		७६३	मन्वीराम—	वद्विगतचित्तव्यम	७१
मन्मथ—	वीरव्यपीन	४६९	मन्वेष्टाचरि—	द्वीररावो	११७
मन्मथराम—	मनुमन्मथव्यम	७१९	मातीराम—	१२	२६६
	पद्ममन्मथ	८७	माहम—	वद्विगत	७३२
	माकादिवाला	४२६	मोहनसिंह—	मोनापरीचिता	११७
मन्मथराम—		३०६	माहन बहब—	कववाचरि	७६६
मन्मथराम—	वद्विगत	९२	रंगरिहब—	मल्लु मल्लवद्विचौरद्वै	११२
	१२	७६		पारिपतरवी	७३१
मन्मथराम—	वद्विगत	११	रंगविनवगणि—	उदरेपनव्यम	
मन्मथराम—	वेरुवद्विगतवी	४४८		वद्विगतचित्तव्यम	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रङ्गू—	वारहभावना	११४		चतुर्विंशतित्तिर्थकरपूजा	
रघुराम—	सभासारनाटक	३३८		४७२, ६६६, ७२७,	
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५		७२६, ७७२	
रत्नकीर्त्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२		पद ५८१, ६६८, ६८६	
	नेमीश्वररास	६३८		पूजासग्रह	५२०
		७२२		प्रतिमासा तचतुर्दशी	
रतनचन्द्र—	चौबीसीविनती	६४६		अतोद्यापन	५२०
	देवकीकीडाल	४४०		पुरुषस्त्रीसवाद	७८६
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीराम	६१७		वारहखडी	७१५
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५६४		शातिनाथपूजा	५४५
रत्नकवि—	जिनदत्तचौरी	६८२		गिम्बरविलास	६६३
रसिकराय—	नेहलीला	६६४		सम्भेदशिखरपूजा	५५०
राजमल्ल—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	३०		सीताचरित्र	२०६, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मवत्तीसी	६१७			७५६
	जीवकायासम्भाय	६१६		सुपार्वनाथपूजा	५५५
	शत्रुञ्जयभास	६१६	श्रृष्टिपरामचन्द्र—	उपदेशसम्भाय	३८०
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६		कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	
	सोलहसतियोकैनाम	६१६			३८५
राजसिंह—	पद	५८७	रामचन्द्र—	नेमिनाथरास	३६२
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१	रामदास—	रामविनोद	३०२
	सुन्दरभृगार	६८३, ७२६		पद	५८३, ५८८
राजाराम—	पद	५६०		६६३, ६६७	७७७
राम—	पद	६५३	रामभगत—	पद	—
	रत्नपरीक्षा	३५८	मिश्ररामराय—	बृहद्धारिणिकवनीति	
रामकृष्ण—	जकडी	४३८		शास्त्रभाषा	१११
	पद	६६८	रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
रामचन्द्र—	आदिनाथपूजा	६५१	ब्र० रायमल्ल—	आदित्यवारकथा	७१२
	चन्द्रप्रमजिनपूजा	४७४		चिंतामणिजयमाल	६५५
				द्वियालीसठाणा	७६५





प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ	
	स्तवन	६१७
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६
	नेमिनाथमगल	६०५, ७२२
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१
	पद	५८२, ५८३, ५८७
	पूजासग्रह	७७७
पाठे लालचंद—	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
	सम्मोदशिखरमहात्म्य	६२
श्रीपि लालचंद—	मठारहनातेवीवथा	२१३
	मरुदेवीसज्भाप	४४०
	महावीरजीचौढाल्या	४५०
	विजयकुमारसज्भाप	४५०
	शान्तिनाथस्तवन	४१७
	श्रीतलनाथस्तवन	४५१
लालजीत—	तेरहद्वीरपूजा	४८४
ब्रह्मलाल—	जिनवरप्रतजयमाला	६८५
लालबर्द्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८
ब्रह्मलालसागर—	रामोकारछन्द	६८३
लक्षणरणाकासलीवाल—	चौवीसतीर्थकरस्तवन	४३८
	देवकीकीढाल	४३६
साहलोहट—	मठारहनातेकीकथा	
	( चौढाल्या )	६२३
		७२३, ७७५, ७८०, ७६८
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२
		७८१

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वजिनपूजा	५०७
	पूजाण्टक	५१२
	पट्लेश्यावेलि	३६६
वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
वाजिद—	वाजिदकेमढिल्ल	६७३
वादिचन्द्र—	श्रादित्यवारकथा	६०७
विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके	
	कवित्त	६७३
विजयकीर्त्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	पद	५८०, ५८२
		५८३, ५८४, ५८५
		५८६, ५८७, ५८६
	श्रेणिकचरित्र	२०४
विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
	शीलरास	३६५, ६१७
विजयमानसूरि—	श्रीयासस्तवन	४५१
विद्याभूषण—	गीत	६०७
विनयकीर्त्ति—	मण्टालिकाव्रतकथा	६१४
		७८०, ७६४
विनयचंद—	केवलज्ञानसज्भाप	३८५
विनोदीलाललालचंद—	कृपणपञ्चीसी	७
	चौवीसीस्तुति	७७३, ७७४
	चौरासीजातिका	
	जयमाल	३६६
	नेमिनाथकेनवमगल	४४०
		६८५, ७२०, ७३४
	नेमिनाथकावारहमासा	७५३

संक्षेप का नाम	संक्षेप नाम	संक्षेप सूची की पत्र सं.	संक्षेप का नाम	संक्षेप सूची की पत्र सं.
	सुव्याजक	७७७	सुव्याजक—	वाल्मीकीय १२
	पर	३३, १२१	सुव्याजक—	सुव्याजक १११
		७२७ ७२९, ७२५		१०२ ७२१ ७२३
	संक्षेपसंग्रहिका	२१४	सुव्याजक—	संक्षेप ११
	संक्षेपसंग्रहिका	२२२		सुव्याजकसंग्रहिका १७१
	राजसूयसंग्रहिका	१		संक्षेपसंग्रहिका १२३
		१११ ११२, १४१		संक्षेपसंग्रहिका १४१
		१२१ १२		पर १२३, १४१
		७४७ ७२१		संक्षेपसंग्रहिका ११४
विमलसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	४४२	संक्षेपसंग्रहिका—	सुव्याजकसंग्रहिका ७२
विमलसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	१२	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ११
	विमलसूचीसंग्रहिका	२७	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ११ ७२२
विमलसूचीसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका	१		संक्षेपसंग्रहिका ७२२
	संक्षेपसंग्रहिका	४२२	संक्षेपसंग्रहिका—	सुव्याजक ११७
विमलसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	७२२	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका १
विमलसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	७१	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ११ ११०
	संक्षेपसंग्रहिका	२१७	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ४
	संक्षेपसंग्रहिका	७४२, ७७०	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ११
	पर	४४२, ११		संक्षेपसंग्रहिका १११
	संक्षेपसंग्रहिका	२१		संक्षेपसंग्रहिका १११
	संक्षेपसंग्रहिका	१२१	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ४२
	संक्षेपसंग्रहिका	७२१	संक्षेपसंग्रहिका—	पर ७२
विमलसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	१२७	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका १२१
विमलसूची—	पर	२५७	संक्षेपसंग्रहिका—	संक्षेपसंग्रहिका ७२१
वीरसूची—	संक्षेपसंग्रहिका	१२७		संक्षेपसंग्रहिका १२१
	संक्षेपसंग्रहिका	१२२		पर ७२ ७२४
वीरसूची [संक्षेप]—	संक्षेपसंग्रहिका	१२१		७२२
		१५२		

अथकार का नाम	अथ नाम	अथ सूची की पत्र सं०	अथकार का नाम	अथ नाम	अथ सूची की पत्र सं०
श्रीभाचन्द्र—	शिवदेवीमाताकोआठवो क्षेत्रपालभैरवगीत	७२४		अकलंकाष्टकभाषा	३७६
	पद	५८३, ७७७		ऋषिमडलपूजा	७२६
श्यामदास—	तोसचौबीसी	७५८		तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६
	पद	७६४		दशलक्षणधर्मवर्णन	५६
	श्यामवत्तीसी	७६६		नित्यनियमपूजा	४६६
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्रीपाल—	त्रिपट्टिशलाकाष्टद	६७०		भगवतीभारावनाभाषा	७६
	पद	६७०		मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		रत्नकरण्डध्रावकाचार	८२
	पद	५८३	सवलसिंह—	पोडशाकारणभावना	८८, ६८
श्रीराम—	पद	५६०	सभाचन्द्र—	पद	६०४
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३	सवाईराम—	बुहरि	७०४
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१६	समथराज—	पद	५६०
सतदास—	पद	६५४	समथसुन्दर—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
सतराम—	कवित्त	६६२		अनाथीमुनिसञ्ज्ञाय	६१८
सतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४		अरहनासञ्ज्ञाय	६१८
सतीदास—	पद	७५६		आदिनाथस्तवन	६१६
सवोधकवि—	विपहरणविधि	३०३		कर्मछत्तीसी	६१६
मुनिसकलकीर्त्ति—	भाराधनाप्रतिबोधसार	६८५		कुशलगुरुस्तवन	७७६
	कर्मचूरप्रतवेलि	५६२		क्षमाछत्तीसी	६१७
	पद	५८८		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पार्श्वनायाष्टक	७७७		गीतमपृन्द्धा	
	मुक्तावलिगीत	६८६		गीतमत्वामीनञ्ज्ञाय	
	सोलहकारणरास	५६४		ज्ञानपत्रमीवृहद्स्तवन	७०८
		६३६, ७८१		तीर्थमालास्तवन	६१७
सदासागर—	पद	५८०		दानवपक्षीलनंवाद्	६१७
सदासुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१		नभिराजपिसञ्ज्ञाय	६१८
				पञ्चयतिस्तवन	६१६

मन्वन्तर का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं.	मन्वन्तर का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं.
	पद्म	१७२ १५५	सुमान्तक—	पद्ममेखुवा	१ १
		१ १ ७७७	सुगनर्षद—	वसुमिषाठिटीर्षद	
	पद्ममठीरुभीघाटनना	११७		पुत्रा	४७१
	पद्मपट्टीरुष	१ २	सुन्दर—	कपडामन्वा का सुहा	७७१
	पद्मवर्षावस्तव	११		वर्षावस्तव	७४२
	पुष्पसतीषी	११६		पद्म	७१४
	पद्मवर्षावस्तव	११९		सहृषीषी	७१४
	बाहुवलिस्तव	११६	सुन्दरगर्षि—	विनवस्तुषीषी	११५
	वीरविष्णुपद्मवर्षा	११७	सुन्दरवास—।	वसिष्ठ	१४१
	महृषीरुषव	७१२		पद्म	७१
	मैत्रकुमारस्तव	११		सुन्दरविष्णु	७४२
	वीरपद्मवर्षावस्तव	१२		सुन्दरपु षाट	७१५
	रुद्रपुत्रवस्तव	११६	सुन्दरवास—॥	विष्णुपद्मरुद्रवर्षा	१४
	वसुदेवपद्मविष्णुवस्तव	११६	सुन्दरसूपय—	पद्म	१५७
	विष्णु	७१९	सुमतिष्ठीषि—	वैशंपायनपुत्रा	७११
	पद्मवर्षावस्तव ११७ ७			विनवस्तुषि	७११
	पौष्पवर्षावस्तव	११६	सुमतिमाग—	वसुदेववस्तव	११
	वस्तव	११		वस्तव	७११
	घाटीरुषवर्षा	१ २		वस्तववस्तव	७११
	पद्म	१२	सुरेन्द्रकीषि—	वसिष्ठावस्तव	७ ७
	वस्तवमेखुवा	७१२, ७१		वीरवर्षावस्तव	११६
	विनवस्तुषावस्तव	७७५		पद्म	१२१
	वस्तवविष्णुवस्तव	११६		वस्तवविष्णुपुत्रा	१२
	पद्म	७७७	सुरवस्तु—	वसिष्ठावस्तव	१२७
	पद्म	४४२ ७१	सुरवास—	पद्म	१५४
	पद्म	१			७११ ७११
	वसिष्ठ	७७	सुरवस्तववस्तव—	वस्तववस्तव	११२
	वसिष्ठ	१२६	सुरवस्तव—	पद्म	१ १

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वाणक्षेत्रमडलपूजा	४६८
	वारहखडी	६६, ३३२, ७१५		पचकुमारपूजा	७५६
		७८८		पूजापाठसंग्रह	५११
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६		मदनपराजय	३१८
	आदिनाथपूजा	६७४		महावीरस्तोत्र	५११
	कवित्त	७७२		बृहद्गुरावलीशातिमडल	
	जिनगुराणपच्चीसी	४४७		( चौसठऋद्धिपूजा )	४७६, ५११
	जिनयशमगल	४४७		सिद्धक्षेत्रोंकीपूजा	५५३, ७८६
	पद	४४७, ७८६, ७६८	हसराज—	सुगन्धदशमीपूजा	५११
	निर्वाणकाण्ड	७८८	हठमलदास—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
	नेमिनाथकीभावना	६७४	हरखचद—	पद	६२४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२	हरखचद—	पद	५८३, ५८४
सेवारामसाह—	अनन्तव्रतपूजा	४५७	हरचदअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	५८५
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७०		पचकल्याणकपाठ	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४			४००
सोम—	चिंतामणिपार्ष्वनाथ				७६६
	जयमाल	७६२	हर्गूताल—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८	हर्षकवि—	चंद्रहसकथा	७१४
सोमसेन—	पचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	५७६
स्यौजीरामसौगाणी—	लग्नचद्रिका	७५१	हर्षकीर्त्ति—	जिणभक्ति	४३८
म्बरूपचद—	ऋद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११		तीर्थंकरजकडी	६२२
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११		पद	५८९, ५८७
		६६३			५८८, ५६०, ६२१
	जयपुरनगरसंबंधी				६२४, ६६३, ७०१
	चैत्यालयोकीवदना	४३८			७५०, ७६३, ७६४
		५११		पचमगतिवेलि	६२१
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०			६६१, ६६८, ७५०
	त्रिसोकसारचौपई	५११			७६५

प्रकाशक का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रकाशक का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्ष्णनाथपुत्रा	११३		विनयी	१११
	बीरवीरवीरों की बकरी			स्तुति	७७१
	( कन्या ) १४४	७२२	श्रीरक्षि—	सावरनाथपरिम	१४
	बीर विरहपानपुत्रा	२१३	श्रीराक्ष—	पर	४४७, ३१
	धनकर्मकरकी	३३७	श्रीरामपु—	पुनर्लभ	२१३
	पद्मेस्वारी	७७३	श्रीराजा—	पंचास्तिकावनाथा	४१
	दुखदही	७४५	श्रीराजा—	कन्यापुत्रा	१४१
इपंचम्—	पर	२४३, ११	हेमराज—	विदुषटार	११७
इपसुरि—	अवतिपार्ष्णभिरावतन	३७३		बोमटारकर्मकाव	११
पंडितरिक्तम्—	अनंतचतुर्विधत			अनंतचतुर्विधत	७११
	कन्या	७३१		पंचास्तिकावनाथा	४१
	अनंतचतुर्विधत	७३४		पर	३३
	विदुषटारकीकन्या	७३४		अनंतचतुर्विधत	१११
	विदुषटारकीकन्या	७३३		अनंतचतुर्विधत	११४
इरिचरयदास—	अविदुषटार	१४४		अनंतचतुर्विधत	१२७
	विदुषटारकीकन्या	१४७		अनंतचतुर्विधत	४१
इरीदास—	अनंतचतुर्विधत	७३३			२३१ १४४ १११
	पर	७७७			७ ७ ७७४
इरिचरम्—	पर	१४३		अनंतचतुर्विधत	७७७
इरिचि—	पर	२४३, २४३, ११		अनंतचतुर्विधत	१२४
		१४३, १४४ १३३			७७३
		७७३, ७७३, ७३३	सुनिवेशि—	अनंतचतुर्विधत	४११



## → शासकों की नामावलि →

भक्रवर	६, १२२, १६७, ५६१, ५६२	चन्द्रगुप्त	६२०
( इक्रवर )	६८१, ७६७, ७७३	चित्रगदमोडीये	५६२
भर्जपालपवार	५६२	छत्रसाल	४०६
भणहलगुवाल	५६२	जगतसिंह	१७०, १८१, ३६६, ७७६
भनगपालतुवर	५६१	जगपाल	६६
भरविंद	५६८	जयसिंह ( सवाई )	५३, ७१, ६३, ६६, १२०
भलाउद्दीन	३५६, २५६		१२८, २०४, ३०५, ४८२
( भलावदीन )			५१५, ५२०, ५६१
भलावलखा	१५७	जयसिंहदेव	१४५, १७६
भलावद्दीनलोदी	५६	जहागीर	४१, १४४
भहमदशाह	२१६, ५६१	जैतसी	५६२
भालुभ	२५१	जैसिंह ( सिंघराव )	५६२
भौरगजेव	६७, ४७८, ५५४, ६६८	जोघनावत	५६१
भौरगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ५६२	जोधे	५६१
भुद्रजीत	७४३	टोडरमल	७६७
इब्राहीमलोदी	१४२	हू गरेन्द्र	१७२
इब्राहीम ( सुलितान )	१४५	तैतवो	५६२
ईसरीसिंह	२२६	देघडो	५६२
ईश्वरसिंह	२३१	नाहरराव ( पवार )	५६१
उदयसिंह	२०६, २५१, ५६१, ५६२	नीरगजीव	३०५
उसैसिंह	२१६	नीरग	४४८
किशानसिंह	५६२	पूरणमल्ल	१६४
कीर्तिसिंह	२६५	पेटोजासाह	७८
कुशलसिंह	४८	पृथ्वीराज	१०३
केशरीसिंह	३४७	पृथ्वीसिंह	७३, १४४, ६८३, ७६७
क्षेतसी	१६०	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६, ४५७, ४६१
गयासुद्देन	५३	फतेसिंह	४८०
गजुद्दीहबहादुर	१२५	वस्तुवावरसिंह	७२६
घडसीराय	१७२	बहलोलशाह	६२



बनार	१९३	रामस्यम	२११
बीर	२२१	रामचन्द्र	४४
बुधसिंह	४ २	रामनन्द	१ १
बनारसिंह	३४	रामसिंह	१४९, ११
बाटीवीर	१२१	रामराज	२११
बाटास	२२१	रामचन्द्रस्यम	२११
बाणसिंह	७१	रामदेव	४१९
बाणसिंह ( बाबा )	१२	रामनारायण	२५७
भोज	२२१	रामनारायण	२२९, २२३ १११
भोजदेव	१२	रामसिंह	१ १
भवरभुज	४१२	रामनारायण	२२१
भरत		रामसिंह	१ १
भद्रनरदा	१	भोज	२२१
भद्रनरदा	१२१	भोजराजस्य ( राजाजीनकरुण )	२२१
भद्रनरदा	१२१	भोजदेव	४२२
भद्रनरदा	१२१	भोजन	१ १
भद्रनरदा	२१	भक्ति	१
भद्रनरदा	१ ४ ११२, ४२१ ११९	भद्रनरदा	१ ९ १२५
भद्रनरदा	११५	भोज	११
भद्रनरदा	१४ १२१ १४४ १ २	भोजराज	१२
	१२२, १२९, १११	भोजराज	२१२
	४७९ ४५	भोजराज	१११
भद्रनरदा	२२१ २२२	भद्रनरदा	७७ १ ९ २११
भद्रनरदा	१११	भद्रनरदा	१४४
भद्रनरदा	१ २	भद्रनरदा	१४२
भद्रनरदा	१११ १७१ १११	भद्रनरदा	४, १९४
भद्रनरदा	७१२	भद्रनरदा	१२९
भद्रनरदा	७७ १४	भद्रनरदा	२२१
भद्रनरदा	१७ १४२, १७४ १७१	भद्रनरदा	१७७ २२१ १ २
भद्रनरदा	११ १११		

# ★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

भजनगीई	७२६	भागरा	१२३, २०१, २५५, ५६१
भधावतीगढ ( भामेर )	४, ३४, ४०, ७१, १२० १६३, १८७, १६६, ४५५	भामानेरी	७४६, ७५३, ७७१ ७४८
भकवरानगर	४७६	भामेर	३१, ७१, ६३, ११६, १२० १३२, १३३, १७२, १८४
भकवराबाद	६, ३६१	भानन्द	१६०, १६०, २३३, २६४ ३३७, ३६४, ३६५, ४२२
भकन्वरपुर	२५०	भाम्रगढ	४६२, ६८३, ७५६ १५१
भकीर	३६७	भालमगज	२०१
भजमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ५०५, ५६२, ७२६	भावर ( भामेर )	१८१
भटोरिनगर	१२	भाश्रम नगर	३५
भरणहिलपत्तन ( भरणहिलपट )	१७५, ३५१	इन्दौर ( तुकीगंज )	५४७
भमरसर	६१७	इन्द्रपुरी	३५८, ३६३
भमरावती	४८७	इ वावतिपुर ( मालवदेश मे )	३४०
भवती	६६, २७६, ३६७	इदोखली	३७१
भर्लपुरदुर्ग ( भागरा )	२०६, ३४६	ईहर	३७७
भराङ्गयपुर	१७	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
भलकापुरी	४३५	उग्रियावास्त	३१६
भलवर	२४, ५६७	उज्जैन	१२१, ६८३
भलाउपुर ( भलवर )	१४४	उज्जैणी ( उज्जैन )	५६१
भलीगढ ( उ प्र )	३०, ४३७	उदयपुर	३६, १७६, १६८ २६३, ४०१
भवन्तिकापुरी	६६०	एकोहमा नगर	४५६
भहमदावाद	२३३, ३०५, ५६१ ५६२, ७५३	एलिचपुर	१८१
भहिपुर ( नागीर )	८६, २५१	भौरगानाद	७०, ५६२, ६१७
भांधी	३७२	ककरणलाट	३६७
भवावती	३७२	कछीविदा	५६२
भावां महानगर	१६४		
भावेर ( भामेर )	१०७		

बटक	१२४	केरुन	१६७
कुम्भीरपुर	१६१	केरवाघाम	१२
कम्बुज	१६७	कैलाश	१५१
कन्डीघाम	१६१	कोटगुलती	७२७
कनारा (बिला)	२२	कीटा	१४ २१७ ४२
कण्डिक	१५१	कीटा	१२१
कण्डक	१६७	कीचनी	१११
कटीनी	१ ४	कुम्भपुर	१ ३ १२१ २१ १११
कुमावता	१२१	कुम्भपुर (कलाविहारा)	२१
कुम्भपुर	१६१	खण्डार	४५
कम्बिक	१६७	खानी	११
कुम्भीघाम	२४६	खिटावैद्य	७१
कम्बोला	१७१	खैटक	१२१
कुम्भपुर	१२४	खैर	१२१
कम्भपुर	१२	कडक	१६
कम्भवा	२ ४	कडकोटा	११
कम्बक	५२	काशीमवाला	१४
कम्बोला (कलाविहारा)	४२, २१	किलार	१७
	१ ६ १ १	किलरीर	१६१
किलर	१६७	कीचपुर	४
किलरपुर	१४ १२१ २६२	कुम्भपुर	२१४
किलरीर	२१	कुम्भ (कुम्भपुर)	१६७
कुम्भपुर	१२२	कुम्भपुर (कुम्भपुर)	१६१
कुम्भपुर	४४६	कुम्भपुर	४११
कुम्भपुर	२२	कुम्भ	१७१
कुम्भपुर	१२१	कोम्भपुर (कम्भपुर)	१२१, १७१, २१२, ४२१
कुम्भपुर	१६७	कोम्भपुर	१ २
कुम्भपुर	१६७	कोम्भपुर	१५१
कुम्भपुर	१४२	कोम्भपुर	४१
कुम्भपुर	१	कोम्भ (कोम्भपुर)	१ २

ग्राम एवं नगरों की नामावलि ]

थालियर	१७२, ४५३	५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घढतोला	४७५	७४, ७७, ७६, ८५, ८६, ६२
घाटढै	३७१	६३, ६६, ६८, १०२, १०४
घाटमपुर	४१२	११०, १२१, १२८, १३०
घाटसल	२३४	१३४, १४०, १४२, १४५
चऊढ	३६७	१५२, १५३, १५४, १५५
चन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१	१५८, १६२, १६६, १७२
चन्द्रापुरी	१७, ३०३	१७३, १८०, १८२, १८३
च देरीदेसा	५३, १७१	१८६, १६५, १६६, १६७
चपनेरी	५६३	१६८, २००, २०१, २०२
चम्पावती ( चाकसू )	३०२, ३२८	२०५, २०७, २२०, २२५
चम्पापुर	१६४	२३०, २३१, २३४, २३५
चमत्कार क्षेत्र	६६३	२३६, २३६, २५०, २५३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४६८, ५६३, ७८०	२५५, २६२, २७४, २७५
चान्दनपुर	५४८	२८०, ३०२, ३०४, ३०८
चावढल्य	३७२	३०६, ३४१, ३५०, ३५७
चावली ( भागरा )	५४७	३६२, ३६४, ३७५, ३८६
चितौढ	२१३, ५६२	३६४, ४१०, ४११, ४२१
चित्रकूट	३६, १३६, २०६	४४५, ४५०, ४५६, ४६०
चीतौढा	१८५, १८६	४६१, ४६६, ४७२, ४८१
चूरू	५०२	४८७, ४६४, ४६६, ५०४
घोसू	४४०	५०५, ५११, ५२०, ५२१
जम्बूद्वीप	२१८	५२७, ५३३, ५४६, ५७७
जयदुर्ग	२७३	५६१, ६००, ६१५, ६६६
जयनगर ( जयपुर )	१६, ११२, १२४ १६८, ३०१, ३१६	६८३, ७१५, ७२६, ७२६ ७६८, ७७२, ७७६
( सवाई ) जयनगर ( जयपुर )	१६६, १७०, २६८ ३१८, ३३०	७०
जयपुर ( सवाई ) जयपुर	७, १६, २५, २७, ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२	जलपय ( पानीपत ) ७० जहानाबाद ४१, ७०, ६१, १४२ ५५२, ६६८ जागरू ३८०

बलदेव	१ ८, १ ५, ४६२	जिला	१३०
बीरमपुर	१३२	पुरम	१६०
बेङ्गलमेर	४६१ १२	पुरम	१६०
बीरहपुरा	१५, ११ ६१ ४४६	ढोडा ( ढोडा )	१ ६
	४ २, १ ६	बनकण	६, ६०
बीरपुर	१ ५ ३ १ ५६१	बनिय	१६०
बोमवेर	११ ३४ ७४ २११	बाक	११२
	१६१ ३ २ १११	बिन्नी-बेङ्गली	३० नव ११५ १४
	४६६, ४६१ ४६६		१२१ १०६, १६० ७१५
	४७० ४६१ १४४		४४६ ४६१ ७२६, ७६०
भारतगणक	१११	बिबलभवर ( बीसा )	१२२
भारतगु	१०२	डूड	१०२
भिलाडी	११४	डुली	१
भिलाम	१० ११६, ४७०	देवहाबा	१११
भोटबाबा	१०१	देवसिदि ( बीसा )	१०१ १५६, १४४
भुट्टा	१ २	देवमली	१२१
ढोंक	११ १५६ १ ३	देवुली	११
ढोडाबा	१४५ १११	देव	१०१
ढोडीबा	१६१	ढोडा-ढोडा	१०१ ११ १०६, १०१
डिन्नी	४१	मन्पुर ( मन्पुरा )	११६, ४ ६
डिबबा	१११ १०१	डमिका	२१०
डु बापेय	११६, १२	नवबनपुर	१२
एलबबा ( मन्बबा )	१६०	नगानबा	१
बनकणपुर ( ढोडापुरसिंह )	७०	भारतमडी	१५, १११ १४६, १०१
	११ १०५ १ ३ २	नंदाबा	११
	१ ५, ११६ १११, ४६४	नंपुर	७०४
एबल	१६०	नपा	११० २६१
एबलपुर	१ ६	नवरा	४१५
एबल	१४४ १६०	नवपुर	११५
एबल	१६०	नवपुर	११

नरवल	२२७	पाली	३६३
नरायणा	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायणा ( बडा )	२८४	पावागिरि	७३०
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	३६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलौन	३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुन्या	४४१
नांगल	३७२	पूर्णासानगर	२००
नागरचालदेश	४४८	पूरवदेस	३६७
नागपुरनगर	३३, ३५, ८८, २८०, २८२	पैरोजकोट	२७८
	३८४, ४७३, ५४३	पैरोजापत्तन	६२
नागपुर ( नागीर )	७३५, ७६१	पोदनानगर	५६८
नागीर	३७३, ४६६, ४८८	फत्तेहपुर	३७१
	५६०, ७१८, ७६२	फलीधी	५६२
नामादेश	३७	फागपुर	३४
निमखपुर	४०७	फागी	३१, ६८, १७०
निराणौ ( नरायणा )	३७०	फौफली	३७१
निवासपुरी ( सांगानेर )	२८६	वग	३६७
नौमैडा	७६६	वंगाल	४७६
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	वधगोपालपुर	३६३
नैणवा	१७, ३४१	वगरू	६६
पड्डतपुर	४३६	वगरू-नगर	७४, २७०
पचेवरनगर	४२, ४८०	वणहटा	३४२, ४४८
पहन	३८७	वटैरपुर	१५३
पनवाहनगर	७१	वनारस	४८३
पलाडा	५६२	वरव्वर	३६७
पांचोलास	७३	वराड	३
पाटण	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	वसई ( वस्ती )	१८६, २६६, ४१५
पाटनपुर	४४६	वसवानगर	१६५, १७०, ३२०, ४४६
पानीपत्त	७०		४८४, ७२१
पालव	६८२	वहाडुरपुर	१६७, १६८

बागबरीय	१७ १२४, २३४	मनुवा	४७८
बागपुर	११२	मनुपुरी	११८
बागलपुर	२७२	मनीइलपुर	७२१
बागदरौरी	१७२	मनाला	७८
बागदौरी	२७८	मदरवा	१८७
बागौरी	२६	मनुविवापुर	४
बागलौर	२२१ २२२, १७४	मनफौड	२४
बागौरी	४ ४ ६	महापुर	२२१
बागलौर	१७ २१४	महुवा	१२, ११४ ४२६, ४७१
बागलौर ( बागलौर )	२४	महेरी	२२१
बागलौर	४७ १२६, १७१	माधोपुर	२१८
बागलौर	१६	माधोपुर	१११ ४२६
बागलौर	१७१	माधवा	४४
बागलौर	१२४ १४	मारोड	१६१ ११२ १७२ १७४ २६२, २६१
बागलौर	१४१		२६१
बागलौर	१ ६	मालपुर	४ २ १४ २६, १२२, ११
बागलौर	१७२	मालपुर	११६, १४८ १४२, ११२, १ १
बागलौर	१ २		१४२ १४१ १४४ ४१ २६१
बागलौर	११७		११६, ७१८
बागलौर	२२४		
बागलौर	२६७	मालपुर	१२, २ १४ १६७
बागलौर	११८	मालपुर	१४
बागलौर	१ १	मिर्जापुर	२४१
बागलौर	१७१	मुजपुर	७७
बागलौर	२१	मुजपुर	१११ २६१
बागलौर	२६१	मुजपुर ( मुजपुर )	१७७
बागलौर	७ ६	मुजपुर	१७४ १७२ २६१
बागलौर	१७१	मुजपुर	१
बागलौर	२१	मुजपुर	१ २, १७१
बागलौर	७	मुजपुर	१७१
बागलौर	१२१	मुजपुर	१७१

मोहनवाडी	४६०	रैरावान	४-०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	२००
मैनपुरी	४६	सखनऊ	१२३
मोजमावाड	५६, ७१, १०५, १७४	ललितपुर	१७८
	१६२, २०८, २५५, ४११	लक्ष्कर	२३६, ३८६, ७००
	४१२, ४१६, ४१७, ५४३	लाखेरी	६६५
यवनपुर	३४३	लाडणा	१८६
योगिनीपुर ( दिल्ली )	२६४	लावा	४२
यीवनपुर	३०७	लालसोट	३०
रणतभवर ( रणथंभौर )	३७१	लाहौर	६६८, ७७१
रणथंभौरगढ	७१२, ७४३	लूणाकर्णसर	७
रणस्तभदुर्ग ( रणथंभौर )	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रुहिवगपुर ( रोहतक )	१०१	विक्रमपुर	१६४, २२३
राजपुर नगर		विदाघ	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
राठपुरा	४५०	वृन्द्यावती नगरी	५, ३६, १०१, १७८, २००
राणपुर	६१६		४२२
रामगढ नगर	१४६, ३७०	वृन्द्यावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वैसरै ग्राम	५३
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर ( नगर )	१८१	वैराठ ( चैराठ )	१०६
रामसरि	६६	वोराव ( वोराज ) नगर	
रायदेश	१६७	पेमलासा नगर	
रावतफलोधी	५६१	धाकमडगपुर	८८
राहेरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रैवाडी	६२, २५१	धाहजहानावाड	४७, १०८, ५०२
रैणपुरा	५६२		६८१



विश्वपुरी	७३२	वाल्मराव नगर ( वाणवाडा )	१२४
धुवाडनपुर	५	वाल्मवाडपुर	१५
दीरवाड	१२ ७०१	वाल्मवाडा	१७, १४१
सेरपुर	३ २१५ ३२६	वाणवी	१११
सेरपुरा	१३३	वाणोड	७१
धीरवाड	१३५	वाणकवाड	७
दीरवाड	३, ३२३	वाणनपुर	५२, १११
दीरवाड	२१४	वाणकोट	१११
दीरवाडपुर	३४१ २२४	वाणवाड	४१
दीरवाड	१६	वाणवाडपुर	४४
दीरवाड ( वाणवाड )	१०५	वाणवाडवाड	७७ १४२ १४१ ११७
दीरवाड	३४ १३ ७५ १३ १३६	वाणवाडा	११२
	१४४ १४५ १४६ १४७	वाणवाडी	१२३
	१२६, १३४ १५१ १२	वाणवाड	४६६
	१७ २२६ ४ १ ३७१	वाणवाड	४ ११३
	१५४ ३२३ ४ ४२	वाणवाड	१२६
	४६ ४७३ ४५ ७७२	वाणवाडवाड	३४ ११६
दीरवाडी ( वाणवाड )	१२३	वाणवाड	१२७
दीरवाड	१७१	वाणवाड	१३७
दीरवाडा नगर	२६	वाणवाड	१४७
दीरवाड	३४२	वाणवाडी वाणवाडी	१७२
दीरवाडपुर	४७७	वाणवाडवाड	१५६
दीरवाडपुर	१५७	वाणवाडवाड	१५६
दीरवाडवाड	१ ३ १७	वाणवाड	१७७
दीरवाडवाडपुर	१४३	वाणवाड	१२६
दीरवाडी वाणवाड	१३ १३२ १३४	वाणवाडी	१६६
	१७ १२३	वाणवाडवाड	३२१ १७२ ७१
दीरवाडपुर	३३७	वाणवाडा ( वाणवाड )	१६६
दीरवाडवाडपुर	२७६	वाणवाडवाड	२६७
दीरवाड नगर	३	वाणवाडी	१६

भाम एवं नगरों की नामावलि ]

हिण्डीन	२५०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	६३६
हथिकतपुर	५६७	हिण्डी	१४३
हरसौर	१८४	हिमाचल	२०२
( गढ ) हरसौर	६३६	हिरण्योदा	३६७
हरिदुर्ग	२००, २६६	हिसार	६४४
हरिपुर	१६७	हीरापुर	६२, २७८
हलसूरि	७३४	डूढवतीदेवा	२३०
हाडौती	६०४	होलीपुर	१७
			१८८

# ★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र वर्ष संदि

शुद्ध पठ

शुद्ध पठ

१४४  
१४८  
४०२६  
१६४६  
१४०१६  
३१४११  
१४०२०  
१४०४  
१४०२३  
१४०२२  
१४०१२  
१४०११  
१४०२६  
१४०१४  
१४०१  
१४०१३  
४०२१०  
४०२११  
४०११३  
१४०१  
१४०२  
१४०१  
१४११

अथ प्रकृतिश्च  
विष्णु  
गोमहेश्वर  
१०४  
१८१४  
तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य  
वे सं २३१  
१४४  
अथ  
—  
मयचन्द्र  
अथ  
सह  
१ अथ  
म्योपाधि  
मूयतमिष  
१८०१  
वाक्तापशोष  
आचार  
मीतद्विराज  
सोमगिर पञ्चीती  
१४ बी राजपदी  
१४४१  
वर्ष वर्ष आचारप्रारम्भ

अथ प्रकृतिश्च  
विष्णु  
गोमहेश्वर  
११४  
१८४४  
तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य-अन्यत  
वे सं १४१२  
१४४  
अथ  
१४४  
मयचन्द्र  
अथ  
सह  
से० अथ  
म्योपाधि  
मूयतमिष  
१८०१  
वाक्तापशोष  
आचार  
—  
सोमगिरपञ्चीती  
: बी राजपदी  
अथ २ : वाग प्रारम्भ



पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१३१×१	त्र	ञ
१४०×२८	१७२८	१८२८
१४६×७		१० कालम० १६६६
१४६×७	१० काल	ले० काल
१६४×१०	१०४०	२०४०
१६५×१	स० १७८५	स० १५८५
१७१से१७६	क्र० स० ३००० से ३०५८	क्र० स० २१०० से २१५८
१७६×२८	रङ्गू	ऋवि तेजपाल
१८१×१७	ढमल्ल	नाढमल्ल
१६२×६	३२१८	२३१८
१६२×१४	भट्टार	भट्टारक
२०८×६	१७७४	१७१५
२१६×११	अकाशपचमीऋथा	आकाशपचमीऋथा
२१६×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्त्ति
२४२×२५	चद्धमानमानस्य	चद्धमानमानस्य
२६४×१६	२१२०	३१२०
३११ १२	३२८	३२८०
३१६×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मनन्दि
३२०×१५	३६३	३३६३
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ
३६६×-	३६८-३७५	३६६-३७६
३८५×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
३८६×५	—	और
३६६×४	अणुभा	कनककुराल
४०१×२१	भूपालचतुर्विंशति	भूपालचतुर्विंशतिटीका
४५६×२५	सस्कृत	हिन्दी
४६४×१२	भादवापुरी	भादवासुदी
५०२×८	पञ्चगुरुकल्याण पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
५५७×२	पाटोंकी	पाटोदी

पत्र ण्वं चक्रि	अशुभ पाठ	शुभ पाठ
४०३×१६	संस्कृत	प्राकृत
४०४×१२	संस्कृत	प्राकृत
४०४×१३	—	संस्कृत
४०४×१०	संस्कृत	अपभ्रंश
४०६ ०	रमकौमुद्यापसमा रचन	रमकौमुद्यापसमा रचन
४००×१०	क्षमगतव	सामतटाव
४११×१	"	—
४१४×१८	मालाभारताराम	सोडहभारताराम
४ ००००	पद्यवतीन्दु	पद्यावतीन्दु
४१६×२	पठिष्ममसुत्र	पठिष्ममसुत्र
४१४×१०	४४४१	४४४१
४०३×०३	न्यामिगतम	न्यामिगतम
४२३×२४	अव	अव
४२००×१४	प्राकृत	अपभ्रंश
४२००×११	योगवर्षा	योगवर्षा
४३४×१	अपभ्रंश	प्राकृत
, ४१६	आ सामदेव	सामप्रम
४३६×१२	अपभ्रंश	संस्कृत
४३०×१	स्वप्नभूतोद्योपदेश	शुद्धोपदेश
४३६×१	पञ्चम्याण वृत्ता	पञ्चम्याण वृत्ता
४२६	व	वृत्त
४२०×६	राममेत	रामसिंह
४४४×४	"	संस्कृत
४४०×६	राज्यमन्त्र	मन्त्र राज्यमन्त्र
४४४×१०	कमलमसुत्रि	कमलमसुत्रि
४६१×२	पद्यावा	पद्यावा
४००×१६	पञ्चमीसी	जैन पञ्चमीसी
४०१×१०	व्यातिव्यवस्था	व्यातिव्यवस्था
४८ ४०४	कथासुमन्त्रि स्तोत्र	कथासुमन्त्रि स्तोत्र
४६१×६	अन्वयम	अन्वयम

पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	”	—
७३२×६	”	हिन्दी
७३३×३,४	हिन्दी	संस्कृत
७३३×५	”	हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
७५०×६	मनसिंघ	मानसिंह
७५४×१८	अभवदेवसूरि	अभयदेवसूरि
७५५×१७	”	अपभ्रंश
७६५×५	१८६३	१६६३





